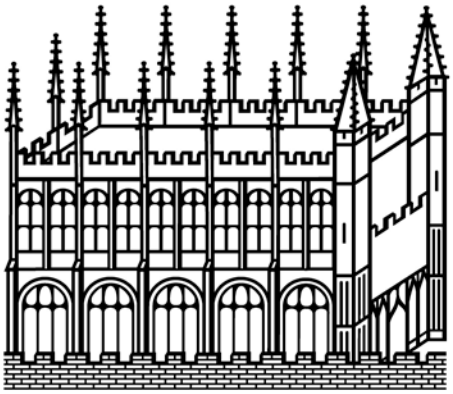

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

(13.E.1.4) Hindi Rahabh 2/2

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Mahābhārata-darpaṇa.

Vol. II.

Mahabharat 2nd Part

महाभारत दर्प्पणः

दूसरा भाग

द्वितीय भाग

जिसमें विराट्, उद्योग, भीष्म, द्रोण, पर्व्व हैं

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज श्री उदित नारायण काशिराज

की

आज्ञानुकूल

श्री गोकुलनाथ प्रभृति कवीश्वरों ने संस्कृत का सारांश यथावस्थित ले अति परिश्रम, ईश्वर की पूर्ण कृपा, उक्त काशिराज की गुणग्राहकता, और परितोषकादि लालसा से भाषा, वर्ण, मात्रावृत्त में अति रुचिर रचना किया और उक्त काशीनरेश ने कलिकत्ता महा नगर के शास्त्र प्रकाश मुद्रायन्त्र में श्री पण्डित लक्ष्मी नारायण से शुद्ध कराय शाके १७५१ और संवत् १८८६ में मुद्रित कराया था

वही

सम्पूर्ण विद्यानुरागियों के अनुरागार्थ सकल कलाध्यक्ष मुन्शी नवलकिशोर जी ने अपने महान् २ पण्डितों से यथोचित अतिप्रबन्ध से शुद्ध कराय

दूसरी बार

लखनऊ

निज यन्त्रालय में छपवाया

खृष्टाब्द सन् १८८३ ई०

संवत् १९४० वि०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् सितम्बरसन् १८८३ ई० पर्य्यंत जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्योपार की इच्छा हो वह छापेख़ाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय कर लें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा इतिहास	सातों काराड	रसहरिरसचन्द्रोदय	स्वप्नप्रकाश
महाभारतसबलसिंहकृ०	१- बालकाराड	सुदामा चरित्र	कथा प्रिया
१- आदि पर्व्व	२- अयोध्याकाराड	शंकर चरित सुधा	विजय मुक्तावली
२- सभा पर्व्व	३- आरण्य काराड	कृष्ण गीतावली	उपदेश चन्द्रिका
३- विराट् पर्व्व	४- किष्किन्धाकाराड	भुवनेश भूषण	मंगल विनोद
४- उद्योग पर्व्व	५- सुन्दर काराड	श्री अनुराग रस	विजय चन्द्रिका
५- भीष्म पर्व्व	६- लंका काराड	सोरागर लीला	सिद्धान्त संग्रह
६- द्रोण पर्व्व	७- उत्तर काराड	रासलीला का० प्र० कृ०	राम विनय शतक
७- कर्ण पर्व्व	रामायण शब्दार्थ कोष	**नाटक**	अनेकार्थ
८- शल्य पर्व्व	रामायण का इतिहास	प्रबोध चन्द्रोदय	छन्दोर्णव पिंगल
९- गदा पर्व्व	रामायण मानसदीपिका	रामाभिषेक	रसराज
१०- स्त्री पर्व्व	रामायण कवितावली	आनन्द रघुनन्दन	सतसई मूल
११- स्वर्गारोहण पर्व्व	रामायण गीतावली स०	भ्रमजाल का नाटक	सतसई सटीक
रामायण रासविलास	विनय पत्रिका बाबू मो-	हनूनाटक	सभाविलास
रामायण तुलसी कृत	हनलाल कृ०	**वेदान्त**	युगुल विलास
रामायण सटीक मय	विनय पत्रिका बाबू शि-	योग वाशिष्ठ	तुलसी शब्दार्थ प्रकाश
मानस दीपिका कोष	वप्रसाद कृ०	आनन्दाऽमृत वर्षिणी	भजनावली
आदि	विष्णु पुराण भाषा	सांख्य तत्त्व कौमुदी	प्रेमरत्न
तथा जिल्द कथी	लिंग पुराण	पारस भाग	चित्रचन्द्रिका
तथा मोटे अक्षरों की	ब्रह्मोत्तर खराड	**काव्य**	बारहमासा बलदेव प्र० कृ०
मय तसवीर व क्षेपक	वाराह पुराण	सूरसागर	मनोहर लहरी
रामायण तुलसी कृत-	भविष्योत्तर पुराण	कथा सागर	गंगा लहरी
टीका सुखदेवलाल कृत	स्कन्ध पुराण	विश्राम सागर	यमुना लहरी
रामायण तुलसी कृत	बाल्मीकी रामायण भा०	प्रेमसागर	जगद् विनोद
टीका रामचरण दास कृ०	अद्भुत रामायण	ब्रज विलास बड़ा	शृंगार बत्तीसी
रामायण तुलसी कृत	शुक्रनीति	ब्रज विलास छोटा	नवीन संग्रह

सूचीपत्र॥

—o—

बिराटपर्व॥

अ०	विषय	पृष्ठसे	पृ-त-
१—७	राजा बिराटपुरमें द्रौपदीसहित पांडव प्रवेश बर्णन ॥	१	१३
८	मल्लयुद्धमें भीमसेन करके जीमूत बध बर्णन ॥	१३	१४
९	कीचक द्रौपदी की बार्त्ता और भीमसेन करके कीचक बध बर्णन ॥	१४	२६
१०	द्रौपदी मोचन और भीमसेनकरके कीचक शत भ्रातृ बध बर्णन ॥	२६	२८
११	पाडवों के ढूढ़नेको दुर्योधन दूतप्रेषण और उनसे सभ्रातृ कीचक बध श्रवण बर्णन ॥	२८	२९
१२	दुर्योधन सभासदसम्मति और बिराटपुरमें ससैन्यसुशर्माआगमन बर्णन ॥	२९	३२
१३	सुशर्मा करके बिराट गोहरण और पांडव सेना सहित गोमोचनार्थ बिराट गमन बर्णन ॥	३२	३३
१४	बिराट और सुशर्माकी सेनाका महायुद्ध और भीमसेनकरके सुशर्मा बन्धन और युधिष्ठिर करके मोक्ष बर्णन ॥	३३	३६
१५	पराजित सुशर्मा निजपुर गमन और बिराट करके पांडव स्तुति. व बिजय कथनार्थ स्वपुरको दूतप्रेषण बर्णन ॥	३७	३७
१६	दुर्योधन भीष्मादि सहित बिराट गोहरण और युद्धार्थ बिराट करके स्वपुर प्रेषण बर्णन ॥	३७	३८
१७	वृहन्नलाको रथी बनाकर कौरवोंके साथ युद्धकरनेको उत्तर गमन बर्णन ॥	३८	४०
१८	वृहन्नला और उत्तरका युद्धार्थ कौरवोंके निकट गमन बर्णन ॥	४१	४३
१९	वृहन्नलाको देखकर कौरवोंको अर्जुन ज्ञान और उत्तर सहित शमीवृक्षके निकट पूर्वस्थापित धनुर्बाण ग्रहण बर्णन ॥	४३	४५
२०	अर्जुनक्लीववेषत्याग गांडीवआदिशस्त्रग्रहणऔरनिजबिजय औरनामवर्णन ॥	४६	४८
२१	शंखनादसे संपूर्ण कौरव भय प्राप्ति और उत्तर अधीरता और कौरव सेनापति बिचार बर्णन ॥	४८	४९
२२	कर्णकरके द्रोणाचार्य्य निन्दा और कृपाचार्य्य करके अर्जुन पूर्व बिजय प्रशंसा बर्णन ॥	४९	५१
२३	भीष्मादि बीरों से अश्वत्थामा करके अर्जुन युद्ध प्रशंसा और दुर्य्योधन निन्दा बर्णन ॥	५१	५२
२४	गोधन सहित दुर्य्योधन स्वपुर प्रस्थान समय अर्जुन करके गोमोचन और कुरु बीरोंसे महा युद्ध और कर्ण पराजय बर्णन ॥	५३	५७
२५	कर्ण सहित सर्व सेना पराजय और अर्जुन बिजय बर्णन ॥	५७	६०

अ०	विषय	पृष्ठसे	पृ-त-
२६	द्रोणार्जुन संग्राम और द्रोणपराजय और अश्वत्थामा अर्जुन संग्रामवर्णन ॥	६०	६३
२७	अर्जुन अश्वत्थामा संग्राम में अश्वत्थामा पराजय वर्णन ॥	६३	६४
२८	कर्ण अर्जुन संग्राम और कर्ण पराजय और विकर्ण दुःशासन आदिसे अर्जुन युद्ध और भीष्मपितामह और अर्जुन युद्धमें भीष्म पराजय वर्णन॥	६४	६६
२९	विकर्ण गज मारणानन्तरविकर्ण पलायन और दुर्य्योधन पराजय वर्णन ॥	६६	६६
३०	सर्व कुरु वीरों से अर्जुन युद्ध कर विजय प्राप्ति अरु कुरु मोहनानन्तर उत्तर करके कुरु वीर वस्त्राहरण और सह अर्जुन निजपुर आगमन वर्णन ॥	७०	७१
३१	अर्जुन रथ शस्त्रादि त्याग और पूर्ववत् उत्तर सारथी होना और विराट पुरागमन और आत्म विजय गोपनार्थ उत्तर सम्बोधन वर्णन ॥ ..	७१	७४
३२	विराट पुरमेंपांडवोंका प्रगटहोना और सपुत्र विराट करके पांडवबीरतावर्णन ॥	७४	७७
३३	उत्तरा के विवाहार्थ अर्जुन विराट सम्बाद और अभिमन्यु से विवाहका अंगीकार वर्णन ॥	७८	७९

इति

उद्योगपर्वसूचीपत्र।

१	श्रीकृष्णका विराट पुरमें आना और अभिमन्यु विवाह और श्रीकृष्णद्वारका गमन और संग्राम सहायार्थ सर्व भूप आह्वान वर्णन ॥ ..	१	५
२	दुर्य्योधन शिक्षार्थ द्रुपद पुरोहित गमन औरअर्जुन दुर्य्योधनका द्वारका गमन और श्रीकृष्णका अर्जुन सारथ्य और दुर्य्योधन को सैन्यदान वर्णन ॥	५	८
३	शल्य करके दुर्य्योधन वरदान और पांडव मिलन और युधिष्ठिर वरदान और इन्द्र करके त्रिशिरा बध वर्णन ॥	८	११
४	त्वष्टा के यज्ञ से वृत्रासुर जन्म और इन्द्र वृत्रासुर युद्धमें वृत्रासुर बध और इंद्र ब्रह्महत्याप्राप्ति वर्णन ॥	११	१३
५	सब देवन करके राजा नहुष को इंद्रपद प्रदान और नहुष भयसे शची गुरु गृह गमन और ब्रह्महत्या विभाग और इंद्र आगमन औरविजय वर्णन ॥	१३	१८
६	सर्वसुरगणसहितइंद्रका स्वपुर जाना औरवृहस्पतिकरके अभिषेकप्राप्तिवर्णन ॥	१८	१९
७	युयुधान चेदिराज धृष्टकेतु जयत्सेनादि राजाओंका धर्मसुतके पासआना और द्रुपद पुरोहित और भीष्मादि सम्बाद वर्णन ॥	१९	३३
८	हस्तिना पुरमें संजय आगमन औरराजाधृतराष्ट्रसे पांडव संदेशकथनवर्णन ॥	३३	३४
९	धृतराष्ट्र औरविदुरसम्बाद अरुपांडवराज्यदानार्थ बिदुरकरके नीतिवर्णन ॥	३४	४१
१०	राजाधृतराष्ट्रकोधर्म और राजनीतिकरकेपरमज्ञानीबिदुरजीकीशिक्षा वर्णन ॥	४१	४७
११	सनत्सुजात ऋषि करके राजा धृतराष्ट्र से धर्मशास्त्र राजनीति वर्णन ॥	४७	५०
१२	सनत्सुजात करके वेद पठन प्रशंसा और ब्रह्मतत्व बिचार वर्णन ॥	५०	५२
१३	गुरु प्रशंसा और धर्मआदि द्वादश गुण और ब्रह्मबिचार वर्णन ॥	५३	५४
१४	कामादि द्वादशदोष और सत्यादिद्वादशगुणऔर ब्रह्मप्राप्ति निरूपणवर्णन ॥	५४	५५
१५	ब्रह्मज्ञान निरूपण और योग प्रशंसा और वेदान्तमत निरूपण वर्णन ॥	५५	५८

अ०	विषय	पृष्ठसे	पृ-त-
१६	संजय करके अर्जुन संदेश और कर्ण भीष्म संबाद और संजय करके पांडव बीर गणना और दुर्य्योधन धृतराष्ट्र संबाद और केशव संदेशा बर्णन ॥	५८	६४
१७	दुर्य्योधनको धृतराष्ट्र शिक्षा और भीष्म प्रतिज्ञा बर्णन ॥ ..	६४	६७
१८	राजा युधिष्ठिर की सम्मतिसे दुर्य्योधन संबोधनार्थे श्रीकृष्ण गमन और श्रीकृष्णसे पांडव निजाशय प्रकाशन और द्रौपदी शोक बर्णन ॥ ..	६७	७१
१९	ससैन्य श्रीकृष्णहस्तिनापुरगमन और श्रीकृष्णबन्धनार्थ दुर्य्योधनसम्मति और दुर्य्योधनसभामेंकृष्णागमनऔरदुर्य्योधनगृहभोजनत्यागऔरबिदुरगृहगमनबर्णन॥	७१	७७
२०	श्रीकृष्ण बिदुर संभाषण और पुनः कुरुसभामें श्रीकृष्ण गमन और श्रीकृष्ण करके कौरव हितोपदेश बर्णन ॥	७७	८२
२१	अर्जक अमृतदान और गरुड़ गर्ब भंग और कण्वऋषि करके दुर्य्योधन शिक्षा और ययाति स्वर्गपतन कथा और दुर्य्योधन अभिमान निन्दाबर्णन ॥	८३	८०
२२	श्रीकृष्णकरकेपांडववीर्य्यप्रशंसापूर्वकभीष्मशिक्षाऔरदुर्य्योधनसभात्यागबर्णन॥	८०	८४
२३	श्रीकृष्ण बन्धनार्थ दुर्य्योधन सम्मति और श्रीकृष्ण क्रोध और बिराट रूपदर्शनऔरयुद्धार्थ कुन्ती श्रीकृष्णसम्मति औरश्रीकृष्ण बिराटपुरगमनबर्णन॥	८५	८६
२४	श्रीकृष्ण करके कर्ण सम्बोधन और कुन्तीकरके कर्णोत्पत्ति कथन और पांडव सहायार्थ सूर्य्यबचन अरु अर्जुन वधार्थ कर्णप्रतिज्ञा बर्णन ॥ ..	८६	१०३
२५	श्रीकृष्णबिराटपुरआगमनऔरकौरवचरिच औरकुन्तीसंदेशकथनऔर निजसेना बिभागऔरयुद्धार्थ दुर्य्योधनसंदेशप्रेषण और कौरवबधार्थ पांडव प्रतिज्ञा बर्णन ॥	१०३	११०
२६	अम्बा आदि कन्या हरण कथा अरु भीष्म परशुराम युद्ध और अम्बा बनगमन बर्णन ॥	११०	११७
२७	राजाद्रुपदको पुत्रार्थ बरदान और शिखंडीबिवाह और युद्धार्थ राजादशार्ण सेनाआगमनऔरशिखंडीबनगमनओ शिखंडीको यक्षकरके पुंस्त्वदान औरयुद्धार्थ कौरव पांडव उत्सुकता बर्णन ॥ .. .	११८	१२२

इति

भीष्मपर्वसूचीपत्र ॥

१	संजयबरदानऔरव्यासकरकेअशुभशकुनकथनऔरव्यासधृतराष्ट्रसम्बाद बर्णन॥	१	५
२	जंगमस्थावरपर्व्वतखंडनदीओसुरअसुरनिवासस्थानअरुजंबूवृक्षकथा बर्णन ॥	५	६
३	भारतवर्ष और द्वीप समुद्र प्रमाण और रवि शशि राहुकथा बर्णन ॥	६	१३
४	संजय धृतराष्ट्र सम्बाद और भीष्मरक्षणार्थे कौरवबिचार और भीष्म करके क्षात्रधर्म और पांडव सेना ब्यूहरचना और अर्जुनकरके दुर्गास्तुति बर्णन ॥	१३	१८
५-२२	श्रीकृष्णार्जुन सम्बादमें भगवद्गीता बर्णन ॥	१८	५०
२३	प्रथम दिवसयुद्धमेंश्वेतऔर शल्यमहायुद्ध और भीष्मकरकेश्वेतबधबर्णन ॥	५१	६१
२४	द्वितीय दिवस युद्धमें भीष्मार्जुन महासंग्राम और दुर्य्योधन शोच और श्रुतायु भीमयुद्ध और भानुमानबध बर्णन ॥ ..	६१	७१
२५	तृतीयदिवस युद्धमें दुर्य्योधन सेनापराजय और भीष्मप्रतिज्ञा और पांडव सेना बिजय बर्णन ॥	७१	७८

अ०	विषय	पृष्ठसे	पृ-त—
२६	चतुर्थदिवस युद्धमें शल्य अरु धृष्टद्युम्न युद्ध और भीम दुर्य्योधन और घटोत्कच भगदत्त महासंग्राम बर्णन ॥ ..	७८	८६
२७	पंचमदिवस युद्धमें सात्यकि द्रोणयुद्ध और भीष्मार्जुन युद्ध बर्णन ॥	८६	६५
२८	षष्ठदिवस युद्धमें भीम कौरव युद्ध और धृष्टद्युम्न बधार्थ दुर्य्योधन सम्मति और भीष्मार्जुन संग्राम और दुःकर्ण बध बर्णन ॥ ..	६५	१०२
२९	सप्तमदिवसयुद्ध मेंदुर्य्योधनऔरशल्यपराजयऔरयुधिष्ठिरभीष्मसंग्रामबर्णन॥	१०२	११२
३०	भीमऔर घटोत्कच दुर्य्योधनऔर भीष्मकृप भगदत्त अर्जुनमहायुद्धबर्णन॥	११३	१२६
३१	भीष्म शिखंडी युद्ध और अलम्बुष पराजय और युधिष्ठिर दुःख अरु भीष्म निकट गमन और भीष्मकरके पांडवजयार्थ निजबधोपाय कथनबर्णन॥	१२६	१३६
३२	दुश्शासन अर्जुन युद्ध अरु कौरवों करके भीष्म पितामह रक्षण बर्णन ॥	१३६	१५०
३३	शरबिद्ध भीष्म पतन और भीष्मनिकट कुरु पांडव आगमन बर्णन ॥	१५०	१५६

इति

द्रोणपर्वसूचीपत्र ॥

१	द्रोणाचार्य्य को सेनाधिपति बनाना और द्रोणार्जुन प्रथमदिवसयुद्धबर्णन ॥	१	१२
२	द्वितीय दिवस संग्राममें भीमसेन भगदत्त युद्ध और श्रीकृष्ण करके वैष्णवास्त्र ग्रहण और कर्णार्जुन युद्ध बर्णन ॥	१२	२८
३	द्रोणाचार्य्य करके चक्रव्यूह रचना और अभिमन्यु महाघोरयुद्ध और अभिमन्यु बध बर्णन ॥	२८	४१
४	मृत्यु उत्पत्ति और राजा युधिष्ठिर सम्बोधन और संजय आदिक सोरह नृप कथा अरु जयद्रथ बधार्थ अर्जुन प्रतिज्ञा बर्णन ॥ ..	४१	५४
५	द्रोणाचार्य्य करके दुर्योधन अभेद्य कवच दान बर्णन ॥ ..	५४	६४
६	अर्जुन करके अश्वजलपानार्थसरउत्पत्ति अरुभीमपुत्र करके अलंबुषबधवर्णन॥	६४	७०
७	दुर्योधन पराजय अरु राजा सुदर्शनबध और सात्यकि व्यूहप्रवेशबर्णन ॥	७०	६३
८	दुर्योधन द्रोण सम्बाद और कर्ण पराजय और भीम मूर्च्छा बर्णन ॥	६३	१०४
९	भूरिश्रवा करके सात्यकि कचग्रहण और अर्जुनकरके भूरिश्रवा दक्षिणभुजच्छेदन और सात्यकि करके भूरिश्रवा बध बर्णन ॥ ..	१०४	११५
१०	दुर्योधना युधिष्ठिर संग्राम और अश्वत्थामा बिजय बर्णन॥ ..	११५	१२३
११	युधिष्ठिर करके द्रोण पराजय और अश्वत्थामा करके कर्ण बधार्थ खड्ग ग्रहण और धृष्टद्युम्न अश्वत्थामा युद्ध बर्णन ॥ .	१२३	१३१
१२	घटोत्कच अश्वत्थामा युद्ध और भीम दुर्योधन महासंग्राम बर्णन ॥	१३१	१३६
१३	कौरवसैन्यमेंभीमार्जुनप्रवेश औरकर्ण धृष्टद्युम्नयुद्ध पुनःघटोत्कचबधबर्णन॥	१३६	१४६
१४	द्रोणाचार्य्य करके अर्जुनप्रशंसा और धृष्टद्युम्न और द्रोणाचार्य्य युद्धबर्णन॥	१४६	१५४
१५	धृष्टद्युम्न करके द्रोणाचार्य्य बध सुनके कौरव महाशोच पुनः अश्वत्थामा क्रोध और सात्यकि धृष्टद्युम्न युद्ध और शिवस्तुति बर्णन ॥ ..	१५४	१६७

संपूर्णम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

महाभारतदर्पणे ॥

विराटपर्वदर्पणः ॥

दोहा ॥ चिन्तामणिगणनाथके चरणकमल अभिराम । जिनमें श्रीसुख दा बसति सकल सिद्धिकी धाम ॥ सोरठा ॥ चौरे उर बनमाल लकुट मुकुट पट पीतधर । लखैं यशोमति लाल यह हियहर घन बनकबर ॥ जगत मूल जगदम्ब जग जनपालनि जगत मय । करैं बिंध्य अवलम्ब कृष्ण सहोदरि नन्दजा ॥ ममगुरु श्रीबलभद्र पंथ पयोनिधि शास्त्रके । देत अनेकन भद्र जासु चरण बारिज बरण ॥ श्लोकः ॥ नारायणनमस्कृत्य नरंचैवनरोत्तमं । देवींसरस्वतींव्यासन्ततोजयमुदीरयेत् ॥ जनमेजयउवाच ॥ दोहा ॥ मेरे प्रपितामह सकल बसिबिराटपुर माह । रहेगुप्त केहि भांति सो महाबीर नरनाह ॥ पतिब्रत धारिनि भागबर ब्रह्मबादिनी जौन । रहीगुप्त केहिभांतिसो द्रुपदसुता छबिभौन ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ज्यों बिराट पुरमें रहे प्रपितामह तव भूप । बर्षतेरहें कहत त्यों सुनहु गूढ़ धरिरूप॥ आश्रमसों चलि धर्मनृप भ्रातनसों इमिबैन । कहो तेरहों बर्ष यह गुप्त बसैं मति ऐन ॥ कहूं एक बसिये बरष हे अर्जुन बरबीर । गुप्त होयकै धारि कछु गूढ़वेष गंभीर ॥ अर्जुनउवाच ॥ धर्मराज बरदान जो तुमको दयो अनूप ताते फिरि ये जगतमों कोऊ न लखिहैं भूप ॥ कहत राष्ट्र हम बास तहँ सुखसों करिये जाय । गुप्तहोय रमणीय अति जहँ जन गण सुखदाय ॥ चेदि मत्स्य पाँचाल शुभदेश दशारण जौन । मल्ल शाल्वके नगर बर कुन्तिभोज पुरतौन ॥ और राष्टबहु बासके योग्यरुचै जहँ भूप । तहां बितावहु बर्ष यह धरिकै गूढ़ स्वरूप ॥ बसिबे कहो बिराटपुर धर्मराज भगवान । धर्मवान सो भूपहै नगर रम्य सुखदान ॥

मत्स्यबंश शुभशीलहै नृपबिराट बलवान। वृद्ध बदान्य सुवृत्त हैं प्रिय-बादी सुखदान॥ बसि बिराटपुरमें कछूकरिभूपतिको कार्य। गुप्तबितावैं बर्ष यहगूढ़ बेषधरि आर्य॥ युधिष्ठिरउवाच॥जौन कार्यकोकरौगे हमहिं कहौ सबतौन।मत्स्याधिपके नगरमें हेअर्जुनकरिगौन॥ अर्जुनउवाच॥ हेभूपति हमकरैंगे कौनभांतिसो कर्म। कौन कर्मकरिहैंगेभलीभांति नृपधर्म॥ मृदु बदान्य ह्रीमानहै धार्मिक बिज्ञ नरेश। आपु आपदा कष्टमें करिहौ कहा बिशेष॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सुनहु करैंगे जौनहम नृपबिराट पहँजाय। ताके ह्वैहैं सभासद बिद्याबुद्धिदेखाय॥ कंकनाम द्विजहोहिंगे अक्षनिपुण प्रियद्यूत। करिबश करिहैं भूपको सहित अमात्य अकूत॥ हमैं जानिबे बूझिहै जो बिराट मतिमान। हम कहिहैं नृपधर्मके हमहैं सखासुजान॥ कहा वृकोदर करहुगेतुम बिराटको कार्य। सो बिचारिकै कहहु तुम महा बीर मतिआर्य॥ भीमउवाच॥ करता कहिहैं पाकके हम बिराटसों भूप। हम ब्यंजन जानतबिरचि यथा स्वाद अतिरूप॥ दारु ल्याइहैं पाकहित हम बहुबिधि अतिमान। हम सुयुधिष्ठिर भूपके हैं औदनिक सुजान॥ कर्म अमानुष करैंगे हम बिराटको सर्ब। अरिप्रमत्त हम हनैंगे गहिहैं नाग अखर्ब॥ युधिष्ठिरउवाच॥ जासों ब्राह्मण होयकै पावक मांगो आय। खाण्डव बनके दहनको लखि सकृष्ण सुखदाय॥ तौन धनंजय अन्यको कैसे करिहै कर्म। जीतो जेहिराक्षस उरग एक सुरथते पर्म॥ बासुकि पन्नगराजकी हरी स्वसा अभिराम। तौन धनंजय अन्य को करीकौन बिधिकाम॥ सूर्य तापकरमें अधिक बिप्र मनुजमेंश्रेष्ठ॥ आशीबिष बिष-धरणमें अग्नि तेजमें जेष्ठ॥ उदधि दहन मधि श्रेष्ठहै बरषाकर परजन्य। नागनमें धृतराष्ट्र हैं ऐरावत गजगन्य॥ पुत्र प्रियनमें अधिकहै भार्या सु हृद सुनाहु। तथा धनुर्द्धरमें अधिक जिष्णु महाबर बाहु॥ इन्द्र सदृश श्रीकृष्ण को सखा धनंजय जौन। कैसे धनुगांडीवधर परकृत करिहै तौन॥ पांचबर्ष रहि इन्द्रके सदन माहबर बीर। दिब्य अस्त्र सिगरेलहे अरिबन दहनगँभीर॥ रुद्रन में द्वादश सदृश रबिसु तेरहौं जौन। बसु में ग्रहमें दशमसम शूरबीर बलभौन॥ महाबाहु ज्याघाते जासु कठिन बलपूर। जान सव्यसांची बिदितजिष्णु महाबल शूर॥ भटमृगगणको सिंहसो सुहृदप्रिया अतिआर्य। सो अर्जुन केहि भांतिसो परको करिहै

कार्य ॥ अर्जुनउवाच ॥ खंडहोय हम रहैंगे करत प्रतिज्ञा भूप । ज्याघर्षण को गुप्तकर सुनहु उपाय अनूप ॥ बलयबाहु भरि पहिरिकै मूदिलेहिंगे तौन । कुंडलधरिहैं काढ़िहम ज्वलित अर्कसम जौन ॥ कंबु बलयतेगुप्त ह्वै धरिहैं प्रकृति तृतीय । शिरोरुहणकी रचितकरि बेणीअति रमणीय॥ कहिहैं नाम बिहन्नला धरेखंडको भाव । नृपको अंतःपुर सकल हमकरि हैं सहचाव ॥ गीतनृत्य बादित्रके बिबिध बिचित्र बिधान । करिहैं शिक्षा नृपतिकी कन्याको सुखदान ॥ बहु बदान्यता भावके कहिकै बचन ललाम । रंजन करिहैं प्रजनको धारिबेष कुलधाम ॥ कृष्णाकी हम सखी हैं रही युधिष्ठिर धाम । पूछे नृपति बिराटसों हम कहिहैं अभिराम ॥ कपट वेष यहि भाँति धरि हम बसिहैं नृपधर्म । मत्स्यराज के धाममें सुख समेत अति पर्म ॥ वैशंपायनउवाच ॥ अर्जुन के इमि सुनि बचन धर्म नृपति सबिधान । पूछनलागे नकुल सों जानि सुमति सुखदान ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कहहु कहा करिहौ नकुल तहां जायके कर्म । शूरसुखी सुकुमार तुम दर्शनीय अति पर्म ॥ नकुलउवाच ॥ अश्वन के हम होहिंगे रक्षक तहँ चलिभूप । शालिहोत्र को ज्ञान है हम को सुनहु अनूप ॥ ग्रन्थिक अपनोनामकहि अश्वचिकित्सा मान । करिहैं हय रक्षणतहां कर्म पर्मसुखदान॥ भूपयुधिष्ठिर नकुलके सुनिकै बचन प्रमान । लगेकहन सहदेवसों जानि महामतिमान ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ तुमकरिहौ सहदेव तहँ जाय कौंनसोकार्य । नृपबिराटको करिसुखी बिहरहु जैसे आर्य ॥ सहदेवउवाच ॥ गोरक्षक हमहोहिंगे जानततौन बिधान । तंत्रिपाल हमकहैंगे अपनोनाम सुजान ॥ हमजानत गोगुण अगुण रोगचिकित्सा सर्ब । हमतब गोगणमें रहेभूपतिकाल अखर्ब ॥ हमचीन्हत हैंवृषभ सोमत्रजासकरिघ्रान । बंध्या नारीगर्भ धरिजनमें पुत्रसुजान । ऐसेहम रहिहैंतहां सुनहु भूपबरधर्म । हमैनकोऊ जानिहै गुप्ततथा बिधिमर्म ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ प्रियाहमारीभार्या प्राणहुते गुरुआर्य । तौनद्रौपदी औरको कैसे करिहै कार्य ॥ कछू नकरि जानतप्रिया बनिता जनको काम । पतिव्रता भूपतिसुता सुकुमारी अभिराम ॥ माल्यगन्ध भूषणबसन इनको जोपरिधान । जानतिहैं सोसुन्दरी कर्म न जानतिआन ॥ द्रौपद्युवाच ॥ सैरिंध्री हमहोहिंगी तासो कहिहैभूप । भूषण बसन सुमाल्यकी रचना करति अनूप ॥ भूपयुधिष्ठिर केभवन द्रुपद

सुताकेपास । रहत रही परिचारिका हमताकी मतिरास ॥ ऐसे हम ह्वै गुप्तकहि नृपबिराटसों बैन । महिषी सूदोष्णानिकट हम रहिहैं मतिऐन ॥ सो यशस्विनी करैगी मेरो रक्षणभूप । तुमको कछू न होयगो फेरिदुःखको रूप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कहति बचन कल्याणके तुम कुलजातापर्म । जानति पाप न साधमति स्थिरब्रत धारेधर्म ॥ दुहद हमारो पाय सुधि यथा सुखी नहिंहोय । कल्याणी तुमतथा कुरु रूप आपनोगोय ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ जौन जौनतुम कहोहै करहु कर्म तुमतौन । समाधान करि बुद्धिको हौ तुमसब मति भौन ॥ अग्नि होत्र रक्षण करौं पूरोहित मतिमान । जाय द्रुपदके नगरमें बासकरौ सुखदान ॥ इन्द्रसेन सूतन सहित रथलैकै मतिरास । जाय द्वारका पुरी में करौंबर्षभरि बास ॥ द्रुपद सुताकी सखीसब सुहृद भृत्यगणजौन । जाय द्रुपदके नगरमें बासकरौ सब तौन ॥ कहैंसबै तहँ हमनहीं जानत पांडवभूप । गयेबसे कहँजायकै कौनधारिकै रूप ॥ बैशंपायनउवाच ॥ मंत्रसुकरि अन्योन्य यों भिन्नभिन्न कहि कर्म । कहो धर्मसो धौम्यतब शिक्षाकीन्हों पर्म ॥ धौम्यउवाच ॥ रक्षित कीजो द्रौपदिहि तुम फाल्गुण सहभूप । बिदित तुम्हैं वृत्तान्तहै यथालोक अनुरूप । बहुतभांति के नीतिके धौम्यकहे बरबैन । सावधानसो रहहुगे धमनृपति मतिऐन ॥ बहुत भांतिके धौम्यके सुनिशिक्षाकेबैन । धर्मनृपति लागेकहन नीतिनिपुण मतिऐन ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ शीक्षित हममुनिवर भयेतुमसों बक्ताकौन । कुन्ती बिदुर समानहित हौ ममतुम मतिभौन ॥ अब करिबे जो कार्यसो करहुधौम्य तपधाम । दुःखहरण अरिपैचढ़न जयकारण अभिराम ॥ बैशंपायनउवाच ॥ ऐसेसुनि नृपधर्मके धौम्यमहा मुनिबैन । बिधिवत बिधिप्रस्थानकी कियोसुमंगल ऐन ॥ अग्निसमृद्ध सुकरि कियो होममंत्र पढ़िपर्म । जाते अचिर मिलै मही ऋद्धिबिजय यशधर्म ॥ प्रदक्षिणा करि अग्निको बिप्रनको नृपधर्म । चले सभ्रातन द्रौपदी को आगेकरि कर्म ॥ गयेतहांते धर्मनृप तबमुनि धौम्यबिशाल । बिप्रन सह कीन्हों गमन गयेदेशपांचाल ॥ इन्द्रसेन आदिकगये जहँयदुपति कोग्राम । शतऔदनिक भृत्यसब रथलीन्हें अभिराम ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ धर्मराज हमको दयो जेहिबिधिको बरदान । सुनहुजिष्णु तुमसोंकहतकरियेतथाबिधान ॥शास्त्रकबचनधारण किये ते पांडव बरबीर । सहित द्रौपदी गयेचलि कालिन्दी केतीर ॥ कूल

गहेदक्षिण चले यमुनाको तेबीर। देखनलागे देशगिरि दुर्गबिपिन गंभीर ॥ बासकरत घनगहनमें लखिगिरि दुर्गउदार। मारि मृगन को धनुर्द्धर निशिमें करतअहार ॥ करिउत्तर सुदशारणहि दक्षिणदिशि पांचाल। सूरसेनके देशमें चलेसुगुप्त नृपाल ॥ लुब्धक बोलत आपुको मत्स्यदेश केपाश। धरेशस्त्र पांडवगये बनेबधिक बलराश ॥ जनपदलखि कृष्णोकहो धर्म नृपति सोंबैन। छाममार्ग लखिपरतहै निकट मत्स्यपुर हैन ॥ आजुराति बसिये इहां हमको श्रमबलवान। यहसुनि अर्जुनसों कहोधर्मराज सुखदान ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ बीर धनंजय द्रौपदीको तुमलेहु उठाय। राजपुरी ढिगबसैंगे बनके बाहेरजाय ॥ बैशंपायनउवाच ॥ अर्जुन कृष्णाको लियो मृदुल अंकमेंधारि। चलिबिराट पुरके निकट क्षितिपर दियोउतारि॥ पुरप्रवेश धरिशस्त्र कहँ कीजे जिष्णु उदार। लखि सशस्त्र पुरजन हमैं करिहैं व्यग्रबिचार ॥ अर्जुन अतिगाण्डीवधनु जेहि जानत सबदेव। सहित शस्त्रजो करैंगे हम पुरमाहँ प्रवेश ॥ क्षिप्रहसैं सब जानिहैं पांडव मनुज नरेश। करिबे परिहैं फिरि बरष बारह बिपिन प्रवेश ॥ अर्जुनउवाच ॥ नदी कूलपरसमी यह बनसमीप अतिमान। दुरारोह घनशाख अति नीरेनगर मशान ॥ इहांदेखि नहिंपरतहै कहूं मनुजको रूप। धरतशस्त्र यापैंचढ़त जोनदेखिहै भूप ॥ यापैधरिकै शस्त्रसब कीजै नगर प्रवेश। ऐसे करिकै मंत्रते लहिभूपाल निदेश ॥ जिष्णुधरो गांडीव चढ़ि अक्षय जौन निषंग। जासोंजीतो असुरजे बज्रसार समअंग ॥ भीमनकुल सहदेव नृप सकल शस्त्र समुदाय। अपने अपने समीपर चढ़िकै राखजाय ॥ बैशंपायनउवाच ॥ समीमांह अवकाशहो तहां धनुषधरि बीर। तृणसों आछादित कियोशस्त्र सकल गम्भीर ॥ घनबर्षे भीजैनहीं शस्त्रदियो योंछाय। बांधोतरुसों एक सब अस्मशानसों ल्याय॥ जातेचढ़ैन मनुजकोउ समीवृक्ष परआय। सब शरीर बीभत्सलखि पूतिगन्धको पाय ॥ जयजयन्त अरुजयत बल जयत्सेन जयजौन। गुह्यनाम येधरतभे पांडवनृप बलभौन ॥ यथा प्रतिज्ञा नगर को चलो चलो जब भूप। बर्ष तेरहें बासको धरिकै गुप्त स्वरूप ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणेबिराटपर्वणि बिराटपुरनिकटपाण्डवप्राप्तिवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः॥१॥

जयकरी॥चलत बिराट पुरीकोभूप। धर्मनृपति धरिध्यान अनूप॥ सुस्तव करणलगेमतिरास। दुर्गात्रिभुवनेश्वरी तास॥ श्रीयशुदानन्दनिअभिराम। नारायणीकी प्रियाललाम॥ नन्दगोप कुलजाताजौन। बिंध्यबासिनी त्रिभुवन मौन॥ सुररक्षणि करकंस बिनाश। शिला परत जो गई अकाश॥ भारावत रणको इतआय। धरोद्धार कीन्हों सुखदाय॥ सुस्तव करणलगे तबभूप। दर्शन कांक्षाधरे अनूप॥ अथस्तोत्रम्॥ नमोस्तुबरदेकृष्णेकुमारि ब्रह्मचारिणि। बालार्कशदृशाकारेपूर्णचन्द्रनिभानने॥ चतुर्भुजेचतुर्वक्त्रे पीनश्रोणीपयोधरे। मयूरपिछबलयेकेयूरांगदधारिणे॥ भाषिदेवीयथाप द्मानारायणपरिग्रहे। स्वरूपंब्रह्मबर्षेचबिपदन्तवखेचरी॥ कृष्णछबिसमाकृष्णाशङ्कर्षणसमानना। बिभ्रतीबिपुलोबाहूशक्रध्वजसमुछ्रयो॥ पात्रीचपङ्कजीघण्टीस्त्रीबिशुद्धाचयाभुवि। पासन्धनुर्महाचक्रबिबिधान्यायुधानिव॥ कुण्डलाभ्यांसुपूर्णाभ्यांकर्णाभ्यांचविभूषितां। चन्द्रबिस्पर्द्धिना देविमुखेनत्वबिराजसे॥ मुकुटेनबिचित्रेणकंशबन्धनशोभिना। भुजंगाभो गबासेनश्रोणिसूत्रेणराजता॥ बिभ्राजसेबाबद्धेनभोगेनेवहमन्दरः। ध्व जेनशिखिपिछानामूछ्रितेनबिराजसे॥ कौमारंब्रतमास्थायत्रिदिवम्पाहि तंत्वया। तेनत्वंस्तूयसेदेवित्रिदशैःपूज्यसेपिच॥ त्रैलोक्यरक्षणार्थायम हिषासुरनाशिनि। प्रसन्नामेपुरश्रेष्ठदयांकुरुशिवाभव॥ जयात्वंबिजया चैवसंग्रामेचजयप्रदा। ममापिबिजयन्देहिबरदात्वंवसांप्रतं॥ बिंध्येचैव नगश्रेष्ठतपस्थामहिशाश्वतं। कालिकालिमहाकालिसीन्धुमांसपशुप्रिये॥ कृतानुयात्राभूतैस्त्वंबरदाकामचारिणि। भारावतरणेयेत्वासंस्मरिष्यन्ति मानवाः॥ प्रणमन्तिथयेत्वांहिप्रभातेचनराभुवि। नतेषांदुर्लभंकिञ्चित् पुत्रतोधनतोपिवा॥ दूर्गातारयसेदूर्गेयत्वदूर्गास्मृताजनैः। कान्तारेह्यव सन्नानांमग्नानांचमहार्णवे॥ दस्युभिर्बानिरुद्धानांत्वंगतिःपरमानृणां। जलप्रतरणेचैवकान्तारेष्वटवीषुच॥ येस्मरन्तिमहादेवींनचसीदन्तितेन रा। त्वंकीर्तिःश्रीर्धृतिःसिद्धिर्हीर्विद्यासन्ततिर्मतिः॥ संध्यारात्रिःप्रभानिद्रा ज्योत्स्नाकांतिःक्षमादया। नृणांचबन्धनंमोहपुत्रनाशन्धनक्षयं॥ व्याधिमृ त्युभयंचैवपूजितानाशइष्यति। सोहंराज्यात्परिभ्रष्टःशरणंत्वांप्रपन्नवान्॥ प्रणतश्चस्वयंमूर्ध्नातवदेविसुरेश्वरि। त्राहिमांपद्मपत्राक्षिसत्येसत्याभव स्वनः॥ शरणंभवमेदुर्गेशरण्येभक्तवत्सले। एवंस्तुताहिसादेवीदर्शयामा

सपाण्डव ॥ उपगम्यतुराजानमिदंबचनमब्रबीत्। देव्युवाच ॥ शृणुराजन्म हाबाहोमदीयंबचनप्रभा । भविष्यत्यचिरादेवसग्रामेंबिजयस्तव ॥ मम प्रसादान्निर्जित्यहत्वाकौरवबाहिनीं। राज्यनिष्कंटकंहत्वामोक्षसेमेदिनिंपु नः॥ भ्रात्रिभिःसहितोराजन्प्रीतिप्राग्स्यसिपुष्कलां। मत्प्रसादाच्चतेसौख्य मारोग्यंचभविष्यति ॥ येचसङ्कीर्तयिष्यंतिलोकेबिगतकल्मषः । तेषांतुष्टा मिदास्यामिराज्यमायुर्बपुःसुत ॥ प्रबासेनगरेबापिसंग्रामेशत्रु शङ्कटे। अट व्यांदुर्गकान्तारेसागरेगहनेगिरौ ॥ येस्मरिष्यंतिमांराजन्यथाहंभवतास्मृ ता। नतेषांदुर्लभंकिञ्चिदस्मिन्लोकेभविष्यति ॥ इदंस्तोत्रबरंभक्त्याशृणु याद्वापठेथवा। तस्यसर्बाणिकार्य्याणिसिद्धिंयास्यान्तिपाण्डवः॥ मत्प्रसा दाच्चवःसर्बान्बिराटनगरेस्थितान्। नप्राक्षस्यन्तिकुरवोनरावातन्निवासि नः। इत्युक्त्वाबरदादेवीयुधिष्ठिरमरिन्दमं ॥ रक्षांकृत्वाचपांडूनांतत्रैवांतरधी यते॥ इतिदुर्गास्तवः समाप्तः ॥ बैशंपायनउवाच ॥ रोला ॥ गयेप्रथम बिराट भूपतिपास राजाधर्म। बैदूर्य्यरूप सुकनक मंडित अक्षलीन्हें पर्म ॥ कहाभूप बिराट आवत देखि अद्भुतरूप। महानुभाव बिचारि मनमें भरो तेज अनूप ॥ अभूमण्डित यथा दिनमणि अग्निभस्म पिधान। लखोऐसे धर्मनृपको मत्स्यपति मतिमान ॥ लगेमंत्रिण पासपूछन नृपबिराट सुजान। कौनहैं एप्रथम आवत जासनहिं उपमान ॥ नहींरथ नहिंदास कुंजर सुभटसंग बलवान। मूर्याभिषेकित भूपहै को शक्रसम अतिमान ॥ चलेआवत पास मेरेमहा निर्भमरूप। यथासरसिज पासतारण मदोत्कट अतिरूप ॥ जाय भूप बिराटपै नृपधर्म बोलबैन। सरबस्व रहित सुहमहिं जानहु बिप्रहे मतिऐन ॥ रहोंचाहत पासतव नृपयथा कामउदार। कुरुनाथ के सुनि बचनभूप बिराटकिय स्वीकार ॥ प्रीतिकरि नृपधर्मपास बिराट बोलेबैन। कहांसो तुमइहां आये कहहु सो मतिऐन ॥ गोत्रकहिये नामअपनो सुगुण शीक्षित जौन। युधिष्ठिरउवाच ॥ धर्मनृप के सखाहैं हम बिप्रहे मतिभौन। बैयाघ्रपाद्य सुगोत्र जानत अक्षबिद्या मर्म ॥ कङ्कनामक बिप्रबिद्या द्यूतमें अतिपर्म ॥ संजयउवाच ॥ व्याघ्रलौं यमगिरैं तातं व्याघ्रपाद सुनाम। तासु कुलमें भयेतं बैयाघ्रपद्य सधाम ॥ नामअपनो नृपबतायो धर्मधुरंधर दक्ष। बिप्रसे सुबिशेष करिकै करैं सूरणस्वक्ष ॥ कियेपूर्ण बिशेष करिकै द्विजन को भूपाल। बिप्रयाते कह्यो आपुहि बीरबिज्ञ बिशाल ॥ कङ्कयमको

नाम याते कहोनिज अभिधान। धर्मभूप सुधर्मधर्मी महामेधावान ॥ विराटउवाच ॥ देतहैं हमतुम्हें बरजोहोय इच्छित बिप्र। द्यूतप्रिय हमबश्य तवतुम करहु शीक्षितक्षिप्र ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ हीनके सँगहोय कबहूं प्राप्त बाद न भूप। देहुबर मम जितनधन को शकैराखि अनूप ॥ विराटउवाच ॥ करैअप्रिय जौनतबसो बध्यहमसों क्षिप्र। जानपद जनजानि हैं सममोहिं तुमकोबिप्र ॥ होहुगेतुम सखा मेरे ममसमान समृद्ध। कहहुगे तुमजाहि ताको करहिंगे हमऋद्ध ॥ वैशंपायनउवाच ॥ पायभूप विराट को यहिभांति बर नृपधर्म। बसेताके पासतासों भयेपूजि पर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्वाक्षराभि
गामिनाश्रीबन्दीजनका।श्रीबाबि रघुनाथकवीश्वराहमजेनगोकुल-
नाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेविराट
पर्वणियुधिष्ठिरप्रवेशवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

वैशंपायनउवाच ॥ रोला ॥ भीमसेन सुपायअवसर गयेसिंह सामन। रहैं भूप बिराटजहँसह सचिव सुमति प्रधान ॥ लयेमन्थन दगडकरमें सहित दर्बीमाम। औदनिकको रूपधरि समसूर तेजस धाम ॥ बसन पहिरेस्याम गिरिसम अंगअति बलरास। देखि आवत भूपलागे कहन सचिवन पास ॥ सिंहसम अतिरूप आवत कौन यह बरबीर। पूर्वकबहूं लखो नहिं हम भरो तेज गँभीर ॥ करत यामेंतर्क हम कछु ठीकठहरतहैन। गन्धर्वपति कैहै पुरन्दर महाबल को ऐन ॥ कौन यह मम दर्शनार्थ सुचलो आवत बीर। जाय इनसों बूझिआवहु यथातत्व गँभीर ॥ सुनत बचन बिराट के उठिगये दूत सुजान। लगे बूझन भीमसों वृत्तान्त सुमति प्रमान जायभीम बिराट के ढिगदीन बोले बैन। बिरचि ब्यंजन सकल जानत सूदहम मतिऐन ॥ विराटउवाच ॥ सूदजानि न परतमोको सुनोतुम बरबीर रूपश्री सों भूपसे तुम बिक्रमालयधीर ॥ भीमउवाच ॥ नाम बल्लव धर्म नृपके सूदहैं हम भूप। बिरचि जानत पाक षटरस भरे स्वाद अनूप ॥ नहीं बलमें तुल्य ममकोउ युद्ध कर्म्म सुजान। सिंहगज गहिलेत हमतब होहिंगे सुखदान ॥ विराटउवाच ॥ पाकको अधिकार तुमको देत बल्लव सर्ब। नहीं तुमसों सदृशहै कोउ भूमिमांहअखर्ब ॥ महानसको पायकै

अधिकार बल्लव नाम। मये गुप्त बिराटके ह्वै सुहृद अति अभिराम॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउहितनारायणस्यात्मजाभि
गामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुल-
नाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणि
भीमसेनप्रवेशवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

रोला॥ चिकुर कुञ्चित करि सुग्रन्थित रचितबेणी पर्म। धरे दक्षिण पार्श्वपर अति असित लावे नर्म॥ एकपहिरे बसन कृष्णा मलिन सूक्ष्म अनूप। धारि सैरिंध्री समान सुआर्त अपनो रूप॥ देखि दौरे मनुज नारी लगीं बूझन आय। कौनहो कर्त्तव्य तुमको कहाहै शुभदाय॥ सैरिंध्रिहैं हमकहो कृष्णौ पास तिनके बैन। कियो चाहत कार्य्य सौंपै हमें जो सहचैन॥ गिरा सुनि अभिराम ताको रूप अद्भुत चाहि। कहत कोउन सुमति दासी अन्नबांछित ताहि॥ बिराटपत्नी कैकेयीही जौन सुमति ललाम। द्रुपदजाको लखो तेहिस्थित रही ऊपर धाम॥ भरी रूप अनाथ लखिकै बसनधारे एक। बोलि बूझो कौनतुम का करहुगी सविवेक॥ द्रौपद्युवाच॥ सैरिंध्रिहैं हम यहां आई जानि भूप सधर्म्म। कार्य्यताको करै सोपै हमें योग्य जो पर्म्म॥ सुदेष्णोवाच॥ तथा रूप न रावरो तुमयथा बोलति बैन। दास दासी लखे हम बहुभांतिके गुणऐन॥ निम्न गुल्फ सुसंहतोरू त्रीणि जासु गँभीर। पञ्चरक्त षडंग उन्नत हंस सर सम धीर॥ नाभि शब्द सुमनीषा गंभीर अति अभिराम। अधरकर पद जीभरक्त चखान्त सुखमाधाम॥ नासिका चख श्रवण नख अरु बर पयोधर ग्रीव। परम उन्नत अंगतेरे ये सुपरमा सीव॥ पीनतो सुनितंब उरसित कच सचिक्कन श्याम। सघन बरुणी बीम्बओष्ठी सुकटि हैनव क्षाम॥ गुप्तनाड़ी कम्बुग्रीवा बदन इन्दु समान। पुण्डरीक समान लोचन गन्धतन सुखदान॥ श्रीसदृश तवरूप राजित कहो हौ तुमकौन। भरी ऐसे रूपसों सति दिव्य दासी हौन॥ किन्नरी गन्धर्बि यक्षी अप्सरा सुरबाम। सचीकै तुम रोहिणी कै पन्नगी अभिराम॥ बारुणी कै दनुजजा कै ग्रामदेवी पर्म। कहहु इनमें कौनहो तुम रूपराशि सुधर्म॥ द्रौपद्युवाच॥ मानुषी सैरिंध्रि हमहैं द्रुपदजाके पास। रहतही शृङ्गार ताको रचतही सुखरास॥ अंगराग बिधान जानति माल्यरचना जौन। केशपास बिचित्र

बिरचति बसन भूषण तौन ॥ सत्यभामा द्रौपदीके रहतही हम पास । पाय आदर बसन भोजन भरी आनँदरास ॥ मालिनी यहनाम मेरोधरो तिन अभिराम। तौन तुम्हरे बसोचाहत हम सुदोष्णा धाम ॥ सुदोष्णाउवाच॥ राखिहैं हम शीशऊपर तुम्हैं अपने पास। भूप मोहित होयगो पै लखि तुम्हैं छबिरास ॥ येई मोहित राजबनिता तुम्हैं लखिकै सर्ब। पुरुषको नहिं मोहिहै लखि रूपराशि अखर्ब ॥ वृक्ष निष्कुटके हमारे देखिकै तव रूप। नमित शाखा भयेहैं ते लखहु चरित अनूप ॥ लखि अमानुष रूप भूपबिराट तो अभिराम। मोहिंतजि बश होहिंगे तव सर्वथा बशकाम॥ इहां आवहु तरल आयत लोचना बरबाम। तुमहिं लखि आशक्त को नहिं होयगो यहिधाम ॥ गर्भधारत कर्कटी ज्यों आत्म कारण नास। तथा हमको होयगो यहिधाममें तवबास ॥ द्रौपद्युवाच ॥ लभ्यहम न बिराट को नहिं अन्यके सहप्रान। गन्धर्ब मेरे पांचहैं पति सदा कारकत्रान ॥ और कोऊ चहै मोको पुरुष कामीचण्ड। आइकै ते देत ताको प्राणहारक दण्ड ॥ उच्छिष्टभोजन करैंगी नहिं धोइहैं हम पाव। अन्नबसन बिशुद्ध सों पति लहत मेरे चाव ॥ सहतिहैं हमदुःख ऐसो कछूपाय निमित्त। रहत ते पति पञ्च मेरे क्लेश पूरित चित्त ॥ गुप्त मेरी करत रक्षा सुपति मेरे तौन ॥ सुदोष्णाउवाच ॥ राखिहौं इमि रह्यो जैसे चहति तू छबिभौन ॥ वैशंपायनउवाच ॥ लहि सुदोष्णा सों सुऐसे द्रौपदी बिश्वास । गुप्त होय बिराटपुरमें बसी ताके पास ॥

स्वतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभि
गामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुल-
नाथेनकबिनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराट
पर्वणिद्रौपदीप्रवेशवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४॥

रोला ॥ गोपके धरि बेषको सहदेव अति अभिराम। गये भूप बिराट हैं तहँ महामतिके धाम ॥ जाय ठाढ़ेभये जेहां रहो गोधन ठाट । देखि अद्भुतरूप पठयो चार भूप बिराट ॥ देखि आवत सिंहसो चलि मत्स्य पति भूपाल। लगे बूझन कौनहौ का कियो चहत बिशाल ॥ नहीं देखो पूर्ब तुमको कहहु सत्य अवाद। लगे कहन बिराटसों सहदेव तब घन-नाद ॥ सहदेवउवाच ॥ अरिष्टनेमि सुबैश्यहैं हम धर्मनृपके पास। रहतहे

तहँ गोष्ठ रक्षण करत हे मतिरास ॥ बसो चाहत रावरेके पास हम सुनु भूप। नहीं जानत गये पाण्डव कौनदेश अनूप ॥ बिना कीन्हें कर्म लहत न जीवजन आहार । तुम्हें छोंड़ि न और हमको रुचत भूप उदार ॥ बिराटउवाच ॥ बिप्रके तुम क्षत्र सम्भव भूप क्षितिके सर्ब। कहहु सत्य न योग्यहै तव बैश्यता अति खर्ब ॥ कौन जानत कर्मकरि तुम सहित शीक्षा मर्म। कहा लेहौ कर्म्मकरि धन कहहु सो तुम पर्म ॥ सहदेवउवाच ॥ पांच पांडु सुपुत्र तामें ज्येष्ठधर्म सु रूप। आठशत सु सहस्त्र गोधन रहो ताके भूप ॥ तन्तिपाल सुनाम ताके रहे हम गोपाल। भूत भव्य भविष्य गोधन रहे लखत बिशाल ॥ संख्या सुगण अरु दोष जानत गउनको हमसर्ब। क्षिप्र गोधन कियो हम कुरुराजको सुअखर्ब ॥ दोहा ॥ जानत वृषभनको नृपति पूजित लक्षण जौन। बंध्या मूत्रघ्राणकरि जाको लहैं पुत्रको तौन॥ बिराटउवाच ॥ शतसहस्त्र सुबरण तुम्हें देहैं हम गोपाल। हम जानत तुम करहुगे मम गोगण सु बिशाल ॥ वैशंपायनउवाच ॥ राखो तहँ सहदेव को दे बर भूषण भूप। दयसौंपि गोपाल सब रहेजे पूर्ब अनूप ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभि
गामिनाश्रीबंदीजनकाशीबासिरघुनाथकवीस्वरात्मजेनगोकुल-
नाथेनकबिनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराट
पर्वणिसहदेवप्रवेशवर्णनोनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

वैशंपायनउवाच ॥ रोला ॥ लखो कङ्कुक बिलम्बमें नृप धरे बनितारूप। बसन भूषण कुण्डलादिक बलय पाणि अनूप ॥ छुटबार प्रलम्ब भुजपर मत्तनाग समान। करत गतिते भूमि कम्पित दिव्यरूप महान ॥ देखि आवत चलो भूपबिराट मानि अनूप। लगे बूझन सचिव सों यह कौन अद्भुत रूप ॥ नहीं देखो पूर्ब कबहूं पुरुष यह बलधाम। युवा बारण यूथनायक यथा उन्मद श्याम ॥ छुटी बेणी लसैं कुण्डल धरे भाल सुवेश। अंग जाके धनुष शरवर चर्म कैसे देश ॥ चलो आवत बेगि तासों जाय बूझो मर्म। जोहि चख मुद लहत सुतसम मोहि दायक शर्म ॥ सुनहुऐसे रूपकोनहिं होतक्लीव पुमान। बूझिल्याये सभासद नृप पासबीर महान ॥ अर्जुनउवाच ॥ गानमें अरुनाद्यमें हमबाद्यमें शरबज्ञ। सदृशनारद महामुनिके भूपजानहु तज्ञ ॥ कथनकीन्हें रूपमेरोशोकबर्द्धन

भूप। दियोचाहत उत्तराको तौर्यत्रिक अतिरूप॥ देहुआज्ञा करत मोहि बृहन्नला मतिमान। रूपयह मोहिं प्राप्त भो जिहि हेतुते दुखदान॥ सो नकहिबे योग्यमेरे हैं न माता तात। पुत्रजानो कैसुपुत्री मोहिं भूपति ख्यात॥ बिराटउवाच॥ देतहम बरदान तुमको बृहन्नला गुणधाम। करहुशिक्षा तौर्यत्रिककी सुताम अभिराम॥ नहीं तुमसम कर्मयह सुनु बृहन्नला मतिमान। आसमुद्र सुभूमि शासन योग्य तुमहिं महान॥ बैशंपायनउवाच॥ दियोभूप बिराटआज्ञा बृहन्नलाको चाहि। नृत्यगीत सिखाइबे में करि परीक्षित ताहि॥ युवतिजूह पठाय ताकी क्लीवता अजमाय। गुणिनपुंश कुमारिकाके दियोधाम पठाय॥ कियो शीक्षित जिष्णु ताको तौर्य त्रिक अभिराम। सखीसह परिचारिका नृप सुताके बसिधाम॥ बसे ऐसोवेष धरितहँ जायअर्जुन बीर। नहींजानो तहांकाहू तासुरूप गँभीर॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणिअर्जुनप्रवेशवर्णनोनामषष्टतमोऽध्यायः॥ ६॥

बैशंपायनउवाच॥ रोला॥बेषकैतव धरेआये नकुलतहँ नरनाह। जायलागे अश्वदेखन अश्वशाला मांह॥ अश्वदेखत देखिभूप बिराटपठयो चार। अश्वदेखत कौनहैयह दिव्य पुरुषउदार॥ कोऊ है अश्वज्ञ ल्यावहुबेगि मेरेपास। लेगयेते नकुलबोले बिजयमतिके रास॥ देहिंगे धनधामहूजै सूतमम मतिभौन। कहा हेहोकौन कहिये कर्म जानत जौन॥ नकुलउवाच॥ हैंयुधिष्ठिर भूपकेहम अश्वशीक्षक भूप। अश्वकेगुण दोषशीक्षा निपुणहम अनुरूप॥ हयचिकित्सा करतहैं बहुभांतिकी हमसर्ब। होत कातर नहीं मोते भयोशीक्षित अर्ब॥ कहतग्रन्थिक नाममेरो हेयुधिष्ठिर भूप॥ बिराटउवाच॥ अश्वबाहक रहैंगेमम बश्यतो अनुरूप॥ होइ बांछित तुम्हैंधन सोकहहु हेगुणधाम। तुरँग शीक्षायोग्य नहिंतुम भूपसे अभिराम॥ हमैं दर्शन नृपयुधिष्ठिर सदृशतो अतिपर्म। सहित भ्रातन्ह बसतकैसे बिपिन में नृपधर्म नकुलउवाच॥ जानि परत न रहत किमि ते बसत किहि बन माहिं। होयतिनबिन बिकल आयो भूप हम तवपाहिं॥ बैशंपायनउवाच॥ रहे ऐसे नकुल तहँ गन्धर्बरूप समान। हृदयचोरी कियो ताहि बिराट

भूप सुजान ॥ बसे ऐसे सकल पांडव मत्स्यपति केपास। गुप्तह्वै पण पालिबे कोधर्मधुर बलरास ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभि गामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगो- कुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराट पर्वणिनकुलप्रवेशवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः॥ ७ ॥

जनमेजयउवाच ॥ गेला ॥ छुप्तहवै यहिभांतिसो बसि सकलपांडव बीर। मत्स्यपुरमें कियोआगे कौनकर्मगँभीर ॥ बेशंपायनउवाच ॥ मत्स्यपतिकेपास बसियहि भांतिकारय जौन। कियोपांडव कहतहैंसो सुनहु भूपतितौन ॥ सभासद ह्वैनृप युधिष्ठिर मत्स्यपतिको अक्ष। भलीभांति खेलाय अति प्रियभये भूपतिदक्ष ॥ जीतिभूप बिराट सों बसुदेत भ्रातन तौन। भीम भक्ष्यसु बचत अधिकीमास आदिक जौन। ॥ धर्मनृपके पासबेचत लेत सोधनभूप। गुप्तह्वै यहिभांति करतमिलाप मिसि अनुरूप ॥ बसनजीरण लहत अर्जुन कन्यकन सोजौन। जायकै सब पांडवनके हाथ बेचत तौन ॥ गोपकेधरि बेषको सहदेव दधिपय पर्म। आयकै देजात हैं चलि पास भूपतिधर्म ॥ नकुलको धनदेत जौनबिराट होयप्रसन्न। आयकैसो देतपांडव राजको सम्पन्न ॥ चरति कृष्णापास तिनकेगुप्तह्वै अभिराम। यहिभांतिसो सबबसे नगर बिराटके मतिधाम ॥ रहत हैं धृतराष्ट्र सुत के भरेशङ्कासर्ब। रहत देखत द्रौपदीको भयेगुप्तअखर्ब ॥ भयोचौथे मास तेहां ब्रह्मनाम समाज। मल्लआये चहूंदिशिके द्विरद कैसेराज ॥ तगडुलादिक सरदऋतुमें अन्ननूतन होत। कहूं ब्रह्माको सुउत्सव करत भूमें घोत ॥ भयोचौथे मासतेहां तौनउत्सवभूप। मल्लआये तत्रचहुंके भयानक सुकुरूप ॥ तिन्हैंभूप बिराटपूजो सहित बिहित बिधान। बीर्यसों उनमत्त अतिबल सुमति सिंहसमान ॥ लहोबहुतनसों बिजयते मल्लभूपति पास। आइकैसब जुरेअतिबल महा मति केरास ॥ मल्लहो एक महाबल तेहि कियोतहँ मदनाद। नहींतासो सकेकरि कोउ मल्लयुद्ध बिवाद ॥ भये बिमनस मल्लसिगरे गयेमनमें हारि। तेहिलरायो भीमसो नृपमहाबल निरधारि ॥ भीम नहिं उत्साह कीन्हों युद्ध को बलवान। प्रगट ताको मानिकै भयशिथिल सिंहसमान ॥ बांधिकक्षा भीमकीन्हों मल्लको आ-

ह्वान। जीमूतजाको नामचहुंदिशि ख्यात अतिबलवान॥ दोऊअतिबल भरेदोऊ उतसाह सोंगम्भीर। मल्लविद्या निपुण दोऊ युद्धमें बरवीर॥ दाँव नानाभांतिके दोउकरत जीतिबिचारि। जानुजंघा भुजनसों दोउलरे बर बलधारि॥ भरेअति उत्साह सो मदमत्त गजसे बीर। कृतप्रतिकृत करत दोऊ भुजन सों गम्भीर॥ मुष्ठिसों अरु तलनसों हनि बज्रघात-समान। तुमुल दारुण युद्धतिनसों भयो युद्ध महान॥ वृत्रबासव सेलरे दोउबीर अतिबलभौन। परसपर दोउकरतभर्त्सन गरजिकैअतितौन। भुजनसों तहँभीम लीन्हों पकरि ताहिउठाय। डारिदीन्हों भूमिपै शतबार उर्द्धफिराय॥ मरदिमारो भीमताको भरोभीम अमर्ष। मरोलखि जीमूत मल्लबिराट पूरेहर्ष॥ दियोभूप बिराट बहुधन भीमको सुखदान। और मल्लनको दियोबसु भूपधनद समान॥ भीमतुल्य न पुरुषकोऊ औरपावत उद्ध। सिंह ब्याघ्रनसों करावत लखै महिषीयुद्ध॥ महाबलते भीम अर्जुन तौर्यत्रिकसों पर्म। सहित महिषी कियोभूप बिराट कोसहशर्म॥ तुरँग शीक्षानकुल भूपहि बिबिधिभांति देखाय। तुष्टकरिकै मत्स्यपतिको लियोधन समुदाय॥ देखिवृषभ बिनीत सिगरो पुष्ट गोधन भूप। मत्स्यपति सहदेवको धनदियो बहुतअनूप॥ द्रौपदी यहिभांति तिनकोदेखिक्लेश महान। होति है न प्रसन्न श्वासा लेतिरहित सुजान॥ यहिभांति गुप्त बिराटपुरमें बसेपांडव पर्म। करतभूप बिराटकेसब यथानियमित कर्म॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणिजीमूतबधवर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

बैशंपायनउवाच॥ रोला॥ बसतऐसे मत्स्यपुरमें गुप्तपांडव सर्ब। बीतिगे दश मास बाकीबर्ष रहिगो खर्ब॥ द्रौपदी करिकै सुदोष्णाको सुशुर्षण कर्म। रहति ताकोकरत सेवनकरे दुःखितमर्म॥ बसै अंतःपुरीमें बरबाम जौन सुजान। द्रौपदीको करैंते सब भांतिसों सनमान॥ भूपको सैनेश कीचक महाबल को धाम। द्रौपदी को देखिकै सोभयो मोहित काम॥ चित्तमेंधरि द्रौपदी को गोसुदोष्णा पास। कहनऐसे लगोतासों बचन लीन्हेंहास॥ पूर्बकबहूं लखीनहिं यहरूप कैसीधाम। करति है उनमादि

मेरेचित्तको बशकाम ॥ कहुसुदोष्णा कौनहै इतकियो कहँते गौन। करति बशमथि चित्त मेरो तास औषध तौन ॥ यहसुदोष्णा रावरीपरिचारिका अभिराम। योग्य भूषित करणके यहऋद्ध मंशोधाम ॥ लेसुदोष्णा की सुआज्ञानीच कीचक तौन। जायसिंहनि पासजम्बुक तथातहँ कियगौन ॥ लगोकृष्णा सों कहन यहिभांति सस्मितबैन। इहांआई कहांते तुमकौन हौ छबिऐन ॥ चन्द्रबदनी कहहु हमसो सत्यसो अभिराम । भरीपरमा कांतिसो सुकुमार ताकोधाम ॥ कमलनयने अंगतो सब बशी करकेयंत्र। चारुहासिनि सुधासे तबबचन मोहनमंत्र ॥ नहींतुमसी लखी भूपरभरी सुखमाबाम। देवियक्षी किन्नरी कै श्रीसची अभिराम ॥ कान्तिसों अति भरा तुम्हरो लखत बदन अनूप। करैगोनहिं स्वबशकाको महामन्मथ भूप ॥ हारयोग्य सुसद्यउन्नत कनककुम्भ समान। करत उरसिज रावरे अतिब्यथित कठिन महान ॥ लसति त्रिबली भंगसी दबिधरे उरसिज भार। उदरछाम गँभीरनाभी लंकतनु सुकुमार ॥ सरित पुलिन समान जंघा सघनपीन अलोम। मदनरोग अमोघ कारण अंगतो छबितोम ॥ बढ़ीहै मदनाग्निमेरे अंगमें अतिरूप। शांति संगमहै तिहारो सुन्दरीसु अनूप ॥ आत्मदान सुवृष्टि कारक जलद संगम जौन। रावरो मदनाग्नि सामककरो शीतलतौन ॥ करहु मेरेसंग सुन्दरि सौख्यको अभिराम। जानपान बिधान भूषण बसन सों छबिधाम ॥ प्रथम बनितन तजैंगे हम संग मेरेजौन। दाससे हमबसैंगे तवपासहे छबिभौन ॥ द्रौपद्युवाच ॥ नहीं तुमहिं समान हैं हमसुनहु कीचकपर्म। सैरिंध्रि हूवैहम करति हैं नित भृत्यकारक कर्म ॥ नहींतुमको योग्यहम परदार हैं सुनबीर। प्रिया प्राणिनकों सुदारा धरहुधर्म गँभीर ॥ करहुमति परदारमें तुम कबहुंबुद्धि अनीति। कामबश नर लहत हैं ध्रुवप्राण अन्तिकभीति ॥ वैशंपायनउवाच ॥ द्रौपदीके बचनसुनि यहिभांति कीचकपर्म । जानिमातन दोषको नहिं लोक निन्दितकर्म ॥ द्रौपदीसों कह्योऐसे कहहु तुम नहिंबैन। बाणबिद्ध त्वदर्थमोको कियोस्मर छबिऐन ॥ भयोबश प्रियबचन बादीछोड़ि ऐसो मोहि। नियत पश्चात्ताप सुन्दरि होयगो फिरितोहि ॥ सुनहुहम यहिराज्य के प्रभुत्राण कारकबीर। नहींमोसम भूमिपै कोउभरो सुबल गँभीर ॥ रूपयौवन भाग्य भूषित भोगकर अभिराम। करहु ममसँग भोगतजि

दासित्वहे छविधाम ॥ राज्ययह ममदत्त याकीहोहु स्वामिनिपर्म । भोग नानाभांति के करुमोहिं भजु सह शर्म ॥ द्रौपदी यहिभांतिके सुनिसूत सुतकेबैन । करत निन्दित ताहिबोली बचनशत मतिऐन ॥ द्रौपद्युवाच ॥ सूतसुत नहिंमोहि करिकै तजहु जीवनसर्ब । करत रक्षणपञ्च पतिमम महाबल गन्धर्ब ॥ नहींकीचक लभ्यहै हमतुम्हें छोड़हुमोह । हनैंगें गन्धर्ब तुमको महाबल करिद्रोह । गगनमें पातालमें तुमगयहु सागरपार। नहीं तिनसों बचहुगे सो महाबल खेचार ॥ कालरात्री सदृश कीचक करत बांछितमोहि । गहो चाहत चन्द्रमा को यथाबालक जोहि ॥ चहत अप्रियकियो तिनको मूढ़तुमसोंजौन । गगनगत पाताल में नहिं बचत तिनसोंतौन ॥ बैशंपायनउवाच ॥ बचन ऐसेद्रौपदी के सुनिसो कीचकबीर। चलि सुदोष्णापै गयोअति माहमग्न गँभीर ॥ कहोसैरिंध्री भजैजेहि भांति मोकोतौन । कहहुसो सोउपाय भगिनी चतुरतुम मतिभौन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ सुनिसुदोष्णा बचन ताकेभरे बहुत बिलाप । दियोमहिषी मंत्रताके कृपासहित अमाप ॥ कोऊ उत्सव में सुरासह अन्नको समुदाय देतममकरि तात राखहु सदनमाह बनाय ॥ सुरालीबे पठैदेहैं ताहि तुम्हरेपास । मधुरकहिकै बचनकीजो ताहिबश मतिरास ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ श्वसाकेसुनि बचन कीचकजाय अपनेधाम । सुरासह बनवाय ब्यंजन धरेअति अभिराम ॥ कार्यको करिमंत्र राखोजौन कीचकपास । राखिमन में द्रौपदी सों कहोतौन प्रकास ॥ सुदोष्णोवाच ॥ जाहु सैरिंध्री उठहु तुम बेगि कीचकभौन । पानइच्छा मोहिं ल्यावहु सुराउत्तम जौन ॥ सैरिंध्युवाच ॥ जाहिगीं हमनहीं महिषी सुनहु कीचकभौन । तुम्हैंहैसब बिदित जोसो निलज कामीतौन ॥ करैंगीतव धामके जेकामहैं अभिराम । तुम सुजानतिजौन कीचक करैहै ममकाम ॥ रावरे के भौनमें तेहिकहो हमसोंजौन । कामबश सो होयगो लखिमोहिं दुर्मतिभौन ॥ हैंसुदोष्णा रावरेके बहुत दासीदास । तिन्हैं पठवहु जाहिलीबे सुरा कीचकपास ॥ सुदोष्णोवाच ॥ नहींकीचक कहैगोकछु निलजताके बैन । ममपठाई जानितुमको सो महामति ऐन ॥ दियोयह कहिकै सुदोष्णा कनक भाजन आनि । चली शङ्काभरी कृष्णा कुमति ताकीजानि ॥ सैरिंध्युवाच ॥ पतिन्हतजि ममऔर नरमेंजाय मानसजौन । सत्यसा तिहिमम न बशकर होयकामी तौन ॥

वैशंपायनउवाच ॥ भानुको तबकियो राधन द्रौपदी मनलाय। जानि दिनमणि दुखित कृष्णहि कृपाकर सुखदाय ॥ दियेराक्षस दोयरक्षण हेतगुप्त अखर्ब। रहत कृष्णासाथ राक्षस समयमें तेसर्ब ॥ त्रस्ति आवति मृगीसी लखिभरो कीचकचाव। उठोपुलकित होयज्योंलहि पारगामी नाव ॥ कीचकउवाच ॥ भयोसुन्दर आगमन तो मोहिं दायकशर्म। स्वामिनी है रहहु ममकरि भवन भूषितपर्म ॥ बसन भूषण दिव्यमणि मयधारि कै अभिराम ॥ बसहुमेरी सेजपर यहरचित जौनललाम। पिवहु मदिरा माधवी ममसंग रूपनिकेत ॥ द्रौपद्युवाच ॥ मोहिं पठयो राजमहषी सुरा आननहेत॥ पानकीन्हों चहति आतुर ह्वै पिपासामान ॥ कीचकउवाच ॥ रहहु सुन्दरि औरजैहैं सुराले सुखदान ॥ द्रौपद्युवाच ॥ होय पतिव्रत सत्यमेरो कृष्णदेव यशस्य। तौनकीचक महापापी करैमोको बस्य ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ बोलिकै यहिभांति कीचकगहो दुपटातास। रहीक्षणक बिसूरि कृष्णा ऊर्द्ध लैकै श्वास ॥ दियोताहि ढकेलि कृष्णै कटोतरुसो तौन। गिरोकीचक भूमि ऊपर महाबल को भौन ॥ कम्प पूरित द्रौपदी तेहिधूमि ऊपरडारि। धर्म नृप जहँ हेगई तहँभाजि शरण बिचारि ॥ भजीकृष्णहि जातकीचक केशपकरो जाय। लखत भूपति धर्मकेकिय चरण घातगिराय ॥ दोय राक्षस रक्षणारथ दियेहे जेभान। बेगसोंतिन आइमारो कीचकहि बलवान ॥ कटो तरुसो गिरोकीचक दुष्टक्षितिपर तौन। घूमिकैहत चेतपापी महाबलको भौन ॥ लखो खैंचत द्रौपदीको चिकुर सूतकदुष्ट। धर्मनृप सहभीमको अति क्रोध बाढ़ोपुष्ट॥ कियो कीचकको चहोबध देखिताको कर्म। क्रोधज्वाला ते कढ़ीतन धूमधारा पर्म ॥ दाबिचरण अंगुष्टसों नृपधर्म अँगुठातास। कियो वारण समयको लखि महामतिके रास ॥ बैठिकृष्णालगी रोवन सभाके रहिद्वार। दहोचाहति षखनसों लखिभरी क्रोध उदार ॥ द्रौपद्युवाच ॥ नहीं सोवत शत्रु जाके भीति भारेसर्ब। तासमहिषी चरणसों यहहनै कीचक खर्ब ॥ सुनत जाके धनुषकी धुनितजत हे अरि गर्ब। तास महिषीचरण सोंयह हनै कीचक खर्ब ॥ डरत जिनसों मनुज राक्षस दनुज अरु गंधर्ब। तास महिषी चरणसों यह हनै कीचक खर्ब ॥ शरणअर्थी जननको हे शरणदायक जौन। लोकमें अप्रगट अतिरथ करत है ते गौन ॥ सूत सुततें सतीभार्य्या बध्यमान निहारि। क्लीवसे ते छोड़ि अमरष रहेका निरधारि॥

गयो तिनको तेज अमरष कहँ प्रबलता तौन। दुष्ट धर्षित प्रिया भार्य्या लखत नहिं बलभौन ॥ कहा मेरो शक्यभूप बिराट दूषित धर्म। कछू कीचक सों कहैं नहिं देखि तासु कुकर्म ॥ सभामें तब लखत भूपति मोहिं कीचक आय। तुम्हैं योग्य न कियो मोको लातघात गिराय ॥ द्रौपदीके बचन सुनि यहिभांतिके बहुभूप ॥ बिराटउवाच ॥ बिदितहै तिय दुहुनको नहिं हमैं बिग्रह रूप ॥ बैशंपायनउवाच ॥ जानि बिग्रह हेतुतहँजे रहे सभ्य सुजान। सूतको करि निंद्यपूजो द्रुपदजहि सनमान ॥ सभ्याऊचुः ॥ कमल नैना उत्तमांगी प्रियाहै यहजास। लाभ ताको और कायह देवताया पास ॥ बैशंपायनउवाच ॥ देखि पूजत सभाजन लखि द्रौपदीके खेद। क्रोधसों नृपधर्मके भेभाल भूपित खेद ॥ द्रौपदीसों कहो तबइमि बचन भूपति धर्म। जाहु सैरिन्ध्री सुदोष्णा सदनहै जहँपर्म ॥ तोहिंरोदन करत पावत क्लेशते पतिबीर। क्रोधको नहिं समय याते रहत धारे धीर ॥ नहींधावत महाबल पतिजौन तो गन्धर्ब। नहीं जानति कालको तुम करति रुदन अखर्ब ॥ करैंगे गन्धर्ब तेरो जौन प्रियहै तौन। दूरि करिहैं दुःखतो सैरिन्ध्रिते बलभौन ॥ सैरिंध्र्युवाच ॥ महा दायावान जिनके अर्थ धर्म्माचरण। करतिहैं मेंहोय ताकेहाथ अप्रिय मरण ॥ गईकहि यहि भांति कृष्णा जहँ सुदोष्णाभौन। केशकूटे अरुणालोचन सजलबिह्वल गौन ॥ सुदेाष्णोवाच ॥ करो सैरिंध्री तिहारो कौन अप्रिय कर्म। करांत हौ तुम रुदन जाते ब्यथित कीन्हें मर्म ॥ द्रौपद्युवाच ॥ सुरालीबे आपु पठई मोहिं कीचक धाम। भूपसोहें सभामें मोहिं हनो तेहि गहि बाम सुदेाष्णोवाच ॥ मारिहैं हम कीचकहि जेहि कियो तो अपमान ॥ सैरिंध्र्युवाच ॥ बधैंगे अपराध जिनको कियो सूत महान ॥ बैशंपायनउवाच ॥ द्रौपदी हत सूतसों बध चाहिताको भूप। बसतही तहँगई कृष्णाधरे दुःखित रूप ॥ स्नानकरि प्रक्षाल्य कै पठ सलिलसों अति आर्य्य। लगीचिंतन जाउँ कहँ किमि होय मेरोकार्य्य ॥ चिन्तियों मनदियो कृष्णै भीममाहँ गँभीर। कार्य्य मेरो करैंगे प्रियभीम अति बलबीर ॥ चिन्ति ऐसेछोड़ि शय्या निशा बीते याम। चाहि नाथसो गई कृष्णा भीमके छबिधाम ॥ सैरिंध्र्युवाच ॥ तौन पापी जियत निद्रा लहत कैसे बीर ॥ बैशंपायनउवाच ॥ यहि भांति कहिकै भीमके गइ भवनमाह गँभीर ॥ लखो सोवत भीमको

मृगराजसो अभिराम। लसतताके तेजसों अतिभरो सिगरो धाम ॥दोहा॥ गई द्रौपदी पाकगृह जहांभीम बरकाय। यथा सिंहनी सिंहढिग जंबुक को डरपाय॥ आलिंगन करि भीमको कृष्णै दयो जगाय। यथा मत्त गजराजको करिणी शंकित काय॥ कहे मधुर स्वरसोंभरे श्रवण सुधासे बैन। उठहु उठहु सोवत कहा भीमसेन बलऐन॥ उठि बैठे गजराजसे भीमसेन बलबीर। कहन द्रौपदीसों लगेबचन सनेह गँभीर॥ कौनहेत आई इहां कहहु सुन्दरी तौन। देखि परतिहौ कृश कछू भरी दुःख छबि भौन॥ कहहु सकल सुख दुःख तुमहित अनहित कृतमर्म। यथा योग्य हम जानिकै तैसो कीजेकर्म॥ है मोमें बिश्वास तव कृष्णा परमउदार मोचन हम तुम्हरो कियो आपतमें बहुबार॥ शीघ्र कहहु कारज कहा कहा बांछित तौन। जाहु सख्यनको नहिंजगै जबलों कोउ छबिभौन॥ ॥ द्रौपद्युवाच ॥ भूप युधिष्ठिर जासुपति कहँअशोचता तास। जानततुम सब मोहिंका बूझतहो मतिरास॥ दासो मेरो नाम कहि तास मृत्यगण जौन। सभासदन में कहतहैं जारत मोको तौन॥ पार्थिवदुहिता ममस-दृशकौन जियैगीधीर। करि अनुभव यहिभांतिको दुखपरिभव गंभीर॥ दियो दुःख बनबासमें मोहि जयद्रथ जौन। ऐसो परिभव सहैगो और मोहिंबिन कौन॥ नृप बिराटकी सभामें कीचक दुष्ट सुभाय। लखतयु-धिष्ठिर भूपके खैंचो मोको आय॥ कीचकनाम बिराटको सेनानीहैजौन। सैरिंध्री मोहिं लखि कहत भार्य्या हूबेतौन॥ बचन तासु बधयोग्यसुनि हृदय बिदारत मर्म। श्याला तौन बिराटको महानीच करकर्म॥ भ्रातृ ज्येष्ठ जो द्यूतरत भर्त्सन कीजै तास। प्रगटो जाके कर्मते यह अनंतदुख रास॥ नष्टकरो ऐश्वर्य सो तुम्हैं बिदित है तौन। द्यूतकर्म जाके प्रबल भीमसेन बल भौन॥ जाको अति ऐश्वर्यसो इन्द्र कुवेर समान। कहत दानधारा लखो वह तुमजास महान॥ नृप बिराटके अनुगते भये धर्मनृप आय। द्यूत खेलावत सभामें बिप्र कंक कहवाय॥ इन्द्रप्रस्थ में जासु लहि समय सभामें भूप। देतरहे करआय तेहिधरो भृत्यको रूप॥ हैप्रिय पृथिवीपाल सब बसतरहे बशजास। बसत सोबिबश बिराटढिग सार्व भौम बलरास॥ तापित करि पृथिवी सकल रश्मिवान समरूप। सोबि-राटको सभासदभयो युष्ठिरभूप॥ जिहि सेवतहे भूपगण बिप्रवृन्द्र तप

भौन। भोबिराटको प्रियंबद नृपति युधिष्ठिर तौन॥ यहि बिधिनाना दुःखसोंपीड़ित बिकल अधीर। शोकार्णवमें मग्नमोहिंदेखत कहानबीर॥ करत असूया मनैमन सुनि दुःखित ये बैन। सूदकर्म असमय लहे भये हीन बलऐन॥ बल्लभ कहत स्वजाति जन शोक होत सुनिमोहिं। कारक भूप बिराटके जानतहैं सबतोहिं॥ सिद्धपाकसुनि भोजनहि नृपबिराट जबजात। बल्लभ तुमको कहततब मोमें दुख न समात॥ महिषसिंह गजसों तुम्हें जब लरवावत भूप। लखैं सुदोष्णा तबचढ़ै ममहियमें दुख जूप॥ तुम्हैंलखति यहिभांति दुख निधि महँमग्न गँभीर। करति नहीं उत्साहतब जीवनमें हमबीर॥ देव सुदानव मनुजको जेता जो बलभौन। नृप बिराटकी कन्यकहि नृत्य सिखावत तौन॥ तृप्तकरो जेहि पावकहि खांडव बनकरि दाह। सो अंतःपुरमें बसत बलसोंभरो अथाह॥ ज्याघर्षणते कठिन अति करिकरते अतिचण्ड। शंखबलय भूषित् करे सो अर्जुन भुजदण्ड॥ जाके धनु टंकारको सहत न हे अरिमाम। गीत नादताको सुनै अंतःपुरमें बाम॥ भानु समान किरीटसों भूषित मूर्द्धा जास। ताअर्जुनके शीशपर बेणीकरति बिलास॥ गीता॥ जो समस्त दिव्यास्त्रबेत्ता युद्ध जेता बङ्क। जिष्णुविद्या भवन धारण कियेसो ताटङ्क॥ दोहा॥ जाके रथके घोषते सहगिरि कानन सर्व। स्थावर जंगम भरी भू कांपत रही अखर्व॥ जाके जनमतही भयो कुन्ती शोक बिमोच। भीमसेन तुव अनुज सो हमैं बढ़ावत शोच॥ जासम उर्वीपै नहीं और धनुर्धर धीर। कन्यन मधिसो करत है गान धनंजय बीर॥ तथा देखि सहदेव को गोगण मध्यगँभीर। पांडुवेष सूरज भरो बली बर्दसों बीर॥ पुनः पुनः सहदेव को समुझि समुझ बिरतान्त। भीमसेन नहिं निशा में निद्रा लहति नितान्त॥ नहिं जानति सहदेव को दुष्कृत कीन्हों जौन। जाते यहिबिधिको लहतदुःख महामति भौन॥ भीमसेन अतिदुखलहति लखितवभ्राता बीर। वृषसोकियो बिराटनृप गोगणमाह गँभीर॥ मधुर बाक लज्जाभरो ममप्रिय धार्मिक जौन। भूपभक्त सुकुमार अतिशूर सत्य मतिभौन॥ यहकहि कुन्तीपुत्र प्रियअङ्कमांह लेजाहि। सौंपिमोहिं घरको गई चलत बिपिनको चाहि॥ गोगणमें सोकरतहै बत्सचर्म परसैन। ऐसे लखि सहदेवको जीवन हमैं रुचैन॥ रूपशस्त्र अरुसुमति सोंजौन नकुल

सम्पन्न । सोबिराटके हयनके रक्षकता आसन्न ॥ छोरत बांधन हयन की करत चिकित्सा जौन । चढ़िकै फेरि बिराटको तुरँग देखावत तौन ॥ सुखिनाहैं हमकौनबिधि जासव्यथित अतिमर्म । तुमजानत यहिदुःखके बारण राजाधर्म ॥ तुम्हें जियत हम सहति हैं यदुख बिबिधि विधान । शोषण करतिशरीरको कादुख औरमहान ॥ सैरिंध्रीको वेषधरिहौं बिराट केभौन । कार्यसुदोष्णा कोकरति द्यूतकर्म फलतौन ॥ देखुव्यवस्था मम सकल राजपुत्र बरबीर । दुःखकाल के अन्तको देखति धारेधीर ॥ अर्थ सिद्धिअरु जयाजय करिअनित्य अनुमान । जानति हवैहै पतिनको पुनः उदय सुखदान ॥ प्राप्तहोतहै समयलहि जनकोजय आनन्द । समययहि लहिकै होतहैप्राप्त अजयकोदन्द ॥ प्राप्तसुयोधन कोभयो समय सुजय को पर्म । अजयहु ह्वैहै धीयमें धारतियहगुणि पर्म ॥ कथितहमारे बचन को भीन प्रयोजन जौन । पूछहु तुम हमकहँगी पूछते सबतौन ॥ रोला ॥ पांडुपुत्रनकी सुमहिषी द्रुपदकन्या जौन । पाय ऐसी दशा जीवति और हमसीकौन भीमजानत जौन मोको रहोसुख अतिमान । भईदासी तौन हमकिमि लहैं शांति सुजान ॥ दैवकृत हमक्यों नमानति जहँ धनंजय बीर । छन्न पावक सो महाबल रहत धारे धीर ॥ जौनमेरो लखतहे मुख इन्द्रसे तुमसर्ब । तौनहम अबलखति हैं मुखऔर को अतिखर्ब ॥ जास सागर मेखलाक्षिति रहीबश्य महान । सोसुदोष्णा भीतिबश अब बसति हैं मतिमान ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सुनतऐसे द्रौपदीके बचन भीम अधीर । लायहियसो लगेरोदन करन अति बलबीर ॥ पाणिकृष्णाके पकरि इमि भीम बोले बैन । भरे दारुण क्रोधसों अति महाबलके ऐन ॥ भीमउवाच ॥ धिगहमारो बाहुबलहै जिष्णुको धनुजौन । लखत बलय बिहीनतव कर कंज सुखमाभौन ॥ सभामाहँ बिराटको हमकरै कदनमहान । तहांकारण धर्मनृपहै तासुरक्षक प्रान ॥ मथन कीचक को करैकैजौन दुष्टमहान । भरोमद ऐश्वर्य्य आपुहि गणतजो बलवान ॥ लखोहम जबकियो कीचक तुम्हें पादाघात । कियोतबही चहोहमसब मत्स्यबंश निपात ॥ कियोनेत्र कटाक्षसों तबहमेंबारणधर्म । रहेस्थिर हमजानिताको मानसिक का मर्म ॥ कियोहम नहिं राज्य छूटत कुरुन को बधजौन । दहत मेरे गात्रको सम शल्यअर्पित तौन ॥ क्रोधछोड़हु धर्मकोनहिं तजहुहे मतिऐन । कहहुकछु

नहिं धर्म नृपप्रति तुमजुगुप्सित बैन ॥ पतिब्रत रतभई नारी जनकजा-दिकजौन। सहोक्रेग न धर्मछोड़ो तथातुम छबिभौन ॥ त्रयोदश जोबर्ष तामेंरहो आधोमास। क्षमाकुरु फिरि राजपत्नी होहुगी छबिरास ॥ द्रौप-द्युवाच ॥ आर्त्तह्वै हमकियो मोचन भीमलोचन बार। नहींनिन्दति भूप को दुखसिंधु जानिअपार ॥ रूपसोमम जानिअविभव आपनोनृप बाम। लहतिहै उदबेग मनमें लखिमुदोष्णा माम ॥ जानि ताको भाव मनको दुष्टकीचक तौन। रोंकिमोसों कहतबरिबे महापातक भौन ॥ कोपकोकरि नियमतासों कहतिहैं हमबैन। पंचपतिमम यक्ष रक्षक महाबलके ऐन ॥ कहहुमोसों नहींअनुचित करहुरक्षणप्रान। तुम्हेंकीचक मारिहैं तेसाहसी बलवान ॥ कहत कीचक डरत हम नहिं तिन्हें ते काखर्ब। पंचकाहम हनैसहसन युद्ध में गन्धर्ब ॥ कहति हमहैं सुकुलशीला धरेपतिब्रत धर्म। नहांतम्हरो मरणचाहति सुनहु कीचकमर्म ॥ दुष्टसो सुनिबचन मेरोकरत है अतिहास। प्रणयकरि पठवेसुदोष्णा मोहिंताके पास ॥ भ्रातृ प्रियसो प्रथमतासों कियेमंत्र निदेश। सुराआनन हेतुपठयो मोहिंतास निवेश ॥ सूतसुतमोहिं देखिलागो कहन अनुचित बैन। नहींमानो क्रोधकरि तब चलोपातक ऐन ॥ जानिकै सङ्कल्प कीचकको महादुखदाय। लईशरण बिराटकी हम बेगसों तबधाय ॥ लखत मोहिं बिराटके तहँआय कीचक रुष्ट। मोहिंमारा लातसों गहिडारि क्षितिपर दुष्ट ॥ रहेलखत बिराटकेतहँ सभासद जनसर्ब। कियोनिन्दित कङ्कफिरिफिरि जानि ताको खर्ब ॥ भूप बारणाकियो नहिंकहि ताहिनिष्ठुरबैन। युद्धमाहँ सहायकरता जानितेहि बलऐन ॥ त्यक्तधर्म नृसंशसोप्रिय हैसुदोष्णा तास। पापआत्मा पापक-र्मा बँधो मन्मथपास ॥ करैरक्षा भार्य्याकी प्रजारक्षित होत। प्रजारक्षित करैरक्षित होतआत्मा गोत ॥ जन्मजा में लेतआत्मा सुनहु जाया तौन। शत्रुमारण धर्मक्षत्रिणको कहैंमतिभौन ॥ धर्मनृपके लखत कीचककियो पादाघात। वर्त्तमान सुभीमतुमको हमैंयह उत्पात ॥ जटासुरसों कियो रक्षितहमैंतुम बरबीर। जयद्रथको मथनकीन्हों सहितसैन गँभीर ॥ दोहा॥ हनिये पापीकीचकहि देतमोहिं दुखजौन। फेरिनयाते जाउँमैं तौनअधम केभौन॥ कारणजान अनर्थको बहुतनको ममबीर। सूर्य्य उदयलौंजियेगो तौ मम मरण गँभीर ॥ भीमश्रेय हमको मरणजो तव आगे होय। यह

कहि लागी भीमहिय आतुर कृष्णा रोय ॥ भीमलाय हियसों कहे बहुत शान्तिकरबैन । हेतु और तत्वार्थके नीनि रीतिके ऐन ॥ भरो अश्रुकृष्णा बदन पोछिपाणिसों भीम । कीचकबध मनमेंधरो चाबिओठ बलसाम ॥ भीमउवाच ॥ यथाकहहु तुमद्रौपदी तथाकरैं अनुरूप । आजुहनैंग कीचकहि सहित बंधुगणभूप ॥ कहहु द्रौपदी आजुतुम लहिप्रदोषता पास । दुःख शोक गोपन कियनियम बचन प्रियतास ॥ नर्तनशाला जौनयह भूपरची अभिराम । दिनमें कन्यानृत्य करि निशिलहि जाहिंस्वधाम ॥ तहसज्जा हैदारुमय सुदृढ़दिव्य अभिराम । मिलिबेको संकेततहँ कहौताहि हेवाम॥ सोरठा ॥ सोथल है एकान्त तहांताहि हम मारिहैं । करिहैं तबदुखशान्तशोच चित्ततेदूरिकरु ॥ दोहा ॥ यथा न जानैतुम्हें वहसंमत कारणजौन ।होययथा सन्नद्धसो यथाकरहु मतिभौन ॥ बैशंपायनउवाच ॥ यहि बिधिकृष्णा भीमकरि सम्मतदुखितमहान। रात्रिशेष लखिकरि बिदा धरोक्रोध अतिमान ॥ भोर भये कीचक अधम राजभौनमें जाय । कहन द्रौपदीसों लगो ऐसे अवसर पाय ॥हतो चरणसों नृप लखत डारि भूमिपर तोहिं । तब सैरिंध्री त्राण करकाहुन बारोमोहिं॥कहिबेको मत्साधिपति है राजाको नाम।हमहैं राजा बाहिनी के पति अति बलधाम ॥ सुखसों हमको भजहु तब हम ह्वै हैं प्रियदास । शतदासी रहिहैं सदा सबनको तवपास ॥ दास सहस्त्रन अश्वरथ जड़ित मणिनसों जौन । मम संगमसों सुन्दरी तोहिं भजैंगे तौन ॥ द्रौपदयुवाच ॥ यह सम्मत मोसों करहु हे कीचक बलधाम । सखा बंधु जानै न तुब ममसंगम अभिराम ॥ हम प्रवादसों भय धरति गन्धर्बन सों बीर । ऐसे जानहु होहिं हम तव तुबबश गम्भीर ॥ कीचकउवाच ॥ ऐसेही हम करैंगे यथा कहति तुमबैन । हम एकाकी आइहैं जहँ तुव सूनो ऐन ॥ संगमार्थ रंभोरु तव लहिबे मन्मथ शर्म । जानहिंगे गन्धर्ब नहिं मम तब संगम पर्म ॥ द्रौपद्युवाच ॥ रचो नर्तनागार जो मत्स्यराज अभिराम । नाचि दिवसमें कन्यका जाहिं आपने धाम ॥ चलहु निशामें तहां तुम जानै नहिं गन्धर्ब । रहत भौनसो निशामें तमसों पूर्ण अखर्ब॥ कृष्णा कीचक कहतसो गयो दिवस द्वैयाम । भयो दिनार्द्धसो माससम कीचकको बशकाम ॥ कीचक अपने गृहगयो भरो हर्ष अतिमान । नहिं सैरिंध्री रूपको जानत मृत्यु अयान ॥ गन्धमाल्य आभरणसो भूषित

कीन्हों काय। चिन्तन कृष्णाको करत काम मोह मदपाय॥ नानाविधि शृङ्गारते सुखमा बाढ़ी ताश। बाती ज्यों बढ़िकै बरति दीपक पावत नाश॥ तासों प्रत्यय संगको करि कीचक बशकाम। जानत जानो दिन समुझि सगम तास ललाम॥ गई द्रौपदी भीमजहँ रहे पाकगृहमांह। कीचक सों निश्चय भयो तौनकहो गहिबांह॥ शून्य नर्तनागार में अधम जायगो तौन। जाय ताहि यमधामको बेगि करावहु गौन॥ आंशु हमारे पोंछिये दुःखितको बरबीर। भद्र आपनो कीजिये कुलको मान गँभीर॥ भीमउवाच॥ प्रिय यहजो हमसों कहो आगमतो अभिराम। चाहत और सहायनहिं बध कीचकको छाम॥ सत्य पुरस्कृत करि कहत बधकीचक को जौन। कियो इन्द्रज्यों वृत्रबध हम हिडम्ब बलभौन॥ गुप्त प्रकाश न बचैगो कीचक हमसों अद्य। करिहैं मत्स्य सहाय तौ तिनहूं हनिहैं सद्य॥ द्रौपद्युवाच॥ यथा त्यजत नहिं सत्य तुम भीमसेन ममहेतु। तथा गुप्त हनु कीचकहि हे कुरुकुल के केतु॥ भीमउवाच॥ यथा कहति तुम करहिंगे हम तैसो सुखदान। आजु कीचकहि बन्धुसह हनि करिहों गत प्रान॥ अदृश्य तमिस्रा माहह्वै विल्व हरत जौ नाग। भग्नकरैंगे तास शिर हम तैसे बड़भाग॥ वैशंपायनउवाच॥ भीम प्रथमहीं जायतहँ छपिकै बैठे भूप। लाय घात मृगको लखत यथा सिंह अतिरूप॥ नर्तनशाला को गयो कीचक करि शृङ्गार। सैरिंध्रीसों सुरतिकी आशाधरे उदार॥ तहां पूर्वगत भीमके गयो दुर्मती पास। हँसिबोलो लखि शयनपर भरो काम रस आस॥ नानाविधिके देहिंगे हम तुमको धनधाम। सैरिंध्री भजिहैं तुम्हैं दासीशत अभिराम॥ मोहिं प्रसंशति है सदा जो युवती मतिमान। दर्शनीय नहिं जगत में हमसे और पुमान॥ भीमउवाच॥ दर्शनीय तुम जगतमें है तुमऐसो कौन। दर्श अपूर्व सुआपुको कौनलहै छबि भौन॥ चहै बिदग्ध स्पर्श तव क्रीड़ा पटु बरबीर। युवतिनके तुम प्रीतिकर तुम छबिभरे गँभीर॥ वैशम्पायनउवाच॥ रोला॥ यहिभांति यहकहि भीम तासों महाबल रणधीर। जाय सहसा ताहि पकरो भरे क्रोध गँभीर॥ सैरिंध्रि मारे तोहिं फिरिहै भई निभ्रम दुष्ट। बोलि ऐसे केश ताके आय पकरे पुष्ट॥ केश गहिकै लगे खैंचन भीम अति बलवान। भुजनसों तव गहो कीचक भीमको अतिमान॥ मल्लयुद्ध सुकरनलागे सिंहसे दोउ क्रुद्ध।

यथा करिणी हेत दोय सुद्विरद अतिबल उद्ध ॥ दुहुनके दोर्दण्ड राजत पञ्चफणसे सर्प । नख दशनसों अन्योन्य करत प्रहार सविष सदर्प ॥ बेगसों अति हनो कीचक भीमको बलवान । नहीं पदभरि चलो सत्य प्रतिज्ञ मेरु समान ॥ भुजन सों अन्योन्य गहि दोउ लरनलागे क्रुद्ध । बली बर्द्धसमान दोऊ लसे अतिबल उद्ध ॥ तुमुल दारुण भयो तिनसों युद्ध उद्ध महान । नख दंष्ट्रयोधी लरत जैसे सिंहद्वै बलवान ॥ भीम कीचकको गहो तब भुजनसों अतिघोर । भुजनसों गहि लियो कीचक खेंचि अपनीओर ॥ दुहुनके भुज घातसों अति भयोशब्द प्रकाश । लगे पावक त्रबल जैसे सघन फूटत बांश ॥ कियो कम्पित भीम तब तेहि पकरिकै बलवान । खेंचिकै तेहि भीम मर्दत भयो निबल समान॥ होय कम्पित फेरि गहिकै भीमको अतिकाय । पांडुसुतको जांघके भर दियो सूत गिराय ॥ दोहा ॥ छोंड़ि क्षिप्र क्षिति भीमतब गहो क्रोध करि उद्ध । करनलगे दोऊ प्रबल महाभयानक युद्ध ॥ चाहत जयदोऊ प्रबल सूतपुत्र अरु भीम । शून्य सदनमें निशामधि लरन महाबल सीम ॥ कीचकके हियपै करो भीम महातल घात । भरो रोषसों सूतसुत लहो न भूमि प्रपात ॥ भीम मुहूरतभरि सहो ताको बेग महान । मर्दित करिकै भूमिपर दियो डारि बलवान ॥ हनो जानिकै भीमतब ताहि महाबल बीर । चढ़िकै ताके हृदयपर मर्दनलगे गँभीर ॥ फेरि क्रोधबश केशगहि कीचकको अतिमान । भीमसेन खेंचनलगे शालामें बलवान ॥ पिसिता कांक्षी सिंहज्यों मारि द्विरद अतिकाय । लगे कठोरन भूमिपर उन्नतक्रुद्ध सुभाय ॥ भीमसेन ताकी पकरि ग्रीवा तोरी बीर । शान्तकरणको द्रौपदी को अति क्रोध गँभीर ॥ भग्नतास सर्बांग करि कटि गहि डारी तोरि । डारो ताहि घुमायकै दोऊ लोचन फोरि ॥ हाथ पाँव शिर मरदिकै कीन्हों पिण्ड समान । डारि सलिल ज्यों जानिकै राखत मनुज पिसान ॥ भीम देखायो द्रौपदिहि । कीचक कोसो रूप । निकट बोलाय प्रकाश करि बारि अग्नि तहँभूप ॥ पाञ्चालीसों कह्यो इमि निकट बोलि बलभौन । सो कीचक मारोगयो तुम्हैं चहतहौ जौन ॥ कृष्णाको प्रियकर्म्म यह करि दुष्कर गम्भीर । मारि कीचकहि क्रोधकी लही शान्ति बरबीर ॥ कीचकको बधकरि गये भीम पाकगृहमांह । कहो द्रौपदी जाय इमि

सभामांह नरनाह ॥ जौन परस्त्रीको चहत काम निरत मतिखर्ब । तौन नर्त्तनगृहमें मरो सुनहु सभाजन सर्ब ॥ सुनत नर्तनागारके रक्षक हे तहँ जौन । बारिमशाल अनेक तहँगये सहस्त्रन तौन ॥ देखो मरोपरो कीचक को तिनसब तेहांजाय । बिना प्राणको भूमिपर रुधिर भरो सब काय ॥ पाणिपाद अव्यक्तशिर लखिकै पिण्डसमान । कर्मअमानुष जानिकै बिस्मयभरे महान ॥ कहँमुख ग्रीवाचरण शिर कहँगये पाणि अखर्ब । यह बिचारि मनमेंधरे नियतहने गन्धर्ब ॥

स्वतिश्रीकाश्मीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीवन्दीजनकाश्मीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेविराटपर्वणिकीचकवधवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

बैशंपायनउवाच ॥ जथकरी ॥ कीचकबन्धु सकल तेहि काल । सुनि आये लखिकर्म कराल ॥ घेरिकीचकहि चारोंओर । रोदन करनलगे अतिघोर ॥ देखि कूर्मसम कीचककाय । जानि परत शिरहाथ न पाय ॥ करिबेको ताको संस्कार । लेचलिबेको कियो बिचार ॥ तहँदेखी कृष्णहि तिनसर्ब । खड़ीस्तम्ब गहिरूप अखर्ब ॥ निकट जायते बोलेबैन । हनहु याहियह अधरमऐन ॥ कीचककामी लहिहै शर्म । मरेहु तासकीजै प्रियकर्म ॥ कीचक हनोगयो जेहिअर्थ । दाहहुतेहि सँगयाहि समर्थ ॥ तेबिराटसों बोलेजाय । कीचक मरोहेतु यहपाय ॥ आज्ञा देहुहमें तुमनाथ । दाहेंयहि कीचकके साथ ॥ जानि पराक्रम तिनको भूप । आज्ञा दियोतिहें अनुरूप ॥ तिनकृष्णहि पकरी बरजोर । बिह्वल भरी त्राससों घोर ॥ बांधि रथीपर कृष्णहि नाय । तेस्मशान को चले उठाय ॥ रोदन करति पुकारति नाथा कृष्णामग्न शोकनिधिपाथ ॥ द्रौपद्युवाच ॥ जयजयन्त जैबिजय महान । जयद्वल जयसेन बलवान ॥ सुनो बचनते मेरोसर्ब । ज्याघर्षित भुजजास अखर्ब ॥ जाके धनुज्याको टंकार । बज्र श्वनित समान उदार ॥ तेमेरी यहसुनै पुकार । हरेजात मोहिं सूत कुमार ॥ बैशंपायनउवाच ॥ सुनत भरे करुणासों बैन । कृष्णाके अति आरति ऐन ॥ शयन बिहाइ भीम बरबीर । आतुर उठो महारणधीर ॥ भीमसेनउवाच ॥ हम सैरिंधी बचन तुम्हार । सुनोभरो दुखदुसह उदार ॥ सूतसुतन ते भयनहिं तोहिं । ह्वैहै

सुन्दरि जीवत मोहिं ॥ वैशंपायन उवाच ॥ धारिक्रोध अतिसै बलवान। तिन्हैं हननकोकरि अनुमान ॥ समगन्धर्ब वेषधरि बीर। नाघोपुर प्रकार रण-धीर ॥ जायसोपुर बाहेर बलवान। लियो उखारिवृक्ष अतिमान ॥ सो स्मशान दिशिचलो उदार। गयेजहांते सूतकुमार ॥ जहां रहो अति बि-पिन गँभीर। क्षिप्रगयो पहिले तहँबीर ॥ चितासमीप रहेतहँ जाय। हनिबेचाहि तिन्हैं अतिकाय ॥ दशव्यायाम वृक्षको मूल। धरे स्कन्धपर बोरअतुल ॥ चलोसूत पुत्रनकी ओर। दण्डधरे अन्तक जिमिघोर ॥ जाको लागे जंघ प्रहार। गिरेभूमि परवृक्ष उदार ॥ सिंह समान क्रोध गन्धर्ब। आवत जानिभजे तेसर्ब ॥ तेसबभरे भीतिसों माम ॥ लगेधरण कीचक कहिनाम। लागे कहन परस्पर तौन ॥ यहगन्धर्ब क्रुद्ध बलभौन ॥ वृक्षा युद्ध आवत समकाल। छोड़िदेहु सैरंध्रिहि हाल ॥ छोड़ि द्रौपदिहि भाजे सर्ब। नगर ओर भयभरे अखर्ब ॥ बज्रीहनो दनुज समुदाय। हनेभीम त्यों तिनको धाय ॥ पांच अधिकशत कीचक भ्रात। तिनका कीन्होभीम निपात ॥ आश्वासन कृष्णाको पर्म। कीन्हों तिनसों मोचि सशर्म ॥ अ-श्रुमुखी कृष्णाके पास। ऐसेभीम कहो बलरास ॥ दियोक्लेश तुमको जिन बाम। तिनको हमपठये यमधाम ॥ जाहु नगरको तुम छबिभौन। अन्य-मार्ग हम करिहैं गौन ॥ गई नगरको कृष्णा बाम। गयेभीम जहँभोजन धाम ॥ महादाश्चर्य्य देखियह कर्म। बोलत कोऊ न भारेभर्म ॥ वैशम्पाय-नउवाच ॥ तिनको हनत लखे जौन। डरिकै करिअति आतुर गौन ॥ तिन सूतनको जाय बिनास। किय गन्धर्बकहो नृपपास ॥ बज्राहत ज्यों पर्बतसान। तथासूत सबमरे महान ॥ ह्वै बिमुक्त सैरिंध्री तौन। आई भूप तिहारे भौन ॥ दोहा ॥ अतिही संशैसों भरो भयो नगर सब भूप। महाबली गन्धर्बते सैरिंध्री अतिरूप ॥ पुरुषन को है इष्टतम मैथुन बि-षय उदार ॥ सैरिंध्रीके देखते यहपुर नृपन तुम्हार। तातेसो कीजै नृपति नीति निपुणता पर्म ॥ बसैप्रजा ते कुशलगहि पुरजनमाह सशर्म। सूतन्ह की करिबे क्रिया कहोनृपति मतिऐन ॥ सुनिसो इनके दाहकी भिन्नभिन्न बिधिहैन। रचिकै काष्ठ सुगन्ध की चिताएकही भूरि। जारेसब सूतजन को महाशोकसों पूरि ॥ जानि सुदोष्णा चित्तकी वृत्तिकहो योंभूप। सै-रिंध्रीको रुचैजहँ तहांजाय अनुरूप ॥ कहो सुदोष्णे भूपके सुनिकै ऐसे

बैन । सैरिंध्रीतुम जाहुइत बासयोग्य तवहैन ॥ अबिभवको मनमें धरत गन्धर्बन सों भूप । आपुन तुमसों कहत हम कहति नृपति अनुरूप ॥ बेशंपायनउवाच ॥ सूतपुत्रके त्रासते ह्वैकै कृष्णामुक्त । चलीबाहिरे निकसि कै तजिगृह भूपति भुक्त ॥ त्रासित यथा मृगेन्द्र सों मुक्तमृगी सुखदान । बसन सहित शुचिसलिल सों करिकै शुद्धस्नान ॥ ताहिदेखि भाजे पुरुष भयभरि चारोंओर । गन्धर्बन की भीतिसों त्रस्तभये अतिघोर ॥ रहमहान सद्दारपै बैठेभीम उदार । पाञ्चाली देखोयथा भरोनाग मदभार ॥ बोली बिस्मित करत तेहि संज्ञा ज्ञापकबैन । नमस्कार गन्धर्बको जेहि मोची बलऐन ॥ भीमउवाच ॥ पुरुषरहे बिहरत इहां नृपबशबर्ती जौन । अनृण होयकै भोयकै सुखसों बिहरो तौत ॥ बेशंपायनउवाच ॥ रक्षा करणो कृष्णाको अरुगुप्त बर्षकोबास । हुतेपाण्डवन पै ऋण ह्वै भूपति बलरास ॥ तदनु द्रौपदी जिष्णुको लखो नतरनागार । जौन नचावन नृपसुता बलसोंभरो उदार ॥ निकसि उत्तरा जिष्णुसह नृत्यभवन ते भूप । कृष्णा को आवतलखो भरीकलेश अरूप ॥ बृहन्नलोवाच ॥ सैरिंध्रीतुम भाग्यते भई मुक्तछबि भौन । मरोकौनबिधि अधमसो कहहु सकल तुमतौन । सैरिंध्र्युवाच ॥ कहा बृहन्नल रावरो सैरिंध्री सों काय । तुमकन्या पुरमें बसत बीरमोदसों आर्य ॥ सैरिंध्री जो सहतदुख तुमनहि जानततौन । याते बूझत हँसतसो जानिमोहिं दुखभौन ॥ बृहन्नलोवाच ॥ बृहन्नला अतिसहत दुख क्लीवदेहको धारि । सुन्दरिसो तुमसों कहत जानिलेहु निरधारि ॥ बसेतुम्हारे साथते तुमतिनकेसंगबास । तुम्हैं दुखितलखि लहतहैं ते दुख अति बलरास ॥ बेशंपायनउवाच ॥ तबकन्यनके सँगगई कृष्णा भूपतिधाम । कहो सुदोष्णै द्रौपदी सों नृपआज्ञा आम ॥ सैरिंध्री तुमको रुचै जाहु तहां सुखरूप । गन्धर्बनसों डरतहैं जानिपरा भवभूप ॥ तुम तरुणी अतिरूप मय तरुणरूप बशसर्ब । हनतकोप करिकै प्रबल तो पतिजे गन्धर्ब ॥ सैरिंध्र्युवाच ॥ करैक्षमा मोपैसुनहु तेरह दिनलों भूप । सुदोष्णा सुखलहैंगे ते गन्धर्ब अनूप ॥ तबमोको लेजाहिंगे करितोप्रिय गन्धर्ब । बन्धुनसह भूपति लही ध्रुवश्रीशर्म अखर्ब ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणिभाषायांकीचकबधो
पाख्यानवर्णनोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

जयकरी ॥ सहभ्राता कीचक को मर्ण। महा भीतकर करिकै स्मर्ण ॥ जनजन प्रतिचर्चा अतिमान। रहतिबढ़ी भयभरी महान ॥ कीचक अरि सेना जेतार। दारा लम्पटमरो उदार ॥ चार सुयोधन पठये जौन। यह सुनि खबरि गयेसुनि तौन ॥ देखिदेश पुरपत्तन ग्राम। हास्तिननगर गये नृपधाम ॥ भीषम द्रोणकर्ण कुरुबीर। सहित सुयोधनजहँ रणधीर॥ कहनलगे ऐसेते चार। भूप सुयोधनपास उदार ॥ चाराऊचुः ॥ चारोंओर नगर पुरजौन। बनपहार सरितासर तौन ॥ हमढूंढ़ेकरि अनिशप्रचारु। पाण्डवमिले न कहूं उदार ॥ गयेकहां धरिकौन स्वरूप। पांडव लक्षित भये न भूप जानिपरत तिनलहो बिनास। तो कल्याणभयो मतिरास ॥ सूततास पांडबबिन सर्ब। गये द्वारकापुरी अखर्ब ॥ नष्ट अवश्य भयेते भूप। भावी तवकल्याण अनूप ॥ सुनहुएक प्रियवार्त्ता और। भूप सुयोधन कुरुकुल मौर ॥ हने त्रिगर्त्त बीर अतिमान। कीचक सूतपुत्र बलवान ॥ जो बिराट भूपतिको तौन। होसेनानी अतिबल भौन ॥ गन्धर्बन मारो निशिमाह। भ्रातन सहित सुतो नरनाह ॥ क्षितिपर परे लखे हमसर्ब। काहू नहिंदेखे गन्धर्ब ॥ यह सुनिके प्रियकुरुकुल भूप। हूजै कृतकृत आनँद रूप ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणेविराटपर्वणिचारप्रत्यागमनवर्णनोनामएकादशोऽध्यायः॥११॥

वैशंपायनउवाच ॥ जयकरी ॥ चारन्हके सुनि भूपतिबैन। चुपह्वै चिन्ति रहो मतिऐन ॥ सभासदन सों ऐसेभूप। बोलोभरो दुःखसो रूप ॥ कारज गतिको अन्त उदार। ताको तुमसब करहु बिचार ॥ पांडवगयेकहां ते सर्ब। बाकीरहो कालअब खर्ब ॥ बर्ष त्रयोदश चहत सिरान तिनको सोधन लगो प्रमान ॥ बीते सकल त्रयोदश बर्ष। अतिबल पांडव भरे अमर्ष ॥ बसत महाबिषसे समसर्ब ॥ ते प्रगटैंगे भरेअदर्प सकल काल बेत्ता बलवान। ज्यों बनको फिरिजाहिं महान ॥ ताते तैसोकरहु नरेश। होय अकंटक राज्य सुदेश ॥ कहोकर्ण तबऐसे बैन। पठवहु चारधूर्त मति ऐन ॥ ढूंढ़ेंबन पुरदेश पहार। नानारूप धारिते चार ॥ तब दुःशासन

बोले बैन। दुर्योधनसों दुर्मतिऐन॥ जाको भूप तुम्हें विश्वास। पठवहु तौन चार मतिरास॥ कहोकर्णसों सम्मतबैन। चहुंदिशि चारफिरें मतिऐन॥ लहैं नतिनकी गतिस्थिति चार। तौजानहुग सागरपार॥ कैखाये गहिकाहू नाग। कैमरिगये क्षुधित दुर्भाग॥ समाधान मनको करि भूप। करहु राज्यको कार्यअनूप॥ बैशम्पायनउवाच॥ तबबोले इमि द्रोणाचार्य। नहिबिनशत ऐसेमतिआर्य॥ पांडवशूर अस्त्रबिदसर्ब। नीतिनिपुण धर्मज्ञ अखर्ब॥ सकल जितेन्द्री बीर कृतज्ञ। हैंपांडव सिगरे सर्बज्ञ॥ ते सब भरेपरस्पर राग। सेवतधर्म नृपहि बड़भाग। तातेनीति निपुण जैसर्ब। किमि न भजैं श्री तिन्हैंअखर्ब॥ बलतेउदै कालकी जौन। पांडवसब देखत हैंतौन॥ नाश कियो चाहत तेबीर। जानिपरत यहहमें गँभीर॥ अबजो करिबे तुम्हें बिचार। क्षिप्रकरहु सोभूप उदार॥ मिलत न जोपांडवगुणधाम। बीरधीर धुर धर्मललाम॥ जैसे जानि परैतेबीर। तौन करहु धरि धीरज धीर॥ बैशम्पायनउवाच॥ बोले सत्यधर्मधुर धाम। भीष्म पितामह नीतिललाम॥ कहेद्रोण जेबचन प्रमान। भरतबंश बर्द्धक सुखदान। भूप युधिष्टिके नितपास। रहत सत्यकीन्हें ध्रुवबास॥ पांडव देखत समय प्रमान सत्य प्रतिज्ञ बीर बलवान॥ क्षत्र धर्मरत शतव्रतमान। कृष्ण अनुग प्रियपरम सुजान॥ तेहवैहैं नहिंदुःखित भूप। शतव्रत धर्मधुरंधर रूप॥ भयेगुप्त जो बचन प्रमान। पांडव बीर महा बलवान॥ नहीं नाश पायो तिनबीर। कहति सुमति ममऐसेधीर॥ कहत यथामति हमयहबैन तुम्हें ढूढ़िबो नीति सुहैन॥ चिंत्य पांडवन हमको जौन। कहिबेयोग्य कहतहैं तौन॥ कहत सुहृद ताके अनुरूप। नहीं द्रोहते भाषतभूप॥ बर्ष तेरहें भूपति धर्म। बसिहैं जहँ सह भ्रातन पर्म॥ तौन भूप को अनु कल्यान ह्वैहै नहीं भूप मतिमान॥ सत्य प्रियंबद दाता शूर। जहँ बसिहैं पांडव बलपूर॥ हृष्ट पुष्ट तहँके जन सर्ब। भरे होहिंगे मोद अखर्ब॥ मानीमत्सर पापीतत्र। नहिं जनबसत धर्मनृपयत्र॥ भूरि दक्षिणा तेपरजन्य वर्षी नित्यदेश सो धन्य॥ निरातंक भूशस्यमहान। स्वादु अन्न फलसुरससमान॥ निर्भैदेश सो ह्वैहै पर्म। बहु गो जहँ बसिहैं नृपधर्म॥ ह्वैहै सबगुणभरोसो देश। बासकरत जहँ धर्म नरेश चहत बिचारिकृतकरिबे जौन। क्षिप्रकीजिये भूपति तौन॥ बैशंपायनउवाच॥ बोले

कृपा चार्य्यतब बैन। युक्तकाल लखिकै मति ऐन ॥ भीष्म कहे ते बचन प्रमान। सुनहु कहत हम जौनसुजान ॥ तिनको तीर्थनिकट कहुंबास। चिन्मित करहुभूप मतिरास ॥ नीति बिधान करहुतुम तौन। तुम्हें होय हित भूपतिजौन ॥ निदरीरिपु नहिं अबलसुजान। ए पांडव अति रथ बलवान ॥ गुप्तबेष पांडवन बिचारि। तिनको उदयकाल निरधारि॥ मित्रस्वराष्ट्र माहिं नृपजौन। स्वबल जानि लीजै नृपतौन ॥ उदयपांडवनको जोभूप। प्राप्तभयो अब निकटअनूप ॥ समयनिवृत्त भये ते बीर। अमितओज ह्वैहैं रणधीर ॥ ताते धन बल नीतिबिचार। प्रथमकीजिये भूप उदार ॥ पांडव उदैकाल में उद्ध। तिनसँग करहु यथातुम युद्ध ॥ स्वबल स्वपक्षिनको बल जौन। न्यूनाधिक्य बिचारहु तौन ॥ बिग्रह सन्धि कीजियोजानि। स्वबल शत्रुबलको अनुमानि॥कोश स्वबल बर्द्धित नृपजौन। लहतसिद्धिको भूपतितौन ॥ पांडव बलबाहन ते हीन। करिहैं युद्ध क्रोधबश पीन ॥ गुणिकै करिहौ जो करतब्य। तौसुख लहिहौ भूपतिभव्य ॥ वेशंपायनउवाच ॥ तब त्रिगर्त्त रथ यूथप पास। बूझोसमय बचन मतिरास ॥ सुशर्मोवाच ॥ कीचकमत्स्य सूत बरबीर। तेहि बाँधो ममदेश गँभीर ॥ देखि कर्णादिशि ऐसे बैन। कहो त्रिगर्तराज मतिऐन ॥ क्रूर अमर्षीसो बिख्यात। गन्धर्बनकिय तासु निपात ॥ कीचक मरे दर्पहत भूप। भयोबिराट अबल अनुरूप ॥ तहँ यात्राकरिबो मतपर्म। रुचै भूप सो करहु सशर्म ॥ कर्ण कौरवन को यह कार्य्य। करिबेयोग्य अवश्यक आर्य्य ॥ चलियेतौन राज्यको भूप। तासों लीजै रत्नअनूप ॥ ग्रामदेश मत्स्यन को जौन। यथाभाग लीजै हरि तौन ॥ नृप बिराट को गोधन जौन। प्रथम हरण कीजै सबतौन ॥ नगर घेरि सह कौरवभीर। भट त्रिगर्त जे अति रणधीर ॥ यथाभाग ताको धन सर्ब। हरण कीजियेदेश अखर्ब ॥ मारि चमू ताकी बलवान। बश बिराटको करैं सुजान ॥ बश करितौन मत्स्यपति भूप। तब हमबसैं तहां सुखरूप ॥ तुव बल वृद्धि महाबलधाम। ह्वैहैं येमोबचन ललाम ॥ सुनि भूपतिसों बोलो बैन। कहत सुशर्म्मा जो मतिऐन। तातेक्षिप्र चलहु कुरुभूप ॥ लेचतुरंग चमू अनुरूप ॥ पृथकपृथक लै अपनीसैन। सुभटाधीश चलैं मतिऐन ॥ कृप भीषम अरु द्रोणाचार्य्य। यथाकहैं त्योंकरिये आर्य्य ॥ करिकैमंत्र चमूको

ठाट। चलिये जीतन भूपविराट ॥ कहा पाण्डवनते है कार्य्य। ते बल पौरुषहीन अनार्य्य ॥ पाण्डव नष्टभये सुखरूप। चलहु बिराटपुरी को भूप ॥ तासों धन गोधन अतिमान। देशसहित लीजै सुखदान ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ कर्णबचन करिकै स्वीकार। आज्ञादीन्हों भूपउदार ॥ दुःशासनसों साजहु सैन। करि वृद्धनसों मत मतिऐन ॥ हम जेहि दिशिको कियो बिचार। कुरुनसहित तहँ चलैं उदार ॥ कियो सुशर्मैं जो उद्देश। तेहिदिशि जाहि सहित बलवेश ॥ करै सुशर्मा प्रथमपयान। सहित त्रिगर्त सुभट बलवान ॥ हम दिवशान्तर लहि सहसैन। मत्स्यपुरी को गहिहैं ऐन ॥ जायसुशर्मा तहांउताल। प्रथम हरा गोवृन्दबिशाल ॥ हम सहसैन दूसरीओर। चलिगोधन हरिहैं बरजोर ॥ भूप सुशर्मा सेनासंग। गोहरिबेको भरोउमंग ॥ कृष्णसप्तमी तिथि अभिराम। गयो मत्स्यपुर को बलधाम ॥ कुरुकुल सहित सुयोधन भूप। गयो अष्टमीपाय अनूप ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेविराटपर्वणिगोग्रहणोपाख्यानेविराटपुरगमनवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ पांडवनको बसततेहां कपटधारे वेष। करत कार्य्य बिराटको गत भयो वर्षअशेष ॥ मरेकीचकके कियो यह मत्स्यपति बिश्वास। अरिनको लहि समैकरिहैं अवशि बीरबिनास ॥ तेरहें बरषांत में तहँ नृप सुशर्मा आय। हरणकीन्हीं मत्स्यपतिकी अमित उत्तमगाय ॥ देखि गोधन हरणआये गोपजबसों सर्ब। रहेभूप बिराट जेहां सहितसुभट अखर्ब ॥ कूदिकै रथतेकहो तिनजाय भूपतिपास। हरोभूप त्रिगर्त गोधन रावरो बलरास ॥ जीतिहमको युद्धमें सह बन्धुसहित सहाय। जातगोधन लये भूप त्रिगर्त अति बलआय ॥ चलहु बेगि नरेन्द्र गोधन करहु रक्षितबीर। सुनतभूप सुसज्जसेना कियो अति रणधीर ॥ सैनसजि चतुरंगिनी मत्स्याधिपति अतिमान। धरोबर्म बिचित्र मत्स्यन सारमेंबलवान ॥ सहितपुत्रन भूप पहिरो कनकभूषित बर्म। शतानीक बिराटको प्रियजौन भ्राता पर्म ॥ धरोतेहि दृढ़चर्म बेधै जाहि शस्त्रन स्वक्ष। बली ताको बन्ध अवरज बीरजो मदिरक्ष ॥ धरोतेहि शतबिन्दु कवच अभेद्य

जौन अनूप। धरोकवच अभेद्यमणिमय भानुदत्त सुभूप॥ शङ्खपुत्र बिराट को तेहि धरो कवचमहान। बर्मधारी रथीसिगरे भये अति बलवान॥ युद्धको ते भयेसज्जित सकल अतिबलबीर। अश्व मनगति जोरि रथमें धरे बर्मगँभीर॥ बजनलागे पटह शोभित भयेध्वज छबिऐन। शतानीक स्वअनुजसों इमिकहे भूपतिबैन। कंकबल्लव तन्तिपाल सुजौन ग्रन्थिक बीर॥ युद्धकर्त्ता हैं सकल येमहाबल रणधीर॥ देहु इनको सुरथ उत्तम ध्वज पताकावान। बर्मदेहु अभेद्य तिनको शस्त्रसंघ महान॥ भूपकेसुनि बचनऐसे शतानीक सुजान। दियेकुन्ती सुतनको रथबर्म शस्त्र महान॥ पहिरिबर्ण सुधनुषधरि सनिषंग रथचढ़िबीर। पुरःसर ह्वैचले पाण्डव युद्धकों रणधीर॥ चलेसंग बिराट के सहबन्धु भूपतिधर्म। मत्तनाग समान चाहत कियोकर्म सकर्म॥ चलेभूप बिराटके सँग सज्ज पाण्डवबीर। मनहुजात सपक्ष पर्वत धरे रङ्गगँभीर॥ हृष्टपुष्ठ सुयुद्धमें पटुभूपके प्रिय जौन। रथी आठहजार ऐसे सहस गजमदभौन॥ साठि सहस सुअश्व सादी मत्स्य पतिके साथ। लसी भूप बिराट की सो सैन अतिकुरुनाथ॥ चले गाइन के बिलोकत चरण चिन्हित ऐन। लसीसो चतुरंगसेना बीर धीर सचैन॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणि दक्षिणगोग्रहवर्णनोनामचयोदशोऽध्यायः॥ १३॥

वैशंपायनउवाच॥ रोला॥ नगरते कढ़ि सहित पांडव मत्स्यपति बलधाम। भिरीमत्स्य त्रिगर्तसेना दिवसबीतत याम॥ मत्स्य सुभट त्रिगर्त दोऊ युद्धदुर्मद धीर। लगे लरन प्रचारिकै अन्योन्य अति बलबीर॥ गजाश्वबाहन बीर बिरचो तुमुलभो संग्राम। लगेबेधन भानुमंडल शूर भट अभिराम॥ अन्योन्य धावत अश्वरथ गज बाहभट बलवान। धूरि धुक्कितभयो नभसम निशामुक्कत भान॥ गिरनपक्षीलगे क्षितिपर रजाछुतह्वै भूप। चलतबाण समान घनलखि परतनहिं रबिरूप॥ बाण पुंख सुकनकके खद्योतसे चहुंओर। देखिलागे परन तेहितम तुंगमें अति घोर॥ रथी सादी पत्तिजन्ता पाय सुभटसमान। शक्तितोमर परशुपट्टिस

सों लरे बलवान ॥ लगेमारण क्रोध करिकरि परस्पर भटभीर । युद्धते नहिंसकत कोऊ बिमुखकरि रणधीर ॥ परेमस्तक कटे क्षितिपर कनक कुण्डलमान । कटे शरसों भटनके बहु परे अंगमहान ॥ सालतरुसे परे क्षत्री मरे क्षितिपर भूप । भईमणिमय भूषणनसों भूमिभूषितरूप ॥ ह्वै गई रजसान्तसो बहु बहे शोणितधार । भये मुर्छित बाणपीड़त बीरधीर उदार ॥ शतानीक सुहने योधा एकशत बलवान । चारिशत मदिराक्ष मारे रथीबीर महान ॥ दोऊपैठे महासेना माहते बरवीर । केशगहिगहि लगेपटकन मथनसैन गँभीर ॥ जानि तिनहिं त्रिगर्तलीन्हें देखि ध्वज अतिमान । हनेरथिन बिराटरणसे पञ्चशत बलवान ॥ तुरँगमारे आठशत अरु महारथ हनिबान । लगेमर्दन भटनको रथहांकि बिबिधि बिधान ॥ त्रिगर्तराज बिराटदोऊ हांकिकै रथउद्ध । अन्योन्य मर्दन लगेसेना गरजिगरजि सक्रुद्ध ॥ तबसुशर्मा मत्स्यपतिदोउ भिरे बीर महान । लगे बर्षण बानदोऊ बारिधारि समान ॥ अस्त्रबित शर गदा शक्तिनसों लरे दोउबीर । हनि सुशर्महिं बाण दशसो मत्स्यपति रणधीर ॥ हने चारों तुरँग अतिबर शरनसों बलवान । तबसुशर्मा अस्त्रबिदकरि क्रोधकोअतिमान ॥ हनो पंचाशत शरनसों मत्स्यपतिकोभूप । महारजसों मग्नतिनको लखत कोउ न रूप ॥ भईसन्ध्या तिमिर रजसों अन्धतमसमहान । रहे शशि के उदयलों रणसों निवृत्तसुजान ॥ उयोतम हरशीतकर लखि युद्धकर भटजौन । पाय बिमलप्रकाशको फिरि लरनलागे तौन ॥ तबसुशर्मा सहितभ्राता लियेरथ समुदाय । क्रोधकरिकै मत्स्यपतिसों लरनलागो आय ॥ सहितभ्राता कूदिरथते मत्स्यपति वरबीर । चलेरथतेक्रुद्धआगे गदा गहिरणधीर ॥ तथातिनके सुभटदौरे परस्परह्वै क्रुद्ध । शस्त्रनानाभांतिके गहिकरनलागे युद्ध ॥ मत्स्यपतिके मथितकरि बलको सुशर्माबीर । बिरथ करिकै नृपबिराटहि लियो गहि रणधीर ॥ मत्स्यपति को पकरि रथपर राखि अपने पास । चलोभाजी मत्स्य सेना देखि पूरितत्रास ॥ देखि तिनको त्रसित भाजन कृपाकरि नृपधर्म । कहनलागे भीम सों यहि भांति करिबे कर्म ॥ नृप सुशर्मा लयो पकरि बिराटको बलवान । करहु मोचन शत्रुबशसों होयनहिं सुखदान ॥ रहे ताके पास सबबिधि होय पूजित पर्म । भूप मोचनतास निष्कृति भीम तुमको धर्म ॥ भीमोवाच ॥

करहिंगे हमत्राण भूपबिराटको नृपधर्म । पायआज्ञा राघरी अरिहनत करि अतिकर्म ॥ लखहु भ्रातन सहितरहि एकांतमें तुमभूप । सुष्कयह तरु महासो ममगदाके अनुरूप ॥ याहिलेत उखारियाते हनत अरिगण सर्व ॥ वैशंपायनउवाच ॥ देखिमत्त मतंग सोतरु लखततौन अखर्ब ॥ बीर भ्राता भीमसों नृपधर्म बोलेबैन। महत तरु यहनहिं उखारहु सुनहुं हे बलऐन ॥ तुंगतरुसों हनहुगे अरिसैनतुम रणधीर। भीम तुमको जानि हैं सबदेखि अतिबल बीर ॥ अन्य गहिकै शस्त्रमारहु शत्रुसैन उदार । शक्ति धनुष निषंगलीजै परशुकै सितधार ॥ लेहु मानुष शस्त्रजाते लखै तुमहिं न अन्य। करहु मोचित मत्स्यपति को कर्मकरिकै धन्य ॥ नकुल अरु सहदेवको करिचक्र रक्षक धीर। समरमें तिनसहित मोचहु मत्स्य-पतिको बीर ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ धनुषलीन्हों भीमनिष्ठुर भूपके सुनि बैन। लगे बर्षण निशित शायक क्रोधकरि बलऐन ॥ भीम करिकै क्रोध दौरे जहँ सुशर्मा बीर। तिष्ठतिष्ठ बिराट को लखि कहे बचन गँभीर ॥ भयो चिन्तित लखि सुशर्मा कालक्रुद्ध समान। कहत आवत तिष्ठतिष्ठ सुपृष्ठ दिशि बलवान ॥ करत आवत महतकर्मसो कौनहै यहबीर। फिरो ऐसे बोलिधनु धरिकै सुशर्मा धीर ॥ निमेषांतर मात्रमें रथवृन्द शतसहजौन। भीमसेन बिराटके ढिगमारि डारेतौन ॥ नागरथ हयपत्तिमारे गदागहि कै भीम। लखि सुशर्मा युद्धदुमद क्रोधकरि बलसीम ॥ लगो चिन्तन सहितभ्राता देखि सेनाश्प। कानलों धनुखैंचि लागो बाणबर्षण बेष ॥ बेगसों रथहांकि आयेमत्स्य अतिबल बीर। दिव्यलागे अस्त्र डारन भरे क्रोध गँभीर ॥ पांडवन को भिरेदेखत फेरिरथ बलवान। पुत्र भूपबिराट को तेहिकियो युद्ध महान ॥ सहसमारे रथीभट करिक्रोध भूपति धर्म। भीम सप्त सहस्त्रमारे सुभट मथिके मर्म ॥ नकुलमारे सातशत भटबीर जे बलवान। शूरमारे तोनिशत सहदेव देवसमान ॥ मारिसैन त्रिगर्तकी सब महा पांडव बीर। अत्युग्रआये जहँसुशर्मा भरेक्रोध गँभीर ॥ हांकि कै रथ क्रोधकरि अतिआय भूपति धर्म। हनो निशित त्रिगर्तपतिको बाण बेधक मर्म ॥ तब सुशर्मा तानिकै धनुक्रोध करि अतिमान । धर्मनृपको कियो बेधित मारिकै नवबान ॥ चारिशरसों हनेचारौ धर्मनृप के अर्ब। देखि आये भीमतेहां करेक्रोध अखर्ब ॥ मारिताके अश्वमारे पृष्ठ रक्षक

जौन । रथी हनिकै सुशर्मा को गिरायो तौन ॥ लगोतब मदिराक्ष मारण बिरथ ताहि निहारि । तब सुशर्माके सुरथते नृपबिराट बिचारि ॥ कूदि दौरेगदा करमें लयेतापर बीर । भजिसुशर्मा चलोआवत देखिसो रणधीर ॥ भजोजात बिलोकिकै त्रैगर्तपतिको भीम । नहिं सुशर्मा भाजिबोहै युक्ततोहिं असीम ॥ लियो गोधन चहोयाही बलभरासे आय । छोड़िकै अनुचरन भाजत जीवको डरपाय ॥ भीमको सुनि बचन धारि त्रिगर्त लाज गँभीर । तिष्ठतिष्ठ पुकारि कै सो फिरो अतिबल बीर ॥ कूदि स्यन्दन सों सुधाये भीमकाल स्वरूप । भजो देखि त्रिगर्त गहिकै जीविताशा भूप ॥ भजो जात बिलोकि पकरो दौरि ताको भीम । केशगहि क्षितिपै पछारो महाबल को सीम ॥ मीजि क्षितिपर लगे मारण करण मुष्टिक घात । लगोकरण बिलाप सो लखि प्राण के उतपात ॥ भयो मूर्छित सो सुशर्मा घात पीड़ित भूप । भजी ताकी चमू शिगरी भरी भीति कुरूप ॥ नृप सुशर्महिं जीतिकै तबफिरे पांडवसर्ब । सहित गोधन जयश्री धनलियो तासु अखर्ब ॥ हरोदुःख बिराटको करि सत्यसेवा धर्म । भीमऐसे कहनलागे बचन सबसों पर्म ॥ नहीं जीवन योग्यहै यह महापापाचार । नहीं हमरो शक्यहै कछुघृणीभूप उदार ॥ बांधिग्रीवा पकरि ल्याये बिबशतेहां बीर । नृप सुशर्महिं डारि रथपर भरो पांशु गँभीर ॥ रहे रणके मध्य ठाढ़े जहांधर्म नरेश । दिये भीम देखाय तौन त्रिगर्त्त पतिको बेश ॥ देखिबोले भीमसों नृपधर्म ऐसेबैन । देहु अधमहि छोड़ि याको योग्य बन्धन हैन ॥ भीमउवाच ॥ मूढ़ जीवन चहसि तौ यहहेतु सुनु ममपास । सभामें सतजनन सोंहे भये बोलहु दास ॥ चहहु जीवन गहहु हारो युद्धको व्यवधान । नतरु हमसों छूटिहै न त्रिगर्त तुम्हरो प्रान ॥ भीमसों यहिभांति बोले नीतिबिद नृपधर्म । छोड़ि याको देहुभो यहदास अधम अपर्म ॥ मत्स्य पतिकी दासताको लहि त्रिगर्त नरेश । फेरिऐसो कीजियो मतिजाहु अपने देश ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणि सुशर्मापराजयबर्णनोनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥

वैशंपायनउवाच ॥ जयकरी ॥ भूपसुशर्मा लहिकै लाज। भयो अधोमुखमध्य समाज ॥ नृप बिराटके पाय निदेश। बन्दि चरणगो अपने देश ॥ बिदा सुशर्माको करिभूप। भुजबलसों लहि विजय अनूप ॥ समरभूमि में कीन्हों बास। तेहि निशिमाह नृपति बलराम ॥ जानि पांडवन को बल धाम। नृप बिराटपूजो अभिराम ॥ बहुधनसों करि अतिसनमान। जानि महारथ बीरमहान ॥ बिराटउवाच ॥ रत्न हमारे हैं धनजौन। सकल जानिये अपने तौन ॥ जे हैं मेरे सेवकसर्ब। ते सबैंगे तुम्हैं अखर्ब ॥ अलङ्कार सहकन्या पर्म। हम तुमको देहैं सहधर्म ॥ तव भुजबलते अरिबल जौन। बिन प्रयास जीतो हमतौन ॥ तव भुजबलते ह्वैकै मुक्त। भये मत्स्यपति आनँद युक्त ॥ तुम मत्स्यन के ईश्वर बीर। भये अधबलभरे गँभीर ॥ वैशंपायनउवाच ॥ सुनि बिराटके ऐसे बैन। पृथक् २ पांडव मति ऐन ॥ कहन लगे प्रांजलि बरबीर। नृप बिराटसों बचन गँभीर ॥ हम आनँदसों अतिशययुक्त। देखत तुम्हैं शत्रुसों मुक्त ॥ तब बिराट लहि मोद महान। कहो कंकसों करि सनमान ॥ करत तुम्हैं अभिषेक अनूप। मत्स्य बंशके हूजै भूप ॥ होय अभीष्ट जो तुम्हैं ललाम। सोहम सबदेहैं अभिराम ॥ व्याघ्रपाद तुम बिप्र अखर्ब। तुम्हैं प्रणाम करत हमसर्ब ॥ तव प्रसादते फिरिहम बीर। लखत स्वबंश राज्य गम्भीर ॥ तव प्रसाद को पाय गँभीर। अरिके बशह्वैगये न बीर ॥ फिरि बिराटसों भूपति धर्म। कहो कहतिसो तुमअति पर्म ॥ पठवहुदूत नगरको जाय। तवजय कहैं सुहृद सुखदाय ॥ सुनत कंकके भूपति बैन। पठयो क्षिप्र दूतमति ऐन ॥ ऐसेकहो दूतसों भूप। कहियो ममजय जाय अनूप ॥ पहिरि बिचित्र कुमारी बास। ठाढ़ीहोहिं आयपुर पास ॥ गावत नाचत बाद्य बजाय। बार बधूपुर बाहेर आय ॥ शिरधरि भूपतिशासन चार। भोरहोत गे नगर उदार ॥ चारबिराट नगरमें जाय। कहोटेरि नृपजय सुखदाय॥

खस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकबिनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणिसुशर्मापराजयबर्णनोनामपचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

वैशंपायनउवाच ॥ दोहा ॥ भाजि सुशर्मा भूपगो गोधन लहोबिराट। आये

दुर्योधन लियेपुरढिगसेनाठाट॥ भीष्मद्रोण संकर्णकृप अश्वत्थामाबीर। शकुनि बिबिशति चित्रसेन अरु दुःशासन रणधीर॥ दुर्मुख सहित बिकर्णशल और महारथ जौन। चलिबिराट केपुर निकट घेरो गोधन तौन॥ गायन दिये भजाय तिनगोधन लीन्होंआय। साठिहजार बिराट को रहोजो गोसमुदाय॥ रथ समूहसों घेरितिन लीन्हांचारों ओर। हनहु हनहु गोपाल गण बढ़ोशोर अतिघोर॥ रथपर चढ़ि भाजेसकल गोपाध्यक्ष उदार। पुरमेंपैठे आयते आरत करत पुकार॥ रथतजि गोपाध्यक्षते भूप भौनमें जाय। भूमिजय नामक नृपति सुतकोदियो सुनाय॥ गोधन सिगरे देशको हरो सुयोधन भूप। साठिहजार बिराटकी रहींजे गाय अनूप॥ ताके जीतनको उठहु गोधन लेहुछुड़ाय। राजपुत्र हितकीजिये अपनो आतुर जाय॥ तुमपालकहौ राष्ट्रक बिनामत्स्यपति भूप। करत सभामें रावरी श्लाघाभूप अनूप॥ पुत्रहमारो ममसदृश महाशस्त्रबिद बीर। सत्यकरहु ताकेबचन शून्यपालरणधीर॥ गोधन ल्यावहु फेरिसब सेनाजीतहु सर्व। दहहु कुरुनके गर्बकोडारि शरानि अखर्व॥ श्वतरजतसे लायहय रथमें अति अभिराम। हरिभूषित ध्वजस्वर्णमय भूषित करहु ललाम॥ रुक्म पुंख शरछूटिकै तब करतेबर बीर। रविमण्डल छादित करैं अरिपथ हरणगँभीर॥ जीति समरमें कुरुनको ज्यों असुरन मघवान। गोधन लैफिरि आइये अपनेपुर बलवान॥ नृपबिराटके राज्यके तुमहींगति बरबीर। यथा पांडुके सुतनके गतिअर्जुन रणधीर॥ बैशंपायनउवाच॥ तियन मध्यगोपालके सुनिकै ऐसेबैन अन्तहपुरमें कहतभो इमिसुबचन बलऐन॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणेबिराटपर्वणि उत्तरगोग्रहणवर्णनोनामषाड़शोऽध्यायः॥ १६॥

उत्तरउवाच॥ रोला॥ जाहिहम दृढ़ धनुषधरिकै फेरिबे गोसर्व। होयगन्ता जोकोऊ अतिनिपुण बाहकअर्व॥ ताहिदेखहु क्षिप्रमेरे योग्यथन्ता जौन। मासभो रणमाह मेरोभरो जन्तातौन॥ लहौंजोमें सारथी रथजौन कोबिद धीर। बेगिहौं चढ़िजाउँ रथपर धारिध्वज गँभीर॥ जीरिअरि चतुरंगिणी बर बर्षिशस्त्र महान। फेरि गोधन ल्याइहौं कुरुवंश ते बलवान॥ भीष्म

द्रोणसपुत्र कृप अरु कर्णजो बरबीर। सहितभ्रातन जीतिलेउँ सुयोधन नहि गंभीर॥ हारिरीते जाहिंकोरव जौनआयेसर्ब। जीतितिनको अद्य गोधन फेरि लेउं अखर्ब॥ कहाहम नहिंकरैं जोइस्थित होयगोधनमाह। लखैंमेरो पराक्रम अब सकलकुरुकुल नाह॥ बैशंपानयउवाच॥ सुनेअर्जुनकहे उत्तर भूपसुतजे बैन। कहोऐसे द्रौपदीसों समयलहि मतिऐन॥ देहुसुन्दरि याहिउत्तर कहतहैं हमजौन॥ पांडवनको करतहो सारथ्य यहबल भौन॥ महारणमें जिष्णुको यह सारथी होधीर॥ बैशंपायनउवाच॥ कहत बनितन मांहउत्तर होजहां गंभीर॥ जायसुस्निन माहताके पास कृष्णा बैन। कहनऐसे लगीलज्जा भरीअति मतिऐन॥ वृहद्वारण सदृशहै यह युवाप्रिय रुचिजौन। शस्त्रवेत्ता परमहै सुवृहन्नला मतिभौन। सारथीयह जिष्णुको हैयुद्धमें बलवान। धनुर्द्धरयह युद्धमेंहै बलीपार्थ समान॥ पांडवनके पासदेखो पूर्वहे सुतभूप। कियोखाण्डव दाहमें इन सार्थिकर्म अनूप॥ इन्हें अर्जुनसारथी लहिकैमहा बलसाथ। जारि खण्डव जीतिलीन्हों युद्धमें सुरनाथ॥ उत्तरउवाच॥ नहिं नपुंसक कर्मजोतुम कहतिहौ मति ऐन। नहि वृहन्नल पासहमयह सकतकहिहै बैन॥ द्रौपद्युवाच॥ जोकुमारी कुंवरहै तव स्वसा अतिअभिराम। वचनताको मानिहै सो वृहन्नल बलधाम॥ जो वृहन्नल होयगो सारथी तव रणधीर। जीति कुरुन समेत गोधन आइहौ बरबीर॥ द्रौपदीके बचन सुनि तेहिउत्तरा सोबैन। कहो ल्याउ वृहन्नलहि इतस्वसा सुखमाऐन॥ सुनतभ्राता बचनसो चलिगई नर्तनधाम। धरेबेष वृहन्नलाको जिष्णु जहँ अभिराम॥ बैशंपायनउवाच॥ गईदौरति बीजुरीसी चन्द्रबदनी तौन। रहे बैठे वृहन्नलजहँ चारु नर्तन भौन॥ भरीरूप अनूप भूषण धरेअति अभिराम। पद्मपत्र समानलोचन कामकैसी धाम॥ देखिअर्जुन लगेबूझन आगमनको मर्म। कौनआईहेतु आतुर उत्तरा कहुपर्म॥ नहींबदन प्रसन्नतव कहुहेतु सुन्दरितौन। सुनि वृहन्नलके बचनसह प्रणयसो छबिभौन॥ कहन लागी सखिनके मधि उत्तरा इमिबैन। जातकुरुनृप लयेगोधन वृहन्नल बलऐन॥ तिन्हैंजीतन गयोचाहत धनुर्द्धर ममभ्रात। नहींताके सारथीहै हेवृहन्नलतात॥ करहु तुरसारथ्य तुमकोबिद वृहन्नलमर्म। कहोसैरिंध्री तुम्हैंअति सारथिन मैंपर्म॥ सारथीतुम पार्थकेहे पूर्बरणमें धीर। तुम्हैंपाय सहाय अर्जुनकियो

दिगजयवीर ॥ करहुअब सारथ्यमेरे बन्धुको तुम तौन। करहिं जबलौं दूरि नहिंतेलये गोधनगौन ॥ करहु तुम सारथ्यतबलौं जोरि आतुरअर्ब। जीतिकै सबलेहु अपनो फेरिगोधन सर्ब॥ उत्तराके बचनऐसे सुनतअर्जुन बीर। गयेउत्तर कुँवरकेढिग भरेमोद गँभीत ॥ उत्तराअनु गईअर्जुन बीर के अभिराम। यथागज पीछेसु शिशुगज बधूजाति सुक्षाम ॥ उत्तरैलखि जिष्णुसों इमिकहे बचन गँभीर। दहोखगडव जिष्णुतुमको सारथीलहि बीर ॥ तुम्हेंसह सबजीति अर्जुनलई भूमिअखर्ब। कहोसैरिंध्री सोजानति पाण्डवनकोसर्ब ॥ तथामेर अश्व शीक्षित कुरुवृहन्नल बीर। चहत जीतो कुरुन गोधन लियो चहत गँभीर ॥ वृहन्नल यहि भांति केसुनि राजसुतके बैन। बिहँसिकै इमिकहन लागेभरे मनमें चैन ॥ तौर्यत्रिक हम करन जानत बिबिधि बिधि गंभीर। युद्धमें सारथ्यकी सामर्थहैनहिं बीर॥ उत्तरउवाच ॥ वृहन्नल तुम गाननर्तन करहुगे फिरि आय। होहुमेरे सारथी अबयुद्धमें सुखदाय ॥ वैशंपायनउवाच ॥ कहेपाण्डव बचन बहुबिधि कुँवरसों तहँनर्म। उत्तराके सामुहे सब गुप्त कीन्हें मर्म ॥ कवच ऊपर देहक धरि धरो फेरिउतारि। लगीहँसन कुमारिकाते जिष्णु ओर निहारि ॥ दियो उत्तर कवचअपने हाथसों पहिराय। पहिरि उत्तम कवच रबिसों लसोसो अतिकाय ॥ सिंह चिन्हित ध्वजा रथपर धारिकै अतिमान। धनुष रथपर धरेउत्तम निशित अगिनितबान ॥ धारि रथपर उत्तरहि ह्वै सारथी बर बीर। चलतबोली उत्तराइमि बचनमधुर गँभीर ॥ हे वृहन्नल ल्याइयो बहुरंग बसन ललाम। पुत्तलिन के हेतु मृदु अतिसूक्ष्म बहुअभिराम ॥ जीतिभीषम द्रोणआदिक कुरुनको बरबीर। वृहन्नल इमि दियो उत्तर बिहँसिकै गंभीर ॥ वृहन्नलोउवाच ॥ कुंवरउत्तर जीतिहैंजोते महारथसर्ब। हरेंगेहम बसन बहु रंगके अमोल अखर्ब ॥ वैशंपायनउवाच ॥ बोलिकै यहि भांति अर्जुनतुरँग हांकेभूप। सामुहें कुरु चमूके रथकियो आतुर रूप ॥ देखिरथपर उत्तरहि तब सह वृहन्नलबीर। बिप्र बनितन करिप्रदक्षिण कहे बचन गँभीर ॥ करत खांडवदाह मंगल जिष्णुके भो जौन। जीति रणमें कुरुनको तुम लहहु मङ्गल तौन ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेविराटपर्वणिभाषायांउत्तर
निर्यानवर्णनोनामसप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥

वैशंपायनउवाच ॥ रोला ॥ राजधानीते निकसि इमिकहो उत्तर बैन। सूत रथलै चलहु तितजित कुरुनकीहै सैन॥ युद्धमें हम कुरुनको सब जीतिकै समुदाय। क्षिप्रआवैं नगर को सब लेइँ अपनीगाय॥ किये प्रेरित तुरँग अर्जुन ताड़िकै अतिमान। जिष्णुप्रेरित अर्ब क्षितितजि चले उड़त महान॥ जायकै कछुदूर देखो जिष्णु उत्तरसैन। महासिंधु समान जाको पारदेखि परैन॥ स्मशानके ढिगजाय अर्जुन समीदेखी तौन। लखीसेना कौरवन की भीरु भयकी भौन॥ गगन सों तरु लगे जाके सचल गहन समान। धूरि धूधुरि भरी दशदिशि देखि परत न भान॥ तौन देखत चमू गजरथ अश्वपूरित भीम। जाहि रक्षत भीष्म द्रोण सु कर्ण कृप बलसीम॥ भरोभयसों देखि उत्तर चमूसो बलतोम। उत्तरउवाच॥ कुरनसों लरिहैं न देखहु उठे मेरे रोम॥ बीरवृन्द अनेक जामें कुरुनकी यहसैन। युद्धइच्छा कौरवनसो सूत हमको हैन॥ देखिकै चतुरंगिणी कुरुसेन यह अतिमान। सूतमेरो होतहै अति व्यथित मानसप्रान॥ द्रोण भीष्म कर्ण कृप जहँ द्रोणसुत बरबीर। शकुनि दुःशासन बिबिंशति अरु बिकर्ण गँभीर॥ नृपसुयोधन महारथ बाह्लीकसह द्युतिमन्त। महा रथ अति धनुर्द्धर बरबीर पृथिवीकन्त॥ सैनसह कुरुबीर सिगरे महाबल के तोम। मोहिं मूर्छाहोति देखत उठे भरि भय रोम॥ वैशंपायनउवाच॥ असामान्य प्रगल्भ धारे कपटवेष सुजौन। लगो ऐसे सव्य साची पास रोवन तौन॥ गये तात त्रिगर्तपै सँगलये सुभट अनेक। रहे सैनिक नहीं कोऊ छोंड़िकै मोहिं एक॥ एक बालक हम अशीक्षित सैन अरिकी उद्ध। बहु कृतास्त्रन सों न सकिहैं करि वृहन्नल युद्ध॥ चलहु ताते धाम को अब बगि फिरहु सुजान। राखिलीजै कृपा करिकै सुनहु मेरो प्रान॥ वृहन्नलउवाच॥ भयो भयते दीन तो अरिहर्ष बर्द्धन रूप। रणाजिर नहिं अरिन कीन्हों कर्मकछु अतिरूप॥ कहो तुम मोसों चलो लै मोहिं अरि जहँ सैन। हम ले आये तुम्हैं तहँ जहँ बाहिनी ध्वजऐन॥ गोधनामिष चहत ये कुरु गृद्धसे बरबीर। तहां हमलै चलत तुमको करहु युद्ध गँभीर॥ कहो इस्त्रिन मांह पौरुष स्वजनमें अतिउद्ध। नगरते कढ़ि आयकै इत करत क्योंनहिं युद्ध॥ जीतिकै बिन लये गोधन जाहुगे जो धाम। सुनहु उत्तर तुमहिं हँसिहैं नगरकी सब बाम॥ करनको सेरिंध्रि हमसोंकहो

सारथि कर्म। सकत फिरि नहिं जीतिकै बिनलिये गोधन पर्म ॥ स्तोत्र सैरिंध्री कियो तुमकहे बचनअरुद्ध। रहत स्थिर अब करहि क्योंनहिं कौरवनसों युद्ध ॥ उत्तरउवाच ॥ मत्स्यकुल को हरो कौरव ससुख बित्त अखर्ब। सुनु बृहन्नल हँसौ प्रमदा पुरुष हमको सर्ब ॥ युद्धसे नहिंकाम मेरो बेढ़ि गोधनजाय। नगर सूना कँपत हैं हम पिताको डरपाय ॥ बेशंपायनउवाच ॥ कूदि रथते भजो पुरको बोलि ऐसेबैन। दर्पमान बिहाय शरधनु भरो भी अतिचैन ॥ बृहन्नलउवाच ॥ नहीं स्रुनकहो क्षत्रीको पलायन धर्म। मरण क्षत्रीको समरमें श्रेयकारक पर्म ॥ बेशंपायनउवाच ॥ बोलि ऐसे कूदि रथते जिष्णु अति बलवान। ता ओर आवत लगी बेणी पीठिपै लहरान ॥ कँपतबेणी देखि अर्जुन नहीं जानत जौन। हसनलागे रूप अद्भुत चाहि सैनिक तौन ॥ शीघ्र धावत देखि लागे कहन यों कुरुबीर। भस्ममें ज्यों अग्निको यह गुप्तवेष गँभीर ॥ लसत प्रमदाको कछू कछु पुरुष कैसो रूप। सारूप्य अर्जुनको धरत यह क्लीवरूप अनूप ॥ शीश ग्रीवा तैसियैहै बाहु परिघ समान। तैसोई बिक्रांतहै यह धनंजय नहिं आन ॥ अमरमें अमरेश अर्जुन मनुजमें त्यों बीर। एक हमपै आवतो बिन जिष्णुको रणधीर ॥ एकपुत्र बिराटको हो नगरमें चढ़ि जान। बिनापौरुष वाल्यते सेा चलो निकसि अयान ॥ सारथी करि गुप्तधारे रूप अर्जुन जौन। कढ़ो बाहेर नगरके नृपपुत्र उत्तर तौन ॥ देखि हमको भीतिसों सो भजोजात अयान। ताहि धरिबेढेत धावत जिष्णु सो बलवान ॥ बेशंपायनउवाच ॥ देखि ऐसे लगे कौरव सकल करन विचार। सकत कोउ न देइउत्तर भरेबुद्धि उदार ॥ गयो शतपद धाय उत्तर दौरि अर्जुनबीर। जाय ताको पकरिलीन्हों केशपास गँभीर ॥ कहो बहु समुझाय अर्जुन बहुत बिधिके बैन। भयो दीन बिराटको सुत भरो भीतिअचैन ॥ उत्तरउवाच ॥ सुनु बृहन्नल कहतहैं हम मानिलीजै तौन। फेरि रथका चलहु जीवत भद्र देखत तौन ॥ देहिंगे हम हेमके शत निष्क अतिअभिराम। आठमणि बैदूर्य्यदेहैं कनक जड़ित ललाम ॥ कनकमय रथदेहिंगे दशमत्त बारण तोहिं। हे बृहन्नल मानिकै यह बिनय छोंड़हु मोहिं ॥ भांतिके यहि बचन बोलत करत भूरि बिलाप। ताहि गहि रथपास ल्याये जिष्णु पूर प्रताप ॥ कहन ऐसे जिष्णुलागे बिहँसि उत्तरपास। देखिकै

भयभरो कम्पित बिगत चेतन तास॥ होतनहिं संग्रामको उत्साह तोसों उद्ध। करहु तुम सारथ्य अरिसों करतहैं हम युद्ध॥ हांकिकै रथ चलहु यहि रथ बाहिनीको बीर। महारथ जेहि करत रक्षित धरं धनुष गँभीर॥ राजपुत्र न डरहु क्षत्रीबंश संभव पर्म। समर मध्य कुखेद करब न क्षत्र कुलको धर्म॥ कौरवनको जीतिलेहैं हम सु गोधन सर्ब। रथानीक बिदारिकै यह जो अदृश्य अखर्ब। सारथी तुमहोहु लरिहैं कुरुनसों हमबीर। कुँवरउत्तर को सु ऐसे बोधकरि रणधीर॥ महाभयसों बिकल उत्तरकुंवर को समुझाय। बांह गहिकै लियो रथपर जिष्णु ताहि चढ़ाय॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभि
गामिनाश्रीबंदीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुल
नाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेविराट
पर्वणिउत्तरभङ्गवर्णनोनामअष्टदशोऽध्यायः॥ १८॥

वैशंपायनउवाच॥ रोला॥ वेषधारे क्लीवको रथचढ़ो लखि अतिकाय। समीसोहैं जात उत्तरको सु साथ चढ़ाय॥ भीष्म द्रोणहि आदि जेतिक रहे कुरु बरबीर। जिष्णु संभव भीतिसों मनभरो तास गँभीर॥ देखिकै उतपात बिस्मय भरे कौरव भूप। कहन द्रोणाचार्य लागे बचन समय स्वरूप॥ कहत कर्कस अनिल भो नभ भस्मबर्ण समान। गगन तमसों भरो धाये जलदरुक्ष महान॥ शिवारोदन करनलागी उदित रबिकी ओर। ध्वजा कम्पनलगी मुंजत अश्व हाथी घोर॥ होतहैं चहुंओर ते अति शकुन कठिन कराल। सज्जहवै सबरहो आयो महाभयको काल। करहुरक्षा आपनी करि बाहिनी को व्यूह। लखहु युद्ध समीप रक्षहु सकल गोधन जूह॥ महाधनु यहपार्थ आयो क्लीवको धरिवेष। श्रेष्ठ है सब शस्त्र भृतमें शत्रुसम न अशेष॥ श्लोक॥ नदीजलङ्के शबनारिकेतुः नगाह्वयोनामनगारिशूनुः। एषोङ्गनावेषधरःकिरीटीजित्वावयंनेष्यति चाद्यगावः॥ महाबल बिख्यात है यह बीर अर्जुन तौन। होतहै न निवर्त रणमें सुरासुरसों जौन॥ लहोबनमें क्लेशशीक्षिति कियोजे मघवान। भरोमहत अमर्षसों यहजिष्णु जिष्णु महान॥ नहीं प्रतियोद्धार ताको यहां कौरवबीर। शंभुको जेहिकियो तोषित युद्धमाह गँभीर॥ कर्णउवाच॥ कहत अर्जुन को सुगुणतुम नित्यधरि अनुराग। ममसुयोधनके न

अर्जुन सों रहेहैंभाग ॥ दुर्योधनउवाच ॥ पार्थजो यह होय तौ ममभयो पूरणकार्य। करनपाण्डव जाहिंतौ बनबर्ष द्वादशआर्य ॥ अन्यकोऊ होयगो जो क्लीवको धरिवेष। शरण सो हनिताहि करिहैं प्राणसों निःशेष ॥ बैशंपायनउवाच ॥ करण के धृतराष्ट्र सुखके सुनत ऐसेबैन। भीष्मद्रोण सराहिबोले जिष्णुअति बलऐन ॥ समीके ढिगजाय अर्जुनकहो ऐसोबैन। बेगिउत्तर चढ़हुयापै धारिकै चितचैन ॥ जायल्यावहु धनुष तातेसह निषंग महान। सुनहुमेरे बाहुबल के धनुष ये नसमान ॥ बेगिताते चढ़हु उत्तर समीपै अतिमाम। धरे यापै पांडवनधनु आपने अभिराम ॥ बर्महैं अतिपर्म जौन निषंगदिव्य उदार। धनुषहै गांडीवगुरु तरुभरो अतिसय भार ॥ सहत अतिव्यायाम को दृढ़ताल तुङ्गसमान। सकल अस्त्रसमेत अरिदल दहन सदृश महान ॥ कनक बनक समान सुन्दर रहित व्रणसों जौन। समीपर चढ़िधनुष ल्यावहु तूण उत्तर तौन ॥ पांडवन के धनुष हैं सबसुनहु एकसमान। चीन्हिलीजो चिन्हतुमसो कहतजौन सुजान ॥ उत्तरउवाच ॥ सुनोहम यहिवृक्षसों है बँधोमृतक शरीर। राजसुत हमकुवैं कैसेताहि ह्वै बरबीर ॥ करतिहै क्यों अशुचिहेसब बाहलौं तूमोहि। व्यवहारकेर अयोग्यमोको करतिहै क्यों जोहि ॥ बृहन्नलोवाच ॥ व्यवहारके न अयोग्य ह्वैहौ सुनोतुम बैराटि। होहिंगेनहिं अशुचि संशय देहुसर्ब उचाटि ॥ धनुषमेंभय करहुमति तहँनहीं मृतकशरीर। पुत्रहौ तुमपत्स्यपतिके सुकुल जातकबीर ॥ नहींतुमसों करण कहिहैं कर्मनिंदित जौन। बैशम्पायनउवाच ॥ पार्थकेसुनि बचन उत्तर कूदिरथते तौन। समीपै चढ़िगयो हेजहँधरे धनुषमहान ॥ डारिबेष्टन धनुष बन्धन भंगकरि मतिमान। चारिधनु मधिलखो तहँगांडीव अद्भुतरूप। डारिधनुते लखोसो गांडीव अनुपम भूप ॥ दिव्यताते प्रभानिकसी उदितसूर समान। परोरूप बिलोकि ताको सर्पसदृश महान ॥ क्षणक भरिभय धनुष परसोतौन अति मतिऐन। कहोउत्तर टेरिकैफिरि जिष्णुसों इमिबैन ॥ उत्तरउवाच ॥ स्वर्णके कृतबिंदु जामें कनककोटि सुठान। लिखेवारण पृष्ठिपैशुचि पार्श्वमुष्टि महान ॥ कहुबृहन्नल कौनकोयह धनुष अतिअभिराम। कनकके हैं इन्द्र गोपक पृष्टिपै छबिधाम। कौनकोहै बृहन्नल यह धनुष पूरणकास। सूर्य जापै कनकके हैं लिखेतीन प्रकास ॥ कहुबृहन्नल कौनको यह धनुष है

अतिमान। सलभजापै कनकके हैं लिखे भूषितमान ॥ कनक मयमणि जड़ित हैं धनुकौन को अभिराम। कौनके नाराच हैं येकनक पुंखललाम॥ भरेचारु निषगमें अति निसित बेधकदक्ष। लोहमय सबलगे जिनमें गृध्रके हैं पक्ष ॥ साईल जामेंपञ्च लिखित बराहकर्ण समान। सातशत शरसह निषंग सो कौनको सुमहान ॥ यहिभांति उत्तर कहेसब के वरण शस्त्र स्वरूप। समीऊपर बैठिकै लखिजिष्णु सों हेभूप ॥ बृहन्नलोवाच ॥ जौन हमसों पूर्वपूछो धनुष इषुधिमहान। गांडीव सो ईलोकमें है चाप विदित सुजान ॥ आयुधन में श्रेष्टसबसों धनुष है यहजौन। पार्थकोसो धनुष है गांडीव उत्तम तौन॥ देवमानुष पार्थजीते धारिकै जेहिबीर। परम सुन्दरवर्ण अर्णव भरोभार गँभीर॥ धरो वर्षसहस्र जाको पितामह अतिमान। फेरिताको कियोधारण प्रजापति बलवान॥ सुनो तिरपनबर्ष धारी वरुणअरु फिरि ताहि। बज्रकेवर अंगसों जो बनाताको चाहि॥ धरोपैंसठिबर्ष अर्जुन श्वेतबाहन जौन। बरुणते सो लहोपारथ धनुष उत्तमतौन ॥ भीमकेधनु है सुपार्श्व सुहेमग्रह अभिराम। लिखेवारण प्रष्ठपैंहैं जास सुषमामाम॥ धर्मनृपको अनुजवीर अधर्मअति अभिराम। जीतिजासों लियो प्राची दिशाको बलधाम॥ इन्द्रगोपक के लिखे हैं चित्रजापै पर्म। तौनउत्तम धनुष उत्तर धरतहे नृपधर्म॥ सूर्यजापै कनकके हैं नकुलको धनुतौन। सलभजापै कनकके सहदेव को धनुजौन॥ लोमवाही जौनहै क्षुरसदृश तीक्षणवान। तौनउत्तर पार्थके बिषभरे सर्प समान॥ तेजसों अतिज्वलित रणमें करत आतुर गौन। गहणसे अरिवृन्दके हैं दहनसे शरतौन॥ जानहै पृथुदण्ड तीक्षण अर्द्धचन्द्र समान। भीमसेन सुमहाबलके तौन उत्तरवान ॥ हेमपुंख हरिद्रकैसे वर्णकेशर जौन। सुनहुउत्तर नकुलके हैं निसित शायक तौन॥ निसित हैं अतिधरे उत्तर जौन भास्कररूप। तौनहैं सहदेवके शरभरे तून अनूप॥ निसितपीरे हेमपुंख सुतीनि धारेपर्व। धर्मनृपके पृथुलहैं शरभरे तूमअखर्व॥ जौन है यह महतशायक उग्रपरमकठोर। जिष्णुकोसो सहतहैं संग्राममें बरजोर॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणि उत्तरगोग्रहणेआयुधवर्णनोनामञ्चनविंशोऽध्यायः॥ १९॥

उत्तरउवाच ॥ रोला ॥ कनकमय हैं शस्त्र सिगरे पाण्डवन के सर्ब । कहांहैंते पांडुनन्दन महावीर अखर्व ॥ द्यूतमें सबराज्य अपनो हारिकै बरबीर । सुनोहम कहँद्रौपदी है भरीरूप गँभीर ॥ अर्जुनउवाच ॥ जिष्णु हैं हमसभास्तार जो कंकसो नृपधर्म । जौनबल्लव भीमसेन सुपाक कारक पर्म ॥ अश्वरक्षक नकुल है सहदेव गोधनपास । सैरिंध्रि कृष्णा हेतुजाके लहो कीचकनास ॥ उत्तरउवाच ॥ नाम अर्जुनके सुनेहम जौनदश अभिराम कहहुतौन प्रतीति तुममें होयसुनि बलधाम ॥ अर्जुनउवाच ॥ कहत हैं दश नाम अपने सुनहु उत्तरतौन । जगतमें हैं विदित प्रथमहि सुनेहैं तुमजौन अर्जुन किरीटी जिष्णु फाल्गुण श्वेतबाहन वीर । कृष्ण धनंजय सव्यसाची विजय विभत्सु गँभीर ॥ उत्तरउवाच ॥ भये कैसें नामएतव कौन कारणपाय । अर्थहेतु समेत हमसों कहहुतौन बुझाय ॥ तौनसुनिकैहोय तुममें हमेंअति बिश्वास ॥ अर्जुनउवाच ॥ जीति जनपद बित्तले बहुकियो अपने पास । रहेतेहि धनमध्य तातेभो धनंजयनाम ॥ जीति अरिगण लियोताते बिजयनाम ललाम । श्वेतरथके अश्वयाते श्वेतवाहन नाम ॥ जन्मउत्तर फाल्गुणीमें नाम फाल्गुण आम ॥ हैकिरीटी नाममोहिं किरीटदिय मघवान । युद्धमें न विभत्स करत बिभत्सु कहत सुजान ॥ दुहुंपाणिते धनुगहत तातें सव्यसाचीनाम । शुक्ल हम कृतकरत याते कहत अर्जुन आम ॥ कृष्णधारो नाममेरो प्रीतिकरि कै तात । देहवर्ण बिलोकिमेरो असित अरु अवदात ॥ बैशंपायनउवाच ॥ कियोबन्दन जिष्णु को तबनिकट उत्तर आय । कहो आगम रावरोभो हमेंअति सुखदाय ॥ कहोहम अज्ञानताते क्षमा कीजैतौन । कियोकर्म बिचित्र जो तुम पूर्व हे बलभौन ॥ चढ़हु सुरथ बिचित्र परमोहिं सारथी सहबीर । चलैंकौन अनीक पर हम कहहु सो रणधीर ॥ अर्जुनउवाच ॥ पुरुषव्याघ्र प्रसन्न हैं हम तुम्हैं भीति न खर्ब । मारिकै हम दूरि करिहैं शत्रुसेना सर्ब ॥ स्वस्थ ह्वै तुम लखहु मोको करत अरिसों युद्ध । समरमें हम करतहैं यहिमहा भैरव उद्ध ॥ बांधिकै सबशस्त्र राखहु यथास्थित गम्भीर । अस्त्रमेरे बेगि ल्यावहु पासमेरे बीर ॥ बैशंपायनउवाच ॥ जिष्णुके सुनि बचन उत्तर उतरि तरुते धाय । शस्त्र सिगरे धनंजय के दिये रथपर आय ॥ अर्जुनउवाच ॥ जीतिहैं हम कुरुनको पशु लेहिंगे तुवसर्ब । नागहय रथमयी सेनासहित

ध्वजन अखर्ब ॥ फलित मेरो बचनहै गांडीवधर हमबीर । शत्रु सेन अजेय हम तव भीतिहर गम्भीर ॥ उत्तरउवाच ॥ डरत हमनहिं तिन्हैं तुमको युद्धजेता ज्ञान । इन्द्र केशवसदृश रणमें आपु को अनुमान ॥ मोह मोको होत मनमें चिन्ति चरित अनूप । कौन कर्मबिपाक सों तुम धरो क्लीवस्वरूप ॥ शूलपाणि समान तुम गन्धर्बपति मघवान । फिरत धारे क्लीवको तुम रूप अतिबलवान ॥ अर्जुनउवाच ॥ धरो सांवत्सरिक व्रत यह ब्रह्मचर्य्य महान । ज्येष्ठभ्राता की सु आज्ञापाय सुनहु सुजान ॥ नहींहैं हम क्लीव करत स्वधर्मबश परकर्म । भयो तौन समाप्त व्रत हमहैं नृपात्मज पर्म ॥ उत्तरउवाच ॥ तुम्हैं पाय सहाय करिहैं सुरनसों हमयुद्ध । भये निर्भय करहिंसो हम कहहु जोतुम उद्ध ॥ गहैंगे रथ अश्व तुव हम शत्रु रथकर नास । सारथ्यमें हम परमशीक्षित गुरूके रहिपास ॥ यथा दारुक यथा मातलि सारथी अभिराम । तथा जानहु मोहिं सारथि कर्ममें बलधाम ॥ चरण जाके परत देखि न भूमि परशत खर्ब । लगो दक्षिण ओरसो सुग्रीवके शम अर्ब ॥ बामओर जो लगोहै हय मेघपुष्प समान । कनकको सन्नाह पहिरे जौनहै बलवान ॥ सैव्य समहै तौन जानहु भरो बेग अखर्ब । जौन दक्षिणओर पीछे बहत है यह अर्ब ॥ सो बलाहक सदृशहै अति बेगमें बलवान । तुम्हैं बहिबेयोग्य यहरथ युद्धमें अतिमान । बेशम्पायनउवाच ॥ वलय बाहुन ते उतारे तब धनंजयबीर । कनकबर्ण सु सुपर्म मणिमय लियो पहिरि गँभीर ॥ कृष्णाकुंचित केश बांधे बसनसों अतिमान । दिव्य अस्त्रनको कियो शुचि होय पारथ ध्यान ॥ अस्त्रसांजलि आय ऐसे कहनलागे बैन । कहहुसो हमकरैं किङ्कर कार्य्यतो बलऐन ॥ पार्थ तिनको पाणिसों गहिकहे बचनअनूप । रहहु मेरे मनोगत तुम सर्ब स्मरण स्वरूप ॥ जिष्णु शस्त्रनको गृहणकरि ह्वै प्रसन्न उदार । गांडीव पै ज्या राखि उत्तमकियो धनुटङ्कार । धनुषके टङ्कारते भो भूमि कम्प अखर्ब । भयो उल्कापात मन्द प्रकाश आशा सर्ब ॥ हलन लागी ध्वजा जानो कुरुन अशनि प्रपात । भयोजो गांडीव धनुते महत शब्दा-घात ॥ उत्तरउवाच ॥ एक पांडवश्रेष्ठ तुम ये महारथबहुबीर । इन्हैं कैसे जीतिहौ तुम युद्धमें रणधीर ॥ कौरवनको देखिकै स सहाय तुमको एक । होतहै सन्देह मेरे चित्तमें सबिवेक ॥ अर्जुनउवाच ॥ घोषयात्रा में भयो

गन्धर्वगण सों युद्ध। रहो कौन सहाय मेरे धरहु भय न बिरुद्ध ॥ कियो खांडवदहन तब ममरहो कौन सहाय । निवात कवच पुलोम मारे एक हम असहाय ॥ स्वयम्बर में द्रौपदीके रहे भूपति सर्ब । तिन्हें सबस सहायजीते एक हम बिनअर्ब ॥ देव दानव शक्रसह दिगपाल रणमेंआय। युद्ध करिकै बिना जीतो कौन मोसों जाय ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणिउत्तरगोग्रहणेउत्तरार्जुनसंवादवर्णनोनामविंशोऽध्यायः॥ २० ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ उत्तरहि करि सारथी करि समी दक्षिण ओर। चढ़े रथपर चले अर्जुन शस्त्रलीन्हे घोर ॥ ध्वजा रथते काढ़ि दीन्हों सिंह चिन्हित जौन। समीके धरि मूल ऊपर गयो उत्तर तौन ॥ बिश्वकर्म्मा रचित अद्भुत ध्वजा जौन महान । महाबल जिहिमें बिराजत बीरबर हनुमान ॥ ध्यान मानस कियोताको पार्थ मनमेंपर्म । तिमिहि अग्नि प्रसन्नताको कियो ध्यान सशर्म ॥ तत्र चिन्तन करत ताको कपिध्वज अभिराम। सुरथ उतरो गगनते तब सह उपांग ललाम ॥ सुरथ उतरे देखि ताको करि प्रदक्षिण बीर। जाय तापै चढ़े अर्जुन श्वेतबाहन धीर। बांधि अंगुलि त्राण पारथ धनुषलीन्हे तौन। चढ़ो रथपर चलो उत्तर दिशाको बलभौन ॥ धमित कीन्हों शङ्खको अरिदमन अति बलवान । बेगि दौरो हांकिकै रथ शत्रुशमन समान ॥ जानुके भर गिरे क्षितिपर देखिकै ते अर्ब। चढ़ो रथपर देखि उत्तर भरो भीति अखर्ब ॥ देखि अर्जुन बागगहि किय यथावत सहचाय। समाश्वाशित उत्तरहि करि हृदयमांह लगाय ॥ अर्जुनउवाच ॥ राजपुत्र न डरहु तुमहौ क्षत्रसम्भव बीर। लहत कैसे शत्रुगणके मध्य खेदगँभीर ॥ शङ्ख भेरी शब्द सुनिकै नाग गर्ज महान। लहतहौ तुम भीति प्राकृत पुरुषसे सु समान ॥ उत्तरउवाच ॥ शङ्ख की अरु गजनकी यहिभांति धनुधुनि और। आजुलों नहिं सुनो कबहूं सुनो कुरुकुलमोर ॥ ध्वजा ऐसी लखी नहिं रथघोष ऐसो आन। सुनो नहिं याते भयो अतिमोह मोहिं सुजान ॥ दिशा छादित ध्वजनसों सब भई जलद समान। जानिपरहि न धनुष ध्वनिते बधिर भे ममकान ॥

अर्जुनउवाच ॥ करहु रथ एकान्तमें दृढ़धरहु रस्मि सुजान। शङ्ख करत स शब्द हम फिरि अशनिपात समान ॥ बैशंपायनउवाच ॥ धमित कीन्हों शंखको फिरि प्रबल अर्जुनबीर। गांडीवकी धुनिते भयो क्षितिकम्पभूरि गँभीर। द्रोणउवाच ॥ यथाहै रथघोष याको धनुष धुनिअतिमान। जिष्णुते नहिंअन्य कोऊ बीरहै बलवान ॥ शस्त्रकरत प्रकाश नहिं हय हर्षि करत न गौन। अग्निहोत्रन ज्वलित कीन्हों साज्य समिध सुहौन ॥ मृगादौरत सूर्य की दिशि घोर रोर सुनाय। ध्वजन ऊपर काग बैठत अशुभ शूचकआय ॥ फिरत रोदनकरत सेना मध्य जम्बुक घोर। भानु करत प्रकाशको नहिं सतम चारों ओर ॥ भये सबके रोमठाढ़े बढ़ो मानस त्राश। नियतजानो परतहूबे क्षत्रिगणको नाश ॥ परत देखि निमित्त कारण नाशकेरो जौन। बाहिनीमें घोर उल्का भूरि भयदा तौन ॥ हर्ष बाहन करतहैं नहिं करत रोदन अर्ब। गृद्ध देखहु किये आवृत भूपसेना सर्ब ॥ पार्थके शर बिद्ध सेना देखि तपिहौ भूप! युद्धरक्षा रहित सेना भजैगी अतिरूप ॥ भये सकल बिवर्ण योधा किये कातरनैन। गाय ठाढ़ीकिये ठाढ़े सैनमें तहँ चैन॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभि
गामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुल-
नाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेविराटपर्वणि
उत्तरगोग्रहणेअशांतिकोनामएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ रोला॥ भीष्म कृपअरु द्रोणसोंऐसे सुयोधनबैन। कहे वृद्ध बिचारिकै मनमांह अति मतिऐन ॥ कर्ण हमपहिले कहो अब कहतहैं फिरि तौन। करो बारहबर्ष बनमें प्रगटपाण्डव गौन ॥ गुप्तह्वैकै रहैं तेरह बर्ष द्वादशमास। भये अर्जुन प्रगट बाकी बर्ष गुप्तनिवास ॥ बसौ बारह बर्ष बनमें फेरि पांडवजाय। कहौ भुक्त अभुक्त याकोभीष्म सत्यसुभाय ॥ गुप्तबर्ष बितीत भोनहिं अबहिं मेरेजान। मोहिंको अज्ञानहै कापार्थको अज्ञान ॥ द्विधाभावज अर्थसों नहिंहोत संशयनाश। करोचाहत कछूकारज कछू होतप्रकाश ॥ लियोगोधन घेरि हमगुणि मत्स्यपतिको बाध। मिलो आयबिभत्सु जोतौ कौनको अपराध ॥ त्रिगर्त कारण मत्स्यसो इतकरण आयेयुद्ध। कियोहमसब मत्स्यको बहुभांति कार्यबिरुद्ध ॥ कहोहो त्रीगर्त पतिसों प्रथम हम समुझाय। हरहुगोधन मत्स्यपतिको सप्तमीको जाय ॥

अष्टमीको आइहैं हमउदै होते भान। हरणकरिहैं मत्स्य गोधन उदकओर महान ॥ गयेगोधन लैत्रिगर्तकि भजो लरिकैभूप। बंचिहमको मत्स्यपति सों मिलोकै हितरूप ॥ तिन्हैंगोधन सहित तजिकै निशामें फिरि आय। लरोचाहत मत्स्यपति कढ़िजोरि सेनसहाय ॥ किधौंआवत एक आपुहि युद्धको बलवान। किधौंकोऊ सुभटताको एकबीर महान ॥ मत्स्यपतिहै एककैयह जिष्णुहै बरबीर। युद्धतासों करैहमसब सुनहु सम्मत धीर ॥ रहेरथपर होय जड़से रथिकजे बलवान। भीष्म कृप सहद्रोण द्रौणिक अरुबिकर्ण सुजान ॥ बिना युद्ध न श्रेययाते रहहु होय सचेत। उद्ध युद्ध बिना न हमसों इन्द्रगोधनलेत॥ कौन हास्तिननगरको भजिजाय गोरण-धीर। अश्वसादी जायकोऊ नहिंपदाती बीर ॥ सुनिसुयोधन बचनबोले कर्णअति बलभौन। द्रोणकोकरि पृष्ठपीछे नीतिकरु नृपतौन ॥ पांडवन कोजानिकै मतकरत त्राशितसैन। भरे अर्जुन प्रीतिसों सबद्रोण बोलत बैन ॥ देखि आवत जिष्णुके भाषत प्रसंशित बैन। नीतिभूपति रचहुसो जाते न भाजैसैन ॥ द्रोण को प्रियसदा पांडव प्रीति के अनुरूप। कहत सुनिकै अश्वही सुनितासु बरण अनूप ॥ द्रोणहै कारुणिक हिंसा कोन जानतरूप। महाभयमें मंत्रइमिसो भूझिये नहिंभूप॥ सभा उपबन साधु जनमें सौधमाह ललाम। कथा बार्त्तोबीज पण्डित होत हैं अभिराम ॥ बैशंपायनउवाच ॥ कर्णऐसे बचन कुत्सितकहे फिरिफिर भूरि। कछूनहिंआ-चार्यबोले रहिभविष्य बिसूरि ॥ कर्णउवाच ॥ करहुगोधन सकल रक्षित ब्यूह बांधहुउद्ध। रहहुसब सनद्धठाढ़े करतहैं हमयुद्ध ॥ मत्स्यपतिवीभ-त्स्यके यहचलो आवतजौन। ताहिबारण करतबेला बारिको जिमिगौन ॥ चापतेमम मुक्त शायक सर्पसे शितधार । लक्ष्यतेजे नहीं चूकत भरेबेग उदार ॥ रुक्मपंख सुतीक्ष्ण शायकमुक्त मोतेजौन। पार्थको तेछाय लेहैं शलभतरु समतौन ॥ शरन को सन्धान ज्योंसुनि तलन्ह को आघात। सुनहुगे तुमसदृशभेरी बजूकैसो पात ॥ बर्षतेरह रहो अर्जुन बसत बनके माह। युद्धसों करि स्नेह सोऊ लरैगो नरनाह ॥ पात्र अर्जुन पायगुण सोंभरोबिप्र समान। करैंगेबसु भूरिसोहम ताहिशायक दान॥ अग्निके समजिष्णु आयुद्ध धरे इन्धन जौन । सहित बनको भस्म कारक महा बलको भौन ॥ अश्वबेग प्रबात गर्जनि सुरथघोषउदार। मेघ सम हम

शमन करिहैं बर्षिकै शरधार ॥ कर्णके सुनि बचन ऐसे भरेगर्ब महान। कृपाचारय दियेउत्तर महाबुद्धि निधान ॥ कृपउवाच ॥ क्रूरतर तब रहति मतिनिति युद्धमें राधेय । नहींजानत प्राप्तिकारण तासुफल अनुमेय ॥ शास्त्रमतते शकुनको फलजानिकै हमसर्ब। कहतहैं हम युद्धहैयह नाश हेतुअखर्ब ॥ देशकाल बिहीन युद्ध न बिजय देत अखण्ड। प्रबल बीर प्रचंडहूको नष्टहोत घमण्ड ॥ देशकाल बिचारि नीको युद्धकीजै बीर । काललहि अनुकूल रणफल प्राप्तहोत गँभीर ॥ बचनसों रथकारके व्यवसाय करत न बुद्ध। भूपयाहि बिचार करिये पार्थसों फिरियुद्ध ॥ एक आवत कुरुनपै कियएक खांडवदाह। कृष्णाकी जेहिंहरी भगिनी एक सह उतसाह ॥ एकरूप किरात हरको युद्धमे संतुष्ट। कियोबाधो जयद्रथजेहि हरी कृष्णहिदुष्ट॥ पंचबर्ष सुरेश सों जेहिअस्त्र सीखेसर्ब । एकसो अब कुरुन जीतत लेत सुयश अखर्ब॥ एकजीतो चित्रसेनहि महाबल गन्धर्ब। कालखंज निवात कवच अजेय जीतेसर्ब ॥ एकरथसो सूतसुत तुमकियो कहियेतौन। पार्थसों नहिंयोग्यकरिबे युद्ध सुरपति जौन ॥ पार्थसोनहिं एकलरिबे कहतबुद्धि समान। कीलिअहि मुख अंगुली देकहा भेषजप्रान ॥ बरयकुंजर मत्तपैचढ़ि बिना अंकुश पास। नगरको तुमचलो चाहतभूलि कारण नाश ॥ ज्वलित पावकमांह पैठो चहतहौ सहचीर । तरो चाहत सिंधु गलसों शिलाबांधि गँभीर ॥ कृतास्त्रकै अक्रतास दुर्बल बलीकै अति जौन। लरो चाहत पार्थसोंहा महा दुर्मति तौन ॥ बर्षतेरह लह्यो दुखजिहि महावीर अधर्ष। सिंहसोंको भिरैगो नहिं भरो भूरि अमर्ष ॥ दोहा ॥ बज्रपाणिसम पार्थकोहै व्यवसाय गंभीर। हमषटरथ मिलिलरैंगे सुनहु कर्ण रणधीर ॥ रहै सु सैन्यक सजगहवै बांधिव्यूह बलवान। करौ युद्धसब जिष्णुसों बासव दनुज समान ॥

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणाङ्काभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणेऽश्वबाक्यबर्णनोनामद्वाविंशोऽध्यायः ॥२२ ॥

अश्वत्थामोवाच ॥ दोहा ॥ नहिंगोधन जीतेगये नहिंसीमांतर पार। नहिं हस्तिनपुर गये का कहत निलज्ज उदार ॥ जीति महा संग्राम को पाय

बिपुल धनतौन। अपनो पुरुषारथ कहतनहीं महतजन जौन ॥ दाहत अग्नि अवाक रबि भौन प्रकाशक नाक। धरेधरा जो जगतको नित्य सो रहति अवाक॥ ब्राह्मणजेते कुशलहैं भोजनादि केमाहि। कहत आपुउत्तर सुनो पासहमारे पाहि ॥ कियो स्वयंभू बिहित जो चारिबर्ण को धर्म॥ अपने अपने बर्णको बहत धर्मजन पर्म॥ कहोकुशल कैसेभये तुमरणमें गंभीर। देखत अपनी जातिको नहिं बोलत ह्वैबीर॥ यथान्याय क्षिति जीतिकै सज्जन बीर उदार। निर्गुणहू गुरुको करत महाभाग सत्कार॥ होतप्रसंशित भूपकोजीति द्यूतमें राज। क्रूरकर्म धृतराष्ट्र सुततो सहह्वै हतलाज॥ ऐसेधनलहि करैगो अपनो कौनबखान। पापपुंज करिकैकपट ह्वैकैब्याध समान॥ द्वन्दयुद्ध करिजिष्णुको केहिजीतो बलवान। धर्मभीम माद्रीतनयके कोबीर समान॥इन्द्रप्रस्थमें युद्धकरि काकोजीते कर्ण। कृष्णा को जीतोयथा तथा करहुसो स्मर्ण॥ एकवस्त्रा रजभरीसो ल्याय सभाके भौन। कौर वकुलको मूलतुम काढ़ोदुर्मति भौन॥ स्मर्णकरहु तहँबिदुरजे कहेमहामति बैन। करतद्यूत प्रारंभको कुरुकुल नाशनऐन॥ क्लेशनकृष्णा को सकतसहि तेपांडवधीर। कौरव कुलकनाशको प्रगटो अर्जुनबीर॥ तुम फिरि पण्डित होयकै कहन चहतहौ बैन। बर अंतनिःशेषसो कियोचहत बलऐन॥ देवासुर गन्धर्बसों जिष्णु अभयकर युद्ध। तुमसोंसब विधिसों अधिक बीर धनुर्द्धर उद्ध॥ अस्त्रनसों जोअस्त्रको करतनाश रणधीर। अर्जुन सोको जगत में करता युद्धगँभीर॥ पुत्रशिष्यको सम कहत जे मतिमान सुनीति। याते कुन्ती सुतन पर द्रोण करत है प्रीति॥ यथा द्यूत करि सभामें कृष्णहि गहिकैहाथ। ल्याये अबतैसे करहु युद्ध जिष्णुके साथ॥ यह तव मातुलि शकुनिहै दुष्ट द्यूतकर जौन। अर्जुनके ह्वैसामुहे करै युद्ध अबतौन॥ फेंकत अक्ष न धनंजय ज्वलितअग्नि सम बान। महा-धनुष गांडीवते निशित करत सन्धान॥ मातुलिके सँगसभामें कियोयथा तुमद्यूत। तातेरक्षित होय अब करहुयुद्ध सुतसूत॥ करौ युद्धजोधानहम करत जिष्णुसों युद्ध। तब हम लरिहैं मत्स्यसों जबह्वै फिरिहै क्रुद्ध॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याश्रा भि
गामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगो
कुलनाथेनकबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेअश्व
त्थामावाक्यबर्णनोनामचयोविंशोऽध्यायः॥ २३॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ अश्वत्थामा कृप कहतसाधु नीतिमयबैन। क्षात्र धर्मसों चहतहैं रणहि कर्ण बलऐन ॥ कहत कोउ आचार्यको ऐसेबचन बिरुद्ध। देशकालको देखिकै सम्मत हमको युद्ध ॥ जाके रबिसे पंचहैं बैरीबीर महान। उदयदेखि तिनकीन क्यों पावै मोहसुजान ॥ लहत स्वार्थमें मोहसब जे विदधर्मस्वरूप। ताते हम तुमसों कहत बचन रुचै जो भूप ॥ कर्णकहे आचार्यको द्वेषतेन ये बैन। कहेतेज उत्पन्नको क्षमा करहु बुधिऐन ॥ रहो न काल बिरोधको आये अर्जुनबीर। कृप आचार्य्यादिक सकल क्षमाकरहु रणधीर ॥ तुममें अस्त्राभ्यासज्यों रबिमेंप्रभा अमान। बसति चन्द्रमामें यथा लक्ष्मी सुनहुसुजान ॥ तुममें है ब्राह्मणयता सह ब्रह्मास्त्रमहान। वेदचारि तुममें बसत क्षात्रधर्म अतिमान ॥ क्षात्रधर्म ब्राह्मणयसँग सुनो न काहू साथ। समुत द्रोणमें बसतहैं पूरण किये प्रकाश ॥ यामदग्नि बिनजगतमें अधिक द्रोणसों कौन। सर्ववेद ब्रह्मास्त्रको मनु बिधिबिरचो भौन ॥ कीजै क्षमा आचार्य्यसुत समय भेदको हैन ॥ युद्धकरहु मिलिकैसकल अर्जुनसों बलऐन ॥ अश्वत्थामोवाच ॥ न्याय न हमसों बचनयह है कहिबे कुरुबीर। लहैं रोष गुण सिद्ध्यको भाषो गुरुगँभीर ॥ शत्रुहुको गुण बाच्यहै मित्रदोष मतिमान। पुत्र शिष्यको दोषगुण कहत सयत्न सुजान ॥ दुर्योधनउवाच ॥ करुआचार्य अब क्षमातुम समय शान्तिको प्राप्त। भेद न तुममें हैकछू तुम ममगुरु अति आप्त ॥ तबदुर्योधन कर्ण कृप भीष्म सहित कहिबैन। कियो द्रोणिके क्रोधको शान्त महामति ऐन ॥ द्रोणउवाच ॥ प्रथमबचन जो पितामह कहो महामतिधाम। हमप्रसन्न ताते करहु अबजो नीतिललाम ॥ लखै सुयोधन को नहीं जैसे पारथबीर। सहसा नीतिसो कीजिये तजिकै मोहगँभीर ॥ भोनिवृत्त बनबासते भरो क्रोध बलभौन। बिनालिये गोधन नहीं क्षमा धरैगो तौन ॥ कहो सुयोधन प्रथमही भीषम तुमसोंजौन। समुझि कहहु बीते कि नहिं बर्ष त्रयोदशतौन ॥ भीष्मउवाच ॥ कछूघोस अधिकी गये बर्ष त्रयोदशबीति। ज्योतिष पंचप्रकारके कहत अब्द तेहिरीति ॥ सावन शशधर नाक्षत्रिक अरु बार्हस्पत्य सुसौर। होतबर्षहैं पांचबिधि के बदत बिज्ञ शिरमौर ॥ बिजयादशमीमें गये हारिपाय दुखरूप। पांडवग्रीषम में भये प्रगटजानि यह भूप ॥ पंचमास बाकीगुणत ह्वैकै परम सचैन।

बर्षहोत बिधिपांचके जानत तौन तिन्हैंन ॥ तेरहबत्सर अरु नवबासर पांडव बिज्ञबिताय। सुभटशिरोमणि प्रगटभयोहै महाक्रोध सों छाय ॥ सावन बत्सर जौनजो दिन गणनासों होत। अमा पूर्णिमा पायकै शशधर करत उदोत ॥ नक्षत्रनसों होतहै नाक्षत्रिकजो बर्ष। सौरहोत संक्रान्तिसों सुमतिउक्त जो बर्ष ॥ एकराशिकों भोगिजब करतदुतियपै गौन। बार्हस्पत्य सुहोतसो मास त्रिदशकोतौन ॥ चान्द्रमान बत्सरत्रिदशपांडव बिज्ञ बिताय। युद्धहेत अतिक्रुद्धह्वै प्रगटभयोहै आय ॥ अर्जुन जानत है सकल भेदबर्षके जौन। रथचढ़ि आयो ह्वैप्रगट यातेसो बलभौन ॥ सर्बमहात्मा धर्मबिद पांडवकोबिद पर्म। धर्मबिमुखते होहिं किमि जास परस्पर धर्म ॥ तेबिक्रम चाहतकियो पांडवसुनु कुरुभूप। धर्मपाससों बद्ध नहिं तजो क्षात्रब्रतरूप ॥ लरो समरमें कीजिये शस्त्रधरण को धर्म। भयोप्राप्त अब आयसो करहु यथोचित कर्म ॥ कौरव हमसंग्राममें सिद्धि न लखतगँभीर। महाक्रोधकरि प्राप्तभो प्रबल धनंजयबीर ॥ होतजयाजय एकको भये युद्ध अतिमान। करहु युद्धकै दीजिये तिन्हैंराज्य सुखदान ॥ एकक्षिप्र कीजैनृपति आयोअर्जुनबीर ॥ दुर्योधनउवाच॥ नहींपितामह देहिंगे बांटिराज गँभीर। करहुपितामह युद्धकोजो उपचारिककर्म। भीष्मउवाच ॥ होय सर्बथा श्रेयसो सुनहुकहत हम पर्म ॥ चतुर्भाग बल सहित तुम जाहु स्वपुरको भूप। चतुर्थांश सेनाचलो गोधनलिये अनूप॥ अर्द्धसैनसो करहिंगे हम पांडवसोंयुद्ध। द्रोण कर्ण कृपसुत सहित महाबलउद्ध ॥ सुनहुं तात हम जिष्णुसों करिहैं युद्धमहान। आवै यदपि सहायको मत्स्यसहित मघवान ॥ बैशंपायनउवाच ॥ रुचो सुयोधनको बचन कहो पितामहजौन। यथाभागकरि सैनको कियगोधन सहगौन ॥ भीष्म बिदाकरि भूपको गोधनसहित सहाय। सेनामुख्यन सहरहे आपु सुव्यूह बनाय ॥ भीष्मउवाच ॥ रहो मध्यमें द्रोणतुम अश्वत्थामा बाम। दक्षिण दिशि रक्षणकरो कृपाचार्य्य बलधाम ॥ अग्रभागमें कर्णतुम रहहु सज्ज ह्वै बीर। पृष्टभागपर रहतहम पालत सैनगँभीर ॥ बैशंपायनउवाच ॥ रोला ॥ देखिऐसे सज्जसेना कौरवनकी बीर। बेगि आयो जिष्णु रथको भरतघोष गँभीर ॥ लखी कर्णादिकन ताकीध्वजा अतिरथ घोष। सुनी ध्वनि गांडीवधनुकी भरी दारुणरोष ॥ कहनलागे द्रोणऐसे देखिसबकी

ओर। भयो प्राप्तसो महारथलखु जिष्णुको अतिघोर॥ द्रोणउवाच॥ ध्वजा लक्षित होतिहैयहबानरी अतिमान। गर्जत कपीवर होतरथको चक्रजन्य महान॥ चढ़ोरथपर चलोआवत धनुषखैंचत घोर। गांडीव धनुज्याघात धुनिसों भरत चारोंओर॥ बाण ये द्वै चरणऊपर परेमेरे आय। छुवतमेरे कर्णको शरगये द्वै अनुभाय॥ बहुतदिनमें लखो हमयह बंधुप्रिय मतिमान। ज्वलित जाको लसित लक्ष्मी पांडुपुत्र सुजान॥ अर्जुनउवाच॥ मत्स्यपतिसुत हांकिकै रथ जाहु सेनापास॥ जहांते लखिपरैं कुरुकुल अधम दुर्मतिरास॥ जायनीरे छोंड़िसबको लखो अर्जुनबीर। नहींदेखो तहँ सुयोधन भरोक्रोध गँभीर॥ लखो दक्षिणओर गोधन लयेसेनासाथ। कर्ण भीषम द्रोणको तजि जातहै कुरुनाथ॥ रथानीक बिहायकै यह चलहु उत्तरतत्र। लये गोधन जातभाजो है सुयोधनयत्र॥ तहां करिहैं युद्ध लाभ न यहां के संग्राम। जीति ताको फिरैं अपने लेय गोधन माम॥ बैशम्पायनउवाच॥ यह भांति सुनिकै किये उत्तर अर्ब आतुररूप। हांकिकै रथ चलो जेहां रहो कौरवभूप॥ छोड़ि भीष्मादिकन को तहँ रहे जे रणधीर। जानि आशय कृपाचारय लगे कहन गँभीर॥ बिना राजानहीं हमसों लरैगो बलवान। छोड़ि पीछे जात ताके भरो क्रोध महान॥ जिष्णुसो को एकलरिहै पायरणमें क्रुद्ध। कृष्णबिन मघवान यासो सकैको करियुद्ध॥ कितौ बारणकरै द्रोण सपुत्रताको जाय। नाव सो नृपलखो बूड़न जिष्णु बारिध पाय॥ हांक दै कहिनाम अपनो जाय अर्जुन बीर। शरनसो भरिदियो सलभ समानसैन गँभीर॥ भूमि नभ नहिं लखत सैनिक सघन बर्षतबान। शंखधुनि तबकियो अर्जुनअशनि पात समान॥ तानिकैधनु शरन्हसों तब ध्वजाकाटी सर्ब। शंखधनु रथ घोषसों भोभूमिकम्प अखर्ब॥ बोलि हंभा शब्द ग्रीवा पुच्छउद्धउठाय। शंखधुनि सुनि नगरकी दिशिभजीं सिगरी गाय॥ गाय सकल छुड़ाय दीन्हीं मथित करिकै सैन। चलो सोहें नृपसुयोधन के महाबल ऐन॥ सैन्व्यूह बिलोकि अर्जुन गाढ़अति बलऐन। कहोउत्तर कुंवरसों यहि भांतिसों बरबैन॥ बेगसों ये हांकि उत्तर श्वेतमेरे अर्ब। चलहु सेनामध्य जहँ कुरुबीर वृन्द अखर्ब॥ कर्णमोसों लरनचाहत नागसों ज्योंनाग। देहुमोहिं भिरायतासों मत्स्यपुत्र सुभाग॥ बातजब रथहांकि उत्तरभेदि

ब्यूह महान। लगो सेनामध्य बिहरण जिष्णुअति बलवान॥ शत्रुसह संग्रामजित जयचित्रसेन सुबीर। लरणलागे चाहिजीवन कर्णको रण-धीर॥ तिन्हेंतब धनुषाग्निसों तकिबाण ज्वाल समान। गहन सों रथ वृन्द तिनको कियोभस्म महान॥ तुमुलयुद्ध प्रवृत्तभो तबह्वै विकर्ण स-क्रुद्ध। लरनलागो जिष्णुसों शरबर्षिकै अतिउद्ध॥ क्रोधकरि ध्वजकाटि डारो तास अर्जुन बीर। ध्वजाकटत बिकर्ण भाजो भरोभीति गँभीर॥ बीर शत्रुंजयभिरो बीभत्ससों अतिमान। जगतजेता जिष्णुऊपर लगो बर्षन बान॥ पंचशरसों हनोताको धनंजय बलवान। गिरो शत्रुंजय स्व रथते वृक्षसों गतप्रान॥ भूप भटयोधार अगनित हनेअर्जुनबीर। कम्प सेनालगी ज्यों बशबायु बनगम्भीर॥ हने अर्जुन सुभट तिनते भरी भू अभिराम। जिष्णुके भयभरे भाजे बीरजे बलधाम॥ धरेबर्म उदार अ-र्जुन मत्तबारण रूप। करण सेना नाशलागो क्रोधसों भरिभूप॥ फिरत सेनामांह अर्जुन अग्निसों चहुंओर। दहत बनसेा बर्षिकै समज्वाल शर बरघोर॥ सेाणाश्व रथके प्रथम चारो शरण सों संहारि। काटि शिर संग्राम जितको दियोभूपर डारि॥ हतो भ्रातहि देखि दौरो कर्ण क्रुद्ध महान। आय अर्जुनको हनेतेहि निसित बारह बान॥ हनेचारो हयन को शरसहित उत्तरसूत। देखि आवत कर्णको अतिबेगधारे धूत॥ चलो आतुर हांकिकैरथ बीरअर्जुन उद्ध। दोउअतिरथ धनुर्द्धर अरि वृन्द दमन सक्रुद्ध॥ लगे कौरव लखन तिनको युद्धआथ अमान॥ मूदिलीन्हों कर्ण को रथबर्षि अर्जुन बान॥ बानबिद्ध सनाग रथभट करणलागे सेार। छन्न भीष्मादिकन को किये बर्षि के शरघोर॥ कर्णकाटे शरणसों सब जिष्णु प्रेरित बान। रहो ठाढ़ो तहांसहित फुलिंग अग्निसमान। भयो तहँ तबशब्द भेरीशंख ज्यातल ताल। कर्णको कौरव प्रसंशा लगेकरन बिशाल॥ लांगूल अंकित ध्वजाजाकी महाभयकर घोर। गांडीव ज्या धुनिशब्द सों अतिभरत चारोंओर॥ देखि गर्जत कर्णऊपर बर्षिकै बर बान। साश्वरथ सहसूत अर्दित कियो जिष्णुमहान॥ पितामह कृप द्रोणपर बहुजिष्णु बर्षबान। कर्णसह तिन जिष्णुपर किय बाणवृष्टि महान॥ तथालीन्हों छायशरसों कर्णको कुरुबीर। चन्द्रार्कसे धनमध्य ते शरवृष्टिमांह गँभीर। शरणसेा तबकर्णबेधे जिष्णुके रथअर्ब। तीनि

तीनि सुशरन बेधे सूतकेतु अखर्ब ॥ देखिकै शरबिद्ध यहरथ सूतको बर बीर। सुप्तसिंह समानजागो भरो क्रोधगँभीर ॥ शरास्त्र बर्षा कर्णऊपर करि अमानुप कर्म। निशित भल्लन डारिबेधो सूत सुतकोमर्म ॥ बाहुशीश ललाट ग्रीवा हृदय तासु महान। मुक्तकरि गांडीव सों शर अशनिसे अति मान ॥ जिष्णु के शरबिद्धह्वैकै भयो व्याकुलबर्ण। छोड़िकै रणभूमि भागो सूतको सुतकर्ण ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीमंदीजनकाशीबासिरघुनाथकवीस्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेविराटपर्वणिकर्णपराजयवर्णनोनामचतुर्विंशोऽध्यायः ॥२४॥

बैशंपायनउवाच ॥ गेला ॥ कर्णभाजे तब सुयोधन के पुरोगम जौन। सैन अपनी आपनीले तहांआयेतौन ॥ बहुत भांतिन लगे बर्षन कोप करिते बान। सिंधुबेला सदृशयाभे तिन्हैं जिष्णुमहान ॥ दिव्य अस्त्रनसों लिये तबतिन्हैं अर्जुनछाय। किरण सेा जिमि दिशनको सब उदित दिनकर आय ॥ शरनसों दशदिशा अर्जुन मूंदिलीन्हीसर्ब। देखिपरत न कहूंकोऊ सुभट गजरथ अर्ब ॥ रहे नहिंबिनाबिद्ध तिनके अंग अंगुलमान। जिष्णु प्रेरित धनुप ते छुटि निसित लागे बान ॥ हस्तलाघव जिष्णुको लखिकै प्रसंशतबीर। काळाग्निके समजरत विभत्सु भस्मभटन गँभीर ॥ शकत सहिनहिं शत्रुताको ज्वलित अग्निसमान। सघन अर्जुन शरन सों सेा लसीसैन महान ॥ भानुरस्मि समेत गिरिपर यथा जलद अखर्ब। सैन किंसुक बिपिनसी भइ कौरवनकी सर्ब ॥ परेरथन समेत अगणित मरे मारेअर्ब। परे क्षितिपर मरे गज मनुगिरे अश्व अखर्ब ॥ प्रलय में ज्यों जगत दाहत महापावक भूप। अरिन को त्यों नाशकीन्हों जिष्णुकाल स्वरूप ॥ भजीसेना चहूंदिशिको कौरवन की सर्ब। महाभय सों भरी देखत नाशकाल अखर्ब ॥ तेजसों अत्यस्त्र गणके धनुष ध्वनिसोंचण्ड। महा बानर शब्दसों भरिभूरिगो ब्रह्मण्ड ॥ देवारिहन्ता जिष्णु भयसों भरी कौरवसैन। देतशक्ति जोरही लखतहि हरीसो बलऐन ॥ श्रोणि तासन शरनसों भरिलयो गगन महान। तिग्मते जन भानुकर जिमि दिशनको अभिमान ॥ अहित तेहिक्षण जिष्णुको रथसके रोकिन भूप ॥

बायुबेगी अर्बजामें लगेअतिबल रूप ॥ शत्रुतनमें जिष्णुकेशर लगतज्यों कटिजात। तथा अरिदल भेदिकै रथजात कटिसम बात ॥ करीक्षोभित शत्रुसेना बेगसों बरबीर। सहस फणसों सर्पजैसे मथतसिन्धु गँभीर ॥ तजतशर अत्यन्त चहुंदिशि हांकिरथ अतिमान। धनुषधुनि रथघोष अद्भुत सुनत अरिहर प्रान ॥ भ्रमत दक्षिणबाम सबदिशि जिष्णुबर्षतबान। धनु निरन्तर सदृशकुण्डल देखिपरत महान ॥ परतहै न कुरूपमें जिमि चतुरके चखजाय। तथा लगत अलक्षमें नहिंजिष्णुके शरधाय ॥ चलत ज्यों गजवृन्द बनमें होतपथ नरनाह। मार्गतैसे लहत रथको जिष्णुपर दलमाह ॥ हनत रणमें कहत ऐसे शत्रु सुभट उदार। काल अर्जुन रूप है यह नाशको करतार ॥ सेनभागी कुरुनकी करिसोर व्यकल महान। शरन सों बिनुशीश कीन्हों जिष्णुखेत समान ॥ करी शोणित धारसों सब भूमि लोहित रंग। भानुके करभये लोहित पाय शोणित संग ॥ भयो सन्ध्या सदृश नभ सहसूर शोणित रूप। भयो जिष्णु निबर्तनहिं गो अस्तको रबिभूप ॥ रहेठाढ़े समरमें जेमहारथ रणधीर। दिव्यास्त्रतिन पर लगो बर्षण महाअर्जुनबीर ॥ हनेसत्तर द्रोणकोशर दुःसहै दशबान। आठशर बरद्रोण सुतको हनेबीर महान ॥ शरदुशासनको हनेतीनि कृपहि समान। भीष्मकोषट शिलीमुखसो भूपको शतबान ॥ कर्णबेधित शरन सों कियकर्णके बरबीर। महाधनुधर कर्णको लखि बिद्धबिरथ अधीर ॥ भजी सेना कुरुनकी चहुंओरकी गहिऐन। बिष्णुको लखियुद्ध उद्दितकहो उत्तरबैन ॥ चलैंकौन अनीकपै हमहांकि रथ अतिगौन। कहहु सोहम कीजिये अबजिष्णु अतिबलभौन ॥ अर्जुनउवाच॥ व्याघ्रचर्मसो रचितरथ है लगे लोहित अर्ब। सहकमण्डल चिन्हजाकी ध्वजानील अखर्ब ॥ द्रोणसा आचार्य्य हमको मान्यहै अतिमान। धनुर्वेद बिधानबेत्ता जास सम को आन ॥ शीघ्रताके निकट ह्वैकै हेधनुर्द्धरवीर। हांकिरथ कीजै प्रदक्षिण ताहि उत्तरधीर ॥ द्रोणमोपै डारिहै जो प्रथम आयुधउद्ध। सज्जह्वैकै चलहु हमसों होयगो फिरियुद्ध ॥ निकटताकेधनुष चिन्हित ध्वजा जाकी माम। द्रोणकोसुत महारथ है सोई अश्वत्थाम ॥ सर्बथा है मान्य हमको महा धनुधरवीर। खड़ोयह रथव्यूहमें जो धरेबर्म गँभीर ॥ तीसरी सेनाग्र आगेसो सुयोधन भूप। नागचिन्हित ध्वजाजाकी कनकमय अतिरूप ॥

तासु संमुख चलहुमेरो हांकिकै रथबीर। द्रोणको यहशिष्य आतुर शस्त्र शीक्षितधीर॥ याहिमोहिं देखाइबे शीघास्त्र बिपुल अमान। नागकक्षा चिन्हध्वज के करण बिदित सुजान॥ नीलजाकी ध्वजाधारे छत्रपाण्डुर जौन। धरेसुवरण वर्म रथ परभानुसे बलभौन॥ हैसुयोधन सानुग येपितामह अतिबीर। पश्चात इनपै चलौगे येबिघनकरण गँभीर॥ चलहु तातेवेगि इनपै हांकिकै रथआर्य्य। खरेआगे द्रोणकेरण चहतकृप आचार्य्य॥ बैशंपायनउवाच॥ कौरवन की लखत सेनाचली ऐसेभूप। ग्रीष्मान्त में ज्यों उग्रमारुत लगेजलद अनूप॥ तुरँग नानाभांति गतिसो चढ़ेसादी बीर। द्विरद प्रेरित करेयोद्धा धरेकवच गँभीर॥ इन्द्रचढ़ि गजराज पै सँगलये सुरगणसर्ब। यक्षकिन्नर प्रजापति बसु रुद्र सहगन्धर्ब॥ भयो शोभित गगनगण ग्रह यथामण्डलवान। लखोचाहत अस्त्रको बल मनुज में अतिमान॥ भयोचाहत युद्धभैरव जिष्णु कृपसों जौन। चढ़ि बिमानन देवआये तहां देखन तौन॥ पितर राक्षसमहा ऋषिनृप स्वर्गबासी जौन। नहुष और ययाति आदिक तहां आयेतौन॥ अग्नि ईश सधर्म्म पासी सोमविधि सधनेश। लखन आयेयुद्ध कौरव जिष्णुको नभदेश॥ दिव्य माल सुगन्धसो भरिभई सनासर्ब। यथापाय बसन्त सुरभित होत बिपिन अखर्ब॥ देवभूप नक्षत्र मणिसों पायकै सहबास। रही नभगत धूरि धुन्धुरि भई तौन प्रकास॥ धरेमाला पङ्कजनकी चढ़ेबिमल बिमान। सहित सुरगण भयेशोभित गगनमें मघवान॥ बँधोसेना व्यूहदृढ़ लखि कहो अर्जुनवीर। सहित आदर मत्स्यपतिके पुत्रसो रणधीर॥ लसति काञ्चनमयी देवी मध्यध्वज के जास। चलहु दक्षिण देयताको कृपाचारय पास॥ बैशंपायनउवाच॥ जिष्णुके सुनिबचन उतर रजतसे रथअर्ब। चलोहांके महागतिसो यथापवन अखर्ब॥ जाय कौरव सैननीरे हांकि रथ अतिमान। देप्रदक्षिण तहां द्रोणाचार्य को बलवान॥ कृपाचारयको प्रदक्षिण देयरथ गंभीर। कियोआगे तासुठाढ़ो सहित अर्जुनबीर॥ बीर अर्जुन देवदत्त उठाय शंखमहान। धमित कीन्हों नामअपनो पूरिकै बलवान॥ सुनतशब्द महान ताको बज्रपात समान। लगेकौरव करण बिस्मय भरेभूरि बखान॥ जिष्णुकेसुनि शंखकीधुनि महाघोर गँभीर। शंख अपनो धमित कीन्हों महागौतमबीर॥ शंखधुनि सों कृपाचारय

पूरिचारो ओर। धनुष लेकैकियो ज्याकोशब्द अतिशय घोर॥ युद्धकांक्षी दुहुनके रथलसे सूर्य्यसमान। शरद ऋतुके धराधावत बातबश जलदान॥ कृपाचारय मर्मबेधी तानिधनु दशबान। बिद्धकीन्हों बिष्णुको करिक्षिप्रता अतिमान॥ पार्थशर समुदायसो कृपको दियोरथ पाटि। कृपा चारय शरनसों तेसकल डारेकाटि॥ कोपकरि कै शरन सो कृपको महारथ जौन। छायलीन्हों शरन सो बीभत्सु अतिबल भौन॥ शरन्ह सो कृप होय अर्द्दित क्रोधकरि अतिमान। गर्जिकै दशसहस डारेजिष्णु ऊपर वान॥ चारिशर सो हनेकृपके जिष्णु चारोअर्ब। गिरत तुरँगन गिरेरथ ते कृपाचार्य्य अखर्ब॥ क्रोधकरि उठिहने कृप दशबानकरि सन्धान। निशित शरसों काटि कृपको दियोधनुष महान॥ शरनसो फिरि कवच ताकोकाटि अर्जुनबीर। कियो तिलतिल मानशरन न छुयोतास शरीर॥ मुक्तकंचुक सर्पसो तबलसो कृप आचार्य्य। और हय धनुसज्ज कीन्हें झटित गौतम आर्य्य॥ यहिभांति काटे बहुत धनु जब जिष्णु धनुधरबीर। लियोकृप तबशक्ति करमें भरेक्रोध गँभीर॥ शक्तिफेंकी पार्थपे सो अशनिसी मतिमान। कियोदशधा जिष्णु सो हनिशरन सो बलवान॥ फेरि कीन्हों सज्जधनु कृपजिष्णु काटोतौन। पार्थडारे निशित शरदश तीनितेजस भौन॥ युवाकाटो एकते हनिचारि चारोंअर्ब। एकशरतें सारथी को हरोशीश अखर्ब॥ तीनितेरथ बेगुकाटे अक्षह्वै तेबीर। एकशरते दई कृपकी ध्वजाकाटि गँभीर॥ कृपाचारय के हृदयमें एकमारो बान। धनुष सारथि हनित लखिकरि कोपकृप अतिमान॥ कूदिरथते गदाफेंकी जिष्णु पै अतिभार। मारिअर्जुन शरन सो दइगदा फेरि उदार॥ लगेयोधा लखन कृपको बाणजाल मझार। सव्यमण्डल कियोतब रथहांकि मत्स्यकुमार॥ बिरथ लखिकै कृपाचार्य्यहि सुभट जे बलवान। कियो रक्षित आयकै तिनवेग सों अतिमान॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे बिराटपर्वणि उत्तरगोग्रहणेकृपाअर्जुनयुद्धवर्णनोनामपंचविंशोऽध्यायः॥२५॥

बैशंपायनउवाच॥ रोला॥ द्रोण कृपको लखि पराजय क्रोधकरि गंभीर।

सशरधनु धरिहांकि रथको चलो जहँ कुरुबीर ॥ रुक्मरथ परचढ़ो आवत द्रोणगुरु बलऐन। देखि उत्तर कुंवरसो इमि जिष्णु बोलेबैन ॥ अर्जुन उवाच ॥ लसति काञ्चनमयी देवीध्वजा ऊपरजास। द्रोणसो रथहांकि उत्तर चलहु ताकेपास ॥ अस्त्रशानित वृहतजाकी वाहिनी बलधाम। स्निग्ध बिद्रुम सदृश रथके जासुअर्ब ललाम ॥ दीर्घबाहु प्रताप पर सु द्रोण येरणधीर। सदृश उपनस्न वृहस्पति के बुद्धिमें गंभीर ॥ अस्त्रशस्त्र समस्तवेत्ता धनुर्वेद विधान। बसतजामें क्षमादिक गुण सत्य शील समान ॥ द्रोणसो हमकियो चाहतयुद्ध उत्तरबीर। हांकिकैरथ करहुताके सामुहे रणधीर ॥ बैशंपायनउवाच ॥ सुनत अर्जुन बचन उत्तर भरेबेग अखर्ब। द्रोणके रथकियो सोंहेंहांकि आतुरअर्ब ॥ बेगिआवत जिष्णुको लखि द्रोण अतिरथबीर। झटित आयेसामुहें रथहांकिकै रणधीर ॥ शंखकीन्हों धमित तिनशत भेरिशब्द समान। भई क्षोभित सकलसेना सुनत सिंधुसमान ॥ अरुणहंस समान तिनके देखि मिश्रित अर्ब। महाविस्मय भरेरणमें सुभट सैनिकसर्ब ॥ महाबीर अजेय दोऊ शिष्यगुरु बलधाम। जोरिकै रथकरि अलिंगन भरेमोद ललाम ॥ पार्थद्रोणहि मिलत लखिकैकौरवनकी सैन। भई शंकित हनैंगे येमिलेदोउ बलऐन ॥ बिहँसिकै भरिमोद अर्जुनबन्दि गुरुकेपाय। कहनलागे द्रोणके रथपास स्वरथ लगाय ॥ करहु प्रथम प्रहार तुमयह उचित बिहितबिधान। यथाबिधि हमकरहिंगे फिरि धनुप योजित बान ॥ एकबिंशति बाणको तबद्रोण किय सन्धान। बीचहीमें जिष्णु काटे शरणसों ते बान ॥ द्रोणबाण सहस्त्रसों रथ जिष्णुको लिय छाय। हस्तलाघवसो दियोतब कोप तासु बढ़ाय ॥ बढ़ोद्रोण बिभत्सु सों यहिभांति युद्धमहान। लगे बाणसमान बर्षण बीरदोउ बलवान ॥ बर्षिके शरवृष्टिकाटत शरनसों शरबीर। देखिकै नृपवृन्द बिस्मयसों भरे गंभीर ॥ कहनलागे द्रोणसों बिनजिष्णु लरिहै कौन। रौद्रक्षत्री धर्मधर गुरु महाबलकोभौन ॥ छायलीन्हें दुहुन रथ दोउ बर्षि बाणगँभीर। द्रोण मूंदो जिष्णु को रथ कोपकरि रणधीर ॥ धनुषलै गांडीव अर्जुन भरोकोप महान। द्रोणको शरजालकाटो तिमिरसो समभान ॥ फेरि नानाभांति सों रथजिष्णु अतिबल बीर। पूरिदीन्हें दिशन को बहुछोड़ि अस्त्र गँभीर ॥ छायलीन्हों गगनको शरसघन सों अतिमान। देखिद्रोण न परत ज्यों

नीहार मुद्रित भान ॥ द्रोण तब धनुधारिकै करिक्रोध अति रणधीर । अग्निचक्र समान वर्षण लगेअस्त्र गँभीर ॥ लगे काटन जिष्णु बिरचित अस्त्रजाल विशाल । बांसको बनजरत जैसे भयोशब्द कराल ॥ स्वर्ण पुंख सुशरनसों सबलई दशदिशिछाय । द्रोणके शरमिलित सिगरेपरत एक लखाय ॥ द्रोण अर्जुन बीरऐसे बर्षिबाण महान । महत उल्कनसों भरो करिदियो गगन अमान ॥ बान अर्जुन द्रोणके नभमें लसे यहि भांति । शरदऋतु के हंसमानो जातबांधे पांति ॥ द्रोणअर्जुन वृत्र बासव से लरे बलवान। मत्तगज ज्यों क्रोधह्वै करि दशनघात महान ॥ शरनसों दोउ लरनलागे परस्पर रणधीर। युद्धको व्यवहार ऐसो लगेकरनगँभीर ॥ पटतहैं दिव्यास्त्र दोऊ परस्पर मतिमान। जिष्णु वारत द्रोणकेशर शरन सो बलवान ॥ उग्र अस्त्रनको पराक्रम दोउ देखावत बीर। गगनको भरि लेत पुनि दोउ इषुनसों गभीर ॥ अस्त्र क्रीड़ा करनलागे वीरदोउ बलवान् । दिव्य अस्त्रनलगेबर्षण शिष्यगुरुअतिमान । भरे अमरषलरनलागे द्रोण अर्जुन बीर । देवदानव सदृशमो संग्राम तुमुल गँभीर ॥ द्रोणके दिव्यास्त्र रोके अस्त्रसों प्रतिकार। इन्द्रअरु बायव्य अरु आग्नेय सों सु उदार ॥ तहां अर्जुन अरिनके गण कवच काटत गात । शब्दहोत अघात गिरिपर बज्रकैसा पात ॥ द्रोण सेनाभरी शोणित लसी ऐसे सर्ब । भरो सुवन समूह किंसुक बिपिन मनहु अखर्व ॥ बाहुशीश कवन्ध ध्वज धनु कवचते मतिमान ॥ काटि अर्जुन भूकरीमणि खानिसी अतिमान ॥ कोटि सेना दई अर्जुन द्रोणकी अतिउद्ध । धुनत धनु दोउ चाहि जयरवभरे आतुर क्रुद्ध ॥ अन्योन्य छावत दुहुनको दोउ शरन सों अतिमान । लरे दोउ बलि इन्द्र ऐसे धनुर्द्धर बलवान ॥ भईबाणी गगनते इमिद्रोण को अतिउद्ध । करत दुष्करकर्म अर्जुनसों करत अतियुद्ध ॥ जेतार दानव देवको दृढ़मुष्टि अतिरथ बीर । दूरपातीहै प्रमाथी पार्थ धनुधर धीर ॥ गांडीव धनुते मुक्तकरि अतिमान अर्जुन बान । छायलीन्हों द्रोणको रथ सघन शलभ समान ॥ देखिते लागे सराहन जिष्णुको बरबीर । बायु पैठि न सकतहै शरजालमांह गँभीर ॥ जिष्णुके शरजालमें लखि मुंदो द्रोण उदार । चहूंदिशिते लगेसैनिक करै हाहाकार ॥ देखिकै शीघ्रास्त्र अर्जुनके महान अखर्ब । गगनगत लागेसराहन देवगण गन्धर्ब ॥ रथन

को समुदाय लीन्हें द्रोणसुत तबधाय। तातको शर संकुलित लखिकियो आय सहाय ॥ हृदयमाहँ सराहि अर्जुनको पराक्रम बीर। बेगसों रथ हांकि आयो भरोक्रोध गँभीर ॥ कोपकरि अतिआय अर्जुनपै सो अश्वत्थाम। मेघसों शरवृष्टि लागो करण अतिबलधाम ॥ द्रोणको तजिफेरि कै रथमहा अर्जुनबीर। चलेअश्वत्थाम सोहें भरेकोप गँभीर ॥ पायअन्तर बेगसों रथहांकि द्रोणाचार्य। छिन्नध्वजबर बर्मभाजे युद्धसोंअतिआर्य ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणविराटपर्वणिद्रोणपराजयवर्णनोनामषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

वैशंपायनउवाच ॥ रोला ॥ देखि आवत बेगसों सुत द्रोणको रणधीर। बाण बर्षत मेघसों अति भरो कोपगँभीर ॥ हांकिकै रथ भिरे अर्जुन सघन बर्षत बान। वृत्र बासव सदृश दोऊबीर अति बलवान ॥ सूर देखि न परो बायु न सच्चरोतेहिकाल। दुहुन बांधो दशौदिशिमें भांतियों शर जाल ॥ द्रोणिलहि कछु सन्धि सूक्षम दृष्टिसों निरधारि। जिष्णु धनुकी ज्या निपाती शुरक्षुर प्रहिडारि ॥ किय प्रशंसन सुरनसो लखिकै अमानुषकर्म। द्रोण भीषम कर्ण कृप साबास बोले पर्म ॥ जिष्णुके हियमाहिं मारो द्रौणि फिरि शतबान। बिहँसि अर्जुन सज्यकरि धनु भरे क्रोध महान ॥ अर्द्धचन्द्राकार भृकुटी करे अर्जुनबीर। द्रोणसुत सों भिरो ज्यों गजदोय मत्तगँभीर ॥ करनलागे बीर दोऊ लोमहर्षण युद्ध। देखि तिन को सकल कौरव भरे बिस्मय उद्ध ॥ महाविषसों भरे पन्नग सदृश बर्षत बान। द्रौणि अर्जुन करनलागे युद्धउद्ध महान ॥ तूण अर्जुनके अमोघ न बाण जास सिरात। अचल याते रहत रणमें करत शर अतिपात ॥ शीघ्र बर्षतबाण अश्वत्थाम के हैं जौन। तूण सिगरे भये खाली गये चुकि सब तौन ॥ तानिकै धनुचलो तब राधेय करिबे युद्ध। भयो हाहाकार सेना माहँ तब अतिउद्ध ॥ चक्षु दीन्हों तहां अर्जुन जहां धनु टङ्कार। तहां देखो कर्णको तब बढ़ो क्रोध उदार ॥ मारिबेको कर्णके करि कामना बरबीर। निवृत करिकै लखन लागो चखनको रणधीर ॥ देखि अभिमुख पार्थको सुतद्रोणको बिनबान। त्वरित सइसन पुरुष आये लैगये बल-

वान ॥ छोंड़िकै तब द्रोणसुतको धनंजय बरबीर। बेगसोंरथहाँकि धायो कर्णपै रणधीर ॥ क्रोधसों करि अरुण लोचन महाबल को ऐन। द्वन्द युद्ध बिचारि बोले सूतसुत सों बैन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेविराटपर्वणिउत्तरगोग्रहणेअश्वत्थामपराजयवर्णनानामसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

रोला ॥ कर्ण हमसों सभामें तुम बचन बोले जौन। युद्ध अवसर तब न हो अब समय आयो तौन ॥ सभामें जो द्रौपदीको कियो तुम अपमान। तास फल हम देतहैं अब तोहिं सूत महान ॥ धर्म पासनिबद्ध हमको कियो कोपित जौन। तास फल लखु सूतसुत रणछोंड़ि करहु न गौन ॥ सहो द्वादशबर्ष हम बनमांह क्लेशमहान। प्राप्त ताको होयगो फल अद्य तुमहिं अमान ॥ सूतसुत करु युद्ध हमसों द्वन्द आय अखर्ब। जाहिदेखो सहित सनक सुहृद कौरव सर्ब ॥ कर्णउवाच ॥ कहत अर्जुन जान कीजै कर्मसो प्रारम्भ। व्यर्थ बोले बचनके का बहुत धारे दम्भ ॥ लहो पूर्ब अमर्ष जो तुमतौन शक्ति विहीन। सो देखावहु अब पराक्रम जौन तुममें पीन ॥ इन्द्र मोसों लरैजोसँगलये अर्जुनतोहि। करैगो कछु व्यथा को नहिं युद्धकरतें मोहिं॥ अर्जुनउवाच ॥भाजिअबहीं गयेमोसों युद्धकरिलेप्रान। अनुजतवहम हनो तबतुम रहेनहिं बलवान ॥ अनुजबध करवाय भाजे युद्धको तजिऐन १ तोहिं बिनको और ऐसे आयबोलै बैन ॥ बैशंपायनउवाच ॥ भाँतियों कहि कर्णसों बीभत्सु बीरमहान। वर्मभेदी कर्ण ऊपर निशित बर्षेबान ॥ कर्णते शरकिये वारण शरणसों शितधार। शरनकेरो जाल कीन्हों चहूंओर उदार ॥ अश्वबेधित किये भुजबर जिष्णु के बरबीर। कर्णके करिक्रोध काटे जिष्णुतन गँभीर ॥ रहेअल्प तुणीर तिनसों कर्ण लीन्हें बान। जिष्णुके करिमाहँ मारे क्रोधकरि सन्धान ॥ कर्णको धनु जिष्णुकाटो क्रोधकरि गंभीर। कर्णकेको शक्ति काटो शरनसों कुरुबीर॥ कर्णके लखिचले सैनिक युद्धको करिकाम। शरनसो हनि जिष्णु दीन्हों तिन्हें अन्तकधाम ॥ शरनसों फिरि मारिदीन्हे डारि रथकेअर्ब। अशनि सो शरफेरि मारो हृदयमध्य अखर्ब ॥ बेधिसो शर वर्मबेधो हृदय तास

कठोर। भईमूर्छा कर्णको हियबढ़ो वेदनघोर॥ छोड़ि रणभू गयोउत्तर दिशाको गहिऐन।फेरि उत्तर सोंकहो बीभत्सु ऐसेबैन॥ बैशंपायनउवाच॥ चलहु उत्तरतहां लैरथ हिरणमयध्वजयत्र। वृद्धअतिरथ भीष्ममेरे पितामहहैं तत्र॥ युद्धमोसों कियोचाहत महाबलके ऐन। सैनलखि चतुरंगिणी बहुकहो उत्तरबैन॥ नहींहम करिसकत नियमित तुरँग रथकेबीर। प्राण गोभरि खेद बिह्वलभयो मन गँभीर॥ दिव्यास्त्रके सुप्रभावते परिपूरण करि अतिघोर। करतद्रावित दिशनको तुम कुरुन सह शरजोर॥ रुधिर मज्जा गन्यते हमहोत मूर्छितबीर नहींअबलों लखोऐसो युद्धउद्ध गँभीर॥ गदापातज शंखध्वनि भटसिंहनाद महान। गाण्डीव धनुज्या जन्यशब्द सोंबज्रपात समान॥ सुनतमेरे श्रुतिस्मृति सह नष्टह्वै गेबीर। मूढ़मेरो भयोचेतस सकत धारि न धीर॥ आलातचक्र समान मण्डल रावरोअति मान। धुनतधनु गांडीवको दशओर बर्षतबान॥ दृष्टिमेरी भई प्रचलित हृदय कांम्पतबीर। देखितुमहिं पिनाकधर सम करत युद्धगँभीर॥ लखत अर्जुन रावरेभुज होत भीम महान। देखि परत न लेत छोड़त करत शर सन्धान॥ अर्जुनउवाच॥ करहु आत्माको सुनियमित तजहु खेद गँभीर। कियो अद्भुतकर्म तुम रणभूमिमें रणधीर॥ मत्स्यकुल अरि दमन संभव राजसुत अभिराम। तुम्हेंयोग्य न खेदउत्तर धरहुधैर्य ललाम॥ युद्धकांक्षीसुरथ केमम करहु नियमित अर्ब॥ बैशंपायनउवाच॥ जिष्णुयों सुबिराट सुतसों बोलि बचनअखर्ब॥ झटित उत्तर भीष्मसोंहिं मोहिं दे पहुंचाय। चहतकाटो पितामहके धनुष की ज्याजाय॥ दिव्यअस्त्र बिचित्र छोड़त लखहु मेरेबीर। सदृश शम्पाचाप चंचल चाहिहौ रणधीर॥ कनक पृष्टि जोधनुष मम गांडीव अरिकुल काल। लखत चारों ओरते कुरुभूप ताहि बिशाल॥ सलिल श्रोणितपादसे गजरथानर्त महान। चहतहौं परलोक बाहिनि कियोसरित अमान॥ पाणिपाद कवन्धशाखा सदृशकाटि उदार। करत कौरव सैनबंशी शरनसों शितधार॥ जीति सेनाकौरवनकी एकहम रणधीर। सेकरनपथ कियोचाहत शरनसों गँभीर॥ बिद्धमोसों चक्रसी यहभ्रमत सैनअखर्ब। चहत तुमहिं देखाइबे हमअस्त्रको बलसर्ब॥ छोड़ि कैभ्रम करहुशीक्षित तुरँगरथके बीर। इन्द्रआज्ञासों हने हम दनुजवृन्द गँभीर। कालखंज पुलोम मारे हमअसंख्य उदार। हिरण्यपुर बासीसु

मारे दनुज साठिहजार ॥ वृक्षसे ध्वज तृण पदाती रथीसिंह समान। अस्त्राग्निसों कुरुसैनबंशी करत भस्ममहान ॥ रुद्र पावक बरुण मारुत धनदसह मघवान। बज्रआदिक अस्त्रहमको दिये सहितबिधान ॥ कौरवनकी सैन बन नरसिंह रक्षितजौन। तजहु उत्तर भीतिको हम चहतकाटो तौन ॥ बैशंपायनउवाच ॥ जिष्णुकेसुनि बचनएरथ हांकि उत्तर बीर। जाय पैठोभीष्म रक्षित सैन माहगँभीर ॥ देखिआवत कुरन जीतन महा अर्जुन बीर। चलेआगे दुचित ह्वैके भीष्म अतिरणधीर ॥ भीष्मको ध्वजकाटि डारो शरनसों बलवान। कर्मअर्जुनको बिलोकत भरेक्रोध महान ॥ बिकर्ण दुःसहअरु बिबिंशति सहदुशासन बीर। चले सुत धृतराष्ट्रके ए चारि अति रणधीर ॥ कियोवारण जिष्णुकोतब ह्वैदुशासन क्रुद्ध। हनेउत्तर कुंवरको अतिनिशित भल्लअरुद्ध ॥ फेरिअर्जुनके हृदयमें निशित मारोबान। जिष्णुकाटो धनुषताको क्रोधकरि अतिमान ॥ फिरिदुशासन कोहनोहिय पांचशरसों बीर। भजोरणको तजिदुशासन बाणबिद्ध अधीर ॥ तबबिकर्ण सक्रोध धनुधरिमुक्त करशितबान। कियोबेधित जिष्णुको धृतराष्ट्रसुत बलवान ॥ भालताको बेधिअर्जुन दियोरथते डारि। देखिदुःसह अरुबिबिंशति क्रोधको अतिधारि ॥ तीक्ष्ण बर्षण बाणलागे देखि बन्धुबिहाल। जिष्णुतिनके अर्बरथके हनेशरन बिशाल ॥ कूदिरथते बिद्धशर तजियुद्ध भाजेतौन। पुत्रनृप धृतराष्ट्र दुःसह बिबिंशति जौन ॥ हनतसैनिक वृन्द धावत जिष्णु चारोंओर। शरनसों अति प्रलयकाल मचाय दीन्होंघोर। कौरवनके महारथजे रहेधनुधर बीर। एकसंगह्वै लरनलागे जिष्णुसों रणधीर ॥ शरनको रचिजाल अर्जुन चहूंदिशि अतिमान। परेज्योंनिहार घनगिरि होत मग्न महान ॥ तथातिनको मूंदिदीन्हें सहित सेना सर्ब। गजनको अरुहयनको सुनिपरत शब्दअखर्ब ॥ बजेभेरी पटह घनसम भटनको ललकार। मचोसेना माहचारों ओर शोरअपार ॥ नरनके गज हयन तनकरत खंडअमान। बांधिकै शरजाल अर्जुनलगे बर्षणबान ॥ जिष्णुबर्षत बाणकुंडल सदृशकरिको दंड। लसोज्यों दिनमध्य गतरबि शरद को अतिचंड ॥ गिरत रथते रथी सादी हयनते अतिमान। नचत फिरत कबंधलीन्हें करनमें धनुबान ॥ बर्मचर्म सधनुष काटत शरनते कुरुबीर। भईभट तनखंड मंडितसमर भूमिगँभीर ॥ एक नृत्यत फिरत

अर्जुननिशित बर्षतबान। होतधुनि गांडीव धनुते बज्रपात समान ॥ सुनत सो रणछोड़ि भागे शेषसैनिक सर्ब। धरेकुंडल शीशतहवां परेदेखिअखर्ब ॥ शरणतेकटि गिरतमस्तक होतिशब्द महान। गरजिकैघन करत मानहुं उपलवृष्टि अमान ॥ बर्षबीते तेरहौंधरि जिष्णुरौद्र स्वरूप। धार्तराष्ट्रनको देखायोभरो बिक्रमभूप ॥ तासगहन समानसेना क्रोधअग्नि लगाय। लपटसे शरसंगसों सबदियो मनहुं जराय ॥ महारथन भगायकै सबत्रसित करिकैसैन। बीरअर्जुनभये ठाढ़ेमहाबल केऐन ॥ शोणितोदक भरीअति गंभीर सरित बहाय। करत निर्मित काल जैसे युगक्षय कोपाय। याद से शरपांच आयुधवृन्द सकल महान ॥ मुंडबुद्बुद सदृश कक्षपसदृश रुण्ड महान। गृद्ध जम्बुक भूतभैरव सिद्ध करता स्नान ॥ करी निर्मितभांतिकी यहिसरित अर्जुनबीर। करतिभू संग्राम भूषित भरी रुधरिगँभीर ॥ बैशंपायनउवाच ॥नृपसुयोधन कर्णद्रोण सपुत्रकृप बलवान। सहदुशासन अरु बिबिंशति भरेक्रोध महान ॥ युद्धको सन्नद्ध ह्वैकै धारिधनुष कठोर। घेरिलीन्हों जिष्णुको रथ आयचारों ओर ॥ जिष्णु ऊपर लगेबर्षण ते महास्त्रगँभीर। शरनसों रथमूंदि दीन्हों जिष्णुको रणधीर ॥ बिहँसिकै बीभत्सु लीन्हों महत सो कोदंड। अस्त्र वर्षण लगे अर्जुन भानु करसे चंड ॥ मूंदिलीन्हों कुरुनको शरडारि जालमहान। मेघते ज्यों गिरत बिद्युत तथाधनुते वान ॥ इन्द्रधनुसो धनुषभो गांडीव तेजसराश। यथाबर्षत मेघबिद्युत किये परमप्रकाश ॥ रथीजेता भयेब्याकुल तजेधीरज देत। लहोयोधन शांतिको अति भये बिह्बलचेत ॥ संग्रामसों ह्वै बिमुखभाजे युद्धकर्त्ता सर्ब। जोसुयोधन संगआये महारथ गहिगर्ब ॥ भीष्मशांतनु पुत्रसबके पितामह रणधीर। बध्यमान बिलोकि सेनाचलो धनुधरिबीर ॥ जिष्णुपै सन्धान कीन्हों मर्मबेधीबान। शङ्खधुनि करिकिये हर्षित अन्धसुतन महान ॥ देप्रदक्षिण आय रोको जिष्णुको रथबीर। चलोआवत पितामह को देखि अर्जुनधीर ॥ जाय आगेलेय ठाढ़ेभये अचल समान। जिष्णुके ध्वजमांहमारे पितामह बसुबान ॥ भल्लले शितधार अर्जुन पितामह को छत्र। काटिकै क्षितमांह डारोभयो अद्भुततत्र ॥ शरनसो फिरिध्वजा काटी हनेरथके अर्ब। पृष्टिपालक सारथी फिरिहने शरन्ह अखर्ब ॥ क्रोधकरि तबपितामह करिजिष्णुको अ-

नुमान। डारिदीन्हों धनंजयपर दिव्यअस्त्र महान॥ तथाडारो भीष्मपर दिव्यास्त्र अर्जुनबीर। दुहुंनसो तब लोमहर्षण भयोयुद्ध गँभीर॥ भीष्म अर्जुनसोभयो तबयुद्ध तुमुल महान। लखत कौरव तिन्हैंबलि अरुइन्द्रसे बलवान॥ भल्लसोलगि भल्लहोत फुलिंगके उद्योत। सघन पावस निशामें घन उड़तसे खद्योत॥ सव्य दक्षिण फिरत दोउसम अग्निके आलात। तजतशर गांडीव राजत धनुषअति अवदात॥ शरनसो बीभत्सु लीन्हों भीष्मको इमिछाय। तोयधारासो यथाघन धराधरको आय॥ सिन्धुबेला सदृश भीषम बरषिकै बहुबान। कियोबारण जिष्णुको शरजाल काटिमहान॥ फेरिअर्जुन लगेबर्षण निशित बाणसमूह। भीष्म ऊपर महातरुपै शलभकैसो जूह॥ पितामहशित शरनसो शरतौन काटेसर्ब। देखिकै तबकुरुन कीन्हों साधुवाद अखर्ब॥ करत दुष्करकर्म भीषम जिष्णुसों करियुद्ध। महाबलहै तरुण सो अति क्षिप्रकारी उद्ध॥ पार्थको अतिबेगथांभै औरको रणधीर। बिनाभीषम कृपाचारय द्रोणकै यदुबीर॥ दिव्यअस्त्र समस्त इनपै त्यागसह संहार। करतयाते समर भूमें अभयबीर बिहार॥ वैशंपायनउवाच॥ अस्त्रयुद्ध निबर्त्त कीन्हों भीष्म जिष्णु महान। मनुजयोग्य न जानि दोऊ लगेबर्षण बान॥ हस्तलाघव जिष्णुकरिकै भीष्मको धनुजौन। दियोकाटि क्षुरप्रशर सों महाबल के भौन॥ दूसरो धनुभीष्म लीन्हे सज्जकरि अतिमान। क्रोधकरिकै जिष्णु ऊपरलगे बर्षणबान॥ अर्जुनोशर निशितलागे करणवृष्टि गँभीर। अस्त्रबिद दोउनिशित बर्षण लगेशर बरबीर॥ दुहुनमें न बिशेषजानो परोबीर समान। दुहुंन दशदिशि करीपूरित बर्षिअति धनवान॥ भीष्म रथके रहेरक्षक सूरजे बलभौन। सामुहेंरथ आपने हनिजिष्णु डारेतौन॥ हंसपंक्ति समानशर गांडीवमुक्त अमान। परत रथपर भीष्मके कलधौत पद्मसहान॥ भीष्मके दिव्यास्त्र अगणित नाशकरता जौन। परत रथपर जिष्णुके सबदेव देखततौन॥ चित्रसेन बिलोकि अर्जुन कोसुशर सन्धान। कहन सुरपति सों लगे यहिभांति सहित बखान॥ नहींऐसो मनुज क्षितिपर अस्त्रवेत्ता आन। करत है सन्धान जैसो जिष्णुअस्त्र पुरान॥ लेत जोरत धनुष खैंचत तजत बाण अशेश। जिष्णु को नहिं हस्तलाघव परतजानि सुरेश॥ मध्यदिन गतसूरसे हैं दोऊबीर महान। परतदेखि

अजेय दोऊ सुरनको बलवान ॥ बोलि इमि सुरराजबर्षे दुहुन ऊपर फूल। कियेपूजित हर्षसों भरिबीर दोऊ तूल ॥ बामपार्श्व बिभत्सुके तब भीष्म मारेबान। बिहँसि कै तबजिष्णु कीन्हों निशित शरसन्धान ॥ काटिकै धनुभीष्म को दशबाण सों हियमध्य। मारिदीन्हों डारि रथपर जानिबीर अबध्य ॥ पकरि कूबर स्वरथ को रहिगये व्यथित गँभीर। हांकिरथ लेगयोसूत बिलोकि मुर्छितबीर ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणि भीष्मपराजयवर्णनोनामअष्टविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

बैशंपायनउवाच ॥ रोला ॥ छोड़िकै संग्राम भागे भीष्मजब तब भूप। नृपसुयोधन सहितसेना लरेआय अनूप ॥ जिष्णुकंमधि भालमारो तानिकै धनुबान। एकशृङ्ग सुमेरु सों तबलसोबीर अमान ॥ क्रोधकरि तब अग्निसे शरछोड़ि अर्जुनबीर। कियोबेधित नृपसुयोधन को महारणधीर ॥ लरनलागे सदृश ह्वै दोउभरे क्रोधमहान। महामत्त गजेन्द्र पै चढ़ितब बिकर्ण अमान ॥ द्विरदरक्षक चारिरथ सँगलिये धायोबीर। देखि आवत ताहि अर्जुन क्रोधकरि गंभीर ॥ कानलों शरतानि मारो कुम्भमें बलवान। बूड़िगो गजभाल में शरनिशित पुङ्ख प्रमान ॥ कांपिकैसो गिरो क्षितिपर लहत शायकघात। महागिरि को शृङ्ग जैसे बज्रको लहिपात ॥ दयोछोड़ि बिकर्णमृतगजभाजि शतपदजाय। लहिबिबिंशतिबन्धुकोरथ चढ़ो तापरधाय ॥ यथाबिधिको हनोगजके भालमें बलवान। नृपसुयोधन के हनोहिय तथाबिधिको बान ॥ भूपद्विरद विकर्णकोलखिभजीसेनासबै। तालदै तबकहोऐसेबीर जिष्णु सगर्ब ॥ अर्जुनउवाच ॥ छोड़ि कीरतिसुयश भाजे युद्धतेतजिधर्म। नहींइतजयपटहजो बजवायदीजैपर्म ॥ नामदुर्योधन तिहारोवृथा राखोतात। नामको नहिंधर्म तुममेंबिमुख रणतेजात ॥ नहीं आगे नहींपीछे तुम्हैं रक्षत जोन। भजेमरीभांतिसोंप्रियप्राणले सबतोन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणिउत्तरगोग्रहणेदुर्योधनपराजयवर्णनोनामऊनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

बैशंपायनउवाच ॥ दोहा ॥ जिष्णु को आहवान अंकुश लगे कौरव बीर। मत्तगजलौं फिरेरणको भरेक्रो गँभीर ॥ भूपके दिशिचले उत्तर कर्णगहि धनुघोर। नृपसुयाधन सैनरक्षत भीष्म पश्चिम ओर ॥ द्रोणकृप धृतराष्ट्रके जे पुत्रहे रणधीर। चलेआगे भूपके तेभरक्रोध गँभीर ॥ सिन्धुकैसो उलद आवत देखिसैन महान। जिष्णुको तिनकियो बारित बर्षिअस्त्र अमान ॥ जिष्णुअस्त्र निवारि अस्त्रन्ह सों महारणधीर। फेरिमोहन अस्त्र छोड़ो भरोमोह गँभीर ॥ अस्त्रतेकढ़ि निशितशर करिदिशा व्यापित सर्ब। गांडीवके श्वनशब्द कीन्हों व्यथितसैन अखर्ब ॥ ध्वनित कीन्हों शंखकों गहिपाणि सों अतिमान। कियोपूरित दशोदिशि में शब्दघोर महान ॥ शंखधुनि सुनि भये मोहित बीर कौरव सर्ब। होय मोहित परे रथ पर डारि धनुष अखर्ब ॥ देखि मोहित सैन समुझो उत्तरा को बैन। कहो उत्तरपासऐसे जिष्णु अतिबलऐन ॥ जायइनके बसन ल्यावहु होयकुंवर अभीत। द्रोण कृप के श्वेतअम्बर कर्णके पटपीत ॥ द्रौणिके अरु भूपके अति नील रंगकबास। जानि संज्ञा सहित जाहु न पितामह के पास ॥ देहु दक्षिण ताहि जानत अस्त्रको प्रतिकार। जिष्णुके सुनि बचन रथते परो कूदि उदार ॥ बसन लै अति रथन के फिरि चढ़ो रथ पर आय। उत्तराके हेत रंगन सों भरे सुखदाय ॥ हांकि अश्वनको चलो रथलेय उत्तर धीर। नांधि ध्वजनी कौरवन की सहित अर्जुनबीर ॥ जिष्णु को लखिजात भीषम निशित मारो बान। तास अर्जुनहने रथके अश्व अति बलवान ॥ मारि दश शर कियोबेधित भीष्मको कुरुबीर। भीष्मको तजि गयो सेना बाहिरे रणधीर ॥ भयो ठाढ़ो जाय सेना बाहिरे बलवान। मेघवृन्द बिदारि ज्यों मध्याह्न कैसो भान ॥ लहे संज्ञालखि सुयोधन जिष्णुको बलऐन। एक ठाढ़ो जीतिकै इमि कहनलागो बैन ॥ कौनबिधि यह छुटो तुमसों युद्धकरि अतिमान। फेरि यासों लरहु जाते नहीं पावै जान ॥ बिहँसिकै तब कहो भीषम गई तोकर बुद्धि। छोंड़िकै धनुबाण जब तुम परेहे बेसुद्धि ॥ नहीं मारो जिष्णुहै न नृशंश करता कर्म। प्राप्ति को त्रैलोककी नहितजै अर्जुन धर्म ॥ चलहु हास्तिननगरकी गहि डगर जो सुखदाय। लेय गोधन फिरो अर्जुन मत्स्यपुर को जाय ॥ पितामह के बचन सुनत सुनीत हितके भौन। रहो सुत धृतराष्ट्रको निश्वासलैकै

मौन ॥ भीष्मको हितबैन सुनि तजि जिष्णु अग्निसमान। धरो मनमें सैनिकन सब चाहि करण पयान ॥ कुरुनको लखि जात अर्जुन चिन्ति श्रेष्टाचार। गुरुनके पदकिये बन्दित पठै शरनउदार ॥ देवदत्त बजाय कै फिरि शङ्ख अति गम्भीर। हृदय द्रावित अरिन को सब कियो अर्जुन बीर ॥ मुकुट काटो नृपसुयोधन को निशित तजि बान। रत्नमण्डित प्रभा पूरित रही भानु समान ॥ कुरुनको लखिजात अर्जुन बिहँसि बोले बैन। जीति धन लै चलहु उत्तर नगर की गहि ऐन ॥ युद्ध अर्जुन कुरुन को लखि अमर सहित सुरेश। करत संशित पार्थ पौरुष गये अपनेदेश ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेविराटपर्वणिउत्तरगोग्रहणेसमस्तकौरवपराजयवर्णनोनामत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

बैशंपायनउवाच ॥ जयकरी ॥ जीति कुरुन को पांडव बीर। ल्यायोगोधन सकल गँभीर ॥ सैनिक भीतिभरे जे घोर। गये गिरिनमें भजिचहुंओर ॥ पथमें मिलैं जिष्णुको जौन। प्रांजलि बिनयकरैं तहँतौन ॥ अर्जुउवाच ॥ डरहुन जाहुआपने धाम। हम न पराजित मारत क्षाम ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ तेसुनि अभय बचन अभिराम। देआशिष गे अपने धाम ॥ तब उत्तरसो अर्जुन बीर। कहे बचन हियलाय गँभीर ॥ पांडव बसत बिराट समीप। तुमको बिदित सधर्म महीप ॥ तुमन प्रसंशित कीजो चाहि। तिनको तात निकट अवगाहि ॥ हम जीतीजो सेनासर्ब। ल्याये गोधन फेरि अखर्ब ॥ सोकहियो तुमअपनो कर्म। प्रगट कीजियोनहिं ममर्म ॥ उत्तरउवाच ॥ जोतुम कीन्होंकर्म अपार। मोमें तौन न शक्तिउदार ॥ तबलोंतुव कहिहैं नहिं कर्म। जबलों तात न बूझहिं मर्म ॥ गये स्मशान समीके पास ॥ बैशंपायनउवाच ॥ शरब्रणभरे जिष्णु बलरास ॥ तबतजिकै सोध्वजा गँभीर। गयोगगनको कपि बरबीर ॥ सिंह चिन्हहो ध्वजपरजौन। योजित कीन्हों फिरितहँ तौन ॥ राखि समीपर आयुध सर्ब। आये उत्तर कुंवर अखर्ब ॥ बेष बृहन्नलको धरिधीर। होय सारथी अर्जुन बीर ॥ रथपर उत्तरको बैठाय। चले नगरको जयश्री पाय ॥ सूतबृहन्नल बनो अनूप। चलिकै गये नगरलों भूप ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ मग्न होयकै कौरव

भूप । हास्तिन नगर गये कृशरूप ॥ राजपुत्र यह गोधन सर्ब । आवत लीन्हें गोप अखर्ब ॥ ऐसे जिष्णु बोलिकै बैन । फिरि उत्तरसों कहो स चैन ॥ लहि परान्ह पुरमांह प्रवेश । करिहै उत्तर सुनहु निदेश ॥ अश्वन को जलसे नहवाय । शस्त्रबिगत करि पानी प्याय ॥ प्रथम गोपपुरमें वृत्तांत । जायकहो बिधि बिहित नितांत ॥ अर्जुनके सुनि बचन बिशाल । लीन्हे दूत बुलाय उताल ॥ उत्तरकहो नगरमें जाय । बिजय देहु सबि-धान सुनाय ॥ ऐसे जीति कौरवन सर्ब । लीन्हों गोधन सकल अखर्ब ॥ सह सारथी बृहन्नल वेश । उत्तर कीन्हों नगरप्रवेश ॥ गोधन जीति मत्स्यपति भूप । गये नगरको आनँदरूप ॥ चारि पांडवनसह बलधाम । शोभित सभामाहँ अभिराम ॥ सेवत मंत्री सुभट सुजान । कहत बिजय बन्दी गुणवान ॥ द्विजबर पार प्रजा सबभूप । कियो बिदा कहिबचन अनूप ॥ जायभूप रानीके धाम । बूझा उत्तरकहँ अभिराम ॥ बन्तितन कहो भूपसों बैन । आय सुयोधन नृप सहसैन ॥ गोधन हरो सुनो अति मान । तिन्हें जीतिबेगो बलवान ॥ एक बृहन्नल सारथि साथ । तिन्हें जीतिबे गो सुनुनाथ ॥ आये जे षट अति रथबीर । भीष्म द्रोण कृप अति रणधीर ॥ कर्ण सुयोधन अश्वत्थाम । सेना संग महा बलधाम ॥ बैशंपायनउवाच ॥ दोहा ॥ सुनि बिराट चिंतितभये जानि शत्रु बलवान । संग बृहन्नल सारथी पुत्रएक प्रियप्रान ॥ मंत्रिनसों लागो कहन आय सभा में भूप । संग बृहन्नल युद्धको गो उत्तर शिशुरूप ॥ ताते योधा जाउ मम अग्रण जे बलधाम । करौसहाय ससैनते उत्तरकी अभिराम ॥ पठै सेन चतुरंगिनीरहेबिराटबिचारि । पुत्रनजीवतजियतकरि महारथिनसोंहारि ॥ जाकोजंता षंडहै महारथिन सों युद्ध । ताके जीवनकी कहाआशा करहु बिरुद्ध ॥ बैशंपायनउवाच ॥ दुःखितदेखि बिराटको कहोकंक करिप्रीति । जा सारथी बृहन्नला तौ ल्यावतगो जीति ॥ सहित सहायक कुरुनको देव यक्ष गन्धर्ब । जासु सारथी बृहन्नल सो रणजीतैसर्ब ॥ बैशंपायनउवाच ॥ उत्तर पठये दूतजे तेतुर पुरमें आय । बिजय सबिधि लागेकहन मंत्रिन सों सुखदाय ॥ बोले मंत्रीभूपसों उत्तरबिजय ललाम । कहोभाजिकौरव गये हारियुद्ध बलधाम ॥ गोधन लीन्हों जीतिरण कुशल सूतसहबीर । उत्तर आवत रथचढ़ो पुरपथमें रणधीर ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ तब सुतजीतो

कुरुन को अद्भुतकहा नरेश। जासु वृहन्नल सारथी जीतैतौन सुरेश॥ वैशंपायनउवाच॥ पुलकितभये बिराटनृप सुनिसुतको जययुद्ध। दूतन को बकसीसदिय पटभूषण मणिशुद्ध॥ मंत्रिन सों भूपतिकहो ऐसेबचन समान। बाद्य चतुर्बिधके बजैंपुरमें कहोमहान॥ सहित कुमारिन उत्तरा धरि भूषण सुखदाय। आवत उत्तर जौनपथ तहँ आग चलि जाय॥ वैशंपायनउवाच॥ सुनि भूपति को बचन भो पुरमें मंगलचार। पटह चहूं दिशि नगरमें लागे बचन उदार॥ कन्या चारु पठायकै गणिका गण अति रूप। ह्वै प्रसन्न लागोकहन ऐसे मत्स्यप भूप॥ सैरिंध्री तुम जायकै ल्यावहु अक्षअनूप। द्यूतकंक सों करैंगे हम प्रवृत्त अतिरूप॥ कंकउवाच॥ द्यूत न कीजै मुदितसँग हैयह नीतिअनूष। ताते करहु न द्यूत को चलन आजुतुम भूप॥ बिराटउवाच॥ सुस्त्रीगाय हिरण्यबसु औरहमारे जौन। तुमते खलत द्यूतहैं हमैंरक्ष्य नहिं तौन॥ कंकउवाच॥ सकल दोषमय द्यूतमें कहातुम्हैं फलभूप। तातेहम बर्जित तुम्हैं द्यूत दोष का रूप॥ सुनो युधिष्ठिर द्यूतकरि लहिजो बिपति महान। ऋद्धराजहारो सकल भ्राता अमर समान॥ द्यूत अवश्यक जोतुम्हैं करिबे आपतधाम। नृपकीजै प्रारम्भतौ पूर्णकरहु मनकाम॥ वैशंपायनउवाच॥ मत्स्यप द्यूत प्रारम्भकरि बोलेबचन सगर्ब। पुत्र हमारे युद्धमेंजीते कौरवसर्ब॥ सुनि बिराटके बचन इमि बोले भूपति धर्म। यंताजासु वृहन्नला सोपावै जय पर्म॥ सुनत युधिष्ठिरके वचन कहोबिराट सक्रोध। कहतपुत्र ममके शदृश पंडहिअरे अबोध॥ बाच्य अवाच्य न बचनको बिप्राधम तोहिं ज्ञान। क्यों नहिंजीतै कौरवन मेरोसुत बलवान॥ सखा जानिकै करत हौं क्षमातोर अपराध। फिरि नहिंऐसो बोलियो जीवनचाहि अबाध॥ युधिष्ठिरउवाच॥ भीष्मद्रोण कृपकर्णजहँ द्रोणपुत्र वलबान। भूप सुयोधन महारथ भ्रातन सहित अमान॥ देवन सहित सुरेशलरि तिनसों सकैन क्रुद्ध। बिना वृहन्नल करैको तासेनासों युद्ध॥ जासु बाहुबल के खदृश भूत भबिष्य न आन। महायुद्ध लखिकै बढ़त जाकोहर्ष महान॥ सुरा सुरनको युद्धमें जोजीतै अनिकाय। कौन लेयगो बिजयको ताको पाय सहाय॥ बिराटउवाच॥ बहुतमने कीन्होंतुन्हैं रहत चुपाय न कंक। चलत न कोऊ धर्मपथ बिना नियंता शंक॥ वैशंपायनउवाच॥ भूप क्रोधकरि कंक

को मारोअक्ष चलाय। भर्त्सन करिकै कंकके लगो नाकढिगजाय॥ बल बत लागे नाकते चलीरुधिर की धार। लियोकंक सोपाणिमें क्षितिनहिं छुई उदार॥ पास खड़ीही द्रौपदी लखो धर्मनृप ताहि। रुधिर लियो तेहि पात्रमें अभिप्राय अवगाहि॥ सजल कनकके पात्रमें श्रोणित कृष्णा धारि। कोपभरी मुख भूपके अनमिषरही निहारि॥ गन्धमाल्य धारण किये पौर पूज्य अभिराम। आयो तबहीं पौरिपर उत्तर कुंवर ललाम॥ द्वार पालकन भूपसों कहो बेगसों जाय। सहित वृहन्नल पौरिपै खड़े कुंवर सुखदाय॥ कुत्तासों भूपतिकहो बेगि लेआवहु जाय। सहित वृहन्नल पुत्रमम उत्तरको सुखदाय॥ कुत्तासों कुरुपतिकहो बचन मन्द करि पास। ल्यावहु उत्तरकोनहीं साथ वृहन्नलतास॥ व्रतयह धरेवृह-न्नला निश्चय अतिबल भौन। बचत न मेरेअंगमें शोणित काढ़तजौन॥ देखिहमैं शोणित सहित करिकै क्रोधमहान। मंत्रिन सहित बिराट को सेा हनिहै बलवान॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउहितनारायणस्याज्ञाभि
गामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुल
नाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणि
उत्तरगोग्रहणेसमाप्तिवर्णनोनामएकत्रिंशोऽध्यायः॥३१॥

बैशंपायनउवाच॥दोहा॥ तबआयो उत्तरतहां जहँ बिराट भूपाल। बन्दि तातपद कंकजहँ तहँ चलिगयो उताल॥ व्यग्र रुधिर संयुक्तलखि बैठे क्षितिपर भूप। पासखड़ी कृष्णा भजत कीन्हों शोभितरूप॥ आतुरपूछो पितासों उत्तर श्रोणित मर्म। ताड़ित कीन्हों कंकको केहि कीन्हों यह कर्म॥ बिराटउवाच॥ हमताड़ो यहि कुटिल को जानि कुमति गम्भीर। करै प्रशंसन खण्डको तुम्हैं छाड़ि नरधीर॥ उत्तरउवाच॥ कियो अकारज भूपतुम बेगिकरहु अनुकूल। ब्रह्म बिषानल में नतरु तुमजरिहौ सह मूल॥ बैशंपायनउवाच॥ सुनत पुत्रके बचननृप पकरि कंकके पायँ। भस्म छन्न पावक सदृश क्षमा करायो जाय॥ क्षमा करावत मत्स्य सो कहो धर्मनृप बैन। हम चिरक्षान्त बिराटनृप क्रोध हमारे हैन॥ परतहमारो रुधिरजो क्षितिपर सुनहु नरेश। पावतनाश बिराटयह तुम्हैंसहित सब देश॥ बिगतभये श्रोणितगयो बीरवृहन्नल तत्र। बंधमत्स्यको तहँगये

धर्मनृपति हे यत्र॥ करत प्रशंसन पुत्रको समुद बिराट गँभीर। धर्म नृपतिके पाससो सुनत वृहन्नल बीर॥ पुत्रवान तुमसो भये मत्स्यबंश अवतंश। तुमसो पुत्र न औरके भूतभबिष्य प्रसंश॥ जीतत सहसन को नहीं जीतोजात सक्रुद्ध। कियोपुत्र तेहिकर्ण सो कौन भांति तुम युद्ध॥ नहिं मनुष्यके लोकमें जेहिसमान रणधीर। कियो युद्धतेहि भीष्मसों कौनभांति तुमबीर॥ ससुतद्रोण आचार्यसों कैसेभो संग्राम। कृपाचार्य्य सह जगतकेयेजेता बलधाम॥ दुर्योधन भ्रातन सहितमहाबीर बलवान। कौनभांति जीतोतिन्हें सेनासहित अमान॥ सुनत पराजय परनकी तोते पुत्र उदार। भरेसुधा बर्षतमनो घन आनँद के धार॥ गोधन ल्याये जीतितुम कौरवसैन महान। मत्स्यबंश भूषणभयो कोसुत तोहिंसमान॥ उत्तरउवाच॥ हम गोधन जीतोनहीं हेवरबीर उदार। कियो कार्ययहसकल कोउ रथचढ़ि देवकुमार॥ भयते भाजत तेहिकियो मोहिं निवारणभूप। बज्रसार समअंगको अतिबल युवास्वरूप॥ कियो पराजित कौरवन जीतो गोधन सर्ब। हमनहिं कीन्हों तातयह ताकोकर्म अखर्ब॥ भीष्म द्रोण कृपकर्णनृप अतिबल अश्वत्थाम दुर्योधन भ्रातन सहित अरु बिकर्ण बलधाम॥ मारि शरन तिनसों कहो तेहिइमि बचन भजाय। हास्तिनपुर तजिबचहुगे और देशमें जाय॥ भाजि न बचिहौ करहुतुम ताते हमसों युद्ध। जीते पृथिवी भोगिहौ मरेस्वर्ग अनिरुद्ध॥ सुनत सुयोधन फिरोसो भरोक्रोध गम्भीर। सचिव सैन षटरथनसह महाबीर रणधीर हमें रोमहर्षणभयो तिन्हेंदेखि अतिमान। मारि शरनसे तेहिकियो तिनको व्यथित महान॥ तिनकोफेरि भजायकै कियो हासतेहिबीर। बसन हरण तिनको कियो रङ्गसोंभरो गँभीर॥ एकबीर षटरथनको दीन्हेंजीति भजाय। महामत्त मृगराजज्यों बनमृगघन समुदाय॥ बिराटउवाच॥ महा बाहु बरबीर सो हैकहँ देवकुमार। कुरुन जीतिजेहिं युद्धमें गोधनलियो उदार॥ देखन पूजन चहतहम ताकोअति अभिराम। जेहि रक्षितकीन्हें तुम्हें देवपुत्र बलधाम॥ उत्तरउवाच॥ अन्तर्ध्यान भयोतहां तातदेव सुतजौन। दोयतीनि दिनमेंइतै प्रगट होयगो तौन॥ बैशंपायनउवाच॥ ऐसेसुनत बिराटनृपकपटबेषधरिपास। बसत पाण्डवनकोनहीं जानेतिहिमतिरास॥ आज्ञापाय बिराटकी बीरवृहन्नल तौन। बसन उत्तराको दियो जीतिले

आयेजौन ॥ उत्तरसह नृपधर्मसों मंत्रपांडवन सर्ब। कियेकार्य कर्त्तव्य है आगेजौन अखर्ब ॥ कियो तौन नृपधर्म को करिबोहो जो कार्य। ह्वै प्रसन्न पांडव सकल सहबिराट सुतआर्य ॥ तदनन्तर तिसरेदिवस पञ्च पांडुसुतबीर। स्नानकियो करिनित्यकृत धरे सुधासमचीर ॥ भूषित ह्वै नृपधर्मको करिआगे अभिराम। पायसमय शुभगये जहँ मत्स्यसभाको धाम ॥ सिंहासन परधर्मनृप बैठेभानु समान। यथास्थान भ्रातासकल तेजसभरे महान ॥ तदनन्तर आयोतहां मत्स्यबंशको भूप। राजकाज करिबेसकल मंत्रिनसह अनुरूप ॥ तहँदेखे बैठेसकल पांडवअग्निसमान। रहेबिराट मूहूर्तभरि खड़ेधारिकै ध्यान ॥ कहो कङ्कसों मत्स्यपति लखि सुरराज समान। अक्षहेतु कियसभासद तुमको जानि सुजान ॥ राजासन आसीनतुम भयेबिभूषण धारि। कियोंकङ्क यहकर्मतुम का परिहास बिचारि ॥ मत्स्यबचन सुनिजिष्णु तब बोले मधुर मनोग्य ॥ अर्जुनउवाच ॥ अर्द्धासन परइन्द्रके येबैठन केयोग्य ॥ ब्रह्मण्य बदान्यवेद बिद सत्यदृढ ब्रतपर्म। भरे पराक्रम सोंमहा मूर्तिमान येधर्म ॥ अधिक बुद्धिते लोकमें तप ब्रत धीरज धाम। सकैबरणि कोजगतमें इनकेगुण अभिराम ॥ दीरघ दरशी तेजमय पांडव अति रथबीर। तुल्य महर्षिनके यशी ये राजर्षि गँभीर ॥ धनसञ्चयमें इन्द्रसे हैं बैश्रवण समान। मनुसे रक्षक लोकके तेजसभरे महान ॥ कुरुबंशिनके मुकुटये धर्म युधिष्ठिर भूप। यश प्रताप शशिसूरसो जाको लसतअनूप ॥ गजारोह दशसहसहे चलतजात अनुबीर। सहस तीस रथअनुगहे कंचन घटित गँभीर ॥ सूतरहेबसु सहस धरिमणि कुंडल गुणमान। सहित मागधन पढ़तयश ऋषि सुरराज समान ॥ किङ्करसे कौरव रहे इनको भजत बिशाल। इन्द्र प्रस्थमें अमर ज्यों सेवतहे धनपाल ॥ करद करे क्षितिपाल इन सिगरे बैश्यसमान। सहस अठासी लहतहे स्नातक भोजनदान ॥ पंगुवृद्ध अति अन्धकृश रोगी दुखित महान। प्रतिपालत हेप्रजन को येप्रभु पुत्रसमान ॥ इनके तपत प्रतापते रहे सुयोधन वीर। सहित कर्ण सौबल सहित भरेकुमंत्र गँभीर ॥ इनके गुणगण गननको कोऊशक्य न भूप। नहिंप्रशंसयेसत्यहैं केवल धर्मस्वरूप ॥ ये पांडव पृथ्वीशहैं भूपयुधिष्ठिर धर्म। क्यों बिराट नहिंयोग्यहैं राज्यासन केपर्म ॥ बिराटउवाच ॥ धर्मयुधिष्ठिर भूपजो ये कौ-

न्तेय महान। भीमाअर्जुनकहँ नकुलहैं कहँसहदेव सुजान ॥ हैमहिषीकहँ द्रौपदी भरी पतिव्रतरूप । हारिद्यूतमें राज्यकहँ अबलौं बसे अनूप ॥ अर्जुनउवाच ॥ बल्लवकरत जोपाकसो भीमपराक्रम भीम। इनहींमारो कीचकहि सह भ्रातन बलसीम ॥ उत्तरगिरि पर इन हने महाबली गंधर्ब। जिन्हैं लरावत तुमरहे गजगण साथअखर्ब ॥ अश्वबंधजो रावरो तौन नकुलये बीर। गो रक्षक सहदेव ये हैं अतिबल रणधीर ॥ कमल लोचना सुंदरी चारुहासिनी भूप। कुरुपतिकी महिषीप्रिया यह सौरिंध्रीरूप ॥ अर्जुन हमहैं भीमते अबरज पारथनाम। नकुल और सहदेवहैं हमसों लघु बलधाम ॥ गुप्तबसे हम मोदसों भूप तिहारे पास। रहति उपद्रव करति ज्यों प्रजागर्भमेंबास ॥ बैशंपायनउवाच ॥ अर्जुनदये बतायजब नृपसोंपांडवसर्ब। तबअर्जुनको पराक्रम उत्तर कहो अखर्ब ॥ जांबूनद सो गौरतनु जोयह सिंहसमान। दीर्घनासिका नेत्रको यह कुरुराज महान ॥ मत्तगजेन्द्र समानजो चामीकरसो शुद्ध। भीमसेन बरबाहुयह अतिबल जेता युद्ध॥ श्याममहा धारेधनुष युवा मतंगसमान । कमलनयन नृपके निकट सो अर्जुन बलवान ॥ धर्मनृपतिके निकटये रूपवान नरजौन । नकुल और सहदेव येमादी सुतबलभौन ॥ इन्द्रीबरभा निकटजो श्रीसम मूरतिमान। सोहै महिषी द्रौपदी कुरुपतिकी सुखदान ॥ यह कहि उत्तरफिरि कहो जिष्णु पराक्रमसर्ब जोदेखो रणभूमिमें करतेयुद्ध अखर्ब ॥ बैशंपायनउवाच ॥ सुनिबिराट उत्तरबचन भरेमहाहिय चैन। निस्कृतार्थ अपराधके ऐसेबोले बैन ॥ पांडुसुतनके करनकोहै प्रसन्न यहकर्म । तुम्हैं रुचै तौ जिष्णु को देहुउत्तरा पर्म ॥ उत्तरउवाच ॥ आर्य्यपूज्य अतिमान्यये पांडव कुरुकुलपर्म। इन्हैंदीजिये उत्तराब्याहि बिहितबिधि धर्म ॥ बिराटउवाच ॥ भयेरहे हम शत्रुवश करित्रिगर्त सोंयुद्ध। गोधन सहमोचन कियोहमैं भीमरणउद्ध ॥ इनके भुजबलसो लहोहम जययुद्ध महान। करैंप्रसन्न युधिष्ठिरहि करि अतिप्रिय सनमान ॥ हम अज्ञानताबश कछू अनुचित कीन्हों जौन। क्षमाकरन केयोग्य नृपधर्म धर्ममतितौन ॥

इतिश्रीकाशीराजभट्टाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणिपांडवप्रगटतावर्णनोनामद्वाचिंशोऽध्यायः॥ ३२ ॥

दोहा ॥ चलिबिराट नृप धर्मढिग आनँद भरे अखर्ब । राज्यकोष पुर आपनो कियोसमर्पण सर्ब ॥ आगेकरिकै जिष्णुको सकल पांडवनपास। मिलेमत्स्यपति बोलिकै भाग्य भान्य मतिरास ॥ तृप्तनहोत बिराटलखि पांडुसुतन कोरूप । लगेयुधिष्ठिर सों कहन ऐसेमत्स्यपभूप ॥ आयेकुशल बिपीनिते तुमबल भाग्यनरेश । रहेभाग्य सोगुप्ततुम अरिसोंधरि बहुवेश॥ देतराज्य यहपार्थको और कछूजोबित्त । ग्रहणकरो पांडवसकल करिमम सफलनिमित्त ॥ ग्रहण उत्तराको करो जिष्णुबीरबलवान । पुरुष नबरिबे योग्य है ताके और समान ॥ यहसुनि लागजिष्णुको देखनराजा धर्म । भ्राताको देखतचितै अर्जुनबीर सशर्म ॥ अर्जुनउवाच ॥ मत्स्य तिहारीसुता हमस्नुषा करेंगेभूप । पुत्रहमारो तवसुता हैं दोऊअनुरूप ॥ बिराटउवाच ॥ मदत्ता दुहिता न ममग्रहण करत तुमबीर । अर्जुनउवाच ॥ मोहिं पितासम लखतही सोकरिप्रीतिगँभीर ॥ ग्रहणकरत नहिं तवसुता यातेभूप सुजान । नृत्यगानमें लखतही मोहिं आचार्य्य समान ॥ स्नुषाकरतयातेरहीबर्ष दिवसममपास। शङ्कलोक अपवादकी शुद्धिहेतु मतिरास ॥ भागिनेय श्रीकृष्णको प्रियसुरसुत समबीर । है सुतसम अभिमन्यु सो महाधनुर्द्धर धीर ॥जामाता तवसुताके योग्यबिहितभर्त्तार ॥ बिराटउवाच ॥ करहुजिष्णु जोयोग्यहौ तुमधर्मज्ञ उदार । कारजभये समृद्धमम तुमसम्बन्धीजास ॥ ऐसोकहो बिराटनृप सुधनंजय के पास ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ ऐसेकहत बिराट के कुन्तीसुत नृपधर्म । करिबे को सम्बन्ध को शासन दीन्होंपर्म ॥ मित्रन को श्रीकृष्णको लिखोपत्र सुखदाय । निमंत्रणार्थ कुरुमत्स्यपति दीन्हेंदूत पठाय ॥ बीतेबर्ष त्रयोदशो सहभ्रातन कुरुभूप । मत्स्यपुरी के निकटपुर तामेंबसे अनूप ॥ जिष्णुसहित अभिमन्युसह बासुदेव बलराम। सहदसार्न महीपसब लयेबुलाय ललाम ॥ काशिराज अरुसैव्यनृप प्रीति मानजे भूप । आयेलै अक्षोहिणी एकएक अनुरूप ॥ लयेएक अक्षोहिणी सैनद्रुपद मतिमान । पंचद्रौपदी के तनय शीखण्डी बलवान ॥ धृष्टद्युम्न दुर्धर्षजे सर्बशस्त्र बिदबीर । एकएक अक्षोहिणी लीन्हेंसैन गँभीर ॥ आये तिनको देखिबे मत्स्यनृपति बलवान । पुत्रनसह पूजनकियो तिनको सहित विधान ॥ बासुदेव आयेतहां बनमाली बलराम । कृतबर्मा युयुधान अरु सहसात्यकि बलधाम ॥ आनाधृष्टि अक्रूर अरुसांबनिशट बरबीर ॥

मातासह अभिमन्यु को लेआये रणधीर॥ सूतइन्द्र सेनादिसब मणिमय रथन चढ़ाय। ल्यायतहँ बिधुबर्षकोसबिधियोग सुखदाय॥दशहजार गज मत्त दशअयुत अनूपम अर्ब। अर्बुद अनुपम संगरथ पदग सुबीर निखर्ब॥ वृष्न्यंन्धक अरुभोज नृप लीन्हे संगसहाय। बासुदेव के साथते आये अति सुखदाय॥ सोरठा॥ मणिभूषण बरवाम रत्नबसन रँग रँगभरे। दिये कृष्ण अभिराम पृथक पृथक सब पांडवन॥ हूबेलगो बिवाह पार्थ तनय अभिमन्युको। बजेभरे उत्साह बाद्यअनेकन भांतिके॥ दईमत्स्य जेवनार अन्नमांस पकवानबहु। उत्तमसुरा उदार पानदिये सुखदान अति॥ गायन नर्त्तकजौन नाचन गावन लगेते। नृपबिराट के भौन मागध मधुर पढ़ैंसुयश॥ महिषी अति अभिराम जौनबिराट महीपकी। सूदोष्णा कृबिधाम बामवृन्द भूषितलिये॥ जयकरी॥ आईंसो कृष्णाके पास। लये उत्तरा को कृबिरास॥ देवसुता समधारे रूप। नृपबिराट की सुता अनूप॥ जिष्णुकियो सो अंगीकार। स्नुषापुत्र के अर्थ उदार॥ तहँ सुरेश समभूपति धर्म। स्नुषाकियो स्वीकार सुपर्म॥ निष्णु कृष्ण सहभरि उत्साह। बिधिवतकिय अभिमन्यु बिवाह॥ सातसहस्त्र बातसम अर्ब। द्वैशतगज मदमत्त अखर्ब॥ दाइजदियो बिराट नरेश। धनमणि भूषण बसन बिशेश॥ करिसमृद्ध पावक में होम। पूजेबिप्र सकल तपतोम॥ दोहा॥ करिबिवाह अभिमन्यु को नृपति युधिष्ठिर मोद। दयेबित्त द्विज वरण जो दीन्हेंकृष्ण बिनोद॥ गोसहसन भूषण बसन रतन अमौलिक बेश। बहुरथ शय्यादैदये भोजन सबिधि बिशेश॥ अतिशै मोदित जननसह अति उत्सव के भेद। नगर मत्स्यपति भूपकोशोभितभयोअखेद॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणि अभिमन्युबिवाहवर्णनोनामचयस्त्रिंशोऽध्यायः॥ ३३॥

बिराटपर्व समाप्तः॥

श्रीगणेशायनमः॥

महाभारतदर्पणे॥

उद्योगपर्वदर्पणः॥

सोरठा॥ भरो भाल सिन्दूर एकदन्त गजबदनवर। लम्बोदर छबि पूर चिन्तामणि गणनाथ को॥ जगत जननि सुखदानि भुवनेश्वरि भव भय हरनि। जाके चारौपाणि देत चारिफल भजतही॥ चरण सरोज समान सद्गुरु श्रीबलभद्र के। मोमन मधुप सुजान करत पान जहँ ज्ञान मधु॥ लकुट मुकुट बनमाल धरे पीतपट श्यामघन। राधासँग नँदलाल रमत कलिन्दी कूलपै॥ श्लोक॥ नारायणंनमस्कृत्य नरञ्चैवनरोत्तमं। देवींसरस्वतीं व्यासन्ततोजयमुदीरयेत्॥ वैशंपायनउवाच॥ दोहा॥ करि बिवाह अभिमन्यु को मुदितभये कुरुभूप। नृपबिराटकी सभाको चले भोर सुखरूप॥ मणिमय सभा सुगंधसों पूरित भूरि समृद्ध। भूपवृन्द बैठे जहां धर्मधुरन्धर वृद्ध॥ बैठे नृपति बिराट अरु द्रुपद प्रथमहे जाय। और नृपति बहु संगले रामकृष्ण सुखदाय॥ सह सात्यकि पाञ्चाल के ढिग बैठे बलराम। कृष्ण युधिष्ठिर मत्स्यपति पास लसत अभिराम॥ भीमार्जुन माद्रीतनय द्रुपदपुत्र सबजौन। प्रद्युम्न शाम्ब अभिमन्यु सह मत्स्यपुत्र सँग तौन॥ शूर सर्ब सम पिताके रूप वीर्य्य बलभौन। बैठे कृष्णाक तनय चित्रासन पर तौन॥ महाबीर अतिरथ नृपति बैठे तेजस धाम। लसी सभा ज्यों ग्रहन सों शोभित गनन बिराम॥ कहन कथा लागे कछू तेसब समय समान। रहे चिन्ति चुपह्वै चितै कृष्णओर सुखदान॥ माधवते संघटित नृप जे पाण्डव कार्यार्थ। सुनो चहत श्रीकृष्ण के मुखते बचन यथार्थ॥ कृष्णउवाच॥ हैसब तुमको बिदित जो करि सौवल कुल द्यूत। इन्हैं पठाये बिपिनको जीति राज्यधन धूत॥ बलते जीतन योग्यजे महीं महारथ बीर। वर्ष त्रयोदश कियो तिन करि बनबास गँ-

भीर ॥ गुप्तबास अति दुःखमय बर्ष तेरहें तौन । वेष कपट धरि निकट तव जे अतिरथ बलभौन ॥ चहत युधिष्ठिर स्वकुल ते प्राप्त राज्य भौ जौन । तुमसब चिन्तहु धर्मसुत दुर्योधन हित तौन ॥ धर्म सुयशकर कुरुनको होय जो सहित समाज । नहिं अधर्मते सुरनको चहत युधिष्ठिर राज ॥ धर्म रहित भूपत्व नहिं चहत धर्म मतिभौन । हरो सुयोधनराज्य ज्यों तुमसब जानत तौन ॥ कष्ट असह्यदियो इन्हें करि मिथ्या उपचार । रणमें जीते पार्थको नहिं धृतराष्ट्रकुमार ॥ तऊ कुशल तिनकीचहत पांडव अतिबल भौन । जीति भूमिधन नृपनसों लईसो चाहत तौन ॥ हनो सु विविधि उपायते इन्हें चहो तेहि दुष्ट । हरो राज्य ज्यहिभांतिसों तुम सब जानत पुष्ट ॥ लोभ सुयोधन को चितै इनको स्वबरम ज्ञान । सम्बन्धित्व बिचारि तुम सम्मत करहु सुजान ॥ ये पांडवहैं धर्मरत पालोसमय समान । कियो अन्यथा अन्यते सबल सबन्धु अमान ॥ इनकी बाधा कौरवन कीन्ही सछल अखर्ब । ताते कौरव बध्यहैं पांडुसुतन सों सर्ब ॥ तिन्हें जीतिबेयोग्य ये बल बिन पांडवबीर । सबही को हितसों करहु चिन्तन बुद्धिगँभीर ॥ तुम सब मिलि कीजै यतन जाते होय न नास । दुर्योधन को मतनहीं जानि परत मतिरास ॥ परको मत जानेबिना सम्मत कियो न जात । याते पठवहु दूत जो सुकुल सुमति अवदात ॥ दूत पठावहु सोमहित दुर्योधनके पास । देहिं अर्द्धनृप धर्म्मको राज्य पुरातन तास ॥ सुनत जनार्दन के बचन धर्म्मउक्त सहसाम । द्रुपदादिक भूपन कियो ग्रहण जानि अभिराम ॥ बलदेवउवाच ॥ सुनो जनार्दन को बचन तुमसब भूपति पर्म । दुर्योधन नृपधर्मके हितसों भरो सधर्म ॥ अर्द्धराज्य तजिकै करत यत्न तासुनृपधर्म । अर्द्धराज्यधृतराष्ट्र सुत सुखपावैं दे पर्म ॥ अर्धराज्यको पायकै पांडवपुत्र सधर्म । शान्त होयकै रहैंगे तौन हमैं प्रियपर्म ॥ दुर्योधन मत जानिबे कहत युधिष्ठिर बैन । दूत पठावहु सामहित प्रिय हम को मतिऐन ॥ भीष्म द्रोण कृप द्रोणसुत कर्ण पौरजन जौन । दुर्योधन सह बन्धु सब जे मति बलके भौन ॥ सभामाहँ कुरुभूपको लखि सुखस्थ मतिऐन । प्रणयसहित नृपधर्म के कहै साम सहबैन ॥ अर्थ सहित बलवानते कोपित करहि तिन्हैन । साम सहित करि बारता लेहि राज्य सहचैन ॥ द्यूतशक्त नृपधर्म को राज्यद्यूतमें जीति । लीन्हों दुर्योधन

नृपति यामें कहा अनीति ॥ सुहृदन बरजो इन्हें बहु द्यूत अबिद अनुमानि । सौबलको अति अक्षपटु बिबिधि भांतिसों जानि ॥ सौबल को आह्वान करि कियोद्यूत नृपधर्म । कर्ण सुयोधन आदि सब छोंड़ि द्यूत बिद मर्म ॥ हठकरि हारे धर्मनृप राज्य सुबित्त अगाध । यामें सौबलको कछू हैन सुनहु अपराध ॥ तातें नृपधृतराष्ट्र सों सहित प्रणययुत साम। द्यूत स्वार्थ इनका कहै करिकै प्रथम प्रणाम ॥ करो धर्मके राज्यहित तब लगही उद्योग । युद्धाकांक्षी होहिं नहिं जबलगि कौरवलोग ॥ साम सहित मीठेक है बचन सुयोधन पास। करै अर्थ साधन प्रथम द्यूतधर्म नृप तास ॥ अर्थ जो जीतें सामसों होत अर्थकर तौन । नहीं अर्थकर अर्थ सो होत युद्धभव जौन ॥ वैशंपायनउवाच ॥ यह सुनिकै बलभद्र के बचन सात्युकी बीर । तासु गिरा दूषणलगी पूरित क्रोध गँभीर ॥ सात्यकिरुवाच ॥ जाकी जैसी आतमा तैसे भाषत बैन । पाप पुण्यमय बचनते जानिपरत हिय ऐन ॥ कादर शूर क्लीव औ उपजत येही बंश । जैसे रहत तड़ागमें बक मंडुक अरु हंस ॥ नहिं दूषत हम बचन तव हे हलधर मतिऐन। दूषण तिनको देत जे सुनत तिहारे बैन ॥ सभामध्य निर्भय कहत धर्म नृपति को दोस । ताको कहत सधर्म जिहि जीत्यो सकुल सहोस ॥ रही धर्मता है कहां जौ कुन्तीगृह जाय । दुर्योधन जीतत इन्हें तबहो धर्म्म उपाय ॥ शरणागत अब होहिं क्यों पूर्ण कियो बनवास । पद पैतामह को चहत काटिबिपिन पनपास । धर्म्मयुक्त ये राज्यको कैसे चहैं न बीर । पार भये बनबास के पनतें पाण्डव धीर ॥ भीष्मद्रोण अरु बिदुर को कहेबहुत समुझाय । बांटिराज्य दीबेन जो चाहैं जे कुरुराय ॥ तौ हमतीक्षण शरनतें देहैं तिन्हें मनाय । धर्मराज के पायँपर तिन्हैं डारिहैं ल्याय ॥ जौनशरन नृपधर्म को लेहैं ते अभिराम । तौ हम तिनको देहिंगे अन्तकपुर में धाम ॥ तेनवेद युयुधान को सहिहैं शस्त्राघात । सहि न सके ज्यों महीधर महतबज्रको पात ॥ कोसहि सकिहै पार्थको अतिही दारुणउद्ध । कौनहोयगो सामुहे भयेभीमको क्रुद्ध ॥ द्रुपद बिराट महीप ये दोऊ कालसमान ॥ पार्षत धृष्टद्युम्नसो को लरिहै बलवान ॥ पांचपुत्र येद्रौपदी के अति रथरणधीर । अपने अपनेतातके हैं समान बरबीर ॥ लरिहैको अभिमन्युसों दारुण जाकोयुद्ध । गदप्रद्युम्न

अरुशाम्बसो हैकोदुर्मद उद्ध ॥ मारिपुत्र धृतराष्ट्रके शकुनिकर्ण सहगर्ब। अभिषेकित नृपधर्मको हमफिरि करिहैं सर्ब ॥ आततायिके हनेमें लागत कछु न अधर्म। हनिबोशत्रु समाजको है क्षत्रीकोपर्म ॥ अग्निलगावै गेहनें भोजन में बिषदेय। हरैक्षत्र दारासछल छीनिद्रव्य जो लेय ॥ जाकेकर में शस्त्रनहिं हनैशस्त्रकरताहि। आतताइ येषटइन्हैं हनिये शीघ्र हिचाहि॥ बांटिदियो धृतराष्ट्र जो धर्मनृपति को राज। तौसुयुधिष्ठिर भूपसो लहि हैं कुशल समाज ॥ अबदीन्हें बिनुराज्य के तेलहिहैं यमधाम। येसत्यकि के बचनसुनि बोलेद्रुपद ललाम ॥ द्रुपदउवाच ॥ महाबाहु तुमकहोजो सो भबिष्य है काज। नहिंदुर्योधन देहिंगे बांटिसामते राज ॥ सुतप्रिय नृपधृतराष्ट्र सों सुतमत मानततौन। भीष्मद्रोणहै तासबश मूर्खसूतसुत जौन रुचोहमें बलभद्रको इतनो बचनसुजान। प्रथम पठाउब दूतकोहै यहनीति प्रमान ॥ मृदुताते ते साध्यनहिं पापबुद्धि खलसर्ब। खरसोंमृदुता गायसों तीक्ष्णकरे कृतखर्ब ॥ पठै शत्रुपहँ दीजिये प्रथम चतुर अतिचार। बल संग्रहको कीजिये हम इतबिधि बिस्तार ॥ धृष्टकेतु अरुशल्य अरु जयत्सेन नृपजौन। भूप सकलकैकेयजे शीघ्रबोलावहु तौन ॥ दुर्य्योधन करिहैं नियत सहायार्थ आह्वान। ताते प्रथम पठाइये तिनपैदूत सुजान ॥ भजत प्रथम आह्वानको जेहैंसन्त समर्थ। त्वरा करहु ताते प्रथम तिन्हैं बोलावन अर्थ ॥ महतकार्य करतब्य है याते हे नृपधीर। प्रथम बोलावहु शल्यको सहित सहायगँभीर ॥ जायदूत भगदत्तपै बसै जो सागर पास। अमितौजस हार्दिक्यनृप अन्तकजो बलरास ॥ दीर्घप्रज्ञ अरु रोचमानको पठवहु दूत उताल। सेनाबिन्दु बृहन्तनृप सेना जित समकाल ॥ जयत्करी ॥ बिंध्यनृपति अरु बस्तुकभूप। नृपति चित्रधर्मा अतिरूप ॥ बाह्लिक मुंजकेश नृपजौन। चैद्य नृपतिहै जोबलभौन ॥ नृपति सुपर्श्व सुबाहु सुजान। पौर्वभूपजो सक बलवान ॥ दुरद नृपति जे और सुरारि। कर्णबेष्ठ भूपति बलभारि ॥ नील बीरधर्मा नृपजौन। दन्तबक्रजो नृप बलभौन ॥ रुक्मी नृपजे हैं बलवान। बायुबेग आषाढ़ सुजान ॥ देवकभूरि सुतेजा जौन। एकलब्य पुत्रनसह तौन ॥ कारुष क्षेम धूर्त्तिजो भूप। सह कांबोज तृषिक अनुरूप ॥ पश्चिम सिंधुतीर नृपजौन। जयत्सेन भूपति बलभौन ॥ काश्यपंचनद जो भूपाल। क्राथ

पुत्र दुर्धर्ष बिशाल॥ और पार्बती हैं जेभूप। जनक देशबासी अनुरूप॥ सुशर्म्मा मणिमान्य नरेश। सक सुपांसु राष्ट्राधिप वेश॥ धृष्टकेतु जो है बलवान। तुण्डदण्ड धारक अतिमान॥ बृहत्सेन भूपति रणधीर। स्त्रेणी मन निषाद सुबीर॥ बृहद्बल सुमहोजा भूप। समुद्र सेनभूपति अति रूप॥ उद्भव क्षेमक अति बलवान। बाढ़धान सुश्रुतायु सुजान॥ दृढ़ाय श्रुतायु शाल्वसुत जौन। कलिङ्ग कुमार महाबल भौन॥ इन को पठवहु दूतउताल। आवहिंबेगि सकलभूपाल॥ ममपूरोहित बिद्यावान। दूतकर्म करिहै सुखदान॥ नृपधृतराष्ट्र पासयेजाय। कहिहै सामबचन समुझाय॥ भीष्म द्रोण दुर्योधन पास। यथाबाच्य करिहै मतिरास॥ बासुदेवउवाच॥ येपाञ्चाल नृपतिके बैन। कार्य सिद्धिकर है मतिऐन॥ पूर्बकार्य करिबे यहभूप। करैंअन्यथा बालस्वरूप॥ कुरुपाण्डव सों नातसमान। हमैंदुहुन को हित कल्यान॥ हमकरिबे अभिमन्यु बिवाह। आयभये सो सहउत्साह॥ हमचाहत अबघरको जान। तुमदोऊ हौ बृद्धसुजान॥ तुम्हैंबहुत मानत कुरुभूप। तुमअरु द्रोणसखा अनुरूप॥ पठवहुदूत युधिष्ठिर अर्थ। जोसाधै मतिमान समर्थ॥ सबही को सम्मतहै तौन। दूत पठावहुगे तुमजौन॥ प्रथम सामकरिये युतन्याय। बंशक्षय बारण सुखदाय॥ जौन सुयोधन दर्पाधीन। मानैसाम न मतिते हीन॥ और दूत पठवहु मतिमान। तबहमार कीन्हेंउ आह्वान॥ तबदुर्योधन लहिहैं बोध। जबअर्जुन अरिहै अतिक्रोध॥ बैशंपायनउवाच॥ सहबिराट करिकै सनमान। यथायोग्य सबको सुखदान॥ लहिश्रीकृष्ण बिराट निदेश। गयेद्वारका सुकुल अशेश॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिअभिमन्युबिवाहश्रीकृष्णस्यद्वारकागमनबर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः॥ १॥

बैशंपायनउवाच॥ दोहा॥ द्वारका को गये जब श्रीकृष्ण यदुकुल राट। लगेकरण बिराट बिधिवत युद्धको सबठाट॥ यथा योग्य पठाय दीन्हें दूत भूपन पास। मंत्रकरि नृप धर्म अरु पांचाल अतिमति रास॥ धर्म नृपति बिराट द्रोपद महीपको संदेश। सुनत प्रमुदित चलेसिगरे

छोड़िकै निजदेश ॥ सुनि सुयोधन पांडवनके जुरतिसैन सहाय । बोलि बे सब भूमिकेपति दियेदूत पठाय ॥ हेतु पाण्डव कुरुनके सबचले भूप अखर्ब । महतलहि दलभारको भूभई व्याकुल सर्ब । हलन लागीभूमि भूधर मथित सागरनीर । भये गजरथ संघटनसों भग्नबन गम्भीर ॥ द्रुपदनृप युव वृद्ध प्राज्ञजो हो पुरोहित बिप्र । धर्मनृप सों बूझि पठवो कुरुनपै अतिक्षिप्र ॥ कहनतासों लगेऐसे द्रुपदभूप सुजान । नम्र ह्वैकै लियेताकी प्रसंशाहि महान ॥ द्रुपदउवाच ॥ हैं जड़नसों श्रेष्ठजीबि जीव में मतिमान । श्रेष्ठहैं मतिमानमें नरनरनमें द्विजजान ॥ जयकरी ॥ श्रेष्ठ द्विजनमें बिद्यामान । तातेजेहि सिद्धांतज्ञान ॥ ताते अधिक जोकरै सुकर्म । ताते ब्रह्मज्ञान बिदपर्म ॥ कृत बुद्धिनमहँ तुम्हैं समान । मो मति में नहिं और सुजान ॥ कुलबय बुद्धि श्रेष्ठतव सर्ब । जीवशुक्रते बुद्धिन खर्ब ॥ बिदित कुरुनको तुम्हैं चरित्र । धर्मनृपति कृतजौन पबित्र ॥ बिदितभूप धृतराष्ट्र हि तौन । कियो द्यूतछल सोबल जौन ॥ कहो बिदुर न कृत्य अनीति । मानोनहिं करिसुत परप्रीति ॥ शकुनि द्यूतछलको ठहराय । धर्म नृपति को फेरि बुलाय ॥ कपट द्यूत कीन्हों तेहि पूत । इनको अक्ष अपटु लहिद्यूत ॥ छलकरि जीतोइन्हैं सधर्म । देत राज्य नतु कैसे पर्म ॥ नृप धृतराष्ट्र पास तुम जाय । कहियो धर्म बचन समुझाय ॥ योधन सहित तास मन जौन । करिबो होय बूझिबो तौन ॥ जो तुमकहिहो हे मतिऐन । बिदुरसाधिहैं तुम्हरो बैन ॥ भीष्म द्रोण कृपादिकबीर । तिनमें साधहु भेदगँभीर ॥ भटअमात्यकों बिमुखकराय। फिरि मिलापको सुलभउपाय ॥ कीजो बिलँब बुद्धिबिस्तार । तुमतबलों हेबिप्र उदार ॥ जबलों पांडवसहित उपाय । जोरेंधन सेनासमुदाय ॥ मुख्यप्रयोजन यामेंबिप्र । सेना धन संग्रहको क्षिप्र ॥ तुम्हैंमिलत धृतराष्ट्रसधर्म । कहैबचन जो तुमसों पर्म ॥ तौतुमहूं सहधर्माचार । तासो कहियो बचनउदार ॥ क्लेशपांडवन को सबजौन । तेहिदयाइ लहिकहियोतौन ॥ पूर्वबंशको पालितधर्म । सो सुनाइदीजो सब पर्म ॥ होइहि सभय सुनतमन तास । होतहमैं यह नियतबिश्वास ॥ तुम्हैं न भयतुम ब्राह्मणवृद्ध । वेदशास्त्र तप तेज समृद्ध ॥ पुष्य योग जय युक्त मुहूर्त । सिध्यकर्मकर आनँदपूर्त ॥ जाहु हस्तिनापुरको बिप्र । करहु युधिष्ठिर

कारजक्षिप्र ॥ वैशंपायनउवाच ॥ पाय द्रुपदआज्ञा सुखरूप। चलो पुरोहित जहँ कुरुभूप ॥ नीति शास्त्रवेत्तासो विप्र। चलो हस्तिनापुर को क्षिप्र ॥ पठे पुरोहितनृप पांचाल। दूतबुलाये सुमति बिशाल ॥ पठये चहुंदिशि भूपनपास। जिष्णु द्वारका को बलरास ॥ जहां वृष्णि अन्धक यदुभूप। सहितकृष्ण प्रद आनँदरूप ॥ गुप्त पठाय सुयोधन चार। पण्डवनको सुनिचरित उदार ॥ गये द्वारका को यदुबीर। सुनतसहित सेना रण-धीर ॥ रथमें जोरि अनिलसम अर्ब। चलोद्वारिका सबलअखर्ब ॥ ताही दिन अर्जुन बरबीर। जायद्वारका पहुंचे धीर ॥ दोऊबीर द्वारका जाय। सूतत सुनो कृष्णसुखदाय ॥ दोऊगये तहां बलऐन। यदुपतिरहेकरत जहँसैन ॥ शीस ओर धृतराष्ट्रकुमार। बैठेपददिशि जिष्णुउदार ॥ तजि निद्राजागे भगवान। सांजलिदेखि जिष्णुबलवान ॥ बूझिकुशल चितये यदुबीर। दुर्योधनको गर्वगँभीर ॥ स्वागतबूझि आगमनहेतु। पूछोफेरि वृष्णि कुलकेतु ॥ कहो सुयोधन करहुसहाय। यहि बिग्रहमें मो यदु-राय ॥ हमअर्जुनसों सख्यसमान। ममसम्बन्ध तुम्हें सुखदान ॥ हम आये प्रथमहिं तवपास। भजत सन्त प्रथमागम जास ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ तुमआये पहिले ममपास। हेदुर्योधन अतिमतिरास ॥ लखो प्रथम पार-थहि हमभूप। दुहुंदिशि हमें सहायअनूप ॥ प्रथमहिलघुको वांछितकार्य। बिहितनीति भाषत सबआर्य ॥ तातेप्रथम पार्थ सन्तोष। करत सुनहुं भूपति तजिरोष ॥ तुल्यशस्त्रधारकहैं सर्ब। गोपवृन्दजे मेरेअर्ब ॥ नारा-यण नामक अभिराम। रणदुर्मद जे अतिबलधाम ॥ एकओरते सैनिक घोर। बिना शस्त्र हमहैं यकओर ॥ करिहैं युद्ध न हम रणधीर। चहहु लेहुतेहि अर्जुनबीर ॥ वैशंपायनउवाच ॥ अर्जुनकहो तुम्हें हमलेत। यदुपति धर्मानन्द निकेत ॥ गहहु न शस्त्र होहु ममनाथ। विजय पराजयहै तव हाथ ॥ लई सुयोधन सेनातौन। दुर्मद गोपवृन्दहो जौन ॥ गहिहैं शस्त्र न करिहैंयुद्ध। जानि कृष्णको प्रमुदितउद्ध ॥ दुर्योधन सहसेना तौन। गयेजहां हलधर बलभौन ॥ सकलकहो आगमनबिधान। सुनि बोले बलभद्र सुजान ॥ बलदेवउवाच ॥ तुमको बिदितकहो हम जौन। नृपबि-राटसों हे मतिभौन ॥ हृषीकेशसों बचनप्रमान। सम्बन्धी दोउ हमैं स-मान ॥ केशव ग्रहणकियो नहिंतौन। हमकह हरिबिनु करत न गौन ॥

हम कुरु पांडवकीन सहाय। करिहैं सुनहुं कहतसतभाय ॥ जनमेभर
बंशमें शुद्ध । क्षात्रधर्म करि करियेयुद्ध ॥ वैशंपायनउवाच ॥ हलधर क
भरिअंक उदार। चले सुयोधन करत बिचार ॥ हम पाई यह सेन
उद्ध। कृष्ण अशस्त्र न करिहैं युद्ध ॥ ऐसी जितिहैं हम संग्राम। आ
कृतवर्माके धाम ॥ एकदई अक्षोहिणिसैन। कृतवर्मासह बिधिबलऐन ॥
सोसबसैन सुयोधन भूप। लयेगये घरको सुखरूप ॥ गये सुयोधनहरि
सुखरास। बोले मुदित जिष्णुके पास ॥ करिहै युद्ध न हमको जानि।
अर्जुन कियोकहा अनुमानि ॥ अर्जुनउवाच ॥ अरि समूह करिबेको नाश।
तुम समर्थ यदुपति बलराश ॥ सबको हनिहैं हम तवसाथ। कृपारावरी
लहि यदुनाथ ॥ तुमहौ कीरतिमान स्वरूप। हमयश चाहतलहो अनूप ॥
याते लयोतुम्हैं यदुबीर। कीजो मम सारथ्य गँभीर ॥ वासुदेवउवाच ॥ वां-
छिततव ह्वैहै यहसार्थ। सारथ्य करैंगे हम तव पार्थ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥
मुदितहोय अर्जुनसों पर्म। गयेकृष्ण तुरजहँ नृपधर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभि
गामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुल
नाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणि
दूतगमनवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ शल्यसुनो नृपधर्मको दूतनसों संदेश। चलो
महारथ पुत्रसह साजि चमूअतिबेश ॥ सैनएक अक्षोहिणी लयेमहाबल
बीर। कवच बिचित्र धरेसुभट रथध्वज धनुष गँभीर ॥ धरा धराधर को
करत कम्पित झम्पित शूर। चलोजहां पांडव नृपतिशल्य महाबलपूर ॥
आवत सुनिकै शल्यको सेनासहित गँभीर। दुर्योधन पथमेंरचे बासस्थान
समीर ॥ ठौरहिठौर रचीसभा मणिमय रम्य उदार। पूजन द्रव्य धरे
तहां भोजनबिधि बिस्तार ॥ बापीकूप तड़ागतहँ रचेबिचित्र बनाय। तहँ
तहँ पूजेशल्यको कुरुकुल सचिवन आय ॥ शल्य अमानुष पायकै पूजन
प्रमुदित पर्म। सचिवनसो बोलोतुम्हैं पठयोका नृपधर्म ॥ सचिवनकहो
सुयोधनहिं यहत्वदर्थ बिश्राम। करिबेको बिरचीसभा ठौरठौर अभिराम ॥
मिले सुयोधन आइतब मातुलजानि प्रसन्न। मुदितशल्य देखत भये
जानिकृत्य सम्पन्न ॥ शल्य अङ्कभरिकै कहो मांगहु बाछित जौन ॥

दुर्योधनउवाच ॥ जामें ममकल्याण है दीजै बांछित तौन ॥ मेरे सेनापालतुम होहु महाबलभौन ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ कहो सुयोधन बचन सुनि शल्य तथास्तु सुतौन ॥ शल्यउवाच ॥ जाहु हास्तिननगरको दुर्योधन रणधीर । जातदेखबे हेतु हम जहां युधिष्ठिरबीर ॥ देखि युधिष्ठिरको यहां क्षिप्र आइहैंभूप । बचन आपनो पालिहैं दयो जो तुम्हें अनूप ॥ दुर्योधनउवाच ॥ देखियुधिष्ठिरको इहां आवहुबेगि सुजान । स्मरणकरत हमरहैंगे दयोजो तुमबरदान ॥ शल्यउवाच ॥ युधिष्ठिरको देखिहम क्षिप्रतिहारेपास । भागिनेय सुनुआइहैं कीजो नियतबिश्वास ॥ बिदा सुयोधनकोकियो लियें अंक बलऐन । गये सुयोधन आपने नगरभरे चितचैन ॥ गयेशल्य सेनासहित रहेजहां नृपधर्म । कहिबेको वृत्तांतजो कियोसुयोधन कर्म ॥ पुरबिराटके निकट जहँ सेना बासस्थान । तहँडेरा करिकै गये जहँ पांडव बलवान ॥ पांडव मिलि नृपशल्यसों अर्घ्यपाद्य अभिराम । करिकै बूझो कुशल फिरि धर्मनृपति बलधाम ॥ भीमार्जुन श्रीकृष्णसों माद्रीतनय न पास । बूझि कुशल लागेकहन शल्यभूप मतिरास ॥ कृष्णासह बनबास करि सहो दुःख अतिमान । तुम्हैंदुःख कारणभयो दुर्योधन अज्ञान ॥ फिरि तुम सुखको पाइहौ हनि शत्रुनको बीर । राज्य करहुगे आपनो आनँदभरो गँभीर ॥ तुम जानतहौ धर्मनृप जौन जगत सिद्धांत । याते तुममें लाभके लेश न लखत नितांत ॥ राजर्षिनको देखि पथ भलीभांति नृपधर्म । दान तपस्या धर्ममें रहत निरन्तर पर्म ॥ क्षमा अहिंसा सुमति सो तुममें बसति नरेश । मृदु बदान्य ब्रह्मण्य तुम धर्मपरायण बेश ॥ वैशंपायनउवाच ॥ शल्य युधिष्ठिर सों कह्यो दुर्योधन सनमान । फेरि आपनो कहि दियो दियो जौन बरदान ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सुकृत कियो तुमदियो नृप बर सुयोधनहि जौन । एकन मातुल कीजियो सुनहु कहत हम तौन ॥ कर्णार्जुन के युद्धमें देहु बचन यहमोहिं । तुम सारथ्य न कीजियो पाल्य धनंजय तोहिं ॥ शल्यउवाच ॥ सुनु हे पांडव कहत तुम कहत सोहम तवपास । होय सारथी तासहम तेज करैंगे नास ॥ कहिहैं बचन प्रतीप हम भर्त्सन भरे बिरुद्ध । सूतपुत्र सँग जिष्णुके चलीकरण जबयुद्ध ॥ तेज दर्पहत होयगो कर्ण महारणधीर । सुखसों ताको मारिहैं तब अर्जुन बरबीर ॥ कृष्णासह तुम द्यूतमें लहोदुःख नृपधर्म । परुष बचन राधेयके सहेजे

भेदी मर्म ॥ दयो जटासुर दुःख जो कीचक अधम अयान । सही द्रौपदी संग तुम भैमी नलहि समान ॥ दुःख तुम्हें यह होयगो सुखकारण अति मान । खेद न यामें करहु तुम धीरबीर बलवान ॥ दुःख महात्मा लहत हैं महत युधिष्ठिर भूप । शची सहित अमरेश ज्यों लहो दुःख अतिरूप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कैसे इन्द्र सभार्य दुख पायो अति बलवान । सो मातुल हमसों कहो बिस्तर सहित सुजान ॥ शल्यउवाच ॥ इन्द्र द्रोहते प्रजापति त्वष्टासुत बलवान । तपबल तें कीन्हों प्रगट ज्वलित अग्निसम भान ॥ बिश्वरूप से तीनिशिर अनल अर्क शशिरूप । करनलगो तप इन्द्रपद लीबे चाहि अनूप ॥ तास देखि तपबल महा भरेखेद मघवान । तपभंगा-रथ अपसरा पठई करि सनमान ॥ जाइ अप्सरन कियोबहु कौतुककला महान । बिश्वरूपमन नहिंचलो पूरणसिन्धु समान ॥ जाय इन्द्रसों अप्सरन कहो बचन सबिवेक । बिश्वरूप मन चलत नहिं कौतुककियो अनेक ॥ सुनत अप्सरनके बचन शत्रुप्रबल निरधारि । बिश्वरूप के नाशको रहोउपाय बिचारि ॥ कियेउपेक्षा शत्रुलघु सोऊबड़ो ह्वै जात । बढ़न न पावै प्रथमही करीशत्रुको घात ॥ यहबिचारि अतिक्रोध करिलीन्हों बज्रउदार । त्रिशिरा के शिरपरकियो इन्द्र अमोघ प्रहार ॥ लगतबज्र क्षितिपरगिरो गिरित्रय शिखर समान । वैश्वानरसम तेजमय भयकर घोरमहान ॥ तक्षाआयो तेहिसमय लीन्होंपरशु महान । त्रिशिरा को शिर काटिबे आज्ञाकिय मघवान ॥ तक्षाउवाच ॥ महास्कन्ध याको कठिन कटै परशुसों जौन । तौमोको सतपुरुष सब हसिहैं हेमतिभौन ॥ इन्द्रउवाच ॥ डरहुन तक्षा चित्तमें लहि ममकृपा महान । काटहु ह्वैहै परशुतव मेरेबज्र समान ॥ तक्षाउवाच ॥ कोहौतुम बूझत तुम्हें कियोघोर यहकर्म । हमसुनबे चाहत कहहु यह कृतकारक कर्म ॥ इन्द्रउवाच ॥ देवराज हमइन्द्र हैं तुम जानतहौ मोहिं । जौन कहतहम करहुतुम नहिंबिचारिबे तोहिं ॥ तक्षा-उवाच ॥ महाक्रूर यहिकर्मते तुमलजात नहिंशक्र । मारोऋषि सुत ह्वै अभय ब्रह्महत्या सो वक्र ॥ इन्द्रउवाच ॥ तक्षसुनहु कीजोबहुरि धर्माधर्म बिचार । बज्रहनो याशत्रु को काटहुशीश उदार ॥ सुयश होयगो यज्ञमें तक्षलहोगो भाग । हनहु शत्रुशिर बेगितुम करिमोपै अनुराग ॥ शल्यउवाच ॥ सुनत इन्द्रको बचन लै तक्षाकठिन कुठार । त्रिशिरा के शिर काटिकै

कीन्हेभिन्न उदार ॥ त्रिशिरा के शिरकटेते ज्वलन अर्कसम पीन। कपिंजल सुतित्तिर चटक निकसे पक्षीतीन ॥ ताहिमारि बिज्वरभये इन्द्र गये निजधाम। तक्षा अपने भौनगो करिसुरपति को काम॥ प्राजापति त्वाष्टैसुनो हनेपुत्र मघवान। ऐसेबोले बचन को करिकैक्रोध महान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे उद्योगपर्वणि त्रिशिराबधवर्णनोनामत्रितीयोऽध्यायः॥ ३ ॥

त्वष्टाउवाच ॥ दोहा ॥ नित्यतपस्वी शान्तअति दान्त जितेन्द्री जौन। इन्द्रहनो अपराधबिनु पुत्र हमारो तौन ॥ तातेशक्र बिनाशको वृत्रकरत उतपन्न। त्वष्टातपस प्रताप को लोकलखो सम्पन्न ॥ त्वष्टाकरि आचमन को देइअग्नि में होम। प्रगटकियो अरिइन्द्र को वृत्तमहाबल तोम ॥ इन्द्रशत्रु बाढ़ोकहो मनतपको बलपाय। वृत्रबढ़ा समअग्नि के लगो गगन सों जाय ॥ त्वष्टासो वृत्रासुर बूझोकरै कहा हमकर्म। त्वष्टैकहो नाशमघवा को करहुपुत्र कृतपर्म ॥ यहसुनिकै सुरलोकगो वृत्रमहा बलबीर। शक्रवृत्र सो युद्धतब होनलगो गंभीर ॥ वृत्र पकरिकै इन्द्रको लियोबदन में डारि। बिस्मित इन्द्रकरी प्रगट जृम्भातब निरधारि ॥ वृत्र जभांनो बायमुख अतिगिरि गुहासमान। गयेजृम्भिका साथकढ़िमुखतेंतब मघवान ॥ लखिसुर सबहर्षितभयेहोनलगो तबयुद्ध। लरेवृत्र बासवदोऊ चिरह्वै दारुणक्रुद्ध ॥ वृत्रप्रबल भो युद्धमें त्वष्टातपबल पाय। इन्द्रगये तजियुद्धतब रणते सहित सहाय ॥ ऋषि सुरगण सहशक्र तब करिकै मंत्र विचार। ध्यानधारि तबविष्णुको लीन्हों शरण उदार ॥ इन्द्रकहो सुरऋषिन सो चलहुविष्णुकेधाम। आज्ञाकरैंजाजगतपतिसोहमको अभिराम॥ इंद्रउवाच ॥ भराभूरि ब्रह्माण्ड में वृत्रमहा बलवान ॥ यहअजेय तपबल लहें त्वष्टाको अतिमान ॥ अब असमर्थ भयेसु हमसोसमर्थ बलवानाचलोबूझि यहि विष्णुलग वाकोबध सुखदान ॥ शल्यउवाच ॥ इन्द्र बचन सुनि महाऋषि रहेजे सुरगण गण्य। गयेविष्णु केधामको आतुरजानि शरण्य ॥ कहोविष्णुसों वृत्रकृत भे बिह्वल मघवान। अमृत हरी बलिबांधि तुम दयोजो मोको स्थान ॥ तुम सबके प्रभु जगन्मय जगन्मूल जगदीश।

देवदेव पालकप्रजा बिश्व बिश्वपति ईश ॥ होहुसुगति सब सुरनकेशक्र सहायकतुष्ट । भोवृत्रासुर जगतमें बढ़ि परिपूरणदुष्ट ॥ विष्णुरुवाच ॥ शक्र हमैं करतव्यहै तवहित हे मतिराश । वृत्रासुर को होइगो जाते नियमित नाश ॥ ऋषि गन्धर्ब सुअमरतुम वृत्रासुर पहँ जाय । साम करहु फिरि करहिंगे हमबध तासउपाय ॥ तब बज्रायुध माहँ हम करिप्रवेश मघवान । नाशकरैंगे वृत्रको सन्धि करहु मतिमान ॥ शल्यउवाच ॥ ऋषिसुरगण करि इन्द्रको आगे तापहँजाय । ज्वलित अग्निसम सूरसो वृत्रासुर कोपाय ॥ ऋषिन जायढिग वृत्रके कहनलगे प्रियबैन । व्याप्तभये तवतेजते त्रिभुवन हेबलऐन ॥ जीतिसके नहिं इन्द्रको बीतिगयो बहुकाल । सुरनरनागादिक प्रजापीड़ितभई बिशाल ॥ यातेतुम अब इन्द्रते संधिकरहु बरबीर । शक्रलोकसों लेहुसुख ह्वै निवृत्त रणधीर ॥ वृत्रऋषिन के बाक्य सुनि शिरसों कियो प्रणाम । फेरि बिहँसि लागो कहन वृत्रमहा बलधाम ॥ वृत्रउवाच ॥ गन्धर्बन सहऋषिन तुम हमसों कहेजेबैन । उत्तर ताको देतहम सुनहु महामतिऐन ॥ तेजस्वी द्वैसोनहीं सख्यहोत मतिमान ॥ ऋषिरुवाच ॥ एकबार मिलि सख्यको मानत सन्तसुजान ॥ उल्लंघत सतसंगनहिं जासों करतमिलाप । मिलत सन्त तजिकै दपट जेसतपुरुष अपाप ॥ ताते कीजै शक्रसों सख्य वृत्रबरबीर । सख्य योग्य तुमहौदोऊ मति सोंभरे गँभीर ॥ शल्यउवाच ॥ सुनत ऋषिनके बचनयों बोलो वृत्र बदान्य । हैं अवश्य हमको सदा संततपस्वी मान्य ॥ जौन कहत हम देवपति देहिं हमैं बरदान । तबहमतुम जो कहतसो करिहैं सुनहु सुजान ॥ आर्द्र शुष्कनहिं शिलाकाष्ठते अस्त्रशस्त्र दिनरात । इनतेहोहि अबध्य हम सुरनहिं सकै निपात ॥ ऐसेहोयतौ करैंहम सख्यसाथ मघवान । ऋषिन तथास्तु कहो सुनत हर्षा वृत्रमहान ॥ वृत्रासुरको देयकै ऐसोबरसुरनाथ । समय वृत्रबधको लखत रहनलगे नितसाथ ॥ लखोवृत्रको सिंधुतट संध्या समय कराल । शक्रसमुझि बरदानको आयोकाल बिशाल ॥ देखोफेण समुद्रको गिरिसो लागोतीर । नहींशुष्क नहिं आर्द्र यह अस्त्र न शस्त्र गँभीर ॥ बज्र डारिकै फेणमें कियोबिष्णु कोध्यान । डारोफेणसों वृत्रपर सह हरि अंश महान ॥ विष्णुअंशते फेणसो भयोवृत्रको नास । मिटोजगत उत्पात सब पूरेलोक प्रकास ॥ जयकरी ॥ बहोसुखद तबबायु अनूप । लहोप्रजन अति

आनँदरूप। देवयक्ष ऋषिगण गंधर्व। सुस्तुति करन इन्द्र कीसर्ब॥ लागे करनप्रणाम ललाम। हनिअरि शक्र गये हरिधाम॥ सुरन सहित पूजित भगवान। करि अतिमोद लहो मघवान। त्रिशिरा ब्राह्मणमारो जौन। हत्यालगी इन्द्रकोतौन॥ तातेइन्द्र महाभयपाय। बसे सलिलमें जाय छपाय॥ नष्टस्वर्गते भोमघवान। भईभूमि तबध्वस्त समान॥ सूखेकानन तृण तरुक्षीन। भये सरित सरजलते हीन॥ क्षोभित भये जीव जनसर्ब। अनावृष्टि उत्पात अखर्ब॥ भयेत्रस्त ऋषिदेव महान। जानि अराजक जरत समान॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिषट्चबधवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

शल्यउवाच॥ दोला॥ देवगण गंधर्वऋषि सबभरे भीतिमहान। करैंराजा स्वर्गको अब काहिलहि बलवान॥ देवऋषिन बिचार करकै कियो यह सिद्धान्त। करैंराजा स्वर्गकोयह नहुष नृप अतिकान्त॥ तेजमय बलवान सुयशी नित्य धार्मिक धीर। गये सुर ऋषि नहुष नृपपहँ करि बिचारि गँभीर॥ कहनलागे स्वर्गके तुम होहुराजाभूप॥ नहुषउवाच॥ तुम्हें पालन योग्यमो मेहैं न शक्ति अनूप॥ देवाऊचुः॥ देततपबलतुम्हैंहमसह ऋषिन बसुगंधर्ब। स्वर्गको अभिषेक तुमको करतभूप अखर्ब॥ देव दानव यक्ष ऋषिनर पितृबसु गंधर्ब। होत संमुख लेहुगे हरितेज सबकोसर्ब॥ धर्म सोसब लोकको तुम करहुपालन भूप। सुरन को लहि राजदुर्लभ करहु भोगअनूप॥ नंदनादिक बिपिन में सबगिरिनके उतमंग। नहुष लागो करनक्रीडा अप्सरनके संग॥ गंधर्बनारद किन्नरनको सुनतगीत अनूप। रहैंषटऋतु मूर्तिमान सुजाहि रैवतभूप॥ नहुषदेखो एकदिनते शचीको छबिरास। कहनलागो सभासदजे रहेसुरगण पास॥ इन्द्रमहिषी शची मोहिं न भजतिक्यों छबिधाम। इंद्रहमसब लोककेपति महाबल अभिराम॥ अबआवै इंद्रपत्नी क्षिप्रमेरे भौन। सुनतभय बश सुरनको किय शचीगुरु गृहगौन॥ शच्युवाच॥ देहुमोको शरणगुरु करिनहुष भयतेमुक्त। कहतहे तुममोहिं प्रभु सबसुभग लक्षणयुक्त॥ गिरा कीजै सत्यसो प्रभु

कहनहे तुमजौन॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ कहतहे हमशची तुमसोंसत्यहै ध्रुवतोन
इन्द्रकोध्रुव इहांलखिहो क्षिप्रहे छबिऐन । नहुषते मतिभीति मानहुस
मेरेनैन ॥ बृहस्पति के शरणको सुनिशची कीन्हों गौन । देवऋषि ल
क्रोधसों परिपूर्ण दुर्मतिभौन ॥ कहनलागे नहुषसों नहिंतुम्हैंक्रोधसम
न । क्रोधतेतव कँपतसुर गंधर्ब उरग महान ॥ परस्त्रीहै शचीताते कर
चित्तनिवृत्त । पापकी नहिंवृत्तिमें कोउ होत साधुप्रवृत्त ॥ कियो ग्रहण
नहुषतिनको बचनकरिकै क्रोध । गो अहल्या पासइंद्रनकियो तुम तवरो
मोहिंबरिबो शचीकोहै परमहित सुखदान । शचीमोको बरैह्वैहैसुरनके
कल्यान ॥ देवाऊचुः ॥ शचीकोहम ल्याइहैं तुमतजहु क्रोधसुरेश॥ शल्यउवाच
यहिभांति कहिसुर गये गुरुगृह पायनहुषनिदेश ॥ देवाऊचुः ॥ शरण आई
शचीतवहै बिदित हमकोबिप्र । देहुताको नहुषको गुरुकृपा करिकैक्षिप्र
सुनतयह भरिबारि लोचन शची बाली बैन । हौंनचाहति नहुषको पति
कियोगुरु गुणऐन ॥ शरणआई भरीभयसो जानितुमहिं शरणय ॥ बृहस्प
ति रुवाच ॥ तजतनहिं शरणागतहि यह प्रणहमारोगणय॥ धर्मशीलाइन्द्र
पत्नी तजौंगो नहिंतोहिं । नहिं अकारजकरत बिप्रसो धर्मरक्षण मोहिं
शचीको नहिं देहिंगे हमजाहु सुरनिजभौन। शरणागतको तजतबसतसो
नर्कमेंकरि गौन ॥ जानिकैयह देहिंगे नहिंशची सुरपतिबामाहोयगो हित
जौनइनके हमैंसो अभिराम ॥ शल्यउवाच ॥ लगेते सुरकहनऐसेनहुषकीभ
भीति । करु बृहस्पतिमंत्रजासोंहोंय कार्यसुनीति॥बृहस्पतिरुवाच॥ नहुषसे
यहजाय देवी कछू मांगै काल । होयगो हित परम पीछे हमहिं सुन
बिशाल ॥ शल्यउवाच ॥ सुनि बृहस्पति बचन बोले देव ऐसे सर्ब । हित
तिहारो होत याते सुरन सहित अखर्ब ॥ बृहस्पति तुम शचीसों कहि
बचन करहु प्रसन्न । अन्यादि लागे कहन सुरसब बिनयसो सम्पन्न ॥
देवाऊचुः ॥ जगतको आधारहो तुम इन्द्रपत्नी पर्म । तुम्हैं चाहत नष्टह्वैहै
क्षिप्र नहुष अधर्म ॥ इन्द्रपद को पाय भो मदअन्ध दुर्मतिरास । काय
सिद्धि बिचारि याते चलहु ताके पास ॥ सची लज्जित सुरन के सुनि
बचन गुणकर तौन । नहुषके ढिग गई लखि भो खुसी दुर्मति भौन
शल्यउवाच ॥ शचीसों इमि कहनलागो नहुष कुमति अगार । इन्द्रहों तिहु
लोकको पति तेजपुंज उदार ॥ शची यांते बरहु मोको उचितहै छबिऐन

लहहु मी त्रैलोक्य को ऐश्वर्य्य बसि ममसैन ॥ नहुषके सुनि बचन कंपित भई यों छबिधाम । मानसिक करि पितामह का शची सुखद प्रणाम ॥ काल चाहति कछू तुमसों सुनहु इन्द्र प्रमान । सोधहौ करिलेउ कछुदिन भये का मघवान ॥ सोय जो मघवानके प्रभु नहीं मिलिहैं मोहिं । अवशि बरिहैं आयतो हम शक्र सुखसों तोहिं ॥ सुनत पुलकित नहुष सो मृदु शची भाषो जौन ॥ नहुषउवाच ॥ सत्य करियो दीर्घलोचनि कहति है तू तौन ॥ नहुषसों ह्वै बिदाआई शची गुरुके धाम । साग्नि सुरसब शचा के सुनि तौन बचन ललाम ॥ शक्रको सब करन चिन्तन लगे तेमति-रास । जगत्पति श्रीबिष्णु प्रभुके गये ते चलि पास ॥ ब्रह्महत्या भीतिसों भजिगये सुरपुर ईश । आपुहौ गति हमें प्रभु जगदादि त्रिभुवन ईश ॥ सुरनके सुनि बचन बोले बिष्णु अव्ययरूप । इन्द्रको करि पूत करि हैं फेरि त्रिभुवनभूप ॥ फेरि करि हयमेध लहिहैं इन्द्र पदको शक्र । नहुष लहिहैं नाशको यह कर्म करिकै बक्र ॥ बासकरि कछुद्योस सुरगण बिमल बाणी तौन । श्रवण करिकै चले तहँते सत्य शुभदा जौन ॥ उपाध्याय समेत सुर ऋषि गये चलि त्यहि देश । रहो जहँहौ गुप्त ह्वैकै भीति बिकल सुरेश ॥ अश्वमेध सुयज्ञ तेहां रचो सहित बिधान । ब्रह्महत्याते छुटै जेहि पुण्यते मघवान ॥ नदी तरु गिरि युवति भूमें ब्रह्महत्या भाग । राखि दीन्हों सुरनसह ऋषि पूर्ण करिकै जाग ॥ पापते छुटि भये बिज्वर इन्द्र आत्मावान । स्थानते भो नहुष कम्पित देखिकै मघवान ॥ भये फेरि अदृश्य सुरपति काल कांक्षावान । शची देखि अदृश्य पतिको भरो शोक महान ॥ कियो होम जो दानदीन्हों गुरुनको संतोष । पतिव्रत शुचि सत्य मोमें होय जो निर्दोष ॥ तौ हमारो निशा देवी करौबांछित सिद्ध । शक्र है जिहिदेश तौन देखाइदेहु समृद्ध ॥ प्रार्थना इमि निशासों करि कियो शकुन बिचार । उपश्रुति तहँ शकुन देवी भई प्रगट सुढ़ार ॥ शल्यउवाच ॥ उपश्रुति देवी स्वरूप सुधारि दिव्य महानि । शचीके ढिग आय ठाढ़ी भई अति शुचि जानि ॥ उपश्रुति को देखिकै इमि शची बोली बैन । कौनहौ तुम दिव्यरूपिणि कहहु हे छबिऐन ॥ उपश्रुतिरुवाच ॥ उपश्रुति हम देबि आई सची तुम्हरे पास । देखिहौ तुम क्षिप्र सुरपति को महा सुखरास ॥ शचीको लै संग उपश्रुति चली उत्तर ओर । उल्लङ्घि देवारण्य

बहु गिरि सिन्धुके परछोर ॥ लखो सरशत योजनायत महाद्वीप मझार। कमल कानन सदन जामें मत्तमधुप उदार ॥ उपश्रुति सह शची लखि तहँ पद्मएक बिशाल। पैठि देखो इंद्रको तहँ भेदि ताको नाल ॥ धरे तनुतन इन्द्रको लखि पूर्वकर्म बखानि। शची बर्णन करन लागी पाय पति सुखदानि ॥ सुनत सुस्तुति इन्द्रबोले शचीसों इमिबैन। जानि कैसे इहां आई कौनबिधि कुबिऐन ॥ इंद्रसों वृत्तांत सिगरो नहुषको हो जौन। शची सकरुण कहो सिगरो आदिहीते तौन ॥ कालको हम नियम कीन्हों तास दुर्मति जोहि। जौन रक्षण करहुगे प्रभु बश्य करिहैं मोहि ॥ यहि हेतु आई शक्र तुमपहँ कहत तुमसों तान। बगि मारहु क्रूरकर्म्मा नहुष पातक भौन ॥ आपु आत्मा प्रगट कीजै दैत्यहा मघवान। तेजको फिरि धरहु कीजै अमरराज्य महान ॥ शल्यउवाच ॥ शचीसों यहिभांति सुनिकै इन्द्रबोले बैन। नहीं बिक्रम समय अबहीं नहुष अति बलऐन ॥ ऋषिन ताको कियो बर्द्धित हव्यको करिदान ॥ नीति तुमसों कहत हमसो करहु तुम सबिधान। गुप्त ताको राखिहो नहिं प्रगट कीजो तौन ॥ नहुष सो यहिभांति कहिहो रहस में करिगौन ॥ जगत्पति ऋषियान पै चढ़ि आइये ममपास। बचन यहसुनि मानिहै तब महादुर्मति रास ॥ शची सुनि मघवान सों यहिभांति के बर बैन। अस्तु कहिकै बेगि आई नहुष जहँ बलऐन ॥ शचीको लखि नहुष बोलो कहहु सुन्दरि जौन। सत्य भाषत शची तो प्रिय करैंगे हमतौन ॥ ब्रह्मण्युवाच ॥ नियम कीन्हों काल को सो निकट पहुंचो आय। कहौ सो प्रभु कीजिये तुम होहुपति सुख-दाय ॥ अश्व गजरथ रहो बाहन इन्द्रके बलवान। तुम्हें देखो चहति आवन चढ़ि अपूरब यान ॥ है न बाहन सुरासुरके यह सुनो सुरराय। बहै शिविका रावरी सब ऋषिनके समुदाय ॥ तुम्हें देखो चहति ऐसो जानपै हम बीर। होत संमुख हरत सबको तेज तुम गंभीर ॥ शल्यउवाच ॥ शचीको सुनि बचन बोले नहुष कुमति महान ॥ नहुषउवाच ॥ यह अपूरब जानि हमको रुचो सुनि सुखदान ॥ करैंगे हम कहतिहौ तुम जौन सुंदरि बैन। सप्तऋषि ब्रह्मर्षि मोंको बहैंगे तपऐन ॥ लखहु मम माहात्मा को यह बिभव तुम सुखदान ॥ शल्यउवाच ॥ नहुष यहिबिधि शचीसों कहि बिदाकरि सनमान ॥ चढ़ो आपु बिमानपै करि युक्त ऋषि तपधाम।

दुष्टआत्मा भरोमद ऐश्वर्यके बशकाम ॥ नहुषसों ह्वै बिदाआई शची सुर गुरुभौन। कहो रहिगो समय तनुकिय नहुषसों हमजौन ॥ बेगिढूढ़हु शक्र को करिकृपा मोपर नाथ। कियोसो स्वीकार सुरगुरु कृपाकर नरनाथ ॥ करौ भयनहिं नहुषसों तुमशची आयेकाल। किया बाहनऋषिनको यह नष्टहोत उताल ॥ नहुष नाशक इष्टिको हम करतहैं कुबिधाम। इन्द्रको हम क्षिप्रल्यावत लखहुगी अभिराम ॥ अग्निको प्रज्वलितकरि गुरु सबिधि हव्य अनूप। होमकरिकै कहो ढूढ़हु हैं कहां सुरभूप ॥ कुशडते कढ़ि स्त्री स्वरूपी अग्नि श्रीभगवान। प्रगट देखत बृहस्पतिकेभये अन्तर्ध्यान ॥ दशौदिशि बनअद्रि नभ भू नागलोक गँभीर। ढूंढ़िआयेकहो गुरुसोंअग्नि एक न नीर ॥ अग्निरुवाच ॥ नहिं बृहस्पति इन्द्रको हम कहूं देखो रूप। सके पैठि न सलिलमें हम ढूंढ़िबे सुरभूप ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ सुरनके मुख अग्निहौ तुम सर्ब व्यापकगूढ़। एकहौ तुम त्रिबिधि तुमको कहतजे मति रूढ़ ॥ तुम्हैं छोंड़त जगतको सबहोत हुतभुक नास। तुम्हैं भजिकै ब्रह्म गतिको लहत द्विज मतिरास ॥ आत्मयोनि बिचारि आपको तजो शंका जौन। करेंगे हमतुम्हैं बर्द्धित करहुआपमें गौन ॥ अग्नि संस्तुत बृहस्पति सों कहे ऐसे बैन। दहिंगे हमतुम्हैं शक्र देखाय हे तपऐन ॥ शल्यउवाच ॥ अग्नि पैठे अब्धिआदिक जहालों जलरास। जाय पैठे तौन सरमें इन्द्र जहँ हतत्रास ॥ कमलनालन मध्य पैठे हव्यभुक भगवान। लखो तहँ बिसमध्य तिष्ठित सूक्ष्मतनु मघवान ॥ बृहस्पतिसों कहो हुतभुक तूर्ण तहँते आय। ब्रह्मर्षि सुर गन्धर्ब्ब सहगुरु तहां देखोजाय ॥ पूर्बकृतकहि इन्द्र को सब दनुजनाशक जौन। शक्र सों इमि कहन लागे सुऋषि सुरगण तौन ॥ उठहु रक्षण करहु त्रिभुवन जगतपति मघवान। प्रजा पावति महतपीड़ा धरहु रूप महान ॥ सुरनके मुख सुनत सुस्तव शक्रपायो बृद्धि। धरो पूरुबरूप अपनो सबलसिद्धि समृद्धि ॥ दोहा ॥ इंद्र बृहस्पति सों कहो कहा शेष तवकाम। हम त्रिशिरा बृत्रहि हनो रणदुर्मद बलधाम ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ मनुज नहुष सुर ऋषिन को कियो ग्रहण तपतेज। तवपद लहि हमको करत बाधाभरो मजेज ॥ इन्द्रउवाच ॥ रोला ॥ नहुष मानुष लहो कैसे देवतन को राज ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ तुम्हैं बिन भयभरे सुरऋषि सकल पितृसमाज ॥ नहुषसों चलिकहो रक्षहु स्वर्ग

लोक अनूप ॥ नहुषउवाच ॥ तुम्हें रक्षणयोग्य शक्ति न हमैंहै हम भूप ॥ देहु जो तपशक्ति हमको सकल सुर ऋषिवृन्द । सुनत दे तपतेज ताका कियो सुरऋषि इन्द्र ॥ लोकयको लहि राज्यकीन्हों ऋषिन बाहक जान । तेजहर चख तास ताहि न लखो तुम मघवान ॥ रहत सुरगण गूढ़तासों तेजहर अनुमानि ॥ शल्यउवाच ॥ तहां तब दिगपाल आये प्रगट सुरपति जानि ॥ देखि सब दिगपाल सुरपति भरे आनँदचेत । कुशल कहि फिरि तिन्हें पठयो भेद करिबे हेत ॥ शक्रसों दिगपाल बोले घोर नहुष महान । तेजहर है दृष्टि ताकी चोरसदृश अमान ॥ डरतहैं हम जात तापै सुनहु हे मघवान । सकत करि न सहाय याते रावरी सुखदान ॥ इंद्रसों तब कहन लागे अग्नि ऐसे बैन । देहु हमको भाग करिहैं हम सहाय सचैन ॥ इंद्र बोले अग्निसों ममतुल्य तुमको भाग । देहिंगे सुर मनुज तुमको करहिंगे जो याग ॥ शल्यउवाच ॥ इन्द्र कहि यहिभांति मनमें कियो फेरिबिचार । बरुण यम धनपालको दिय यथास्थित अधिकार ॥ इन्द्रकरत बिचार हेजहँ लोक पालन पास । नहुष दुर्मति घोरको केहिभांति कीजै नास ॥ तहां आवत लखो कुम्भज महामुनि तपधाम । होय अचित इंद्रसों मुनिकहे बचन ललाम ॥ भाग्यते तुमहनो त्रिशिरा वृत्रको मघवान । भाग्यते सुरलोकते भोनष्ट नहुष-महान ॥ पायपूजित महामुनि सोंलगे बूझन शक्र । स्वर्गते भो नष्ट कैसे नहुष दुर्मति बक्र ॥ अगस्त्युवाच ॥ नहुष जैसे स्वर्गते भो भ्रष्ट दुर्मति भौन । इन्द्र तुमसों कहतहै हम सबिधिसुनिये तौन ॥ बहत हे ब्रह्मर्षि अरु देवर्षि नहुषहि जौन । धर्म्मतिन ककुताहि बूझो भरे अतिश्रमगौन ॥ नहुष ककुदैतिन्ह उत्तर भरो दुर्मति दर्प । परसि मूर्द्धा चरणसों मम कहनलागा सर्प ॥ छुवत मूर्द्धा चरणसों मम तेजहत भो दुष्ट । शापताको दियो हमयह क्रोधको करि पुष्ट ॥ चरणसों मम छुयोमूर्द्धा ऋषिनको करिजान । सर्प ह्वैकै रहोक्षिति पर अयुतबर्ष प्रमान ॥ अयुतबर्ष व्यतीत करिकै स्वर्गमें फिरि बास । करहुगे तुम लहहुगे जब धमनृपको पास ॥ नहुष ऐसे स्वर्गते भो नष्टदुर्मति धाम । भये तुम मघवान बर्द्धित भाग्यसों अभिराम ॥ देवगण गन्धर्ब्ब किन्नर यक्ष ऋषि नर नाग । आय सुस्तव करनलागे इन्द्रको भरि भाग ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिइन्द्रविजयनहुषभ्रंशवर्णनो नामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

शल्यउवाच ॥ दोहा ॥ गन्धर्वनते स्तुति सुनि अप्सरान सों गान। चढ़ि ऐरावत पर चले सुरपुर को मघवान ॥ अग्नि वृहस्पति देवऋषि सकल ब्रह्मऋषि साथ। भरे मोद सुरगण सकल हर्षित सब दिगनाथ ॥ तहां वृहस्पति जायकै सुरपति का सविधेक। आथर्वणके मंत्रसों फेरि कियो अभिषेक ॥ सुरगुरुको सुरराज यह दीन्हों बर अभिराम। तुम्हैं अथर्वण अगिरस सब कहिहैं तपधाम ॥ हे गुरु अब मिलिहहिं तुम्हैं सर्व यज्ञमें भाग। बिदाकियो दिगपाल तब इंद्र सहित अनुराग ॥ शची सहित पालनलगे आनँदभरे त्रिलोक। मनुज नाग किन्नर अमर सिगरे भये बिशोक ॥ इन्द्राणी सह इन्द्र ज्यों लहो कष्ट अतिरूप। त्यों कृष्णासह गुप्त अब तुमहूं पायो भूप ॥ राज्यहि ऐसे लहौगे तुमहूं शत्रु सँहारि। ज्यों त्रिभुवन सुरपपि लियो वृत्रासुर को मारि ॥ नष्ट होहिंगे दुष्ट तव नहुष यथा नृपधर्म। उपाख्यान याते कहो यह हम तुमसों पर्म ॥ उपाख्यान यह धर्मनृप इन्द्रबिजय फलचारि। देत सुनायो तुम्हैं हम यह निश्चय निरधारि ॥ कुरुनृपके अपराधते जे क्षत्री नृप उद्ध। नाश लहैंगे सकल करि भीमार्जुन सों युद्ध ॥ इन्द्रबिजयोपाख्यान यह पाठकरै नर जोन। मुक्त पापते होयकै स्वर्गलहैगो तौन ॥ मिटै बिपत्ति सपुत्र ह्वै लहै न शत्रुज भीति। दीर्घ आयु ह्वैकै लहै अरिसों रणमें जीति ॥ बैशंपायनउवाच ॥ उपाख्यान यह शल्यसों सुनिकै भूपति धर्म। पूजनकीन्हों शल्यको बिबिधि भांतिसों पर्म ॥ पूजन करिकै धर्मनृप बोले बचन स्पष्ट। होय सारथी कर्णको तेज कीजियो नष्ट ॥ शल्यउवाच ॥ करिहैं हम नृपधर्म सो आपु कहतहौ जौन। और जो बांछित होय तव नियत करेंगे तौन ॥ बैशंपायनउवाच ॥ बिदा होय नृप धर्मसों सबल शल्य मतिरास। गये सु हास्तिननगर को दुर्योधनके पास ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउहितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनारचिते भाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिदुन्द्रविजयोपाख्यानवर्णनोनामषष्टोऽध्यायः ॥ ६ ॥

बैशंपायनउवाच ॥ जयकरी ॥ सात्वतबंश भूप युयुधान। चतुरंगिनि सेना अतिमान ॥ नाना आयुध धारी बीर। सुभट धीर बलभरे गँभीर ॥ एक

लये अक्षौहिणि साथ। आयो जहां धर्म्म नृपनाथ॥ कियो प्रवेश सैनमें आय। जैसे नदी सिन्धुमें जाय॥ चेदिराज अक्षौहिणि एक। सैन लये बलभरो बिवेक॥ धृष्टकेतु भूपति बलरास। गयो युधिष्ठिर भूपतिपास॥ जयत्सेन मगधाधिप भूप। जरासिन्धुको सुत अनुरूप॥ एकलये अक्षौहिणि साथ। आयो जहँ पांडव कुरुनाथ॥ पांड्यनृपति लीन्हे बहुसैन। सागर तटबासी बलऐन॥ आई द्रुपदसैन अतिमान। चतुरंगिनि भटबीर महान॥ आये द्रुपदपुत्र अति शूर। भरे हर्ष अतिरथबलपूर॥ भूपबिराट मत्स्यपति जौन। लये पार्बती नृपबहु तौन॥ आये धर्म्मनृपतिके पास। सैन समूहलये बलरास॥ यतने भूप धर्मनृपसंग। शोभितभये भरे रण रंग॥ सप्ताक्षौहिणि सेनासर्ब। धर्मनृपतिके जुरीअखर्ब॥ आये भूप सुयोधन पास। ते अब कहतसुनहु मतिरास॥ एकलयेअक्षौहिणि सैन॥ नृप भगदंत्त महाबल ऐन॥ भूरिश्रवा शल्य क्षितिपाल। महाबीर सँग सैन बिशाल॥ एकएक अक्षौहिणि सैन। चतुरंगिनिभटबर बलऐन॥ कृतबर्मा भोजादिक साथ। आयोजहँ कौरवकुल नाथ॥ सैनएक अक्षौहिणिसंग। सुभट समूह भरेरणरंग॥ नृपसौबीर सिंधुके जौन। जयद्रथके सँगआये तौन॥ सैनएक अक्षौहिणि सर्ब। भूमिकँपावतगिरिनअखर्ब॥ नृपकाम्बोजदक्षिणीजौन। यवनभूपके जेबलभौन॥ सैनएक अक्षौहिणि तास। आई दुर्योधनकेपास॥ माहिष्मती पुरीकोभूप। नीलनामआयुध अनुरूप॥ सैन एक अक्षौहिणिसंग। आयो सो धारेरणरंग॥ दक्षिण पथकेभूप अनेक। आयेबीर एकतेएक॥ पुरीअवन्तीके भूपाल। अक्षौहिणि द्वैलये बिशाल॥ आयेतौन सुयोधन पास। ध्वजिनी महाभयङ्कर जास॥ भूप बिन्दु अनुबिन्दु सुनाम। तिनके यश भूमें अतिमाम॥ कैकेय नृप सौदार्य्य सुपंच। अक्षौहिणि एकलिये ससंच॥ आयेभूप सुयोधनपास। हर्षितभये देखि भटजास॥ औररहे लघुबर नृपजौन। दुर्योधन पहँआयेतौन॥ एकादश अक्षौहिणि सैन। भईसुयोधनके बलऐन॥ चहैं पांडवन सों तेयुद्ध। रहे किये हास्तिनपुर रुद्ध॥ कुरुजांगल पंजाब सुदेश। मरुरोहित कारगय सुवेश॥ कालकूट अहिक्षत्रस्थान। गंगा यमुनातीर अमान॥ गिरिबन भूमि जहां बिस्तार। तहँतहँ सेना परी उदार॥ बहुधन धान्यभरी सब सैन। सुभट समूह महाबलऐन॥ द्रुपदपुरोहि देखततौन। कियोसुयो-

धन नृपपहँ गौन ॥ वैशंपायनउवाच ॥ दोहा ॥ सपुरोहित गयेजहँ धृतराष्ट्रहे भूपाल। बिदुर भीषम भूपसों सत्कार पायबिशाल ॥ बूझिकुशल सुप्रश्न पहिले परस्पर मतिऐन। सभासदन मझार प्रोहित कहनलागो बैन ॥ पुरोहितउवाच ॥ राजधर्म सोबिदित तुमको हैसनातनजौम। लहोउत्तरचहत याते तुम्हेंबूझत तौन ॥ धृतराष्ट्र पांडुसुपुत्र दोऊ एकके मतिमान। पिता कोधन पाइबेको दोऊ योग्य समान ॥ पिताको धनलहो सुतधृतराष्ट्रके हैंजौन। पांडुकेसुत नहींपावत कहोकारणकौन ॥ लियोजो कृतपूर्वकरि सोबिदित तुमकोसर्ब। देतहैं धृतराष्ट्रके सुतपितृ धन न अखर्ब ॥ प्राण हारक नृपसुयोधन किये बहुतउपाय। पांडुके सुत मरेनहिं आयुष्यको बलपाय ॥ पांडवन फिरिकियो बर्द्धित राज्य बलतेजौन। छल सुकरिकै लिये सुयोधन सहित सौ बलतौन ॥ नियमकरिकै दियसुयोधन जौनबन कोबास। बर्षतेरहसो बितायो पांडवन दुखरास ॥ क्लेशपायो सभामें तिन बिपिनमे बसिजौन। लहो दारुण कष्ट बास बिराटके करिभौन ॥ तौन पीछे राखिकिल्विष पूर्वकृत गँभीर। सामतुम सों कियोचाहत पांडुसुत बरबीर ॥ पांडवनके अरुसुयोधने केचरित्र समान। सुहृदशिक्षा करौनृप धृतराष्ट्रको सुखदान ॥ पांडवनको करिनबिग्रह सकैगे तबबीर। लोक-कर बिनाशचाहत पार्थस्वधन गँभीर ॥ हेतुबिग्रह कोसुयोधन कियोकारजजौन। नहींते बलवान मानतहेतु बिग्रहतौन ॥ सप्तअक्षौहिणि जुरी हैधर्म नृपकेसैन। युद्धचाहत कुरुनसो ते महाबलके ऐन ॥ नकुल अरुसहदेव सात्वकिभीम सेनअमान। एक दिशि सब चमू अर्जुन एक दिशिबलवान ॥ यथाअर्जुन तथाहैंश्रीकृष्ण बुद्धिगँभीर। बुद्धिबिक्रमजानि तिनसों लरैगोको बीर ॥ बुद्धिसमय बिचारि तुमको होय दीवें जौन। नहीं काल बिताइये अबबेगि दीजै तौन ॥ वैशंपायनउवाच ॥ सुनि पुरोहित केबचन ते बहुतभांति सराहि। भीष्मलागे कहनतासों सुमतिको अवगाहि ॥ भाग्य तेते कुशलहैं श्रीकृष्ण सहित उदार। भाग्यतेसह सैनह्वैकै चहतधर्माचार ॥ भाग्यबशते सन्धिचाहत भाग्य बशते युद्ध। कहतहो तुम सत्यहै सोबिप्रबर मतिउद्ध ॥ ब्रह्मतेजस भरेबोलत बिप्रतीक्षण बैन। इहांबनमें भये क्लेशित सत्यते बलऐन ॥ लहैं पांडव पिताकोधन धर्मते सतशुद्ध। जिष्णु अतिरथ महाबलसों सकै को करियुद्ध ॥ हैंकृतास्त्र सु बज्रधरसो

औरधनुधर कौन। करैअर्जुन साथरणमें द्वन्दयुद्धहि जौन॥ भीष्मकेसुनि वचनऐसे लखिसुयोधन ओर। कर्णबोले बचनदुर्मति क्रोधकरिकै घोर॥ बिदितहैं सब जगतजनको कहततुम द्विज जौन। कहेका पुनरुक्ति फिरि फिरि प्रगट बार्ता तौन॥ शकुन जीतो द्यूतमें दुर्योधनार्थक सर्ब। कृपा करिकैकाढ़ि दीन्हें जानि बनको खर्ब॥ सोनिबन्ध बिताय मांगत राज्य पैतृकजौन। द्रुपदमत्स्य सहायलहि बशमूर्खताके तौन॥ चतुर्थांश न देहिगे भयते सुयोधनभूप। कौरवाधिप धर्मबिधिसबदेय भूमि अनूप॥ चहतपैतृक भागपांडव बर्षतेरह जाय। बास करिबन दीन ह्वैकै फेरि मांगोआय॥ छांड़िदेहिं अधर्मकी मतिमूर्खसा बशजौन। युद्धकरिकै समुझिहैं यहकहतहैं हमतौन॥ भीष्मउवाच॥ पार्थके रणकर्म कोगो भूलिका अस्मर्ण। एकरथसों हारिआये पटरथी तुमकर्ण॥ बहुतजियबे चहततुम तबकर्म देखौसर्ब। मानिहौ नहिं बिप्रको जोबचन पथ्य अखर्ब॥ युद्धमें बधहोयतौ तुममहुगे मुखभूरि॥ बैशंपायनउवाच॥ भीष्मके सुनिबचनकरि धृतराष्ट्र आदर भूर॥ भीष्मके येबचनहमको परमहित सुखदान। जगतहितहित पांडवनको नीतिमय अतिमान॥ बहुत भर्त्सन कर्णको करि कहैंऐसेबैन। मत्रकरि संजय पठावहु पार्थपै मतिऐन॥ सभामें बोलवाय संजयको लयोतब भूप। बहुत आदर सहित बोले बचन उचित अनूप॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ जाहुसंजय सभाजेता पांडवनके पास। शान्ति जैसेलहैं पांडव कहेहुसो मतिरास॥ क्षुत् पिपासा क्लेशबर्द्धित क्रोधतिनको जौन। धैर्य्यते अरु बुद्धिते सब शमितकीजो तौन॥ क्षुद्रकर्णहि मिलि सुयोधन पापकरि सम्पन्न। प्रिय महात्मा पांडवन को क्रोधकिय उत्पन्न। आरंभ बीर्य्य प्रसंगमें हतबीर्य्य ममसुत जौन। मूर्खताते धर्मको धन लियोहि जानततौन॥ भागताकोहरोचाहत कृष्णजासु सहाय। जिष्णुमाद्रीतनय सात्वकि भीमअति बलकाय॥ भागताको साधु देनो युद्ध पूर्व सुजाम। जिष्णुकेशर सहैक्षितिपरकौनहै बलधाम॥ जिष्णुकेसब साथदोऊ लोकपति बलभौन। रहैंतिनके सामुहे रणभूमिमें नृपकौन॥ मेघलांशर वृन्द बरषत शलभसंग समान। जिष्णुचारौं दिशनके नृप जीतिहै बलवान॥ सुरनसह सुरराज जीतो कियो खांडवदाह। कियोपावक तृप्ततासों लरै कोनरनाह॥ गदाधरको भीमकेसम युद्धमें बलवान। महारवसमजिष्णु

केहेंसमर सिंहसमान ॥ अस्त्रशीक्षित बेरकृत अति तेजपुंज उदार । दहें गंमम सुतनको सुतपांडुके बलभार॥ जयकरी ॥ सदा अमर्षी अतिबलवान। जिन्हैंन जीतिसकै मघवान॥ शीघ्रहस्त अनिशूर अखेद। पढ़ेजिष्णुसों सब धनुवेद ॥ माद्रीसुत अरि बिहग सचान। जीतनयोग्य समर अतिमान ॥ तिनकेमध्य महारणधीर। धृष्टद्युम्न अतिरथ बरबीर ॥ सोमक श्रेष्ठद्रुपद नृपजौन। आत्मातिन्हें समर्पेतौन ॥ रणकोबिद प्रद्युम्न समान तिनसँगसो सात्वकि बलवान ॥ जीतै धर्मनृपतिकोकौन। जासु सहायकृष्ण बलभौन॥ नृपबिराट मत्स्याधिप बीर। जासु सहाय महारणधीर ॥ पुत्रन सहित सबल धनमान। भक्तधर्मनृपको सुखदान ॥ नृपकैकेय बंधुशरसंग। तासु सहाय चहत रणरंग ॥ भूप सहायक तिनके जौन। भरेभक्तिसों सुनियत तौन ॥गिरिदुर्गाश्रयके नृपसर्ब। आयेधारि युद्धकोगर्ब ॥ म्लेच्छजाति नानायुध धारि। आयेतास सहाय किचारि ॥ पांड्यभूप रणशक्र समान सुभट वृन्दलीन्हें बलवान ॥ धर्मनृपति की चाहिसहाय। सुनियत मिलो सबल सो आय ॥ चेदिनृहति कारुष को संग। आया लियेभरो रणरंग ॥ तपत सूरसो चेदिनरेश। संगलिये भटवृन्द अशेश ॥ महाबली भूपति शिशुपाल। ताहिहने जो क्रुद्धितकाल ॥ जिष्णु सारथी सुनियत तौन। भयोकृष्ण के शवबल भौन ॥ एकर थस्थभय दोउबीर। सुनिकांपत ममहृदय गँभीर ॥ रणनचहति मममति तिनसंग। ममसुत कुमति चहत कृतभंग ॥ हमअर्जुन को शक्रसमान। जानत कृष्णविष्णु नहिंआन ॥ छलकरि ठगो सुयोधन ताहि। शान्त सुभाव पाण्डवहि चाहि ॥ क्रोधकरैं जो पाण्डवसर्ब ॥ कुरुकुल जारैंतौ सुअखर्ब। मेटिक्रोध को कारणसर्ब ॥ संजय सम्मतमोंहि अखर्ब ॥ संजय बेगमान रथजौन । तापहँ चढ़िकै कीजैगौन ॥ द्रुपद सैनमह किहेहु निदेश। कहहु सुजोहम करत निनेश ॥ बूझेहु कुशल धर्मनृप पास। ममदिशि ते फिरिफिरि मतिराश ॥ महाभाग बलबीरज धाम। बासुदेव को लहि अभिराम ॥ कुशल प्रश्नबूझेहु मतिरास। आज्ञा कारक पाण्डव जास ॥ ममदिशि ते लहियो मतिधाम। पाण्डु सुतनते चाहत साम ॥ पाण्डव कृष्ण सहितयुयुधान। पुत्रद्रौपदी के बलवान ॥ संजय पायतिन्हैं एकठौर। कुशलप्रश्नकीजो मतिभौर ॥ बचनसोइ कहियो मतिउद्ध। हरैक्रोध जो कारण युद्ध ॥ बैशंपायनउवाच ॥

सुनि धृतराष्ट्र भूपके बैन। संजयचलो महामतिऐन ॥ कृष्ण सहित पाण्डव नृपधर्म। तिन्हें चाहिवे चाहत पर्म ॥ भ्रातन्ह सहित युधिष्ठिर भूप। जहँहें गयो तहां सुखरूप॥ धर्मनृपति सों सहित प्रणाम। बोलो सूतपुत्र मतिधाम ॥ भूप अम्बिका को सुतवृद्ध। बोलो तब कुशलाति समृद्ध॥ कुशल भीम अर्जुन बलधाम। माद्रीतनय कुशल अभिराम ॥ राजसुता पतिब्रत की ऐन। भूपकुशल कृष्णा सहचैन ॥ कृष्णाके सुत पञ्चसुजान। ते हैंकुशल भूपबलवान ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ संजय भो आगम तवपर्म। देखि तुम्हैंभो पुलकित मर्म ॥ संजय कुशल सहित परिवार। हैंहम बन्धुन सहित उदार॥ भारत बंश कुशल बहुकाल। बीतेतुम सो सुनो बिशाल ॥ तुमसो कुशल वृद्धसुनि भूप। भयोहमैं दर्शन अनुरूप॥ स्थबिर पितामह भीष्म सुजान। कुशल यथास्थित हैं मतिमान॥ हैंबाल्हीक कुशलसोपर्म। सोमदत्त सहपुत्र सधर्म ॥ भूरिश्रवा ससुत गुरु द्रौन। कुशल कृपा चारय मतिभौन ॥ हैंकुरुकुल सबकुशल उदार। तिन्हें कहत धनुधर संसार ॥ कुशल युयुत्सु कर्ण कृतदन्त। कुशल सुयोधन हे मतिमन्द ॥ वृद्धराज पत्नीहै जौन। ऋषिन सहित कुशली है तौन॥ बधूपुत्र भगिनी सुतसर्ब। हैंदौहित्र कुशल सो सर्ब ॥ बिप्रजीविका पूरब जौन। देतयथा स्थित भूपति तौन॥ जेममदत्त द्विजन को ग्राम। लेत नतौ ताको नृपदाम ॥ ब्रह्मवृत्ति परलोक प्रकाश। करति भूमिपर यश मतिराश ॥ ब्रह्मवृति में कीन्हें लोभ। होतनाश दुहुंदिशि ते क्षोभ ॥ आमात्यन्ह को पालत भूप। पुत्रनसह संजय अनुरूप॥ सबकौरव मिलिकै भरिरोष। कहतनहीं तौ पाण्डव दोष ॥ ससुत द्रोण गौतम कृप बीर। कहत नतौमम दोषगँभीर ॥ धुनिगाण्डीव धनुषकी जौन। करत न तौ सुधि कै तबतौन ॥ अर्जुन सम धनुधर रणधीर। हमन धरापर देखतबीर ॥ गदापाणि नहिंभीम समान। हमधरणी परदेखो आन ॥ माद्रीसुत सहदेव सुजान। जेहि कलिंग जीतो बलवान॥ नकुल प्रतीची दिशिके भूप। संजय जेहिजीते अतिरूप ॥ तेइनकी सुधि करत न धूत। महाबली माद्रीके पूत ॥ द्वैतबिपन में यात्राघोष। कियो सुयोधन जो करिरोष ॥ पायोतहां पराभव जौन। संजयकहो करत सुधितौन ॥संजयउवाच ॥ जौनकहौ तुमभूपतिधर्म। हमसो तौनसत्य सबपर्म॥ हैंधृतराष्ट्र

सा सुमति भूप । कुमति सुयोधन पापस्वरूप ॥ करतशोच धृतराष्ट्र नरेश । तुमप्रति भूपति धर्महमेश ॥ हेनरदेव तिहारो युद्ध । समरसिंह अर्जुन को क्रुद्ध ॥ भीमसेन को गदा प्रहार । स्मरण करत धृतराष्ट्र उदार ॥ माद्रीसुत रणमें चहुं ओर । वर्षत बाण महाबलघोर ॥ स्मरण करत तिनको कुरुभूप । सुनहु धर्मभूपति अनुरूप ॥ भोग्य भविष्य अदृश्य सुतौन । ताहि न कोउ जानत मतिभौन ॥ तुमसब भांतिन धर्मासन्न । तिनको क्लेशमहत उपपन्न ॥ जेधृतराष्ट्र कहेईबैन । तुमसों कहिबेको मतिऐन ॥ संजय पाण्डव और सुभूप । आयेहैं तुमपहँ अतिरूप ॥ तिनसह बैठहु भूपतिधर्म । सभामाहँ थिरमति करिपर्म ॥ नृपधृतराष्ट्र कहो है जौन । हमसो कहिबे कहिहैं तौन ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ संजय पाण्डव सह यदुबीर । नृपति बिराट महारणधीर ॥ सभामाहँ बैठेसब आय । संजय कहहु तौन सतभाय ॥ जेधृतराष्ट्र कहेहैं बैन । तुमसो नीतिनिपुण मतिऐन ॥ संजयउवाच ॥ सहित कृष्ण पाण्डवरणधीर । द्रुपद बिराट सपुत्र गँभीर ॥ चेकितान युयुधान समेत । कृष्णासह सबसुनौ सचेत ॥ सुनहु कहेधृतराष्ट्र जेबैन । तेहम कहत कुशलके ऐन ॥ चहत सामकुरुकुलपति वृद्ध । पठयो यातेमोहिं समृद्ध ॥ नृपधृतराष्ट्र कहेजेबैन । तुम्हैं रुचौसह सामसचैन ॥ भरेसर्वगुण पाण्डवबीर । दायाधर्म समुद्र गँभीर ॥ हिंसामति नहिं तुममेंपर्म । सेनाकोभयकर नृपधर्म ॥ दोहा ॥ तुममें किल्बिष होततौ होत प्रगट न छपात । परेशुभ्र पटमें यथा अंजनबिन्दु लखात ॥ सर्वक्षय जामें उदय पापनिरामय जौन । कौन करत है कर्मसो अजयतुल्य जयतौन ॥ ज्ञाति प्रजापालन करत बन्धुवर्ग सहमित्र । धन्य पुत्र सो जगत में दुहुंदिशि करत पवित्र ॥ निन्दित ह्वैकै जियतजन सोहै मृतक समान । गन्धर्वनते राखितुम लियोसुयोधन प्रान ॥ कोतुमको केशव सहित जीतिसकै नृपधर्म । चेकितान मत्स्यप द्रुपद सात्वकि रक्षकपर्म ॥ सुरन सहित सुरराज नहिं तुमसो जीतैंयुद्ध । भीमार्जुन माद्रीतनय भये समर में क्रुद्ध ॥ भीष्म द्रोण कृप शल्यनृप द्रोणतनय बलभौन । कर्णजासु रक्षक प्रबल ताकोजेता कौन ॥ महाचमू धृतराष्ट्र की कौन मारिहै भूप । चहुंदिशि के आयेनृपति महाबली रणरूप ॥ हमेंजयाजय में नियत अश्रेयस अतिआधि । नीचकरत है कर्मको धर्म अर्थकोबाधि ॥ वासुदेव पाञ्चा-

लको करिहम बिनय प्रणाम। बूझत संजय कुरुनको कैसेकुशल ललाम ॥ आंबिकेय ऐसेकह्यो कृष्णपर्थमतिमान। वह्यौन मानैसो नहीं कहौं देहि तौ प्रान ॥ भीष्मभूप धृतराष्ट्र को सम्मत शान्तिन और । तातेकीजै शान्तिको धर्मनृपति शिरमौर ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ युद्धाकांक्षी कौनसो संजय यह तुमबैन। कहत हमैं जो सुनहु सो तुमहौं मतिके ऐन ॥ बिनायुद्ध लहि अर्थ को युद्ध चहैगो कौन। बिनाकियेही सिद्धितौ करिये कर्मन तौन ॥ बिदित करतहम कर्मनहिं जैसे लघुजन जौन। पार्थकरत हैं कर्म को जगतपथ्य मतिभौन ॥ जिहिसुखमें है उदयधर्म को चहतपार्थ सब ताहि। यहसुनि कहोयुद्ध क्यों चाहत तुम ऐसे अवगाहि ॥ तौसुनु दुखके नाशको सुख पावन के हेत। कर्मकरत हैं सबही गहि निजधर्म शचेत ॥ बिषयध्यान बहुपाप करतजे बिषयको ध्यान। सुख पावत सबभांतिसो जेनरबर मतिमान ॥ बिषय बासना घटतिनहिं लहिबहु बिषयबिकार। यथापाइइन्धन बहुत पावक बढ़तउदार ॥ काम अर्थलहि बहुलहुन तृप्त भये कुरुभूप। हमैं राज्य बाहरकियो चहि सर्बस्व अनूप ॥ महा बिपिन के बीचमें लहि निदाघ मध्यान। चहत कुशल दावाग्नि सो निद्राबश्य अयान ॥ संजयनृप धृतराष्ट्र लहि कैऐश्वर्यमहान। सुतमंत्री दुर्मतिलहे भाषत दीनसमान ॥ निदरि बिदुर के पर्महित कहेजे नीति निदेश। सुत प्रियकिय धृतराष्ट्रनृप अघरम माहँ प्रवेश ॥ मूढ़अनीति अधर्ममय कामी कुमति कुकर्म। तासुतको प्रियकरि कियो नृपधृतराष्ट्र अधर्म ॥ बिदुर बचन मानो न जब भोकुरु कष्टअपार। जबलौंमानो बढ़तगो तबलौंराज्य उदार ॥ लोभी दुर्योधननृपति मंत्रीदुर्मति भौन। सूत सुवनअरु शकुनि अरु खल दुःशासन तौन ॥ देखिपरत हमकोनहीं कुरुसंजय कल्यान। पराधीन धृतराष्ट्रनृप बिदुर अमान्य सुजान ॥ जबहम बनको गयेतब जान्यो तिन निजसर्ब। सो गुणिकै किहिभांतिहम धारैंशांति अखर्ब ॥ जानत रणमें जीतिहैं अर्जुनको सुतसूत। अबहीं लरिगो ग्रहणमें बचो भागिकै धूत ॥ भीष्मद्रोण अरुकर्ण सुयोधन अरुकुरुबंशी और। जानत यह अर्जुनसम दूजोहै न सुभट शिरमौर ॥ जानत कौरव नृपतिजे आये सहित समाज। बिद्यमान अर्जुनलहो यथासुयोधन राज ॥ जबलौंनहिं गांडीवको सुनत सुयोधन राव। भीमयुद्ध नहिंलखतहैं तबलो राज सु-

चाव ॥ इन्द्रन ममऐश्वर्यहर जियत वृकोदर बीर। जिष्णु नकुल सह-देव सह महाबली रणधीर ॥ जौन बुद्धियह धरैंगे सुतन सहित कुरु भूप। तो बाणानल दग्धहवै धरिहैंनाश स्वरूप ॥ पूर्व हमारो क्लेशतुम जानत संजय सर्व। कीन्होंलाक्षा सदन में तिनजो कर्म अखर्व ॥ भूलि तौनकृत सबगहैं अबहूंशांति अनूप। इन्द्रप्रस्थको राज्यजो देय सुयोधन भूप ॥ संजयउवाच ॥ धमनृपति पांडवसुतब सुनियत लखियत तौन। महा कीर्ति निःपाप तब जीवन पांडव जौन ॥ भाग न कौरव देहिंगे कियेयुद्ध बिन उद्ध। राज्य न तुमको श्रेयहै लीवोकरिकैयुद्ध ॥ जीवन अल्प मनुष्य को महादुःखको रूप। गोत्रनाश कृतपापहै तुमको उचित न भूप ॥ धर्म कर्म करिकै लहत रबिसो सुजन प्रताप। धर्महीन लहिकैमही दुखित होत गतिपाप ॥ ब्रह्मचर्य्य करियज्ञ तुमदियो द्विजनको दान। बहुतवर्ष सुखलहौगे लहिपरलोक स्थान। भोगभजो बहुकाल जेहि कियो न योगा-भ्यास। वित्तहीन बशकामहवै दुःख बसत तोंहपास ॥ छोड़ि ब्रह्मचर्य्या प्रथम जोजन करत अधर्म। तजिश्रद्धा परलोकसो तपतमूढ़ बशकर्म ॥ मन न लगायो ब्रह्ममें ह्वैकै बिमल सुजान। ताहि ब्रह्मचर्यहत जेहैंप्रज्ञ महान ॥ होतकर्मको नाशनहिं लहत पुण्यफल जन्य। करत पाप सो पापफल करता लेत न अन्य ॥ भोजन दीन्हों द्विजनको तुम सदक्षिणा दान। तथा तुम्हारो जगतमें सुनियत सुयश महान ॥ प्रथम गये तजि राज्यकिमि तजिबल आत्माधीन। नित्य स्ववश हेसचिवसब जेअतिबल मतिपीन ॥ बासुदेव युयुधान अरु मत्स्य सपुत्र नरेश। विदित भूपतव पासते आये अतिबलबश ॥ महा सहाय बलस्थलहि कृष्णार्जुनके संग। अवलोका गुणिनहिकियो कुरुपतिको मदभंग ॥ बल बढ़ायकै शत्रु को अपनी जोरि सहाय। अब न लरहु बीतेसमय बनबसि काल बिताय ॥ सुमति लरत नहिं सर्वथा शत्रुक्षीण लहिपीन। होति जयाजय युद्धमें सुनियत दैवाधीन ॥ धरति अधर्म न बुद्धितव नहिंबश क्रोध अपर्म। पार्थ करत केहिहेतयह स्वमति बिरोधी कर्म ॥ भीष्मादिक गुरुजननको बध अति पातक रूप। जानिपरतहै होयगो तुमसो हे कुरुभूप ॥ सोमदत्त कृप भीष्मगुरु शल्य सुयोधन बीर। इन्हैं मारिकै लहौग कल्पसों मोद गँभीर ॥ जानिपरै सोकहहु अब यामें भूपतिधर्म। कुरुसंजय दोऊरहैं

कुशलपाय सुखपर्म॥ सागरान्त क्षिति लहेहुहै जरामृत्यु अनिरुद्ध। सुख दुख प्रिय अप्रिय समुझि करहु न भूपति युद्ध ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ संजय कहौ सुसत्यतुम श्रेष्ठ धर्मकृत कर्म। धर्माधर्म बिचारकरि निन्दाहमैं सो पर्म ॥ जहां अधर्म धर्मसो दर्शत धर्माधर्म स्वरूप। बुधजन तहां बिचारिकै धारतधर्म अनूप॥ धर्माधर्म चिन्हको धारतनर बिपत्तिमें जौन। आद्य चिन्हहै जौनसो नित्यधर्म हवै तौन॥ जीवनार्थ आपदपरे करत पुरुषजो कर्म। सो बिपत्यकृत जानिये नित्यवर्णको धर्म॥ त्रिभुवन के सब राज्यको सहितबित्त सुखदाय। संजय लियो न चहतहम करि अधर्म अन्याय॥ धर्मेश्वर श्रुतिनीतिरत बिप्रोपासित जौन। भोजबंश शिक्षा करत कृष्ण महाबलभौन॥ सामयुद्ध दोऊरुचत हमको सुनो सुकर्म। कृष्ण महायश कहोसो जेादुहुमें हितपर्म॥ भोजान्धक बार्ष्णेयहै सैनिक भूपति जौन। बासुदेवकी बुद्धिको भजत महामति तौन॥ तिनपर बर्षत कामसब महामोद रसजन्य। प्रतिपालक सबजगत को बासुदेव परजन्य॥ निश्चयज्ञ सबकर्मके केशव अतिमतिऐन। मम प्रिय हम अतिक्रमणनहिं करिहैं तिनके बैन॥ बासुदेवउवाच॥ हमचाहत सबभांतिसों हे संजय मतिरास। पांडु सुतनको परमप्रिय भूतिसहित अबिनास॥ तैसे नृप धृतराष्ट्र को सुतन सहित प्रियजौन। हमचाहतहैं सर्बथा कियोसूत सुततौन॥ पाण्डु सुतनसँग सामसो दुस्तर जानोजाय। राज्यलुब्ध धृतराष्ट्र नृप क्यों न कलह सरसाय॥ संजय रहित अधर्मते पांडवमत सहधर्म। उत्साही पांडवन बलिको पालैंगे निजकर्म॥ कहत कोऊ परलोकको सिद्धि कर्मते होति। हैमत काहूको नियत बिद्यासिद्धि तनोति॥ धर्मभोज्य भोजनबिना लहत तृप्तनहिं पर्म। बिद्यामान महानजे देहधरे को धर्म॥ बिद्याजनको मिलतिहै सत्य श्रमहू माहिं। कर्ममिलै नहिं चहैक्यों यातेराज्यहि नाहिं॥ सिद्धिमिलीतो फेरिहै कहाकर्मसो काम। जोसंजय ऐसेकहौ प्रज्ञातनि अभिराम॥ तौसुनुजो करतव्यहै होयनहीं सो पूर्ण। संन्यासाश्रम कैसेकरैं तौगृहको तजितूर्ण॥ अतिथनको भोजन मिलत गृहआश्रमही बीच। यह गुणिअरु वैगुणि चहत पारथराज्यनि भीच॥ जेहि विद्यासो मिलतफलतासहि सुफल अहीन। कर्मदृष्टि फल पियतजल मिटततृषाजो पीन॥ बिहितज्ञान बिधिकर्मसह कहत सकल

मतिमान। मानतसाधुजे कर्मबिन ज्ञान महतअज्ञान॥ लखो कर्मबशदेवता बहत कर्मरतपौन। सूर्य्यचन्द्रमा कर्मबश करत दिवसनिशि गौन॥ दहत हुताशन कर्मबश पायसमिधिहुतपर्म। धरतिभार चरअचरको भईभूमि बश कर्म॥ बहैंनदी सबकर्मबश हरैभूतभवप्यास। भरतकर्म बशशब्दको दिशन सहित आकास॥ ब्रह्मचर्य्य वशकर्मके श्रेष्ठधरत मघवान। तजिसुख मानस प्रियभये सूरश्रेष्ठ सुखदान॥ ब्रह्मचर्यधरि बृहस्पति तजिइन्द्रिन को शर्म। याहीते सुरगुरुभये ह्वैबश कर्म सुपर्म॥ धर्मराज धनपालसब यक्षाप्सर गन्धर्ब। ब्रह्मचर्य्य करिकर्मबश पायोलोक अखर्ब॥ जानतहौ सबधर्मतुम चारिबर्ण को पूत। काहेते तुमकरतहौ कौरवार्थहठसूत॥राजसूय हयमेधकरि पढ़ेवेदविदधर्म। क्षत्रिन पूजोधनुषबल देहयगजरथपर्म॥ कौरवबध बिन राज्यकी प्राप्तिउपाय न आन। भीमार्जुन के हाथ सों संजयसुनो सुजान॥ क्षात्रधर्म पालनकरत पांडवशक्ति प्रमान। क्षत्रिहि मरण स्वधर्ममें है प्रसस्तमतिमान॥ जोतुम जानत युद्धमें भूपधर्म अभिराम। अथवाधर्म अयुद्धमें तौ यहसुनु मतिधाम॥ देखहु चारोंबर्णको धर्म बिभाग बिधान। कर्म पाँडवनको चितै कहेहु सुमति अनुमान॥ पढ़ै पढ़ावै यज्ञसब करै करावै जौन। देयलेय शुचिदानको बिप्रधर्म मतिभौन॥ पालै प्रजा बिधानसों देयपात्रको दान। द्विजन संग पढ़ि वेदबिधि करै यज्ञ सुखदान॥ धर्मात्मासों धर्मकृत लहिकै पुण्यमहान। क्षात्रधर्म रत जात नृप ब्रह्मलोक मतिमान॥ गोरक्षण करिकैकृपा संचितबिद अभिराम। द्विजनृप सेवनकरिगृही बसै बैश्य निजधाम॥ वेदपढ़ै नहिं मख करै भजै बिप्रपदपर्म। सेवा क्षत्रीकी करै नित्यशूद्रको धर्म॥ पालन सबको नृपकरै बर्णधर्ममें राखि। भूपतिसबमें वृत्तिसम धरै व्यतिक्रमनाखि॥ चहत युधिष्ठिरपालिबे क्षात्रधर्मनिजजौन। लियोचहत परभूतिजो बिधि बिरोधबश जौन॥ तासों संगरहोतहै संजय सुनो अधर्म। दुष्टनाश को प्रगटकिय अस्त्रअमोघ सुधर्म॥ सुनो दुष्ट बधकरि लहत पुण्य सुधर्मा भूप। दुष्टभाव कुरुबंशमें संजयबढ़ो कुरूप॥ भूलेधर्म अधर्मको जानत कौरवसर्ब। निश्चयताते होयगो तिनकोनाश अखर्ब॥ अनयस सुतधृतराष्ट्रकरि हरि पांडवनकोबित्त। धर्मपुरातन नृपनको तामें धरत न चित्त॥ छलकरिलीन्हों राज्यजो रहोजो न्याससमान। लयो चहत बनबासके

ऊर्द्धतौन बलवान ॥ दियोचहत धृतराष्ट्रनहिं बस्यो लोभकेभौन। उचित भागसो पांडवनको पहुंचतहैं तौन ॥ इहां पांडवहि श्लाघ्यहैं मरणयुद्ध करिजौन। और राज्यते श्रेष्ठहैं राज्यबंशके तौन ॥ आयेजौन सहायको भूप मृत्युबश सर्ब। गुणहु सभाबे पापमय कियो कर्मको खर्ब ॥ पांडव महिषी द्रौपदी ताहिसभाके भौन। ल्याय निरादर कौरवन भीष्मादिक किय जौन ॥ नहिं रोको दुःशासनहि काहू बालक वृद्ध। सबहीते देखत रहे भरे अधर्म समृद्ध ॥ श्वशुर सभामें लेगयो गहि दुःशासन दुष्ट। कृष्णाके रक्षकभये एक बिदुर मतिपुष्ट ॥ रहेभूपजे सभामें ते सब दीन स्वभाय। नीतिबचन बोले नहीं उचित जौन सुखदाय ॥ संजय करत कुबुद्धिते सभामाहँ उपदेश। धर्मशील पांडव सकल सत्यसुमतिके देश॥ दुष्करकारज सभामहँ यहकीन्हों कृष्णैशुद्ध। तारेपांडव तरनिह्वै दुख समुद्रते उद्ध ॥ कहो सूतसुत सभामें अति अनुचित ये बैन। कृष्णा सों जहँ श्वशुरहे भीष्मादिक बलऐन ॥ कृष्णा तुम्हैं न और गति ह्वैदासी अभिराम। जाहु सुयोधन सदनमें करहु यथोचितकाम ॥ भयेपराजित सुपतितव बरहु और भर्त्तार। जिष्णुहृदयमें बचनते हैं समशल्य उदार ॥ कृष्णाजिन पहिरतकहे बचनदुशासन दुष्ट। भये पंडुसुत खंडतिल नर्क बासको पुष्ट ॥ कपटद्यूत करिकै शकुनि कहोसुनो नृपधर्म। हारेभ्रातन को करहु पण कृष्णाको पर्म ॥ द्यूतकालमें इनहिजे कहे अनेक कुबैन। तुमसंजय जानत सकल रहेतहां मतिऐन ॥ हम संजय जाबे चहत वृद्ध नृपतिके पास। भयोनष्ट यह कार्यजो समाधानको तास ॥ पुण्य यश-स्कर चरितकहि मेटन कुरुकुल नाश। सुनत नीतिमय बचन मम भरे अर्थ सुखरास ॥ जो गुणिकै धृतराष्ट्रनृप मानेंगे तौ सर्ब। मिटिहै हेतु विरोधको मिलिहै मोदअखर्ब ॥ न तरु भीम अरु जिष्णुको पायसमरमें क्रुद्ध। पराभूत रणभूमितजि ह्वैहै पापारुद्ध ॥ जीतिद्यूतमें निन्द्यजे कहे सुयोधनबैन। समयपाय समुझायहैं भीमसेन बलऐन ॥ लतारूप धृत-राष्ट्रनृप पांडव वृद्धसमान। लता न बाढ़ति वृक्षबिन हेसंजय मतिमान ॥ बनको राखत व्याघ्रहै रक्षकव्याघ्र अरण्य। बन बिनु व्याघ्र न व्याघ्र बिन यहभाषत बुधगण्य ॥ दुर्योधनके कर्मते पांडव चाहत युद्ध। नृपधृत-राष्ट्रहि कृत्यजो करैसो बेगिअरुद्ध ॥ युद्धसामको हैं खड़े पांडव अति-

बलवान। चहैं नृपतिधृतराष्ट्र सो करैं समुझि मतिमान ॥ संजयउवाच ॥ जयकरी ॥ बिदाहोत हम तुमसोंभूप। बंदरावरे चरण अनूप ॥ बासुदेव अर्जुन अरु भीम। माद्रीसुत सात्वकि बलसीम ॥ सबसों बिदाहोय हम गौन। कियोचहत कुरुपतिके भौन ॥ शिव सुखकिये रहेगोसाम। कौरव शंशमाहँ अभिराम ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ आज्ञालहि मेरीसुखदान। संजयजाहु होय कल्यान ॥ नमस्तुम्हें सुनु बुद्धिउदार। स्मरण किहेहु प्रिय जाय हमार ॥ शुद्धात्मा तुमको हमसर्ब। जानतहैं करिप्रीति अखर्ब ॥ आप्त दूत तुमहौ मतिमान। हौ कल्याणरूप मतिमाम ॥ बिप्र हस्तिनापुरमें जौन। तपारूढ़श्रुतिविद मतिभौन ॥ तिनसोंमेरो कुशल प्रणाम। कहियो संजय मतिकेधाम ॥ आर्य पुरोहित ऋत्विजजौन। कहेहु प्रणाम तिन्हैं मतिभौन ॥ द्रोणाचार्य ससुतके पास। कहेहु प्रणाम सबिनय प्रकाश ॥ कृपाचार्यके पदगहि पर्म। कहेहु हमार प्रणामसशर्म ॥ कुरुसत्तम भीषम के पाय। बन्दिप्रणाम कहेहु सुखदाय ॥ नृपधृतराष्ट्र वृद्ध कुरुनाथ। बन्देहुचरण तास धरिमाथ ॥ तासुतनय जेठोहै जौन। पापी मूढ़ मन्द मतिभौन ॥ कहियोकुशल हमारीताहि। संजयनीति नियम अवगाहि ॥ बन्धु तासुहै जो मतिमन्द। दुःशासन दुर्मतिको कन्द ॥ जासुकृत्य कुल-नाशउपाय। दीजो मेरीकुशल सुनाय ॥ सोमदत्त बाह्लीकसुजान। धर्म-शील शुचिमति बलवान ॥ बन्दनताको कीजोजाय। संजयमेरी कुशल सुनाय ॥ सोमदत्तसुनु सखाहमार। महा धनुर्द्धरबीर उदार ॥ संजय तासों सहितविधान। कहेहु हमारीकुशल सुजान ॥ बालक वृद्ध युवा कुरुजौन। तिनसों कहेहु यथोचिततौन ॥ आयेजे हैं भूपसहाय। चहूं-दिशनके शुद्धसुभाय ॥ संजय तिनसों कुशलहमारि। कहेहु यथाबिधि साधुबिचारि ॥ राजकाजकारी नरजौन। तिनसोंकहेहु कुशल मतिभौन ॥ बैश्यापुत्र जौन युयुधान। तासोंबूझेहु कुशलसुजान ॥ कहेहु शकुनिसों कुशलहमारि। हेसंजय बिधिवत निरधारि ॥ संजयकुशल कर्णकेपास। धरे सुयोधन आशा जास ॥ कहेहु यथाबिधि कुशलहमारि। होहिं दुष्ट मनमाहँ बिचारि ॥ वृद्धस्त्री जेजननि समान। तिनसों कुशलकहेहु मति-मान ॥ धृतराष्ट्रकी भार्याजौन। तिनसों कुशलकहेहु मतिभौन ॥ स्नुषा सुता जेहैं गुणमान। तिनसों कहेहु कुशल मतिमान ॥ राजसुता तहँ

संजय जौन। तिनसों कहेहु कुशल मतिभौन ॥ दासी दास जे सुमति उदार। तिनसोंकहियो कुशलहमार॥ अन्यकुब्ज ममवृत्ता ीन। तिनसों कहियो कुशलप्रबीन॥ फेरिकहेहु तुम संजयजाय। नृपति सुयोधनसों समुझाय॥ रहितशत्रुगण सों हमहाय। करैंराज्य भूको सुखभोय॥ काम यह सुतवहुदयशकारि। कम्पितकरत विचारगँभीर॥ युक्ति न और बिनाशन तास। प्रियआपनो चिन्ति मतिरास॥ शक्रपुरीको दीजै राज। करहु युद्ध कै सहितसमाज॥ साधु असाधु बालअरु वृद्ध। बली अबल दारिद्री ऋद्ध॥ बशईश्वरके जानहुसर्ब। ईश्वरकर्त्ता खर्बाखर्ब॥ संजय वृद्धभूपपहँ जाय। कहेहुआरोग्य हमैंसुखदाय॥ तवप्रसादते पांडवभूप लहिहैं अपनो राज्य अनूप॥ प्रथमराज्यमें स्थापोताहि। करु न निरादर मतिअवगाहि॥ भीष्म पितामहसों ममनाम। कहेहुबंदि फिरि बचनललाम॥ जैसेजीवैं पोत्रतुम्हार। बरैंपरस्पर प्रीतिउदार॥ भग्नहोत सांतन को बंश। तुम उद्धार कहेहु प्रसंश॥ तथाबिदुर सोंकहेहु स्वतंत्र। कुरुकुलरहै सोदीजै मंत्र॥ युद्ध न चाहतचाहतसाम। मंत्रयुधिष्ठिर कोअभिराम॥ फेरिसुयोधनसों यह बैन। अनुनय सहित कहेहु मतिऐन॥ निरापराध सभामें ल्याय। कृष्णहि जोतुम कियअन्याय॥ सहो सकल हमसों दुखरास। अब न करहु कुरुकुलका नाश॥ कियोपराध पूर्वापर जौन। जानत हैंकुरु कुल सतान॥ दैमृग चर्महमें बनबास। दयोजो बांधिद्यूत छलपास॥ सोहम सबदुख सहोतुरन्त। अब न करहु कुरुकुल कोअन्त॥ अति क्रम करिकुन्ती कोजौन। गहोकेश कृष्णाको तौन। दुःशासन तवमतते बाध। कियोसो हमभूलत अपराध॥ उचित भाग भूहम को देहु। लोभ ग्रसत मतिते तजिनेहु॥ शांतिमान ह्वैकै कुरुभूप। करैंपरस्पर प्रीति अनूप॥ देहुराज्यको देशसुएक। हमजो कहैंसो सहित बिवेक॥ अबिस्थल सुवृकस्थल जौन। मांकदीहै शुभस्थल तौन॥ और बारुणावत अभिराम। और एकजो चहहु ललाम॥ एक एक भ्रातनप्रति एक। देहु ग्राम तुम सहित बिवेक॥ ज्ञाति न सहित तुम्हैं मतिमान। शांति होयगी सहित बिधान॥ भ्राता भ्राता कोसुखदान। पितापुत्रको पालकप्रान॥ होयसुखी सबसभा बिशाल। कुरुबंशी अरुजे पांचाल॥ सुमत सहोहिं सामतेसर्ब। कुरुपांचाल न मरैं अखर्ब॥ चाहतहैं हम साम अवश्य। नतरु युद्ध तजिकै

आलस्य ॥ वैशंपायनउवाच ॥ धर्मनृपति सों आज्ञा पाय। बिदा भये संजय सुखदाय ॥ कहिधृतराष्ट्र भूपसदेश। संजयचले आपनेदेश ॥ शीघ्रहांकि रथ हास्तिन नगर। संजय गये भूपके बगर ॥ द्वारपाल सों बोलेबैन। कहुद्वारस्थ हमेंमतिऐन ॥ गोद्वारस्थ भूप केपास। सबिनय कहन लगो मतिरास ॥ संजय खरेद्वार परभूप। तवपद देखनचहत अनूप ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ आवन देहुहमारे पास। मतिरोकहु संजय मतिरास ॥ वैशंपायनउवाच ॥ संजय आज्ञापाय अनूप। गयेजहां कौरव कुलभूप ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणि संजयदूतगमनवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

जयकरी ॥ सिंहासन मणिमय अतिरूप। बैठो थबिर जहां कुरुभूप ॥ जायतहां संजय सुप्रणाम। कियोबोलि जयशब्द ललाम ॥ संजयउवाच ॥ होसंजयहौं कुरुपतिभूप। करत प्रणाम तुम्हें अनुरूप ॥ हेनरदेव पांडवन पास। गये रहे हमसुमति निवास ॥ आय चरणतव लखे ललाम। कहो पांडवन तुम्हें प्रणाम ॥ पुत्रपौत्रन सहपरि वार। बूझोहै तवकुशल उदार ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ बूझत संजय सुमति निकेत। पांडव नृपबरसचिव समेत ॥ कहहु कुशल हैंभ्रातासबै। भूभूपण बलभरे अखर्ब ॥ संजयउवाच ॥ तुमदेखो तबयथा अनूप। हैंहर्षितते तथास्वरूप ॥ जीति द्यूत मेंलीन्हों जौन। धनभूचाहत हैं ते तौन ॥ धर्मशीलते रहित बिकार। चहत आपनो भागउदार ॥ बित्यसाध्य जानततेधर्म। जातेधन चाहतहैं पर्म ॥ करत पुरुषपर प्रेरित काम। ज्योंबश सूत्रदारु कीबाम ॥ याते पांडवको मतपीन। जानतहैं सोदैवाधीन ॥ पापदोषमय कर्मतुम्हार। यहदेखतहैं घोरअपार ॥ जबलोंशत्रु न करत बिचार। लीबेकोधन भूमिउदार ॥ तबलों लहहु प्रशंसाभूप। जानोकरत भविष्य कुरूप ॥ अजातशत्रु ह्वैपायो तीर्ण। यथासर्प तजिकंचुक जीर्ण ॥ लशत स्वभाबिक वृत्तिपसारि। पाप पुरातन तुममेंधारि ॥ कर्मआपनो चिन्तहुभूप। आर्यवृत्ति तजिधर्म अनूप ॥ निन्दा प्राप्तभये भूपाल। हनोपाप परलोकबिशाल ॥ बिना तिन्हैं एकाकीभूप। लहोजुगुप्सा अपरमरूप ॥ अर्थकामपावनके हेत। भयेपुत्रबश

मोचितचेत ॥ हीनबुद्धि दुष्कल उत्पन्न। जोनृसंश तामें सम्पन्न ॥ बैरी जासुधनुर्द्धर बीर। सोबिपत्तिको लहत गँभीर ॥ सुकुल यशस्वीवर बलवान। स्वबसात्मा बहुश्रुत मतिमान ॥ धर्मसत्य धारेहैं जौन। लहतभाग्यबश बांछिततौन ॥ मंत्रयुक्त भूपति मतिमान। क्रूरकार्य्य करिकै दुखदान ॥ तजिधर्मार्थ बिपतिकोलेत। सुनुये नृपति अमूढ़सचेत ॥ अकस्मात् कौरव कुलनष्ट। होतभूमिपति सुनु अस्पष्ट ॥ अर्जुन बर सुरकर्मा जौन। जीतन योग्यसबहि बलभौन ॥ जानत सो सब दैवाधीन। मानत कबहुं नहीं स्वाधीन ॥ सत्यराज्य लेहैंतेभूप। सुनहु असंशय बचन अनूप ॥ सुख दुख प्रिय अप्रियमें भूप। निन्दा अस्तुति लहत अनूप ॥ किये पराधनिंद्य जनहोय। साधुसराहत नहिंसबकोय ॥ कियेपांडवनको अपराध। निन्दत तुम्हैंजे सुमतिअगाध ॥ हौंन प्रजनको चाहतअन्त। देहुभागतिनको क्षिति कन्त ॥ नतरुजिष्णु पावक बलवान। दहिहैं कुरुकुल वृक्षसमान ॥ दुष्टन को करिसंग्रहभूप। भये हितनको शत्रुस्वरूप ॥ याते भूमि अनन्ता जौन। रक्षणसक्य न तुमते तौन ॥ हमरथ वेगश्रमितहैं भूप। शयनाज्ञा अब करहु अनूप ॥ भोर सभामें सह कुरुबंश। सुनेहु युधिष्ठिर बचन प्रसंश ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ भोरसभामें पांडवबैन। सुनिहैं कुरुकुलसहमतिऐन ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिसंजयागमनवर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

वैशंपायनउवाच ॥ रोला ॥ द्वार पाल बोलाय नृप धृतराष्ट्र बोले बैन। जायबिदुरहि बेगिल्यावहु महामतिके ऐन ॥ भूपआज्ञा पायछत्तापै गयो प्रतिहार। बिदुर तुमको नृपबोलायो चलहुबेगि उदार ॥ भूपआज्ञासुनत आयेबिदुर कुरुपतिद्वार। बिदुरआज्ञा सोंगयो नृप पाससो प्रतिहार ॥ द्वारपालउवाच ॥ बिदुरआज्ञा सोतिहारी पौरिकेढिग भूप। खरेचाहत रावरे कोलखन चहतअनूप ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ देहुआवन बिदुरकोप्रियमोहिंअति मतिधाम। द्वारपालउवाच ॥ जाहु छत्ता भूप केपद लखहु अति अभिराम ॥ वैशंपायनउवाच ॥ जायबोले बिदुरनृपको देखि चिन्तितरूप। बिदुरहम तव पायआये परम आज्ञा भूप ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ बिदुर संजय आय मोसों कहे

निन्दितबैन। बचनकहिहैं सभामें नृप धर्मसो मतिऐन॥ जानि परत न धर्मनृप के बचन कहिहैं जौन। दहतमेरे गात्रको नहिं देत निद्रा तौन॥ जानिपरत न श्रेयअपनो हीननिन्दा मोंहिं। कहहुसो धर्मार्थमेंहौ कुशल बूझततोहिं॥ बिदुरउवाच॥ हीन साधन बलीसोंजन करत जौन बिरोध। चौर कामी बित्तहरकी लहत निद्रा रोध॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ धर्म श्रेयस बचन तुमसों सुनो चाहत पर्म। तात तुम कुरुबंशमें राजर्षिहौ मतिमर्म बिदुरउवाच॥पुण्यवानहि भजत हैं नर तजत निन्दित जौन। नहीं श्रद्धा नास्तिकन में सुनहु पंडिततौन॥ जासुनहिं प्रारम्भ प्रगटत मंत्र मंत्रित तौन। कियो कारजही सुप्रगटै सुनो नृप बलभौन॥ होत जाकी कृत्य को नहिंबिघ्न कारणपाय। कुद्धकै असमृद्ध पण्डित मनुज सो सुखदाय॥ जासुबुद्धि स्वभाव की धर्मार्थमें रतहोय। कामको तजिकहत बुधजन भूप पण्डितसोय॥ कियो चाहत करत अपनी शक्तिके परमान। करत नहिं अपमान काहूको सुबुद्धिनिधान॥ ज्ञानवान बिचारि पूंछेकहै परमित बैन। करैं परउपकार की सबकृत्य सतमति ऐन॥ प्राप्तकी नहिं करतकांक्षा नष्टकोनहिं शोच। बिपतिमें नहिं मोहपावत सुमत पण्डित रोच॥ स्वबल साधि बिचारिकै नर कर्मकारज जौन। नित्य करत निहारि पण्डित सह प्रयोजन तौन॥ कर्म आर्यन के करतसब भूतिकेकृत चाहि। करत हितकी नहिं असूया कहत पंडित ताहि॥ खेद नहिं अपमान ते नहिं मानते कछुहर्ष। क्षोभबिनु सुरसरित कैसे पूरमति उत्कर्ष॥ सर्व भूतनको बिनाशी सुन्यो जानत जौन। अरु जौनजानै सर्ब कमन की सुरचना तौन॥ औ सर्ब सामग्रीहि जानै जानु पंडित ताहि। शास्त्रकी अरु लोककी सबरीतिको अवगाहि॥ हैअकुंठित बाकजानैलोक को व्यवहार। समयजानै तर्कजानै शास्त्रविद सुउदार॥ शास्त्र बुद्ध्यनुसार जाकी बुद्धिश्रुति अनुसार॥ बचन बोलत अर्थयुक्त सुबुद्धि बुध आचार॥ उन्नध्व अश्रुत दीनअति मनअर्थ चहन अकर्म सुमति ताको कहतहैं सबमूढ़ कुमति अपर्म॥ छोड़ि स्वासामर्थ्य औरनकी भजैसामर्थ। कहैमिथ्या मित्रसों सोमूढ़हेतु अनर्थ॥ करैकाम अप्राप्य को तजि कामनाके योग। बलीसोंजो बैरबांधै मूढ़ते मतिरोग॥ मित्रकरत अमित्र को रचि मित्रसों अतिबैर। दुष्ट कर्महिं करतजड़ मतिमूढ़ सों मयमैर॥

क्षिप्रकरिबे कार्य माहीं करतजो चिरकाल। सुनो श्रीबल भौन भूपति तौन मूढ़बिशाल॥ जातबिन आहूतबूझे बिनाबोलत बैन। अबिश्वसित को बिश्वास जोकोउ करैदुर्मति ऐन॥ अशिष्यको जेकरहिं शिक्षाशून्य में नितबाश। संगकरत कदर्यको ते मूढ़ दुर्मतिराश॥ पायकै ऐश्वर्य बिद्या गर्बधरत न जौन। रहतसाम स्वभावसो मतिमान पण्डित तौन॥ आपु भोजन करत पहिरत बसनअति सुखदान। भृत्यको नहिंदेततातै हैं नृसंश न आन॥ हनत शरबिष एकको कीन्हें प्रयोग स्वतंत्र। देश प्रजन समेत मारत भूपको दुर्मंत्र॥ एक खाय न स्वादबस्तुन मंत्रकीजै एक। चलै पथनहिं करैनिद्रा एकसहित बिबेक॥ क्षमामें इकदोष कहत अशक्त सकल अयान। सो न दोषहि मानिये हैं क्षमी अतिबलवान॥ भूमि ग्रासति दोयको बिलसयन को ज्यों सर्प। अप्रवाशी बिप्रको नृप रहित जोरण दर्प॥ दोय कण्टक तीक्ष्ण शोषक देहके अतिमान। कामना निर्धनहि अबलहि दहतक्रोध कृशान॥ दोयकरि बिपरीति कर्म न होत शोभित तौन। बिना उद्यम गृहीभिक्षुक करत उद्यमजौन॥ दोय ये नरव्याघ्र पावत स्वर्गपर शुभथान। क्षमावान जेप्रभुदरिद्री दानशील सुजान॥ बांधि गलमें शिलाबोरी शलिल में जन दोय। धनिक जौन अदत्त निर्द्धन रहित तपते होय॥ द्रव्य दाराहरतजत परकीय सुहृदहि जौन। दोषयाते होतआतुर नाशकारक तौन॥ तीनि करण नाशके हैं मनुजके अतिमान। कामक्रोध सुलोभयाते तजत इनहिं सुजान॥ भक्त को भजमान को जोकहत हमजे बैन। शरणगत येतीनि तजत न बीरजे मतिऐन॥ राजअरु बरदान सुतको जन्मसों सुखदान। तीनहूंसम शत्रु सों कुलराखिबो मतिमान॥ अल्पमति अरु दीर्घसूत्री अलस कपटी जौन। मंत्रइनसों करतहैंनहिं भूपजे मतिभौन॥ वृद्धज्ञाति अशक्तसकुल सुसखा धनते हीन। बिना सुतकी बहिनि चारिन त्याज्यहै मतिपीन॥ पांचपूज्य सुमनुज कोहैंअग्नि मातातात। गुरूआत्मा सदृशहैं ये सुनहु मति अवदात॥ पांचपूजे होतयश सुरपितर मानुप जेष्ठ। भिक्षु अतिथि समान सिगरे कहत हैंमतिश्रेष्ठ॥ तजत हैं येदोष चाहत भूतिको नर जौन। क्रोधभय आलस्य निद्रा दीर्घसूत्रहि तौन॥ छोड़ि इनकोदीजिये जोनहीं रक्षक भूप। मूर्ख ब्राह्मण अप्रिय बादिनि भार्य्याहत रूप॥

दानसत्य सुअनालस्य सक्षमा धृतिहै जौन। तजत नहिं अनसूयता सह सुगुण षटमति ऐन॥ अर्थ आगम निरुजता औ मधुरभाषिणि बाम। पुत्रभक्त सुकरी बिद्याअर्थ सुखद ललाम॥ जियत षटमें जीव पटलहि चोरमत्त महान। बैद्यरोगी पायकामी बामद्विज यजमान॥ बादजो लघु करै तासों जियतहै भूपाल। सुखी जनमें जियत पण्डित सुनोबिज्ञ बिशाल॥ पट बिनष्टयत बिनादेख कृषीभार्य्या गाय। भूपसेवा पढ़ीबिद्या शूद्रसंग नशाय॥ बाम मृगया पान मदिरा बचन कलुष कठोर। दण्ड दारुण परुषताये नाथ दूषण घोर॥ बित्त हरिबो सङ्कुल अरु बधबिप्र को रचिबैर। करत तिनको भरतभूमें सहत निन्दामैर॥ बुद्धि कौशलता पराक्रम बचन रचन सुधर्म। यथाशक्ति सुदान जनकोकरत रंजितपर्म॥ काम क्रोधहि छोड़िदेत जो पात्रमें नृपदान। क्षिप्रकरि श्रुतवान ताको करत सुमति प्रमान॥ मनुजमें बिश्वास जौन कराय जानत भूप। दोष सम जोदण्ड करत सोलहत श्रीअतिरूप॥ सावधान जोरहत रिपुसों नहीं निदरत दीन। बलीसों नहिंकरत बिग्रह कालबिदसो पीन॥पाय आपद ब्यथितहोत न लखत नित उद्योग। धूरधरसों जीतिबैरिन करत भूको भोग॥ नहीं दुर्बलकी असूया करत आदर देत। क्षमाकर अति बाद सों ते सुयश सबसों लेत॥ नहीं उद्धत बेषधरत न कहत पौरुष जौन। कहत कटुक न लहतहै अतिप्रीति सबसों तौन॥ बैरशान्तहि करत दीनन होतदर्परूढ़। नहीं दुर्गत जानि आपुहि करत कार्य्य अमूढ़॥ नहींहर्ष स्वश्रेयते परदुःखते नहिंहर्ष। परत पायन आर्यतिन को कहत मतिउत्कर्ष॥ समयदेश बिचारिजो ऐश्वर्य चहत सधर्म। जात जहँतहँ लहतसो अधिपत्य को जनपर्म॥ दम्भ मत्सर पापकृत्य न बैर सबसों जौन। बाद दुर्जन मत्तसों नहिं करतहैं मतिभौन॥ दानहोम सुदैवउत्सव लोकको व्यवहार। करतनित्य सुताहि चाहत देवबृन्द उदार॥ देयआश्रित को जो भोजन करत नित्यसमर्थ। देतमांगे अहितहू को लहत सोधनअर्थ॥ सामकर सबभूत सों मृदुसत्य शुद्ध स्वभाव॥ ज्ञाति आकर माहमणिसे लसितसो सहचाव॥ शापदग्ध सुपांडुके सुत भये बनमें जौन। तुमहिं बर्द्धितकिये शीक्षित देशपालक तौन॥ राज्य दीजै उचित तिनको आपुलहि आनन्द। देवमानुष फेरिशक्य न तुम्हैं

दीबे दन्द ॥धृतराष्ट्रउवाच ॥ दहत चिन्ता अग्निसो हमको जो करिबेकार्य। पथ्य कहहु बिचारिकै सोबिदुर कुरुकुल आर्य ॥ पापकोअब डरतपहिले पापके करिकार्य। कहहुसो जोहैंमनीषित धर्मनृपको आर्य ॥ विदुरउवाच ॥ होय शुभकै अशुभ अप्रिय होय प्रियकै जौन। कहत पूछे सत्य डरत न पराभव सों तौन ॥ कहत तुमसों तौन हम हित कुरुन को है जौन। श्रेयकरि सहधर्म भूपति बचन सुनिये तौन ॥ कियो मिथ्या कर्मते जो कार्य्य सिद्धि कुरूप। नहीं फिरि तेहि पापमें मन दीजिये सुनु भूप ॥ नहीं जानत को सजनपद दुर्गक्षय अरुवृद्धि। नहीं सेना समुझि राखत भूप सोहत ऋद्धि ॥ राज्यको लहि भूप दुर्मति चलत जौनकुचाल। अनयसो श्री को हनतज्यों जरारूप विशाल ॥ भक्षमें ज्यों गुप्त बड़िसहि मत्सलीलत पाय। लोभपाती नहीं बन्धन लखत त्यों भ्रम छाय ॥ खातकाचे फलहि रसहि न लहत बीज नशाय। लहत रस फल पक्कभोजी बीज फिरि फलखाय ॥ लेत मालाकार सो नृप फूल फलको जौन। काष्ट हरलौं मूलछेदन करत नहिं मतिमौन ॥ कृपा जाकी व्यर्थ होति निरर्थ जाको क्रोध। ताहि नहिं भर्तार कीजै शंठसो रति रोध ॥ ऋजु बिलोकत प्रजहि इमि मनु करत चखसों पान। होतिहै तेहि भूप को सबप्रजा अतिसुखदान ॥ दियो चाहत देव जिनको पराभव हरि ऋद्धि। लेत तिनकी पुण्यगामी प्रथमही हरिबुद्धि ॥ रावरेके सुतनकी भइ बुद्धि नृप बिपरीति। पांडवनके बैरते नहिं तिनहिं सूझति नीति ॥ राज्यलक्षण सों लसत सम्पन्न भूपति धर्म। बहत आज्ञा रावरेकी भूमि पालक पर्म ॥ भाग्य याते राज्यको है योग्य तिनको भूप। रावरेके पुत्रहैं नहिं राज्ययोग्य अनूप ॥ यहिभांति के सब नीतिमय सुनि बिदुरके बर बैन। कहो तब धृतराष्ट्र ऐसे बचन अति मतिऐन ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ सुनत होति न तृप्ति तुम्हरे बचन बिदुर सुजान। कहहु याते बैन फेरि बिचित्र हे सुखदान ॥ विदुरउवाच ॥ सर्व भूतन माहिं जोहै वुटिल ताको त्याग। सर्वतीर्थ स्नानते सो अधिकहै बड़भाग ॥ साम शीक्षा सुतनमें तुमकरहु याते भूप। इहां कीरति होति जाते स्वर्गप्राप्ति अनूप ॥ रहति जबलौं कीर्त्ति क्षितिपर मनुजकी अभिराम। भूप तबलौं जीव पावत स्वर्ग में ध्रुवधाम ॥ अत्र तुमको मैं पुरातन कहतहौं इतिहास। तुम बिचारो ताहि

करिकै बुद्धिको सु प्रकास ॥ भो बिरोचन अरु सुधन्वा बिप्रसों संवाद। केशिनी कन्यार्थ सुनिये पुण्यपूरण नाद ॥ हो स्वयम्बर केशिनी को बिप्रकन्या तौन। ही सुधन्वाकी गयो तहँ दनुजपति बलभौन ॥ दनुज पति सो बरो चाहत रूपमय लखिताहि । कहनलागी केशिनी इमि क्रोधको अवगाहि ॥ केशिन्युवाच ॥ हे सुधन्वाबिप्र मम पर्य्यंकयोग्य सुजान। दैत्य तुम ममयोग्य हौ नहिं लहु नीचताको ज्ञान ॥ बिरोचनउवाच ॥ दैत्य पति हमहैं बिरोचन लोकपति बलवान। केशिनीका बिप्र हमसों देवता न समान ॥ केशिन्युवाच ॥ भोर ऐहै द्विज सुधन्वा महातपको धाम। तव समागम भये तुमको देखिहै अभिराम ॥ बिरोचनउवाच ॥ कहति हौ तुम यथा सुन्दरि करहिंगे हमतौन । देखिहौ हमको सुधन्वा सहित जब मतिभौन ॥ बिदुरउवाच ॥ निशा बीती सूर्य्यमण्डल उयो जब अभिराम। तहँ सुधन्वा बिप्रआयो महा तपको धाम ॥ जहँ बिरोचन दैत्य हो सह केशिनी कृषिधाम । केशिनी उठि दियो आसन अर्घ्यपाद्य ललाम ॥ बिरोचनउवाच ॥ सुधन्वासों तदनु बोलो यों बिरोचन बैन। आव मेरे साथ बैठो पीठपै मतिऐन ॥ सुधन्वोवाच ॥ सुनु बिरोचन बैठिहैं हमनहीं तेरेसाथ। तबहि सम हम होहिं बैठे संग दिति सुतनाथ ॥ बिरोचनउवाच ॥ काष्ठको कै दर्भ आसन होत बिप्रसमान । हम आसन योग्य तेरे नहीं बिप्र सुजान ॥ दोहा ॥ कह्यो बिरोचन बिप्र सुनु हैं हम सबसों श्रेष्ठ। जौ तू आपुहि श्रेष्ठगुणि बोलत गरब यथेष्ठ ॥ तौ गज हय मणि धेनु धन कंचन दाव लगाय। चलि कोई मति मानढिग भाषि लेहु निबराय ॥ चौपाई ॥ यहसुनि कह्यो सुधन्वा आरज। हमैं न हयगज मणिसों कारज॥ प्राणद्रव्य प्रण हमसों करिकै । निज पितुपास चलो प्रण धरिकै ॥ है प्रह्लाद धरम प्रतिपालक । तजी न धर्म जानि निज बालक ॥ जाको श्रेष्ठ कहै दनुजेशा । सोई श्रेष्ठ सुजान सुभेशा ॥ यह निबन्ध दोऊ करि तेहां। गे प्रह्लाद असुरपति जेहां ॥ तिन्हैं देखि प्रह्लाद सुजाना । पूजि सुधन्वहि सहित बिधाना ॥ दोउन क्रोधित लखि मतिमाना। कहत भयो करिकै अनुमाना ॥ हौ न समान शील तुम दोऊ। सङ्गमहेत कहा कहु सोऊ ॥ यह सुनि बीर बिरोचन बोलो । मम अरु इनकी गरिमा तोलो ॥ दोउनमें को श्रेष्ठ स्वभावन। सो गुणि कहौ सत्य मनभावन ॥

हैं हम दोऊ अमरष छाये। प्राणद्रव्य प्रणकरि इतआये ॥ यहि बिधि कह्यो सुधन्वा ज्ञानी। तब दनुजाधिप कही सुबानी॥ एकपुत्र यह आनँद भारण। प्राणद्रव्य पर द्विज यहिकारण॥ नहिं कछु भाषि सकत यह सुनिकै। उचित होय सो बोलो गुनिकै॥ सुधन्वोवाच॥ बन्धु पुत्रहित अनहित कोई। होहु न्यायहै कीजै सोई॥ जगमें निकट जायकै बूझे। सुकृती कहत सत्यही सूझे॥ प्रह्लादउवाच॥ दोहा॥ जोजन बूझे कहतहैं बचन अन्यथा जौन। देह त्यागकरि मूढ़सो लहत गूढ़गति कौन॥ सुधन्वोवाच॥ सुनो भूपसो लहत दुख लहिकै बहु अपमान। हित गुणिकै जो न्यायमें अनृतहि कहत सुजान॥ गोहय मानव हेम महि हित जो मिथ्याबैन। बोलत दशशत जन्मसो रौरव लसत अचैन॥ सुत सनेह तजिकै कहौं सत्यबचन धर्मज्ञ। सो सुनिकै बोलत भयो दनुजनाथ सर्बज्ञ॥ तोमर॥ सुनि दनुजनायक दक्ष। इमि कहत भो परतक्ष॥ मुनिअंगिरा तपधाम। हैं श्रेष्ठ मोसों आम॥ अरु जननि द्विजकी जौनि। तो जननि सों बर तौनि॥ यह बिप्र तुमसों ज्येष्ठ। सुत तजो बैर अश्रेष्ठ॥ तो प्राण जीतो बिप्र। द्विज कहैं सोकरु क्षिप्र॥ निज पुत्रसों प्रह्लाद। इमि कहे गहि अहलाद॥ तब द्विज सुधन्वा मोद। इमिकहे बचन बिनोद॥ तो महा सुधरम जोहि। तो सुतहि दीन्हों तोहि॥ दोहा॥ तासुत मूढ़ बिरोचनहि जोति देत हम तोहिं। चलि केशिनि ढिग मम चरण धोवै श्रेयद जोहि॥ बिदुरउवाच॥ छन्द॥ तबहि बिरोचन। डगरि सकोचन॥ करि ऋणि मोचन। लिय बिधि शोचन॥ दोहा॥ यहिबिधि सुतपितु बंधु हित धर्म्म न तजत प्रवीन। धर्म राखि पांडवन कहँ देहू भूमि मलीन॥ दैवन मारत दण्डगहि नहिं रक्षत मतिमान। मतिहि बिगारि सुधारिकै सुख दुख देत महान॥ कवित्त॥ राग द्वेष बैर औ कलह मद्यपान युवा पति तिय सुत पितु अन्तर औ ज्ञातिभेद। कुतसित पथयते आठ बरजित सदा अब सुनो जिन्हैं नहिं शाक्षी देनकहै वेद॥ सामुद्रिकी औ अरि मित्र बैद धूरत जो शतधा कुशील जौनदेत सबहि को खेद। चोर हो प्रथम फेरि बानिज करत ताहि शाक्षि जो बदै सो मतिराखै जीतिकी उमेद॥ अपरं॥ रूपहि बिनाशै जरा धीरजै अनाशा नाशै प्राणहि हरत मृत्यु क्रोध श्री हरत है। शीलहि कुसंग कोमलजहि असूया धर्म्म अभिमान

एक येते अवगुण धरत है ॥ मंगल सुभाव गहें राजसी बढ़ति सुनो मंगल की दृढ़ ताते वृद्धिता भरत हैं। दक्षताते धन वरधत गोपीनाथ तापै संयम गँभीर ताते धीरता धरत हैं ॥ अपरं ॥ आठ गुण पुरुषहि दीपित करत सुनो प्रज्ञाकुलता ऐमोष इन्द्रिन को करिबो। बहुश्रुतिता औ बाकपटुता कृतज्ञता औ दानशक्ति सबमें पराक्रम को धरिबो। निन्दित सो सभावृद्ध जामें नहीं गोपीनाथ निन्दित सो वृद्ध जो न कहै धर्म धरिबो। निन्दित धव बिनु सत्य कहै मतिमान सत्य निन्द जामें कुल आशानाश करिबो ॥ दोहा ॥ सत्य सुयश बिद्यासुधन कुलबल शील स्वरूप। बचन शुद्धता शूरता एदशस्वग अनूप ॥ पापकर्म कृतनरन कहँ हैं दुरलभ येसर्ब। पुण्य कर्मकृत नरनकहँ सुलभ सुसिद्धि अखर्ब ॥ नष्ट सुमति ह्वै पापकृत सदाकरत हैं पाप। शुद्धसुमति लहि पुण्यकृत करत पुण्यको थाप ॥ सुमतिमान धर्मार्थचरि सदालहत सुखएव। सदापूर्ण सुखमिलत है शुद्धपुण्य को भेव ॥ कवित्त ॥ दिनमेंकरै सो कर्मजाते निशि सुखसोवै निशिमेंकरै सो जातेदिनमें न अरसै। आठमास करैजाते चारि मास सुखबसै चारिमास करैजाते आठमास हरसै। निशिदिन सबमास चरैतैसे गोपीनाथ जातेजौलौं शोच नहीं सरसै ॥ दोहा ॥ युवतिवृद्ध ह्वै सुरबर समर जीति फिरिआय। होतप्रशंसन योगजप तपकृत जनम बिताय ॥ ऋषिसरिता तियचरित को अरुमहान कुलजौन। प्रभवतासु नहिंहेरिये हेरेहेरत कौन। द्विजपूजा रतदानरत ज्ञातिपोष रतभूप। भोगत बहुदिन मेदिनी पावत सुयश अनूप ॥ उरबी को सुबरण पुहुप लुनत नीतिगुणवान। सुरऔर कृतविद्य अरुज्ञाता नीतिबिधान ॥ करत बुद्धिबल कर्मजो श्रेष्ठकर्म है तौन। बिनाबुद्धि को बाहुबल करि जयपावत कौन ॥ कहिआये जितने सुगुण पाण्डव में तेसर्ब। श्रेष्ठपिता मानत तुम्हें तुमसुत गुणो अखर्ब ॥ सोरठा ॥ दुर्योधन मतिमन्द शकुनि दुशासन करणसह। अतिऐश्वर्य्य सुछन्द इनको मतलगि मतिचहौ ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणि विदुरधृतराष्ट्रसम्वादेवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

बिदुरउवाच ॥ जयकरी ॥ भूपसुनो पूरब इतिहास । अत्रिशिष्य मुनि आनँदरास ॥ हंसरूप बिहरत सरमान । तहांजाइ सबसाध्य सुजान ॥ करि सुप्रशंसा कहेसुभेश । सुमुनि कहोकछु वार्तावेश ॥ सुनिप्रशंस बंशज मुनिहंस । बोलेनीति धर्मको अंश ॥ जोहमसुने परम सिद्धान्त । सोअब तुमसों कहिअतु दान्त ॥ उचित न कहिबो बचन कठोर । परुष बचन शायक समघोर ॥ बेधत मरम मरण बिधिठानि । प्रगटित करत बिथाहि महानि ॥ बरजित करत धर्मकोहेत । हितनमहा अनहित करिदेत ॥ रुक्ष बचन बोलत नरजौन । रमा न निवसति ताकेभौ ॥ परुष बचनको कहे जोनाथ । कबहुं न रहिये ताकेसाथ ॥ जोऋजु बचन कहत मतिमान । परको अनति सुखकार महान ॥ श्रीयश सुधरम करज सिद्धि । सदा लहत सो बिजय समृद्धि ॥ जोअपकारिहु को उपकार । करत तौनसुर सरिस उदार ॥ प्रथम मौनहैं मौन बिधान । द्वितिय मौनहैं सत्यमहान ॥ त्रितिय मौनप्रिय बाणीजौनि । चउथमौन सुधरमयुत तौनि ॥ एकएकते सरस प्रभाव । जोशरधत तेहि बरधत चाव ॥ उत्तम पुरुष कहावत तौन। चारिउ मौन सुधारत जौन ॥ बिदुरउवाच ॥ दोहा ॥ सुनि सुबचन मुनिहंस के मोदिसाध्य समुदाय । करिसु प्रशंसा हवैबिदा गनिजलोक सचाय ॥ शकुनि दुशासन करणसह तोसुतभूप सगर्ब । जलपत पाण्डवकेबिषे परुष बारताखर्ब ॥ कवित्त ॥ अपकार कीन्हेहू करत उपकार मानै परउपकारते वै उत्तम महतहैं । अपकारीही को करै अपकार मध्यमते और सबहीको उपकारते गहतहैं । करैनहीं उपकार मानैनहीं उपकार अधम पुरुषते न कीरति लहतहैं । उपकार कीन्हेंहू करत अपकारते हैं अधमा धिराज दोषदेखतें रहतहैं ॥ दोहा ॥ पहिले तोसुत नृपकियो पाण्डव को अपकार । तऊघोष यात्राबिषे उनकीन्हों उपकार ॥ सोउपकार बिसारि फिरि कियो चहत अपकार । भूपति बरजो निजसुतहि यहबिनाश को चार ॥ उत्तमपद साधन करतते उत्तम कुलजात । अतिबिभूति ते लहत हैं अधगिरि अधम नसात ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ प्रीति लहतजाते सुमन अरुबहु श्रुति सरवज्ञ । तेहिउत्तम कुलजात को लक्षणकहो अदज्ञ ॥ बिदुरउवाच ॥ दोहा ॥ तपव्रत दममख सत्यरत शीलमान शुचिगात । सूर धीर दानी सुबुधि सो महान कुलनात ॥ उपकारी धरमी यशी सरमी

पालकगोत। सोमहान कुलजात नितिशुद्धसुभावतनोत॥ बिमुखभये इन गुणनते कीन्हें कुत्सितकर्म। महाकुलीना होतहै जिमि अकुलीन अधर्म॥ सोरठा॥ अबनृप सुनोबिवेक भेदभेद के गहणको। ज्ञातभेद को टेक भेद वेदके बचनको॥ कवित्त॥ भेदबुद्धि जाके सो न गहत धरम गैल भेद बुधि जाके सो न पावै सुखनेकहै। भेदबुद्धि जाके सो न गौरव लहत नेक योग क्षेम कुशल न ताकेभाग एकहै। भदबुदि जाकेसो शिखापन न मानतहै भेदबुद्धि जाकेमो न त्यागै निजटेकहै। भेदबुद्धिजाकेसो लहतखेद अन्तमेद मासतो अभेदपै रहतिबितरेकहै॥ दोहा॥गोधनत सम्पन्नता तरुणिचपलता छाव। ज्ञातिभेदते भयसदा यहसम्भावितभाव॥ गोब्राह्मणतिय ज्ञातिपहँ शूरबीर नरजौन। पाकें फल जिमिवृक्षते गिरत भूपतिमितौन॥ ज्ञातिबर्गते भिन्नपहँ परति आपदाभूरि। प्रबलबायु डारतयथा एकवृक्षकहँतूरि॥ तरु समूह मधिबातजिमिकरि न कसत उतपात।तथाज्ञाति जहँ एकमत तहँ आपद किरिजात॥ गोब्राह्मण तियज्ञाति शिशुअरुसुअन्नदातार। शरणा गत इनसात मधि सदा अवध्य बिचार॥ नहीं सुधन ताते अधिक गुण मनुष्यमें और। धनबिभूति जातेबढ़ै भूपगहौ सोडौर॥ रोला॥ सुवन जो क्षितिपाल तासोंक्रोध छल तजवाय। बालिकैपाण्डवन मंगल दुन्दुभी बजवाय॥ भूमि सब युगभापकरि गुरुपुत्र भूपनदेहु। एक मततेभूमि भोगहिं परमआनँद लेहु॥ मित्रता गहि बन्धुते अन्योन्य पाय सहाय। होहिं बर्द्धित भूमिपै युग शक्र सरिससचाय॥ रहौ युगमधि सींव समतुम यथा मेटौ दंड। नेइपथ नहिं तजनपावै बंधुदोऊ चंड॥ कहेपूरब मनु स्वयम्भुव मूर्ख सत्रहहोत। जोअशिष्यहि करत शीक्षातौन पहिलोशोत॥ जौनसेवत दारदिहि धन हेत दूजोतौन। तौनतीजो रक्षि शत्रुहि कुशल चाहतजौन॥ तौन चौथो कथत निजमुख करमकार जो पूर्ष। बैरठानत प्रबलतैसो निबलपंचम मूर्ष॥ मूर्खछठवों करत कुत्सित कर्म गुरुकुल जात। कहत सरधाहीनते सो मूर्ख सतवों ख्यात॥ गोत तियसों करत निन्दित कर्म अठवोंतौन। पुत्रतिय गमिमान चाहत तौनमूरुख जौन॥ बीजजो परक्षेत्रडारत मूर्ख दशमसखेद। सोएकादश मूर्खतियसों कहत जो निजभेद॥ देनकहि नहिं देत जो सो मूर्खद्वादश गन्य। भेद जानै बिना जलपत तौन तेरहोंअन्य॥ सोचतुर्दश मूर्खगुणत न कर्मको फल

पाय। पंचदशवों याचकनसों कहत कटुरिसि छाय॥ दान भोग न करत सोरहों मूर्खसो धनमान। बन्धुभागहि हरणचाहत सप्तदशम नदान॥ किरिणि नभ नभ धनुपचाहत गहनपन करिजौन। श्रेष्ठसबसों एकऔरौ मूर्ख जगमें तौन॥ कइकबिधिको मूर्खहैतो पुत्र भूपतिएक। ताहिसबिधि बुझाइकै अबकरहु लोपितटेक॥ उचित जो जिमिचरै तासों चरव तेहि अनुसार। धर्मचारी पांडवनसों धरमको अधिकार॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ दोहा॥ मानीगरवी सुवनमम बरजो मानतनाहिं। कहो पुरुषकहँ मृत्युसम को मारत जगमाहिं॥ बिदुरउवाच॥ अतिआशा अभिमान अति अति बिवाद अतिकोह। अरु आतमसुख और जो अतिहिमित्रसों द्रोह॥ येषट औगुण मृत्युसम लगिमारत जिमिरोग। इन्हें जीतिबो सुखदहै कहतभूप बुध लोग॥ ठकुरसोहाती बचनके श्रोता बकताभूरि। दुर्लभ अप्रिय पथ्यके श्रोता बकतादूरि॥ हमतुमसो पहिले कह्यो जूवा अनरथमूरि। तुमको लागो अप्रियअति गहे न पथ्यबिसूरि॥ करणदुशासन शकुनिके ठकुर सोहातीबैन। तियलागे ते पथ्य सम अबबढ़ि करत अचैन॥ भृत्यभक्त हित रतनपहँ जे न करतहैं कोप। आपदमें सेवतिन्हें ते सिगरे गहिचोप॥ जोभृत्यन पीड़ितकरत करत पूर्बधन गोप। मिथ्याबादी तीनिबिधि के अमात्यकृत लोप॥ अभिप्राय गुणि करतजो कारजहित लखि नित्य। हितबकता पटु शुद्धमति कृपापात्र सो भृत्य॥ हुकुम न मानै दुष्टमति उत्तरदायक जौन। अभिमानी निन्दक असति त्याज्य भृत्य षट तौन॥ कवित्त॥ अमरषहीन अरिधरषबिहीन राखै रणकोहरष उतकरष उभरता। धरमी पराकरमी सु परमै अभरमी औ शुद्धसाधुकरमी त्यों बाकतत्व धरता। लालसी हुकुमको अनालसी अरोगदक्ष गोपीनाथ स्वक्षमतिरक्षक अक्षरता। लाजके जहाज औदराज काजकर ऐसे भृत्यकोसमाज राखे राजा राजकरता॥ दोहा॥ होइ सगुणकै अगुणनर भूपतिमानत ताहि। सब गुणिअनते सरससो जगत सराहतताहि॥ दुष्ट अकरमी अदयअरि निष्ठुर भाषनहार। उन्मादी अरु बानरहि बसन न दीजैद्वार॥ अर्थ निबन्ध सहायहै अर्थसहाय निबन्ध। बिनु अन्योन्य न सिद्ध ये यथा पंगु अरुअन्ध॥ औरनको चाहतबुरो निजभल चाहत जौन। ईश्वर करत न तासु फल भ्रष्टजात नर तौन॥ सुमति सत्य बेवसाय गुण जानें धीरज

धर्म। परहित रतको भलसदा गहै न कोऊभर्म ॥ पांडवते बिग्रह भये निरखो दोष अनेय। व्यथितहोत जाते सुमन हरपतशत्रु अजेय ॥ भीष्म करण कृप द्रोणसुत सहतो सुत शतभाय। प्रीति करैं पांडवन सों तो बिभूति अधिकाय ॥ व्याघ्र बिपिन सम परस्पर रक्षित ह्वै युग भूप। जीति भूमिसागर प्रभूत लहै बिभूतिअनूप ॥ अर्थसिद्धि जो चहतसोपालत सुधरमकर्म। बिनाधर्म नहिं होतहै अर्थसिद्धि यह मर्म ॥ राजपुत्र तिय स्वामि अरि अरु आयुर्बलभोग। इनकोकछु बिश्वास नहिं है प्रारब्ध सँयोग ॥ दारुअगिनि धर्षणलहें कढ़िजारत बनसर्ब। प्रबल बन्धुपीड़ित भये नाशत तथा सगर्ब ॥ यथागृहीको धर्महै अतिथिनको व्यवहार। तथा नृपनको धर्महै बन्धुनको सतकार ॥ लवण तेल तिल मास मधु अरुन रंगको चीर। सिद्ध अन्न गुण गन्धसब गाय दही घृत क्षीर ॥ फलाशाक को बेचिबो द्विज क्षत्रिहि अघमूल। तेहिप्रकार परधन हरब दुहुंदिशि दायकशूल ॥ बुद्धिमानसों बैरकरि दूरहुबसै अंदेश। बुद्धिबाहुसों पकरि ते बधत न राखत लेश ॥ तासुकरै बिश्वासनहिं जासों कछु उसवास। जासों नहिं उसवास तहँ उचित न अतिबिश्वास ॥ बसत काठमें अगिनि तिमि क्षमावान मतिमान। मंत्रतत्व राखतहिये लखन न पावत आन ॥ चारचक्षु करि लखतजग कहत न करिबो जौन। कार्यसिद्धि जाकीप्रगट अबल भूमिपति तौन ॥ हीन प्रकृतिको मित्रहू सुनन न पावै मंत्र। करै सुमंत्र एकान्तमें तिमि गोपै जिमियंत्र ॥ ह्वैईर्षा सुरोषवश करै न अनुचितकर्म। सुमतिनको मतमुनिकरै जौन अनाशक मर्म ॥ देशकाल तत्वज्ञ अरु हानि लाभ ज्ञातार। प्रियबचनी धरमी नृपति बरधत रहत उदार॥ पद्धरी ॥ नहिं क्रोध क्रियाबल बिरथजासु। सोभूपभूमिकृत भू बिलासु॥ ऋषिकृपा जुजाकर बिरथरूप। जिमि तियहि खंड तिमि प्रजन भूप ॥ अरिल ॥ धन गुण तप बय वृद्ध सुबरणित। अरुकुलीनजे धर्मकरत नित॥ इनकर सुबचनदायक शुभगति। तिनकर करतनिरादर निरमति ॥ दोहा॥ धृति सम दम सुचिता दया सति प्रिय सुबचननेम। आनँद बर्द्धन शमन अघ दुहुंदिशि दायकक्षेम ॥ बिनादोष कोपत रहत तासुकोप अरितासु। दोषौ लहि सुवचन कहत जगत तासुहित आसु ॥ हीनबुद्धि राजाजहां मंत्री धूर्त अजान। कुशलनहीं तिहि राज्यमधि आपद भरत महान ॥

मौक्तिकमाला ॥ पंडित सेा जो अरथहि साधै। मूरुखसो टेकहि अवराधै॥ हानि न सूझै बिरधि उमाहै। भू चखदै द्यो निरखनचाहै॥ सोरठा॥ चाहत अति ऐश्वर्य दुरयोधन अमरष भरो। बढ़ोकौन नृपबर्य प्रबल बन्धु सों बैरकरि॥ भ्रमरविलासिता॥ याकोभो जा क्षणमधि जनमे। रोये जम्बुकगण तेहि क्षणमें। मैंभाषो जू तुमसन तबहीं। याके नाशे जन सुख सबहीं॥ दोहा॥ याकेमारे बचहिंगे सुतनिनानवेजौन। याहिजियाये यहिसहितमरिहैं सब बलभौन॥ सुभी॥ सोनहिंमानो तुममभवानी। तासुदशा सो अब नियरानी॥ हैअबहीसो आनँददानी। जोहठछोड़ै नृप अभिमानी॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ सोरठा॥ तुमसिखवत हित पर्म तुमसमान मतिमान को। गहिं कठोरहठ कर्ममोसुत नहिंचाहत तजन॥ विदुरउवाच॥ विद्याधर॥ मैंजानेहौं आगेते सोराजा जैसो। सोमैंभाष्यो मान्योनाहींभोगो तैसो॥ कालैपाये वाकेहवैहै कालैवैसो। कालैबोलै कालैछोड़ै कालैऐसो॥ दोहा॥ तऊइमें कहिबो उचित तुमकहँ करियोतौन। जातेदुर्योधन तजैज्ञाति भेदहठजौन॥ गोरोधर॥ जोबन्धुन पालेबरधै सोहितराचो। जोबन्धुन नाशे नहिं बाढ़ै वहकाचो॥ ज्योंतन्दुल रहैनहिं जोकंचुक हीनो। जोबन्धुन पालैनृपसोई परवीनो॥ दोहा॥ दुर्योधन पूरब कियोहठगहि जोअपराध। सोअबतुम लोपित करो करिसुनीति अवराध॥ हौप्रवीणकुलवृद्ध तुमगहौ कुशल यश गैल। बरिआई बरजौसुतहि तजैबैर बदफैल॥ लघुदीपक॥ नौनिहरै अयश क्षमाक्रोधहि मेटै। विक्रममेटै अनर्थकारज मेटै॥ सदाचारसाधुताकुलक्षण खोवै। गोतसोत पालिबो सुआनँदभोवै॥ दोहा॥ हिये कपट ऊपर अमल जिमितृण छादित कूप। तिनकहँ मित्रनकीजिये ते दुखदायकरूप॥ कटु बचनी मूरख छलीक्षुद्र अधर्मी जौन। सहसा करमी पापरतहैं दुखदायक तौन॥ नेमी पण्डित धर्मरत प्रेमी शूरसुजान। मित्रकीजिये तिनहिंजे शुद्ध सुभाव महान॥ गन्धान॥ सालस दीनप्रकृतिजो कटुबाणी बोलै। बिनु उत्साही नास्तिकी जोरमानता घरओलै॥ दयावान धरमीशुचि जोव्रत पाल अलोलै। ताकेगेह रमानिवसित है नहिं कबहूं डोलै॥ दोहा॥ अग्निहोत्रफल वेदको तियको पुत्र सुजान। बहुश्रुति ताकोधर्मफल हैधन को फलदान॥ जो अधर्मकरि जोरियन करतदान मखकर्म। होत नहीं परलोकके अर्थतौन यह मर्म॥ नीरक्षीर फलमूल अरु ओषध हविष

अनप। द्विजगुरु आज्ञाकृत करम नहिंनाशत व्रतरूप॥चोर कृतघ्नी धूर्त्तको नहिंकबहूं बिश्वास। करतजौन बिश्वास सो पाथत नहीं सुपास॥ पवङ्गम ॥ शोचनीय निर्गुण नर जौन हैं। शोचनीय मैथुन बिनु भौनहैं॥ शोचनीय परजा धन क्षीणहैं। शोच्यदेश नरपाल बिहीन हैं॥ दोहा ॥ देहिनको ज्वर पथ गमन तियको ज्वर बिनुभोग। हियको ज्वरहै कटुबचन पठुज्वर मूर्ख सँयोग॥ हैजितनो सबजगतमेंमणिधन तियसमुदाय। बिनुसंतोष न एक कहँ तृप्तिहोत सबपाय॥ शिंघावलोकन ॥ फिरिफिरि तुमसन कहियतु भिरि भिरि। भिरिभिरि बलसब लरिहै थिरिथिरि॥ थिरिथिरि लरिजब परिहैं गिरिगिरि। गिरिगिरि करिहै रोदन फिरिफिरि॥ दोहा ॥ जातेहोत अधर्म तेहि धनहित जत हितलागि। तेसुख निवसत उरगजिमि जीर्ण कंचुकहि त्यागि॥ जोधन जोरत धर्मगहि चरचनीति पथचाहि। सोधन बरधनथिर रहत सुमति सराहतताहि॥सुखअरथिहि विद्यानहीं बिद्यार्थिहि सुखनाहिं। बंधुबिरोधिहि कुशलनहिं कुशल बंधुहित माहिं॥ कान्ता ॥ आत्मा येह। सरित अछेह॥ पुण्यसुघाट। गुणजलपाट॥ दोहा ॥ सत्यदया जहँकूलहै काम क्रोध जलग्राह। करि धीरज नौका नृपति तरौ सहित उत्साह॥ दशहाकलिक ॥ लिंगउदरतौ धीरजते। करपद कहँचख नीरजते॥ चखश्रुति रक्षैमानसते। मनहिकरम शुचि दानसते॥ दोहा ॥ ब्राह्मण क्षत्रीबैश्यअरु शूद्रनहींको धर्म। भूपतिसब तुमसोंकहै जोभूपनको कर्म॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ उकछा ॥ बिदुर कहततुम सांच। दुर्योधन मतिकांच ॥ नहिंजानत हित नेक। शठठानत हठटेक॥ हमसब जानततौन। असकरि बरधत कौन॥ दोहा॥पैहम सांची कहतहैं अपनेजियकी बीत। दुर्योधनके निकटमम सुमन बदलि शिथिलात॥ कहत गहतकछु बनत नहिं रहत बनतहै मौन। रहत हियो सुखबहत लखि सहत लहत दुखजौन॥ सोरठा ॥ मेटैमिटैन तौनजो बेधानिरमित किये। भाबिहि टारैकौन हरि ईच्छा बलवान अति॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणि बिदुरधृतराष्ट्रसंबादेदशमोऽध्यायः॥ १०॥

धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ बिदुर सुनाये आपुजू तुममहा अनूपम नीति।

और कहोजो नहिंकहे बार्त्तापरम पुनीति॥ वैशम्पायनउवाच॥ जयकरी॥ यह सुनिकहे बिदुर मतिमान। सुनोभूप धृतराष्ट्र महान॥ हमहैं शूद्रयोनि तेहिचार। हमें न वेदतत्व अधिकार। सनत्सुजात मुनीश महान॥ कहि हैं तुमसों सहित बिधान॥ इमिकहि कीन्हों ध्यान बिभात। तबतहँ आये सनत सुजात॥ उठिपूजे धृतराष्ट्र नरेश। कुशल प्रश्नकीन्हें सबिशेश॥ तब क्षत्ताकरि बिनय प्रणाम। सुनिसो बोले बचन ललाम॥ शुभबार्त्ता हिय घरकोदीप। सुनोचहत धृतराष्ट्रमहीप॥ सोकरि कृपाकहो समुझाय। तुम अमृत्यु मंगलमय काय॥ यह सुनिकै धृतराष्ट्र नरेश। बोले मुनि सों बचन शुभेश॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ सोरठा॥ हे मुनि सनतसुजात तुमकहँ कहत अमृत्युसब। गुनि अमृत्युहित तात मुनिजन साधत योग बिधि॥ दोहा॥ इनमें एक असत्य तौ कत तेहिहित उपचार। ताते कहिये प्रगट करि मृत्यु अमृत्यु बिचार॥ सनत्सुजातउवाच॥ सुनोभूप ये उभयहैं सत्य न मिथ्याएक। मृत्यु प्रमाद अमृत्यु है जहँ मति ज्ञान बिवेक॥ काम क्रोध मदलोभ ये आसुरि वृति उदोत। तिनसों मोहित भ्रान्ति गहि जीव मृत्यु बशहात॥ सम दम साधन करत जे ते सुरवृत्ती दच्छ। तन तजिकै ब्रह्मत्व लहि बिलसत अव्यय अच्छ॥ मृत्युजीव कहँ करति है स्थूल देहतेभिन्न। बाघ सरिस गहिखात लखि परत न खिन्न अखिन्न॥ जिमि अज्ञानते रज्जुमें होत उरग कोभान। तिमि प्रसाद अज्ञान कहँ मानत मृत्यु अयान॥ जनम मरणतो तासुहै कारण एक अज्ञान। ताही ते अज्ञान कहँ मानत मृत्यु सुजान॥ कित अन्य अज्ञानते यमहि मृत्यु गुणिलेत। पितृलोक में यमबसत कर्म देखि फल देत॥ यमआज्ञा बरती प्रबल कामलोभ मदक्रोध। मृत्युरूप ये जननकहँ अनत न कीजै सोध॥ ह्वै ममत्व बश चरतगहि बर्जित कुत्सिल गैल। आत्मयोग नहिं लहतते भ्रमत भूमि नभशैल॥ स्वर्गादिकको कामगहि करब मखादिक कर्म। सोतन तजिदिव लहतनहिं लहतमोद पदपर्म॥ शब्दस्पर सरूपरस गन्धबिषय व्यवहार। हैमोहन इन्द्रियनके भयेप्रीति अधिकार॥ बिषयीकहँ दुखदेतहै काम क्रोध अतिकाय। याते बिषयनको तजै धुव धीरज सरसाय॥ दुखदजानि बिषयानकहँ निदरिति यागतजौन। मृत्युहि तरिफिरि मृत्युबश नहीं होतहैतौन॥ कामीजन लहिकामना औसि

नशत जिमि मीन। रजहि धोइत्यागी पुरुष लहत शुद्धपणपीन॥ काम निबिड़तम नरन कहँसोई नरकन आन। क्षण सुखलगि धावत अपटु भरे प्रमाद महान॥ मृत्युन ज्ञानिहि देतदुख तृणमय बाघसमान। बिना रागजन मध्यरहि मोहित रहत सुजान॥ कबित्त॥ चेतन सुचाय जीव चेतन सुभाय त्यागि बन्धन बिनाही भूलिबन्धित सो गहिजात। गतिकीर मरकट कीटकीहै परगट कामक्रोध बिषय बिआध साथ बहि जात। जन्म मृत्यु इनहींते जायमान जानि ज्ञानी सोईहों सुबाणी रटि मृत्युते निबहिजात। मृत्युहै अज्ञानते अमृत्युज्ञान गिरमात ज्ञानओं अ ज्ञान ये अमृत्यु मृत्युकहि जात॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ दोहा॥ मृत्यु अमृत्युबि- धान मधि सुमुनि कहोजो मर्म। बन्धनकर्म मखादि को ज्ञान मोक्षपद पर्म॥ बेदकहत मखकर्मकरि ब्रह्मलोक पर्यन्त। लहिलहि मोदत जीव रहि बरिस हजार अनन्त॥ ब्रह्मलोक पर्यन्तको बासकर्म जोदेत। तौकत दुर्घट ज्ञानहित तपत मोक्षके हेत॥ सनत्सुजातउवाच॥ कबित्त॥ इन्द्रलोक आदिलोक प्रापति समुझिश्रेय करिमखकर्म उतजाय ते बिभातहैं। सिगरे अपटुते रजोगुणी सकाम महा कामबन्ध बँधेफिरि आवत औ जातहैं। इन्द्रलोक आदिलोक पतिहूबो जानैतुच्छ ज्ञानी सतोगुणी जे अकाम अवदातहैं। ब्रह्मकोदरशते सरसजानि योगसाधि जायपरमातमा को आतमा ह्वै जातहैं॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ दोहा॥ ज्ञानयोगरचि होतहैजीव ब्रह्ममें लीन। जीव ब्रह्मते भिन्नकै जीवब्रह्महै ईन॥ ब्रह्मआपु जोजीव ह्वै चरत चराचर देह। कौनकाजहित कौनको लहिशासन कहिनेह॥ सनतसुजातउवाच॥ जीवब्रह्मके भेदको मनसब दोष महान। जलतरंगघट मृत्तिका सरिस उपाधि निदान॥ अगिनित शशि लखि परतहैं जिमि अगिनित घटमाह। घटफूटे फिरि एकशशि तिमिसमुझो नरनाह॥ जिमि तेहि शशिते सकलशशि भापत भिन्न अभिन्न। तथाब्रह्म जगजीव की है गति खिन्न अखिन्न॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ सुमुनि परोयह मोहिं गुणि सुनितो बचन अनूप। ब्रह्मजीव ये उभयहैं कारण कारज रूप॥ कारज मिटे उपा- धिके होतकारणै आम। भूषणलहे बिनाशके लहत कंचनै नाम॥ यहि प्रकारहै सत्यजो कहे अमृत्यु प्रभाव। अबहै संशय एकमुनि करियेतासु दुराव॥ दान मखादिक कर्मकछु कछु रागादिक पाप। करत तासु वृत्ता-

न्तसो कहोप्रगट करिआप ॥ तेहि पापहि बिनाशत धर्मकै तेहि धर्महि पाप। जानिपरत नहिं मोहिहै अधिक कौनको दाप ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ सुनोभूप दोऊ अमिटकिये बनतहै भोग। है नाशक इन दुहुंन को शुद्ध सुज्ञान सुयोग ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ जानो बन्धन पापअरुकामक कर्मअरोक। अबकहिये द्विजबरणकोजौन सनातन लोक ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ यमदम आदिक योगजे साधन करत अभंग। तेतन तजि बिधिलोक लहि पूज्य होत बिधिसंग ॥ ज्ञानईक्ष उत्कर्षमख करत जौनमनलाय। देवलोकसो लहतफिरि मोदत ज्ञानहि पाय ॥ बर्ण आश्रम धर्मगुणि चरत सुकर्म यथेष्ट। ईक्षत स्वर्ग न ज्ञानते साधारण नहिं श्रेष्ट ॥ भयकरी ॥ कितेमनस्वी योगीदक्ष। करत सुब्रह्मचिन्तवन स्वक्ष ॥ शुचि सम्पन्न गृहीघर जात। सिद्धअन्न पावैंसो खात ॥ मृगवत रमत बिपिन में मोदि। नहीं ग्राममधि रहत बिनोदि ॥ गुणत न कर्म अकर्मबिधान। योगीतौन प्रसस्तमहान ॥ भिक्षाहेत गृहीघर जात। निजपांडित्य प्रगटकरिखात ॥ नहिं प्रसस्त संन्यासीतौन। अबसुनिये ब्राह्मणगति जौन ॥ सताचार रत रहत सुदैव। तत्वचिन्तवन भूलतनैव ॥ ज्ञातिमध्य यहिबिधि करि बास। शुचि करत तव नहिं करत प्रकाश ॥ गहत न ईर्षा गरबनिदान। ब्राह्मणसों ब्रह्मेष्ठ महान ॥ दोहा ॥ अन्यदे हतेआत्मा करताजानत ताहि। कौन पाप नहिं करतसो तस्कर कहियेजाहि ॥ सताचार रत शुद्ध कबि शुचि असंग्रही जौन। श्रम बिहीन दृढ़निश्चई आत्मा ज्ञानीतौन ॥ रहित सर्ब्ब बिषयान सो शुद्ध जासुहिय गेहु। आत्म दरशी तौनजेहि श्रवणादिक सों नेहु ॥ अश्वमेध आदिक सुमख करता आनँद चाहि। ब्रह्मज्ञानी सुपटुजो ताहि सदृश सो नाहि ॥मान आरजव सत्यदम ब्राह्मी श्रीशुभदाय। श्रीबिद्या अरु शौचये मोहहि देत दुराय ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्तुताभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणि सनत्सुजातीयेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

धृतराष्ट्रउवाच ॥ कहौ मौनकेहिहेत अरु है का मौनसचेत। का लक्षणहै मौनको मौन मौनता देत ॥ मौन आचरत कौनविधि कहो सुमुनि समु-

झाय। पांच प्रश्न गुणमौन मधि नहीं मौन रहिजाय॥ सनत्सुजातउवाच॥ जो अप्राप्त मन बचनकरि तासु प्राप्त हितहेत। बचनआदि इन्द्रियनको निग्रहमौन सचेत॥ अन्तरबाह्य प्रपञ्चको करिबो जौनअभान। सोलक्षण है मौनको सुनो भूप मतिमान॥ भयेअभान प्रपञ्च को मिलत पदारथ तौन। जोअप्राप्त मन बचनकरि मौनदेत इमिमौन॥ जोअप्राप्त मन बचनकरि ताको करिबोभान। प्रणवद्वारह्वै मौनको गुणिये तौनविधान॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ पापकरत इन्द्रियनवश जानत वेद न मौन। वेदतासु पापहि हनत कैनहिं कहियेतौन॥ सनत्सुजातउवाच॥ सुनो भूमिपति कहत हैं पूछततताको भेद। मौनशक्ति साधनबिना ताहि न रक्षतवेद॥ अन्तकालमें वेदतेहि त्यागतहै तेहिभाव। जिमि सपक्ष पक्षी तजत खोथहि लागे दाव॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ बिना धर्मपालनकिये जो नहिं रक्षत वेद। तौ द्विज रटिरटि वेद श्रुति नाहकपावत खेद॥ वेदपाठकरि पुण्य ह्वै द्विजपावत बिधिलोक। यह सुबचन तौ व्यर्थका कहिये आनँद ओक॥ सनत्सुजातउवाच॥ वेदपढ़त नहिं चरतहै वेदउक्त अनुसार। व्यर्थ तासु पढ़िबो सकल बिनामान उपचार॥ वेदनको अभ्यासकरि व्रत मख आदिककर्म। चरतपुण्य लहि तरतसो चित्तशुद्धकरि पर्म॥ व्रत मखकरि जो नहिंलहत चित्तशुद्ध सहज्ञान। तऊ स्वर्गमधि भोगकरि फिरिमहि लहतनिदान॥ जोजानौ अध्येनअरु आध्यापन तपरूप। कतनहिं रक्षत पापसों तौयह सुनिये भूप॥ अबिद्वान बिद्वानसब तपकृत दोयबिधान। अबिद्वान दिव लहतहै ज्ञानलहत बिद्वान॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ एक तपहि द्वै बिधि कहत गुरुता लघुताराखि। दूरिकरो सँदेह ममतासुभेद मुनिभाखि॥ सनत्सुजातउवाच॥ हैअसमृद्ध सकामतप अबिद्वान कृत तौन। तपनिष्काम समृद्धहै पंडित साधतजौन॥ सुनोभूप तप मूलसब वेदबचन सिद्धांत। कलमष सह कलमषरहित इमि द्वै बिधि हे दांत॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ तप कलमषमय कौनसो मुनिकहिये समुझाय। जेहि बिहीन तपसाधि द्विज॥ सनत्सुजातउवाच॥ ऋषे॥ द्वादश कलमष होतभूपसो मनदै सुनिये। काम क्रोध अरु लोभ मोह अतृप्ती गुणिये॥ अदय असूयामान शोक ईहाइर्षा पुनि। परनिन्दाकी बाणि दोष द्वादशलखिये सुनि॥ ये एकएक अनरथ करण जेहि बिधि व्याधा मृगणकहँ। जे इन्हैं त्यागि साधत सुतप तौन

अकलमष सुतप तहँ ॥ अब द्वादशव्रत सुगुण कहतसो सुनुनरनायक। धर्म सत्य दम सुतप अनिरषा लज्याचायक ॥ अनसूया धृति क्षमादान मख वेद श्रवणरति। ये द्वादशव्रत परम सरुचि साधत जे शुचिमति ॥ तेअति प्रवीण द्विजबरण महँ सबजगशीक्षण योगगुर। सोदेहधरे सानँद लखतमानव गणमें परमसुर ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा॥चारिवेदपढ़ि गुणिकिते अरु पुराणइतिहास। नामआदि परपंचतेतासअधिकपरकास ॥ ऐसोजोहै ब्रह्म तिहि जंगमथावररूप। कहत महासिद्धान्तकरि सुनुऋषिबर मतिरूप ॥देहपुरुष मानतकिते वेदहि पुरुष अभेद। महापुरुष छन्दोपुरुष मानतचारि अखेद ॥ क्षरअक्षर उत्तमहिजन मानतकितेप्रधान। तेत्रिवेद हैंजगतमैं तापस सहितबिधान ॥ मायाकारज देहसो क्षरअक्षरसो जीव। इन दोउनते अन्यसो उत्तमगुण मतिसीव ॥ कितने मायाब्रह्मकहँ मानत तौन द्विवेद। एकब्रह्मकहँ गुणतसो एक वेद तजिखेद ॥ उतपादन और समाधिपै उभय अवस्था बीच। मानतहैं अद्वैतमत अन्नृच तौन अमीच॥ ये सब तिनकेबीच हम गुणैब्रह्मबिद काहि। कहिये सनतसुजातमुनि संशयमेटव चाहि ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ सत्यस्वरूपी ब्रह्मके बिनुजाने बहु वेद। एक ब्रह्म गुणिपरत तब सिगरे भेद अभेद ॥ परअनन्द के ज्ञान बिनु लघु अनन्द अभिलाखि। दान यज्ञ अध्येन नर करत लोभ अति राखि ॥ करतयज्ञ दानादि नर करि सुजौन संकल्प। थिरततौन संकल्प मधि जेहिबिधि अल्पअनल्प ॥ सत्यानन्द स्वरूपते भिन्नहोत नहिं जौन। सोई ब्राह्मण ब्रह्मबिद सुनोभूप मतिभौन ॥ ब्रह्मतत्व जाने बिना नहीं तत्वबिद वेश। ताते सतगुरु आसरै गहिबो उचित नरेश ॥ स्वक्षबिचक्षण तत्वबिद शुभलक्षण सों युक्त। संशय छेता शुद्धमति सोपटुसतगुरु उक्त ॥ पढ़ेपढ़ाये बन बसे मुनि मति जानो भूप। ज्ञाता परमानन्द को ज्ञानी सुमुनि अनूप ॥ देहादिकमें आत्ममति कोनहिं राखतलेश। सोई ब्राह्मण ब्रह्मबिद यहसिद्धान्त नरेश ॥ नितिमम अनुभव सिद्धशुचि शुभदायक मतयेहु। सोहम तुमसो कहतकरि तुमपै अधिकसनेहु ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणि सनत्सुजातोयेद्वादशोऽध्यायः॥ १२ ॥

धृतराष्ट्रउवाच॥ दोहा॥ ब्राह्मी सुबचन शुभद जो तुम भाषत मुनिराज। ताहि जानिनहिं जानिबे को कछु और समाज॥ सनत्सुजातउवाच॥ बार बार बूझत सुनत मुदितहोत क्षितिकन्त। ब्राह्मीबिद्या गुह्ययह है अति महादुरन्त॥ ब्रह्मचर्य ब्रतधारिकै साधनकिये अनूप। सुने न हियमें बसतिनहिं सिद्धदेति अनुरूप॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ बिद्या शुद्धसनातनी बसहि आत्मासंग। दुर्लभ ताकी प्राप्तिकत मुनिकहियेसो ढंग॥ सनत्सुजातउवाच॥ सत्यब्रह्म आत्मत्व ते है देहस्थ सदैव। शुद्धज्ञानके उदयबिनु प्राप्तहोतहै नैव॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ बिद्याशुद्धसनातनी प्रगटति साधेजाहि। ब्रह्मचर्यब्रत तौन अब कहियेसुमुनि सराहि॥ सनत्सुजातउवाच॥ बसिआचायर योनिमें अकपट सोवागर्ब। करैआपनो दूसरो जन्मपूर्ब तजि सर्ब॥ यथा मृंजते करतहै सीकिहि जुदे निहारि। तथा देहते आत्महि न्यारोकरै बिचारि॥ देहजन्मको देतहै मातापिता सकर्म। अजर अमरता देतहै बिद्यागुरू सधर्म द्वैतबुद्धि भयते करत रक्षा गुरूमहान। है सबते उतकृष्ट गुरु सेवत शिष्य सुजान॥ सविधि सरुचि आचार्य्य कहँ सेवै शिष्य सुजान। ब्रह्मचर्य्यको तौनहै प्रथमचरण सुखदान॥ गुरुपत्नी गुरुपुत्र कहँ जानै गुरू समान। ब्रह्मचर्य्य को तौनहै दुतिय चरण सुखदान॥ सेइ सुबिद्या पाइ कै सेवै गुरुहि प्रशंसि। ब्रह्मचर्य्य को तौनहै तृतिय चरण शुभअंसि॥ गुरु आश्रमते अनत नहिं आश्रम करै कदापि। अहङ्कार आनै नहीं सो चौथो पद थापि॥ चतुःपदी बिद्या मिलत सेये चारों पाद। जानन को उत्साह यक स्वाध्याई सम्बाद॥ बुद्धि बिभवहै एक अरु एकबुद्धि परिपाक। बिद्याके ये चारि पद जानत सुबुध निशाक॥ धर्म आदि द्वादश सुगुण आसन प्राणायाम। जप आदिक शुभरूपहैं ब्रह्मचर्य्यको आम॥ ब्रह्मचर्य्य इमि साधिकै लहि देवत्व महान। बिलसतहैं ब्रह्मर्षि लहि ऊर्द्धलोक सुखदान॥ ब्रह्मचर्य्य ब्रतसाधि करि ज्ञानउदय अभिराम। नित्य लोक मधि बसति जो साश्वत आनँदधाम॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ निरखे नाड़ी मार्गमधि निरखि परत बहुरूप। लखो करत सुब्रह्मको कैसो रूप अनूप॥ सनत्सुजातउवाच॥ ब्रह्ममार्ग मधि लखि परत जो शुक्लादिक बर्ण। ब्रह्मप्राप्तको चिन्हसो है हियको आभर्ण॥ नहीं ब्रह्मको रूपसो ब्रह्म अगोचर पर्म। अति सूक्षम अस्थूल अति अनवगाह अतिमर्म॥

तासों प्रगटत जगत सब होत ताहिमें लीन। ब्रह्मादिक ब्रह्माण्ड बश माया के आधीन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे उद्योगपर्वणि सनत्सुजातीये चयोदशोऽध्यायः॥ १३ ॥

सनत्सुजातउवाच ॥ दोहा ॥ भूपति जो गुण दोष हम तुमसों भाषे पूर्व। ज्ञान तहां परधान है योग गउणहै गूर्व ॥ अबसाईं गुण दोष फिरि तुमसों कहियत तात। करिकै योग प्रधान अरु ज्ञानहि गउण बिभात॥ चित्त वृत्ति अनुरोधते त्वत्पदार्थ कहँ जानि। तदनु वेद श्रवणादिते ब्रह्महि निश्चित मानि ॥ पावै परमानन्द तेहि कहिये ज्ञान प्रधान। कहियत योग प्रधान अब सुनो भूप मतिमान ॥ श्रवण मनन करिकै करै निश्चय ब्रह्म अनूप। तदनु निदिध्याशनहि करि प्रगटित करै स्वरूप ॥ द्वादशदोषयथा ॥ छप्पै ॥ द्वादश कलमष कहौ भूप सो मनदै सुनिये। काम क्रोध अरु लोभ अतृप्ति मोह ये गुनिये ॥ अदय असूयामान शोक इहा इरषा पुनि। परनिन्दाकी बाणि दोष द्वादश लखिये सुनि ॥ एकएक अनरथ करण जेहिविधि व्याधा मृगन कहँ। जे इन्हें त्यागि साधत सुतप तौन अकलमष सुतप तहँ ॥ अथद्वादशगुणाः ॥ अब द्वादश व्रन सुगुण कहत सो सुनु नरनायक। सत्यधर्म दम सुतप अनिरषा लज्या चायक ॥ अनसूया धृति क्षमा दान मख वेदश्रवण रति। ये द्वादशव्रत परम सरुचि जे साधत शुचिमति ॥ ते अति प्रवीण द्विजबरण मधि सब जग शीक्षण योग गुर। इत देहधरे सानँद लसत मानवगण मधि परम सुर ॥ तपःस्वरूप ॥ श्रुति चख नासा जिह्वा त्वचा इन पञ्चेन्द्रिन कहँ। शब्दरूप रस परम गन्ध ये पांच बिषय पहँ ॥ कबहुं न लागनदेइ रहै सम आदिक साधत। तौन सुतप कैवल्य योग परधान अराधत ॥ ऊर्द्धगतिहि दायक इहौ पैन योगसम अधिक अति। परब्रह्मलोक भोगवन की सङ्कल्पित कछु तासु मति ॥ दोहा ॥ होत सुनो सङ्कल्पते तीनि यज्ञते तात। मानस वाचिक कर्म करि गुरु मध्यम लघु ख्यात ॥ ध्यान वेद जप अरु हवन लीजो क्रमते जानि। तीनी योग प्रधान ये ज्ञान ऊन शुभदानि ॥ पुरुष

सिद्ध संकल्प कहँ होत चिदात्मा प्राप्त। जैसे राजा भृत्यपहँ कृपा करत गुणि आप्त॥ ब्रह्मप्राप्तके हेतुको हित यह योग प्रधान। ग्रहण करावै शिष्य कहँ शुचि आचार्य मतिमान॥ सब अधीन यहि योगके अमृतज्ञाता तास। अन्य शास्त्रजे तेहि सुबुधि मानत बचन बिलास॥ सत्य ब्रह्मकहँ प्राप्त नहिं होत कर्मते भूप। होम यज्ञते बालनहिं पावत मोक्ष अनूप॥ रहै मौन एकान्तमें होय निचेष्ट अपार। निन्दा अस्तुति उभय सम गहैं योग आचार॥ यहिप्रकारते ब्रह्मकहँ देखत करत प्रवेश। घटाकाश आकाश मधि जैसे मिलत सुभेश॥ है अनन्तफल जासु सो विद्या परम अनूप। नाशमान फल कर्मते श्रेष्ठ सुनो हे भूप॥ सो विचारि शुचि ज्ञान हित यत्न करत मतिमान। तुमसों यह सिद्धांत हम कहियत आनँददान॥

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगंगाकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणउद्योगपर्वणि सनत्सुजातीये चतुर्दशोऽध्यायः॥ १४॥

सनत्सुजातउवाच॥ दोहा॥ जो निश्चेष्टा होव हम पूर्व कहहिहैं भूप। सो श्रुतिमति निश्चेष्ट कहँ जानेहु शून्य सरूप॥ जासु हेत निश्चेष्टको होय कहत हे तात। करत प्रकाशित शून्य कहँ चित्त सरूप बिख्यात॥ बीजरूप सो जगतको चेष्टा बर्त्तनहार। सूर्य्य प्रकाशित जगत कहँ जासु प्रकाश अपार॥ तेहि भगवान सनातनहि परखत योगीदक्ष। नहि अयोगबिद लहतहैं सुनो भूप परतक्ष॥ यथा पुरुष संगम सुखहि सुनि प्रौढ़नके पास। नहिं कुमारिकहि गुणिपरत सो आनन्द बिलास॥ जेहि सुबीजते होतहै व्याम परमअभिराम। जासों क्रमते होतहै जग उतपत्य अक्षाम॥ कारण पांचो भूतको सब भौतिक मधि तौन। जीवात्मा परमात्मा रूप बसत मुदभौन॥ छप्पै॥ बीजरूप प्रभु जौन रचत ब्रह्मांड चराचर। सिन्धु सरित शशि सूर सुमन नरभूमि सरासर॥ कर्म्म चक्र अनुसार चक्रसम भौतिन चालत। बिषय देशगत अज्ञ तिन्हैं दृगडतनहिं लालत॥ ते इंद्रीयश्वन सुबशकरि देह सुरथ लावत सुभग। प्रभु तिन जीवन कहँ करतहैं परमात्म मुदलाइ लग॥ दोहा॥ मन विग्रह करि निरखि जेहि अमृत होत नर अक्ष। तेहि भगवान सनातनहिं परखत

योगी दक्ष ॥ छप्पै ॥ चित्त स्मरण श्रुति श्रवण बचन रागादि उजागर। शब्द अकाश अनूप श्वसन रागादिक आगर ॥ संस्कार सुकृतादि समूह द्वादश पूरित। नाम अबिद्यानदी ताहिमधि चरत अदूरित ॥ चरि तहां पुत्र पशु आदि हित सुफल चहत नहिं तृप्त गहि। ते भ्रमत रहत इंद्रियनके देवनके रक्षित सदहि ॥ करि सुकर्म दिवभोग करत तेहि कर्म धर्म मिति। करि सुकर्म सम भोग लहत फिरि भूमि ऊनगति ॥ यहबिचारि जो गुणो कर्मको नाश भये सति। जीव मोक्ष कत होतनहीं सोसुनो भाव सति ॥ शुभकर्म तौनकरि भोग तहँ शेष कर्मबश पतत फिरि। बिनु ज्ञान भूपसब करमको नाशहोत नहिं रहत थिरि ॥ दोहा ॥ सर्व भूतमधि बसतहै सोई जीव प्रभु स्वक्ष। तेहि भगवान सनातनहि परखत योगीदक्ष ॥ छप्पै ॥ जोजानो चितरूप जीवता लहत कौन बिधि। तौसुनिये नरनाथ अबिद्या वृक्ष परमरिधि ॥ गुणसुपक्ष बिनुईश बिहँग गुणपक्ष चाहि जब। निवसत तापैआइ होतगुण पक्षप्रगट तब ॥ यथा बासना भ्रमतनिति नृप जीवत्व उपाधिइमि। बरज्ञान कर्म करि होतहै मोक्ष बध्बश्रुतिकहततिमि ॥ दोहा ॥ सर्वभूतमधि बसतहै सोईजीवप्रभुअक्ष। तेहिभगवान सनातनहिं परखत योगी दक्ष ॥ जैसेमहदाकाशते घटाकाशको भेद। तैसेमिटे उपाधिके जीवब्रह्म निरभेद ॥ यथारज्जु में उरगको होतभ्रमात्मक ज्ञान। भ्रमछूटेते रज्जुध्रुव जीवब्रह्म तेहिमान ॥ क्रमतेजासों जगत सब अकथ अगोचर अक्ष। तेहिभगवान सनातनहि परखतयोगी दक्ष ॥ जयकरी ॥ करैअपान प्राणमें लीन। प्राणैकरै सुमन आधीन ॥ मनहिं बुद्धिवश करि सुखदाय। बुद्धिहि रहै ब्रह्ममधिलाय ॥ यहिविधि साधियो ग अतिस्वाक्ष। ब्रह्महि लखै योगबिद दक्ष ॥ दोहा ॥ नितिदेहस्थ सुब्रह्म प्रभु तौकत ताहित योग। जोयहमानो भूपतौ ताकोसुनो प्रयोग ॥ जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति ये अरुतुरीय अभिराम। चारिअवस्था कथित ते चारिचरण गुणग्राम ॥ प्रगट रहतिहैं तीनिये चौथीप्रगट न होत। ताके प्रगटित करणहित करतयोग उद्योत ॥ सोव्यापित तिन तीनि मधिनाशक मृत्यु समक्ष। ताहि अराधि सनातनहिं परखत योगीदक्ष ॥ जयकरी ॥ पुरुष अंगुठमात्र अतिरूप। हृदिअकाश मधिबिलसत भूप ॥ सूक्षम देहहिं कीन्हेंओक। गछूतमधि अधऊरध लोक ॥ जाग्रतआदि अवस्थन माह।

प्रापत होतसुनो नरनाह ॥ ताहि न निरखत मूढ़अलक्ष। परखत हरषत योगीदक्ष ॥ अपरं ॥ अंगुष्ठमात्रजो पुरुष महान। हृदिआकाशमधि बसत सु जान ॥ ताहि बियापत हृदिकोताप। नृपजो ऐसो जानैआप ॥ तौयह सुनो तासु सिद्धान्त। इनइमि मानत योगीदान्त ॥ जीवअसाधन साधनवान। लहैं उभै मधि ब्रह्मसमान ॥ जौन असाधन सोहैबध्य जीव समाधन जौन अवध्य ॥ लहत अवध्य ब्रह्मरसपूर। सोसुख लहत नवध्य अपूर ॥ यहि बिधि दुख प्राप्त तेहि बीर। जवा कुसुम जिमि भटिक शरीर ॥ जो यहि अतिआनँद कोपक्ष। तेहिपरखत सोयोगीदक्ष ॥ दोहा ॥ इमिदुख ब्यापत जीवको लगेदेहको लिम्ब। जलकेहीले हिलतहैं जिमिरबिको प्रतिबिम्ब ॥ अपरं ॥ लहत ब्रह्म रसपरम सो परखत आत्मअनात्म। ताहिअहुत सब हुत सरिस निजहिगुणत परमात्म ॥ सब शुभकर्मन को मिलत ज्ञान मांहि फलभूप। कछू शेष नहिं रहत है जानत प्रज्ञ अनूप ॥ अहंब्रह्म इमि कहतमति अपुहिजानोहीन। ब्रह्महोत है ब्रह्म बिद वेदबचन परवीन ॥ यहप्रज्ञा प्रगटितकरत जेहि मधिधीर प्रतक्ष। तेहिभगवान सनातनहि परखत योगीदक्ष ॥ अपरं ॥ जो अतीत मन बचन करि जग जनमादिक हेत। नर बिकार नितियोगसों गम्यपुज्यता देत ॥ कर्मतजेको देवका नाशक न्यामक ईन। योगाभ्यासी जीवकहँ करत आपुमें लीन ॥ जेहि ध्याये नहिं होतिहै हीन मोक्षगति अक्ष। तेहि भगवान सनातनहि परखत योगीदक्ष ॥ केवल मोक्षहि देतहैं ज्ञावगुणो मति भूप। जग प्रपंच दूरस्थ सब करत हृदिस्थ अनूप ॥ ग्रहण करत संन्यासको शुद्ध ज्ञानहित जौन। बंचकसह सो नहिं बसै निजमन रोपत तौन ॥ मद्य मांस परतिय हितै उपदेशत सो धूत। अति भयदायक कर्ममधि लावत कहि कहि पूत ॥ न मम अमृत्यु लखात जो मरण मृत्यु कहिजात। बन्धन मोक्ष हमैं न कछु यह बिचार अवदात ॥ निश्चयजान घटादि में भ्रम जुरज्जु उरगादि। एकब्रह्म आधीन सब कहत वेदबिद नादि ॥ सोइ ब्रह्महम और नहिं इमि जेहि बिषे प्रतक्ष। तेहि भगवान सनातनहि परखत योगीदक्ष ॥ ग्रन्थभारके बहनहित ब्यर्थ करतहै खेद। गुरु सुवाक्यते तत्वको जानब सिगरो वेद ॥ यथा सरितते लेत है जल निजकाज प्रमान। चित्तशुद्ध मति शास्त्र तिमि पढ़ै गुणै मतिमान ॥

जयकरी ॥ पुरुष अंगुष्ठमात्र बिन रूप। हृदि अकाश मधि बसत अनूप ॥ अचरज न्यामक शुचि चैतन्य। निति अनन्दमय ईश अनन्य ॥ सोहम जगत जगत करतार। माता पिता पुत्र भरतार ॥ बर्त्तमान हम भूत भविष्य। दर्शनीय हम जौन अदृश्य ॥ जग पटमें हम तानाबान। हमहीं आत्मा हम अस्थान ॥ सबमो बपुमधि करत बिनोद। मोहिं ध्याय पटु पावत मोद ॥ दोहा ॥ सूक्षमते सूक्षम महँ अति दुरलक्ष्य अखर्ब। सर्ब प्रकाशक सर्बगत जानत ज्ञाता पर्ब ॥ यहिप्रकारके गुणनयुत परमात्मा अवदात। ताहि चिन्ति हृदिकमल मधि कृत्य कृत्यह्वै जात ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउहितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणि सनत्सुजातीयवेदान्तसम्पूर्णपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

दोहा ॥ सनत्सुजातहि आदि मुनि जेहि ध्यावत गहि नेम। तेहि जगपति जगनायकहि जपे लहत सबक्षेम ॥ वैशंपायनउवाच ॥ दोहा ॥ कहि सुनीति निज आश्रम गे मुनि सनतसुजात। रजनीभई व्यतीत तब भयो भोर अवदात ॥ प्रात कृत्यकरि तब गयो सभासदनमें भूप। भीष्म द्रोण कृप आदि तहँ आये सुभट अनूप ॥ शल्य जयद्रथ शकुनि सह कृतबर्मा भगदत्त। जयत्सेन आदिक सकल बैठे भूपति मत्त ॥ भूरिश्रवादिक बंधु अरु करणादिक सब मित्र। सोदर दुःशासन प्रभृत लैसँग भूप बिचित्र ॥ दुर्योधन बैठो तहां बैठे बिदुर उदार। द्वारपाल तहँ कहत भो संजयआयो द्वार ॥ जयकरी ॥ तब भूपतिकी आज्ञापाय। कियो प्रणाम सूतसुत जाय॥ कहत भयो फिरि बचन ललाम। सब वृद्धनकहँ बिनय प्रणाम ॥ पांडव कहे जोरि युगपानि। यथा उचित वय बिधिक्रम जानि ॥ बेर बेर सब कहँ सहप्रेम। धर्मशील पालक नयनेम ॥ सुनि बोले धृतराष्ट्र नरेश। संजय अब सो कहौ बिशेश ॥ सुनि तो बचन कह्यो जो पार्थ। संजय सो सब कहौ यथार्थ ॥ सुनि ऐसे भूपतिके बैन। कहतभये संजय मतिऐन ॥ धर्म भूपके मति अनुसार। कह्यो पार्थ रणधीर उदार ॥ लखि केशवहि नृपन तन हेरि। सगरब कहत भयो इमि टेरि ॥ धर्मभूपके संमुख आय। नहिं बचिहै दुर्योधन पाय ॥ बन्धुन सहित धर्म क्षिति-

पाल । असह धृष्टद्युम्न भट भाल ॥ इन्द्रहु जीतन योग समर्थ । दुर्यो-धन को गौरव व्यर्थ ॥ ताते गुणि निजकृत अपराध । देहि भूमि करि मत अवराध ॥ नातरु गदा पाणि भट भीम । अयुत नागबल बीरअधी-म ॥ सुधिकरि उनको करतब पूर्व । निजपण समुझि गर्व गहि गूर्व ॥ गरजि गजन को यूथ सँहारि । मानव दलमथि धसिहि प्रचारि ॥ तब दुर्योधन तजि निजटेक । नहिं थिरिहै रणमहिमें नेक ॥ जब परबत बेधक ममबान । बरषन लगिहैं बज्रसमान ॥ जबगाण्डीव धनुषकोघोर । दुसह शब्द पूरिहि सबओर ॥ मोहित ह्वैहैं भट तजिटेक । तब कुरुपति नहिं थिरिहै नेक ॥ द्रुपदसुताके सुवनसुभेव । अरु अभिमन्यु नकुलसहदेव ॥ बरषणलगिहैं बाण सटेक । तब कुरुपति नहिं थिरिहै नेक ॥ द्रुपद बि-राटसेन रणधीर । सात्विकि और घटोत्कचबीर ॥ गरजिगरजि शायक झरिलाय । लगिहैं बधन सुभट समुदाय ॥ तब दुर्योधन तजिरणटेक । नहिं थिरिहै रण महिमें नेक ॥ मत्स प्रभद्रक भट पांचाल । अरुसंजय रणधीर कराल ॥ जबभिरि करषि कठिनको दण्ड । बरषण लगिहैशा-यकचण्ड ॥ तबदुर्योधन तजि निजटेक । नहिं थिरिहै रणमहिमें नेक ॥ सुभट शिखण्डी अमरषपूरि । जेहिक्षण बरषत शायकभूरि ॥ अगणित हय गज भटबधि डारि । भिरिहि भीष्मसों व्यूहबिदारि ॥ तिहि क्षण दुर्योधन तजिटेक । नहिं थिरिहै रणमहिमें नेक ॥ धृष्टद्युम्न जब शायक छाय । महारथिन सुरलोकपठाय ॥ द्रुपद लह्यो वरसों अनुमानि । भि-रिहि द्रोणसों गौरवआनि । तब दुर्योधन तजिरणटेक ॥ नहिं थिरिहै रणमहि में नेक ॥ इमिकहि भाष्यो वचन उदण्ड । कृष्णकृपा जयलहब अखण्ड ॥ दोहा ॥ सभामध्य बनमध्य के समुझिकर्म दुखजूमि । बन्धुन सह दुर्योधनहि मारिलेब सबभूमि ॥ यहिप्रकार अनरथ करण अरथ नगर थितबैन । अरुण नैनकरि कहतभो पारथ बिक्रमऐन ॥ संजय के ऐसेबचन सुनेभीष्म मतिमान । दुर्योधन सों कहतभे सुवचन सहित बि-धान ॥ नारायण प्रभुह्वै द्विधा नरनारायण नाम । कहवाये अतिउग्रतप करता बरचस धाम ॥ लहि असुरनसों महतदुख सुनिबिधि बचनअनूप । जाहिध्याय आनँदलहे शक्रसुनो कुरुभूप ॥ नारायण हैं कृष्णप्रभु नर अर्जुन अभिराम । इनसोजय लहिबो अगम अनरथ आगम आम ॥ गीता ॥

बीरपार्थहि रथपुर चढ़िजाय सागरपार। बिदित बीर निवातकवची बाधेसाठि हजार॥ जीतिशक्रहि कियोजेहि खाण्डव बनकोदाह। कियो सोई पार्थतब सहबन्धु बधकोचाह॥ तहँहु जो प्रभु कृष्णमारे असुर के समुदाय। शङ्खचक्र सु गदाधारी तासुसंग सहाय॥ मंत्रमेरो मानि अब तुमकरो सानँद तौन। होयजाते नाशनहिं कुरुबंश बर्द्धित जौन॥ बंशपति तुमभये अबकुरुबंश तो आधीन। करौतौन प्रशंस बिधिजेहि बंश होइ न क्षीन॥ शकुनि दुःशासन कर्णको मंत्र अनहित जानि। महोसम्मत पाण्डवन सों कह्यौ मेरोमानि॥ भीष्मके एबचन सुनिकै रहोभूपति मौन। कर्णबोलो भूपकोहम अनहित कीन्हो कौन॥ स्वामिकारय क्षत्रियन को परमधम बिख्यात। करतहित कुरुनाथकोहम आपकत अनखात॥ कियो प्रथम बिरुद्ध तबउन कियेका ब्यवसाय। आपुइमि डरपाय नाहक कहत ओजबढ़ाय॥ बधब हमसब पाण्डवनकहँ कहत हौं नहिं गोपि। करण के सुनिबचन भीषमकहे मनमें कोपि॥ सुनोनृप धृतराष्ट्र सूतज करत जौन प्रलाप। तौनतो सुत नाशकरता मंत्रताको जाप॥ पाण्डवन कह बधै ऐसोतीनि पुरमें कौन। बधै कत नहिं कियो जबहिं बिराट पुरमें गौन॥ कहाहोतब करण भूपहि गह्यो जब गन्धर्ब। और के घरखोइबेको गहतहै अबगर्ब॥ भीष्मके ये बचन सुनिकै कह्यो कृप आचार्य। सुनोभूपति करिहिसो जो कह्यो पारथ आर्य॥ भीष्म के अरु कृपाचारय के बचनसुनि भूप। मौनरहि नहिं दियोउत्तर कपटके अनुरूप॥ फेरिसंजयसों कह्यो इमि सूततौन बताव। धर्मकाके बाहुबलसों गहत रणकोचाव॥ दोहा॥ वृद्धनृपतिके बचनसुनि संजयकह्यो सचेत। सुनिये जिनके बाहुबल भूपति आनँदलेत॥ भीमअर्जुन नकुलअरु बिशद बीर सहदेव। सबजग जेता जासुहै जाहिर बिक्रमभेव॥ धरम धुरंधर धर्मनृप बिशद बीररसपागि। इनसुभटनके बाहुबल मुदित रहत भय त्यागि॥ सदलद्रुपद क्षितिपाल अरु नृपबिराट सहसैन। श्वेतशिखंडी शंख अरु धृष्टद्युम्न बलऐन॥ पांचभाय केकयनृपति अरु सात्विकिरण-धीर। इरावाण अभिमन्यु अरु द्रौपदीय बरबीर॥ धरम धुरन्धर धर्मनृप बिशद बीररसपागि। इन सुभटनके बाहुबल मुदितरहत भयत्यागि॥ धृष्टकेतु शिशुपाल सुत अक्षौहिणिपति तौन। सरभनाम ताको अनुज

धनुधर बिक्रमभौन ॥ जरासन्धको सुवननृप भटसहदेव अमान। असुर आसुरी सैनसह भीमतनै बलवान ॥ इन्हैंआदि अगिणितनृपति सदल सबन्धुसमस्त। अरु यदुकुलपति नृपतिमणि श्रीयदुनाथ प्रशस्त॥ धरम धुरन्धर धर्मनृप बिशदबीररस पागि। इनसुभटनके बाहुबल लरनचहत भयत्यागि ॥ सोरठा ॥ यहसुनि वृद्धमहीप ऊबिउसासि बोलतभयो। सुनु गावलि कुलदीप मोहिं न संशयऔरको ॥ चौपाई ॥ भीमकठिन दुर्मदरण चारी। गदापाणि करि कुम्भबिदारी ॥ शूलपाणि सम बिदित अमाना। बज्रपाणि सम अतिबलवाना ॥ दण्डपाणि सम अरिदल दरता। कुम्भ करण सम संगरकरता ॥ तेहिआड़न लायक ममदलमें। नहिं कोऊताके सम बलमें ॥ समुझि तासुप्रण ममहिय सूखत। दुर्योधनके मंत्रहि दूषत ॥ गदावाहि ममसैन सँहारत। मभीमहिं देखतभय भारत॥ संजय सुनो भीमको लरिबो। हैऊपर गिरिवरको परिबो ॥ अवशि भीम मम पुत्रनमारिहि। दुसह शोक शिखि मोहिय भारिहि ॥ कोऐसो जो बिक्रम करिकै। बांचिहि भीमसेनसों लरिकै ॥ जाको बयब बिचारिहि सोई। ताहिबचाइ सकिहिनहिं कोई ॥ नदकी उलद वायुकी रेला। भीमपराक्रमको नहिं बेला ॥ भीमसमान और मजबूतन। संजयभीम बधिहि मम पूतन ॥ यहगुणि मोहिं नींद नहिंआवति। दिनदश बढ़िसो शोचबढ़ावति ॥ तथाफाल्गुण अति धनुधारी। परशुराम के सम रणचारी ॥ जो रणकरि शम्भुहि मुददीन्ही। पशुपति अस्त्रकृपालहि लीन्ही ॥ सिगरे लोकपाल हितधरिकै। दीन्हेजाहि अस्त्र मुदभरिकै ॥ बिद्यासकलद्रोण सों लहिकै। अति अभ्यासकरि करतब गहिकै ॥ जो जय लंत भयो सुरपतिसों। कोबाचिहि तेहि धनुधर अतिसों ॥ पारथ सबजग जीतनलायक। तापहँ तासुरथी यदुनायक ॥ दिव्यधनुष गांडीवसोहायो। अक्षय तुणीर बिजयप्रद गायो ॥ दिव्य अवध्य तुरँग मनगामी। शीक्षक केशव त्रिभुवनस्वामी ॥ प्रबल सव्यसाँची सो योधा। कौनकरिहि ताको अवरोधा ॥ यह गुणिमम हियपूरण दरजन। मूढ़पुत्र नहिं मानत बरजन ॥ कृष्णचन्द्र सों धनुबिधि शीखो। जो प्रद्युम्न सम धनुधर लीखो ॥ तेहिअभिमन्युहि गुणि मन लरजत। परे मोहबश बनत न बरजत ॥ संजय सब नृप भटको मरिबो। सब नद नदी रुधिरसों भरिबो ॥ अम-

रष बश ममसुत नहिं टरिहैं। सदल प्रबल अरिसों लरि मरिहैं ॥ बंश नाश अनरथ अवरेखो। संजय मोहिं परतहै देखो ॥ संजय मोहिं रुचत है सोई। जाते यह अनरथ नहिं होई ॥ दोहा ॥ यह बिरुद्ध बढ़ि युद्धके भये परत लखि मोहिं। महाप्रलय कलपांत सम सूत सुनावत तोहिं ॥ यह सुनिकै संजय कहे आपुकहे सो शुद्ध। कुशलहेत करिबो उचित जाते मिटै बिरुद्ध ॥ सोरठा ॥ यह सुनिकै अनखाय दुर्योधन क्षितिपालमणि ॥ गरबी गरब बढ़ाय कहतभयो निज जनकसों ॥ जयकरी ॥ तात गहौमति संशय नेक। क्षात्रधर्मको गुणो बिवेक ॥ गहि बहु श्रम करि सेवा शुद्ध। अनुपम जौन गदाको युद्ध ॥ सीखे हम हलधर सों तौन। भीम न कबहूं निरख्यो जौन ॥ गदायुद्ध करि भीमहि मारि। हम जयलेब देहु दुख टारि ॥ परशुराम को शिष्य अमान। धनुधर कर्ण बिदित बलवान ॥ परखत बेधक सकति प्रहारि। अर्जुनको बधकरिहि प्रचारि ॥ इनके मरे प्रबल अस कौन। लरिहि आय मम संमुख जौन ॥ यकइसदिन भृगु-पतिसों युद्ध। करिममरहो जौन भटउद्ध ॥ जिहि जीते अगणितक्षिति-पाल। सो भीषम ममपक्ष बिशाल ॥ कृप धनुधर अरु द्रोणाचार्य। दिव्य प्रभाव अयोनिज आर्य ॥ तेहि जीतन कहँ कौन समर्थ। तात बिषाद करतहौ ब्यर्थ ॥ अश्वत्थामहि जीतन योग। को जगमें करि अस्त्र प्रयोग ॥ शल्य जयद्रथ शकुनि नरेश। अरु बाह्लीक आदि भटवेश ॥ दुःशासन आदिक मम भाय। तिनसों अधिक कौन दृढ़वाय ॥ असुर अलंबुष अरु भगदत्त। जीतै तिन्हैं कौन भट मत्त ॥ इन्हैं आदि अगणित क्षितिराज। पाण्डव गणसों अधिक दराज ॥ भटन सहित मम जयके चाह। गहे महारण को उतसाह ॥ एकादश अक्षौहिणि सैन। है मम संग जगतके जैन ॥ सातक्षौहिणी सेना अंग। है पाण्डवभूपतिके संग ॥ काहे उन्हैं अधिकगुणि तात। कहत सभामधि शोचित बात ॥ हम बहु दिनसों भोगत भूमि। द्विज सम दिन ये बितये घूमि ॥ वे निर्द्धन हम धनी अमान ॥ सब बिधिसों सँग बिजय समान ॥ पोच शोच त्यागहु क्षितिनाथ। शतधा गुणो बिजय ममहाथ ॥ दुर्योधनके ऐसे बैन। सुनि धृतराष्ट्रभूप लहिचैन ॥ कहतभये कहु संजय तौन। उतै कितै दलआये कौन ॥ सो सुनिकै संजय मतिमान। कहत भयो सुनु भूप सुजान ॥

सात्वकि चेकितान रणधीर। अरु केकयपति अति रणधीर ॥ द्रुपद बिराट सुतन सह भूप। जरासन्धको सुवन अनूप ॥ अरु नृपधृष्टकेतु बलऐन। एक एक अक्षौहिणि सैन ॥ लैलै उतै आइ सउमंग। चाहत कियो घोर रणरंग ॥ कपिबर श्रीहनुमानहिं ल्याय। पारथ कियो ध्वजस्थ सचाय ॥ दोहा ॥ सिगरे क्षत्री युद्धको गहे उमंग अधर्ष। शीघ्र युद्ध करिकै चहत लीबो बिजय सहर्ष ॥ यहसुनिकै धृतराष्ट्र नृप कहत भयो करि शोच। नाहक लरि चाहतमरो दुर्योधन मतिपोच ॥ भीष्म द्रोण बाह्लीक कृप अरु जे कौरव सर्ब। युद्धकियो चाहत नहीं अनरथ जानि अखर्ब ॥ चौपाई ॥ दुर्योधन भूपति यह सुनिकै। वृद्ध नृपतिसों बोलो गुनिकै ॥ भीष्म द्रोण बाह्लीकहि आदिक। हैं जितने मम अरि हित बादिक ॥ सुनो तातनहिं तासु भरोसे। हम इमि संगर करिबो होंसे ॥ हम अरु कर्ण दुशासन लरिकै। बध अरि बिजय लेब प्रणधरिकै ॥ नहिं मम जीवत पृथ्वी लहिकै। करिहैं भोग पांडुसुत रहिकै ॥ कै हम उन्हें बधब रणमाहीं। कै वे हमकहँ संशय नाहीं ॥ वे महि लहिहैं हम कहँ बधिकै। हम बधि उनकहँ रहब बरधिकै ॥ अब मत और कहै मति कोई। होइहि सो जो होनी होई ॥ यहसुनि नृप अति दुखसों नहिकै। बोले क्रोधानल सों दहिकै ॥ मत्त गजनके कुम्भ बिदारत। गण गण मम सुभट सँहारत ॥ शोणित भरी गदा फरकावत। असुर सरिस भीमहि लखि आवत ॥ अर्जुन सात्वकिके शर झरमें। परिलहि अगणितशायक धरमें ॥ तबमम बचन तात सुधि करिहौ। नहिं अबहीं निजमनमें धरिहौ ॥ इमिकहिकै धृतराष्ट्र महीपति। कही सूतसों बाणी दीपति ॥ संजय तौन भाषु अब मोसों। अर्जुन कृष्ण कहै जो तोसों ॥ सो सुनिकै संजय बरज्ञानी। कहत भयो केशवकी बानी ॥ साम दण्ड अरथनमैं राखे। केशव यहिबिधि मोसों भाखे ॥ दोहा ॥ संजय वृद्धमहीपसों कहियो मम सन्देश। हैसम्मतकीन्हे बिना अनरथको अन्देश ॥ यज्ञ करैं परिवार को लखैं कुशल आनन्द। गहि सुनीत गोपित करैं पूर्बकर्म जे मन्द ॥ जगजेता सुर असुरको अर्जुन बीर अमान। रथ चढ़िकै गांडीवधनु को करिहै सन्धान ॥ तब भिरिकै तासों करै निज रक्षण बिधि जोहि। नहिं धनुधर भट प्रबल अस देखि परतहै मोहिं ॥ सोरठा ॥ धरै बाहुपर भूमि क्षणमें दाहै जगत सब। तिहि

पारथसों भूमि लहै जीति मानुष कहा ॥ एक पार्थ रणधीर करि बिराट पुरमें समर। सब कौरवन सुबीर जीत्यो सो जानत जगत ॥ ताते कह्यो बुझाय भीष्म द्रोण कृपके सुनत। गुणि कुल लक्षण न्याय देहिं सुभूमि युधिष्ठिरहि ॥ केशवके ये बैन सुनि सगर्व पारथ हँस्यो। भीमसेन बल ऐन लखत भयो निज भुजन तन ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणि संजयसम्वादीनाम षोड़शोऽध्यायः ॥ १६ ॥

वैशंपायनउवाच ॥ दोहा ॥ सुनिसँदेश यदुनाथको गुणिलै ऊबिउसास। दुर्योधनसों कहतभो वृद्धभूप मतिरास ॥ जयकरी ॥ सुनोतात बलअबल बिचारि। करिबोउचित बैर प्रणधारि ॥ पांडव सबबिधि प्रबलअमान। पारथभीम महेन्द्रसमान ॥ गुणि उनको बिक्रमव्यवसाय। नींदन बसति पास ममआय ॥ शोच न तजत एकक्षण संग। गुणिगुणि शिथिल होत सबअंग ॥ भीष्म द्रोण कृप आदिक जोन। तिनकहँ तुम वै सम क्षितिरौन ॥ ये रणमें तो अनयबिसूरि। नहिंगहिहैं निरदय प्रणभूरि॥ करषतधनु गांडीव उदण्ड। कार्तिबीर्य सम पारथचण्ड ॥ ओशि करब सम्मतमत मोर। समुझि तात त्यागो हठथोर ॥ यह सुनि दुर्योधन बलऐन। कहत भयोकरि रातेनैन ॥ तजो शोच धरिधीर नरेश। चिन्ता नाशति काज बिशेष ॥ करैं सुरेसौ तासु सहाय। तौ न बचै मम सन्मुख आय ॥ सुरगण सों मम अधिक प्रभाव। मंत्रतेज करतबके भाव ॥ मम प्रभावपरजन कहँ भीति। कबहुं आवत ऐकौ ईति ॥ मेघ अग्नि अहि आतप बात। करि न सकत कबहूं उतपात ॥ हम सुनीति मधि रहतप्रपन्न। है हमसों सब प्रजाप्रसन्न ॥ पांडव हमकहँ जीतन योग। जो होतेकरि अस्त्र प्रयोग ॥ तौरहि तेरहबर्ष मलीन। नहिंबनमें सहते दुखपीन ॥ पांडव सात्विकि कृष्णप्रसस्त। मत्सऔर पांचाल समस्त ॥ ते ममदल सागरमधि आय। जैहैं सरित समान नशाय ॥ भीष्म द्रोण कृप शल्यसमान। हैं हम एक न मिथ्याभान ॥ तात तजौ संशय को लेश। हमसब मारब शत्रु अशेश ॥ दुर्योधनके बचन अमन्द। सुनि

भोकहत कर्ण निरदन्द ॥ भृगुपतिके पगपंकज ध्याय। दिव्यमंत्र मंत्रित शरछाय ॥ हमपांडवन बधब सहसैन। युद्धकरौ कछु संशयहैन॥ भीष्म द्रोण आदिक सबवृद्ध। खरे लखें ममयुद्ध प्रवृद्ध ॥ जयलीबे को भार उदार। है मम ऊपर भू भरतार ॥ वैशंपायनउवाच ॥ सुनि सूतजके बचन अहीन। भीषम बोले जानि मलीन ॥ कतहूवै काल विबशहतचेत। बोलत कुरुकुल नाशन हेत ॥ तीनिलोकमें ऐसो कौन। रणचढ़ि जीतै पार्थहि जौन ॥ जासु सहाय श्रीयदुनाथ। हूवै सु सारथी बिलसत साथ ॥ है तो पास सर्प मुखबान। द्विधाकरी तेहि पार्थ अमान ॥ तोहिं समान अनेकन बीर। क्षणमें बधे पार्थ रणधीर ॥ दोहा ॥ भीषमके येबचन सुनि कर्ण कह्यो करिगौर। बिक्रम लखिबेको कहा सभासदनमें डौर ॥ तुमहूवैहौ जब शांत तब मम बिक्रम उद्दण्ड। लखिहैं सब नृप भटन सह बरषत शायक चण्ड ॥ इमि कहिकै उठि सभाते कर्ण गयो निजगेह। तब दुर्योधन नृपतिसों भीषम कह्योसनेह ॥ भीष्मउवाच ॥ चौपाई ॥ सत्य प्रतिज्ञा कर्ण लखान्यो। प्रथम युद्ध धुर निजपर आन्यो ॥ फिरि ममबध उपरांत लरणको। प्रण कीन्हो अरिसैन दरणको ॥ हम प्रण करत लेहु सुनि सोऊ। सो मति जानै अनुचित कोऊ ॥ दशहजार योधानो स्वारथ। हम निति मारब कहत यथारथ ॥ औरो एक कहत सो सुनिये। जयको लहिबो दुस्तर गुणिये ॥ यह सुनिकै दुर्योधन भाखे। कत मम जयमें संशय राखे ॥ हम उनसों काहेमें कमहैं। हम अरिदल मानवके यमहैं ॥ हम अरु कर्ण दुशासन लरिकै। शत्रुन मारि लेब जय अरिकै ॥ बरु फिरि मख दानादिक करिबै। होब अदोष शास्त्रमत चरिकै ॥ यहसुनि बिदुर कहे सुनु राजा। नहिं यहमत आनँदको साजा ॥ सुबुधि करत सम दमको साधन। रागद्वेष को तजि अवराधन ॥ काम क्रोध लोभादिक जीतै। दान्त कहत सब ताहि सुनीतै ॥ उत्तमलोक दान्त लहि मोदै। सुरन सङ्ग बहुकाल बिनोदै ॥ ताते तात दुखद हठ तजिकै। सम्मतकरो शुद्धमत करिकै ॥ सम्मत किये न आपद आवै। सम्मत करता आनँद पावै ॥ अबहम कहत पूर्व इतिहासा। सुनौ तौन करि यशकी आसा ॥ दोहा ॥ जाल पसार्यो डारि कन ब्याधा बनमें जाय। दोय बिहँग लखि मोहबश परे जाल मधि आय ॥ तब करि सम्मत जाल सह ते उड़िचले

सडोर। लखि ब्याधा धावत चलो गहि गहिबे को गोर॥ तिहि लखि कोऊ द्विजकहो ब्याधा मूढ़ लखात। नभचारीके गहन हित दौरो महि पर जात॥ चौपाई॥ यहसुनि ब्याधकहो विधिअच्छी। तात जालमधि हैं द्वै पच्छी॥ जब आपुस महँ बिग्रह करिहैं। तब ये आइ भूमिपर परिहैं॥ तब ममबश ह्वैहैं यह गुणिकै। हमसँग चलेजात गुणि सुनिकै॥ इमि कहि ब्याध चलो प्रणधरिकै। इतनेमें ते गिरे झगरिकै॥ तब ब्याधा तिनको गहि लीन्हों। जो बिधि मनमान्यो सो कीन्हों॥ तातें कहत सुबुधि सबकोई। बन्धु बिरोध न नीको होई॥ बन्धु बिरोध कहत सब कोऊ। अरिबश परत निबलह्वै दोऊ॥ तातें सुनो सुबुधि पटु सोई। बन्धुनहित करिराखै जोई॥ सिंहसमान बन्धु बन राखै। तौ तिमि बिलसै जिमि अभिलाखै॥ यहसुनि वृद्धभूप हित गहिकै। पांडुसुतनकी गरिमा कहिकै॥ सुत हठगहि दुख गहो अतोलो। आदर करि संजयसों बोलो॥ केशव कहन कहो जब तैसो। तदनु कह्यो पारथ भट कैसो॥ सो सुनि कह्यो सूतसुत ज्ञानी। भूपति सुनु अर्जुनकी बानी॥ पारथधनु गाण्डीवहि फेरत। कहतभयो केशव तन हेरत॥ भीष्म आदि वृद्ध कुरु कुलके। और भूप जे सुमति अतुलके॥ कहियो नृपसों तिनके आगे। कुशल न राज्य लोभसों पागे॥ दोहा॥ गुणिमम धनुधरता बिशद केशव को परभाव। धर्मनृपहि सनमानिकै सादर करै बनाव॥ नातरु धनु गांडीव गत बाण श्रवणपै राखि। सबदल करिदेहौं हवन युद्धयज्ञ अभिलाखि॥ संजयके ऐसेबचन सुनि न सको अनखाय। सभासदनते उठि गयो दुर्योधन क्षितिराय॥ तेहिक्षण गान्धारी कही दुर्योधनहि बुझाय। धर्मभूप तेहिदेहु महि सब अनरथ मिटिजाय॥ तिहि अवसर आयेतहां व्यासदेव मुनिराय। तबफिरि संजयसों कहे भूपति शोचबढ़ाय॥ धृतराष्ट्र उवाच॥ पाण्डुपुत्र ममपुत्रको तुमदेखे सहसैन। इनमें अधिक प्रभावको कहौ कौन मतिऐन॥ संजयउवाच॥ भूपतिसुनि बहुबार फिरिब्रूझत बारंबार। सुनोतौन फिरि कहत हम कासुप्रभाव उदार॥ दोहा॥ एकदिशि सबलोक माधव एकदिशि गुणिलेहु। तऊइतनो भेदसो तुम समुझि उत्तरदेहु॥ सकैनहिंकरि भस्म कृष्णहि सकल जगजनकोपि। सकै करिसब जगत भस्मित कृष्ण अनरथ चोपि॥ तौनकृष्ण सहाय उनके श्रेष्ठवै जगजैन।

बैरकीन्हेंतो सुतनकहँकुशल कबहूंहैन ॥ बचनयह सुनिबोलि पुत्रहिकहो वृद्धनरेश। सुतनसम्मत करौउनसों चाहिकुशलसुनेश ॥ कृष्णउग्रप्रभाव प्रभुहैं जगतकृत अवदात। जाहुताके शरण सादर बचनहित गुणितात ॥ दुर्योधनउवाच ॥ कृष्ण प्रभुभगवानहैं पैकालगुणकेसाथ। जाबनहिं हमशरण उनके कहौमति क्षितिनाथ ॥ भूपतबगान्धारजासों कहतभो अनखाय। मूढ़मानी निज सुतहितुम देहुसबिधि बुझाय॥ गन्धार्य्य उवाच ॥ पुत्रहठतजि गुरुजननको बचन निजहितमानि। लोभ अति ऐश्वर्य्यको तजि धर्मगति अनुमानि ॥ करोरक्षण बंशको अरुदेहु अनरथ टारि। लहैं हमसुत शोक नहिं जेहिकरो तौनबिचारि॥कहेतब धृतराष्ट्र सुतसों व्यास करिअनुमान। करोजननी जनकको अब महतभयसों त्रान ॥ गहोपन्था तौन जातेमृत्यु निग्रसैदूरि। अन्धसुत तुमहोहुमति अतिअन्ध अमरषपूरि॥ व्यासकेसुनि बचन नृपसुत रहतभो हवेमौन। भयोसंजयसोंकहत तब वृद्धउरबीरौन ॥ दोहा ॥ अब उदार प्रभु कृष्णको नामभेद परभाव। कहोतौन संजय कहे पूरित अनुपम चाव ॥ सुनि प्रभभाव प्रभुकृष्णको वृद्ध भूप मतिधाम। शरणागत करि निज मनहिं कीन्हे शुभद प्रणाम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणाङ्काभिगा
मिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन
कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणि
संजयसस्वादसम्पूर्णोनामसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

दोहा ॥ जब संजय हास्तिननगर आये कहन सँदेश। तबउतकेशवसों कहे चिन्तित धर्मनरेश ॥ जयकरी ॥ मित्र मित्र वत्सल तुम तात। आनँद दायक प्रभु अवदात ॥ जेहि कुसमय में रक्षत मित्र। प्राप्तभयो सोदिन अपवित्र ॥ तुमसम आन न मोहित और। तो उपकार करै यहि ठौर ॥ यह सुनि बोले रुक्मिणि रौन। जो तुमकहो करैं हमतौन ॥ सुनि बोलो पांडव नृपमौर। सुनो वृद्ध भूपतिको डौर ॥ दुर्योधन के मतिअनुसार। करन चहत जो अनरथ चार ॥ नहिं कुलधर्म न शास्त्र बिचार। नहिं वृद्धनको बचन अचार ॥ गुणत न करत लोभवश कर्म। लोभी करत न कौन अधर्म ॥ लोभी त्यागि लोककी लाज। करत मोहवश अधरम काज॥ राज्य लोभवश सुमति गवाय। वै कीन्हे बहुबिधि अनिआय ॥ हम सो

सिबसहि तेरहबर्ष। रहे बिपिन महँ त्यागि अमर्ष॥ तब जो कीन्हे रहे न बन्ध। अब नहिं करत तौन मतिअन्ध। हम सबभांति लहो दुख पीन। अबनहिं रहो जातहवै दीन॥ महापाप को फल दुखदान। नहिं दरिद्र ते रौरव आन॥ अवशि परो अब करिबो युद्ध। दुष्टभोगते मरिबो शुद्ध॥ पै दुहुंदिशिते हित बध देखि। मोहिं होत निरवेद बिशेखि॥ ताते इतो कहत सांबधान। राजा पिता महामतिमान॥ ये सबभांति आदरन योग। यदपि करैं अनुचित उपयोग॥ नृप पितृव्य वृद्ध मतिमान। पुत्र नेहबश भयो अयान॥ अब कर्त्तव्य कौन उपचार। कहो तौन सरबज्ञ उदार॥ यहसुनि कहे कृष्ण अवदात। कुशलहेत दुहुंदिशि के तात॥ हमहूं वृद्ध भूप पहँ जाय। नीतिधर्म सब कहब बुझाय॥ मृत्यु पासते मोचन होय। सबसों कहब तौनबिधि जोय॥ सुनि नृपधर्म कहे बिधि जोहि। जाब आपु कहत रुचत न मोहिं॥ दुर्योधन है महा मलीन। नहिं मानी तो बचन अहीन॥ तब फिरि बढ़ी अधिक उत्पात। महा कुआगम मोहिं लखात॥ यहसुनि कहे कृष्ण अनुमानि। उचित बूझाय कहब हितमानि॥ जौ नहिं मनि है गहि हठरोष। तौहम जगमें होब अदोष॥ सब उन कहँ निन्दी सबकाल। तुम लहिहौ यश बिजय बिशाल॥ किये सभा में अनुचित जौन। ताते उन्हें न निन्दत कौन॥ तुम सन्तोष किये जो भूप। ताते पसरो सुयश अनूप॥ निन्दित जीवत मरो समान। मरेहु जियत सम यशी सुजान॥ दोहा॥ कृष्णचन्द्रके बचन सुनि कहे युधिष्ठिर भूप। करौ जु मम कल्याणहित भावै मंत्र अनूप॥ भीमसेन यहसुनि कहे कृष्ण कहो तिमि जाय। जेहिप्रकार कुरुबंश को नाशहेतु मिटि जाय॥ पै न चेति सम्मत करी दुर्योधन मतिमन्द। गरबी दोषी पापरत कुलघालक निरदन्द॥ जो हटगहि तो बचनको नहिं करिहै स्वीकार। तौ बधिहौं करि गदाको दारुण दुसह प्रहार॥ चौपाई॥ इमि कहि निज बिक्रमकी गुरता। कह्यो भीमकरि गौरव पुरता॥ सो सुनि कृष्ण मुदितहवै सिधिसों। कीन्हीं तासु प्रशंसा बिधिसों॥ कहे युद्धको भार अमाना। है तो जन भीम बलवाना॥ अर्जुन नहिं रण करिबा चाहत। जऊ अकिञ्चन॥ दानीअवगाहत॥ यहसुनि कह्यो पार्थ अनुमानी। सत्य कह्यो तुम केशव भुनज्ञ॥ ताको हेत कहत सो सुनिये। नहिं मरिबेमें कादर गुणिये

नहिं अरिबिक्रम कोमयआनै। नहिंनिजसम औरहि अनुमानें ॥ अनरथ लखत युद्धके कीन्हें। नृपबंशन परबिपदा चीन्हें॥ अन्त बिषाद ग्लानि को करिबो। अरुबिषमाद सिन्धुमधि परिबो ॥ मोहिंपरत लखि प्रभुहम ताते। नहिंचाहत रण निजहि अराते। प्रथम फलोदय गुणिलखि लीजै। तब कारजको रम्भन कीजै ॥ जाकोअन्त जाहिनहिं सूझै। उचित ताहिसो वृद्ध न बूझै॥ सुबुधि अरम्भै कारजसोई। जाकरअन्त सोहावन होई ॥ प्रगट अनर्थ परतलखि जामें। कैसेतौन काजहम कामें ॥ हैअनित्य जगजानत सोऊ। निधनीधनी मरत सबकोऊ ॥ नहिं हित बन्धु न बधिबोचाहैं। कुलरक्षण कोहेतु उमाहैं ॥ दोहा ॥ देवचहत जोहोतहै पुरुष पराक्रम ब्यर्थ। मूढ़भावना करि मरत हाथ न आवतस्वर्थ॥दुरमतिदुर्योधन कियो जितने कुत्सित कर्म। तेसब तीक्षण भल्लसमहैं बेधनमम मर्म ॥ ताहूपर अनरथ समुझि चाहत सम ब्यवहार। रुचिहि आपु कहँ करबसो तुम ममसुहित उदार॥ चोपाई ॥ यहसुनि कह्यो कृष्णहितकारी। सांचकह्यो पारथरणचारी ॥ चाहत दैवहोतहै सोई। तदपि कहतपंडित सबकोई ॥ सुजतन करब एरुषकहँ चाहत। पटुकरि सुजतन काम उमाहत ॥ निजकर अरथ न देत बिधाता। हैरम्भित कारजको त्राता ॥ सुजतनकिये अरथनहिं पावै। जबतब भारदैवपरलावै ॥ क्षत्रिहि उचित न गुणिबो येतो। क्षात्रधर्मकी पदवीहेतो॥ बर्णआश्रम धर्मसोहायो। करिबो उचित बड़ेनको गायो ॥ तुमदुर्योधन कोमत जानत। नहिं बहराज्य देन अनुमानत ॥ चाहतलेन धर्मक्षिति नायक। नहिंयह अनरथ बरिबेलायक ॥ शकुनि दुशासन कर्णकुमंत्री। हैंअनरथ बिधि साधकतंत्री ॥ इनहीं मंत्रजुवाको कीन्हों। छलकरिकै सरबस हरिलीन्हों॥ जैसोमंत्री तैसो राजा। हैसबबिधि अनरथको साजा ॥ नहिं एजियत सामबिधिबरि हैं। लरितो बाणानलसों जरिहैं ॥ जानत इतो तदपि उनपाहीं। जाय बुझाइब अनुचितनाहीं ॥ अनरथमूल युद्धनहिंहोई। पारथमोहिं रुचतबिधिसोई ॥ पैउनकी कुत्सित मतिजोहीं। सामहोब गुणिपरत न मोहीं ॥ नकुलउवाच ॥ दोहा ॥ धर्मभीम अरु फाल्गुण कहे सुने सो बैन। देशकाल अनुमान करि उचित करो मतिऐन ॥ तैसो मत करतव्य गुणि जैसोकारज लेश काज काजपर मंत्र है तोष अतोष बिशेष ॥ श्रीमत नृप धरमज्ञ

को गुणि सम्मत अनुमान। आपु कहब कुरुसभा मधि शांतबचन सुख-दान ॥ चौपाई ॥ जो तो मत नहिं निजहित गुणि हैं। तो गाण्डीव धनुष धुनि सुनिहैं ॥ जब अस आय रहेहम बनमें। तब जय लेवगुणत हे मनमें ॥ अब तो कृपा बसत मम गोहन। भूप समूह सैन सहसोहन ॥ अबकोअसजो सनुख थिरिकै। सकैयुद्ध करिबलसों भिरिकै ॥ यहसुनि कै सहदेव अमाना। बोलोबीर बिदित बलवाना ॥ मम मतसुनो वृष्णि कुलनायक। अबनहिं सम्मत करिबे लायक ॥ सम्मत करिबो चाहेओ-ई। तौतुम करियो बातसोई ॥ जातेहोय युद्ध मनभायो। मिटैशोच जो हियमें छायो। उनकोनाश लखब नहिं जबलों। हियदाहत क्रोधानल तबलों ॥ द्रुपद सुतहि जोदेखौ तैसे। यदुपति मिटहि क्रोधअब कैसे ॥ यह सुनिकै सात्यकि रणचारी। बोलोबचन बीररस भारी ॥ सत्यकहत सहदेव सुबीरा। बनदुख समुझि होत अतिपीरा ॥ द्रुपदसुता के कच गहिबेको। गरबित कटुबाणी कहिबेको ॥ बिनु दुर्योधनके बधदेखे। नहिं पाण्डवन शांति ममलेख ॥ बचन कह्यो माद्रीसुत जोई। सब सुभटन को सम्मत सोई ॥ यह सुनिकै सबसुभट उछाहे। बहुप्रकार सात्यकिहि सराहे ॥ दोहा ॥ तहँ सराहिकै सात्यकिहि द्रुपदसुता दुखधारि। कहत भईइमि कृष्णसों भरे बिलोचन बारि ॥ जोकीन्ही ममदुर्दशा सभामध्य गहि ल्याय। सोसब जानत कृष्णतुम काअब कहौंबुझाय ॥ जो अवाच्य पाण्डवनकहँ कहेसुने तुमतौन। यथा निकासे जिमिनिकसि लहे बिपिन दुख जौन ॥ सोसब जानत कृष्णतुम अब ममबिनती मानि। मतिदुर्यो-धनपर कृपाकरो धर्मअनुमानि ॥ हठि अबध्यको बधकिये दोषहोत जिहि रीति। तथा बध्यकहँ बिनुबधे दोषहोय यहनीति ॥ चौपाई ॥ पांचगांव ये मांगत जोऊ। दुर्योधन नहिंदेइहि सोऊ ॥ ऐसे शठसों सम्मत करिबो। हैकादरतापन अनुसरिबो ॥ क्षत्रीबधत क्षत्रियहि रणमें। आपन तोष अक्षत्री मनमें ॥ उभय बंशममभूमि बिलासी। ताकोकह्योकेश गहिदासी ॥ मम भरतार दाससम ह्वैकै। लखतरहे निजबिक्रम ग्वैकै ॥ ऐंचत चीर विपुलता सुनिकै। नृपधृतराष्ट्र हियेमें गुणिकै ॥ बरमागन भाष्यो संको-चन। तब हमकियो दासपन मोचन ॥ करि निबन्ध तबगे बनमाहीं। अजहुं तौनमत छूटत नाहीं ॥ चखजल मोचति यहिबिधि कहिकै। बाम

पाणिसों शुचि कचगहिकै ॥ जाय कृष्णके निकट सयानी। कहत भई अति आरत बानी ॥ मरदित दुःशासनक करसों। ममकच कृष्ण लखो चखबरसों ॥ इन्हैंपेखि तबसम्मत कीबो। भूपहिव हो धर्म्मपथ लीबो ॥ भीम आरजुन सम्मत चाहैं। जोनहिं करिबो युद्धउमाहैं ॥ तौ ममपिता सहित सुतसेना। अरुमम पांचपुत्र जगजेना ॥ अरु अभिमन्यु बीरबर भिरिकै। लरिहैं क्षात्रधर्म्मपथ थिरिकै ॥ लरि सुयोधनहिं बधिजयलेहैं। ममहिय दुखलोपित करिदेहैं ॥ दोहा ॥ दुःशासनकी भुजकटो लखोबिना महिबीच। नहिं कलपावत ममहियो कलपावत दुखनीच ॥ कहे भीम कहँ दुर्बचन ममहिय बेधत तौन। गह्यो चहतअब धर्मपथ जौनभीम बल भौन ॥ इमि कहिकै गदगद गरेरुदति भईसोबाम। तबतासों इमिकहत भे केशव आनँदधाम ॥ तजो शोचकछु दिवसमें लखिहौ चाहति जौन। हैअमोघयह बचनमम बारिसकै तिहिकौन ॥ सिंगरेसुत धृतराष्ट्रके महि पर परंअप्राण। लखिहौपरे शृगालबश कौनसकै करित्राण ॥ सोरठा ॥ मुदमंगलके ऐन कृष्णचन्द्रके बचनसुनि। द्रुपदसुता लहिचैन मौनरही प्रभु ध्यानधरि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणि भगवतदूतगमननामाष्टदशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

वैशंपायनउवाच ॥ दोहा ॥ द्रुपदसुता अरुकृष्णके सुनिकै बचन सनेम। कृष्णचन्द्रसों कहतभे अर्जुन चाहत क्षेम ॥ कुरुपांडव ये दुहुंन के तुम सम्बन्धी तात। अरुसब नृपके सहितनुम आनँद दायक ख्यात ॥ शांति बचन बिधिवत कहेहु जगत कुशलके हेत। प्रीतिनीति जातेगहै दुर्योधन करिचेत ॥ जयकरी ॥ यहकरि सुनिकेशव अनुमान। कहे कहब हमउचित बिधान ॥ जाते होइहि सम्मत अक्ष। सोईकहब करब परतक्ष ॥ जोमम कहो न करिहैं कान। तौजानो भावी बलवान ॥ इमिकहि कृष्ण करत परमात। करिकै प्रातकृत्य अवदात ॥ पूजि भूसुरन सुनि स्वस्त्ययैन। सात्विकिसों इमिकहे सुबैन ॥ शंखचक्र अरुगदा उदण्ड। असितूणीरकठिन कोदण्ड ॥ सुयतनधरो सुरथपर ल्याय। शत्रुहि साजुन जानब न्याय ॥

निज अरिमित्र शत्रुजो होय। तहां निरायुध जात न कोय॥ यहसुनिकै सात्वकि मतिमान। सायुधकिये सुरथ सुखदान॥ मणिकंचनसों रचित अनूप। मेरु शिखरसम अनुपम रूप॥ परम सोहावन खगपति केतु। मानहुं नभसागरको सेतु॥ सैव्यबलाहकअति अभिराम॥मेघपुष्पसुग्रीव सुनाम॥ बाहकजासु तुरँग ये चारि। तेहि रथचढ़े कृष्ण मुदधारि॥ सात्यकि सहित सुआनँद पूरि। चले पसारत परमाभूरि॥ धर्म्म भूपसब नृपन समेत। चले पठावन आनँद लेत॥ प्रभुहि प्रशंसिधर्म्म क्षिति-पाल। यहिविधि कहतभये तेहिकाल॥ सकल धर्म्मज्ञाता तुम तात। परम सुहित ममहौ बिख्यात॥ तुमसों कहौं सिखापन कौन। कहेहु कुशल हितभावै जौन॥ सब वृद्धनसों सुबचन साम। कहि कहियोमम विनय प्रणाम॥ पुत्रदरश बिनुदुखी अपार। मम मातहि देखेहु करि प्यार॥ मम दिशित करिबन्दन चाहि। प्रभुकरियो आश्वाशित ताहि॥ यहि प्रकार कहि धर्म्मनरेश। फिरे कृष्णको पाइनिदेश॥ नृप तेहिक्षण अर्जुन रणधीर। कहे कृष्णसों बचन गँधीर॥ प्रभु उनसों कहियोसमु-झाय। मोहलोभ बलगर्ब बिहाय॥ कुशल बिचारि देहिंअब तौन। आधोराज्य हमारो जौन॥ नहिंदेहैं तबकी बिधि भन्त। करिहौं सब क्षत्रिणको अन्त॥ यहसुनि मोदि भीमबलवान। गरबी गरजो मेघस-मान॥ करि केशवहि प्रदक्षिण सर्ब। फिरि आवतभे पूरित गर्ब॥ दश हजार पैदर रणधीर। दशहजार हयसादी बीर॥ शतसारथी अनगिने चार। संगगये मुदभरे उदार॥ सुनत लखत शुचिसगुण सभेव। चले कृष्ण देवनके देव॥ नारद मरुत शुक्र सुखदाय। भृगुवशिष्ठ क्रथकुशिक सचाय॥ बामदेव बाह्लीक सुमम। प्रभुहिं प्रदक्षिणकियेसप्रेम॥ परशु-राम विप्रणसह आय। मिले कृष्णसों आनँद छाय॥ दोहा॥ पूजितिन्हैं करि वारता रथचढ़ि बरचस धाम। चलेकृष्ण निरखत सुखद बनगिरि सरिता ग्राम॥ दिनबिताइ सन्ध्या निरखि जायवृकस्थल ग्राम। कृष्ण चन्द्र सेनासहित करतभये बिश्राम॥ सन्ध्याबन्दन ज्ञादितहँ करि कर-तव्य समस्त। सबिधि अहार बिहारकरि बितईनिशा प्रशस्त॥ चौपाई॥ उत धृतराष्ट्र भूपमन भावत। सुने चारमुख केशव आवत॥ भीषमद्रोण आदिसब जनसों। यहिबिधि कहत भयेगुणि मनसों॥ सुनिअतिकृष्ण

नीति मगचारी। आवत पाण्डव हित निधिधारी॥ केशव हमहिं मान्य सब बिधिसों। पूजनयोग सदा सब रिधिसों॥ आनँददानि कृष्ण को पूजन। दुखदायक नहिं पूजब कूजन॥ ताते बिधिवत पूजन करिकै। सादर आनहु आनँद धरिकै॥ यह सुनि दुर्योधन क्षितिनायक। पिता बचन गुणि करिबे लायक॥ देश देशमें हुकुम पठाये। थरथर बसनबास बनवाये॥ यथाउचित सब सौंज धराये। इस्त्री दासी दास सोहाये॥ अतर गुलाब सुमन मनमाने। शय्या बसन सुसौरभ साने॥ सुखदस्वाद सबबिधिके भोजन। योजित कीन्हे योजन योजन॥ यहिबिधि सब थर निरमित सुनिकै। नृप धृतराष्ट्र कहत भो गुणिकै॥ केशव तीनिलोकके स्वामी। प्रभु न्यामक नागान्तकगामी॥ इत आवत पूजन हित ताके। पुरमें निरमित करो पताके॥ पुर बीथिनकी रचना कीजै। प्रति द्वारन तोरण रचि दीजै॥ तरुणी यूथ कुंभ भरि भरिकै। रहैं बिचित्र बसन धरि धरिकै॥ दोहा॥ बिनु दुर्योधन पुत्र सब अरु पौत्र मम सर्ब। आगे बढ़िकै कृष्ण कहँ ल्यावहिं जानि सुपर्ब॥ चारिचारि तुरँगन सहित रत्नहेम अरु अक्ष। देहु सुरथ षोड़श द्विरद बसु सह अनुचर दक्ष॥ आबिक दीजै परबतो सहस अठारह ताहि। सहस बाह दीजै सनुद चीन देश भवचाहि॥ रत्नन भूषित दीजिये शतदासी शतदास। दुःशासनके गेहमें देहु कृष्णकहँ बास॥ हय गज अरु सब पुरुषप्रति अठगुण भोजन देहु। मणि भूषण दै पदकमल सेवहु सहित सनेहु॥ रोला॥ बचन यहसुनि बिदुर बोले भूप तुम मतिमान। उचित जो कर्त्तव्य सो बिधि कहत सहित बिधान॥ जानि तो वृत्तांत अबहम कहतहैं यह टेरि। कृष्ण नहिंतो सुबसह्वैहैं दान सेवा हेरि॥ प्राण सम प्रिय पार्थ उन कहँ तथा पांडव सर्ब। त्यागि निजहित मिलत औरहि छली पापी खर्ब॥ जानि महिमा कृष्णकी अरु उचित बिधि अनुमानि। कहैं केशव जौन सोई करो निजहित जानि॥ नगर भूषित किये आगे गये दीन्हे रत्न। त्यागिहैं नहिं पाण्डवनको संग कृष्णसयत्न॥ दुर्योधनउवाच॥ भूपभाषत बिदुर जो सो सांच मिथ्या एक। जौन उनको कहो करिबो कहत तजिकै टेक॥ पूज्य जगमें कृष्ण सतिपै बसत अरिके संग। पूजि गजरथ रत्न दीबो न्यायको नहिं अंग॥ भीष्मउवाच॥ करो अति सत्कारकै मति करो

कछु सत्कार। नेकु अनुचित मानिहैं नहिं कृष्ण सुबुधि उदार॥ पांडवन सों तो सुतनसों चाहि सम्मत रीति। कृष्ण आवत कहन जगकी कुशल कारक नीति॥ कृष्णप्रभु धर्मात्मा को कहो करिबेयोग। बंश रक्षणहेतु नृपयह परम सुहित प्रयोग॥ दुर्योधनउवाच॥ पितामह जोकहत सोनहिं भूप तिनको धर्म। कहत हमलहि समय ऐसो नृपनको जो कर्म॥ पकरि कृष्णहि बांधि कारागेहमें करिदेहु। सुनत पांडव भागिजैहैं बिजय सहजहि लेहु॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ पुत्र ऐसो कहो मति नहिं उचित ऐसो तात। कृष्ण सम्बन्धी तदपिह्वै दूत आवत ख्यात॥ भीष्मउवाच॥ भूप तो सुत महा दुरमति कहत कुत्सित बैन। कहो बांधै कृष्ण कहँ अस कौन है जगजैन॥दुसह याके बचननहिं सहिसकतहै ममकान। भाषि इमिउठि गये भीषम जीवसम मतिमान॥ उतै रजनि बिताइ प्रभुकरि प्रातकृत्य सनेम। नौमि बिप्रण सुनत आशिष सुरथ चढ़ि गुणिक्षेम॥ चले सेवित वृकस्थल पति नृपतिसों सहसैन। इतै कौरव चले आगे जानि प्रभुता ऐन॥ बिना दुर्योधन नृपनके सुतनके समुदाय। द्रोण कृप बाह्लीक भीषम आदि आनँदछाय॥ जायपथमें कृष्णसों मिलि किये नगरप्रवेश। परम शोभित भयो तेहिक्षण नगरबीथी देश॥ नारिनर सब उमँगिठाढे भये परमापूरि। देखिलोचन सफल करिकरि लहत आनँदभूरि॥युवति कितनी लखतिठाढ़ीं जालरन्ध्रण लागि। लागि गवाक्षन रहीं कितिक मृगाक्षिणी मुदपागि॥ लखतपुरछबि देत आनँद राज गृहमधि जाय। जाय तिसरे चौक उतरे सुरथते सुखदाय॥ वृद्धनृप बढ़ि जाय आगे कियो पूजन पर्म। यथा वय प्रभु मिले सबसों भाषि सुबचन मर्म॥ पूजि कृष्णहि सबिधि भूपति सभा गृहमधि ल्याय। हेम मणिमय रचित आसन तासुपर बैठाय॥ किये मधुपरकादि को सतकार चाहत जौन। कुशल परशन भये बूझत कहे रुक्मणि रौन॥ कछू क्षण रहि तहां नृपसों बिदाह्वै यदुराय। बिदुरके गृहजाय निवसत भये सुख सरसाय॥ भरे आनँद बिदुर बिधिवत पूजि प्रभुकेपाय। भये बूझत पांडवनको कुशल प्रीति बढ़ाय॥ कृष्ण चेष्टा पांडवन की सबिधि तासों भाषि। रहे कछु दिन पृथाकेढिग गये अति अभिलाषि॥ देखि कृष्णहिं मिली कुन्ती करत रोदनभूरि। कृष्ण श्वासित किये कहिकै बचन ऋजुता पूरि॥

भरे चखहिय गरो कुन्ती भई बूझत आसु । रहे सेवत तुमहिं तुमहौ करत पालन जासु ॥ गये काढ़े राज्यते ते रुदत मोकहँ त्यागि । जाय निरजन बिपिन मधि किमि रहे अति दुखपागि ॥ भेरि शंख मृदंगधुनि सुनि बन्दिजनके बैन । रहे जागत सुने जम्बुकनाद ते बलऐन ॥ दोहा ॥ बहुप्रकार दुखसहि रहे द्वादशवर्ष अचैन । बर्षएक अज्ञात बसि भये प्रगट जगजैन ॥ जे जेता सुर असुरके प्रगट पराक्रम जासु । बरुण शक्र यम रुद्र सम करता संगर आसु ॥ केशव तेसब सुवन मम हैं कैसे यहि काल । अब का करिबो चहतहैं जेठो सुत क्षितिपाल ॥ चौपाई ॥ अयुत नागबल भीम अमाना । अब का कियो चहत बलवाना ॥ तिमि धनुधर जिमि बिदित पिनाकी । सुरपति लहत न समता जाकी ॥ सो अर्जुन चाहत का कीबो । गुणत न गुणत भूमिको लीबो ॥ माद्रीसुत दुर्मदभट नायक । सकल जगतके जीतन लायक ॥ हैं कैसे किमि दिवस बितावत । बिनु देखे दुख मोहिं सतावत ॥ पुत्रनते मोहिं अधिक पिआरी । कहो कुशलहै द्रुपददुलारी ॥ नहिं धन हरिबेको दुख मोहीं । नहिं बनगमन सुतनको जोहीं ॥ जितनो दुख कटुबचन कहनको । द्रुपदसुता के केश गहनको ॥ युवतिधर्मयुत बैठी जोही । धारे एक बसन अति सोही ॥ कचगहि तासु सभामधि ल्यायो । सो दुख तात न दुरत दुरायो ॥ पराधीन परि हम दिन खोवति । निज पूरब अघफल गुणि रोवति ॥ तुमसे जासु हितू प्रभु त्राता । तिहि ऐसे दुखदेत बिधाता ॥ जेहिप्रकार यहि दुखसों मोचन । होय करौ सो राजिवलोचन ॥ केशव जाय मौन मति रहियो । भीमार्जुनसों इमि सब कहियो ॥ क्षत्री जेहिहित प्रगटत जगमें । प्राप्तभयो अब सोदिन अगमें ॥ अति बिक्रम करि महिधर लीन्हों । बुधन तजत तेहि बिनुश्रम कीन्हों ॥ दोहा ॥ कुन्तीके ये बचन सुनि कहे कृष्ण भगवान । कोतुमसी शोमन्तिनी भाग्यवान मतिमान ॥ अति उत्तमकुलजात तुम उत्तम कुलमें प्राप्त । उत्तम पुत्रनकी जननि जे मत अतिप्रिय आप्त ॥ अतिसम्पति अरुबिपति लहत महत जनजौन । घटतबढ़त निशि नाथ हैं नहिं तारागण तौन ॥ अतिसुख अतिदुख सहतहैं जेतुम सरिस महान । नहिंलघुजन गहिसकतहैं सुख दुखभोग बिधान ॥ धनलहि करत प्रमाद लघु दुख लहि हाहाकार । साधुरहत जिमि बहतदृख गुरखारी

को भार ॥ चौपाई ॥ दुर्योधन की कुलमति रजनी । तामधि सोयपाण्डु सुत परनी ॥ बहुदिन कुत्सित सपनसमाना। भोगकिये दुखदुसह अमाना ॥ अबतौ पाइसुदिन दिनजागे । मिलिसुहितन सो अनँद पागे ॥ रणमहिसभा सदनमधि धसिकै। अतिबिक्रम पटुताकरि लसिकै ॥ बिजय गुणी गुणगरिमा लहिकै। लेहैंराज्य सुखहिमुदगहिकै ॥ तजौशोच अब धीरज धरिकै। लखिहौ सुतनमोद सों भरिकै ॥ द्रुपदसुता अरु सुवन तिहारे । कहे प्रणाम सुबिनय बिहारे ॥ सुनिकुन्ती बोलीलहि आनँद। होतुमकृष्ण अभैबरदानद ॥ धर्मपाहि सब सुखके दायक । ममपुत्रनके परम सहायक ॥ होतुम केशव करिहौ रोचित । करौशीघ्र जोगुणो यथोचित ॥ सुनिह्वै बिदाकृष्ण कुबिछाये । दुर्योधन नृपके घरआये ॥ हय गजरथ सुभटन सों राजित । कुरीदार गणसों कुबिछाजित ॥ दोय कक्ष चलिपरम सुखारी । गेप्रसादचढ़ि गिरिवर धारी ॥ भरोओज जहँबाहेर अन्दर । तहँदुर्योधन यथा पुरन्दर ॥ सिंहासन परबैठो राजा । बैठेअगणित भूपसमाजा ॥ शकुनि दुशासन करण यशीले । भूपतिके ढ़िगलसे लसीले ॥ दोहा ॥ दुर्योधन कृष्णहिं निरखि उठिचलि नृपनसमेत । पूजिल्याय पर्य्यंक परबैठायो मुदलेत ॥ बिप्र सबिधि मधुपर्क सो अरपन कियेसप्रेम । भोजनार्थ फिरिकहत भे हियेचाहि निजक्षेम ॥ सोनहिंमान्यो कृष्णप्रभु तब दुर्योधन भूप । हियेकपट ऋजुता प्रगट बोलो बचन अनूप ॥ चौपाई ॥ जिमि तुमपांडव के अनुबन्धी । तेहि प्रकार हौमम संबन्धी ॥ हौदोउन के हिता हितकरता । सबबिधि ज्ञाता सतपथचरता ॥ नहिंमम अन्न गहत केहिकरण । सोकहि करिये शोच निवारण ॥ कृष्ण कहे तुम भेद न पाये । हमगहि दूतभाव इतआये ॥ दूतजात जाको हित चालन । सुधरम तासुअर्थ प्रतिपालन ॥ दूतहि उचित अरथ सिधिकरिबो। नहिं भरिउदर मोदहिय भरिबो ॥ यहसुनिबोलो कुरुकुल नायक । ऐसोतुम्हैं न कहिबे लायक ॥ तुमचाहो आवोतेहि भावन । हौदोउन के हित मनभावन ॥ अर्थ सिद्धकीन्हें बिनुकीन्हें । भोजन करव उचित बिधि चीन्हें ॥ हमहिं तुमहिं हौ बैर न कबहूं । भयोनहीं कछु बिग्रहअबहूं ॥ यथा उचित हमतुमकहँ पूजे । सम्बन्धी गुणि सुबचन कूजे ॥ तुमकहँ उचित न इबिधि जुदाई । एकहि मानब प्रीति बढ़ाई ॥ यहसुनि सब नृपतिन

तनदेखी। बोलेकेशव विधिअवरेखी बैरलोभ ईर्षाबश हवेकै। नहिं हम तजत धर्महित ज्वैकै॥ पांडव सबदिनते ममसंगी। तिन सों हमसों प्रीति अभंगी॥ तासु अहित ममअहित यथारथ। तासुहितू ममहित जिमि पारथ॥ दोहा॥ हैं सब पांडव धर्मरत अधरमरत तोचाल। गोतबंश पालन करैं सो धर्मी सबकाल॥ अधर्मता को अन्नहम ग्रहण करत नहिं तात। जायबिदुर घर खावअब शुचि सुअन्न अवदात॥ इमि कहिकै उठिकृष्ण प्रभुगये बिदुरकेगेह। द्रोण भीष्म बाह्लीक कृत गयेतहां गहिनेह॥ कृष्णातिन्हें कीन्हें बिदा तबछत्ता सुखपाय। भोजन करवाये प्रभुहि प्रेमभक्ति अधिकाय॥ सोरठा॥ बिप्रन अरचि सनेह भोजनकीन्हें कृष्ण प्रभु। भक्ति भाव अरु प्रेमके गाहत करुणायतन॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउहितनारायणस्याज्ञागामिनाश्रीबंदीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिभगवतोदूतरूपहस्तिनापुरागमनोनामनवविंशोध्यायः॥ १९॥

दोहा॥ कृष्ण चन्द्रकहँ स्वस्थलखि निशिलहि बिदुर प्रवीन। बिननय पूर्वक कहतभो बचन यथार्थ अहीन॥ जयकरी॥ तोआगमन बिश्व भरतार। मोहिंपरत गुणि अनुचिन चार॥ मानी मानहरण अतिमूढ़। हैदुर्योधन गर्बारूढ़॥ कपटी कठिन हियो अकृतज्ञ। आत्मसुखी कामात्मा अज्ञ॥ वृद्धनको मत लम्बनहार। धर्मशास्त्र परदारत छार॥ यहि बिधि पूरित अगनितदोष। नहिंमानो ताबचन अदोष॥ भीष्मद्रोणकृप द्रोणकुमार। कर्ण पराक्रम सिन्धुअपार॥ ताकोगहे गरब अभिमान। चाहतकियो युद्धनहिं आन॥ जानत भीष्म कर्णसों नेक। नहिंलरिसकिहैं पांडव एक॥ सकल पांडवन जातन अर्थ। एककर्ण कहँ गुणत समर्थ॥ यहिबिधि पूरित कुमति अबुद्ध। कियो चहतनहिं सम्मत शुद्ध॥ तेहि शठढिग तो बचन प्रमान। होइहि यथाबधिर ढिगगान॥ तुमतासों मतिकहो सुतंत्र। द्विज चांडालहि देत न मंत्र॥ तासुसभा मधिजाब तुम्हार। मोहिं न रुचत जानिब्यवहार॥ महाबाहु तुमयदपि अमान। तदपि प्रेमबश कहतबिधान॥ सहसाकर्मी कुटिल कठोर। हैदुर्योधन छली अथोर॥ समुझि न मोमन गहत उछाह। प्रभुमति तासुभटन मधिजाह॥

दोहा ॥ यहसुनि के केशव कह्यो सांच कहत तुमतोन। शुचि सुधर्म रत ममहित तुमसम दूजोकौन ॥ दुष्ट दुरात्मा दुर्मती दुराचारमें दक्ष। दारुण दुर्योधन छलीहम जानत परतक्ष ॥ पैजब कुरु पांडवन को ह्वैहै युद्ध। अमान तब सब क्षत्री बंशको ह्वै है नाश महान ॥ ताको जो वारण करै तौ न लहै अतिधर्म। यह गुणिहम वारण चहत द्रोणयुद्ध हठकर्म ॥ सोरठा ॥ सबविधि कहब बुझाय हितगुणि है तौ अतिभलो। नातरु नीति सुनायहोब अदोषी जगत में ॥ यहि विधि कहत सुबैन निशि निशीथ बेला निरखि। केशव कीन्हों शैन क्षीरसिंधु समशेय मधि ॥ चौपाई ॥ निशि बिताय बारिज दुंदुभि धुनि। बंदीजनसों स्तुति पदसुनि ॥ जागिशैन तजि आनँद पागे। प्रात सुकृत्य करन प्रभु लाग॥ तेहि क्षण भीष्म द्रोण मनभाये। दुर्योधन अदिकतहँआये ॥ करि सबको सत्कार सुभावन। बैठाये माधव मनभावन ॥ प्रात कृत्यकरि आनँद लीन्हे। विधिवत दान द्विजन कहं दीन्हे ॥ सुबसन धारि सुरथ पर चढ़िकै। चलेसकल दिशिसुखमा मढ़िकै ॥ सहित कौरवन कौरवना यक। यदुबंशिन सहसात्वकि चायक ॥ रथ चढ़िचले सकल दिशिरहिकै। कृष्णहि निरखत आनँदगहिकै। गजरथ पैदर भट हय सादी। अगणित चले कृष्ण गुणगादी ॥ अगणित क्षीरदार छबि धारत। चले यथोचित बचन उचारत ॥ दुन्दुभि शंख सुखदधुनि बाजे। अगणितचारु पताके राजे ॥ भूपनिरखि तेहि क्षणकी शोभा। भयो सुरेशहु के मन क्षोभा ॥ धुरिधारा सबदिशिमें छाई। हय हींसनि रथकी धुनि धाई ॥ नर नारीतजि काज उमहिकै। लखतभये अतिआनँद लहिकै ॥ सौधन बालबदन इमि राजे। मनुनभ अगणित बिधु छबिछाजे ॥ अगणितरंग बसन लखिजाने। मनु तनुतन घन झुकेलोभाने ॥ दोहा ॥ जाय समागृह द्वारपर रथतजि लखि भटकोद। करगहि सात्वकिबीर को चलतभये सहमोद ॥ सहभीषम द्रोणादि द्विज प्रभुसँगचले सहर्ष। कृत बर्मादिक वृष्णिसब पीछे चले अधर्ष ॥ प्रभुआगम लखि वृद्धनृप उठि सबनृपन समेत। चलि आगे लैकै सबहि बैठाये करिहेत ॥ रोला ॥ हेम मणिमय चारु आसन कृष्ण तापैराजि। नारदादिक मुनिन नभपर लखे सुखमासाजि ॥ भीष्मसों इमिकहे आवत सुमुनि नारदआदि। बिरचि

आसन अगरि आनौ विनय सुवचननादि ॥ भीष्म आज्ञादेइ भृत्यनवि-
रचि आसनबेष। द्वारलौं चलिपूजि ल्याये जानि मंगलबेष ॥ नौमिवि-
धिवत मुनिन करिकै आसनस्थ अमन्द। सहित नृपगण भयेबैठत कृष्ण
यदुकुलचन्द ॥ बैठिसिगरे मौन रहितहँ रहे कृष्णहिदेखि। कृष्ण तब
इमि वृद्धनृपसों कहतभे अवरेखि ॥ होइजेहि कुरुपांडवनको सुखदसंमत
अक्ष। करो सोहम इतोजाचन इतै आयेदक्ष ॥ नाशबीरनको भये बिनु
करोसम्मत तात। नहीं हमकछु और मांगत कहत इतनी बात ॥ परम
उत्तम अतिप्रशंसित बिदितजो कुरुबंश। भाग्यवान प्रसिद्धताके भूपतुम
अवतंश ॥ तुम्हेंसम शुचि पिताजिनके तौन सबतौ पुत्र। धर्मपीछे डारि
विचरत राखिअवरम सुत्र ॥ लोभबश हतचेत ह्वै मर्यादत्यागि अशिष्ट।
परमसुहृद सुबन्धुसों अरिभावकीन्हें इष्ट ॥ बिना बूझे होनचाहत महा
अनरथ व्यर्थ। तासुकरिबो समन तुमकहँ उचितआपु समर्थ ॥ इतै तो
आधीन सम्मत उतै ममआधीन। सुतनदेहु बुझाय तुमहम पांडवन कहँ
ईन ॥ भयेसम्मत दुहूंदिशिको होतहित सहसैन। नतरु निरमित होत
जगको नाशविधि सतिबैन ॥ भटनसह अतिप्रबल तौ सुत तथा पाण्डव
सर्व। जीति दुर्लभ उभयदिशिहै नाशगति अतिखर्व ॥ मानिकै ममबचन
नृप करवाइसम्मत बेष। बन्धुसुत हित पौत्रगणको लखोसुख शुभभेष ॥
भ्रातृसुत अरुसुतनसों जितवाइ अरिन सरीति। लेहुमहिधन करोपालन
नृपणकी यह नीति ॥ दोहा ॥ निज धनहित युगबन्धु लरि मरेलाभ तहँ
कौन। जीतेहु हारेहु हानि जेहि समितकरो विधितौन ॥ रणकांक्षी तो
सुवनसब तिमि पाण्डव भटमौर। अमरपथश दोऊगहे बंशनासको डौर॥
नृपयह गुणिवारनकरो अनरथ कठिनकराल। कुशल जाहिं निज निज
थलन सदल सकल क्षितिपाल ॥ सोरठा ॥ शिशुपण ते पितुहीन पाले
जिनकहँ पुत्रसम। सुनु क्षितिपाल प्रवीण तिनको नितपालब उचित ॥
चौपाई ॥ शिशुपणमें निजसुतसम पालब। पुष्टबिलोकि दुवन गतिचालब॥
हैवायश शठ जनकीकरणी। ऐसो करत न सुबुधि सुपरणी ॥ धर्मभूप
सम्मत अभिलाषे। करिप्रणाम इमि भाषणभाषे ॥ हम तो शासनलहि
मनकरिकै। बहुदुखसहे बिपिननें बसिकै ॥ द्वादशबरष रहे बनचारी।
रहेबरषदिन गुप्तदुखारी ॥ तब निबन्ध तुम जो करिदीन्हों। सोकरि अब

महि चाहत लीन्हों ॥ तुममम पिता गुरू प्रतिपालक । हमतौ सेवक शिष्य सुबालक ॥ करियेसुबचन सुधरमपालन । तुमकहँ उचितकरब ममलालन ॥ नृप प्रमादिजो सुधरम त्यागत । तौ सबजन ताही मग लागत ॥ बढ़े सरितजिमि तटतरु गिरिकै । बहतधार परि रहत न थिरिकै ॥ तुम सरबज्ञ सुबुधिकुलनायक । बूझिकरौ जो करिबेलायक ॥ यहिबिधिकहो युधिष्ठिर हमसों । सोहम बिधिवत भाख्यो तुमसों ॥ नृप ममबचन सुहित गुणि लेहू । उचित अंश सो उनकहँ देहू ॥ इन्द्रप्रस्थ तुम दीन्हों उनको । तहँवे बर्द्धितकिये अपुनको ॥ तोसुत छलकरि सो सब हरिकै । द्रुपदसुतहि ल्याये कचधरिकै ॥ और कहेकटु कुबचनजेते । सुधरम समुझि सहे वे तेते ॥ दोहा ॥ तोआज्ञा लहि बनगये सहो दीनसम पीर । धर्म जानिनहिं निबलहैं पाण्डव विदितसुबीर ॥ रहिबनमें द्वादशबरष बरष गुप्त रहिआय । लेहिं भूमियह कौलहो करो तौन गुणि न्याय ॥ मृत्यु पासते भटनको रक्षणकरो नरेश । सुतहित सम्बन्धीबिना रहिकाकरिहौ देश ॥ सोरठा ॥ हमसम्बन्ध बिचारि दुहुदिशिको चाहतभलो । तातेकहत पुकारि बैरत्यागि सम्मतकरो ॥ केशवके ये बैन धर्मनीति हितबिधिभरे। सुनिपाये अति चैन सकलभूप सब सभासद ॥ ॥ चौपाई ॥ तेहिथरयाम-दग्निमुनि बोले । कृष्णकहे तुम बचनअतोले ॥ यह तोबचन सुहितगुणि गहिकै । तोरहि कुशल सम्पदा लहिकै ॥ सुनो एक इतिहास अनूपा । होदंभोद्भव नामकभूपा ॥ सार्वभौमसो नृप अभिमानी । बोलेद्विज क्षक्षित्रणसों बानी ॥ ममसमान दूजो रणचारी । हैकोऊ भट आयुधधारी ॥ यहिबिधि नितिबूझै पणधरिकै । भोगैभूमि नीतिपथ चरिकै ॥ इमिबूझत तेहि सगरबजाने । तब सब ब्राह्मण अमरषआने ॥ नृपसों कहो उभय भटभारी । होतिन सरिस न तुम रणचारी ॥ सोसुनि भूपकह्यो ते कोहैं। काहे नाम कहा बसि सोहैं ॥ सोसुनि कहे विप्र मनभाये । नरनारायण तापस गाये ॥ सुने गन्धमादन गिरिपाहीं । हैंतपकर तृतीय तसनाहीं ॥ यह सुनिकै भूपति जगजेना । चलोसाजि चतुरंगीसेना ॥ क्रमसों कछु दिन चलिकै भूपर । गयो गन्धमादन गिरिऊपर ॥ देखि भूपकहँ तापस दोऊ । जानिमहान पुरुषहै कोऊ ॥ आसनबारि मूल फल दीन्हे । शुचि सत्कार उचित गुणिकीन्हे ॥ फिरिकीन्हो नृपसों सम्भाषन । चाहोतौन

करो अनुशासन ॥ दोहा ॥ यह सुनि दम्भोद्भव कह्यो हम जीत्यो यह लोक। अब तुमकहँ जीतन चहत लरोजानि बलओक ॥ सुनिते बोले रणकरो लहि क्षत्री बलवान। हम तपरत नहिं रण चहत मम ढिग धनुप न बान ॥ चौपाई ॥ सुनि बोलो भूपति धनुधारी। को मम सम क्षत्री रणचारी ॥ जो न लरै मम संमुख थिरिकै। तुम भयत्यागि करौ रण भिरिकै ॥ फिरि तेहिं बरजो नरनारायण। नहिं मान्यो रणरस पारायण ॥ तब नर भूपहि गरबित चीन्हें। सींक एक मूठी भरि लीन्हें ॥ कहे भूपसों आयुध लीजै। सुभटन सहित पराक्रमकीजै ॥ इतो इषीक डारितो ऊपर। रणश्रद्धा बिनु करिहौं भूपर ॥ यहसुनि दम्भोद्भव क्षितिनायक। तिन पर बरषणलागो शायक ॥ तब इषीक शरमंत्रित करिकरि। नर प्रभुतजे बीरगति धरिधरि ॥ नृपके श्रवण नयन मुख नाशा। शस्त्रनभरे क्षायसब आशा ॥ तबदम्भोद्भव मोहित ह्वैकै। चरण गह्यो अद्भुतगति ज्वैकै ॥ तब नरईश क्रोधपरि हरिकै। कहतभये अनुकम्पा करिकै ॥ होहु सुधरमी शुचिमति लहिकै। इमिमति कीन्हेहुलघुगति गहिकै ॥ निबल सबलक तुलबल होई। जो अपराध करैनहिं सोई ॥ हठि सगरब ह्वै तासों लरिबो। हैअति अधरम अनुचित करिबो ॥ दान्तशान्त मृदुसौम्य सुभावन। पालतप्रजा निपुण नृपचावन ॥ बूझि बलाबलकरै अखेदा। सामदाम अरुदण्ड बिभेदा ॥ दोहा ॥ सुबचन भाषै हितुनसों मानैसुबचन अक्ष। जीतिधर्म आनँदलहै सोक्षितिपालक दक्ष ॥ यहसुनि नरनारायणहिं बन्दि बिदाह्वै भूप। निजपुर आयो सैनसह आनँदगहे अनूप ॥ सोरठा ॥ नरके ऐसेकर्म नारायणकी कृपाते। सो अर्जुन यहमर्म्म बूझिउचित सम्मत करब ॥ चौपाई ॥ परशुराम की सुनियह बानी। बोलत भये कण्वमुनि ज्ञानी ॥ दुर्योधननृप सुधरम धारो। राम कहतसो सुखद बिचारो ॥ अर्जुनकी गरिमा सब जानत। सम्मत करब उचित अनुमानत ॥ उतपति प्रलय नाशके करता। जासु सारथी हरि जगभरता ॥ कपिहैं नरनारायण संगी। सिगरे लोकपजिन के अंगी ॥ तासोंलरो न शठमति अतिसों। सम्मत करोधर्म नरपतिसों॥ कुरु पांडवसम बसुधा लहिकै। भोगकरो सम्मतकरि रहिकै ॥ बलगुणि बली रहतहैं ऐठे। नहिं बलरहत बलिन मधिपैठे ॥ देव पराक्रम पांडव

सिगरे। हैं धरणीपर प्रबल अदिगरे ॥ है इतिहास पुरातन भावत। सुनोतौन हमतुम्हें सुनावत ॥ मातलिकी दुहिता अभिरामा। रही एक गुण केशीनामा ॥ मातलिसुर गन्धर्बन पेखे। तासु सदृश बरना हिंअवरेखे ॥ तब अनुमानि नागपुर डगरे। तहांमिले नारद गुणअगरे ॥ बूझे कहां जातहौ धाये। निज कारजकै शक्रपठाये ॥ सोसुनि मातलिआनँद छाये। नारदसों वृत्तान्त सुनाये ॥ सुनि नारदमुनि आनँद राखे। प्रेम सहित मातलिसों भाखे ॥ दोहा ॥ चलो बरुणके पासतुम लखो तासु परिवार। निज दुहिताके सरिसबर देखिकरो व्यवहार ॥ तब मातलि मुनिसँग चलि गये बरुणके पास। पूजितह्वै नारद सहित पाये सकल सुपास ॥ सोरठा ॥ बरुणहि अर्थसुनाय अनुशासन लहिमुनि सहित। देखनलगे सचाय हेतहँ पुरुष पधानजे ॥ तोमर ॥ तहँदेवमुनि तपधाम। कहिकहि सोबिक्रम नाम ॥ सलिलेशके सुतपर्म। अरुपौत्रजे अतिधर्म॥ चलिचलि लखावत ताहि। तहँअग्नि अनुपम चाहि ॥ इमिकहे लघुमति मान। शिखि बिष्णुचक्र समान ॥ नितिरहत रक्षत देश। इतभीति को नहिं लेश ॥ फिरि अगरि आनँद भेखि। गांडीव धन्वहि देखि ॥ इमि कह्यो देखहु तात। गांडीवधनु अवदात ॥ यहकृत्य युगमें पूर्व। भोबिशद निरमित गूर्ब ॥ यह बज्रसार अभेद। हैअसुर नाशन भेद ॥ यह पाइकाज उदोत। अति अधिक बलप्रदहोत ॥ इमिभाषि चलिअन्यत्र। दरशाइ दीन्हें क्षत्र ॥ सलिलेशको अभिराम। बरधाम ताकोधाम ॥ जो अग्नि भक्षत बारि। दरशायसो मुदधारि ॥ इमिकह्यो यहसो देश। तहँ अमरसह अमरेश ॥ करि अमृतपान अमन्द। राख्यो सुधरि सानन्द ॥ शशि घटत बढ़त इतैहि। तिहिको न रहत चितैहि ॥ तेतदनु अति हरषाय। दिग द्विरिदसब दरशाय ॥ सबकहे गरिमा गौर। बिधितनै मुनि शिरमौर ॥ जेहिगुणौ सुगुण निकेत। तेहिबरौ तनया हेत ॥ नहिंहोत अति मनमान। तौचलो अनत सुजान॥ दोहा ॥ तब मातलि मुनिसोंकहो अनतचलो मुनिराज। तब हिरण्यपुर जातभे मुनिमातलि गुणिकाज ॥

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणि भगवतदूतेमातलिवरान्वेषनोनामविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

दोहा ॥ श्रीनारद हरिगुण कथत चलि हिरण्यपुर जाय। तहँ निवात कवची भटन दरशाये गुणगाय ॥ ये निवात कवचीप्रबल इन्हैंनजीतन शक्र। तुम सुसारथी युद्धमधि देखेबिक्रम बक्र ॥ जयकरी ॥ इनमेंजो श्रीमन्त अमान। रुचैतुम्हे त्यहिबरो सुजान ॥ यहसुनि बोलो मातलि दक्ष। ये सुरपतिके शत्रु प्रतक्ष ॥ इन सबसों करिबो सम्बन्ध। उचित न हमकहँ जानि निबन्ध ॥ सो सुनिकै नारद मतिओक। गे मातलिसह खगपतिलोक ॥ तहँजे खगपतिके षटबार। दरशाये तिनके परिवार ॥ तिन्हैं देखि मातलि मतिमान। नहिं रोचित कीन्हें मनमान ॥ तब तेहिसह नारद अवदात। गये पतालमाहिं अतिभात ॥ कहत भयेसो ताहि दिखात। यह सप्तम महितल बिख्यात ॥ इहां बसतिगो जननि सुछन्द। अमृत सम्भवा सुरभि अमन्द ॥ एक समयमें बिधि भगवान। कीन्हों अमृत अधिक अतिपान ॥ गिरतोभयो अमृतको सार। मुखते अतिबर अमल सुढार ॥ ताते सुखमामय शुभरूप। भईगिरति उत्पन्न अनूप ॥ जाकी पयधारासों स्वक्ष। भयो महान क्षीरनिधि अक्ष ॥ पीवत तासु फेण मुनिजौन। महा तपस्वी तेजगभौन ॥ ते सिगरे मुनिफेणप नाम। तेहि ह्रदकूल बसत तपधाम ॥ ताकी चारिधेनु दिशिचारि। पालतसुनो नाम निरधारि ॥ बसति सुरूपापुरुब आश। याम्यहंसिका करतप्रकाश ॥ तिमिहि सुभद्रा पश्चिमदेश। उत्तर कामदुधा शुभभेश ॥ दोहा ॥ यहि प्रकारकी बार्त्ता कहतमुनीश उदार। समुदजात भोगावती बोलेसुवचन चार ॥ मातलियह भोगावती बासुकि पालत जाहि। बसत सिंहिकाके सुवननाग असंख्यन चाहि ॥ दश पचाश शत पांचशत त्रशत सहसमुख ब्याल। बासुकि तक्षक आदिहैं सबमहान छबिजाल ॥ चौपाई ॥ तहांसभा नागनकी देखी। सबदिशि लखि मातलि अवरेखी ॥ ऐरावतकुल जात सोहावन। सुमुखनाम अहिअति मनभावन ॥ पुत्र चिकुरको चारुमहाना। पौत्रआरजक को बलवाना ॥ बामनको दुहिता सुतआरज। मुनि सोंकहे तासु गुणिकारज ॥ सो सुनिकै नारद सुखपाये। समाचार आरजकहि सुनाये ॥ सुनि मुनिबचन नाग अनुमानी। सादर कहत भयो मृदुबानी ॥ सखाशक्रको सुबुधि सुबन्धी। मिलत भाग्यते अस सनबन्धी ॥ पैमम हियेएक दुख धावत। सुनोतौन हमतुम्हैं सुनावत ॥ मम

सुत चिकुर गरुण तेहि गहिकै। खायो तदनु गयो इमि कहिकै ॥ कछु दिनमें सुमुखहि गहिखैहौं। सोसुनिकै अतिदोचित मैंहौं ॥ अरजक की यहबाणी सुनिकै। मातलिकहत भये इमि गुणिकै ॥ शक्रपास मम संग सुभावन। सुमुख चलैं भयत्यागि सुचावन ॥ तहां जायहम कहिसुरपति सों। अभय कराइब निजहित अतिसों ॥ मातलिनारद सुमुखहि लैकै। शक्रपासगे निरभय कैकै ॥ सबवृत्तान्त सुनाइ सुरेशहि ॥ कहेदेहु अमृत अहि बेषहि ॥ हेतेहि ठौरबिष्णु तेहिक्षणमें। तासोंकहे शक्रगुणि मनमें ॥ दोहा ॥ देहुअमी तुमबिष्णुतब कहेकहत कतबंक। तुम सुरपति सबलोक पति देहु अमी तजिशंक ॥ तबसुमुखहि बरदानदे अमर किये सुरराज। लहिसुदार निजपुर गयेसुमुख सनाग समाज ॥ रोला ॥ गरुणयह सुधि पाय रिसकरि शक्रके ढिगजाय। कहेकत तुम किये सुमुखहि अमर प्रीतिबढ़ाय ॥ बिहित भोजन सर्पमम तुमकिये निरभय ताहि। गुणेनहिं मम बिशद बिक्रमबार अगणित चाहि ॥ सुरराज्य हवैबे योग्य हमहैं बली जानत सर्ब। पितामम तो एककाहे गुणत हमकोखर्ब ॥ प्रबल प्रबल अनेक असुरन बधेहमकरि युद्ध। बिष्णुके हमभये बाहन तासुकारण शुद्ध ॥ और दूजो रहो नहिं जो सहैताको भार। एक हमतेहि योग्य तातेकियो अंगीकार ॥ प्रबल सबआदित्य मेंहै बिष्णु अति बलवान। एक देश सुपक्षके तेहिबहत हममघवान ॥ महागरबित बचन यह सुनि कहतभे भगवान। गरुण आपुहि बहत हमनित तुम्हैं सहित बिधान ॥ नहीं तुम मम भार सहिबे योग्यप्रबल अखर्ब। जानिकै बलवान आपुहि गहत नाहक गर्ब ॥ सहो दक्षिण बाहु ममको भार तुम यहि काल। सांचतौ हमकहैं जोतुम गहत गर्ब बिशाल ॥ भाषि ताके कांधपर प्रभु धरी दक्षिणबाहु। भार नहिं सहिसको बलकरि गिरत भो खगनाहु ॥ कांपिबिह्वल बिकलह्वै गतचेत क्षणमें चेत। गर्ब तजिकै गहे प्रभुके चरण जीवनहेत ॥ बिनय सुनि तब कृपाकरिकै कहे प्रभुहितजानि। फेरि करियो गर्बमति परभावमम अनुमानि ॥ कण्वमुनि इतिहास यह कहि कहतभे समुझाय। गरुड़को नहिं गर्बराख्यो बिष्णु अमरष छाय ॥ गर्ब गहि धृतराष्ट्र सुतमतिकरो रणदुखदाय। करो सम्मत पाण्डवनसों कृष्णजासु सहाय ॥ कण्वमुनिके बचनसुनिकै कर्णकी दिशिहेरि। कहत

भो धृतराष्ट्रसुतनृप बचन सुगरब मेरि ॥ जौनईश्वर किये निरमित ग-
हत हम गतितौन । सुमुनि करत प्रलाप नाहक लहत संशै कौन ॥
जन्मेजयउवाच ॥ ऐसे कुहठीनृपति कहँफिरि समुझायोकौन। सुनि बैशम्पा-
यन कह्यो भूपति सुनियेतौन ॥ तिहिक्षण नारदमुनि कह्यो सुनु दुर्योधन
भूप। सुहितबचन करतव्य निति नहीं उलंघनरूप ॥ दोहा ॥ शिष्य बिश्वा-
मित्रमुनिको रहो गालव नाम । कृपाकरि तेहि सुमुनि भाषो जाहुअपने
धाम ॥ कहे गालव कहोसो गुरुदक्षिणा मुनिराय । देइ तुमकहँबसैं हम
घरसुमिरि पङ्कजपाय ॥ कहे कौशिक बहुत दिनमम कियो सेवाजौन ।
तौन लहिपरसन्न हमअति दक्षिणा है तौत ॥ फेरि हठगहि कहे गालव
दक्षिणा केकाज । नहीं मानो कोपि तब इमिकहतभो ऋषिराज ॥ देन
चाहत हमहिं जो गुरुदक्षिणा मनमान । आठसत श्रुति श्यामबाजी दे-
हुतौ नहिंआन ॥ बचन यहसुनि चलो गालव महादुखसों पूरि । भये
मिथ्या बचन जगमें होत अपयशभूरि ॥ कहत मिथ्या बचन ताको थाप
राखतकौन । करत प्रतिउपकार नहिं जो वृथा जीवत तौन । करत इवि-
धि बिषाद मनमें सुव्रत निरसन ठानि । चलो गालव बिप्र शोचित
मरण निश्चयमानि ॥ जानिकामद बिष्णुके ढिग चलोद्विज अनुमानि ।
सखा ताको गरुड़ आये तहां प्रभुप्रण जानि ॥ बूझि सुनि वृत्तान्त निज
पर द्विजहि गरुड़ चढ़ाय । प्रथम पूरुब उदय गिरिलों गये आनँद छाय ॥
तहांउत्तम ठौर क्रमसों गालवहि दरशाय । गये दक्षिण ओर क्रमसों
कहत थल समुदाय ॥ पितृ बिश्वेदेव यम यमराजको अस्थान । बिशद
बैतरणी नदी दरशाय कैमतिमान ॥ सूर्य्य जहँलोंजात जहँतप कियो
रावण रक्ष । और थल दरशाय पश्चिम गयोदक्ष सुपक्ष ॥ बरुण लोकल-
खाय सबफिरि जहां द्वितिको गर्ब । किये खण्डन शक्रजाते भये मारुत
सर्ब ॥ आदिअस्ताचल सुथल दरशाय पश्चिम ओर । चलो उत्तरओर
आनँद भरोखग सहजोर ॥ जहां नारायण सुत्रभुनर तपततप अभिराम ।
बदरिकाश्रम तौन तहँ दरशाज आनँदधाम ॥ दोहा ॥ उमाशंभु जहँ
तपत तपसो दरशाय सप्रेम । मेरुहि दरशाये बहुरि सुरसरि दायक क्षेम ॥
ऋषभ शैलके शृंगपर उतरे सद्विज द्विजेश । जहां शाण्डिली ब्राह्मणी
तपतरही तपवेश ॥ बन्दिताहि करि बार्ता अत्रदयोसोखाय । सानँदकरि

बिश्राम तहँ जागे निशा बिताय ॥ भोर गरुड़कहँ पक्षबिनु मांसपिण्ड सम देखि। गालव पूछो गरुड़सों अति अचरज अवरेखि ॥ चौपाई ॥ प्रगटो कारण कौन इहांते। पक्ष बिहोन भये तुमतातें ॥ सोसुनि गरुड़कहे तेहि क्षणमें। हमनिशिमें मनसो यह मनमें ॥ जहां बसत हरहरि सुख दाई। तहां बसति यह मानव आई ॥ हमयह गुणयो तासु परभावन। पक्षबिहीन भये सुनुभावन। करैं कृपा जब सुमुखि भवानी। तब सुपक्ष हम होब सुज्ञानी ॥ इमिकहिकहो बिनय अधिकाई। मम अपराध क्षमा करु माई ॥ यहसुनि कृपाकरी सोदेवी। तब सपक्षभो खगहरि सेवी ॥ तब ब्राह्मणिहि नौमिते आरज। चलत भये चिन्तित निज कारज ॥ बिश्वामित्र मिलतभे मगमें। कहेबिप्रसों दानी अगमें ॥ जेहिहित हम तुमसों यहमागो। आइ तौन अब कारजलागो ॥ शीघ्र देहुसो द्विजयह सुनिकै। अति चिन्तितितभो मन में गुणिकै ॥ खगपति बिप्रहि चिन्तित देखी। सादर कहत भये अवरेखी। अनतन मिलिहैं ऐसेघोरे। चलोय याति भूपके धोरे ॥ इमि कहिकै खगपति मनभायो। सद्विजययाति भूप पहँआयो ॥ तिन्हेंभूपअति बिधिवत पूजे। आगम हेत कहो इमिकूजे ॥ गरुण कहे ये ममहित आरज। कौशिकमुनि के शिष्य अचारज ॥ दोहा ॥ इन कौशिकसों हठि कहे गुरुदक्षिणा के काज। श्यामकरण हय आठशत तब माँगे मुनिराज ॥ सोहय मांगत बिप्र यह नृपआयो तो पास। तुम कामद क्षितिपाल मणि पूरण कीजै आस ॥ चौपाई ॥ यह ययाति अवनीपति सुनिकै। खगपति सों इमिबोले गुणिकै ॥ खगपति मोहिं कृतारथ कीन्हे। दरशनदै अति आनँद दीन्हे ॥ तपनिधि ऐसो अरथी आरज। मिलत भाग्यबल किये सुकारज ॥ आजु देश मम भो अति पावन। आयो ऐसो अतिथि सुभावन ॥ पैहमकियो यज्ञ सुगतिनमें। अरथी करिबो बिमुख अनियमें ॥ नहिं करि सकत अरथ द्विजबर को। सकैं कहा करि खालीघरको ॥ मंगन बिमुख होतहै जाको। सब करतबहै निहफल ताको ॥ तासों और न पापी जगमें। ताते कहत पाणि धरि पगमें ॥ हम जोकहैं तौनबिधि करिकै। करो अरथ साधन व्रत धरिकै ॥ सुता हमारि माधवीनामा। सब लक्षणयुत अति अभिरामा॥ सोहम देत लेहु तुम ताहीं। देहुजाय बर भूपति चाहीं ॥ निक्रय तुरँग

आठशत लीजो । कन्या रत्न ताहि तुम दीजो ॥ मम दुहिता के उत्तम लक्षण । लखि हय देहै भूप बिचक्षण ॥ सुनि द्विजभूपहि अकपट चीन्हे । ह्वै प्रसन्न सो दुहिता लीन्हे ॥ तब तिनसों ह्वैबिदा खगेशा । सानँद जातभये निजदेशा ॥ दोहा ॥ गालव नृपसों ह्वै बिदा लैकन्या कुलदीप। गयो अयोध्या नगरमें जहँ हरयश्व महीप ॥ दै आशिष हरयश्व कहँ कह्यो बिप्र तपधाम। यह मम दुहिता माधवी नामा अति अभिराम ॥ उत्तम सुत उत्पत्तिकर लक्षण देखि सनेहु । निजपत्नी हित लेहु नृप हम मागें सो देहु ॥ श्यामकरण हय आठशत हम चाहतहैं भूप । देहु हमें सो लेहु यह कन्या अनुपम रूप ॥ चौपाई ॥ बहसुनि भूप कन्यकहि देखी। सब उत्तम लक्षण अवरेखी ॥ कहेबिप्र तुम अधिक न मांगे । हमें आठ शत हय लघु लागे ॥ हैं ममगेह दोयशत घोरे । श्यामकरण नहिं बसु शत मोरे ॥ करि अनुमान कहो तुम जैसो । सुतहित लागि करैं हमतैसो॥ यहसुनि सो कन्या अनुमानी । गालवसों इमि कही सुबानी ॥ पूर्व एक ब्राह्मण ब्रतधारी । मोहिं सुआशिष दियो बिचारी ॥ पति सँय्योग प्रसव दिन पैहै । तबहूं तो कन्यत्व न जैहै ॥ ताते हमें नृपति कहँ देहू । हैं द्वै शत बाजी सो लेहू ॥ एक पुत्र उत्पति करिलेहैं । तब फिरि हमैं तुम्हैं नृप देहैं ॥ फिरि मोहिं और भूपतिहि देकै । मोदेहु श्यामकरण हय लेकै ॥ गालव यह सतमत हिय राख । इमि हरियश्व भूपसों भाखे ॥ एकपुत्र उत्पति करि लीजो । फिरि ममसुता हमें नृप दीजो ॥ इमिकहि सुता भूपतिहि दीन्हें । आपु निवास अनत कहुं कीहें ॥ कछु दिनमें नृप सुत उपजाये । बसुमन सों सुनि गालव आये ॥ बिधिवत करि बातें नरपति सों । सुतालई सतिबकता अतिसों ॥ कहि भूपति हयराखो मित सों । हम लैजाब फिरब जब इतसों ॥ दोहा ॥ इमिकहि नृपके दोयशत बाजी नृपपहँ राखि । कन्या लै काशीशपहँगयो तुरँगअभिलाखि ॥ दिवो दास काशीशसों गालव लहि सतकार । सबिधि सुनायो निज अरथसो सुनि भूपउदार ॥ कहे पूर्व हमसब सुने द्वैशत हय ममगेह । एक पुत्र उतपति कियो हम चाहत गहिनेह ॥ जयकरी ॥ सुनि गालव करि बातें आम । कन्या देयगयो तपधाम ॥ तासों रमो कछूदिन भूप । प्रगटभयो तब पुत्र अनूप ॥ जाको भयो प्रतर्दन नाम । तबआये गालव गुणि काम॥

निज निबन्ध नरपतिसों भाखि। तुरँग दोयशत नृपपहँ राखि॥ लैकन्या सुख सुखमा रास॥ गये उशीनर नृपके पास॥ ओऊ द्वैशत बाजी देन। एकपुत्र उतपति करिलेन॥ कहे तौन सुनि द्विज मतिमान। कन्या दे गो बन अस्थान॥ तासों रमो भूप मनमान। तब प्रगटो शिविपुत्र अमान॥ सो सुनिकै गालव तहँजाय। करि सुवारता प्रीति बढ़ाय॥ तुरँग भूप पहँ राखि सडोर। चले सुतालै तकि नृपओर॥ मगमें आयमिले खगराज। कहे जातकहँ द्विज केहिकाज॥ सो सुनिकै गालवमुनि दान्त। कहतभये सिगरो बिरतान्त॥ सो सुनि कहे गरुड़ अनुमानि। अब मम बचन करो हित जानि॥ लै षटशत बाजी श्रुतिश्याम। अरु यह कन्या सुखमा धाम॥ कौशिक मुनिपहँ चलि मुदलेहु। षटशत हय यह तनया देहु॥ कहो सकल बिरतांत सचार। मुनितनया करिहैं स्वीकार॥ दोहा॥ सो सुनि गालव मानि हित षटशत तुरँग मँगाय। सहित सुकन्या जात भे जहँ कौशिकमुनिराय॥ बन्दि चरण मुनिराजके कहे सकल बिरतांत। सो सब सुनि निज शिष्यसों भाषे कौशिक दांत॥ प्रथमै हमें सुकन्यका कत नहिं दीन्हे आय। उत्रिण तुमकहँ करत हम चारपुत्र उपजाय॥ इमिकहि मुनि गुणि राखि रमि नृप दुहिताके संग। एकपुत्र उतपति किये अष्टकनाम सुअंग॥ पुत्रभयो चैतन्य तब निजपुर भेजे ताहि। नृपतनया दे गालवहि मुनि बनगे तपचाहि॥ चौपाई॥ गालव इमि गुरुदक्षिणा दैकै। गे ययाति पहँ तनया लैकै॥ सब बिरतांत भूपसों कहिकै। तनयादे आये मुदलहिकै॥ नृप गुणि पुत्रन शासन दीन्हे। तेसु स्वयम्बर रम्भन कीन्हे॥ गहि जयमाल सुतासों फिरिकै। नहिं बर रोचित कीन्हों थिरिकै॥ रथते उतरि त्यागि जनदेशा। तपहित कीन्हे बिपिन प्रवेशा॥ तृण फलखाय बिशदव्रत गहिकै। बिचरत भई मृगिण सँग रहिकै॥ नृप ययाति तपकरि तन तजिकै। स्वर्गगये सुरगण सम सजिकै॥ कछुदिन तहां भोगकरि राजा। गिरतभयो तजि स्वर्गसमाजा॥ सुर गन्धर्व ऋषिनके देखत। नृपतो निजकरणी अवरेखत॥ नृप तेहि समय प्रतर्दन चायक। बसुमन शिवि अष्टक नरनायक॥ बाजपेय मख अतिशय पावन। नैमिषार में सरस सुभावन॥ करत रहे तहँ तिनके आगे। गिरे ययाति करमगति लागे॥ महिगत भूप ययातिहि ज्वैकै।

ते नृप बोले बिसमित ह्वैकै ॥ तुम गन्धर्व यक्ष सुर कोहौ । चाहत कहा कहो कहि जोहौ ॥ ययातिरुवाच ॥ हम ययातिनृप तपफल भोगी । देवलोकसों भये बियोगी ॥ काहू पुण्यनको फलपाये । जो यहिठौर तुम्हें मधि आये ॥ दोहा ॥ यहसुनि ते चारो नृपति निज मातामह जानि । कहे ययाति महीपसों छोह मोह हियआनि ॥ दान यज्ञ तप धर्म ब्रत जो हम सबको सर्ब । तासु पुण्य करि ग्रहण तुम सुरपुर जाहु अखर्ब ॥ हमक्षत्री नहिं बिप्रहैं यह नहिं मम ब्यवहार । औरनको तपधर्मफल किमि करिये स्वीकार ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण तेहिथल आय बरब्रत चारिण माधवी कहो पितहि समुझाय येतो तनयाके सुवन ॥ चौपाई ॥ तनया सुत प्रद पिण्ड सुनेते । ग्रहण करत सब अग्रज जेते ॥ ताते भ्रमतजि आनि उछाहू । तप मख फलले सुरपुर जाहू ॥ सो सुनि उचित जानि नृपमाने । सुरपुर गमन हेतु उमदाने ॥ इतनेमहँ गालव तहँ आये । नृपहि अशीष दिये मनभाये ॥ फिरि यहि कहे सुनो अवनीसा । मम तप ब्रतको अठवाँ हीसा ॥ लहि फिरि जाहु शक्रपुर राजा । बिलसो जैसे सुमन समाजा ॥ इतनेमें अभिषेकित मूरध । नृप महित्यागि गयो कछु ऊरध ॥ तबबसुमन आदिक नरनायक । क्रमसों कहतभये गुणि लायक ॥ मम तपयज्ञ दानफल लहिकै । सुरपुर जाय बसो मुद गहिकै ॥ तिनके उग्र पुण्य परभावन । लहे ययाति स्वर्ग मनभावन ॥ सेवित सुर अप्सर ऋषि गणसों । सानँद बिलसत भये सुमनसों ॥ तहां पितामह आये ताही । पूजि ययाति कहे हितचाही ॥ नाथ बहुत दिन हम महिभोगे । तप मख दानबहुत उपजोगे ॥ सो ब्यतीत भो थोरे दिनमें । ताको भेदकहो यहि क्षणमें ॥ सुनि कमलासन कहे नृपति सों । तुम इत पूरे आनँद अतिसों ॥ शक्र सरिस उत्तम पदपाये । सुरगणसों सेवित छबि छाये ॥ दोहा ॥ उत्तम सुर ऐश्वर्य्य लहि तुम कीन्हे अभिमान । ताते सुरपुर तेगिरे क्षीण मूल तरुमान ॥ कीन्हे अति अभिमान भो लोपित पुण्य ललाम । इबिधि बुझाय ययाति कहँ बेयागे निजधाम ॥ बैशंपायनउवाच ॥ नारद यह इतिहास कहि दुर्योधनहि बुझाय । कहे भूप अभिमान अतिकिये बिभूति नशाय ॥ पुण्यनशत अभिमानते हित अनहित ह्वैजात । ताते नृप अभिमान तजि करो मंत्र अवदात ॥ सोरठा ॥ नृपति ययाति महान भ्रष्टभये

अभिमान करि । अभिमानहि दुखदान जानि कृष्णको मत गहौ ॥

अस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगा
मिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन
कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिभगवतो
दूतकर्मणिगालवचरितवर्णनोनामएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ नारद मुनिके बचन सुनि कह्यो वृद्ध क्षितिनाह सांचकहो मुनिराज तुम यहमत मम मनमांह ॥ इमि कहिकै धृतराष्ट्र नृप बहै केशवहि नोमि । तुम बुझाय दुर्योधनहि करो मूढ़मति सोमि ॥ हम गान्धारी बिदुर कृप संजय भीषम आदि । समुझाये मानत नहीं यह मतिमन्द प्रमादि ॥ जयकरी ॥ वृद्धभूपके बचन अहीन । सुनि बोले यदुनाथ प्रवीन ॥ दुर्योधन तुम भूपमहान । उत्तमकुल नायक मतिमान ॥ हौ सबभांति समर्थ प्रसिद्ध । करो तौन जो सिखवत वृद्ध ॥ हठ तजि करौ सुकारज तौन । करत सधर्म नीतिरत जौन ॥ तातगहौ मति अधरम चार । जो कुत्सित जनको व्यवहार ॥ किये अमर्ष अयशको सोत । बाढ़त नाश लहत हितगोत ॥ कारज तौन करौ मतिइष्ट । जाते प्रगटै महा अनिष्ट ॥ माता पिता कहत मतवेश । तौन व्यर्थ मतिकरो नरेश ॥ निदरब मातु पिताके बैन । अति दुखदायक नाशक चैन ॥ सताचार रत सुमति अमेय । तिनको मंत्र सकलबिधि श्रेय ॥ भीषम आदिक जिते प्रबुद्ध । तेसब चाहत सम्मत शुद्ध ॥ सबको मत सुखदायक जानि । सम्मत करो धर्म अनुमानि ॥ हठ शठता गहि कीन्हे युद्ध । सबको मृत्यु कालहै उद्ध ॥ पाक करत जरिमरै बराक । कौन मोद कीन्हे वह पाक ॥ सताचार मंत्री सुखदेत । असती पूरब सुख हरिलेत ॥ शक्रसमान सुबंधु सप्रीति । तिनकहँ शत्रु करब नहिं नीति ॥ दोहा ॥ तुम बहुदिन पांडवन सों कीन्हें अनरथ भूरि । वै अनरथ चाहैं नहीं सुधरम नीति बिसूरि ॥ बनमें अति दुख भोगकरि अब वै गहे अमर्ष । ताते चाहौ कुशल तौ सम्मत करौ सहर्ष ॥ शकुनि दुशासन कर्णको मंत्र गुणो दुखदानि । अंश देहु पांडवन कहँ वृद्धनको मतमानि ॥ षड्जनबाटिका ॥ बैर बढ़ाइब भूपति नीकन । सम्मत आनँद सिन्धु अलीकन ॥ लोभ हिये गहि धर्म नशाइब । जानहु आपदको पद आइब ॥ जाकर अंश सबै जग जानत । ताहि

निरंश कियो कत मानत ॥ ज्यों तृणके बन पावक लागत। ज्यों परबित्त हरे अघ पागत ॥ दोहा ॥ बन्धु बर्गकहँ मित्र करि शत्रुहिजीतब नीति। बन्धु अहित भो तब लगत बन कुठार की रीति ॥ सब पांडव हैं प्रबल अति उनसों बैर न नीक। को संमुख थिर लरिसकी धरी धनुष की लीक॥ कवित्त ॥ लालकरि लोयन बिशाल गोपीनाथ जबभीमसेनकालसों कराल ह्वैकै लसैगो। रथते उतरिबड़े गथकी गदालै रण पथपै सबेग डाटि तो दलमें धसैगो। दीरघ उदण्ड दोरदण्डन चपल करि मण्डन महीको घनध्वनि करि निकसैगो। थरथर धरा धराधर तब ह्वैहैं घर कौनको नशैगो अब कौनकोधौं बसैगो ॥ दोहा ॥ खाण्डवबन जारो लखत ब्रह्माण्डपके जौन। ताण्डव निरतन हारसों लस्यो सुपांडव तौन ॥ कपि ध्वज सुरथ महान पर चढ़िकरि धनु सन्धान। लरी आइ तब कौन भट करी घोर घमसान ॥ कवित्त ॥ पारथ धनुष गांडीव करषत जब ऐहै बरषत शर आयस बिशालके। होयगो दुसह दुरदिन तेहिक्षण निशिदिन गुणि सकि है न जेऊ बड़े भालके। गोपीनाथ कहै साथ कौनको रहैगो तब जरैंगे जवासे भट भूपनके नालके। मछनके छवासे सपक्ष क्षितिपाल परि बाणनके जालमें परैंगे गाल कालके ॥ दोहा ॥ बिक्रम उनको प्रगट है जानत सब क्षितिपाल। को अर्जुनसम जगतमें धनुधर सुभट बिशाल॥ भीष्म द्रोण कृप कर्णको गरब गहो मतिभूप। सब जगजेता बिदितहै पारथ शक्रस्वरूप ॥ कवित्त ॥ बांधिकै गन्धर्वपति तुम्हें लै चलो हो तब करणादि भट तहँ रहे कै नहीं रहे। जब तुम चढ़िकै बिराटपुर गये तब भीष्म द्रोण आदि धनुगहे कै नहीं गहे। हमतौ नहां हे तहां दूरसों सुनेसो कहे शोणितके धार भटबहे कै नहीं बहे। बाणन सों छिन्न करि गात सबही को हेत गोधनके पारथ जय लहे कै नहीं लहे ॥ दोहा ॥ तथा अमोघन शरनसों करि अवरोधन रूप। गोधन लेगो आर्जुन तिमिलेहै महिभूप ॥ क्षात्र बंशको नाश गुणि मोहि होत निरबेद। कहो मानिसम्मत करो दूरिहोइ सबखेद ॥ सोरठा ॥ कृष्णचन्द्र के बैन सुनि भीषम नृपसों कहो। कुशल चाहि मतिऐन कृष्ण कहत जोसो करो ॥ चौपाई ॥ धरम अरथ आनँदप्रद बानी। कहत बुझाइ कृष्ण गुरु ज्ञानी ॥ सुतहित सखाबन्धु सनबन्धी। युवावृद्ध जीतन अनुबन्धी ॥

सबको जीवन सम्मत कीन्हें। नातरु मरण सुबुध सब चीन्हें ॥ ताते बारबार समुझावत। अनरथ कारण दूरिदुरावत ॥ सोहित जानि धरो हियमाहीं। बन्धु बिरोध मोदप्रद नाहीं ॥ द्रोण कहे तब अवसर पाई। तात तजौ अमरष दुखदाई ॥ अर्थ धर्मसुख सम्पति दायक। नीतिकहत भीषम यदुनायक ॥ भूपअवशि सो करिबेलायक। अर्जुन कहैं कृष्ण सहायक ॥ अर्जुनएक जगतको जेता। तासँग केशव रथगति नेता ॥ होइहि अवशिनाश सब जनको। तात देहुतजि हठ यहि प्रणको ॥ अब नहि कहब कह्यो हितयेतो। गयो धरम गहि अबहूं चेतो ॥ यहसुनिक-ह्यो बिदुर नयचारी। तातजौ हठदुखद बिचारी ॥ हमनहिं शोच तिहारो आनत। इन दम्पतिको दुख अनुमानत ॥ बिनुसुत बंधु सखा हित ह्वैकै। पक्षहीन पक्षी गतिग्वैकै ॥ अन्ध वृद्ध सुतशोकन दहिहैं। ह्वैअनाथ परआशा गहिहैं ॥ कौनदशा लहिहै यहिप्रण में। इतनो दुख बर्द्धितमम मनमें ॥ दोहा ॥ इनसबके येबचन सुनि वृद्धभूप गहिमोह। दुर्योधन सों कहतभो पुत्रत्यागि हठकोह ॥ क्षात्रबंश को कुशल कृत बचनमानि क्षिति नाथ। जाहु युधिष्ठिर भूपपहँ कृष्णचन्द्र के साथ ॥ सोरठा ॥ दुहुं दिशिको कल्याण चाहिकृष्ण सुधरमकहत। पुत्र करोमति आन जाहुधर्म क्षितिपाल पहँ ॥ ऐसे बचन अनूपसुनि नहिं कछु उत्तर दियो। जब दुर्योधन भूप तब फिरिइमि भीषमकहो ॥ छप्पै ॥ जौलगि धर्म नरेश नरन हित सैन सजावत। रथचढ़ि सदल सबन्धु नहीं दुंदुभी बजावत ॥ भीमसेन गहि गदा न जौलगि ओजबढ़ावत। पारथकृष्णहि नौमि न जौंलगि धनुष चढ़ावत ॥ सहदेव नकुल सात्वकि सुभट जौं लगि धनुष न गहत बनि। नृप माणिक हो तौ लगि चलौ जहां धर्म क्षिति पालमनि ॥ अपरं ॥ जौलगि द्रुपद बिराट महीप न दलसजि बलकत। धृष्टद्युम्न अभिमन्यु न जौलगि रणहित ललकत ॥ धृष्टकेतु सहदेव युधामणि आदिक नरपति। जौलगि सदल सबन्धु चलैं नहिंठानत रणगति ॥ सजि द्रौपदेय हिडम्ब भट जौलगि चढ़त न रोषसनि। नृप माणिकहौ तौलगिचलोजहां धर्म क्षितिपालमनि ॥ अपरं ॥ धर्मधुरन्धर यशी सुहृद गुरु बन्धु बिशारद। चलिसबन्धु ढिगतासु बचनकहि सबिनय आरद ॥ पदपङ्कज अस्पर्श करोतजि अमरष दारुण। सम्मतकरो

सप्रेम क्षेमहित हिय करि कारुण ॥ कबिनाथ कहत क्षितिनाथ सुनुज-
ग अनित्य भोनित्य कब। इतनदी नावसंगम उतरि कितवै तुमहम और
सब॥ दोहा ॥ धर्म महीपति युद्धको गहन नपावैचावाबीस बिसचलिभूमि
पद सादर करी बनाव ॥ भीषम के ये बचनसुनि दुर्योधन क्षितिपाल।
कृष्णचन्द्रसों कहत भो सगरब बचन बिशाल ॥ दुर्योधनउवाच ॥ मनोरमा ॥
तुमकेशव पाण्डवको कहिकै यस। हमको तुम नाहक निन्दत होकस ॥
हमकौन अनीतिकियो उनसों अब। निजहाथ जुवामधि हारि दये सब ॥
अब मांगततौ वह जातदयो किमि। उनको यह धर्म कहा करिबोइमि ॥
धन हारतसो नहिं लेत महाजन। सत छोड़त वै तजिनीति महापन ॥
दोहा ॥ आपु भीष्म द्रोणादि सब बहुत बुझावत मोहि। उन्हें बुझावत
डरत सब यह प्रतक्ष बिधिजोहि ॥ तुमसब निन्दित हमहिं निति करि
उनको अवराध। हम बिचार करिलखत तौ नेकु नमम अपराध ॥ चौपाई ॥
नाहक पाण्डव दुरमति धरिकै। ममशत्रुन सों सम्मत करिकै ॥ हमसों
लरोचहत बिनु कारज। हम न डरब नटवर सुनुआरज ॥ जोहवै बक्रशक्र
चढ़िआवै। तौहमसों लरि नहिं जयपावै ॥ सदल पाण्डवन हम लघु
जानत। नहिंरणमें निजसम अनुमानत ॥ भीष्म द्रोणकृप अश्वत्थामा।
कर्ण शल्य शल अतिबलधामा ॥ शकुनि जयद्रथ धनुधर नायक। तिन्हें
कौनभट जीतन लायक ॥ कैहमउन्हें बधब रणमाहीं। कैवै हमकहँ संशै
नाहीं ॥ क्षत्रिनको यह धर्म कहावत। बधेगये बधि कीरति पावत ॥
जीते राज्य मरेसुरग्रामा। उभय प्रकारमोदकी सामा ॥ और प्रकार न मो
मन आवत। नाहक सब बकवाद बढ़ावत ॥ भये अज्ञान मोहबश ह्वैकै।
कैधों ममबालापन ज्वैकै ॥ उनकहँ इन्द्रप्रस्थ नृपदीन्हें। सोनहिंराज
नीति बिधि कीन्हें ॥ हमसों भूमि भाग्यबल जीते। पाण्डव सों फिरि
लेबो चीते ॥ सूई अग्रभूमि नहिं पैहैं। नाहक लरिमरि यमपुर जैहैं। कहो
बुझाइ कुमति मतिधरैं ॥ जाय बिपिन बसि जनम सुधारैं ॥ हारिदयो धन
माँगत कोऊ। पावत कौन सुनावहु सोऊ ॥ धरम छोड़ि मतिअधरम साधैं।
काललोक पथ मति अवराधैं ॥ दोहा ॥ दुर्योधन क्षितिपाल के ऐसे बचन
अनीक। सुनि यदुनायक कहतभे आयोकालनजीक ॥ अमरषबश मानत
नहीं वृद्ध गुरुणकी बात। सूरसेन तौ करहुगे धूरि धूसरितगात ॥ सोरठा ॥

छलके पासे डारिधन जीते नहिं धर्मगहि । तबहूं धर्म बिचारिवै बितये तेरह बरष॥ दोधक ॥ जान निबन्ध कियो तुमराजा । जानतसो सब सैनसमाजा ॥ तौन बिताय मही अबचाहे । देन न चाहत हौ तुमकाहे ॥ जेअघ बीज बोय तुमआगे । तेफल फूलन पूरनलागे ॥ शीख न मानत हौ तुमजाते । देश अमानुष होइहितात ॥ दोहा ॥ महिषी पाण्डव नृपतिकी कियेदुर्दशा तासु । गुण शिखापन कौनको ऐसी दुर्मति जासु ॥ इनते में नृपसोंकह्यो दुःशासन अनुमानि । भूपदशा यहिसभा की तुम्हें परत नहिंजानि ॥ भीष्मद्रोण कृप और सब पिताबुद्धि क्षितिनाथ । हमैं तुम्हैं अरु कर्ण कहँबांधिदेत हरिहाथ॥ निशिपालिका ॥ बैन यह भूपसुनि शोचिगुणि कोपिकै । बन्धुसब सैनिकन संगउठि ओपिकै ॥ जायनिज गेहभट वृन्दसह बैठिकै । तेजअति तेजकरि सिंहसम ऐंठिकै ॥ दोहा ॥ दरपभरो बलकनलगो गरबी गरबितबैन । उतकहे द्रोणादिसों केशव करुणाऐन ॥ चरणाकुलक ॥ सबके बचन सरसहित सान । दुर्योधन नहिं हितकरि जाने ॥ सब कहँनिदरि जातभो उठिकै । यहि अभिमान पसार्यो सुठिकै ॥ हठगहिकरि मंत्री दुरमगके । नाशन चहत सकल जनजगके ॥ तातेतुम सब सम्मत करिकै।जगतबचावहु बिधि अनुसरिकै ॥ यहि बिधि कंसराज मदमातो । धर्म छोड़िअधरम रँगरातो ॥ ताको अधरम कर्मनिरेखी । सबयदुबशी मतअवरेखी ॥ कीन्हेतासु त्याग गुणि मनसों । तबहम तासुकियो बधप्रणसों ॥ तबतेभो यदुबंश सुखारी । जानतहौतुम सबनयचारी॥ बलिबढ़ि भयो गरबबिधि ठानत । तेहिबांध्यो हम सब जगजानत ॥ बिनशै जगत एकके रोषन । तौ तेहिगहि बांधब कछु दोषन ॥ कुलके हेतु एक तजिदीजै । नगर हेतुकुल तजिमुद लीजै ॥ तजियेनगर देशकेकारण । आतमहेत देशके बारण ॥ कर्णदुशासन शकुनि कुमंत्री । दुर्योधन कुलनाशक तंत्री ॥ इन्हें पकरि यह नीति बिचारी । सबिधिकरो कारागृह चारी ॥ यह कीन्हें सबजग जन बांचत । अनरथ मिटत सुखदमुद रांचत ॥ दोहा ॥ कृष्णचन्द्रके बचनसुनि वृद्धनृपतिकरि गौर । कहेनृपति गान्धारजहि लेआवो यहिठौर ॥ बिदुर जायगान्धार-जहि भूपतिके ढिगल्याय । ब्रतधारिनको आगमन भूपहिदयो सुनाय ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेभाषायांउद्योगपर्वणिभगवत दूतेद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

वैशंपायनउवाच ॥ दोहा ॥ घरिकशोचि धृतराष्ट्रनृप फिरिलैऊबि उसास। गान्धारीसों कहतभे सुबचनचाहि अनास ॥ चौपाई ॥ परोमोहबश तोसुत मूढ़। भयोपापरत गरबारूढ ॥ मानतकहो न बचनउदार। सब समुझाय थके बहुबार ॥ गयो सभाते उठिकरि रोष। गहिअभिमान न जानतदोष ॥ कियोचहत अनरथ अतिमान। क्षत्रबंशको नाशमहान ॥ तुमबोलवाइकहौ समुझाय। उचितकरब सम्मत सुखदाय ॥ यहसुनि गान्धारी अनुमानि। कहतभई हियसंशय आनि ॥ दुर्योधन मतिमन्द अमान। सुहितासखा-पन करत न कान ॥ होइहहि सोबिधि निरमित जौन। कैसेहुमेट मिटतन तौन ॥ इमिकहि कहीबिदुरसों बैन। तुमसबबिधि ज्ञातामतिऐन ॥ जाहु सुयोधन भूपतियत्र। ममशासन कहिल्यावहु अत्र ॥ यहसुनि बिदुरभूप पहँजाय। लैआये बिधिवत समझाय ॥ क्रोधित पन्नगसम बलऐन। श्वास लेतकरि रातेनैन ॥ सभा सदन मधिबैठो आय। बन्धु सखन सहओज बढ़ाय ॥ तबगान्धार सुतागहि प्रीति। सुतसोंबोलो बचन सुनीति ॥ दुर्यो-धनप्रियपुत्रमहीप। हित मम बचन मानुकुलदीप ॥ भीष्म द्रोण कृप बिदुर प्रवीन। कहतकरो सोबचन अहीन ॥ दोहा ॥ बचन कहततो जनकसों नहीं उलंघनयोग। बन्धुन सो सम्मत करब उचित कहत सबलोग ॥ छप्पै ॥ ईछेमिलत नराज्य रहतनहिं बनत न पालत। पूर्वकर्म प्रारब्धतौन भावी गतिचालत। कामक्रोध मदलोभ अहितकरता दुखदायक। समदम सुधरम नीतिसुखद हितकरिबे लायक ॥ सुतकामक्रोध मद लोभतजि समदम सुधरम नीतिगहि। प्रभुकृष्ण कहतसो महतहित सम्मत करु प्रियबचन कहि ॥ अपरं ॥ तीनि लोकपति भयेलोभ नहिं मिटत कहतसब। लोभ मिटत गुणिधर्म हियेसन्तोष गहत जब ॥ बंधुअंशको हरबकरब अधरम सबभाषत। प्रबल बंधुको अंशचपत कहुहिय अभिलाषत ॥ सुत असत पथिनको मंत्रसुनि हठठानहु मतिकुपथ गहि। प्रभुकृष्ण कहतसो महत हित करुसम्मतप्रिय बचनकहि ॥ अपरं ॥ तुरंग अशिक्षित बली सूतनहिं जानत रथगति। कर्णधार भरअपटु नदीबर्द्धित बेगितअति ॥ गरबो भूप अमानहोत लघुमति मंत्रीतब। सुथर सुखद कल्याण मिलतनहिं भाषत बुधसब ॥ नृपमत्र करणको सुहित गुणि युद्धकरो मति अनयनहि। प्रभु कृष्णकहत सोमहत हितकरु सम्मतप्रिय वचनकहि ॥ दोहा ॥ गान्धारी

कंवचनये अनरथ मेटनहार। सुनिचुपरहि फिरिउठिगयो गरबीभूभरतार॥ शकुनि दुशासन कर्णसह बैठिकरतभो मंत्र। जानिपरत ममगहनकोकेशव तानेतंत्र॥ सोरठा॥ ममगहिबे कोडौर जौलगिये सिगरेकरैं। तौलगि हमकरिगौर बांधिलीजिये कृष्ण कहँ॥ सुनिकै बन्धन तासु पांडव सब ह्वैहैं बिकल। तबजय पाइबआशु जौलरिहैं तौ सदल बपि॥ चौपाई॥ यहकुमंत्र उनजो अनुमाने। सोबुधिबलसोंसात्वकि जाने॥ कृतबर्मासों कहिकहिदीन्हें। रहाभटन कहंसुजतन कीन्हें॥ इमिकहि आपुसभाग्रह आयो। करिसुइसारा प्रभुहि जनायो॥ इमिधृतराष्ट्र नृपतिसों भाष्यो॥ तोसुत मूढ़ अनय अभिलाष्यो॥ गहन चहत माधव कहं तैसे। ज्वलित कृशानहि बालकजैसे॥ यहसुनिकहे बिदुरब्रतधारी। तोसुतमूरुख अघरमचारी॥ कृष्णप्रभाव नहियबिचारत। रबिपरशन कहंहाथ पसारत॥ इतनेमें केशव अनुमानी। वृद्धनृपतिसों कहेसुबानी॥ जोहमअनरथआनै मनमें। तौतोसुतन बिनाशैं क्षणमें॥ पैनहिं अधरम करिबोइक्षत। अरथ धरम सुखदायक शीक्षत॥ दुर्योधनसो हिये न आनत। शठमति हठगहि अनरथ ठानत॥ पकरिताहि कारागृह डारो। क्षात्रबंश क्षयअनरथटारो॥ नहिंसिखवन मानीयहराजा। मरीयुद्धकरि सहितसमाजा॥ यहसुनिकै धृतराष्ट्र महीपति। कहेविदुरसों बाणीदीपति॥ जायअधरमी सुतहि बुझायो। मंत्रीबन्धु सखासहल्यायो॥ यहसुनिगये बिदुर मनभाये। दुर्योधनहिं बोलिलैआये॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ दोहा॥ कर्ण दुशासन शकुनिको सुनि कुमंत्र हितजानि। पापकर्म चाहतकियोअधरम सुधरममानि॥ देखिबलाबल करत नहिंसाध्य असाध्यबिचार। कुलपासन चाहतकियो जगजन को संहार॥ सोरठा॥ जोप्रभुप्रभुताऐन जेता सबसुर असुरके। केशवसबजगजैन गहन चहत तेहिमन्द मति॥ विदुरउवाच॥ पावक शम्भु कुमार बाणासुर अरु बरुणकहँ। जीत्योजौन उदार गहन चहततेहि माहबश॥ गोबर्द्धनहिं उठाय जेहिरास्यो निजपाणिपर। असुरनके समुदाय बन्यो ताहि चाहत गहन॥ चामर॥ कृष्ण भूपसों कहैंगहे महाअयानता। मोहिं एक जानिमानि नीतिकी सयानता॥ बांधिलेन डारि देन बन्दिगेह में गुने। भूलिमोप्रभावतौन जोनश्रौनसों सुने॥ दोहा॥ हमन एक ममसंग इत ह्वैप्रद्युम्न बलिराम। सब पाण्डव यदुवंश सब सब आदित्य अछाम॥

इमिकहि माधव मुदितहवै रूप बिराट अनूप। दरशाये दुर्योधनहि और रहे जे भूप ॥ सबपांडव आदित्यसब सबयादव समुदाय। सबदेखे सबबिधि सजे यदुनायकके काय ॥ चौपाई ॥ लखि स्वरूप सो नृपसब डरिकै। मूदि रहेचख विस्मय धरिकै॥ संजय बिदुरद्रोण अरु भीषम। देखतरहे रूपवह भीषम ॥ भूपतिदिव्य चखनसों देखे। तबप्रत्यक्ष लखिबो अवरेखे ॥ कहेनाथ लहिचख अतिपावन। देखो चहत रूप मनभावन ॥ यह सुनि प्रभु अनुकम्पा कीन्हें। धृतराष्ट्रहि अनुपम चखदीन्हें ॥ सो लखिसुरगण बिसमित ह्वैकै। प्रभुहि प्रणाम किये बिधिज्वैकै ॥ फिरिपूर्ववत भये यदुनायक। भयो पूबवत भूपति चायक ॥ तबप्रभु सात्विकिको कर गहिकै। उठिकैचले मोदसों नहिकै ॥ उठिसब भूपचले पहुंचावन। सुरथचढ़े माधव छबिछावन ॥ सुरथचढ़े सात्विकि कृतबरमा। और सुभट सब पूरित परमा ॥ तब धृतराष्ट्र भूपइमि भाखे। प्रभुहम पाप बुद्धिनहिं राखे ॥ तुम परतक्ष सुनी ममबानी। नहिंमान्यो दुर्योधन मानी ॥ यह सुनि कहेकृष्ण जगस्वामी। तोसुत भावी बिधि अनुगामी ॥ बिनुमति फिरे गहेहठ ऐसे। भूपहोइ वह होनी कैसे ॥ इमिकहि तुरित बिदाह्वै सानँद। कुन्तीके ढिगगे प्रभु मानद॥ बन्दि पृथाके चरण सोहाये। बिधिवत सबवृत्तान्त सुनाये ॥ जेहिबिधि समुझाये सबकोई। नहिंमान्यो दुर्योधन सोई ॥ इमि कहि गहे शोच मतिगाहौ। कहौ सँदेश कहन जो चाहौ ॥ यहसुनि कही पृथाअनुमानी। कहेहु युधिष्ठिर सों प्रभुज्ञानी ॥ क्षात्र धर्म्मको त्यागन करिकै। लहे दुसह दुखअटवी चरिकै ॥ दोहा ॥ क्षात्रधर्म्म त्यागन करब नहिंभूपनको कर्म। नृपके साधे सधत हैं बर्ण आश्रम धर्म्म ॥ पूर्वभूप मुचुकुन्द सों कहे वैश्रवण दक्ष। राजाचारो युगन को कारण नीति प्रतक्ष॥ दण्डनीति बर्द्धित किये भूपति चरत सधर्म्म। तौसतयुग बरतित रहत जगत करत सतकर्म्म। तेहिबिधि त्रेता द्वापरौ कलियुग प्रगट लखात। भूपति जेहिबिधि चरतहै धर्म्मकर्म्म गहितात ॥ चौपाई ॥ नृपक्षत्री निजगुण परिहरिकै। जीवन उचित बिप्रब्रत धरिकै॥ यज्ञ दानकै रणमधि मरिकै। क्षत्री लहत स्वर्गब्रत चरिकै ॥ यहगुणि बिप्र वृत्तिकरि त्यागन। लेहि स्वअंशभूमि अनुरागन॥ साम दण्ड दानादिक करिकै। लेहिभूप निजगुण अनुसरिकै ॥ बिनशत पुण्यपाप फल

आवत। तबबढ़ि दुसह दरिद्र सतावत॥ यहिदुखते लरिमरिबो नीको। सहिदरिद्र दुख जीवन फीको॥ यह इतिहास पुरातन सुनिये। उचित होइ सोकरिबो गुणिये॥ बिदुलागत बिभूति अभिलाषी। जो निजसुत भूपतिसों भाषी॥ संजयनाम तासुसुत राजा। सिन्धुनाथ सों लरो ससाजा॥ कटे संगके सुभट प्रमाथी। अगनितमरे तुरँग अरुहाथी॥ तहँ भूपति बलबिक्रम ज्वैकै। परो मोहबश ब्याकुल ह्वैकै॥ तब बिदुला भाषी निजसुतसों। कत तजि युद्धपरो भययुत सों॥ अरिवृन्दन कहँ आनँद दीन्हें। सुयश पिताको लोपित कीन्हें॥ क्षत्रिहि लरि मरिपरे भलाई। इमि मोहित ह्वैबो कदराई॥ कतत्तजि धीरज संडरामाना। परम मोहबश भयो अयाना॥ भयतजि उठि धीरजधरि मनमें। अरिहि नाशकै तनतजु रणमें॥ दोहा॥ बिनामरे महिभोग को गहत तोषतजि रोष। यह न उचित नृपपुत्रकहँ यहप्रसिद्ध अतिदोष॥ दानखड्ग बिद्या सुगुण करिनहिंहोत प्रसिद्ध। जनमि बिनाहक करतसो जननीजनकहि वृद्ध॥ अपटु अरीझ अमौज अरु भीरु अक्रोध अधीर। नृपपतनी ऐसो सुवन वृथाजनै सहिपीर॥ सेवक गणसो उचितहै क्षमातोष हे तात। शत्रुन सों करिबो क्षमा तोषदोष अधिकात॥ तातेतजि सन्तोषसुत अमरष गहिकरु युद्ध। कैजीवतकै मरवहै क्षत्रिहि दूनौशुद्ध॥ जयकरी॥ तो बालापनमें ममपास। आइकह्यो ब्राह्मण मतिरास॥ यहकछु दिन में कृशगति पाय। फिरिअति वृद्धिलही सुखदाय॥ सोगुणि बूझिशंकतजि तात। लेहु युद्धकरि बिजय बिभात॥ यहि प्रकारके अगनित बैन। सुनि बोलो भूपति लहिचैन॥ नहिंअब ममसंग योधा उद्ध। किमि हम करें शत्रुसों युद्ध॥ सुनि बिदुला बोली अनखाय। शूर न हेरत संगसहाय॥ तेजवान भूपतिकासंग। लरतसुभट जुरिआनि उमंग॥ तातेशोच त्यागि लहिचेत। करि उद्योग लरोजय हेत॥ शोचबढ़ाये काज नशात। धीरज करत काज अवदात॥ जौनअवशि करिबेको योग। तहां न शोचब उचित प्रयोग। तुम कह करब युद्धमत ठीक। जीतेमरे उभयदिशि नीक॥ यह क्षत्रिनको धर्मअनूप। क्षमातोष मतिआनौ भूप॥ क्षमातोष गहि तजि यह भूमि। कौनदशा लहिहौ दिशिघूमि॥ यहसुनि संजय नृप रिसिछाय। लरे शत्रुसों जोरि सहाय॥ पाय बिजय लहिराज्य महान।

किये पूर्ववत भोग बिधान ॥ हेयदुपति ममपुत्रन पास। बिधिवत कहियो यह इतिहास ॥ दोहा ॥ यहइतिहास सुनाइकैकहेहुकृष्ण मतिमान। भूमि लेहिं जेहिबिधि मिलैइहेधर्मनहिं आन ॥ इतनेमें तेहि थरभई नभबाणी अतिशुद्ध। एथाशोच तजु तोमुवन महिलेहैं करियुद्ध ॥ चंचला ॥ जासुसंग बासुदेव प्रीतिसों सदाविभात। बिश्वनाथ बिश्वपाल बिश्वरूप बिश्वगात ॥यातुधान कैक कोटिको सुजोकरै बिनासु। शक्रतीनिलोक ईशहोत पाय कृपाजासु ॥ दोहा ॥ भीम पार्थ सम जगतमेंको योधा रणधीर। कृष्ण चन्द्रकी कृपातें लेहैंबिजय गँभीर ॥ नभबाणी सुनि मुदित ह्वै एथा कही समुझाय। भीमपार्थसों कहेहु इमि ममसँदेश यदुराय ॥ सोरठा ॥ द्रुपदसुता के केशगहि ल्याये जो सभामधि। सोदुख मिटै अशेष करै तौन नृप नीतिगुनि ॥ सुनिकुन्ती के बैन आश्वासित करिकै सबिधि। केशव राजिव नयन बिदाभये मंगलअयन ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिभगवतोदूतकर्म्मणिकुन्तीकृष्णसंवादोनामचयास्त्रिंशतितमोऽध्यायः॥२३॥

बैशंपायनउवाच ॥ हरिकुन्ती सो ह्वै बिदा रथचढ़ि ओजबढ़ाय। तेहि निजरथ पर करणकहँ सादर लये चढ़ाय ॥ दारुकि सों हँकवाइ रथ चलि पुरबाहेर आय। थिरि सुमंत्र करि करणसों बिदाकिये सुखपाय ॥ जयकरी ॥ करणहिं करिकै बिदा सप्रेम। कृष्ण लले समुझत निजनेम ॥ उतै द्रोण भीषम अनखाय। दुर्योधन सों कहेबुझाय ॥ तात करो सम्मत अवदात। नातरुहोन चहत उतपात ॥ क्षात्रबंश पर प्रलयमहान। होइहि जानो इतो निदान ॥ तो बिक्रम रबि होइहि अस्त। पाण्डव लहिहैं भूमि समस्त ॥ मो मनमें नहि संशयऔर। इतो शोचसो कहत सडोर ॥ प्राणसरिस पाण्डव प्रिय मोहिं। तिनसों लरन परी बिधिजोहि ॥ ताते शतधा सिखवत नीति। सम्मत करो प्रगट करि प्रीति ॥ यह सुनिकै दुर्योधन भूप। नहिं दीन्हें उत्तर अनुरूप ॥ तबधृतराष्ट्र नृपतिमति ऐन। संजयसों इमि कहे सुबैन ॥ कहुसंजय करणहि लैजाय। कहेकहा माधव मनलाय ॥ सुनिबोले संजय मतिभौन। माहाराज मणि सुनिये

तौन ॥ कहे करणसों कृष्णसुजान । करण बिदित तूअतिमतिमान ॥ विधिवत सुने वेद वेदान्त । धर्मशास्त्रहौ सुने सुदान्त ॥ पाण्डु नृपतिकेपुत्र सहौढ़ । हौ तम जाहिरक्षत्रीप्रौढ़ ॥ भो बिवाहते पीछे जौन । अरु पूबहु जोभो बलभौन ॥ होतसहोढ़ सुदोनोतात । हैयह शास्त्रमाहिं बिख्यात ॥ मातबिवाह जासु सँगहोय । पूर्व्वजहूकोपितुहैसोय ॥पाण्डुनृपतितो पितु ओढार ॥ तुमहौं पाण्डव भूभरतार ॥ दोहा ॥ हौतुम धर्म महीपके सोदर अग्रजभाय । मानि बचन ममसंग तुम चलो मोद सरसाय ॥ सबपाण्डवते अनुजसम मिलिहैं तुम्हैं सप्रीति । बिप्रनसह अभिषेक करिकरिहैं नृपति सनीति ॥ चौपाई ॥धौम्यहि आदिबिप्रसबचायक । सबयदुबंशीयदुकुल नायक ॥ हमअरु पाण्डव सहित बिवेका । बिधिवत करब राज्यअभिषेका ॥ तो शासन लहिजानि सुफौजू । करब युधिष्ठिर कहँ युवराजू ॥ सब पाञ्चाल सकल यदुबंशी । सब पांडव सुत सुभट प्रसंशा ॥ सब पांडव करिहैं तो सेवन । महाराज ह्वै लसो सुभवन ॥ उडुगण सह निशिपति छबि छाजत । तिमि बंधुन सह होहु बिराजत ॥ कुन्तिहि देहु मोद अतिभारी । होहु बिदित भूपति नयचारी ॥ यह सुनि कर्ण कह्यो अनुमानी । सांचकहत तुमकेशव ज्ञानी ॥ हैंमम जननी कुन्तीमाई । पांडव हैं ममसोदर भाई ॥ रबिप्रथमहिं यह मोहिं सुनाये । फिरि जिमि राधा केघरआये ॥ कुन्ती करि दीन्हों मम त्यागन । सूतकियो पालन अनुरागन ॥ राधा मुत्रपुरीष उठाई । पालो सुतकरि प्रीति बढ़ाइ ॥ जातककर्म सूत ममकीन्हों । बिप्रन भूरिदक्षिणा दीन्हों ॥ सूतज मोहिं जगत सब भाषत । तासु न त्याग बनत अभिलाषत ॥ तिनकोपिण्डभाग को छेदन । उचित न मोहिं लागि यहि भेदन ॥ उनके नेह दामसों बन्धित । मम परिवार होत नहिं सन्धित ॥ दोहा ॥ ताहूसों अति कठिन है दूजो कारण तात । दुर्योधन के मित्रहम सबनृप गणमें ख्यात ॥ करि अभिषेक सुअंगपति भूप मोहिं करिभूप । दुःशासनसों अधिक प्रिय मानत निज अनुरूप ॥ और सुनोएक बात यह होइहिसब जगमाहिं । अर्जुनसों डरि कर्णगो भूप युधिष्ठिर पाहिं ॥ सोला ॥ मोहिं भीषम द्रोण कृपसों अधिक योधा जानि । पण्डवन सों बैर कीन्हें मंत्र ममहित मानि ॥ लहो अतिऐश्वर्य्यको सुख जासु संग अथोर । भीष्मको मत निदरि

जोहित मंत्र मानत मोर ॥ युद्धकरि जय लहनको अतिभोर जाहि भरोस। तजब ऐसी समय ताहि बिश्वासघात कुदोस ॥ होतसब अपराध सों बिश्वासघात गरिष्ट । परमधर्मी बिदित हम किमि करैं सो गतिइष्ट ॥ प्रथम धर्म महीप राजा भयो जोरि समाज। तौन पद हम ग्रहणकै किमिकरैं तेहि युवराज ॥ जासु जत्विहित आपुयहि बिधि करत भेदउपाय। तासु जयमें कौनसंशय आपुजासु सहाय ॥ भीम अर्जुन नकुल सात्विकि द्रुपद अरु सहदेव। धृष्टद्युम्न बिराटअरु अभिमन्यु शंख सुभव धृष्टकेतु महीप उतमौजा घटोत्कच बीर। चेकितानहिं आदि जाके संग भूपतिभीर ॥ तासु जयमें कौन संशय सुनहु यदुकुल चन्द। आपु ज्ञाता सकल बिधिजो युद्धयज्ञ अमन्द ॥ पार्थहोता धनुश्रुवा धृत्त बिषपद बिक्रम तासु। अस्त्रशस्त्र सुमंत्र स्वाहा शब्द उचरनि आसु। भीम अरु अभिमन्यु आदिक बीर ऋत्विज पर्म। युद्धयज्ञ अनूप ताको करनहार सुकर्म॥ कटे धनुध्वज अंगरथके पाणि पग शिरगात। समिधरण महि कुण्डसायक अग्नि यत्र बिभात ॥ बिजय अद्भुत पुण्यलेहै बिदित धर्मनरेश कर्णके ये बचन सुनिकै कहेकृष्ण सुभेश ॥ राज्य तुमकहँ देतहमनहिं लेत तुम प्रण धारि। अवश्य पारथ बिजय लेहै शत्रुसेना मारि ॥ कृष्णके सुनि बचन बोलो करण धीर धुरीन। कृष्ण भाषत आपुजो सो सांच सुबचन पीन ॥ लखत हम दुःस्वप्न अगनित अपसगुण अधिकार। महाभीषम युद्ध ह्वैकै भटन को संहार ॥ होत सूचित पाण्डवन को बिजय परम अनूप। हारि इतकी प्रगट जानीजात भीषमरूप ॥ दोहा ॥ पितावृद्ध गुरुपितामह अरु तो बचन अमन्द। नहिं मान्यो वहहारिको लक्षण दायकदन्द ॥ अस्तिनि चयपर बैठिकै सुबरण भाजन राखि। पायस घृत भोजन करतधर्म बिजय अभिलाखि ॥ मीमगदागति शैलपर चढ़ि गरजत जयहेत। शुभ्र सौधपर चढ़ि लसत भूपति धर्मनिकेत ॥ श्वेद द्विरद आरूढ़ ह्वै तुमसह अर्जुन बीर। टङ्कारत गाण्डीव धनु हरत भटनको धीर ॥ नकुल बीर सहदेवअरु सात्विकि दिव्य स्वरूप। बरबाहनबर भटनसह बिरचत समुद अनूप ॥ भीष्म द्रोण बाह्लीक हम ऊटन चढ़े अचाय। दक्षिणदिशि कहँ जातहैं महा मलिनता छाय ॥ सोरठा ॥ केशव यहिबिधि जोहि सब निशिमें अगनित सपन। प्रगट परत लखि मोहिं हारि सुयोधन नृपतिकी॥ चौपाई ॥

पै यह जानि परतहै आरज । बिधि निरमें कछु अनरथ कारज ॥ जाते हित उपदेश न भावत । यदपिवृद्ध बहुभांति बुझावत॥ हमैं भूपके मनकी करिकै । उत्रिणहोब उचित रणचरिकै ॥ लरब मरब अति धरम सोहायो । है क्षत्रिनके सब युग गायो ॥ भीष्म द्रोणको अरु मम मरिबो । जानो महाप्रलय दिन परिबो ॥ करता कीन्हें निरमित जोई । मिटी न मेट होइहि सोई ॥ इमि कहिकै ह्वैबिदा सचावन । रथचढ़ि चलोकरण छबिछावन ॥ हन इत चले उते प्रभुज्ञानी । बिदुरगये जहँ कुन्तीरानी॥ कुन्ती बचन बिदुरके सुनिकै । शांचि करणको बिक्रम गुणिकै ॥ गई करणके ढिग बरज्ञानी । करण बन्दिपग कह्यो सुबानी ॥ आगम हेतु कहो ब्रतधारिणि । तब इमि कही पुत्र हितचारिणि ॥ तुम ममसुत नहि राधा सुनहो । सुत तुत यह वृतांत अश्रुनहो ॥ कुन्तिभोज भूपति के घरमें । सुत सुनु मन कन्यापन बरमें ॥ रबिसों भया समागम मोसों । तब तुत भये कहत सति तोसों ॥ कुण्डल कवच धरे अभिरामा । प्रगट भये तुम बर बलधामा ॥ धर्मभूप तुत सोदरभाई । प्रीतिकरो हठ बैर बिहाई ॥ दोहा ॥ तुमहो जेठ नृपतिह्वै धर्महि करि युवराज । बन्धुनसों सेवित लहो अति आनँदसह साज ॥ तुम अरु अर्जुन एकह्वै गहिहो भाय सुप्रेम । तब कुरुपति सम्मति करी तजि अधमको नेम ॥ क्षत्रबंश को नाश बिधि लगोजाय मिटि तोन । पाण्डव होहु प्रसिद्ध तुम तजि सूतज पद जोन ॥ चौपाई ॥ सूरजके बर मण्डलते तहँ । ई धुनि आनिपरी सुनि हे जहँ ॥ हेसुत जो तुवमातु सिखावति । सो दुखदायक नीति नशावति ॥ जानि भलो हमहूं यह भाषत । सम्मत आनँददै दुखनाशत॥ हेयह सीख महा सुखदायक । अवशि करो नहिं टारन लायक ॥ दोहा ॥ जनक जननिके बचन सुनि कह्यो करण मतिधीर । सुनु जननी सुख राज्यहित धर्म न तजत सुबीर ॥ मंत्री भाई भट सखा करि पाल्यो नृप मोहिं । ता हित जब ऐसो समय परत महाअब जोहि ॥ मम बिक्रम बोहित महा नृपताके आधार । पाण्डवसेना उदधिके जान चहतहैं पार॥ ताहि तजे कीरति नशत होत महा अपराध । तजि रणको प्रण मंत्रयह हमन करब अवराध ॥ पै तोहियगत शंकगुणि कहत इतो सतिनैन । चारि सुवन तो नहिं बधब तजि अर्जुन बलऐन ॥ पारथ भटके बधनको

हम प्रण कीन्हे पूर्व। सोहम कहिकै तोहिं हम बधब युद्ध करि गूर्व॥ तेरे पांचौ पुत्रते रहिहैं जानु यथार्थ। पार्थ नहीं तौ कर्ण अरु कर्ण नहीं तौ पार्थ॥ महिलरी॥ सुनि कर्णके ये बचन कुन्ती समुझि कछुक्षण चुप रही। रणसमय लहि मति भूलि जायहु बचन यह फिरि इमि कही॥ गुणि प्रबल भावी मिटत नहिं प्रियबचन कहि निजघर गई। कुरुबंश को गुणि नाश मनमें शोचि अति चिन्तित भई॥ दोहा॥ नीरद रुचि नीरज नयन रामकृष्ण कहँ ध्याय। धर्मभूपको धर्मगुणि रही धीर सरसाय॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउहितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे उद्योगपर्वणि भगवद्दूतचतुर्विंशोऽध्यायः॥ २४॥

वैशंपायनउवाच॥ दोहा॥ हास्तिनपुरते कृष्णप्रभु आय युधिष्ठिर पास। यथायोग मिलि बैठि तहँ कीन्ही सभा प्रकास॥ तहँकरि बिधिवत बार्त्ता कहि उतके बिरतांत। जातभये निज सदनप्रति श्रीप्रभु यदुपति दांत॥ कछु क्षणमें बरखास्त करि सभा युधिष्ठिर भूप। बन्धुनसह तहँ जातभे जहँ प्रभुकृष्ण अनूप॥ तहां युधिष्ठिर भूपसों कहे कृष्णप्रभु तौन। आपु सुयोधन नृपतिसो कही बार्त्ता जौन॥ भीष्म द्रोण संजय बिदुर कृप गांधारी भूप। समुझाये तिमि तौन सबकहे श्यामघन रूप॥ फिरि प्रभु बिधिवत कहे जो कुन्ती कही सँदेश। भई बार्त्ता करणसों सोनहिं करत बिशेश॥ प्रथक् प्रथक् सब बार्त्ता कहि यदुनायक दक्ष। कहे चले हम वहांते तबयह लखे प्रतक्ष॥ दुर्योधन उठि सभाते अति राते करि नैन। कुरुक्षेत्र दल चलन को शासन दर्प सचैन॥ जयकरी॥ बहुप्रकार समुझाय सनेम। जब सब थके चाहि तब क्षेम॥ हम इमिकहे भूपहित लेहु। पांचग्राम इत उनकहँ देहु॥ आविस्थल सुवृकस्थल तौन। मार्कंदी है शुभथल जौन॥ और बारणावत अभिराम। और एक जो चहो ललाम॥ एक एक भ्रातनप्रति एक। देहु ग्राम तुम सहित बिवेक॥ बाकी और भूमिको भोग। करो मेटिकै युद्ध कुरोग॥ सोऊ नहिं मान्यो मतिमन्द। कहतभयो गहि गरब अमन्द॥ सुईअग्र भरि भूमि न देब। घोर युद्धकरि बधि जयलेब॥ यहसुनि गुणि भावी बलवान। हम इतआये

सुनो सुजान ॥ अब सबबन्धु समुझि यह तंत्र । करो बिचारि उचित जो मंत्र ॥ यहसुनि धर्ममहीप बिचारि । बोले बन्धुन ओर निहारि ॥ सुनो उतैको सब वृत्तांत । अब करतव्यकरो सो दान्त ॥ यहसुनि बोले बन्धु समस्त । मम दलके सब सुभट प्रसस्त ॥ रणकरि लेब बिजय अबदात । सगर करब मंत्र अददात ॥ भीष्म द्रोण कृप करणसमान । मम दलमें बहुभट बलवान ॥ सेनापति करि सुभट उदण्ड । करौ युद्ध गहि असिको दण्ड ॥ दोहा ॥ तब माधवसों कहतभो धर्ममहीप बिचारि । आपु कहो केहि सैनपति करैं युद्ध प्रणधारि ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ कृष्ण कहे तो सयनके हैं सब भट जगजैन । रुचै ताहि सेनाधिपति करो शोच कछु हैन ॥ बिदित अयोनिज दिव्य भट धृष्टद्युम्न क्षितिपाल । ताहि करो सेनाधिपति मोहिं रुचत क्षितिपाल ॥ चौपाई ॥ कृष्णचन्द्रके बचन सुहाये। सुनि सब पांडव अति सुखपाये ॥ सबनृप सुभट मोद हियसाने । युद्ध हेतु अतिशय उमदाने ॥ धर्मनृपति तब सेन सजन को । दिये निदेश निशान बजनको ॥ द्रुपद बिराट आदि सबराजा । दल साजे बजवाय सुबाजा ॥ सातअक्षौहिणि सेना सजिकै । धर्ममहीप शक्रसम रचिकै ॥ हय गज धेनु हेम मणि पावन । बिप्रन पूजि दानदै चावन ॥ गुणत ईश महिमा मनभावन । सुरत शुभद स्वस्त्यन सुगावन ॥ कुरुक्षेत्र गे ओज बढ़ावत। धूरधार सब दिशिमें छावत ॥ बिषज औषधी बूटी लीन्हें । सहसन सगचले हितचीन्हें ॥ ज्योतिस मंत्रतत्वके ज्ञाता । सहसनसंग लये महित्राता ॥ सकट असंख्यन आयुध लादे । लये चले भटभृत्य प्रमादे ॥ चले असंख्यन शिलपी चातुर । सौज समाजन सहित अनातुर ॥ यहिबिधिकुरक्षेत्र मधिजाई । किये निवास सुथल ठहराई ॥ जनमेजय भूपति यह सुनिके । व्यास शिष्य सों बूझे गुणिकै ॥ जब प्रभु हास्तिनपुरसों आये । तब कुरुपति किमिसैन सजाये ॥ सोसुनि बैशम्पायन आरज । कहत भये कुरुपतिके कारज ॥ दोहा ॥ आये हास्तिननगर ते कृष्ण धर्मनृपपास । तब दुर्योधन भूपकरि शिथिलि जीतिकी आस ॥ करण दुशासन शकुनिसों कहतभयो समुझाय । पाण्डवको कारजबिना किये गयो यदुराय ॥ रोला ॥ कृष्ण सोई मंत्रकरिहैं होइजाते युद्ध। युद्ध करि जयलेनको हमगहें गौरव शुद्ध ॥ साजिसंगी सैनसादर दुन्दुभी

बजवाय। कुरुक्षेत्र सुक्षेत्रमधि चलि लरोओज बढ़ाय॥ शस्त्र शिलपी भिषज मंत्री गणिकके समुदाय। चलैं सेनासंग ब्राह्मण कुशल आनँद छाय॥ नृपतिको सुनि सरस शासन नृपतियोधाभूरि। साजि निज निज सैन गरबित चले आनँद पूरि॥ उदधिसम बढ़ि नाघि बेला मध्यमहि कुरुसैन। भईनिवसत जाइकै कुरुक्षेत्र मध्य सचैन॥ नृपनकी करिसभा दोऊ भूप रैनिबिताय। भोर बिलसत भये बिधिवत सैनसौंज सचाय॥ एकदश अक्षौहिणी कुरुनाथ नृपके संग। धर्म नृपके साथसात अक्षोहिणी सउमंग॥ भूप दुर्योधन कियोतहँ पृथक् सेनाधीश। द्रोण करणहि जयद्रथ अरु शल्यजो अवनीश॥ द्रोण सुतहि सुदक्षिणहि अरु भूरिश्रवहि बिचारि। शकुनि अरु बाह्लीक कृतबरमहिसु बीरनिहारि॥ पृथक् सेनाधीश करिकै सौंपि रणको भार। बिनय पूर्बक भीष्म सों इमि कह्यो भूभरतार॥ युद्धहित सब बरणमें है श्रेष्टक्षत्री वीर। आपुक्षत्री मुकटमणिहौ जगतजित रणधीर॥ तेज मतमें सूरजैसो बिहँगमें खगराज। धनद यक्षण में यथा जिमि मेरुगिरि शिरताज॥ तथातुम क्षत्रियन में हौ बिदित धीरधुरीन। सैनपतिह्वै युद्ध करिकै लेहु जय यश पीन॥ स्वामिकार्त्तिक सैनपति ह्वैबिजय शक्रहिदेत। तथामम सैनेशह्वै तुमलेहू जय यशहेत॥ भूपके सुनिबचन भीषम कहे बचन सनीति। यथा तुम मम तथा पाण्डव उभय मधि सम प्रीति॥ सबिधि तुमहिं बुझाय हारे नहीं मानेनेक। सैनपतिह्वै गहबअबतौ बिजयहित रणटेक॥ दोहा॥ नहिंमम सम पर सैनमें हैकोऊ भटऔर। पारथमोसों अधिकहै बिदित सुभट शिरमौर॥ एकप्रतिज्ञा करतहम सुनोतौन क्षितिपाल। दशहजार भटरोज हम बधब बिरचि शरजाल॥ सोरठा॥ साफ कहत हेभूप बधि न सकब हम पाण्डवन। करिकै युद्ध अनूप करण बधैकै और भट॥ चौपाई॥ ऐसे बचन भीम्म केसुनिकै करणबीर इमिबोलो गुणिकै॥ जीयत भीषम धनुधर जौलों। भूपति हम न करब रणतौलों॥ भीषम के बध पर धनु गहिकै। लरब फाल्गुणसों थिरु कहिकै॥ तदनन्तर दुर्योधन राजा। द्विजन सहितसह नृपति समाजा॥ सेनानायक को अभिषेका भीष्महि कीन्हें सहित बिवेका॥ सेनापति ह्वै भीषमराजे। अगनित शंख दुन्दुभी बाजे॥ तबजनमेजय भूपति भाषे। तबनृपधर्म कहा अ-

भिलाषे ॥ यह सुनिबोले बैशम्पायन। सुनि अभिषेक धर्म नृपचायन ॥ कृष्णचन्द्र सों कही सुबानी। भीष्महि भूप कियो सेनानी ॥ अब निज दलकी रचना कीजै। पृथक् सैन नेताकरि दीजै ॥ यहसुनि कृष्णकहे सति भाषत। करो बिभाग यथा अभिलाषत ॥ धर्मभूप तब द्रुपद बिराटहि। धृष्टद्युम्न सात्विकि भट ठाटहि ॥ धृष्टकेतु क्षितिपाल सुभेवहि। जरासन्धके सुत सहदेवहि ॥ सुभट शिखंडी अरिदल जेता। कीन्हें साथ पृथक् दलनेता ॥ धृष्टद्युम्न जोभट दृढ़ घायक। कीन्होंताहि सकल दलनायक ॥ सब नृपतिनको सम्मतलीन्हे। सबको अधिप पारथहि कीन्हें ॥ दोहा ॥ कीन्हें अर्जुन सुभटको शीक्षकरतनेतार। यदुनाथहि जो बिदित प्रभु असुर सैन जेतार ॥ इतने में आयेतहां सूत सहित बलराम। गये प्रद्युम्न अक्रूर अरुऊधो आदि अक्षाम ॥ संयुता ॥ यदुनाथ रामहिं देखिकै। उठि मोदसों हियभेषिकै ॥ अतिनेह ऊपर खोलिकै। सुखदानि बाणिहि बोलिकै ॥ दोहा ॥ लपटि प्रेमसों मिलेफिरि मिले धर्मक्षितिपाल। सब पाण्डव सब नृप मिले मिले द्रुपद पाञ्चाल ॥ यथा उचित सबसों मिले सबकोऊ करिप्रेम। नृपति युधिष्ठिर पाणिगहि बैठाये गुणिक्षेम ॥ चौपाई ॥ तब हलधर माधव सों भाष्यो। काल जगतको क्षय अभिलाष्यो ॥ ह्है घोरयुद्ध अतिभारी। मरिहैं सब क्षत्री धनुधारी ॥ तुम चाहत पाण्डवन जितावन। पाण्डव लेहैं जय मनभावन ॥ अबहीं नहिं चेतत मतिबिगरे। लरिमरिहैं धृतराष्ट्रज सिगरे ॥ मम सम्बन्धी एऊ वोऊ। मोकहँ समप्रिय भूपति दोऊ ॥ गदायुद्धके शिष्य हमारे। भीम सुयोधन परम पियाहे ॥ ताते इन रहि अनरथ ऐसो। हम न लखब यह कर्म अनैसो ॥ तीर्थ यात्रा कहँ यहिकारन। आजु जातहम और बिचारन ॥ इमि कहिकै ह्वै बिदा बिचक्षण। तीर्थ करणगे राम सुलक्षण ॥ जब अभिराम राम प्रभु आरज। गयेबिदा ह्वै तीरथ कारज ॥ तबतहँ प्रबल सैन सहआयो। रुकुम भूपकोसुत भट गायो ॥ ताकहँ देखि युधिष्ठिर राजा। पूजियथा बिधि सहित समाजा ॥ सादर यथा उचित बैठाये। कुशल प्रष्णबूझे मनभाये ॥ कुशल प्रष्ण कहि नृप बलवाना। कहतभयो पूरित अभिमाना ॥ तुमपर भीर खबर हमपाये। करन सहाय सैन सह आये ॥ नृपति मोहिं लहि सबल सहाई। युद्धकरो सबशोच बिहाई ॥ दोहा ॥ यह सुनि अमरष सहिक-

ह्यो पारथ धीर धुरीन। हमें शंकहै कौन की शंक गहत हैं दीन ॥ हम जार्यो खाण्डीव बन जीति सुरेशहि यत्र। गन्धर्बन जीत्यो न हम चहो सहाई तत्र ॥ हम निवात कवचिन बध्यौ साठिसहस भटयत्र। लरिजीते सब कुरुन नहिंचहे सहाई तत्र ॥ सब जगजीतन योग्य हम चाहत नहीं सहाइ। चहौ रहौ यहिओरकै उतैजाहु अनखाय ॥ यह सुनिकै सुत रुकुम को उठिचलि सैनसमेत। दुर्योधन क्षितिपाल पहँ गोबल गर्ब निकेत ॥ चौपाई ॥ पूजिताहि दुर्योधनराजा कियोनिवासित सहित समाजा ॥ सुनिबोले जनमेजय चायक। तबकाकीन्हें कुरुकुल नायक ॥ यहसुनि भाषेमुनिवर आरज। तबकुरुपति जोकीन्हें कारज ॥ शकुनि जयद्रथ करण दुशासन। सहितमंत्र करि नृपकुलनाशन ॥ नामउलूक शकुनिकोभाई। तासोंबोलो गर्बबढ़ाई ॥ धर्मभूपसों कहोसँदेसो। युद्धकरै अब त्यगि अँदेसो ॥ कहेहु युधिष्ठिरसों समुझाई। अबमति डरआनै कदराई ॥ हारिमहीधन चाहत सोई। ऐसोअधरम करत न कोई ॥ ऊपर अति सुधरम दरशावत। हिय अधरम को पुंजबसावत ॥ तथाबिलार भगत बनिआछे। खायो मूसन को गणपाछे ॥ सोब्रततुम प्रथमहिसों लीन्हें। धर्मबचन कहिअधरम कीन्हें ॥ तातेचढ़ि ममसंमुख लरिकै। पातकनाशौ रणमधि मरिकै ॥ ममबिक्रम गुणिकै भयपागे। पांचग्राम केशवमुख मागे ॥ बिनायुद्ध सूचीमुख धरनी। देवन हम हम जाहिर परनी ॥ इमिजेठे पांडवसों कहिकै। कहेहु भीमसों धीरजगहिकै ॥ बहुतखाब क्षत्रीगुणनाहीं। नहिं अति गरब गहैमनमाहीं ॥ दोहा ॥ खायमोटाने मत्स्यपतिके घर पाक बनाय। करीप्रतिज्ञा तौनकरि सकै करैतौआय ॥ कहेहुकृष्णसोंकरिसकै पांडवको हितजौन। समयपाय निजशक्य भरि करै आय अबतौन ॥ इन्द्रजाल शिखि बिबिधि बिधि रूप लखावत जौन। तासोंनहिं कारज सधत हम न गुणत कछुतौन ॥ कहेहु नकुल सहदेवसे जोकछुबिक्रम होय। समुझितरुणि को कच ग्रहण आइ करैंअबसोय ॥ सात्यकि द्रुपदबिराट अरु धृतद्युम्न उतजौन। श्वेतसिखंडीसों कहेहु तुम्हैं गुणतभट कौन ॥ परहितलगि तन त्यागिबो भलोमंत्र ठहराय। तुमआये तौ युद्धकरि शीघ्रमरो अबआय ॥ तोटक ॥ इमि पारथ सोंकहियो मनदै। शरलाघवनें पणनैंमनदै ॥ नहिंशंकहमें लखिकूरसता ॥ तुम युद्धकरो गहिपूरषता ॥ अबसंडपनो अपनो तजिकै। अनुमानि गला-

नि गहोलजिकै ॥ महिचाहततौ चढ़िकै लरिकै। सहबन्धुन लेहु महीमरिकै ॥ तोमर ॥ ममसैन सिन्धुअथाह। भटभीष्म जासुप्रवाह ॥ भटद्रोण बेगअमन्द। कृपमौर दायक दन्द ॥ नृपशल्य सूतजकूल। भगदत्त घोष अतूल ॥ कांबोज नृपबड़बागि। अरि बारि दाहक लागि ॥ मम बंधुझष समुदाय। जेतजत नहिं अरिकाय ॥ सबशकुनि आदिक भूप। अतिग्राह भीषमरूप ॥ भटजयद्रथ बरजोर। हैंदुसह मारुतघोर ॥ सकम्लेछ आदिकसर्व। हैंलहरि पूरितगर्व ॥ दोहा ॥ वृहस्थलौ बड़बागि मुख सोमदत्त सह पुत्र। तिमिर तिमिङ्गिल सरिसहैं गहेशत्रु बधसुत्र ॥ यहि ममसेना सिंधुमधि परिमति त्यागोप्रान। राज्य न मांगे मिलतहै बिना भग्य परमान ॥ संजयउवाच ॥ मानि निदेश उलूकगो जहँनृप धर्म निकेत। भूपति आदर करिकहे कहो आगमनहेत ॥ चौपाई ॥ तबउलूक भटत्यगि अँदेसा। दुर्योधन कोकहो सँदेसा ॥ पृथक् पृथक् सब भाष्यो सबसों ॥ बीर धीर चातुरता फवसों ॥ सोसुनि भीम आर्जुन आदिक। उतके सिगरे सुभट प्रमादिक ॥ क्रोधानलसों भरिभरि इक्षन। भटउलूक कहँ किये निरक्षन॥ तबमाधव उलूकसों भाषे। होइहिसो बिधि जो अभिलाषे ॥ जाहुसुयोधनके ढिगसादर। करिहैंयुद्ध न इतकोउ कादर ॥ इतनेमें उठिभीमअमाना। गहिउलूकको करबलवाना ॥ कहेकहो उनसों समुझाई। नहिंजानत मम बलप्रभुताई। मैंउनके सेनामधि धसिकै। गदाप्रहारि रुद्रसम लसिकै ॥ सबबंधुन बधियमपुर देहौं। प्रणपूरण करिजययश लेहौं ॥ मैंयहिजगमें बिदित बलीहौं। बधिदुःशासनहिं शोणित पीहौं ॥ बधिबधि घने भटन बलओकन। शीघ्रपठैहौं ऊरधलोकन ॥ दुर्योधन मूरुख सम बोलत। नहिंमम बलअरु निजबल तोलत ॥ कृष्ण उभै दिशिको हित गुणिकै ॥ कहो न मान्योसो शठ सुनिकै ॥ लरिकै गिरि गुरु गदाके घातन। सुधि करिहै केशवके बातन ॥ हम प्रण कियो सभा मधिजेतो। रणकरि सांच करब अबतेतो ॥ दोहा ॥ तबउलूकसों कहतभो बिदितबीर सहदेव। पाप पुरुषको बचनइमि कहतभूलि ममभेव ॥ जोदुर्योधन होतनहिं धृतराष्ट्रको पूत। तोकुरुकुलमें होतनहिं नाशकभेद अकूत॥ मैंताके परिवारको करिहौंनाश ससैन। यहकहि कहेउलूकसों पारथ बिक्रमऐन ॥ चौपाई ॥ मोह बातबश ह्वैदुर्योधन। बोलतकुत्सित बचन अबोधन। धनुगांडीव करषि

बरभाको काल्हिदेब हमउत्तर याको ॥ यहसुनि कह्यो धर्म क्षितिपालक। दुर्योधन शठभो कुलघालक ॥ क्रोध लोभबश अनरथ ठानत। वृद्धगुरुन कोबचन न मानत ॥ कहेहु बुझाइ तजैकुटिलाई। पर बलरारि करब लघुताई ॥ भीषमद्रोण आदिकजे आरज। मान्यहमैंकरता हितकारज ॥ तिनके बल रणकरिबो चाहत। कुरुकुल सौध बिना कै ढाहत ॥ आपु दुसह बिक्रमते रीतो। चहत सहाइनके बलजीतो ॥ बिनुभुजबल जयपावतकोऊ। जानतभीष्म अचारय होऊ ॥ जोकछु निजभुजमें बलराखत। जासु भरोसे यहि बिधि भाषत ॥ तौममामान्य जिते धनुधारी। तिन्हैंबिना बढ़िलरै प्रचारी ॥ तिनकोबचन उलंघन करिकै ॥ तिन्हैंबधावन चाहतलरिकै ॥ हैयह कुत्सित जनकी करणी। इमिहठगहत न सुबुधि सुपरणी॥ यहसुनिकहे कृष्ण अनखाई। ममसँदेश इमि कहेहु बुझाइ ॥ तुम जानत केशव नहिंलरिहैं। सारथिप्रणकरि कामन करिहैं ॥ हम क्रोधानलजाल पसारब। तृणबन समतोसेना जारब ॥ जौन करणको प्रणकियोपारथ भीमअमान। निजभुजबल सोंतौनसब करिहैं करिघमसान ॥ अर्जुनफिरि इमिकहतभे गुणत सुयोधनयेह। नहिंमारेंगे भीष्महि पांडवमानिसुनेह॥ सोहम पहिले भीष्मकहँ मारिभूमि परडारि। तबकरणादिक भटनकहँ बधबजीति प्रणधारि॥ भीष्मद्रोण करणादि अरुसबबन्धुनको नाश। लखी सुयोधन मूढ़तब तजीजीतिकी आश॥ जोरणको उत्साहतौ भोरसैनसजि आय। सजीसैन मम देखिहै शीघ्रकहा यह जाय॥ भीमउवाच ॥ कवित्त ॥ भीमसेन कहेधीममति दुर्योधनसों कहियो अधीम बाणीडौर मेरेप्रणको। भीष्म द्रोण करण औ शल्य भगदत्त आदि मत्तभट होंहिंगे अहार गीध गणको ॥ कुमती कुधन्धहैं मदान्ध सब तेरे बन्धु तिनको बधब मोहिं काम एक क्षणको। भूमिपै पछारि मारि फारि छाती शरदासी शोणित पिओंगो मैं दुशासनके तनको ॥ सोरठा ॥ मारि भूमिपर डारि पदधरिहौं तो शीशपर। सो नृपधर्म निहारि सुख लहि मोहिं प्रशंसिहैं ॥ कह्यो नकुल मतिमान जाय सुयोधनसों कहो। पारथ भीम अमान कहत तौन करिहैं अवशि ॥ कवित्त ॥ तब क्षितिनाथ बिराट शिखण्डी द्रुपद महीपति। धृष्टकेतु सहदेव सुभट सात्विकि गहि भटगति ॥ धृष्टद्युम्न सैनेश प्रगट करि क्रोध दुसह अति। भरे वीररस बचन कहे याहो बिधि रणरति ॥

तब नृपति युधिष्ठिर इमि कहे हम कुलरक्षण हेत गुनि। प्रभु कृष्णहि भेजे सामहित मूढ़ न मान्यो तौन सुनि ॥ दोहा ॥ पांचग्राम मांगे सबिधि सो न दयो मतिखर्ब। युद्ध चहतहौ युद्धकरि हरब तासु बल गर्ब ॥ महिखरी ॥ तुम जाय सादर कहो तासों जौन इत उतर सुने। वै जौन सम्मत चहत तौहम मारि महिलीबो गुने ॥ यहसुनि उलूक महीपमणि सों बिदाह्वै नृपपहँ गयो। इत सुने उत्तर जौन बिधिवत तौन नृपसों कहि दयो ॥ दोहा ॥ दुर्योधन क्षितिपाल मणि सुनि सँदेश उतकर्ष। सभामध्य राजत भयो पूरित महाअमर्ष ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणि उलूकदूतगमनोनामपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

वैशंपायनउवाच ॥ दोहा ॥ यह उलूक के दूतपन की बार्त्ता सुनि भूप। संजयसों धृतराष्ट्रनृप बोले बचन अनूप ॥ सुनि भीमादिक भटनकी दुसह प्रतिज्ञा पीन। कहाकह्यो भीषम सुभट कहुसो बचन नवीन ॥ संजयउवाच ॥ जयकरी ॥ भीषम सेनापति बलऐन। तहँ भूपतिसों कहे सुबैन ॥ कार्त्तिकेय के पद जलजात। ध्याय कहत सुबचन अवदात ॥ सेना कर्म ब्यूहबिधि जौन। सुरगुरु सम हम जानत तौन ॥ बिबिधि भांतिके ब्यूह बनाय। बिधिवत युद्ध करब शरछाय ॥ यथाशक्ति रक्षब तो सैन। युद्धकरौ कछु संशय हैन ॥ यह सुनिकै दुर्योधन भूप। कहत भयो बर बचन अनूप ॥ आपु सैनपति भये बिभात। मोहिं कौन संशय अब तात ॥ अबहम सुनो चहतहैं तौन। रथी अतिरथी इतउत जौन ॥ यहसुनि भीषमकहे बिचारि। भूपति तौन सुनो निरधारि ॥ कृतबरमा अरु शल्य नरेश। भूरिश्रवा जयद्रथ बेश ॥ सोमदत्त बाह्लीक उदार। कृपाचार्य्य अतिरथी अपार ॥ द्रोण द्रोणसुत बिदित सुबीर। महारथी हैं अति रणधीर ॥ असुर अलम्बुष अति बलवान। महारथी है बिदित अमान ॥ निजमुख निजबिक्रम को गौर। हम न सकत कहि सुनु नृपमौर ॥ अब सुनु जे पूरित गुणसर्ब। हैं तो दलमें रथी अखर्ब ॥ तुम सब सोदर रथी महान। परदल जेता सहित बिधान ॥ दोहा ॥ नील सुदक्षिण बिन्दनृप अरु अनुबिन्द नरेश।

पांचौबन्धु त्रिगर्त्त ये रथी भयानक भेश ॥ लक्ष्मण कुंवर उदार अरु दुःशासनको पुत्र। दण्डधार नृपहै रथी गहे जीतिको सुत्र ॥ शकुनि वृहद्वल भूप अरु सत्यश्रवा नरनाह। अचल वृषक जलसन्ध ये सुरथी तो दलमाह ॥ इन्हैं आदि बहु सुभटहैं रथी सुनो क्षितिपाल। वृषसेनो भगदत्त ये हैं अतिरथी बिशाल ॥ मित्र तिहारो जासु तुम राखत महा भरोस। सो सूतज है अधरथी लहे शाप अति दोस ॥ रोला ॥ भीष्म के सुनि बचन सूतज कह्यो रिस बिस्तारि। भीष्म नाहक मोहिं बेधत बचन अस्त्रन मारि ॥ सर्बथा हम चहतहैं कुरुनाथ को हित पर्म। आपु ताते मोहिं निन्दत जानि कुत्सित कर्म ॥ आपुको मत मानि हम नहिं करब निजप्रणभंग। त्यागिकै दुर्योधनहि नहिं गहब उनको संग ॥ यथा तुम कुरुनाथके घरखात सब परकार। चहत हित पांडवनको यह महा अनुचित चार ॥ जराग्रस्त प्रशस्त भट नहिं होत जैसो आप। युद्धमें नहिं वृद्धजनको करत कोऊ थाप ॥ बिक्रमी अरु तरुणक्षत्री बिप्र तपकृत श्रेष्ठ। बैश्य जो धनमान सो बरशूद्र बयक्रम ज्येष्ठ ॥ भूप सेनाधीश तुमकहँ कियो तौन कुमंत्र। चहत तुम जय पाण्डवन को प्रगट है सो तंत्र ॥ युद्धकरि जय लहत भट यश लहतहैं सैनेश। युद्धकरि जय लेब हम तुम सुयश लेहौ बेश ॥ सुनो ताते जियत तुम्हरे करब नहिं हम युद्ध। मरौगे तुम तदनु लरि हम लेबजय यशशुद्ध ॥ भीष्म यह सुनि कहे तू निजयोग्य बोलत बैन। चहतहै कुरुबंशको क्षय मूढ़ तू अघ ऐन ॥ तोहिं अस परघमंड तो तू युद्धकरु मनमान। खरो रहि हम लखब तेरो युद्ध बिक्रम ठान ॥ भीष्म के ये बचन सुनि धृतराष्ट्रको सुत भूप। कह्यो आपु न क्रोध कीजै आपु सुभट अनूप ॥ आपु सूतज एक मत ह्वै करो बिक्रम तौन। लहैं जाते बिजय हममिटि जाय संशयजौन ॥ कहो अब परसैनके जे रथी अतिरथ बीर। भीष्म तब इमि कहे भूपति सुनो सो धरि धीर ॥ प्रथम सुनिये रथी जे परसैनमें बलवान। धर्म्म भूपति परम सुरथी शत्रु जीति अमान ॥ आठसुरथी सदृशहैं भटभीमसेनउदण्ड। ताहि सम नहिं उभैदलमें और भट अति चण्ड ॥ दोहा ॥ माद्रीके सुत प्रबल भट हैं सुरथी बलऐन। अर्जुनसम तिहुंलोकमें भयो न योद्धा हैन ॥ जासु सहायक कृष्णप्रभु धनु गाण्डीव गँभीर। कवच अभेद्य अबध्य है

अनुपम अक्षय तुणीर ॥ सर्ब शत्रु शीक्षक प्रबल पारथ धीर धुरीन। सब दल बधिबे योग्यहै एक धनुषधर पीन ॥ अर्जुनसम अभिमन्यु भट अरि ऐनाको काल। जासु सदृश नहिं जगत में दूजो बीर बिशाल ॥ सुवन द्रौपदीके सकल हैं अति रथी अमान। अज अरु भोज महीपहैं महारथी बलवान ॥ सहस एकादश धनुर्द्धरनसों जौन करतहै युद्ध। शस्त्र शास्त्रमें जो प्रवीन अति तौन महारथ बुद्ध ॥ धृष्टद्युम्न सात्विकि द्रुपद श्वेत घटोत्कच बीर। पांड्यभूप ये सकलहैं महारथी रणधीर ॥ भूप बिराटहि आदिहैं जितने नृप वहि ओर। ते सिगरे सुरथी प्रबल करता संगर घोर ॥ धृष्टकेतु शिशुपाल सुत बार्धक्षेमि नरनाह। चेकितान अरु सत्यधृत महारथी बरबाह ॥ चौपाई ॥ युधामन्यु उतमौजा राजा। सब केकय नृप सरस समाजा ॥ जरासन्ध को सुत सहदेवा। सूर्य्यदत्त अरुशंख सुभेवा ॥ चित्रसेन चित्रायुध नरपति। सेना बिन्द सत्यजित रणमति ॥ व्याघ्रदत्त उत्तरधनुधारी। हैं सारथी अनुपम रण चारी ॥ पुरजित कुन्तिभोज नरनायक। हैं अतिरथी बिदित दृढ़ घायक ॥ महारथी अतिरथी सुबीरा। अरुजे सुरथी अरिरणधीरा ॥ तिन्हैं बधब हमकरि अवरोधा। मोकहँ जीतनयोग्य न योधा ॥ हैउतजौन शिखण्डी सुरथी। तेहिन बधबहम हैजय अरथी ॥ दुर्योधन भूपतियह सुनिकै। गंगासुतसों बूझो गुणिकै ॥ तात न तेहिबधिहौ केहि कारण। सो कहि कीजै शोचनिवारण ॥ भीषम कहेभूपसों सुनिये। जातेहम न तासुबध गुणिये ॥ सत्यवतिहि लखि ममपितु आरज। कह्यो सुआत्म स्वयम्बर कारज ॥ तहँ उन कह्यो होइतब ऐसो। हमजो कहैंकरो तुमतैसो ॥ मम दुहिताके सुतसुत बंशज। भूपतिहोइ न जेठोअंशज ॥ सोसुनिकै हमपितु हित चीन्हों। हम न बिवाह करब प्रणकीन्हों ॥ तब बिवाहकरि नृपमुद पाये। प्रगटभये द्वैसुत छबिछाये ॥ दोहा ॥ जित्राङ्गद जेठो सुवन भयो महाबलवान। फिरि बिचित्रबीरय भयो कला कुशल मतिमान ॥ शान्त भये शान्तनु नृपति तबहम प्रण अनुरूप। भूपकिये चित्रांगदहि करि अभिषेक अनूप ॥ सोरठा ॥ गन्धर्बनसों युद्धकरि चित्रांगद हतभयो। तब हमगुणि मतशुद्ध नृपबिचित्र बीय्यर्यहि कियो ॥ तासु बिवाह बिचार हम मनमें मनसत रहे। तहांआइ ममचार करिप्रणाम भाषत भयो ॥

रोला ॥ काशिराज महीपके हैं चारुदुहिता तीन। नाम अम्बा अम्बिका अम्बालिका परवीन ॥ नृप स्वयम्बर चाहि तिनको बोलि नृपसमुदाय। कियो चाहत शुचिस्वयम्बर सुनो सो सुखदाय ॥ बचनसो सुनि एकरथ हम काशिपुरमें जाय। जीति भूपन कन्यकन कहँ सुरथपर बैठाय ॥ गहे आनँदआय निजपुर सुनोभूपति दान्त। सौंपि सत्यवतीहि दीन्हें भाषि सब बिरतान्त ॥ देखि चित्रांगद नृपतिको ब्याहकाल प्रतक्ष। इबिधि मोसोंकही अम्बा सुनोभीष्म दक्ष ॥ पूर्ब मनमें बरांहै हमशाल्व नृपहि सप्रेम। धर्म्मबिद तुम तुम्हें उचित न भंगकीबोनेम ॥ बचनसो सुनिमंत्र गुणि हम वृद्धब्राह्मण चाहि। वृद्ध दासीदास संगदै बिदाकीन्हें ताहि ॥ जाय शाल्वमहीपकेढिग कहो अम्बा बैन। तुम्हेंपर आशक्त ममन बरो मोहिं सचैन ॥ कह्यो यह सुनि शाल्वभूपति भीष्मलैगो तोहि। और के ढिगगई तियनहिं उचित राखब मोहि ॥ जाहु अबतुम भीष्मके ढिग मोहिंनहिं स्वीकार। तदनु अम्बाकही इमि मतिकहो भूभरतार ॥ ब्रती भीषम अनुजहित लैगयो मोकहँ जीति। तहां तासोंकही हमइमि गुणो भीषम नीति ॥ प्रीति ममहै शाल्वनृप पहँ देहुताढिग जान। बचन यह सुनि बिदाकीन्हों भीष्म अति मतिमान ॥ सुनो भूपति भयोनहिं सुकुमारपन ममभंग। तरुणि हमतो भक्तअबला करोमम परसंग ॥ इबिधि बहुत बुझाय नृपसों कह्योआरत बैन। नहींमन्यो भूपतबसों तरुणि ह्वै गतचैन ॥ रुदति नृपसों कही नृपमतिकरो मम परित्याग। एकगति तुम परम ममहोकरो पूरणभाग ॥ नहींमान्यो भूपभाष्यो गच्छ गच्छ सबार। रुदततब नृपसुता तहँसों फिरी करतबिचार ॥ मोहिं धिक्धिक् भीष्महि यहि नृपति अतिधिक्कार। पूर्बकर्म्महिं धिक् बिधिहि धिक् एच्यो यह उपचार ॥ भीष्ममम अपकार अतिशय कियोनाहक ढूढ़ि। बैर ताको लेउंकैसे कौनबिधि अबऊढ़ि ॥ गुणत ऐसेजाइ आश्रम मुनिनके अनुमानि। नौमि बिधिवत भई निवसत कठिन करतब ठानि ॥ दुखितअति अवलोकि तापस भयेबूझत ताहि। कहोतुम अति दुचित काहे हिये कोसति काहि ॥ बचन यहसुनि रुदति अम्बा कहोनिज बिरतान्त। समुझिसो बिरतान्त गुणिगुणि कहेमुनिवर दान्त ॥ जाहुतुम निजपिताके गृह सधिहि सिगरोकाज। पिताके आधीनकन्या कहत सुबुधि समाज ॥

कहीकन्या सकत नहिं हम पिताके घरजाय । उग्रतप हमकरब जेहि परलोक अब न नशाय॥ बचन यहसुनि सुमुनि ताकीकरि प्रशंसा वेश। करोतप यहपरम उत्तम दयेताहि निदेश ॥ कछू दिनमें तासु मातामहँ नृपति ऋषिजाय। ताहि अंकलगाइ यहिबिधि कहतभे समुझाय॥ जाय तुम भृगुरामके ढिगकहो निजगति क्षाम। दूरिकरि हैं बिथा सिगरी कृपाकरि श्रीराम॥ राम ममप्रिय सखा तपत महेन्द्रगिरि पै तत्र। चलो अब ममसंग तुम मुनिनिकर बिलसत यत्र॥ होत्र बाहन राजऋषि के बचनसुनि हितजानि। कही तासँग चलन अम्बा हियेआनँद आनि॥ सुनोनृप तेहिसमय तेहिथर भयो आइ प्रतक्ष। रामको जो सखा अकृत ब्रणसुनामक दक्ष॥ ताहिलखि सबसुमुनि उठिबैठाय बिधिवत पूजि। राम प्रभुकहँ होत्रबाहन कहत सुबचन कूजि॥ अकृतब्रण तबकहो यहि थल रामऐहैं प्रात। लखन तुमकहँ जानिकै निजसखा अति अवदात॥ दोहा॥ कथा बारता करततहँ रजनीभई बितीत। भोरहोत आये यहां परशुराम जगजीत॥ लखि मुनिगण उठिकै सबिधि पूजि महासुख पाय। कुशल प्रश्नकरि रामसह बैठि लसे छबिछाय॥ धनुष परशुतूणीर धर बैठे श्रीभृगुराम। तब अम्बा पूजनकियो देमधुपर्क ललाम॥ होत्र बाह तबरामसों कहतभये मृदुबैन। यह ममदुहिताकी सुता प्रभुहै महा अचैन॥ प्रभु सुनिकै याकीबिथा कृपाकरो करिछोह। रामकहे तबनिज बिथा कहुकन्या तजिमोह॥ जयकरी॥ तब अम्बाकरि रुदन अवाय। दई सकल वृत्तान्त सुनाय॥ सोसुनि तासुरूप वै देखि। रामकहे हिय करुणा भेखि॥ कहुअब तोमति चाहैजाहि। तोकहँ सौंपि देहिं हम ताहि॥ कै भीषमकै शाल्व बिचारि। मम अनुशासन सकत न टारि। मम शासन नहिंमानै जौन। मम शरघात मरै शठ तौन॥ यह सुनिकै अम्बा लहि चैन। कही तातुम बलबुधिऐन॥ युगमें जासु गुणौ अपराध। तेहिजीतो करिक्रोध अगाध॥ हम जानत यहि दुखको मूल। है भीषम दायक अतिशूल॥ ममत प्रभु तुम जीतौताहि। रुदति कही पदपंकज चाहि॥ यह सुनिराम दयासों पूरि। मम जीतन को प्रणकरि भूरि॥ कन्या सहित बिप्र समुदाय। लैसँग चलेगर्ब अतिकाय॥ तीनि दिवस चलिमुनि सुखदाय। कुरुक्षेत्रमें निवसेआय॥ हम सुनि तत्र आगमन

तासु। द्विजनसमेत जायतहँआसु॥ मुनिन समेत यथाबिधिपूजि। सम्मुखबैठे सुबचन कूजि॥ तबभृगुराम मोहिं तन हेरि। कहेबचन अतिअमरष मेरि। भीष्म कौनमति हियेबसाय। बिनु दीन्हें नृपतनया ल्याय॥ किये बिसर्जित अनुचित तौन। याको ग्रहण करै अबकौन॥ तातेअब ममशासनमानि। सबिधि गहोतुम याकोपानि॥ यह सुनिकै हमकहे सडौर। सो बिरतान्त सुनो मुनिमौर॥ यह नृप तनया कही सुनीति। है मम शाल्वनृपति पहँप्रीति॥ तब हम बिदाकरी बिधिजानि। आपुकहत अनुचित अनुमानि॥ गहिभय लोभ करत प्रणत्याग। सुनो लगत तेहि कुत्सित दाग॥ ताते हम न करब स्वीकार। अबमति कहोमुनीश उदार॥ यह सुनिकै करि रातेनैन। बोले परशुराम बलऐन॥ दोहा॥ जो न मानि है बचनमम तौ सह सखासमान। आजु मारिहौं तोहिंमैं बरषि असंख्यन बान॥ पाणिजोरि तब हमकहे तुम ममगुरू उदार। क्रोध करो मति शिष्यपहँ यह अति अनुचितचार॥ यह सुनिकै भृगुपति कहे जो गुरु जानत मोहि। तौहम भाषत तौनकरु कुलरक्षण बिधिजोहि॥ चौपाई॥ यहसुनि हम भृगुपति सों भाषे। नाहक तुम अनरथ अभिलाषे॥ मुनि न तजब हम प्रण भयगहिकै। आपु न हलुक होहु इमिकहिकै॥ नारिन को अवगुण हम जानत। नहीं ग्रहण करिबो अनुमानत॥ गाथा एक मारुतको गायो। सोहम सुने कहत मनभायो॥ काज अकाज बिचारन हीना। अरु उनमत्त कुपथ अवलीना॥ ऐसेगुरुहूको पटु त्यागत। ताके तजेदोष नहिं लागत॥ क्षत्री पाणिजोरि ऋजुभाषत। बिप्र तऊ जो रण अभिलाषत॥ आयुधगहि बधहेतु प्रचारत। ताहिबधे नहिं पातक चारत॥ तुमद्विज ह्वै क्षत्री ब्रतधारे। हम न होब सुधरम सोंन्यारे॥ तुमसों करब युद्धप्रण धरिकै। कुरुक्षेत्र मधि शरझरि करिकै॥ कार्त्तबीर्य्य कहँबधि तुमपाछे। शोचपिताको कीन्हें आछे॥ तेहिथर चलो तुम्हें हमबधिकै। शोच करब लहि बिजय बरधिकै॥ जोतुम गहत गरब अति नोखो। सबथर कहत बचन अतिचोखो॥ हमबहुबार क्षत्रियनमारे। करिदिगबिजय प्रताप पसारे॥ यहसुनि तजौ गरब अघभारी। नहिं तब रहो भीष्म धनुधारी॥ नहिंमम समहो धनुधर कोऊ। नातरु तुम्हें बधत तब सोऊ॥ दोहा॥ मैं भीषम मोसोंपरो काम तजौ अबगर्ब। तुम्हें

मारि क्षत्रियनको लेहौं बैर अखर्ब ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनो भूप येबचन मम सुनि भृगुपति रणधीर। कहा भयो बोलत इबिधि काल बिबश ह्वै बीर॥ जो रणसरधा तोहितौ तो बधलखि यहिकाल। गंगहि रोवतिलखहिंगे ऋषिमुनि सुर सुरपाल ॥ दोहा ॥ मम संगरण उतसाह। गहि गहत जो जय चाह॥ तौ जाय हास्तिनग्राम। लै संग भट बलधाम॥ फिरि करोसंगरआय। तब बसो सुरपुर जाय॥ यह बचनसुनि हमभूप। छुइ चरणतासु अनूप॥ यह सत्यवतिहि सुनाय। आशीष तासोंपाय॥ चढ़ि सुरथ सैन सजाय। स्वस्त्ययन सुनत सचाय॥ अरुदेत बिधिवत दान। अरु सुनत अस्तुति ध्वान॥ अरुशंख दुन्दुभिभूरि। कीसुनतधुनि मुदपूरि॥ तहँ चले ओज बढ़ाय। तेहि समय सुनु क्षितिराय॥ ममजननिशुचि तनधारि। मुनिपासजाय बिचारि॥ इमिकही मुनिहि बुझाय। ऋषि तजो मुनि सुखदाय॥ ममपुत्र भीषम ताहि। मतिबयोहठि जय चाहि॥ तब हरषि बोले राम। निज सुतहि बरजु अछाम॥ मम कहो मानै तौन। तौ बचै बिक्रम भौन॥ नृप बचन यहसुनि तासु। भिरि आइ मम ढ़िगआसु॥ इमिकही गंगामाय। सुत तजो हठ दुखदाय॥ दोहा ॥ राम धनुष धर रुद्रसम क्षत्रीकुल को काल। बिप्र गुरू शाशन करत तौनकरो हे लाल॥ तब हमसब वृत्तान्त कहि नौमि बिदा करताहि। भृगुपति के सम्मुख भये बीशबिशे जयचाहि॥ सोरठा ॥ तब भृगुपतिभट चण्ड धनुधर मण्डन बिदित भट। टंकारत को दण्ड मोहिं प्रचारो गरजितकि॥ चौपाई ॥ तब हम कहो सुनो धनुधारी। हमसुरथी तुमहौ पद चारी॥ तुमहूं चढ़ो सुरथ पर आरज। तब हमकरब युद्ध जयकारज॥ यह सुनि कहे राम भटनायक। ममरथभूमि बेद हयचायक॥ इमिकहि राम धनुषरव करिकै। शायक बरषत भे प्रणधरिकै॥ नृप तेहि क्षण हम रामहिं देखे। रथपर चढ़े कवचसों भेखे॥ अकृत व्रण बर सारथि जीको। दिव्य प्रभाव मोदप्रदनीको॥ बारबार भृगुराम पुकारत। टेरि जो अनत वृथातन डारत॥ तब हमधनुष बाण धरिरथपै। रथते उतरि शीघ्र चलि पथपै॥ निकट जाइकै युग करजोरी। कहत भये करिबिनय अथोरी॥ धर्मशील ममगुरु गोसाईं। होप्रभु तुम रक्षक सबठाईं॥ तप प्रभाव मति प्रगटित कीजो। अनुकम्पा करि जय यश दीजो॥ यह सु-

परशुराम मुदगहिकै। कहे लरो सुधरमपर रहिकै ॥ शापन देबभूरि भय त्यागो। युद्धकरो ममन अनुरागा ॥ यह सुनिताहि नौमि हमफिरिकै। शंख बजाये रथपर थिरिकै ॥ तबफिरि रामबाण झरिकीन्हें। तिहम शर छादित करि दीन्हें। उभयओर बाणनके जालन। पूरितभयो महा बिकरालन ॥ उभयसुभट बाणनके घातन। रुधिर भरे सुखमाकहि जातन ॥ हम करि अतिविक्रम तेहि दिनमें। ताहि लखे मोहित कछुक्षन में ॥ घोरयुद्ध भो तेहिदिन राजा। लखिबिसमित भे सुमुनि समाजा ॥ संध्यानिरखि युद्धप्रण तजिकै। संध्याकर्म कियेबिधि सजिकै ॥ दोहा ॥ प्रातकृत्य करि भोरफिरि किये घोर रणरंग। दोऊ अरि मदभंग को गहे सुटंग उमंग ॥ दिव्य अस्त्र प्रगटित किये परशुराम बलऐन। तेहि हम बारे प्रगटकरि दिव्य अस्त्र जगजैन ॥ जब हमछाड़े दिव्यशर तब भृगुपति भटचण्ड। बारण कीन्हें प्रगटकरि दिव्य सुअस्त्र उदण्ड ॥ कइकबार मोहितकिये मोहिराम भटदक्ष। हम रामहिं मोहित किये कइकबार परतक्ष ॥ महिषरी ॥ यहि भांति तेइस दिवस तेहिथल युद्ध अति करकस भयो। भृगुराम तब ब्रह्मास्त्र दारुणतजेअति वरचसमयो ॥ तब तनेहम ब्रह्मास्त्र दोऊ अस्त्र बढ़िमगमें भिरे। अति दुसह आतपतेज तिन के पूरि महि दिवमधिथिरे ॥ सब देशप्रत पित भयो सिगरे लोक हाहा धुनि किये। यमदग्नि व्यास ऋचीक नारद आइतहँ करुणालियेसमुझाय बहुबिधि हमहिंरामहि युद्धको वारण करे। तब रामअम्बासों कह मम पितर यहिरण मधि परे ॥ नहिं भीष्म हमसों वध्य अरुनहिं जेय अति सै प्रबलहै। तोहेत हम निजशक्ति विक्रम कियोसो बहि दवलहै ॥ नहिं सुयश ममतो अरथ अबहम कहत जसतुम तसकरो। चलिजाय भीषमके निकटकहिबिनयवार्ता बशकरो॥ यह बचनसुनिकैकहीअम्बाआपुममहित अतिलरे। प्रभु जाहुतुमहम करबतपबसिजहां मुनिवरब्रतधरे। करि उग्र तप निजपाणि भीष्महि बधब हमयह प्रणसही। इमिभाषि अम्बागई फिरि तपकरण अति अमरषनही ॥ दोहा ॥ मुनिन सहितभृगुराम तब गे महेन्द्रगिरि यत्र। हमरथ चढ़ि अस्तुतिसुनत मोहितआयेअत्र ॥ रामकृष्ण भगवानप्रभु बिश्वयोनिभगवान। तासुकृपाते जयलहे पालिसधर्म महान॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिअम्बोपाख्यानेनामषड्विंशोऽध्यायः॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा॥परशुरामसो ह्वै बिदाअम्बा बनमेंजाय। यमुनातट बसिउग्रतप करतभई मनलाय॥ जयकरी ॥ बरषदिनाकरि बारि अहरा। अरु षटमास बायु ब्रतचार॥ एक बरष तरु कोदल एक। भोजन कीन्हों सहित बिवेक॥ बिधिसों चान्द्रायन कृछ्रादि। ब्रतकरि शङ्कर को गुणनादि॥ प्रति मुनिआश्रम तीर्थन जाय। दुस्तर तप कीन्हों मनलाय॥ द्वादश बरष पालि ब्रतधर्म। ब्रत कीन्हों करि दुस्तरकर्म॥ यहि बिधि तपते देखिकै ताहि। गंगा प्रगटकही का चाहि॥ यहि बिधि ब्रतचारति कहुतौन। तबबोली अम्बा मतिभौन॥ भीषमके बध करिबे हेत। हमतप करति नियम चितचेत॥ सो सुनि मम जननी अति क्रोधि। कहतभई तपफल अवरोधि॥ सिद्धि न जानिपरत यहकाम। तू हो नदी बार्षकीनाम॥ अम्बा सुनि यह शाप बिचारि। तव प्रभाव युग भाग सुधारि॥ एकभाग करि नदीनवीन। लगी तपन तप गहि ब्रत पीन॥ देखितासु दुस्तर तपचार। प्रगट भयेतब शंभुउदार॥ कह्यो मांगुबर तब अनुमानि। अम्बा कही जोरि युगपानि॥ हमकर निज भीषम कोनाश। कियो चहतिसो देहुमहाश॥ यहसुनिबोले गिरिजारौन। एवमस्तु तुमचाहति जौन॥ दोहा॥ सोसुनिकै अम्बा कही किमि होई यहकाज। हम युवंती वह पूरुष नहिं युद्ध समागम साज॥ उमा नाथ यह सुनिकहो नहिं मिथ्या ममबैन। यहतनतजि तुमहोहुगी द्रुपद सुता मतिऐन॥ चौपाई॥ ककुदिनमें तुमपूरुषह्वैकै। ह्वैहौ महारथी मुदग्वैकै॥ तब भीष्महि बधिहौ प्रणगहिकै। शंकर गुप्तभये इमिकहिकै॥ वैशंपायनउवाच॥ दुर्योधन भूपति यहसुनिकै। भीषमसों बूझतभो गुणिकै॥ प्रथमसुताह्वै पुरुष उजागर। भयो शिखण्डी किमिकहि नागर॥ यह सुनिकहे भीष्म धनुधारी। सुनोतौन भूपति रणचारी॥ द्रुपद पुत्रहितकरि ब्रत साधन। शूलपाणिको कियो अराधन॥ तबकरि कृपा शम्भु बरदानद। कहेमांगु बर भूपति मानद॥ भूपति कहे देहुसुत स्वामी। भीष्मबधै जौन बलधामी॥ सो सुनि शंभुकहे सुनुमानी। होई प्रथमसुता सुखदानी॥ फिरि ह्वै पुरुष सिंह बलधामा। रणकरि लही बिजययश कामा॥ इमि कहि गुप्त भयेशिवयोगी। घरआयो नृप सुत उपयोगी॥ अर्थ शिद्ध गुणि आनँदछाये। पटरानिहि वृतान्त सुनाये॥ क्रमसों

गरब धारि नृपपतनी। कन्या जनतिभई हितजतती ॥ तबनृप शंभुबचन सतचीन्हें। पुत्रभयोयह प्रगटितकीन्हें ॥ जातककर्मकिये सबिधाना। तौन भेदकाहू नहिं जाना ॥ भूषण वसन पुरुष समगहिकै। बर्द्धित भयो पुरुष समरहिकै ॥ बिप्रसुतन के सँगलिपिलीखो। आचारयसों धनुबिधि सीखो ॥ शंभुबचनगुणि त्यागि अँदेशा। पुत्रविचारत द्रुपदनरेशा ॥ सानँद नामशिखण्डी भाख्यो। सुतसमप्रेमसहित सँगराख्यो ॥ तेहि तरुणापन पूरतदेखि। द्रुपद सशोच भयेअवरेखि ॥ दोहा ॥ नृपपतनी नृपसों कही भूप करत कत शोच। सुने न कबहू शंभुको बचन लहब गतिपोच ॥ अवशि पुरुष यह होगयो ब्याह करोकरि यत्न। मत करिकाहू नृपति की ल्यायो कन्यारत्न ॥ रोला ॥ भूपभूपन बोलिकै तबपूरि परम उछाह। सुता ल्यायेदशार्णपतिकी किय बिधिवत ब्याह ॥ कछू दिनमें लहि समागम सुता नृपकी तौन। पतिहि युवती जानि अतिसै दुखित ह्वै गजगौन ॥ मायकेकी सखीवाहि बुझायकै यहभेद। भईभेजति पितापास सँदेशपूरित खेद ॥ सुनत तौन दशार्ण नाथ हिरण्यवर्म नरेश। भयो भेजत द्रुपद के ढिग दूतभाषि संदेश ॥ द्रुपद के ढिग जाइकै सो दूतलै एकन्त। कह्यो भाषण कह्यो मोहिं दशार्ण दिशिको कन्त ॥ कौनको दुरमंत्र सुनि ह्वै मोहवश हतचेत। भये यांचत सुताभम निजसुता ब्याहन हेत ॥ भयो ऐसोनहीं अबलौंनहीं ह्वैहै और। कियोजैसो कर्म तुमयह शठनको गहि डोर। होहु अबसन्नद्ध तातेकह्यो नृपकरि क्रोध। सहित मंत्रिन मारि तुमको करी भूपति बोध ॥ भीष्मउवाच ॥ द्रुपद भूपति दूत को यह बचन सुनिश्रुति छोल। रहो औचक गहो तसकर सरिस घरिक अबोल ॥ आनि साहस कह्यो तुमयह सुने मिथ्याबैन। पुरुष है ममपुत्र नृपसों कहेहु युवती हैन ॥ भाषिइमि कहि बहुत आदर बिदा कीन्हों ताहि। जायनृप सों कह्यो सो जिमि गयो द्रुपदहि चाहि ॥ भूपसो सुनि फेरि धात्रिहि बूझिकरि अनुमान। चलो सनासाजि द्रुपदहि बधन हेतअमान ॥ चारके मुख द्रुपद सो सुनि हिये अति दुख आनि। जाय तनया की जननि ढिग कहे भूरि लगानि ॥ भूप देश दशार्णपतिमम सुतहि तनयाजानि। मोहि जीतन चढ़ो आवत छली दोषी मानि ॥ लाज बश हम सकब नहिं लरि सामने ह्वै जूठि। होइजो करतव्य अब सो कहो भामिनि

ऊठि ॥ बचन यह सुनिकही महिषी पूजि देवी देव। भूप होहु अशोच शंकर बचन को गुणिभेव ॥ दोहा ॥ यहसुनि द्रुपद सुमंत्रकरि पूजनलागे देव। प्रिय सनबन्धी सोंकलह होइ नहीं जेहि भेव ॥ सुनिकै यह वृत्तान्त सब शोच शिखण्डिनि रोय। गोपित घरते कढ़ि गई बिपन मध्य दुखभोय ॥ देहत्यागको प्रणगहे गहनबिपिन मधिनाय। थूण करण शुभ यक्षको लखो गेह सुखदाय ॥ चौपाई ॥ निरजन बनमधि घरमनभावन। देखि शिखण्डी प्रविशो चावन ॥ देखि शिखण्डिहि यक्ष महाशय बूझतभो ऐबेको आशय ॥ मैं धनपतिको अनुचर आरय। जोतूकहै करौंसो कारय ॥ सो सुनिनृप तनया दुखनाशी। निज वृत्तान्त यक्षसों भाशी ॥ कहि वृत्तान्त कही ह्वै आरत। यह दुख तात हियो मम जारत ॥ ममदुख मेटन कहे गोसाईं। तौ करिदेहु पुरुष यहिठाईं ॥ यह सुनि यक्ष धरिक अनुमानी। कही शिखण्डी सों बरबानी ॥ निज पुंसत्व तुम्हें हमदेकै। रहबतोर इस्त्रीपन लैकै ॥ समुदजाय तुम निजरजधानी। पूरुषप्रण करुप्रगट सयानी ॥ पैयह बचन कहत हमतोसों। यहनिबन्ध इतकरिले मोसों ॥ पुरुष प्रगट ह्वै कछुदिन रहिकै। फिरिममढिग आयो मुद लहिकै ॥ तब फिरि मम पूरुष पन दीजो। निज इस्त्री पन हमसों लीजो ॥ यहिनिबन्ध को करुअस्थापन। तौहम देब पुरुष पन आपन ॥ यहनिबन्ध अतिदृढ़ करिलीन्हों। तबह्वै युवति पुरुषपन दीन्हों ॥ पुरुष सिंह ह्वैआनँद गहिकै। नृपसुत नगरगयो रिजुकहिकै ॥ द्रुपदहि सब वृत्तान्त सुनायो। सुनिभूपति अतिआनँद छायो ॥ दोहा ॥ उत दशार्ण पतिसदलचलि निकट आइअति क्रुद्ध। कहिपठवत भोदूतमुख कहोकरै अबयुद्ध ॥ सोसुनिकै पांचालनृप भेज्योबिप्र प्रवीन। सोदशार्ण महीपसों बोलोबचन अहीन ॥ भूपकह्यो पांचालपतिममसुत पुरुष अमान। तनया तुमसोंकह्यो सोझूठो अहितनदान ॥ चौपाई ॥ नृपहिरण्य बर्मायह सुनिकै। युवतिएक भेजतभो गुणिकै ॥ सोनृपगेह आय मुदभरिकै। निशिमेंतासु परिक्षा करिकै ॥ भोरजाय तहँभाषी सानँद। नृप सुतपुरुष सरस रति दानद ॥ सोसुनि भूपमोदसों पागो। मिलो द्रुपद सों हितमग लागो ॥ हयगज रतन शिखण्डिहि दैकै। निजपुरगो अति आनँद लैकै ॥ इतसों यक्ष युवतिपन धरिकै। बसतरहो निजगधमधि चरिकै ॥ तहां एकदिन

धनपति आयो। यक्षन कढ़ोलाज सों छायो॥ यक्षनाथ लखि अनुचित जाने। यक्षणसों बोले रिसिसाने॥ यूथकरण हियगरब बसायो। तातें मूढ़ न मम ढिगआयो॥ देहौं याहि दण्डमन भाये। तब सुयक्ष वृत्तान्त सुनाये॥ तबधनेश बुलवायो ताही। कहतभये तेहि युवती चाही॥ अरेमूढ़ तैंअनुचित कीन्हों। पुरुषपन देतियपन लीन्हों॥ तोमधिरहै युवति पन ऐसो। रहैपुरुष नृपसुतहै जैसो॥ बिनयकिये तबयक्ष बिचक्षण। कहोशाप मेटनको लक्षण॥ सोसुनिकै धनपति सुखपाये। तेहि कुशापको अन्तबताये॥ रणमेंमरी शिखण्डी जबहीं। होईपुरुष यक्षयह तबहीं॥ दोहा॥ इमिकहिकै धनपति गये सुनोभूप मतिमान। भावीऐसे होतिहै भावीअति बलवान॥ कछुदिनमें तेहि यक्षढिग आपु शिखण्डीजाय। कह्योतात अब लेहुनिज पूरुषपन सुखदाय॥ सोसुनि यक्षप्रशंसिकै नृपकुमार कोधर्म। बिदाकियो कहिधनदके शापदाप कोमर्म॥ सोरठा॥ सोसुनि अति सुख पायगयो शिखण्डी निजसदन। माता पितहि सुनायमोदित करि बिलसतभयो॥ तोमर॥ सोसुनत द्रुपदनरेश। भोकरत मंगलबेश॥ सबपूजि देवीदेव। अरु पूजिबिप्र सुभेव॥ हय हेम गज महिदान। भोदेत सहित बिधान॥ तब द्रुपदसुत सुखदाय। द्विजद्रोणके ढिगजाय॥ सिखिधनुष बिधि अवदात। भोपरम सुरथी ख्यात॥ यहिभांति भीषम दक्ष। वृत्तान्त कहिपरतक्ष॥ फिरिकहत भोमतिभौन। यहिभांति युवती तौन॥ होपूर्व युवती ताहि। हमबधब नहिं जयचाहि॥ यहिमानि सोक्षितिरौना। तहँकछुकक्षण रहिमौन॥ गुणिगोपि हियकोखेद। फिरिभयो बूझतभेद॥ सोकहा अबहेआर्य। करियुद्ध अद्भुतकार्य॥ तुमद्रोण करण सुवीर। कृप द्रोणसुत रणधीर॥ अरि सैनमधि करिगौन। लरिकिते दिनमेंकौन॥ जयलहै बधिअरि सैन। सोकहो बिक्रम ऐन॥ सुनि कह्यो भीषम ईन। दशसहस सोद्वापीन॥ अरुसहस रथसमुदाय। हमबधब रोजसचाय॥ दोहा॥ जोबिशेष बिक्रम करौं तौकरि सँगरघोर। एकमासमें मैंकरौं अरि सेनाको ओर॥ तबइमि बूझेद्रोणसों सोसुनिकहे अचार्य। मास एकलरि शत्रुदल हमहूं मारबआर्य॥ दोय मासमें शत्रुदल बधन कहे कृपवीर। दशदिनमें नाशनकहो द्रोणतनय रणधीर॥ करणकहे लरि पांचदिन हम मारब अरिसैन। सोसुनिकै हँसि कहतभो भीषम बिक्रम ऐन॥ सोरठा॥

जोलगि भिरत न पार्थटङ्कारत गाण्डीव धनु । इमि जलपन अयथार्थ तौलगि मनमानोकरो ॥ बसुकला ॥ यहखबरि पायानृपधर्मराय ॥ भटबन्धु सर्ब । अरुनृप सगर्ब ॥ तिनसों सहास । कीन्हें प्रकास ॥ सबसुने तौन । उतभयो जौन ॥ तुम कहोपार्थ । बाणी यथार्थ ॥ जयहित सहोस । लरि कितेदोश ॥ बधिशत्रु सैन । बिलसौ सचैन ॥ सोकहो तात । बिक्रमबिभात ॥ दोहा ॥ भूपतिके येबचन सुनि माधवकी दिशि हेरि । गुड़ाकेश बोलत भयोबचन बीररसमेरि ॥ हमचाहैं तौ निमिषमें जीतैं तीनोंलोक । पशुपति अस्त्रप्रयोगकरि दियो जौन तपओक ॥ सोरठा ॥ पैं न चहत हमयहु बिजयचहत करि सबिधिरण । सुजयअसंशयलेहुतो सँगसबयोद्धाप्रबल ॥ महिखरी ॥ तबनृप सुयोधत भोरलहि निजसैन सजवावत भयो । बहुशंख दुन्दुभि तूरआदिक धाय बजवावत भयो ॥ सबभूप निज निज सैन सजि सजि घोररण चाहतभये । चढ़ि बाहननि बर बीर रसको सिन्धु अवगाहत भये ॥ बढ़िजाय योजन कइक दुन्दुभि झेरिअति आनँदमयो । सब नृपन लायक बासगृह रचवाइ तहँ निबसतभयो ॥ नृपधर्मसुनियह खबरि सैनसजाइ दुन्दुभि झेरिकै । चलिअगरि निवसत भयोदुन्दुभि शब्ददश दिशि भेरिकै ॥ दोहा ॥ मधिमें योजन पांचमहि राखिउभय क्षितिपाल । युद्धहेत निवसत भये गहे अमर्ष बिशाल ॥

खस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणि सप्तविंशोऽध्यायः ॥२७॥

उद्योगपर्वसमाप्तः

——••——

श्रीगणेशायनमः॥

महाभारतदर्पणे॥

भीष्मपर्वदर्पणः॥

दोहा॥ ध्याय पद्मपद बिष्णुके नर नरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारतभाषा सौमि॥ मन अलभ्य तेहि लहनको हौं जु करेउ यहकाम । महिमा सीतारामकी दृढ़बसाइ हियधाम॥ सीताराम सुस्वामिप्रभु न्यामक बांछित दानि । अवसि करत सतकार्य्य सिधि सत पथरत अनुमानि॥ नीति निपुण प्रभुक्षमत नित शरणागत की खोरि । नाहिं निरखिहैं नेसुको लोलुपताई मोरि॥ जासुनाम लै तरत जनभव-निधि अगम अपार । तेप्रभु करिहैं अवशिमोहिं अर्थार्णवके पार॥ पारथ के स्वारथभये सारथि परम अनूप । तेसारथि देहैं बिरचि भारत भाषा रूप॥ सोरठा॥ बन्दौं कपिबर बीर रामपरमप्रिय पारषद । मंगल मूरति धीर भारत स्वस्थ स्वजस्थ भट॥ ध्याय उच्छलनि अच्छ उदधि उ-लंघन समयकी । भारत समुद प्रतक्ष भाषाकरि चाहत तर्‌यो॥ दोहा॥ बैशम्पायनसों कहो जनमेजय क्षितिकान्त । कौरव पाण्डव किमिलरे सो कहिये बुधिवन्त॥ चोपाई॥ जनमेजय नृपकी यहबानी । सुनिबोले मुनि-वर बिज्ञानी॥ कुरुक्षेत्रमें कौरव राजा । हे पूरुबदिशि सहित समाजा॥ सहितसेन पश्चिमदिशिताके । कियेबास पांडव शुभशाके॥ शुचिसम्मत पंचक उत्तमथर । युद्धहेतु मधिमेंतजि अन्तर॥ पाण्डव नृपगण कर करिभाये । बासबेस्ममें बासकराये॥ भोज्यबस्तु अरुशय्यानीके । दीन्हें यथायोग्य सबहीके॥ दई भटनकहँ बिदित निशानी । जोनिज परसूचक मनमानी॥ भोरहिदुर्योधन दलसाजे । चढ़िपांडवके सम्मुखगाजे॥ लखि सरोषपांडव बलभारे । साजेदल बजवाइ नगारे॥ सदल सुतनसह द्रुपद महीपा । युद्धहेतु पुलके कुलदीपा॥ केशव अरु अर्जुन मुदलीन्हें । परत्रा-

सन शंखध्वनिकीन्हें ॥ ताक्षण सबआशा बरबरणी। धूरिधारसों भईबिवरणी॥घनगण मांसरुधिर तेहि क्षणमें बरषतभे भविष्य गुणि मनमें॥ मारुतशरकर कर्षतडोले। अति जबसों भ्रमि इत उतओले॥माहाराज तेहि समयामाहीं। रहे न सुभटअनत महिमाहीं॥ बालवृद्ध तजियुवा सोहाये। महि मण्डलके सबतहँ आये॥ दोहा॥ रथ कुंजर हय सुभटबिनु भयेहोत तेहिकाल। सर्बदेश तिनसर्वमें तोसोंदेश विशाल॥ युद्धहेत सन्नद्ध ह्वै कौरव पांडव तत्र। धर्मयुद्ध सिद्धान्तसो नियमेंवै ह्वैएकत्र॥ चौपाई॥ युद्ध निवृत्तभये सबकोई। मिलैं सप्रेम मित्रसम होई॥ समबल बय मिरि संगर करहीं। समवाहन बारे भिरिलरहीं॥ बिधनु बिरथ भागत नत तिनपै। तजैं न शस्त्रशस्त्रहैं जिनपै॥ जो जो भिरैलरैसो सोई। भिरै न दूजो भटहित जोई एक सुभटसोंद्वैभट कितहूं। लरैं न नीति निबाहै नितहूं॥ सूतशस्त्र पहुंचावन वारे। अरुजे बाद्य बजावनहारे॥ अन्य कार्य्यरत गाफिल जनपैं। तजैं न आयुध गहिप्रण मनपैं॥ यह निबन्ध करिकै मन माने। कौरव पांडव फिरि बिलगाने॥ तेहि दिनमेंबहु शकुन निरेखी। आय व्यासमुनिवर अवरेखी॥ अति चिन्तित धृतराष्ट्रहि जानी। कहत भये सुबचनअनुमानी॥ तजौ शोचनृप धीरज आनो। निजशत सुतन कालबश जानो॥ नृप समूह अरु सुभट घनेरे। जुरेकाल भावीकेप्रेरे॥ ते अन्योन्य युद्धकरि मरिहैं। इर्षाभरे नेकु नहिं टरिहैं॥ यह भविष्य नृप टरिहि न टारे। अवशिहोत बिधिजौन सुधारे॥ तातेकाल कर्म्मकृत शोचौ। बढ़ेशोचको त्याग न रोचौ॥ जो यहयुद्ध लखन अवरेखौ। तौचख दिव्यदेउँ सबदेखौ॥ दोहा॥ महाराज यहसुनिकहे नृपलै ऊबि उसास। मुनिमें नहिंचाहौं लखन पुत्रज्ञाति को नाश॥ पृथक् पृथक् चाहतसुनो युद्ध व्यवस्था सर्ब। करिदीजै ताकोयतन करिकै कृपा अखर्ब॥ जयकरी॥ यह सुनिकै मुनिवर मतिमान। संजय कहँ दीन्हों बरदान॥ दिव्य चक्षु तुम होहु महान। अश्रम अरु अबध्य गुणवान॥ युद्ध व्यवस्था लखि अनुमानि। कहो नृपतिसों अनँदखानि॥ कौरव पांडव नृपतिसमूह। तासुकीर्त्ति हमकरब सऊह॥ नृपहम कहत इतो सिद्धान्त। लहतसुजय धार्मिक अरुदान्त॥ इमि कहिकै श्रीव्यास उदार। कहत भये फिरि शकुन बिचार॥ शेनकंक गृद्ध अरु काक। मोदैं चहुंदिशि जुरे निशाक॥

सैनमध्य ह्वै काक समूह। दक्षिण दिशाजात करिऊह॥ लोहितकृष्ण श्याम परिवेष। शूरहि करत भयानक भेष॥ कार्तिककी राकाको चन्द। रक्तबर्णभो करता दन्द॥ गृह शूकरसो आखुभुक क्रुद्ध। झपटि उछलि फिरि बिरचत युद्ध॥ प्रतिमा सहित कँपति सबठौर। पताति बमति है रुधिर सगौर॥ बिना बजाये बाजति भेरि। चलै अहयरथ अनरथहेरि॥ कोकिल केकीशुक सबकाल। बोलैं भीषन कृत दुखजाल॥ अरुणोदय में सलभ अनेक। उड़ैंपरम अशगुणकेटेक॥ उभैसन्धि मधिमें दिगदाह। होत करन अनरथको चाह॥ दोहा॥ अरुन्धती पतिब्रतनकी सींव छोड़ि निजबानि। नभपै चलति बशिष्ठके आगे अनरथ जानि॥ बिना बलाहक होतिहै शब्द गगनमें घोर। होत सकल बाहननिके आंशू पतन अथोर॥ प्रगट होतिहैं गउनमें युगखुर एकहि बार। फूलेफरे अकालमें तरुकृत अनर अपार॥ पांच चरण त्रयशृङ्ग द्वै पूंछिचारि चखवन्त। बत्स होतहैं पशुनके सूचक अशुभ अनन्त॥ त्रिपद सदशन बिशाण युत होत खगनके बार। अवशि होयगो भूमिपै नृपगण को संहार॥ जनमें दुहिता तियनके पांच चारि यकसंग। जनमतही निर्तहिं हँसहिं करहिं अनेकन रंग॥ लोकवेद अरु शास्त्र अरु बिरची बिधिकी रीति। ताहि खण्डि इमि प्रलयकर होत बिबिधि बिपरीति॥ अर्क राहु अरु केतु ये हैं चित्रागत क्रूर। ताते भरिहै अवशि महि नर शोणितके पूर॥ धूम्रकेतु है पुष्यपै भौम मघागत बक्र। लखि जीवहि श्रवनस्थ भो गहत कालबर चक्र॥ उभै फालगुण पै करै अमल शनैश्चर देव। होइ महत उतपात निज भूपति याको भेव॥ पूर्व भाद्रपद पै बिहरि परहि लखत भृगुदक्ष। ताते लहिहैं खेदबहु नृप समूह युतपक्ष॥ धूम्रकेतु प्रज्वलित ह्वै बिलसहि जेष्ठामांहि। नृप ताते उतपात अति ह्वै पुहुमी पाहिं॥ शशि सूरहि स्वातिस्थ कहँ पीडि राहुगत तत्र। भेदि चक्र तिमि रोहिणिहि पीड़त नाशक क्षत्र॥ चक्र सर्वतोभद्रमें बिलसि मघा मधि भौम। पीड़त गुरुयुत श्रवनकहँ करता प्रलय असौम॥ गुर शनि साम्बत्सरिक गति गहि सुचक्र आसीन। बेधि बिशाखहि मुदितहै करत असगुण पीन॥ शशि सूरज यकबारही भये राहुसों ग्रस्त। लहि पक्षान्त त्रयोदशी मधिकृत प्रलय समस्त॥ चित्रा स्वाती के सुमधि बसिकै

राहु अमन्द। पीड़त कृतकहि भूपसो दायक दुःसह दन्द ॥ चारु त्रिछत्र सुचक्रमें प्रबल क्रूरग्रह सर्ब। पापग्रह कलसस्थहैं करता प्रलय अखर्ब॥ चन्द्र सूर्य्यको ग्रहणभा एक मासमें भूप। अवशि भयो चाहै बिघन असगुणके अनरूप ॥ सोरठा ॥ दीरघ उलकापात तड़ितपात समहोत है। छारवृष्टि कृतबातभूरि भयद डोलत भ्रमित ॥ इमि बहुबिधिके घोरहोत चण्ड असगुण सकल। ताते प्रलय अथोर होइहि महिपै सुनहु नृप॥ चौपाई ॥ इमि द्वैपायन मुनिसों सुनिकै। नृप धृतराष्ट्र कहत भे गुणिकै॥ तात कहे तुम शकुन निहारी। सो हम राखे प्रथम बिचारी॥ बन्धुबिरोध नाशको कारन। है सबदिन सबर्ग संहारन॥ पर इतनो गुणि साहस धरहीं। जेनर लरि आयुधसों मरहीं॥ ते ध्रुवबास स्वर्गको पावैं। कीर्त्ति तासु इत जगजन गावैं॥ सुनि यह आत्मज नृपकी बानी। कहे बिचारि सो मुनि बिज्ञानी॥ निजहित ज्ञाति वृन्दको मरिबो। है जगमें अपयश को भरिबो॥ निजकर सम्बन्धिनको बधिबो। हैअमोघपातकको वृधिबो॥ भयो तुम्हें अनरथको करता। नृप यह राज्य धर्मयश हरता॥ कालरूप भे सुवन तिहारे। कुलनाशक अवगुणसों भारे॥ ताते कुलको रक्षण ईछौ। शुचि सुधर्म पुत्रन कहँ सीछौ॥ राज्य युधिष्ठिर नृप कहँ देहु। जो वै देहिं चाहिसो लेहु॥ तासु अनुग ह्वै तुव सुतराजैं। मिटै सर्ब अनरथ सुखसाजैं॥ नृपबाकज्ञ बाक्य सुनि ऐसो। कहो अनज्ञ कहत है जैसो॥ मोहत लोक स्वार्थहित मानो। लोकात्मक हमहूं को जानो॥ नहिं ममपुत्र कहो मममानैं। धर्म अधर्म न कछु अनुमानैं॥ दोहा॥ मोहिं आत्म कल्याण हित सदा आपकी आस। अब शुभसूचक सगुण मुनि कहौ कहो तबव्यास॥ अग्नि दक्षिणावर्त्त ह्वै बिमल बिधूम अनूप। ऊर्जित ह्वै आहुति गहत सो जयदायक रूप॥ और औरसों कछू कहैं तासु अशुभ शुभअर्थ। यात्रामें फल करत हैं निज अनुरूप समर्थ॥ सनमुख बोलत बाकसो बरजत करत पयान। बोलै पाछ काकसो शुभ सूचक सुखदान॥ रूपशब्द रसयुत रहै जासु सुभट गहिचाव। अवशि लहैहैं नृपति जय बुधि बलके अनुभाव॥ होहि अनुग घन बायु तौसिद्ध होइ जयकार्य्य। इन्द्र धनुष पीछू उवै सो सुजयद हे आर्य्य॥ होय अल्पकी दीर्घ अति सेना हे क्षितिपाल। रहैं हर्षयुत जासु भट सो

जयलहै विशाल ॥ भागे कादर एकके भागत सिगरी सैन। फिरि सो सरित प्रवाह सम रोके नेकु रुकैन ॥ कादर जन शतपांच सों पांचसुभट जयलेत। देव परायन नीतियुत नित जयलहै सचेत ॥ जो उपाय ते मिलत जय है उत्तम जय तौन । मध्यम किये अधर्म छल बधे अधम जय जौन ॥ सोरठा ॥ इमि कहिकै मुनि व्यास गये बिदा ह्वैकै स्वपद। नृप लै ऊबि उसांस घरी द्वैकलों गुणिरहे ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगा मिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणि व्यास धृतराष्ट्रसम्बादोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दोहा ॥ धीर साहसी भूपमणि नृप धृतराष्ट्र प्रवीन। संजय सों इमि कहतभे पावन बचन अदीन ॥ चोपाई ॥ संजय जिहि महिहित सब राजा। लरत मरत करि सदसद काजा ॥ तासु प्रमाण उदधि सह भाषो। सुनिबे को ममन अभिलाषो ॥ खण्डद्वीप गिरिगणहैं जेते। तासु प्रमाण कहो हित हेते ॥ नदी नगर अरु देश सोहाये। यथा प्रमाण कहो मनभाये ॥ संजय कह्यो सुनो नृपज्ञानी। मति अनुरूप कहत अनुमानी ॥ द्विबिधि भूत जङ्गम अस्थावर। जङ्गम त्रिबिधि कहत बकतावर ॥ अण्डज स्वेतज और जरायुज। तिनमें श्रेष्ठ जरायुज नर द्विज ॥ चौदह भेद जरायुज गणके। ग्राम्य सात अरु सात सुवनके ॥ सिंह व्याघ्र शूकर अरु बारण। ऋक्ष महिष कपि ये बनचारण ॥ नर हय गो खर खच्चर छागा। भेड़ि शान्त हे ग्राम्य बिभागा ॥ स्थावर पांचजाति नृप सुनिये। लता गुल्म बल्ली तरु गुणिये ॥ अरु त्वकसार सर्बतृण जानो। शीघ्र नाशगत बल्ली मानो ॥ इमि वनइस स्थावर जंगम। तिनमें पञ्चभूतको संगम ॥ चौबिश बरण सदृश इन सबसों। युतमहि गायत्री सम तबसों ॥ महि मधि प्रगटि बिहरि महिपाहीं। होहिं नाश सिगरे महिमाहीं ॥ ताते सर्वात्मक महि पावनि। नृपगणके मन रुचि उपजावनि ॥ दोहा ॥ हैं सिगरे ऐश्वर्य्यसो गुर महियुत ऐश्वर्य्य। याहीते महिहेत ये लरत सकल नृप बर्य्य ॥ पञ्चभूतमय भूमिपति हैं सिगरे जगतस्थ। नभ मारुत पावक सलिल महि ये प्रभु मैं स्वस्थ ॥ महाराज क्षितिपाल मणि क्रमसों ये

सम्पूर्ण । शब्द अस्पर्श रूप रस गन्ध सुगुण सों पूर्ण ॥ छप्पै ॥ शुद्ध श
में गगन बायु अस्पर्श शब्दमय । अग्निरूप अस्पर्श शब्दमैं है हे धृतनय॥
बारि शब्द अस्पर्शरूप रसमें पटु जानत । शब्द रूपरस परस गन्ध मैं
महिमुनि मानत ॥ है ताते महि बहु गुणवती जगआधारवती महत ।
नृप अखंड ब्रह्म पर्य्यन्त सब इन सबमें इमि सब कहत ॥ दोहा ॥ इन
सब मधि सबमें लसत भूमिव्यक्त परधान । और चारि जाने परत नृप
कीन्हे अनुमान ॥ पञ्चभूतमें सर्ब अरु है सबमें प्रभु एक। यह बिनुबूझे
करत सब बहु बिवेक अबिवेक ॥ कञ्चन अरु कटकादि सम नाम रूपको
भेद । है नातरु सब ब्रह्ममें जानत शुद्ध अखेद ॥ कारणते प्रगटत सकल
गगन आदि जिमि ईन । भूमि आदि सब होतहै तिमि कारणमें लीन ॥
कबित्त ॥ कारणते नभताते बायुताते तेजहोत तासोंहोत जलतासों भूमि
अवदातहै । भूमिजल मधिजल तेजजल तेजमेंसो बायुमेंत्यों बायुनभमें
सो कारणहीमें समातहै । ऐसो परपंच परमातमा को बिरचो मरीचिका
समान वे प्रमाणजो बिभातहै । रज्जु अहिस्वप्नकी दशालों सांचो झूंठो
जौन महाराज ताकोई अताक्यों भाख्यो जातहै ॥ दोहा ॥ भूपबेधि कटि-
जाइ कोउ जो ब्रह्मखंड महान । तौ तितहूं इमि लखिपरै किमिकहिये
परमान ॥ परगुणि गणक सुजानजन करिकैतर्क प्रकर्ष । हैकीन्हें सि-
द्धान्तध्रुव सुनिये नृपति सहर्ष ॥ नृप अचिन्तजो बस्तुहै सो न तर्कसों
साध्य । बूझे निर्णयहार के है सो सतधा वाध्य ॥ मानव जिमि आदर
समय निरखत बदन अनूप । तिमि हम निज मनमें लखत सबप्रपंचको
रूप ॥ ताते जम्बूद्वीप को कहियतु हैं ब्याख्यान । बेष्ठित जो लव-
णाब्धिसो सुनिये नृप सज्ञान ॥ दीप सुचक्राकार यह तासु मध्यमेंभूप ।
मेरुशैल बशकोण है कंचनमयो अनूप ॥ चरण दोहा ॥ चौरासी चौ-
रासीयोजन अध ऊरध सो पर्म । बिहरत तापै बिधि सुर ऋषिगण
करता सरस सुधर्म ॥ दोहा ॥ उत्तर दिशिहि सुमेरु के नील शैल फिरि
श्वेत । सबके उत्तरदिशि शयल शृङ्गवान छबि देत ॥ दक्षिण दिशि
ताकेनिषध हेमकूट हिमवान । पूरब पश्चिम समुदलों हैतेसकल महान ॥
बहुबहु योजन भूमिहै तिनकेबीच सुजान । खंड सकलते चरततहँ पुण्य
पुरुष मतिमान ॥ दक्षिण दिशि हिमवानके भरतखंड बिख्यात । उत्त

दिशि हिमवानके खण्डहैमवत तात ॥ हेमकूटओ निषधके मध्यखण्ड हरि बर्ष। तीनिखण्डये निषधके इतहैं सुनो सहर्ष ॥ खण्ड इलावृत मध्य में पार्श्वमेरु केभूप । उत्तर दिशिहै मेरुके श्वेतखण्ड शुभरूप ॥ चरणा दोहा॥ उतैंश्वेत गिरिके बैरभ्यक खण्डपरम रमणीय। शृङ्गवान के उतऐरावत खण्ड परम कमनीय ॥ खण्ड सुऐरावत अरु भारत नृपहैं धनुषाकार । चक्राकार भूमिके इत उत गिरिजा सदृश उदार ॥ पूरब दिशि है मेरुके माल्यवान गिरिचारु। सैन गन्धमादन बिशद पश्चिमदिशा उदारु ॥ इनके बिचहै मेरुये परसे लवणसमुद्र । नील निषधके मध्यये अतिरमणीय अक्षुद्र ॥ माल्यवान केपूरबदिशि मेंहै भद्रास्वनरेश। गन्धमादन सुगिरिके पश्चिम केतुमाल शुभदेश ॥ उत्तरकुरुभद्रास्व अरुभरतखण्ड नृप मोर। केतुमालअरु खण्डये चारोंचारोंओर ॥ चौपाई ॥ उत्तरदिशा मेरुके पावन। कर्णिकारको बिपिन सोहावन ॥ बिलसें तेहिबन शम्भुगुसाईं। शिवा सहित शुभदानि सदाईं॥ तहांमेरुते अमलउदारा। गिरीचारु सुरसरिकी धारा ॥ जाथर धसीधार गिरिचारी। तहांचन्द्रमस हृद्भोभारी ॥ निरखि धार सोआनँद कारी। शङ्कर जटाजूटमेंधारी ॥ जटाजूटमेंधरि मुदछाये। कइक हजार बर्षबिरमाये ॥ नृपति मेरुकेदक्षिणआशा। हैकैलाश प्रकर्ष प्रकाशा॥ ताके उत्तर दिशिमनभावन। हैमैनाकशैल छबिछावन॥ शैलहिरण्य शृंगढिग ताके। हैमणिमयहे नृपबरभाके ॥ताकेनिकट बिन्दसरनामा। हैसुसरोवर बरअभिराम। हेन बालुका शुचिरुचिपूरी ॥ जोचहुंदिशि बहु मणिमय रूरी ॥ तहां भगीरथ शिवहि अराधे। सुरसरिहेत उग्रब्रत साधे॥ उत्तर दिशिहवै गुप्त सुसरिता। प्रगटी दक्षिणओर सुचरिता॥ ताथर यज्ञ अनेकन करिकै। लहीसिद्धि सुरपति ब्रतधरिकै ॥ ह्वैकै सातधार बरबरणी। धसी तीनिपुरमें अघहरणी ॥ सीता नलिनी सिंधु सोहाई। जम्बूनदी पूतकर गाई ॥ दोहा ॥ अरु बस्वोकसरा बिमलसरस्वतीअभिराम। गंगासात प्रबाहये गंगासात सुनाम ॥ है पश्चिम दिशि मेरुके केतुमाल शुभदेश। पुण्य पुरुषतहँ बसतहैं कंचनबर्ण सुभेश ॥ सदाचार रत नारिनर सुरगण सदृश अनूप। तिनको आयुर्बल बिशद अयुतबर्ष को भूप ॥ शैल गन्धमादन उपरि बिलसत सदा धनेश। राक्षस गुह्यक अप्सरन सहभूषे सोदेश ॥ शैल गन्धमादनहि के बहुगिरि अवयब भूत।

तिनपै बिलसत पुण्यजन पर्म धर्मकृत पूत॥ सहस एकादशबर्षते जीवतहैं नरनारि। तेजपुंज बलबीर्य्यमें चरत सुसमपथ धारि॥ राक्षसगण हिमवानपै बिहरतसदा यथेष्ट। हेम कूटपर बिहरत सुगुह्यकगण गुणश्रेष्ट॥ शैल निषध गोकर्णपै अहिगण करैं बिनोद। सदाश्वेतगिरिपै असुर सुर बिहरैं लहिमोद॥ रमैसदा गिरिनिषधपै मोदत सबगन्धर्ब। नील शैलपै रमतहैं बिदित ब्रह्मऋषि सर्ब॥ शृंगवान गिरिअमलपै बिलसैं अमरअखर्ब। भूप सप्तकुल शैलके कहेनाम गुणसर्ब॥ उत्तरदिशिमें मेरुके उत्तर कुरुजो देश। अमृततुल्य बरफल फरत तहँबहुवृक्ष सुभेश॥ इच्छित फलदायक बिटप हैंतहँ कितक अनूप। क्षीरस्रव क्षीरी सुतरु हैंतहँ अगणित भूप॥ भूषणश्रव अरुबसन श्रव हैं तहँ बिटप अमन्द। मणिसुवर्ण समभूमितहँ हैहे नृपति स्वछन्द॥ नरच्युतह्वै सुरलोकते जन्मलेत तहँआय। जनमत संगहि नारिनर धर्मशील शुचिकाय॥ बरधहिं क्रमसोंपान करिक्षीरी तरुको क्षीर। तुल्यरूप बनशीलगुण सबक्षण सहचरधीर॥ सहस इग्यारह बर्षते करितहँ सुतप सप्रेम। तनतजि साथहि लहतहैं उत्तमपद कृतक्षेम॥ भारुण्डा नामक बिहंग तब निज चोंच पसारि। गहि तिनको तन देतहै गिरि कन्दरमें डारि॥ पूरुबपार्श्व सुमेरुके देश अपूरबपर्म। अभिषेकित तहँपूर्णहो नृपभद्राश्व सुधर्म॥ तहँबिरचो भद्राश्वको भद्रशाल नवचारु। हैकालामर द्रुममयो सुनियेभूप उदारु॥ ऊन्नत योजन एकको तरुकालाम् सुनाम। सदापुष्प फलयुत रहत तहँअति अमल ललाम॥ तेज पुंज तहँनारिनर होतश्वेत तनअक्ष। जीवतबर्ष हजारदश नादनृत्यमें दक्ष॥ नित्य सुतरुकालामको करिसुस्वाद रसपान। सदातरुणते रहतहैंसुनिये नृप मतिमान॥ हैंदक्षिण दिशि मेरुके जम्बूवृक्ष महान। सर्बकामप्रद जाहिनित सेवतसिद्ध सुजान॥ एकसहस अरु एकशत योजन ऊंचोतौन। सहसअढ़ाई हाथसब ताकीशाखा जौन॥ योगिक तासुप्रधान तासोंयह जम्बूद्वीप। हैबिख्यात त्रिलोकमें सुनियै नृपकुलदीप॥ तासुसुफल केसुरस कीअनुपम नदी बिभाति। पश्चिमदिशि ह्वैमेरुके उत्तरकुरु मधिजाति॥ जीवतासु जलपान करिहोत कनक रुचिगात। क्षुधा पिपासा जरा श्रम तिनके निकट न जात॥ ताकेजलके परसते कनकमयो सोदेश। जम्बू नद बिख्यातहै तातेंकनक सुभेश॥ पूरब दिशि जोमेरुके माल्यवान हैशैल।

सु शृङ्गपै दिपत शिखि सम्बर्तक बरफैल ॥ प्रलयकालमें करत सो सम चराचरसर्व। सम्बर्तक समऔर नहिं तेजस भरोअखर्ब॥ माल्यवान कैपार्श्व हैं शैलसुग्यारह और। माल्यवान तेसर्बहैं अवयव समकृतगौर॥ तहवैकै बिधिलोकते जन्मत तहँ नरआय। पुण्यपुंज परसिद्धते चारु रजत रुचिकाय॥ ऊरधरेताते तहां तपि तपिउग्र अमन्द। सो तनतजि गहि अन्यतन पूरित परमानन्द॥ तेसिगरे छाछठि सहस रबिके सन्मुख जाय। रहिआगे अरपत अरघ सुनिये नृपसुखदान॥ रहिरहि तहँछाछ-ठि सहस बर्षसर्ब शुचिरूप। लीन होतहैं ब्रह्ममें क्रमसों सुनिये भूप। दोरठा॥ रमणकहैं परजाय श्वेतखण्डको भूपमणि। शुद्धशुक्ल शुचिकाय। पुण्यपुरुष प्रगटततहां॥ एकसहस शतएक अरु शताद्ध नरअब्द मिति। जीवतते सबिवेक परममोदमें धर्मरत॥ हंसा दोहा चरणा॥ नील शैल अरु गन्धमादन माल्यवान अरुनील। बर्षहिरण्मय तिनमधि राजन बर्जित शुद्रसुभील॥ रोला॥ नदीहैता बर्षमधि हैरण्वती अभिराम। तहां उत्तन खगनसह खगराज करतअराम॥ परमउत्तम पुण्यकृत नर करतहैं तहँ बास। शतएकादश अर्द्धशत अर्द्धाय तत्र सुपास॥ शैल उत्तम शृंगवतपै शृंगमणिमै तीनि। गुहापरम बिचित्रता मधिबसति देवीईनि॥ शाण्डि-लीशुभनाम ताको सुनहु नृपति प्रवीन। जाहि सुमिरे रहति जनके सर्ब सिद्धिअधीन॥ बर्षऐरावत उतैहैं शृङ्गबनके भूप। लवणनिधि तटलोंन तहँरबि तपत तेजस्वरूप॥ बरमनोहर स्वक्षशीतल रहत नित सोदेश। करतआवृत ताहिमानो सह नक्षत्र निशेश॥ जिताहार जितेद्रिनर तहँ अमरपुरते आय। सहसतेरह बर्षबसि फिरिजात उततजि काय॥ क्षीर निधिके तीरउत्तर बसत श्रीभगवान। जासुईहा में जुमाया मयो सर्ब महान॥ दोहा॥ बिरचि बिनाशत रचत इमि लोकअनेकन जौन। सब संसबथर सर्बबिद हैव्यापक प्रभुतौन॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभि
गामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकु
लनाथेनकबिनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्म
पर्वणिभूगोलवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

दोहा॥ संजयसो इमिसुनि कहे नृप धृतराष्ट्र सुजात। अबशुभ भारत

बर्षको संजयकहो प्रमान ॥ संजयउवाच ॥ हैनृप भारतवर्षमें शैलश्रेष्ठ शुचि सात । प्रथमनाम तिनकेकहैं मनदै सुनियेतात ॥ बिन्धसु मलयमहिन्द्र अरु रिक्षवान अभिराम । पारिपात्र अरुसह्यगिरि शक्तिवान छबिधाम ॥ ढिगवर्ती तिनके शयलहै लघुदीर्घ अनेक । गुप्तप्रगट नामकअमलसुनिये नृप सबिवेक ॥ अब कहियतुहैं नदिनके नामसुनो क्षितिकन्त । हैंजितनी यहि वर्षमें पानीभरी अनन्त ॥ कबित्त ॥ गंगा गोमती औ नदी गोदावरी गौमतीहै गण्डकऔ गौरी महागौरी अनुमानिये । त्रिदिवा औ दुर्गावती देशी देविका औदेव स्मृति चुलका कपिंजला है जानिये । कावेरी सुकुंडली कुवीरा कर्मनाशा कहौकोसी करणा औकरतोया उर आनिये । कृशधारा कौशिकी करीषिणी औ कृमिकपी कपिला कुवारी कुशचीरा कृत्या मानिये ॥ अपरं ॥ चन्द्रभागा चंदनाऔ चित्रबाहा चित्रसेना चन्द्रमा औ चर्मन्वती चित्ररथासहिये । बेणा तुंगबेणा कृष्णवेणा बिदिसा बितस्ता बाणीबीराबिनदी बराननी हैसहिये । वेत्रवती वृहतीऔ ब्राह्मनदी ब्रह्ममेध्याब्राह्मणीऔ बिदूका औबैतरणी लहिये । बाहुदा दृशद्वती बिपापा औ बिपासा नदी बेदाश्वास वृषभा औवृषसाऊ कहिये ॥ अपरं ॥ शोणसुप्रयोगाऔ सरश्वती सुधामासिंधु सरावली शतवली शतकुम्भा कहैंगुनि । सैव्यासरयू औशीघ्रा सुनसात्रिसामा नदीतामा तमसाऔस्थूलबालुकासुमोदौ सुनि । पयस्वनि पूर्बापुर मालिनी औपासासिनी पिंजलापवित्राअरु पालावती सुन्धुनि । पुरावती प्रबराआ पिच्छलाआ चित्रपलाइच्छलाऔ इरावती भूपजाहि सेवैं मुनि ॥ नर्मदा निचिन्त्या औनिवारा औ निराम भूष्या भरद्वाजी भीमा भीमरथी भाखों लहीहै । मकरी महेन्द्रा मुक्तवती मानवी मनुष्णा मन्दाकिनी मारिषाऔ मनगा सुहदीहै ॥ अहिता अनंगा ओघवती अच्छिदा अशिक्नी हेमाहस्ती सोमावर हरिस्त्रवा बरसदीहै ॥ ऋषिकुल्या राजनी रहस्या रोहो रथचित्रा रिन्द लोहितारणी औ लोहितासानदी है ॥ दोहा ॥ योतीरथा जांबूनदी यमुना जबक्षाभूप । औरधूत पापानदी अरु धृतवती अनूप ॥ मित्रशिला बहुलानदी नदीशतद्रूस्वक्ष । क्षानय टेढ़ीधृतरावती नदी रापती अक्ष ॥ बिस्वामित्री प्रभृतिये बरणी नदीनरेश । अबकहियतु हैंहैं जितकभरत खण्डमेंदेश ॥ कबित्त ॥ कुरु कुंत्य कान्तिका हे कोशल कोसाध्य काश करूष कलिंग औकरी तप सुभेषहै ॥

कुक्करशल्प कालताप कुट्टकेकयहैं काश्मीर कंन्यकओ कुन्तल सुकेशहै ॥ कारक कुलिन्द कुरुबणक करीषकहैं कुशबिम्ब कालव औ करका बिशेष हैं। केरल किरात कुकुरांगरओ कोकणहैं काबिल कुमाऊओ कुशस्थशुभ देशहै ॥ अपरं ॥ शाल्व सूरसे सिंधु सउशल्य सोतरहैं शिखर सुदेष्णसक सशिक सुथानेहैं। शैलओ सुकंद औस्वराष्टाओ सकुल्लोमा सउबिरासय रिन्य सौहृद बखानेहैं। सिद्धओ सुमल्लिकओ शाल्वसेनओ समङ्ग सुन यसिबाट औसकृद्गृह सुजानेहैं। जाङ्गल जठरअरु यामुन यमनदसजि ऋत्वज कहतसब सुबिधि सयानेहैं ॥ अपरं ॥ परकाशप्रह्लाद पांचाल औ पुलिंदप्रति मत्स्यपत्यकर परांत परसीकहैं। मालामत्स्य भंदक मगध मद्र सुमाद्रेय मल्वराष्ट्र मालवओ मल्लज सुनीक हैं ॥ मेरुभूतमेकल औ मधमत्त मल्लअरु मल्लव औ महिष अलीक हैं। मूषकमाहेयओ मसीर म्लेच्छदेश मंजुमहाराज सुनिये मकारमें अतिकहैं ॥ अपरं ॥ बौधबक्रबक्रा तपबंग औबिदर्भ बभ्रु बाह्लीक बटधान बानवबिख्यात हैं बहुबाद्यबा-तजबिदेह बाणापर्व देश बैदाह बर्बर बन बासिक बिभातहैं॥ बेगसबि-कल्प बिध्य बुल्लिका औबल्कलहै परतङ्ग पार्बतसुदेश अवदातहैं। चेदि चर्ममण्डल औचीन महाचीन चोलाईजिका ये जामेंचारौ चाहे जातहैं ॥ अपरं ॥ द्रबिण दशार्ण दुर्ग दर्शक औ द्रबीद्रव दाम्न दशमालिक औ भोज भूषिका अमन्द। उत्कल उपाकृत उपावृत अपरकुन्त अधिराज्य अश्वक औ अपबह सुहै सुछन्द॥आहिक अभीर अंग अपरान्त अटवीहै आनरत अभ्र अमोसार औद्र निरदन्द।अमलअलिन्द औ अवन्त श्रीनहूणदश रूपबाह ऋषिकार मन सुनो मोदकन्द ॥ अपरं ॥ नैकपृष्ट निष्कुट निषाद नभका-नन है गोमन्त निषध और गोपराष्ट है अनूप। गुण गान्धार गोपपालक औ गच्छदेश खाशीर खण्ड कच्छ सुकांभोज शुभरूप ॥ तिलभार तीर-गस्त्र औ त्रिगर्त्त ताम्रलिप्त स्तन बालायतन रचिततत्र यज्ञजूप। एतेदेश विशद बिख्यात तिन्हैं कहैं जानि कहियेकहांलों अब देशसिगरे हेभूप ॥ दोहा ॥ संजयसों फिरि नृपकहे संजय कहोप्रमान। सर्बद्वीप सबसमुद के सुनि बोलो मतिमान ॥ योजन अष्टादशसइस अरु षटशत मितिभूप। जाहिर जम्बूद्वीपहै अतिरमणीय अनूप ॥ तासुद्विगुणहै लवणनिधि नृप ताके चहुंओर। तितनो शाकद्वीप उत पूरितप्रभा अथोर ॥ हैं नृप शाकद्वीप

में सातशैल अभिराम। खण्डसात अरु आपगा तिनके सुनियेनाम॥ प्रथम मेरु फिरि मलयगिरि फिरि जलधारा शैल। रैवत श्यामक दुर्म फिरि केशरशैल सुफैल॥ मलय शयलपै बसतघन जलधाराते बारि। लै बरषत हैं बिश्वमय प्रभु ईहा अनुसारि॥ केशरिगिरि पै करत हैं मारुत सकल बिहार। हैं आयत ये सर्वगिरि पश्चिम पूर्व उदार॥ नृपहैं तिनके मध्यमें सातखण्ड छबिधाम। महामेरु तब जलद फिरि कुसुदोत्तर अभिराम॥ मेरुमलय जलधारके इत ये खण्ड सुग्राम। खण्ड उते जलधारके हैं सुकुमारसुनाम॥ रैवतगिरिके उतै हैं खण्ड चारु कौमार। खण्ड उतै गिरिश्यामके मणिकाञ्चन गुणागार॥ है गिरिकेशरके उतै मौदाकी वर खण्ड। क्रमसों ते गिरि खण्डहैं द्विगुण द्विगुण उतखण्ड॥ हैजम्बू तरुते द्विगुण तहां शाकतरुपर्म। ताते शाकद्वीप जो सेवैं ताहि सुधर्म॥ बिलसैं चारोंवर्ण तहँ देव तुल्य तपऐन। जरारोग असु मृत्युकी भयकछु तिनकहँ हैन॥ सुकुमारी अरु मणि जलानदी कुमारी यत्र। सीता सबिनीनदीहै चक्षुबर्द्धिनी तत्र॥ महानदीसह बहु नदी कहैं कहांलौं सर्ब। देश भेद तिनके न कहि सकैं देव गन्धर्ब॥ है उत शाकद्वीपते द्विगुणित क्षीरसमुद्र। तितनोई कुशद्वीप उत जहँ कुश यूप अक्षुद्र॥ भूपतिहैं कुशद्वीपमें अधिकारी षटशैल। तिनके इत उत मध्यमें सातखण्ड बरफैल॥ तहां देव गन्धर्वसह बिलसत प्रजा प्रवीन। सदाचार रत ज्ञानमें सुरगण सदृश अहीन॥ घृत दधि सुरा सुसर्करा जलनिधिके मधिभूप। शाल्म क्रौंच सुप्लक्ष अरु पुष्करद्वीप अनूप॥ क्रमते द्विगुणित सर्बपै तिमि गिरिखण्ड समेत। पुण्यपुरुषमय लसतहैं सुनिये ज्ञाननिकेत॥ हैं नृपशाल्मलद्वीप में शाल्मलवृक्ष प्रधान। क्रौंचशैलहै क्रौंचमें सुनिये ज्ञाननिधान॥ प्लक्ष द्वीपमें नृपति है प्लक्षवृक्ष बिख्यात। नामी पुष्करद्वीप में पुष्कर शयल बिभात॥ भूप चतुर्दल कमलसम जम्बूद्वीप ललाम। योजन तैंतिससहस है त्यहिलेखमें ब्याम॥ त्यहिधारे बसु ओरते बसु दिग्गज बलधाम। सार्ब भौम सुप्रतीक अरु अंजन बावननाम॥ पुष्पदन्त ऐरावतौ पुण्डरीक बलवन्त। कुमुद आठ ये गजधरे महिबलबीर्य अनन्त॥ इतै कर्मकरि जीव सब सुनो बुद्धिमत भूप। क्रमते भोगत द्वीप सब निजकृत के अनुरूप॥ एक ग्रामसम द्वीपसब पालत बिधि गुणवान। न्यामक दायक कर्मफल

व्यापक ईश महान ॥ सदाचाररत पुरुष कहँ लभ्य सबंपद भूप। दुराचार रत जीवते लहैं निरयको कूप ॥ अब रबि शशि अरु राहुको सुनो भूप आख्यान। पृथक् पृथक् मैं कहतहों थिरकरि मनहिं सुजान ॥ द्वैशतकम षटदश अरु तीस सुसहस कोशको भूप। थौल्यगर्भ अरु मण्डल जानो रबिको उग्रअनूप ॥ शतकम षट सहस्र एकादश तैंतिससहस नरेश। थौल्यगर्भ अरु मण्डल जानो शशिको परमसुभेश ॥ मण्डल छत्तिस सहस को षटसहस्रको थूल। गर्भ सुद्वादश सहसको तमको जानु अतूल ॥ योजन छत्तिस सहस है शशिन्तद को परिवेष। योजन द्वादश सहस है बिस्तर व्याम बिशेष ॥ है नृप योजन षटसहस तासुगुर्बता पूर। छादति छाया जासुलहि शशि सूरहि युतनूर ॥ बैशंपायनउवाच ॥ सोरठा ॥ संजय यहिबिधि भाषि क्षितिप्रमाण धृतराष्ट्रसों। हियरे आनँदराखि गयेबिदा ह्वै समर महि ॥

खस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिभूगोलवर्णनोनामद्वतीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

बैशंपायनउवाच ॥ दोहा ॥ ॥ बध भीषमको निरखिकै संजयनृपपै आय। करि प्रणाम इमि कहत भे दुसह दुःखसों छाय ॥ चौपाई ॥ नृपजूझे भीषम रणघारी। धीर धुरीन बिदित धनुधारी ॥ पुरुषसिंह जो परदल जेता। गङ्गासुत महिमण्डल नेता ॥ जो बरबीर धीर धनु धरिकै। नहिं हार्यो भृगुपति सों लरिकै ॥ जाके बल तुव सुत मुदलीन्हे। दुसह बैर पांडव सों कीन्हे ॥ ताकहँ हांकि शिखण्डी मारे। रहे लखत सब सुवन तिहारे॥ जो निजबल परदल बल खोयो। सो अब शरशय्या पै सोयो ॥ ह्वै बे योग न हो जो कबहूं। सो अनरथ देखो अब सबहूं ॥ कारण याको मंत्र तिहारो। करहु कृपाकै रिसि हियधारो ॥ तेज बीर्य्यनय धर्म अतुलको। रविभो अस्त आजु कुरुकुलको ॥ दश दिनराति रक्षि तुवसेना। हतिअर्बुद परभट जगजेना ॥ छिन्न मूल गुरु तरुसम गिरिकै। सोये शर शय्यापै थिरिकै ॥ सुनि ये बचन मर्मभिद सरसे। अन्धभूप करुणा सों सरसे ॥ शोकाकुलह्वै बोले बानी। आरत करुणारस सों सानी ॥ संजय शक्रोमप

कुलनायक। किमि जूझो जगजैन सहायक॥ के के रहे संग ताक्षणमें। के थिररहे भगेकेरणमें॥ रविसम भीष्महि पर तम नाशत। रोक्यो कौन नसे संभाषत॥ हे कृप द्रोणहिं आछत भीषम। किमि भेनिधन शक्रसम भीषम॥ यामदग्नि कहँ जीत्यो जोई। किमि शिखण्डिसों हार्यो सोई॥ याक्षण गिरे भीष्मभट रथते। तब किमि भे ममसुत अनरथते॥ सो सब संजय गोइ न राखो। पृथक् पृथक् अब सादर भाखो॥ दोहा॥ भीष्म सत्व बोहित बिषद के अधेय ममपुत्र। ताहि बिना अब ते सबै कहा करेंगे कुत्र॥ भूप सहस्रनि एक तेहि काशीपुर में जीति। लै आये मम जननि कहं जो स्वभ्रातृके प्रीति॥ दनुज दैत्यके नाशहित सुरपति जासु सहाय। चाहतहैं ते भीष्म किमि जूझे कहौ बुझाय॥ सोरठा॥ ममसेनायुत चारि भई मरे ते भीष्मके। बिना नाथकी नारि गोपबिना गौ यूथ जिमि॥ उपलहुते अधिकाय कठिन भयो मम हृदय अब। भीष्म मरण सुनिहाय संजयजो दरकत नहीं॥ चौपाई॥ कर्म कियेको फलमति बिगरे। लहन चहत अब ममसुत सिगरे॥ तबजे शठजूवामें जीते। अबतेहारि लहत मतिरीते॥ भीष्ममरण सुनिमम मनभाई। गहत न धीरज शोकबिहाई॥ पुत्र मरणको संशय भारी। भयो हमैंअब लेहुबिचारी॥ अबतुम युद्धव्यवस्था कहहू। ममअघ समुझि मौनमति रहहू॥ सुनिधृतराष्ट्र भूपकीबानी। कहतभये संजय बिज्ञानी॥ व्यासहि बन्दि कहैं सुनुराजा। युद्ध व्यवस्था सहित समाजा॥ दुर्योधन योधन सँगलीन्हें। दुःशासन कहँ शासन दीन्हें॥ दुःशासन रथ सुभट सजावो। नृप समूह कहँ शीघ्र बुलावो॥ लैसंग सुभट भूपगण दक्षण। हैकरतव्य भीष्मकोरक्षण॥ हैं इमि भाषें भीष्म सुजाना। हम शिखण्डिपै तजब नबाना॥ वहहैं प्रथम युवति हमजाने। तापैं तजब न शस्त्रअमाने॥ बिनुमारे ह्वै निडर शिखण्डी। तजिहि भीष्मपै शक्ति प्रचण्डी॥ ताते नृपन सङ्गलै हमको। रक्षितव्य है निति भीषमको॥ भीष्म कुशल तौ जयमम करमें। बिना भीष्मकछु बनिहिं न फरमें॥ हमसब कहँतौ इतनो कारय। करिबो बध शिखण्डिको आरय॥ औरहि बधि भीष्म जयलेहैं। सार्वभौम पदहमकहँ देहैं॥ ताते कहि प्रयत्न सब कोई। बचेहु शिखण्डिहि संशय गोई॥ दहिने पीछे बायें आगे। रहिरक्षेहु भीष्महिभयत्यागे॥ बिनुराखे सिंहहि

शश मारहि। तौयहि बनमें सुचित बिहारहि ॥ दोहा ॥ सुभट उत्तमौजा सुदल दक्षिण दिशि रहिवीर। रक्षत पार्थहि बामदिशि युधामान्यु रणधीर ॥ रक्षतपार्थ शिखण्डिकहँ अभैभीष्म सोंतौन। ताको बधिब कठिन है है यह शोच अगौन ॥ सोरठा ॥ इतनेही मेंभूप बीती तौन बिभावरी। करिनितकर्म अनूप लगेसजनभट दुहुंदिशा ॥ चौपाई ॥ सजहु सजहु रथ भट धनुधारी। भयो शब्द दुहुंदलमें भारी॥ बाजे दुन्दुभिशंख अनेका। गहेशस्त्र सब सुभट सटेका ॥ रथीगजी हयसादी योधा। सुभट पदाती धीर सक्रोधा ॥ सजिसजि भेजिमि दुहुंदिशि ठाढ़े। भरे बीररस अमरष बाढ़े ॥ हयरथ गजगण मणि सुबरणसों। भूषे दुहुंदिशिके सुबरणसों॥ आयुध भूषण बसन सोहाये। मणि सुबरणमय सो भटभाये ॥ रत्नअमौलिक मैं कमनीया। मुकुट छत्र युत नृप रमणीया ॥ चारु सुतड़ित मेय सम सोहै। रणमण्डल सुखमासोपोहै ॥ शाल्व जयद्रथ शकुनि नरेशा। जयत्सेन अनुबिंदु सुभेशा ॥ बिंदु श्रुतायुध अरु कृतबरमा। नृपति सुदक्षिण सरस सुधर्मा ॥ भूप वृहद्बल एदश राजा। औरभूप गण सहित समाजा ॥ दश अक्षौहिणि सेनासाजे। थिरि भीषम के चहुंदिशि राजे ॥ अक्षौहिणि दलसह बलभारे। रहे निकट सब सुवन तिहारे ॥ रजतमये सित हत युतरथपै। राजेभीष्म मध्यरण पथपै ॥ धारे श्वेत बचन नय गामी। गहेसर्ब आयुध गुणनामी ॥ सैन मध्य शोभित भेकैसे। उडुगण मध्य राकापति जैसे ॥ दोहा ॥ सहित एकादश क्षौहिणी हैतुव सुतहेभूप। हैंसह सात अक्षौहिणी पाण्डवनृपति अनूप ॥ निज सैनिक क्षत्रियन कहँ भीषम निकट बुलाय। कहतभये इमि धर्मबिद् क्षत्रधर्म समुझाय ॥ समर स्वर्गको द्वारहै क्षत्रिनको सुखदाय। खुल्यो तौन अब शुद्धहवै बसो स्वर्गमेंजाय ॥ रोग ग्रस्त ह्वैकै मरब क्षत्रिहि परम अधर्म। रणमें संन्मुख शस्त्रसों मरिबो सरस सुकर्म॥ भीषम केयेवचन सुनि ह्वैप्रसन्न भटसब। निजनिज यूथनि जायकै बिलसत भये अखर्ब ॥ इर्षा करिकै भीष्मसों करण सहित परिवार। भयेनिरायुध शस्त्र तजि परिहरि युद्ध बिहार ॥ पद्म बर्ण अरु सैब्य नृप चित्रसेन पुर मित्र। भूरिश्रवा सद्रोण सुत रक्षत चक्र पवित्र ॥ नृपतिक्षेम धन्वा प्रबल शल्य द्रोण कृत बीर। रक्षक सेना सर्बकेहैं नियमित रणधीर ॥ केतुमान क्षितिपाल अरु अरु भगदत्त

नरेश। नृपति बिन्द अनुबिन्द येहैं गजस्थ शुभभेश ॥ सोरठा ॥ द्रोण द्रोणसुत दक्ष कृपाचार्य बाह्लीक ये। बिरचत भये सपक्ष व्यूहसर्ब तो मुख बिशद ॥ चौपाई ॥ सहसेना सबसुवन तिहारे। हैंरक्षत भीष्महि गलभारे ॥ रथ केचक्र चरण हय गणके। तिनके रक्षक भट दृढमनके ॥ साठिलाख हैं बीरपदाती। निजदल रक्षकपरदल घाती ॥ कैं यकलाख सुभट पदचारी। आगेचले खड्ग धनुधारी ॥ यहिबिधि निजदल गौरव सुनिकै। नृपधृतराष्ट्र कहत भेगुणिकै ॥ एकादश अक्षौहिणि सेना। मखि मम पुत्रनकी जगजेना ॥ किमि पाण्डव चढ़ि संमुख आये। लघु सेनापति भीति न पाये ॥ सो कहिसंजय संशय नाषो। मोमन सुनिबे को अभिलाषो ॥ सुनि संजय बोले सुनुराजा। धर्मज लखितुव सैनसमाजा ॥ कहे धनंजयसों सुनिलीजै। बचन बृहस्पति को सुधिकीजै ॥ भरेएक मत संगति करिकै। तौजीतैं लघु बहुसोंलरिकै ॥ ममदल लघु परदल बहु भाई। ताते लीजै व्यूहबनाई ॥ अर्जुन कहे भूप अवरेखो। बज्र व्यूह हम बिरचत देखो ॥ बज्रपाणि जेहि निरमित कीन्हें। परदल दुखद मोहिँ सोदीन्हें ॥ भीमसेन बरबल भटमर्दन। अतुलितबीर मेघ सम नर्दन ॥ गदापाणि बिलसैरहि आगे। जेहिलखि दुरैं शत्रुभयपागे ॥ असको जो जिय लोभ गँवाइहि। भीमसेनके सनमुख आइहि ॥ दोहा ॥ इमिकहि रचना व्यूहकी कीन्हें अर्जुन धीर। महाराज सुनि लीजिये जिमि राखे भटवीर ॥ कवित्त ॥ आगे भीमसेन तब धृष्टद्युम्न सहसैनभीम के उभैदिशि हेमाद्री सुतबलधाम। पृष्टरक्ष तिनके बिराट अरु धृष्टकेतु नायक अक्षौहिणी के अमनैत अभिराम। तिनकेहे रक्षकसुभद्रा द्रोपदी केसुत तबहै शिखण्डी सह पार्थ अस्वगुण ग्राम। पार्श्व रक्षपारथके युधामन्यु उत्तमौजा पृष्ठ रक्ष युयुधान भूपति बिदितनाम ॥ चेकितान यज्ञसेन द्रुपद सपुत्र बर्ग और भूप सिगरेप्रवीण अस्त्र कलमें। रक्षत चहुंदिशि सोंसैन चारुचढ़े चाव चितमें रहेहेचाहि जीतिलीबो पलमें ॥ आयुत प्रमत्त में जुमैगल के मध्यरहे महाराज धर्मराज राजि मध्य थलमें। ऐसो बांधि सर्बतोबदन बज्र व्यूह चल्यो पाण्डव नरिन्द दैनगारे निजदल में॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न पांचालपति सेनापति हेभूप। सब पैशासन कृत उचित सर्बस्वबित शुभरूप॥ नृप फाल्गुणके केतुपै आपु महाकपि आय।

भये बिराजत जयद प्रभु मंगल कृतसुखदाय ॥ ताक्षण बहु असगुणभये कहे पूर्बजिमि व्यास। अवशिभयो चाहै अनर्थ किये कर्मके आस ॥ कवित्त ॥ बाह्लीक शल औ अम्वष्ठसिंधु सेनापति अनुगामी द्रौणके हे पृष्ठ रक्ष चाहैं चैन। भूरिश्रवा रिपुंजय मित्रसह तुवपुत्र मध्यगत भीषमके रक्षकहे सहसैन। शाल्व मत्स्य केकय के पतिसह कृपाचार्य्य पाहैंदल उतर दिशामें रहि बलऐन। यवन किरातशक पल्वह संसप्तक ये दक्षिण दिशामें रहि रक्षक हे जगजैन ॥ अपर ॥ भूपतुव सैनमें है मैगल प्रमत्तलाख प्रतिनाग शतरथ रथप्रति शतबाजि। प्रतिबाजि नियमनमें धनुर्द्धर हेदश दश तिन प्रतिशत अशिचर्मधारी रहेराजि। ऐसोव्यूह बांधिबीर भीषम बिदितधीर धरे बीररसभे बिभातदै नगारेगाजि। साफजंग जीतिबेको सिगरे सुभट शूर साहसी सराहे सावधान सोहेशस्त्र साजि ॥ दोहा ॥ तुव पुत्रन को वृहतदल देखि युधिष्ठिर भूप। चिन्तित ह्वैकै पार्थसों बोलेबचन अनूप ॥ दुर्योधन को वृहतदल प्रबल सर्बभट जूह। शास्त्र रीतिसों भीष्म दृढ़ व्यूहरचे करिऊह ॥ इनसों जयपैबो सुनो मोकहँ कठिन लखात। सो सुनिबोले पार्थइमि मतिभय कीजैतात ॥ जासु सहायी कृष्णप्रभु बिश्व योनि भगवान। जय लहिबेको हेतते संजयकहा सुजान ॥ जुरि असंख्य अति प्रबलभट दानवदैत्य अमान। लरेजबै तबप्रभुकृपा तेजीते मघवान ॥ ताते जयके लहनको संशय तजो नरेश। कृष्णचन्द्र की कृपाते निजजय लहब सुभेश ॥ सोरठा ॥ सुनि अर्जुनके बैन नृपति युधिष्ठिर शंकतजि। प्रभुहिनौमि लहिचैन लखि निजदल मोदित भये ॥ इतने में भगवान अर्जुनके हित हेतुगुणि। कहेसुनो मतिमान् दुर्ग्गाकी अस्तुति करो ॥ जयकरी ॥ सुनि निदेश प्रभुको हितजानि। हयते उतरि पार्थ अनुमानि ॥ शुचिह्वै ध्याय देविके पाय। अस्तुति कियेभूरि सुखदाय ॥ नमो देविदुर्गे यशदानि। बिन्ध्य निवासिनि आनँदखानि ॥ जयकौशिकि कात्यायनि कालि। जय शाकम्भरि कालि करालि ॥ कृष्ण सहोदरि जय असुरारि। जयति चण्डि चामुण्डि कुमारि ॥ भद्रकालिजय जयति कपालि। खड्गशूल धारिणि शिरमालि ॥ जयमाया श्रीह्री श्रीजगदम्बे। सन्ध्याप्रभा सर्ब अवलम्बे ॥ तुष्टिपुष्टि धृतिदीप्ति महानि। बिद्या निद्रा क्षमा सुजानि ॥ जयसाबित्री स्वाहाकारा। जयजग प्रभवे जगदाधारा ॥

जयति ब्रह्मबिद्ये बरदानि। कैटभ नाशिनि जयति भवानि ॥ जय निशुम्भ मर्दनि बिद्यानि। कृष्ण अष्टभुजे कल्यानि ॥ कष्ट बिदारिणि मंगल दानि। सुमिरतनाम लहत जयखानि ॥ जयप्रदे जयबन्दौंतोहिं। दीजै सुयश कृपाकरि मोहिं ॥ सुनि अस्तुनि करुणाकी ऐन। अन्तरिक्ष रहि बोलीबैन ॥ थोरे दिनमें लहिजयपर्म। महिपालन करिहो युतधर्म॥ सुनिकै अर्जुन लहि अतिचैन। रथचढ़ि राजे परदल जैन ॥ दोहा ॥ पाण्डवके कल्याण को कारण सबबिधि पुष्ट। जासु सहायी कृष्णप्रभु निरखि भक्त संतुष्ट ॥ रामकृष्ण अरु व्यासके अरु नारदके बैन। नहिं माने तवसुत चहत जयलैसँग बहुसैन ॥ सोरठा ॥ सुनि संजयके बैननृप धृतराष्ट्र महीप मणि। चितमें चिन्तिअचैन युद्धचरित सुनिबो चहे ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउहितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिचमूसमागमवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दोहा ॥ परब्रह्म परमातमा विश्वयोनि भगवान। के कामदपद गुणि गुणत गीताज्ञान निधान ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में युद्धोत्सुक बरबीर। मामक पाण्डव जुटिकहा कियेकहौ हे धीर ॥ संजयउवाच ॥ व्यूहित पाण्डवकी चमू लखि दुर्योधनराय। जायपास आचार्य के कहत भये समुझाय ॥ यह पाण्डवको महतदल निरखो हे मतिमान्। द्रुपद पुत्र तवशिष्यसों व्यूहित सहित बिधान ॥ चौपाई ॥ यामें भीमार्जुन सम युधिमें। हैं बिराट सात्यिकि गुरु सुधिमें ॥ चेकितान अरु द्रुपदनरेशा। कुन्ति भोजअरु सव्य सुभेशा ॥ युधामान्यु काशीपति राजा। उतमौजा अभिमन्यु सुसाजा ॥ सुवन द्रौपदीके रणधीरा। अब सुनिये मामक बर बीरा ॥ आपु भीष्मअरु अश्वत्थामा। कर्ण बिकर्ण शल्यबरसामा ॥ भूरिश्रवा आदि रणचारी। हैं ममहितकृत बहुभट भारी ॥ वै न सकेमम बरदल घेरी। ममभट घेरिसकें चहुंफेरी ॥ पर जिमिजहँ नियमित भट जोई। तिमिरहि रक्षइ भीष्महिं सोई ॥ नृप इतनेमें भीष्म अकम्पन। निजदल हर्षण परदल शंकन ॥ शंख बजावतभे रणचारी। दुर्योधनहिं सशंक निहारी ॥ दुन्दुभि आदि बाद्यतिहि क्षणमें। बजे असंख्यसुसैन

सदनमें ॥ ताक्षण हृषीकेश छबिछाये । पांचजन्य शुभशंख बजाये ॥ पौंड्रशंखकहँ भीम बजाये । देवदत्त कहँ पार्थ सोहाये ॥ शंख अनन्त बिजयकहँ चावन । लगे युधिष्ठिरभूप बजावन ॥ शंख सुघोषहि नकुलप्रियम्बद । सहदेव मणिपुष्पकहि जयम्प्रद ॥ औरहु तेतहँ नरपति जेते । शंख बजावतभे सबतेते ॥ दोहा ॥ महाराज नभभूमिलों सहितकोणचहुं ओर । पूरितभो तेहिक्षण तहां दुःसह सहअति घोर ॥ कहो पार्थ तब कृष्णसों ममरथ शीघ्र बढ़ाय । उभय सैनके मध्यमें थापितकरो सचाय ॥ निरखोंमैं वहिरैनमें केकेभट बरबीर । मोसों लरिबेयोग्य हैं युद्धोत्सुक रणधीर ॥ सोसुनि केशव हांकिरथ सैनसन्धि मधिजाय । कहो लखौ परदल सुभट करतायुद्ध सचाय ॥ रोला ॥ तहांभ्राता पितामह पितृव्य पुत्रन देखि । सार सम्बन्धी स्वसुर अरुसखा सुहृदन पेखि ॥ निरखि मातुल मातुलेयन भागिने मन लेखि । पौत्र गुरु गुरुसुतन लखि इमि कहतभे अवरेखि ॥ स्वजन सम्बन्धी स्वबन्धु स्वबर्ग येजन सर्ब । युद्ध हितजे खरे संमुख शस्त्रपाणि अखर्ब ॥ इन्हैंलखि ममहृदयमें अति होत करुणा तात। बदन सूखत कण्ठ कितहूंवै होतकम्पित गात ॥ मोहवशमो मनभयो नहिंछोह छाड़ोजात । करबहम केहिभांति इनपै कठिन आयुध पात ॥ राज्यसुख ऐश्वर्य जयकी हमें बांछा नाहिं । मारि बन्धु निबन्धु हवैबो उचितनाहिं महिमाहिं ॥ जासु सुखहित राज्यचाहत तिन्हैं निजकर मारि। लहबकौन अपूर्वसुख महि बन्धुहीन निहारि ॥ बन्धुगण बधबंश छेदन पितृकर्म बिनाश । उग्रपातक बूझि ममहियभयो अतिशय त्रास ॥ यहिप्रकार बहुभांति कहि परमशोकसों ग्रस्त । पारथ रथपैं धरिदये धनु गांडीव प्रशस्त ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिश्री कृष्णार्जुनसंवादेअर्जुनविषादोनामपंचमोध्यायः ॥ ५ ॥

दोहा ॥ बोलेप्रभु इमि तुमहिं लखिकहाकहैंगे लोग । यहअकीर्त्ति कर कीवता रणचढ़ि करब अयोग ॥ करहुयुद्ध शरधनुष गहि संशय सकलबिहाय । रणचढ़िकै करिबोदया कादरता कहि जाय ॥ सोरठा ॥ सुनि केशवके

बैनसजल नयन पारथकहे। ममन होत अचैन भीष्म द्रोणपै तजतशर ॥ तजोजात नहिंबाण शतधा पूजनयोगपै। मोहिं न संशय आनहोत ग्लानि शरधनु गहत॥ जिन्हेंमारि फिरिहोय शोकाकुलह्वै निजमरण। कहत शास्त्रबिद योग तिनसों लरिबो नहिंउचित ॥ बन्धुबर्ग को नाश दुहूंवोर सोंहै अवशि। करिकै व्यर्थ प्रयास कौन लहैयौं जय अजय ॥ जयकरी ॥ बंधुबधनको दोषमहान। हमजानत नहिंवै अज्ञान ॥ सुनोजानि सोदोष भुलाय। किमि हमबधै बंधु समुदाय ॥ करुणा नाम दोष अवभूरि नाथ गयो ममहियमें पूरि ॥ ताते ह्वै हतआत्म सुभाव। अरुसंमूढ चेत चित चाव॥ बूझतहौंमैं शिष्यसमान। कहौकृपाकर करिअनुमान ॥ जातेहोइ मोरकल्यान। कहै न ज्ञानवान अज्ञान ॥ लहिमहि दिवकोराज्य महान। नहिंदुरिहैं ममशोक अमान ॥ प्रभुहम लरब न कहत यथार्थ। इमिकहि रहेमौन ह्वैपार्थ॥ दोहा ॥ उभयसैनके मध्यसुनि अर्जुनके येबैन। हँसिबोले करुणायतन केशव राजिवनैन ॥ कत अशोच्यको शोचतुम करत कहाय सहान। अगत प्राणगत प्राणकों नहिंशोचत मतिमान ॥ हमतुम येसि-गरेनहे कबहुंनमानेहु येहु। फेरि न रैहैं सोउमति जानेहु ध्रुव सुनिलेहु ॥ प्राप्तहोत जिमिदेहमें देहीको पनभेद। देहान्तरकी प्राप्तितिमि गुणि पटु लहत न खेद ॥ अवस्थान्त रणमें रहत जैसेसोई जीव। देहांतरहूमें रहत तिमिहि कहत मतिसीव ॥ बिषयेन्द्री को परसहैं सुख दुखको दातार। गमन आगमन तासु नित सहौंताहि नृपबार ॥ तिनसों जेन लहै व्यथा समसुख दुखगंभीर। मोक्षअर्थ सामर्थते पुरुषप्रवीण सुधीर ॥ जोंसतसोंन अभावहै अस तन कबहुं सभाव। लखत अन्त सतअसत को ज्ञाता तत्व सचाव ॥ जासोंसब जगपूर्णहै सोअबिनाशीपर्म। कोऊकबहुं न करिसकै तासु नाश दृढ़मर्म ॥ अव्यय देहीकी सदा नाशमान यह देह। ताते संशय तजिलरौ करि जयसों नवनेह ॥ जानत हंता ताहि जो जेहि हत जानत जौन। तत्व न जानत ते उभै नहिं हतहन्ता तौन ॥ जात न मरत न बीचह्वै थिरि बिनसतहै तात। आत्मा नित्य न देहके हने कबहुं हनि जात ॥ अव्यय आत्महि लखत जो सुनहु पार्थ सो आर्य। मनशै काको घाति किमि हनै काहि केहिकार्य ॥ जिमि बिहाय जीरण बसन नव धारत नर तात। तिमि देही तन जीर्ण तजि नूतन तनमधिजात ॥ छेदि

सकै नहिं शस्त्रयहि पावक सकै न जारि । मारुत सकै न शोखि यहि बोरिसकै नहिं बारि ॥ अविकारी अरु सर्वगत नित्य अदह्य अछेद्य । तासु शोच मतिकरहु गुणि तौन अशोष्य अक्लेद्य ॥ अथ जो जानहु आतमहि नित्यजात म्रियमान। तऊ न शोचब उचितहै गुणि बूझौ मतिमान ॥ जातमात्रको मृत्यु ध्रुव मृतको जन्म अबाध। ऐसे निहचल अर्थसे उचित न शोच अगाध ॥ आदि अन्त अव्यक्त अरु मध्य जासुहै व्यक्त। तिन भूतनके हेतुकी करौ कल्पना व्यक्त ॥ आत्महि कोउ आश्चर्यवत कहत लखत तिमि कोय। सुनत कोउ आश्चर्यवत सुनेहु न बूझत कोय ॥ देही नित्य अवध्यहै सबके तनमधि पार्थ। ताते उचित न शोचिबो यह मत जानि यथार्थ ॥ और सुनो निज धर्मऊते टरिबो नहिं श्रेय। क्षत्रिहि श्रेष्ठ न युद्धते अन्य धर्मको तेय ॥ बिनमांगे यह प्राप्तभो खुलो स्वर्गको द्वार। ते क्षत्री धनि जे लहैं ऐसो युद्धविहार ॥ रोला ॥ जौं न करिहौ पार्थ तुमयह धर्मशुभ संग्राम । लहहुगे तौ पाप करि निज धर्म्म कीर्त्तिहि क्षाम ॥ लोक सिगरो करैगो अपकीर्त्ति तुव मतिमान । महत जनको मरण ते अपकीर्त्ति अधिक अमान ॥ भीति पारथ भगे रणते कहैंगे जनसर्ब । जासु मधिमें श्रेष्ठहौ तुम गुणाहिंगे ते खर्ब ॥ कहहिंगे तव अहित परुष अवाच्य बचन मलान। निन्दि हैं तवबीर्य्य ताते कोन पुरुष महान ॥ हते लहिहौ स्वर्ग जीते भोगिहौ महि भूरि। करौ निश्चय युद्धको करि सर्ब संशय दूरि ॥ दुःख सुख जय अजय लाभ अलाभ में सम भाव। मानि मनमें लरो पाप न होयगो यहि छाव ॥ सांख्य विषयक बुद्धि तुम सों कही यह हे धीर। योग विषयक कहतहैं अब सुनहु सुगुण गँभीर॥ भये जासों युक्त छूटत कर्मबन्धन आसु। ताहि जितनो करो तितनो मिलत है फल तासु ॥ प्रबल बाधक कामनासो रहित सो शुभदान । करत ताको धर्मस्वल्पो महत भयसे त्रान ॥ तत्व निश्चय आत्मिका बुधि एक है हे दक्ष। कामनायुत बुद्धि होति अनेक शाख अश्वक्ष ॥ दोहा ॥ कामात्मन नहिं स्वर्गपर वेद बादरत पर्म। ते सब भोगे स्वर्गपति प्रतिज्ञापित है कर्म ॥ क्रिया बिशेष मईसो गति जन्म कर्म फलदाय । तऊ कहत कर्महि अपर पुष्पित बचन सुनाय ॥ जे रत भोगैश्वर्य में ताते अपहित चेत। ते समाधि मधि नहिंलहत शुद्धि बुद्धि तेहि हेत ॥ रोला ॥ त्रिगुण

बियक वेद शीक्षक सर्व कर्म प्रधान। ऊर्द्ध मति अधगति प्रकाशक तौन हे मतिमान॥ निर्द्वेद निति सत्वस्थह्वै निरसङ्ग ताते तात। होहु अत्रि गुणचित्त जित जिमि अपरगति परभात॥ दोहा॥ कर्म अनेक अनेक बिधि कहे भांति बहु वेद। सोसब पढ़िपढ़ि करि लहत लोक व्यर्थ श्रम खेद॥ यथा सरितते लेतहैं जल निज काज प्रमान। चित्त शुद्ध मिति ताहि तिमि पढ़ें गुणें मतिमान॥ कर्मबिषे अधिकार तुव नहिं फलबिषे कदापि। संग अकर्मिनको तुम्हैं करैं न बसिकहु प्रापि॥ करौ कर्म्म योगस्थह्वै तजि तृष्णा अभिमान। सिद्ध असिद्धे असुख दुख कर्मोयाग समान॥ बुद्धियोगते दूरिहै तृष्णायुत कृतकर्म। ताते फलतजि मोरि मन साधौ कर्म स्वधर्म॥ सुकृत दुकृत तजत सम बुद्धियुक्त जे लोग। ताते साधौ योग तुम कर्म कुशलता योग॥ कर्मज फलको त्याग करि बुद्धियुक्त मतिमान। जन्मबन्धते छुटि लहत उत्तमपर अस्थान॥ मोह कलुष तजि बुद्धि तव ह्वैहै जबहि प्रसन्न। श्रुत यथार्थ बैराग्यमें ह्वै है तबहिं प्रपन्न॥ बहुमत सुनि ह्वै बुद्धि तव थिरिहै लहि सिद्धांत। तब समाधि मधि अचलह्वै लहिहौ योगहि दांत॥ अर्जुनउवाच॥ जेथित प्रज्ञ समाधि रत कहा प्रकाशक तासु। बोलन चलन सुभाव प्रभु तिनके कहिये आसु॥ श्रीभगवानउवाच॥ त्यागि कामना आपुमें करि आत्मा को ध्यान। तोषत आत्मा नंदलहि साथित प्रज्ञ महान॥ सहन शीलता दुःखमें सुखमें निस्पृह बानि। तजे राग भय क्रोधजो सो स्थिति बुद्धि अज्ञानि॥ बिगत नेह सबमें सदा लहि शुभ अशुभ अमन्द। नहिं हर-षत नहिं लहत दुख सो थितप्रज्ञ स्वछन्द॥ शब्दादिक बिषयान सों कच्छपांग सम दक्ष। मोरत जोजन निज मनहिं सो थितप्रज्ञ प्रतक्ष॥ इन्द्रिण को निग्रहकिये मिटत बिषय बिधितात। रहत बासना मूलसों ऊपर निरखत जात॥ सुजतन रतो सुपुरुष को मन इन्द्री हरि लेहि। ते सुधि बुधि जे तिन्हहिं गहि ममपदमें मनदेहि॥ धायेते बिषयानके होत संग तेहि तासु। होत संगते काम फिरि ताते क्रोध प्रकासु॥ होत क्रोधते मोह तब स्मृति भ्रम कहत उदोत। ताते प्रणशति बुद्धिसो नष्ट नसे बुधि होत॥ स्वाधीनाते करत नर बसकरि इन्द्री सर्ब। चरत बिषय बिनु रागते लहत प्रसाद अखर्ब॥ हानि होति सब दुःखकी लहे प्रबोध

प्रसाद। शुचि प्रसन्न चेतस भये थिरत सुबुधि अहलाद ॥ जे अयुक्त श्रवणादिसों तिन्हैंन सुबुधि बिहार। सावधान मन बिनु न तेहि मिलत भावना द्वार ॥ नहिं अभावनिक पुरुषको शान्तिहोति हे पार्थ। शान्ति हीनको सुख कहां सुनि गुणिलेहु यथार्थ ॥ बिषयनमें इन्द्रियन सह मनके कीन्हे गौन। बिनसति प्रज्ञा तिमि यथा नाव बायुबश जौन ॥ ताते बिषय बिहारते जे प्रवीण करि सूर्ति। इन्द्रिय मों रत करति हैं तासु बुद्धि अस्फूर्ति ॥ जामें जागत भूत सब सो योगिहि निशि तात। जामें सोवत भूतसब सोदिन मुनिहि बिभात ॥ कामवारि बिनु कामना जोमुनि जलनिध पाय। हर्षवृद्धि प्रगटत न सो लहत शांति सुखदाय ॥ निस्पृह निर्मम ह्वै चरत जेसब काम बिहाय। लहत शांतिते नहिं लहत जे तिन सहित अबाय ॥ पारथ यह तुमसों कही ब्राह्मी थिति सुखदाय। याहिलहैं जो ताहि नहिं होत मोह सुखदाय ॥ अंतहुं में यहि पै थिरे मिलत ब्रह्म निर्बान। करि प्रयत्न यापै थिरे सोई सुबुधि सयान ॥

अस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेसांख्ययोगवर्णनोनामषष्टतमोऽध्यायः॥६॥

अर्जुनउवाच ॥ दोहा ॥ आत्म बिषयिनी बुद्धि गुरुजोतुव मतिमें इष्ट। घोर कर्म्ममेंमोहिं तो प्रभु कतकरत प्रबिष्ट ॥ कबहुं प्रशंसाकर्मकीकरत आपु यदुराय। कबहुं प्रशंसा ज्ञानकी करतकहत सुखदाय ॥ प्रभु कहि मिश्रित बचन कत मोहितसे हौ मोहिं। निश्चय करिकै एकअब कहिये श्रेयद जोहि ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ कही पूर्व निष्ठा द्विधा ज्ञान योग संचार सांख्यन कहँ योगीनकहँ कर्मयोग व्यवहार ॥ अनारम्भतें कर्मकेहोत न नर निष्कर्म। सर्वत्याग संकल्पते मिलत न सिद्धि सुधर्म ॥ कबहूं कोऊ नहिं रहतकिये बिनाकछुकार्य। प्रकृतिजगुणकरि सबकरत सदाकर्महे आर्य ॥ कर्मेन्द्रिनकहँरोकिजेकरत न तत्व बिचार। रहत लगायेबिषयमें मनसो मिथ्याचार ॥ मनसहइन्द्रिन रोकिजे बिषयनचरत यथेष्ट। कर्मेन्द्रिन करिकरत हैं कर्म योगते श्रेष्ट ॥ हैं अकर्मते कर्मबरकरो कर्मअबिकार। तजे कर्म नहिं सधयगोदेहोंको व्यबहार ॥ बिष्णुप्रीति कृतकर्मजे

बिनु बग्ग सिगरे कर्म । गुणि सो अर्थ अकामह्वै करौ सुकर्म सुधर्म ॥ यज्ञ प्रजन रचि प्रजनसों पूर्व कहो बिधि येहु । ये मख तब कामद इन्हैं करि निज इच्छित लेहु ॥ तर्पित यज्ञ बिधान सों तिर्पित ह्वै सब देव । तुमहिं पोषिहैं कामदै परमश्रेय शुभभेव ॥ सुमन देतहैं नरनकहँ बरषि बारि सब भोग । तेहि अरपे बिनु अन्नभुक जेहैं अघभुक लोग ॥ बैश्वदेव आदिकहि करि शेष खाततें पुण्य । आत्महेतु करि खात जे ते पापात्म अगुण्य ॥ कवित्त ॥ भूत होत अन्नसों ते अन्न परजन्यसों औ परजन्य यज्ञसों औ अज्ञकर्महीं सों होत । कर्महोत वेदसों औ वेदहोत अव्ययसों सर्वमय वेदकरै नित्य यज्ञको उदोत । या बिधि प्रवर्त्तित अनादि चक्र चारु ताके अनुसार गमनमें मूढ़जे करत ओत । भोगि सुख इन्द्रिन को मोदत सदाही ते वै जीवत बिथाही जिये पुंज पापको तनोत ॥ दोहा ॥ आत्मामें रति जासुनित आत्मतृप्त मतिमान । आत्महि लखि संतुष्ट जे तिनहिं कार्य नहिं आन ॥ ताहि कर्मसों अर्थनहिं नहिं अकर्म सों काज । सर्व भूतगणसों न कछु ताकहँ अर्थ समाज ॥ ताते सदा अशक्त रहि करो निरन्तर कर्म । अनाशक्त रहि करि करम परपद लहत सधर्म ॥ निति करि कर्महिते लहो परम सिद्धिजनकादि । लोकसंग्रहौ निरखिकै करिबो उचित न बादि ॥ ब्रह्मज्ञानसो युक्त हे जनकादिक सब भूप । पारथ सुनु ते करत हे बिधिवत कर्म अनूप ॥ यथा आचरत श्रेष्ठजन तथा चरत सब पोत । गुरुजन करत प्रमाणजो तासु अनुग सबहोत ॥ हमैं न कछु कर्त्तव्यनहिंप्राप्तिअप्राप्ति बिचार । तऊलोकहित हेतिनित करतकर्म आचार ॥ जो हमचरहिं न कर्ममें तौसो लखि जनसर्ब । कर्म त्याग करि चरिलहैं बंचित ह्वै गतिखर्ब ॥ यथाशक्तह्वै करतहैं कर्म अपटु अज्ञान । तिमि अशक्तह्वै करतहैं कर्म सकल बिद्वान ॥ जे अज्ञानी कर्मरत तिन्हैं न भेद बताय । कर्म छोंड़िये लाइये छोड़े तासु नशाय ॥ प्रकृतिकार्य इन्द्रियगणसों क्रियमाण सब कर्म । करतामानै आपुकोंमूढ़ न जानैमर्म ॥ जेगुण कर्म बिभागको तत्व लखत अनुमानि । गुण बरतत निज गुण बिषे गुणिते लहत न हानि ॥ प्रकृति गुणनमें जेअपटु करें ममत्व प्रधान तेहि न चलावैं कर्मसो ज्ञानी बूझि निदान ॥ गुणि ममबिषे समर्पि अब सिगरो कर्म यथार्थ । निर्मम अरु निष्काम ह्वै युद्धकरौ हे पार्थ ॥ जोनर

ममयहि मत बिषे तिष्ठत तेऊ तात । शर्म न धर्म अधर्म सब कर्मन तें छुटिजात ॥ जे यहि मतरत होत नहिं गहे असूया गूढ़ । देह निष्ट ह्वै भ्रष्टमति नष्टचेत ते मूढ़ ॥ तुमअंतर्यामी न्यामकहो तुम्हरे मतमें कोऊ काहेनाहींतिष्ठत यह शङ्काबिनहेत कहतहैं ॥ दोहा ॥ पूर्वकृत्यजो सो प्रकृति बिदुषो तेहि अनुसार । चेष्टक तौन अगाधहै तजौ शंकसंचार ॥ यामें पुरुषके स्ववश ताको अभाव होयहे ता हेतकहतहैं ॥ दोहा ॥ प्रति इन्द्रिणके अर्थ कहँ रागद्वेष मयजानि । तिनके बशनहिंहोइ सुनि शास्त्रबचन अनुमानि ॥ बर बिगुणो निजधर्म नहिं परकोसब गुणखानि । मरण श्रेयनिज धर्ममें परमेजय भयदानि ॥ अर्जुनउवाच ॥ बिनु चाहतहूं पुरुष भ्रमि परबश परोसमान । कासों प्रेरित पाप मेंचरत कहो मतिमान ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ भयेरजोगुणसों प्रबलकाम क्रोध सउमंग । गहे अग्निको गुण अथक् अरिहैं तनके संग ॥ जिमि छादित मलसों मुकुर अनल धूमसों होत । तिमि आवृत कामादि सों ज्ञान न करत उदोत ॥ इन्द्री मन कामादिके हैं स्वछन्द अधार । तिनसों ज्ञानहिं रूंधिते मोहत जनहिं सबार ॥ ताते प्रथमहिं इन्द्रियन कहँ बश करि हे दक्ष । जीतो कामहिं ज्ञानको नाशक जौन प्रतक्ष ॥ केवल बाह्येन्द्रियनके जीते कृतार्थना न जानेामन बुद्धिको जीतो चाहिये ताकोहेतु कहतहे ॥ दोहा ॥ इन्द्रीपर बिषयानते तब मन तब बुधि जौन । बुधिकेपर बिज्ञान मय आत्मा आनँद भौन ॥ यहिबिधि बुधिते परे गुणिपर आत्मा निजपक्ष । आत्मामें थिति तासु करि जेहि कामहि हे दक्ष ।

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेकर्मयोगवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः॥७॥

दोहा ॥ पूर्वयोग यह हमकहे रविसों मनुसों सूर । मनु भाषे इक्ष्वाकु सों कर्मयोग यह पूर ॥ यहि क्रमते राजर्षि सब सुनो गुणो सह चोप । बहुत काल बीते सुनो भयो तासु अबलोप ॥ सोई पुरातन योग यह तुमसों कहत सनेम । भक्तसखा मम मोहिं प्रिय हौ तुम पूरित प्रेम ॥ अर्जुनउवाच ॥ प्रथम जन्म रबिको भयो पूर्वभयो तव तात । आदिहि तुम रविसों कहे किमि बूझे यहबात ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ मम तुव बीते जन्मबहु

हम जानत सबतौन। तुम नहिं जानत आपनो जन्म आगमन गौन॥ ईश्वर अज अव्यय जऊ हैं हम तऊ सचाय। निज मायाकरि प्रकृति बश ह्वै इत प्रगटत आय॥ केहि हेतु प्रकट हैं सोऊ कहत हैं॥ दोहा॥ नशत धर्म अधर्म बढ़त जबजब तबतब जानि। सिरजत हम निज आतमहि यह ममनित्य सुबानि॥ रक्षणहित साधूनके खलके नाशनहेत। संस्थापन हित धर्मके जन्म युगनमें लेत॥ दिव्य जन्म अरु कर्मको मम जे लखत निदान। देह त्यागि फिरि देह नहिं पावत ते मतिमान॥ त्यक्त राग भय क्रोध मद ममपदरत तपपूत। हैं पारथ ममभक्त बहुमम आश्रयी अभूत॥ जे जिमि होत प्रसन्न मोहिं तिमि पोषत हम ताहि। सब ममपथ अनुगमितहैं भजतमोहिं तजिकाहि॥ सर्बआदि सुरसर्बको जे सेवत फलचाहि। तेसब ध्यावत हमहिं हम देतशीघ्रफल ताहि॥ चारि बरण हमरचेकरि भेदसहित गुणकर्म। करता अकरता तासुहम सगुण अगुणके धर्म॥ मोहिं न लिम्पत कर्ममोहिं कर्मफलाशा नाहि। इमिजे जानतहैं हमहिं कर्म न बाधत ताहि॥ सिगरे पूर्बमुमुक्षजन किये कर्म यहजानि। ताते करहु सुकर्मतुम वेदउक्त अनुमानि॥ कर्म कहा निष्कर्मयहि होतकबिनहु मोह। कहत तौन जाकेलखे छुटति सृष्टि की छोह॥ कर्म बिकर्म अकर्म ये सदा जानिबेयोग। श्रुती अयुती असंग ये गहन तत्व संयोग॥ कर्मबिषे निष्कर्मता निष्कर्महूमें कर्म। निरखतसो पटु नरनमें कृत शुभकर्म सुधर्म॥ दोहा॥ बिनाकाम संकल्पहै जासुआरम्भ कर्म। तेपण्डित ब्रह्मबिदगहै ज्ञानाग्नि सों कर्म॥ त्यक्त कर्मफल संगनित तृप्तअममता जौन। कर्मनबिषे प्रवृत्तऊ करत कछूनहिं तौन॥ त्यागि परिग्रह जे करें चित्तआतमा युक्त। करि शारीरककर्म ते लहत न किल्विष उक्त॥ तुष्ट लाभ स्वागतलहैं मत्सरहीन अदन्द। सदा शुद्धसम भावकरि कर्म होत नहिं मन्द॥ जेकर्तृत्व ममत्वबिनु ज्ञानावस्थितचेत। बिष्णु प्रीत कृतकर्मको बिनशत कर्म सहेत॥ अथचयोदशयज्ञकहतहैं॥ होता आहुति अग्नि हबि सिगरे ब्रह्मअनूप। करैकर्म इमिजानिते लखैब्रह्मको रूप॥ पूर्बकर्म सुरयज्ञ कोउ करत समेतबिधान। ब्रह्मअग्निमें जीवहबि होमत अपर सुजान॥ होमत कोउ इन्द्रियगणकहँ संयमाग्नि में जानि। होमत कोउ बिषयान कहँ इन्द्रियाग्निमें आनि॥ सब इन्द्रिनके कर्म अरु

प्राणकर्मकहँ कोइ। आत्म सुसंयमयोग सिखिमें होमत धनिसोइ॥ द्रव्य साध्य तपसाध्य अरु योगसाध्य मखकोइ। स्वाध्यायज्ञान मख करतकोउ सुयती सुव्रती सोइ॥ एकादशयज्ञकहतहैं॥ दोहा॥ होमत प्राण अपानमय प्राणबिष आपान। रुंधतप्राण अपानकरि प्रणायाम बिधान॥ द्वादश यज्ञ कहतहैं॥ दोहा॥ होमत प्राणबिषय कोऊ इन्द्रिन नियताहार। हैंतेसिगरे यज्ञकृत बिनुकल्मष व्यवहार॥ अथ साधारण नित्यउचित चयोदशीयज्ञः॥ दोहा॥ बलिवैश्वादिक कृत्यकरि अतिथिन दै लहिशेष। भोजनकृत्य ते यज्ञकृत लहतब्रह्मपद भेष॥ नहिंअयज्ञ सुखसो लहैं याहूपुर को बास। अन्य लोककी कोकहै तिनकहँ इतउतत्रास॥ वेदमुखे बिस्तरितहैं यहिप्रकार बहुयज्ञ। ते कर्मज निष्कर्म नहिं हैं हे पटु सरबज्ञ॥ सर्वयज्ञते श्रेष्ठ है ज्ञान यज्ञहे पार्थ। सर्वयज्ञको परमफल ज्ञान निदान यथार्थ॥ सेवित ह्वै गुणिपात्र सुनि प्रश्नहि करि अनुमान। ज्ञानीशिष्यहि करतहै ज्ञान प्रभाव बिधिदान॥ जाहिजानि नहिंमोह इमिहोइ प्रगट होइ अस्त। मोमें अथवा आपुमें निरखौं भूतसमस्त॥ सबपापिनते पापकृत अधिकौ सोऊ तात। लहैंज्ञान प्लव तौ अगम भवसागर तरिजात॥ यथासमिध के शयल कहँ जारत ज्वलित कृशान। सर्व कर्मकह करत है भस्म तथा गुरुज्ञान। नहींज्ञानके शदृश है कछु पवित्र मुदमौन। योगकर्म साधन करें प्राप्तहोतहै तौन॥ जित इन्द्री तितपरसहित श्रद्धाते लहिज्ञान। सो जन थोरेहि कालमें परपद लहतमहान॥ संशयात्मा अज्ञजे अलगअश्रद्धावान। नशत तासु दोऊदिशा सुनोपार्थ मतिमान॥ कर्म योगसों ज्ञान सों संशयछूटो जासु। तिन्हें न बाधत कर्मते पावत पर्म सुपासु॥ तातेभोअज्ञानते संशै जौन हृदस्थ। ज्ञानखंग सो काढ़ि तेहि कर्म योग कुरुस्वस्थ॥

अस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेश्रीकृष्णार्जुनसंवादे यज्ञयोगोनामअष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

अर्जुनउवाच॥ दोहा॥ कर्मनको सन्यास अरु कर्मयोग यकसाथ। चाहि प्रशंसतहौं कहौ कौनश्रेष्ठ हेनाथ॥ श्रीभगवानउवाच॥ न्यासयोग ये उभय हैं करताश्रय अमन्द। तिनमें योग विशेषहै चितशुचिकर निरद्वन्द॥

कर्मयोग निष्कामकृत जे संन्यासीसोय। ह्वै ज्ञानीते बन्धसों छूटत कल्मष गोइ॥ सांख्यहियोगहि पृथक्करि कहतअपंडित लोग शुद्धउभय में एकफल कोहैनिति संयोग॥ मिलत सांख्यसो स्थानजो कर्मयोग सो देत। सांख्य योगकहँ एककरि पश्यत ज्ञान निकेत॥ दुस्तर कष्टदहैं सुनो बिनायोग संन्यास। कर्म योगयुत पुरुषको पूरत शीघ्रहि आस॥ योगयुक्त बिजितात्म जे नित्य जितेन्द्रिय स्वक्ष। सब भूतात्मक आतमा बन्धहोत नहिंदक्ष॥ कहत सुनत परसत स्वपत चलतदेत लखिलेत। गुणत अकरता आपुकहँ परम तत्वबिद चेत॥ संग त्यागकरि कर्मजे ब्रह्मार्पण करिदेत॥ ताहि न परसत पापजल जलज पत्रकेनेत॥ काइक बाचिक मानसिक इन्द्रिय सों सहधर्म। योगी आत्मा शुद्धहित करत अकामुक कर्म॥ त्यागि कर्म्मफल ब्रह्मबिद पावत नैष्ठिक शान्ति। अपटु फलासी कर्मकृत बन्धितहोत अकान्ति॥ करि अर्पणसब कर्मको योगी जन लहिमोद। करत करावत कछू न करि तन पुरमध्य बिनोद॥ कर्म और कर्तृत्व अरु कर्मन को फलताहि। सिरजत परमातमा न रबि कमल कुमुदवत आहि॥ कबित्त॥ ईश्वर न करत करावत न कछुकर्म तातेनहिं लेतपाप पुण्यकाहू जनको। सूरज प्रकाशित करतपै न गहत है कर्मगुण दोषजो प्रकाशितके तनको। चाहि कछु सिद्धिकर्म करे जो अज्ञानबश ताते गोपी ज्ञान भूलि आपैं आछोपन को। स्वप्नमें ज्यों सार्बभौम छोटेसों सतायो जात मोहिंत्यों लहतदुख जीवदुखी मनको॥ दोहा॥ जेनाशे शुचिज्ञानसो भ्रमकरता अज्ञान। दरशावत तेहिज्ञान सो परमतत्व सुखदान॥ अस्तिब्रह्म निश्चयी जे ब्रह्म परायण दक्ष। लहत अपुनरा वृत्तिते ज्ञानीपूत प्रतक्ष॥ गोब्राह्मण गजश्वान अरुचर्मकार में शुद्ध। समदर्शी जेते पुरुष पंडित परम प्रबुद्ध॥ इतहों जीते स्वर्ग ते निजमें इमि समभाव। सबनें ब्रह्म अदोषसम ते ब्रह्मज्ञ सचाव॥ मुदित होत नहिं पायप्रिय दुखित न अप्रिय पाय। तेज्ञानी थिरबुद्धिपटु अमल अमोह सचाय॥ बिषयस्पर्शज क्षणिकसुख बिषे न रतजे दक्ष। लहत ब्रह्म बिदते अनघ परमानन्द प्रतक्ष॥ बिषयस्पर्शज भोगजो दुखदायक हैं तौन। आदि अन्तवत सोनतेहि बिषे रमत बुधजौन॥ देह पतनलों जोसहै कामक्रोधको बेग। सो योगी सो नितिसुखी तासुकरैको सेग॥

अन्तः सुखवन्तः अरू अन्तर्ज्योति अमन्द । लहत ब्रह्म निर्बाणते लहि शुचि ब्रह्मानन्द ॥ सबके हितरत ब्रह्मविद लहत ब्रह्मनिर्बाण । इतहू-उत बिदितात्मकहँ प्राप्त ब्रह्मनिर्बाण ॥ अथध्यान योगारूढं ॥ दोहा ॥ बाह्यस्पं र्शन बाह्यकरि करिभ्रू मधि चखआम । प्राण अपान समानकरि करत सुप्राणायाम ॥ मन इन्द्रीजित मोक्षपर बिगतेक्षा भय क्रोध । सदामुक्त ते ब्रह्मबिद किये मुक्ति मगशोध ॥ सर्बभूतके सुहितअरु ज्ञाता ईश्वरमाहि । जानि लहतहै शान्तिनर अमल तत्वयह जोहि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभि
गामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलना
थेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिश्री
कृष्णार्जुनसंवादेप्रकृतियोगवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

भगवानउवाच ॥ दोहा ॥ पार्थकर्म जो करतहैं सर्व फलासा भग्नि । संन्यासी योगीसोई नहिंनरग्नि हुतअग्नि ॥ जाहि कहत संन्यास सोइ योग बिचारो पार्थ । आशा नाशकियेबिना योगीनहीं यथार्थ ॥ बांछित योगारूढ़को कारणकर्म अकाम । कारण योगारूढ़को हैसंन्यास ललाम॥ बिषयबिषे अरु कर्ममें जबै न बर्त्तित होइ । करैत्याग संकल्प को योगारूढ़ो सोइ ॥ आपुहिहित रिपुआपनो यहकरि शुद्धबिचार । करैआपुसों आपनो निर्बिघ्निक उद्धार ॥ बन्धु आपनो आपुजे जीते आत्महि आप । अजितचित्त रिपुसम करत आपुहि आप सँताप ॥ जेप्रशान्तजित आतमा सुखदुख जिन्हैंसमान । ते परमात्महिं लखत हैं सबमें सम सुखदान ॥ तृप्तज्ञान बिज्ञानसों अचल जितेन्द्री स्वक्ष । हेम उपलहित शत्रुमें सम मतियोगी दक्ष ॥ एकाकी थिर चित्तबसि निर्जन सुस्थल चाहि । बुध्यात्महि योजित करत शान्ति सिन्धु अवगाहि ॥ दर्भ अजिन अरु बसन में आसनपद्म अमन्द । राखि अमलसम भूमिहवै उदासीन स्वछन्द ॥ तहँ करिकै एकाग्रमन जितचित इन्द्रिय वृत्ति । साधैयोग सयुगुति करि बाह्य क्रिया निरवृत्ति ॥ समकरिकै शिरग्रीव कटि रहिकै अचल सुजान । अवलोकै नाशाग्रइमि साधैयोग महान ॥ संचितात्म निर्भय व्रती यती मनहिं संयम्य । चित्तलाय मोमेंसुबुधि साधैयोग अगम्य ॥ योजितकरि यहिभांतिमन आत्मामें बहुकाल । लहतपरम निर्बाणपद योगीलहि मुद

माल ॥ असन निरसन शयनसो करै न अतिशय जानि । युक्त अहार बिहारते होतदुखकी हानि ॥ ह्वैबिशेपते अचलमन आत्मामें लगिजात । जबतब निस्पृह होयकै योगीपरम बिभात ॥ निहचल दीपत भांतिजेहि दीपक निर्वातस्थ । तिमि आत्मामें लायमन बिलसत योगीस्वस्थ ॥ ह्वै निरुद्ध इमि योगसों पेखत आत्महि यत्र । रहत तितेही मनसदा फिरि नहिंतोपत अत्र ॥ बुद्धि बाह्यतहँ परमसुख अनघ अगोचर पाय । चलत न फिरिमत तत्वसों रहतसदा लपटाय ॥ जेहिलहि दूजोलाभ नहिं मानत अधिक सुजान । टरत न तासोंलहेहु दुख आगान्तुक बलवान ॥ सब दुखके संयोगकी है बियोगसों योग । बसकरि इन्द्रिय मनहिं से शतधा करिबेयोग ॥ धीरे धीरे सुमतिसो करि प्रवृति धरिधीर । आत्मामें थिरमनहिं करि चिन्तहि करै न तीर ॥ जहँजहँजावै चपलमन तहँ तहँ सोंगहि ल्याय । दृढ़करि आत्मा अमलमें देवैताहि लगाय ॥ शान्त मनस योगी लहतउत्तम सुखअभिराम । तासोंते अतिसुख लहत ब्रह्मस्पर्श सुनाम ॥ आत्महि सबभूतस्थअरु आत्मामें सबभूत । लखतयोग युक्तात्मा समदरशीमजबूत ॥ सबथरपै लखिमोहिंजो मोमेंपेखत सर्ब । ताहि न हमभूलत कबहुं हमहिं न तौन अखर्ब ॥ लखत मोहिं सर्बस्थजो मतअद्वैत उदोत । कर्म अकर्म चहोकरत मोसोंनहिं च्युतहोत ॥ सुखदुख व्यापे आपुपै जिमिजानेमतिमान । सबमेंजानैभांतितिहिसोयोगीनाहं आन ॥ अर्जुन उवाच ॥ कहेयोग तुमतासु नहिं थिरतासिद्ध लखात । गहन चपल मनको गहन बायु गहनते तात ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ पार्थ असंशय चपल मनको गहिबो दुःसाध्य । पर बैराग्य अभ्याससों है क्रमसों श्रमसाध्य ॥ अजित चित्त जनकहँ सदा है दुष्प्राप्य सुयोग । प्राप्तहोत जित चितकहँ सिद्ध सुयोग प्रयोग ॥ अर्जुन उवाच ॥ श्रद्धाते चरि कर्मतजि चरतयोग हित जानि । तहँसों बिचलत जासुमन लहै कौनते हानि ॥ शाखा चूक्यो कपिसदृश छिन्न अभ्रसम तौन । उभय भ्रष्ट बिनसत कहा कहौ कृष्ण सत जौन ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ सुनहु पार्थ इत उत कहूं तासु नाश नहिं होत । सदा चार रत कहँ न कहु दुर्गति करत उदोत ॥ पुण्यकृतन को लोक लहि बसि बहुकाल सचाय । शुचि श्रीमन्तन के गृहे जनमत है ते आय ॥ धीमत योगिनके कुले अथवा प्रगटत आय । जगमें ऐसो जन्महै दुर्लभ

शुचि सुखदाय ॥ पूर्वजन्म की बुद्धिको होत तहां संयोग। करत यतन तिहि सिद्धहित तजि विषयेन्द्रिय भोग ॥ ताही पूर्वाभ्यास सों करत योग व्यापार। ज्ञानेच्छित जन थिरत तरि कर्मकाण्ड व्यवहार ॥ जन्मांतरसों शुद्धचरि सजत न योग बिधान। योगी लहि उतकृष्ट गति ध्यावत ब्रह्म महान ॥ तपकृत सों शास्त्राज्ञसों कर्मन सों हे पार्थ। अधिक होत योगी करौ ताते योग यथार्थ ॥ सब योगिनहूंते सुनो जेजन शुचि मम भक्त। तेजन मोकहँ परमप्रिय जे न अनत कहुंशक्त ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेआत्मसंयमयोगोनामदशमोऽध्यायः ॥१०॥

श्रीभगवानउवाच ॥ दोहा ॥ मोमें सदा अशक्त मम आश्रय निति करियोग। जानतयथा समग्र मम सुनिये सो उतयोग ॥ चारु ज्ञान बिज्ञान सों तुमसों कहे अशेष। जाहि जानि नहिं जानिबे को कछु और बिशेष ॥ सहसन नरमें एक कोउ करत योग अभ्यास। तिन सहसनमें एककोउ जानत तत्व प्रकाश ॥ अनल अनिल महि बारि नभ मन बुधि अरु अहँकार। आठ भेद मम प्रकृतिके क्षेत्रात्मक व्यवहार ॥ क्षेत्रज्ञात्मक अन्य मम प्रकृति श्रेष्ठ बिख्यात। जीव भूतजो जगतको धारण करता तात॥ सर्व भूतकी योनि ये सुनो पार्थ मतिमान। हैं हम सिगरे जगतकी उतपति लय अस्थान ॥ नहिं हमसों कछु पृथक् तर है हे पारथ आन। मोमें पोहित सर्वजग गुणमें मुनिगण मान ॥ रस जलमें शशि सूरमें है मम प्रभा उदार। वेद गगनमें प्रणव धुनि नरमें बल व्यवहार ॥ पुण्य गन्ध हम भूमिमें रविमें तेज महान। जीवन सिगरे भूतमें तपकृत में तपज्ञान॥ सर्व भूतके बीज हम बुद्धिमानमें बुद्धि। तेजस्विनमें तेज हम सुनो धनंजय लुब्धि ॥ हैं हम बल बलवानमें बरजि राग अरु काम। अबिरुद्ध धर्म सबभूत में हैं हम अति अभिराम ॥ जे त्रिगुणात्मक भावहैं ते सब हमसों जात। मांमें ते तिनमें न हम इमि ध्रुव जानो तात ॥ मोहिं त्रिगुण के भावसों सब जग रहो भुलाय। मोहिं न जानत त्रिगुणसों युक्त सुनो शुचिकाय ॥ दैवी दुस्तर गुणमयी मम माया हे तात। मोहीमें रत होत

जे ते ताकहँ तरिजात ॥ दुष्कृत मूढ़ नराधम जेहि मम बिषे अभाव। माया अपकृत ज्ञानते गहैं आसुरी भाव ॥ ज्ञानार्थी अरु आर्त अरु अर्थार्थी अभिराम। अरु ज्ञानीभये चारिजन भजत हमहिं सब याम ॥ तिनमें ज्ञानी सरसहै एक भक्ति नित युक्त। ज्ञानी मोहिं अत्यन्त प्रिय हम ज्ञानिहि सुप्रशक्त ॥ है चारौं उत्कृष्टते दानी मम आत्मैव। युक्तात्मा सो मोहिंमें अस्थिन रहत सदैव ॥ ज्ञानी सो बहु जन्ममें होत प्राप्त मोहिं पार्थ। भये पूर्णता ज्ञानकी तोको कहत यथार्थ ॥ बासुदेव प्रभु सर्ब है इमि जानतहै जौन। प्राप्त होतहै सोय मोहिं सोईहै मतिभौन ॥ चिन्ति कामना अन्नजे ध्यावत प्रियकरि जाहि। बूझि भाव तत्रस्थ हम देत तौन॥ फल ताहि ॥ नाशमान फल तौनसो तिन अज्ञनको तात। जे जेहि पूजत प्रेमसों तेनर तिनमें जात ॥ अव्यय अरु अव्यक्त हम तिन कहँ सबहि समान। व्यक्तमानते लखतहैं जे अतिशै अज्ञान ॥ सबकहँ नहिंहैं प्रगट हम माया छादित रूप। मूढ़ न जानन मोहिं अज अव्यय अमल अनूप॥ जानै हम सब भूतको तीनिकाल व्याख्यान। नहिं कोउ जानत ममकछू सुनहु पार्थ मतिमान ॥ द्वंदद्वेष अस्नेह अरु काम क्रोध बश सर्ब। जन्तु मोहिं यहि सृष्टिमें गुणत न खर्ब अखर्ब ॥ जेहि सुपुण्यकृतके भये निर्गत के सिगरे पाप। द्वन्दराग निर्मुक्त ते भजत मोहिं निस्ताप ॥ जन्ममरण के मोक्षहित मम आश्रित मतिमान। निरखतहैं ते ब्रह्मविद अध्यात्मक धरि ध्यान ॥ मोहिं लखत अधि भूतजे अधिसुदैव अधि यज्ञ। होहि प्राण यात्रा समय ते सुजान तत्वज्ञ ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्वाम्नाभिगामि नाम्नोबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकवि नाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुन संवादे ज्ञानविज्ञानवर्णनोनामैकादशोऽध्यायः॥ ११ ॥

अर्जुनउवाच ॥ दोहा ॥ प्रभुको ब्रह्मअध्यात्मको कोहै कर्म महान। अधि भूत सु को अधिदैवको को अधियज्ञ सुजान ॥ केहिबिधि प्राण पयान क्षण स्मरणीय हौ आर्य। कहौ कृपाकरि कृष्णप्रभु ज्ञापक कारण कार्य॥

श्रीभगवानउवाच ॥ अक्षर ब्रह्म स्वभाव जो सो अध्यात्म सुभाग। भूत भाव उदभव करण कर्म द्रव्यको त्याग ॥ अधिभूत सु जो भूतहै नाशमान

स्वच्छन्द। ग्राहक जो शब्दादिको सो अधिदैव अद्वन्द ॥ हैं देहिन के देहमें हम अधियज्ञ महान। हैं अभिमानी यज्ञके बिष्णु वेदको न्यान॥ अन्तकालमें ममस्मर्ण करि प्रस्थित तजि देह। सो पावत मम भाव ध्रुव करि ममपदसों नेह ॥ जेहि जेहि भावहि स्मरतहैं तन तजि करत पयान। ते तेहि भावहि लहतहैं भये बासनावान ॥ ताते सबक्षण स्मरहु मोहिं करहु युद्ध मतिमान। मोमें अरपत बुद्धि मन ते मोहिं प्रापत न्यान॥ योगाभ्यास सुयुक्तिजे आनहिं अनुगत नाहि। परम पुरुष पै जात ते चिन्ति निरन्तर ताहि ॥ कबि पुराण न्यामक स्मरहु तनुते तनुधातार। अचिन्त्यरूप रबि बरण कृत तमते परे बिहार ॥ भक्त अचलमन योग बल सो मरि भूमधि प्रान। परम पुरुषकहँ लहतहैं प्राणहिं करत पयान॥ बदत वेदविद जाहि जेहि मधि मुनि होतप्रवृत्त। सोपद अक्षर परम शुचि कहियतु करण निवृत्त ॥ सब द्वारन संयमित करि हियसे मनहिं निरोधि। प्राण करि सुथिर मूर्द्धपै योगधारणा शोधि ॥ ब्रह्मभूत ओंकार कह उचरि सुमिरि मोहिं तात। तनतजि करत पयान जो सो परपद मधिजात ॥ जो अनन्य चेता सदा सुमिरत मोहिं न आन। तेहि योगी कह सुलभ हम पारथ सुनो निदान ॥ हमहिं पाय फिरि नहिं लहत जनम सकल दुखभौन। परम सिद्धिगति रौनतहँ होत महात्मा तौन ॥ ब्रह्मलोक पर्य्यन्तहै पुनरावृत्ति निदान। साश्वत मोपद प्राप्तको फेरि न जन्म बिधान ॥ सहसचौकड़ी युगनलौं बिधिको दिन परमान। ताही मिति रजनी महा सुनो पार्थ मतिमान ॥ जिते ब्यक्त अब्यक्त ते प्रभवत है दिन पाय। रात्री लहि पुनि सब बिनसि मिलत प्रकृतिमें जाय ॥ तेई दिन लहि प्रगट फिरि निशि लहि नशत समस्त। प्रगटि बिनशि भोगत रहत निजकृत मलिन प्रशस्त ॥ है अब्यक्त सो परे सो अन्या ब्यक्तस्थान। जोसब भूतनके नशे नशत न सुनहु सुजान॥ अक्षर अरु अब्यक्त इति उक्ति परम गति जौन। निवृतहोत नहि जाहि लहि परम धाम ममतौन॥ लभ्य अनन्य सुभक्तितेसो पर पुरुष महान। सर्ब जासु अन्तस्थ सब जासों ब्याप्त सयान ॥ आगम और निरागमन पावत है मतिमान। करि पयान जेहि कालमें कहियत तौन बिधान ॥ अर्च्यभिमानी देव अरु दिन अभिमानी स्वक्ष। शुक्लपक्ष अभिमान अरु सुनो पार्थ बरदक्ष ॥ उतरायण बपु मास

षट तिहि अभिमानी देव। तिन्हैं प्राप्तह्वै जात जो सुनो तासु तुम भेव॥ होत मोक्षको प्राप्त सो होत न आगम तास। अक्षर अव्यय ताहि लहि कीन्हे रहत प्रकास॥ धूमाभिमानी देव अरु रात्र्यभिमानी जौन। कृष्ण पक्ष अभिमानि जो है देवसुनौ बलभौन॥ दक्षिणायन बपु मासषट तिहि अभिमानी देव। अरु शशि जोतिहि पाय जे जात तासु सुनु भेव स्वर्गहि लहिफल भोगि सब फेरि निवृत्तसो होत। जानत यह वृत्तान्त हैं जिनके ज्ञानउदोत॥ अर्चिरादि धूमादिइन द्वैपथह्वै सबजात। लहत अनावृति आवृतिहि क्रमसों जानेहुतात॥ इन मार्गनको जानि फलयोगी कर अनुमान। रहतअनालश जतनमें होहु सँयोगसुजान॥ वेदयज्ञ तप दानमेंजितनो फलसुखदान। तिन्हैंअतिक्रम करि लहत योगी परअस्थान॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्वाम्याभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविनाकृतेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणि श्रीकृष्णार्जुन संवादेपुरुषोत्तमयोगवर्णनोनामद्वादशोध्यायः॥ १२॥

श्रीभगवानउवाच॥ दोहा॥ सहित ज्ञानबिज्ञान अरु परमगुह्य ब्याख्यान। कहियतु हैं जेहि जानि कै मुक्तहोत मतिमान॥ बिद्यन को अरु गुह्य को राजा उत्तम पूत। धर्मजासु प्रत्यक्ष फल अव्यय सुसुख अकूत॥ जे जनहैं यहिधर्मके शुचि श्रद्धासों हीन। मोमें होत न प्राप्तते भ्रमो करतहैं दीन॥ कांचन अरु कटकादि सम सबजग हमसों ब्याप्त। हैं ममस्थ सब भूत सुनु भूतस्थन हमआप्त॥ नहिँ ममस्थहै भूतहे निरखे निर्गुणभाव। भूत भृतौ भूपस्थ नहिं भूत वृद्ध करछाव॥ सब थरगत मारुत यथा है नभस्थ हेतात। तिमि ममस्थ सबभूतहैं ब्रह्मबीज बिख्यात॥ सर्ब भूत कल्पान्त में ममसुप्रकृतिमें लीन। होततिन्हैं कल्पादि में सिरजि करत हम पीन॥ ह्वै निज प्रकृताधीन जग रचियतु बारम्बार। मोहिं न बाधत कर्मकृत अरत अराग बिहार॥ मैंजो नाथ प्रवर्तक सुतेहिसों प्रकृति पुरानि। विरचति जगतेहि हेतु जगसावृतिलीजै जानि॥ जेभावज्ञ न मूढ़ ते भ्रमि माया भ्रम माहिं। गहे मानुषी देहमोहिँ ईश्वरजानत नाहिं॥ व्यर्थाशा अरु कर्मते व्यर्थज्ञान अरुचेत। गहेराक्षसी आसुरी प्रकृति तमस रजहेत॥ जामेंहिंसा होय बहु प्रकृति राक्षसी तौन। जामें होय

मदादि बहु सो आसुरि मतिभौन ॥ जेमहान दैवीप्रकृति अश्रित सत्वप्रधान। ते अनन्यमन भजहि मोहिं गुणि अव्यय मतिमान॥भजन स्वरूप कहियतुहैं॥दोहा॥ सन्तत कीर्तत मोहिं तेदृढ़व्रत मनजित स्वक्ष। प्रणमत नवधा भक्तियुत गहि उपासना दक्ष ॥ ज्ञानीभजत अभेदगुणि गुणि कोउसेवक स्वामि। भजत कोऊगुणि सर्बगत कोउत्रिमूर्त्तिको गामि॥ हम मखस्वाहा स्वाधा हबि अग्निआज्य द्विजमंत्र। हम माता धाता पिता बेद्य प्रणव अरुतत्र ॥ भर्तागति साक्षी शरण सुहित निवास निधान। प्रभव प्रलय प्रभुबीज हमहैं अव्यय मतिमान ॥ हम बरषत हमतपत हम करत अवर्षणरूप। हम अमृत्यु हम मृत्यु हम सत अरुअसत अनूप ॥ जेसुयज्ञकरि इष्टि मोहिं चहैं स्वर्ग में ओक। पाय पुण्य फलते बसत सुर नायकके लोक ॥ भोगि स्वर्गगत पुण्यहवै पतत भूमिपैफेरि। बेद निष्ठ कामीइबिधि लहत गतागत हेरि ॥ जेअनन्य चितभक्त मम भजत मोहिंयतु भक्ति। तिनके रहति अधीन नित सर्बयोगकी पंक्ति ॥ औरहि पूजत भक्तयुतजेऊ तेऊभक्त। मोही पूजतपार्थपै अबिधि पूरबकशक्त ॥ हमहीहैं सब यज्ञके भोक्ता ईश महान। मोहिंन जानत तत्वसों ताते तपत नदान ॥ जेध्यावत हैं जिनहिते अवशि तासुढ़िगजात। जेध्यावतहैं मोहिंते ममढ़िग आवततात ॥ पत्र पुष्पफलतोयजो अरपत हमहिं सभक्ति। हवै प्रसन्न हमलेतसो तस्या परि अनुरक्ति ॥ अशन हवनदानादिजो करहुकर्म व्यापार। करौममार्पण तौनसब यह मत मंजुलसार ॥ इमिसंन्यास सुयोगसो युक्तात्मा ते तात। कर्मबन्ध शुभअशुभफल सोकुटिममढ़िगजात ॥ हम सबमें समभाव मोहिं प्रिय नहिंकोइ। ढ़िगवर्त्ती ऐकीअगिनि शीतदेतिहै खोइ ॥ यदपिदुराचारी महत मोहिं भजै जोसोउ। साधुमानिबेयोग तेहिकहौ असाधुनकोउ॥ शीघ्र होत धरमात्मा लहत शांतिसोदास। ध्रुव तुम जानो नशत नहिं ममजन लहत सुपास ॥ बैश्य शूद्र तियआदिदै पापयोनि है जेउ। ममआश्रित हवै परमगति ध्रुवपावत हैंतेउ॥ मम सुभक्त जो पुण्यजन अकथनीय हैंतौन। लोकअनित्य असुखहि लहि मोहिं भजै पटुतौन ॥ ममपूजक ममभक्त जे मोमैरत मतिमान। लहत परमपद तेसुबुधि पाप शान्ति बिज्ञान ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिभाषायांश्रीकृष्णार्जुनसंवादेराजबिद्यागुह्यवर्णनोनामत्रयोदशोऽध्याय ॥ १३ ॥

श्रीभगवानउवाच ॥ दोहा ॥ तव हितार्थ फिरिकहतहौं बचनपरममुददान। सुनो धनंजय तौनतुम तासु पूर्ण प्रियमान ॥ नहिं जानत ऋषि सुमन गण मम सुप्रभव हेतात। सबऋषिगण अरु सुमन के हमहैं आदिबिभात ॥ अज अव्यय अरु लोकको इश्वर जानत मोहि। जेतेसब मानवनमें असभ्मूढ़ बिधिजोहि ॥ असम्मोह बुधिज्ञान सम क्षमा सत्य दम दान। सुख दुख भाव अभाव भय अभय अहिंसामान ॥ समता तपयश अयश अरु तुष्टिभाव जेहोत। पृथक् पृथक् ते भूतमें मोसों करत उदोत ॥ सनकादिक ऋषिचारि अरु भृगुआदिक ऋषिसात। चौदह मनु मानस सम तिनसों सबजगजात ॥ मम बिभूति अरुयोग यह लखत तत्वसों जौन। निस्संदेह सुयोग तेयुक्तहोतहै तौन ॥ हमसबके हैं प्रभव अरुन्यामकसुनो यथार्थ। भावयुक्त बुधमानि इमि भजत मोहिंहे पार्थ ॥ जासु चित्तमें हम बसत शतधा ते मतिमान। कथत मोहिं मोमें रमत तोषत मोसों न्यान ॥ तिन भक्तनकहँ देतहम बुद्धि योगसो तात। जातेमोढिग प्राप्तिते अमल अनन्य बिभात ॥ नित्य प्रकाशित चारु अति ज्ञानदीपसों तासु। हमनाशत अज्ञानतम करि अनुकम्पा आसु ॥ अर्जुनउवाच ॥ परब्रह्म परधाम अज अव्यय पुरुष पुरान। आदिदेव तुमकहँ चहत नारदादि मतिमान ॥ आपहु कह्यो सो सर्बसति नहिसंशयहै नेक। जानतहैं न स्वरूप तब सुर अरु असुर अनेक ॥ आपुहि अपने रूपको जानतहौ तुम नाथ। याते मोको जानिकै निज चरणन के साथ ॥ फिरि अशेष ते कहौ प्रभु निजबिभूति ब्याख्यान। जासों ब्यापि समस्तजग बर्त्तितहो मतिमान ॥ किमिजानै केहि भावमें चिन्त्यमान तुमतात। बिस्तरसों सो कहहु प्रभु सुनि मो मन न अघात ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ आपनि दिव्य बिभूति हमपारथ तुमसों भन्त। कहि प्रधानता तासुनहिं बिस्तरसों मम अन्त ॥ सब भूताशय आतमा हैं हम हे मतिमान। आदि मध्य अरु अन्त हम सबके सुनहु निदान ॥ आदित्यन में बिष्णु रबि ज्योतिमान में भात। शशि नक्षत्र में मरुतगण में मरीचि हमतात ॥ कविन ॥ वेदन में सामवेद देवन में बासव औ इन्द्रिन में मनचेत भूतनमें हम हैं। रुद्रन में शङ्कर औ यक्षण में धनपति बसुन में अग्नि सिखरी में अरुहमहैं ॥ गुरू सुपुरोधनमें सिन्धु सरितागण में सब सेनापतिन में कार्त्तिकेय हमहैं। ऋषिन

में भृगुवर बाणी में एकाक्षर यज्ञन में जप तरु में अश्वस्थ हम हैं॥ ऋषिनमेंनारदहिमालयथावरनमें औसिगरे गन्धर्बन में हम चित्ररथहैं। सिद्धनमें कपिल औ उच्चैश्रवा अश्वनमें गजनमें सुरगज बोरज अकथहैं। अस्त्रनमें बज्रकाम धेनु धेनुगणमें औसर्पनमें बासुकिप्रजन मनमथ हैं। नरनमें नरनाहसब शस्त्रधारिण में ध्यायबेके योगनमें हम दाशरथहैं॥ दोहा॥ दैतनमें प्रहलाद हमगणक गणनमेंकाल। मृगगणमें मृगराजहम गरुड़ खगनमेंआल॥ गवन कृतनमें पवनहम मकर भखनमेंतात। सुर सरिहम स्रोतसन में मुनिमें ब्यास बिभात॥ पित्रन में हम अर्यमा हम नागनमें शेष। नियम कृतनमें यम बरुण जलचरमें सबिशेष॥ कबित॥ आदिअन्त मध्यहमसबरूपवाननमेंअध्यात्म बिद्यासबबिद्यनमेंहमख्यात। हमबाद बकतनमें अक्षरणिमें अकारहम हेंअक्षय कालहम मृत्युअवदात। द्वन्दहैसमासनमेंहमकाम फलप्रदहमहींवृहतसामसामवेदमेंबिभात। हम ऐश्वर्यहम स्मृतिमेधा धृति क्षमा कीर्तिबाणी श्रीहैसब नारिनमें हमतात॥ छन्दनमें गायत्री मासनमें मार्गशीर्ष तेजतेजवानन मेंऋतुनमें ऋतुराज। छलनमें जूवाव्यवसायन में जय हम तेजनमेंतेजवान सत्वनमें सत्वसाज। वृष्णिनमें बासुदेव पाण्डवमें पारथऔ दण्ड दण्डकृतनमें कबिनमें कबिराज। नीतिजीति चाहकमें मौनगुह्य मंत्रनमें ज्ञानज्ञानवाननमें राजनि में साज॥ दोहा॥ सर्बभूतको बीजजो सोहमहैं हेपार्थ। हमेंबिना जो भूतसो नहिंकछु सुनहु यथार्थ॥ हैनदिब्य ममभूतको अन्तसुनो हेआर्य। एकदेशसों एकहेनिज बिभूति कृतकार्य॥ ज्ञान बुद्धिबल रूपधन बिद्या आदि समस्त। कीउतङ्कता जहँलखौ तहँममभूत प्रशस्त॥ ज्ञानवानतुम हौकहा कहैअधिक हेतात। एकअंशसों सर्बजग मेंहम ब्यापि बिभात॥

स्वतिथीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कबिनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंबादेविभूतियोगवर्णनोनामचतुर्दशोऽध्यायः॥ १४॥

अर्जुनउवाच॥ दोहा॥ नाथकृपाकरि जोकह्यो परमगुह्य ब्याख्यान। सो सुनिभो ममभ्रम शमन दमन मोहअज्ञान॥ भूतनको भवनाश कृतसुनो सबिस्तर तात। लखोचहत तवरूप प्रभुजो परपरम बिभात॥ जौ तेहि

लखिजेयोग मे हिंजानौ तत्वनिकेत। तौदरशावहु रूपनिज सानँदकृपा समेत ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ लखहुपार्थ ममरूपसो शतसहस्र सहभेश। बिधि गिरिसागर आदिजग तनमेंलखौ अशेश ॥ नहिंलखि सकिहौ पार्थयहि चखतेसी ममरूप। दिव्यचक्षुहम देतहैं निरखौ प्रभाअनूप ॥ इमि कहि दरशावतभये प्रभु परमेश्वररूप। चखमुख पगभुज अनगिने अदभुतदरश अनूप ॥ दिव्यगन्ध स्त्रकआभरण आयुधधरे अनन्त। सर्बआचरणसों मये केशव कमलाकन्त ॥ एककालमें सहसरबि दिपैंगगनपै आय। तऊनतहँ प्रभुकी प्रभा कीसमताकहि जाय ॥ पृथक् पृथक् तहँसर्बजग प्रभुकेतन मधिदेखि। करिप्रणाम पारथकहे बिस्मयसों हियभेखि ॥ प्रभु निरख्यों तुवदेहमें सर्बभूत समुदाय। शिवबिरंचि सुरसिद्ध ऋषि उरग बिहँग खगराय ॥ निरखिपरे अनगित उदरचख मुख ऊरू हाथ। आदि अन्त अरु मध्यतुव लखि न परत हेनाथ ॥ चारुकिरीटी अरुगदी चक्रीबर्चसधाम। लखततुम्हें ज्वलनार्क सम दुर निरीक्षअभिराम ॥ वेदितव्य अक्षरपरम तुमप्रभु बिश्वनिधान। साश्वत रक्षकधर्मके पुरुषोत्तम भगवान ॥ शशि रबिनेत्र अनन्त प्रभु नित्यअनादि अनन्त। दीप्तहुतासन बदनजग लहि तुवतेज तपन्त ॥ नभमहि सबदिशिमें भये पूरित एकअनूप। ब्यथितभयो त्रैलोकप्रभु लखितुम उग्रस्वरूप ॥ रोला ॥ कितेअसुर समूहशरणे होततब तजिदर्प। कितेप्रणत सिद्ध ऋषिगण करत अस्तुतिअर्प ॥ रुद्रबसु गन्धर्ब आश्विनि साध्यमारुत यक्ष। पितरसुर साचरज निरखतकरे अचपलअक्ष ॥ उग्ररूप निरेखि यहभे ब्यथित सिगरेलोक। ब्यथित ह्वैहम सधृतिनहिं लहिदीप्तिको अवलोक ॥ दशन बिकट कराल कालानल सदृश तवआस्य। देखिदिग भ्रमभयो मोहिं प्रसीद लखि मम दास्य ॥ पुत्रसब धृतराष्ट्रके सहसैन नृपति समूह। औरजेमम संगकेमहिपाल अरु भटजूह ॥ सबैंतेतव मुखेप्रविशत सलभ अगिनि समान। परेदशनान्तरनि चूर्णित उत्तमांग महान ॥ बेगसों जल नदिनको जिमि उदधिमधि चलिजात। तथा प्रविशत सकलये तुवबदनमें हेतात ॥ दीहरसना करत चालनजगत ग्रसत समान। करेप्रतपित लोक त्रय करि तेजपरम प्रधान ॥ कहौ प्रभु करिकृपाको तुम उग्ररूप अमान। चहत जान्यो भेदतुव नहिं लहत करि अनुमान ॥ श्रीभगवानउच ॥ लोकक्षय कृतकाल परम प्रबुद्ध हम पनवान

बिनापण्डव सर्वसुभटन करब शीघ्र अप्रान ॥ लरौतातें लहौशत्रुन जीति सुयश अमन्द। हतेहमसों सकलयेतुव ब्याजमात्र स्वछन्द ॥ संजयउवाच ॥ कृष्णकेये बचन सुनिकै पार्थयुग करजोरि। कम्पिगदगद ह्वैरोमांचित कहेनौमि बहोरि ॥ सत्यप्रभु तुवप्रकृतिसों जगलहत त्रयविधि जौन। बिश्वतुमसों व्याप्त तुम परधाम आनँद भौन ॥ आदिकर्त्ता आपु कर्त्ताके अनादि अनंत। अग्निरबि शशि दिशप लोकप तुमहिं श्रुति स्मृतिभंत ॥ बिश्वकरता बिश्वपालक बिश्वमें भगवान। बार बार प्रणाम सब दिशि सोंतुम्हहिं मनमान। क्षमेहुप्रभु मम अज्ञताके भावसिगरे तौन। कृष्ण हेहेसखा यादव कहतहैं हमजौन ॥ दोहा ॥ यहतुव महिमा महततेहि बिनु जानेहेनाथ। वाप्रमाद वाप्रेमसों वासहास रहिसाथ ॥ शयन अहार बिहारमें अनुचित भाष्यो जौन। पिता पुत्रको क्षमततिमि क्षमेहुकृपा करि तौन ॥ लखेअगोचर रूपयह व्यथवतहैं मोहिं त्रास। चारुसउम्य स्वरूप गहिदीजै नाथसुपास ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ममप्रसन्नता ते लखेहु तुममरूप सगौर। जपतप मख दानादिकरि लख्योन कबहूं और ॥ तजौ भीति अब लखहुमम पूर्वस्वरूपउदार। इमिकहि दरशावत भये रूपमदन मदगार॥ कहेपार्थ यहरूपलखि मोसप्रकृति ममचेत। सुनिप्रसन्नह्वैकहतभे केशव कृपानिकेत ॥ ममस्वरूप दुरदर्शहे लखेहु पार्थ तुम ताहि। लखिबे को बांछित रहत नित्य सुमन गण चाहि ॥ वेद यज्ञ तप दान सों नहिं स्वरूप सों दृश्य। हैं शुचि भक्ति अनन्य सों ज्ञातदृश्य अस्पृश्य ॥ नित्य समार्पण कर्म कृत परम भक्त ममजौन। बर्जित संग ममत्व बिनु प्राप्त होत मोहिंतौन ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथकविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेविश्वरूपदर्शनवर्णनोनामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

अर्जुनउवाच दोहा ॥ सगुण स्वरूपी तुमहिंजे ध्यावत हेसर्वज्ञ। ध्यावत निर्गुण जे तिनमधि प्रभुके योगज्ञ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ नित्यलग्न श्रद्धा सहित मोमे मन आवेशि। ध्यावत जे मम भक्तते हैं मोहिंयुक्त बिशेशि ॥ ध्यावत इन्द्रिन नियमि जे अगुण अचिंत्य स्वरूप। प्राप्तहोत मोमें तेऊ

पाय सुसिद्धि अनूप ॥ पै अचिंत्य अव्यक्त में करि अशक्त नितिचेत। ल हत क्लेश अतिही सुनो पारथ बुद्धिनिकेत ॥ जेमम बिषे समर्पि कै सर्व कर्म कृतजात। मोहिंजपत हमतासुहें उद्धरता हेतात ॥ मोमें मनथापित करें बुद्धि प्रवेशनकार्य। देह त्यागके अन्तसों निवसत मोमें आर्य ॥ जो मोमें नहिं करिसकै थिरचंचल मनताहि। तौअभ्यास सुयोगसों करैआप्त मोहिं चाहि ॥ जो अभ्यास में अक्षमतौ तौकरिये ममहितकर्म। ममहि- त करिकै कर्मनर लहत सिद्धि तजिभर्म ॥ ममहित कर्मन करिसकै जो मम आश्रित अक्ष। कर्मन केफल पक्षको करैत्यागतौ दक्ष ॥ श्रेय ज्ञान अभ्यास सों ध्यान ज्ञानसों श्रेय। ताहूसों फल त्याग अरु तासों शांति अमेय ॥ निर्द्वेषी शुचि कारुणिक निर्मम योगी तुष्ट। मनबुधि मोमें अर्पि मम भक्तमोहिं प्रियपुष्ट ॥ आनहित करत न आपुनहिं होतकबहुं उद- बिग्न। जोभय हर्ष अमर्ष बिनु मोप्रियमोहिं अबिघ्न ॥ अनपेक्षी दृढ़ नि- श्चयी उदासीन समभाव। तजे सर्व आरम्भ सो ममप्रिय भक्तसचाव ॥ मुदित होत नहिं पायप्रिय दुखित न अप्रिय पाय। समसुखदुख अरि मित्रमें सो ममभक्त बनाय ॥ निन्दा अस्तुति तुल्यजो अपटुमौनि अनि- केत। तुष्टलहैजो ताहिमें थिरमति भक्तसहेत ॥ तजे संगअरु शुभअशुभ तजे दोष जे सर्ब। तुल्यमान अपमानसुख दुखमों भक्त अखर्ब ॥ धर्म्या- मृतयह परम हित यथाउक्त तेहिजौन। चाहि उपासत सारधिक भक्त मोहिं प्रियतौन ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्वाम्याभिगा मिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेनकविना विरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुन संवादेभक्तियोगवर्णनोनामषोड़शोऽध्यायः ॥१६॥

अर्जुनउवाच॥दोहा॥ क्षेत्रऔर क्षेत्रज्ञऔ ज्ञानज्ञेनहैं जौन। प्रकृति पुरुष येके कहौजान्यो चाहततौन ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ यह शरीर है क्षेत्र है सुनो बुद्धिमत पार्थ। चित आत्मा क्षेत्रज्ञ जो जानत याहि यथार्थ। सर्ब क्षेत्रमें पार्थ मोहिं जानहु प्रभु क्षेत्रज्ञ। क्षेत्र और क्षेत्रज्ञको ज्ञान ज्ञान सर्बज्ञ ॥ जो अरुजैसे क्षेत्र है जासु बिकार बिभात। जैसो तासु प्रभाव सो सुनो सबिस्तर तात ॥ ऋषिगणासों अरुवेदमें ब्रह्मसूत्रपद माँह ॥ पृथक् पृथक्

है कथित सोसुनो पार्थ नरनाह ॥ अहंकार बुधिभूत अरु इन्द्रीमन श-
ब्दादि। इनमें क्षेत्र प्रसिद्ध है कहत वेदविद नादि ॥ इच्छासुख दुख
द्वेष धृति अरु चेतना उदार। मनइन्द्री अरु आतमा येहै क्षेत्र बिकार ॥
अथज्ञानलक्षणम् ॥कवित ॥ कोमलता शांति औ अदंभता सुअमानित्व शुचिता
औ थिरता अहिंसा निरहंकार। बैराग्य इन्द्रियार्थ बिषे अत्म निग्रह आ-
चार्यको उपासन समचित्तत्व व्यवहार ॥ इष्ट औ अनिष्ट बिषे समचित्त
गोपीनाथ जन्ममृत्यु जरा व्याधिदोष दुःखको बिचार। पुत्रदारऔ गृ-
हादि में अशक्तता सदैवमो मधि अनन्य भक्तिकी बो ज्ञानहै उदार ॥
दोहा ॥ जो निर्जन सेवित्व अरु जनगण बिषे अप्रीति। निति शास्त्रज्ञ
सुज्ञानमें कीबो निष्टानीति ॥ चारु तत्व ज्ञानार्थको दरशन हैमतिमान।
इनको कहिये ज्ञान अरु इनते इतर अज्ञान ॥ अब कहियतु हैं ज्ञेय जो
सुनो तासु व्याख्यान। नशत न असतअनादिजो परब्रह्मभगवान ॥ पा-
णिपाद शिर नेत्रमुख श्रुति सबदिशि में जासु। बिलसत सबथर व्यापि
सो वेद बदत गुण तासु ॥ सर्बेन्द्रिय के गुणनि को ग्राहक बिश्वेबीश।
बर्जित सब इन्द्रियनसों अनाशक्त जगदीश ॥ बाहेर अन्तःभूतगण के
चर अचर सुजान। अबिज्ञेय सूक्ष्मत्वते निकट दूर थितवान ॥ हैंअभि-
न्न सब भूतसों बिलसत भिन्न समान। भरता हरता भूतगण को प्रभु
ज्ञापक ज्ञान ॥ सबजोतिन के जोतिकृत तमते परे बिहार। ज्ञेयज्ञानसों
गम्य हम सर्ब हृदिस्थ उदार ॥ क्षेत्रज्ञान अरु ज्ञेय कहि प्रगट सुनाये
तात। जाहि जानि मम भक्तमम भावहेतु लपटात ॥ प्रकृरिपुरुषये जगत
के जननी जनक अनादि। सोबिसतर सों प्रगट करि कहैं वेद विदना-
दि ॥ कारण कार्य कर्तृत्व में हेतु प्रकृति दक्ष। सुख अरु दुख भोकृत्व
में हेतु पुरुख परतक्ष ॥ कारणहैं इन्द्रिय सकल अरु शरीरहैं कार्य्य। ल-
गी रहतिहै बिषयमें यातेजानत आर्य्य ॥ करतपुरुष प्रकृतिस्थि ह्वै
प्रकृतिज गुण को भोग। कारण सद सद योनिको त्रयगुणको संयोग ॥
दर्शक न्यामक नित्यजो भर्त्ता भोक्ता तात। परमात्मा प्रभु ख्यातसो तन
मधि पुरुष बिभात ॥ प्रकृति पुरुषकहँ गुणनिसह इमि जानतहैं जौन।
बर्तमान सबमें तऊ फेरि न जन्मत तौत ॥ देखत आत्महि आपुमें कोउ
करि आपुहि ध्यान। कोऊ संख्यबिधि योगते कोउ करिकर्म बिधान ॥

जे अजान इन बिधिन मथिते सुनि गुरुके बैन। ध्यावत आत्महि नेमसों तेऊ तरत सचैन॥ थावरसंगम हैं जिते तेसिगरेहे तात। क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के संगम सोहैं जात॥ परमेश्वर सब भूतमें सम बिलसत हेपार्थ। नहिं बिनसे बिलसत लखत यहसो लखत यथार्थ॥ सब थर सम इस्थित प्रभुहि सब थर लखत समान। पुष्ट करत सब भांतिनिज कारय तौनसयान॥ प्रकृतिहिसों कियमाण है तिते जिते सबकर्म। लखत अकरता आतमहिं लखत लखत सो पर्म॥ पृथक् भाव सब भूतको जब निरखै एकस्थ। लखै बिस्तरित एकसोंलहै ब्रह्मसों स्वस्थ॥ अनादित्व अगुणत्व सों प्रभुदेहस्थ प्रशस्त। करत न कछु तातेनहीं होत दोषसों ग्रस्त॥ तथा सर्बगत आतमहि कर्मनलिप्त करात। यथा सर्बगत सुष्णता सों नभ लिप्त न होत॥ यथा प्रकाशत सकलजग कहँ रबिएक अमन्द। तथा प्रकाशत क्षेत्रसब क्षेत्री परम स्वछन्द॥ लखत क्षेत्र क्षेत्रज्ञको ज्ञान चक्षुसों बीच। भूत प्रकृति पर मोक्षबरते नरलहत निभीच॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेप्रकृतिगुणवर्णनोनामसप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥

भगवानउवाच॥ दोहा॥ उत्तम सिगरे ज्ञानसों फिरि कहियतु परज्ञान। परम सिद्धि मुनिगण लहत जाहिजानि सबिधान॥ यह शुभज्ञान उपासिकै लहिमम रूपहि तात। कल्पादि सुकल्पान्त में कबहुं नशत नहिंजात॥ सत्व रजस तमत्रिगुण ये प्रकृतिज सुनुहवै स्वस्थ। बरधिबाधि तेकरत हे देहिनको देहस्थ॥ एक एकये बरधि जिमि बाधत करिजे कार्य। सो सब क्रमसों कहत हैं सुनो धनंजय आर्य॥ बढ़त सत्व तबहोतहै निर्मल हृदय सज्ञान। तासोंसुख संगमहि लहि बँधतजीव मतिमान॥ बढ़े रजोगुणके बढ़ति तृष्णा महत अमान। कर्मसंग लहिके बँधत तासों जीव सुजान॥ तामस बढ़े अज्ञान बढ़िकरत हृदयकोअन्ध। लहि प्रमाद आलस्य तब जीव होतहै बन्ध॥ सत्व प्रकाशक सुख जनक रजस करावत कर्म। ज्ञानगोपि तामस करत प्रगट प्रमाद अधर्म॥ सोरठा॥ सत्व रजतमहि गोपिरज तमसत्वहि दाविकै। सत्व रजहि तमलोपि प्रगट करत निजनिज

धरम ॥ दोहा ॥ ज्ञानशर्म्मकर सत्वरज ज्ञापक कर्म सलोभ। तामस करत प्रमाद अरु क्रोधमोह मदक्षोभ ॥ बढ़े सत्वके करत तन त्यागन जो तनवान। सोसोलोक लहैलहै जेतत्वज्ञ सुजान॥ बढ़े रजस तनत्याग जो करत होत नर तौन। पावत कुत्सित योनितन तजत बढ़ेतम जौन॥ सात्वकि को फल ज्ञान सुख रजकोफल दुखपर्म। तामस को अज्ञानफल बरणत ज्ञाता मर्म॥ होत सत्वसों ज्ञानअरु रजसोंलोभ महान। तमसों मोहप्रमाद अरु होत अज्ञान अमान ॥ गच्छतऊर्ध सतोगुणी राजस तिष्ठत मध्य। अधोगछत हैं तामसी असत्कार्य आराध्य ॥ करता जानत गुणहिजो नहिं आपुहि युतचाव। निजकहँ गुणितम गुणनते परेलहत ममभाव ॥ जबदेही इन त्रिगुणकहँ जीतत सहित बिधान। जन्ममृत्यु दुखसों तबहि मुक्त होत मतिमान ॥ अर्जुनउवाच ॥ त्रिगुणहि जीतेकोकहा चिन्हकहो सोतात। का अचार केहिभांति प्रभु अनघ त्रिगुण तरिजात ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ सत्व प्रवृधि बारजतमस कियोकरै निजकर्म। इमिगुणि मोमेंलीन नितरहत तौन बिदमर्म ॥ उदासीनवत रहतसो अनालिप्त सर्बत्र। गुण प्रगटत निज गुणनि इमि अचल गुणत सर्बत्र ॥ सुखदुख कंचन उपल प्रियअप्रिय तेहिसमपार्थ। त्यागी सबक जतनको जीतेगुणनि यथार्थ॥ सोरठा ॥ जपत मोहिं तजिओत गहि अनन्य शुचिभक्ति जो। जीति गुणनि कहँ होत ब्रह्मभावके योगसों॥ दोहा ॥ तातपर्यते ब्रह्मको हमसुप्रतिष्ठा न्यान। अरु साश्वत शुचिधर्मको अरु परसुखको स्थान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउहितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेनकविना विरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेप्रकृतिगुणभेदवर्णनोनामअष्टादशोऽध्यायः॥ १८॥

दोहा ॥ ऊर्द्धमूल अधशाख अरु परण छन्दमय यज्ञ। तरु अश्वत्थ जग ताहिजे जानतते वेदज्ञ॥ सोरठा ॥ सबके ऊरध स्वक्ष ईश्वर अव्यय परमहै। ताते अधसुनु दक्ष जीवतौनशाखा बपुष ॥ कवित्त ॥ बढ़ो गुण जलसों सुबिषय प्रबालयुत शाखा अधऊरधको परसेलसत तासु। अध मूल लसैंते बै करमानु बन्धीकृत ऊरधसों क्रमते त्यों अधसों करे प्रकासु। आदिअन्त ध्रुवरूप दीसै ताहि तरुकोण ताहिसंग त्याग दृढ़ आयुध

सों छेदिआसु। शोधैं तेहिपदकी सुगैल जाहि प्रापिफेरि परसैं न भूमिमो दैपाय सरसैं सुपासु॥ दोहा॥ मैशरणागत नाथइमि आरत बचनसुनाय प्रकृति पुरातनको प्रभव पुरुषहि लहत सचाय॥ निर्मानी निर्मोह जित संग अदोष अकाम। ध्यानावस्थित चितलहे परम सुपद अभिराम॥ यहांन दीपत सूर्यशशि नहिं पावक शुचिरूप। जहांजाइ नहिं फिरत फिरि सोममधाम अनूप॥ शुद्ध सनातन अंशमम जीवभूत अबिभंग। सोमनसह ज्ञानेन्द्रियन कहँनिति राखत संग॥ तिन प्रकृतिस्थन कहँ लये गहत तजत तनतौन। गहेरहत तिनकहँ तथा यथागन्धकहँपौन॥ कवित्त॥ रसना करण चक्षुघ्राण परसन मन इन्हैंमय तनु तन तामैं नित्य बासकरि। बिविधि बिधाननके थूलदेहमें बिलसिभोग बिषयानको करत महामोद भरि॥ कहैंकबि गोपीनाथ यहजो वृत्तान्त ताहि जानतन मूढ़ जाने ज्ञानवान ध्यानभरि। ऐसे मनसह पञ्चतत्वन सखानसम सबथर रहैंसंग लीन्हेंजीव मायाकरि॥ दोहा॥ तेजअग्नि शशिसूरमें सोममतेज अमन्द। हम पोषत सब औषधिन कहँह्वै सोम स्वछन्द॥ धारत भूत समूहहम महिमें प्रविशि बिचारि। हम पचवत जठराग्निह्वै अन्नजौन बिधि चारि॥ हम सबके हृदयस्थ हैं हमरो सोस्मृति ज्ञान। सबदेवन वेद्यहम करतावेद बिधान॥ कबित्त॥ लोकमें पुरुषदोय क्षर औअक्षर सुनो क्षर प्रतिबिम्बवत होतनाशमानजौन। अबिकारी अचल सोअक्षर अमन्द और तिनसों इतरपरमात्मा प्रसिद्धतौन। धारेसब लोकनजो अक्षरसों परे ताते ख्यात पुरुषोत्तमन प्रकृति तियाकोरौन। यहिबिधि जानतजे मोहिं पुरुषोत्तमतेमोहिंको भजततासों सरबज्ञ दूजोकौन॥ सोरठा॥ परम गुह्य यहशास्त्रकहेपार्थ जेहिजानिकै। कृत्यकृत्य सतपात्र बुद्धिमाननरहोतहै॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेपुरुषोत्तमयोगवर्णनोनामएकोनविंशोऽध्यायः॥ २१॥

श्रीभगवानउवाच॥ कबित्त॥ राजसीते होतनर तिन्हैंदोय सम्पदहै देवी अरु आसुरीते सत्य तमके निदान। मृदुता अहिंसाक्षमा तप यज्ञ सत्य शांतिअभय अलोलुपता दयासम दमदान। ज्ञानको संयोग औस्वध्याय

करुणो अद्रोह तेजत्याग धीरज सुशौचकीबो जपध्यान। इन्हैं आदि सत-काज दैवीसम्पदा तात सेवत सप्रेम तिन्हैं सत्वमय मतिमान॥ दम्भदर्प अभिमान क्रोधरुच्छता अज्ञानआदिक लिखेजेगुण कारजअसतहैं। सम्प दाते आसुरीहै बन्धकरतार इन सेवैसदा तामसीते अधकोखसतहैं। त्राता सब थरमें सुदाता मंजुमुकुतिकी गोपीनाथ दीहदैवीसंपदा लखतहैं। दैवी शुचि सम्पदामें प्रगटभयेहौ तुम शोचमति करो शोचे शोचसों ग्रसतहैं॥ दोहा॥ दोयभूत यहिलोकमें आसुरदैव प्रधान। कहे देवअब कहतहैं आसुर को व्याख्यान॥ आसुर जन मानत नहीं प्रवृतिनिवृति व्यवहार। शौच सत्य जानत न ते नहिं जानत आचार॥ कहत अनीश्वर जगतकहँ कहि असत्य उपखान। रजबीरज संभव सकल नहिंकछुआन बिधान॥ यहि बिचारमें दृष्टिकरि नष्टात्मा अज्ञान। उग्रकर्मकर जगतके नाशक होत अ-मान॥ काममये अतिदम्भ युत मानमदान्वित मूढ़। असतग्रहण करिमोह ते चरत अशुचि व्रतगूढ़॥ मरणावधि चिन्तित रहत योगक्षेमके हेत। काम भोग उतकृष्ट यहनिश्चय करतअचेत॥ आशापास सहस्त्रसों बद्धभरे रिसि काम। मदनभोग हितधन सचतकरि करि कुतसित काम॥ यहभो मोकहँ लुब्धयह ममपौरुष सोंप्राप्त। निरखिअन्य धनकहत यहह्वैहै ममहेआप्त॥ मैंमार्‌यों यहशत्रु कहँ हतिहौं और अनेक। हमईश्वर भोगीसुखी बलीसिद्ध सबिबेक॥ हमकुलीन जनवान हम नहिं मोसमको उअन्य। इमि मोहित अज्ञानसों गुणतआपु कहंधन्य॥ थरअनेकमें लायचित भ्रमत मोहकेजाल कामभोगरतते पततजहँ अतिनरक कराल॥ आपुहि जानतआपु बरसधन भयेअभिमान। करतयज्ञसो दंभ सोनाम हेतुअबिधान॥ अहङ्कार बलदर्प अरुयुत कामादिक सर्ब। निज परदेहस्थहि सुमोहिं द्वेषत ईर्षतखर्ब॥ परे आसुरी योनिमें भ्रमोकरत तेमूढ। मोहि लहे बिनु लहतहैं क्रूरअधम गतिमूढ॥तीनि नरकके द्वारहै काम लोभअरु क्रोध। इन्हैंत्यागि आचरतते करतपरम गतिशोध॥ करिउल्लंघन शास्त्रबिधि चरत स्वइच्छा जौन। सिद्धि परमगति सुख शुभहि नहिं पावतहैं तौन॥ तातेशास्त्र प्रमाणसो कारज कृत्य अकृत्य। शास्त्र उक्तयबिधि नानिकैहै गुणिकरि बो नित्य॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिभाषायांश्रीकृष्णार्जुनसंवादेदैवा सुरसम्पद्विभागवर्णनोनामत्रिंशोऽध्यायः॥ २०॥

अर्जुन उवाच ॥ सोरठा ॥ जेहवै श्रद्धावान त्यागिशास्त्रबिधि मखयजत। सत्व रजस तमन्यानकहा तासुनिष्ठा कहौ ॥ श्रीभगव उवाच ॥ दोहा ॥ देहिन कीश्रद्धात्रिधा पर्बकर्म परभाव। सात्विकि राजसि तमसीहोतिसुनो गहिराव॥श्रद्धसबको होतिहैशुद्धसत्व अनुसार। जेहिजसि श्रद्धाहोतितेहितैसो पदनिरधार ॥ सात्वक ध्यावतसुरनकहँ राजस राक्षसयक्ष। भूतप्रेतगण कहँयजत तामसभ्रमे प्रतक्ष॥ जेअशास्त्र मतगहि तपत दम्भ युक्ततपघोर। रागरते तेबिनुलखे ममआज्ञाकी ओर ॥ भूतग्राम देहस्थअरु हमहृदयस्थ स्वछन्द। तेहि कृश करजानौ तिन्हैं असुर निश्चयीमन्द ॥ कबित्त ॥ आहारयज्ञ तपदानये त्रिबिध होततिनको कहत जौनभेद व्यवहारहै। आयु सत्वबल सुखप्रीति औअरोग्य कारघृतसिता क्षीरयुत सात्वक अहारहै। अतिकटु आमल लवण अतिअति ऊष्णराजसीकोप्रियशोकदुखदअहारहै। अशुचि उछिष्ट गतरस कांचोऔ असद्य तामस अहारसो अनाछो अनाचारहै ॥ अपरं ॥ यज्ञहैं त्रिबिधतामें सात्विककी सुनो रीति फलमें अईहा ताकोप्रथम बिधानहै। वेदउक्त ईश्वरकी आज्ञा जानि करतव्य बिधिवत कीखोजी यज्ञसात्विक महानहै ॥ फलचाहि दम्भयुत नामकाम हेतजौन कर्‌यो जातयज्ञ तौन राजस अमानहै। मंत्रहीन बिधिहीन श्रद्धा दक्षिणा बिहीन अन्नदान हीनयज्ञ तामस मलानहै ॥ अपरं ॥ काइक औ बाचिक औमासन त्रिबिधतप पूजन सुमन गुरुप्राज्ञ द्विजगणको। तीरथ परज टनस्नान ब्रह्मचर्य्य मृदुता औ शुचिता अहिंसा तपकाइक सुजन को। अनुद्वेगकर सत्यप्रिय हितबोलिबो औपुण्य पाठबाकतपमोदक श्रवणको। शुचिमन पर हित हेतिबो औ भावशुद्धि मौनआत्मनिग्रह अराग तपमन को ॥ अपरं ॥ श्रद्धासों तपित तप होतहै त्रिबिध सुनो फल आशा त्यागि कियो सात्विक परमहै। सतकार मानपूज्य हूबेहेत दम्भयुत कर्‌योजात तपतौन राजस करमहै। कार्यसिद्धि देहनाशा बधिहठि कीबो और साधिबो मसान जामेंजाहिर भरमहै। परनाश हेत हेतिकरै उग्रतप तौन तामस तपस्या ताको तीक्षण मरमहै ॥ अपरं ॥ देशकाल देखिदीबो अनउपकारी बरपात्रनको जानितौन सात्विक सुदानहै। प्रति उपकार हेतदीबोदीबो फलचाहि क्लेशितह्वै दीबो तौन राजस बिधान है। दीबोजो अपात्र को अदेशकाल मधिक असतकार दानतौन तामस मलानहै। तातेयह बूझि

कीबो सात्विक कोसाधन सो मतिमान जनताका सरस सयानहै ॥ दोहा ॥ ओंतत्सत् येत्रिबिधहै शुभद ब्रह्मकेनाम। प्रथम तिन्हैं उच्चारबिधि करैं वेदमख आम ॥ तातेओं तत्सत् इति उचरि वेदबिददक्ष। तप मखदाना-दिक क्रिया करैं सुबिधिवत स्वक्ष ॥ तपमखदा नादिक क्रियहि शुचिमति तत इतिमानि। करत मुमुक्षुफलार्थ बिनुवेद उक्त अनुमानि ॥ साधुभाव सतभाव में अरु सुकर्म मेंपार्थ । सतशब्दहि योजित करत बकता शुद्ध यथार्थ ॥ दानयज्ञ तपमेंसुरति सोंसतहे मति मान । असत अश्रद्धासों करत जौन यज्ञतप दान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभि
गामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेन
कबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जु
नसंबादेश्रद्धाबिवेकयोगवर्णनोनामएकबिंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

अर्जुनउवाच ॥ दोहा ॥ नाथतत्व संन्यासको अरुसुत्यागकोतत्व। पृथक् पृथक् चाहत सुन्योकहौ सहित भिन्नत्व ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ काम्यकर्म को न्यास तेहि कहत सुकबि संन्यास। सर्ब कर्म फल त्यागकोकहतत्यागबुधिरास ॥ त्याजकर्म जेदोषवत कहतएक मतिमान। कहत अपर मख दान तपकर्मन त्याज बिधान ॥ तामेंमम निश्चयसुनो त्यागत्रिबिध हे आर्य्य। सत्विक राजस तामस सुकारण अनुगत कार्य्य ॥ यज्ञदान तपकर्म ये हैंनत्याज्यहै कृत्य। चित्तशुद्ध करियेसकल पावनकरता नित्य ॥ तजिममत्व अरु त्यागि कै सर्बफलाशा स्वार्थ। शुद्धकर्म करतब्य निति यह मम निश्चयपार्थ ॥ शतधा कृत्यसुकर्म कोत्याग नउचित अराग। करतमोहसों त्यागजोसोहै तामस त्याग ॥ दुख स्वरूप गुणि कर्म जो तजत क्लेशभय मानि। सोहै राजस त्यगनहिं तौनत्याग फलदानि ॥ वेदउक्त करयब्य गुणिकरतकर्म सबिधान। करत फलाशा त्यगसो सत्विक त्याग महान ॥ कबित्त ॥ कर्म जेदुखद तिन्हैं निन्दतहैं जेन औ न सुखद करम जानि इष्टकरि लेत हैं। सत्वसमा बिष्टते प्रविष्ट तत्व ज्ञापनमें उतकृष्ट मतिहवै फलाशा त्यागि देतहैं ॥ देहवान त्यागिन सकतहैं अशेषकर्म ताते कर्मफल त्यागी त्यागी ते सहेतहैं। इष्टओ अनिष्ट मिश्र तीन कर्मफल तेवै त्यागी कौन लभ्यहै अत्यागी के निकेत हैं ॥ अपरं ॥ सिगरे करम ताके सिद्धि हेत सुनो पार्थ

सांख्य शास्त्रबिषे पांचकारण बिख्यातहैं। देहजो अधारअरुकर्त्ता ममत्व बुद्धि करण जेइन्द्रिमन आदिक बिभातहैं। चलनादिचेष्टाअरु दैव जौन प्रारब्ध तीनौंबिधि कर्मइनहींसों कीन्हे जात हैं। तामधि अकेले आतमाको मानैंकरनाते दुर्मतिअज्ञातहैं नपटु अवदातहैं॥ दोहा॥ नहिंहमकरता जाहि हैंअतिसै दृढ़यह भाव। सोयहि लोकहिहतेहु नहिंहोत वृद्धतजि चाव॥ ज्ञानज्ञेय ज्ञाता त्रिबिध कर्मकथनमधि ख्यात। करण कर्मकरता त्रिबिध कर्मग्रहण मधितात॥ कबित्त॥ ज्ञानकर्म करता एत्रिबिध गुणभेदसोहै सांख्य मेंकथितहै सो जानैज्ञानी मुनिये। भिन्न भिन्नभये सर्बभूतमें अभिन्नभाव मानिबोजो ज्ञान तौनशुद्ध सातौगुनिये। न्यारेन्यारे देखिन्यारे न्यारेभाव मानिबोजो न्यायमतज्ञानहि गुणैरजौगुनिये। देहैंसर्बमय आत्माकैजानि-बोसोज्ञानै तामस प्रधान बौधकोसो मतौसुनिये॥ अथ त्रिबिधिकर्म॥ रागद्वेष फल चाह त्यागि करतब्य गुणि कृतजान कर्म तौन सात्विक बिहारहै। फल हेतदंभ सो प्रयास करि कियो कर्म जौनतौन राजसको असद अ-चार है॥ पर पीड़ा हिंसा और अयुक्त द्रब्य व्ययवान मोहसों कियो सो कर्मतामस असार है। सोई सावधान तत्वबिद जे बिचारि करिसा-त्विक करम मुक्तिपदजो उदारहै॥ अथ त्रिबिधिकरता लक्षणम्॥ धीरउतसाह युत अहंकार राग बिनु सिद्धौ असिद्ध सम सात्विक ते करता। रागी सफलाशा लुब्ध हिंसात्मक औ अशुचि हर्ष शोकवान कर्ता राजस अच रता। आलसी अयोग्य शठ दीर्घसूत्री और अनम्र अबिबेकीकर्त्ता तामसी जे अनादरता। सात्विक फलाशा त्यागि पावत अचलते जे दोयतिन सों न छुटैछाव क्षरता॥ छप्पै॥ गुण प्रभावसों बुद्धि त्रिबिधि हैं सुनिये सुधिसों। बन्ध मोक्षयुत हेतु गुणति हैं सात्विककि बुधिसों॥ कृत्यअ-कृत्य अधर्म धर्म अयथा बिधि जानत। सोहै राजस बुद्धि सदा असतै बिधि हानत॥ धर्महि अधरम गुणति धर्म अधर्महिं गुणि चरति। सर्ब अर्थ बिपरीति इमि गुणि तामस बुद्धि अघ भरति॥ त्रिबिधि होति धृत जौनि प्राण इन्द्री मनगणकी। गतिजो जासौं रुकै तौनि सात्विकि धृति जनकी॥ अर्थधर्म अरुकाम हेतुकी बांछाभावनि। तेहिगहि जोथिररहति तौनि राजसि धृतिबावनि॥ जोशोक स्वप्नभय मोहमद अरु बिषाद गहि नहिंतजति। तौनितामसी धृति अहिति निति अघगतिकी मतिसजति॥

अपरं ॥ त्रिबिधि होतसुख सुनौजौन सुखप्रथम जहरसम । अन्त अमीसम होततौन सुख सात्विक अनुपम ॥ इन्द्री बिषय सँयोग आदि अमृतसम जोसुख । बिषसम लहि परिणाम तौन राजसदायक दुख ॥ अरु आदिहु अन्तहु बिषसदृश आत्माको मोहन असत । जौन प्रमादज तौनसुख तामसता सोंसब नशत ॥ दोहा ॥ पृथबी दिव देवन बिषे ऐसो कछू न पार्थ । प्रकृतिज गुण सो हीनजो जानहु इती यथार्थ ॥ महिखरी ॥ भेबिप्र क्षत्री बैश्यशूद्र स्वधर्म अनुगत गुणमय । सोधर्म गुण अनुसार तिनके कहत जेत्यागित नये ॥ समशान्ति दम बिज्ञान शुचिता काजजे सतपरमहैं । आस्तिक्य मृदुता ज्ञानतेसब बिप्रके शुभकरमहैं ॥ धृतितेज आयुधने कुशलता शूरता सानँद गहें । अरुदान ईश्वरता स्वभावज क्षत्रिके येकरम हैं ॥ बाणिज्य गोपालन कृषीये बैश्यकेनीति धर्म हैं । येतीन तिनकी करब सेवा शूद्रको कृत मर्म हैं ॥ नहिं निज करमरत रहत जेते लहत सिधि यह ध्रुवगुनो । निजकर्म करिकै ईश्वरहि नित अरचि सिधि पावत सुनो ॥ निज धर्म बिगतो अंगपरके सांगसों हैश्रेष्ठहे । नहिंहोत किल्बिषि कबहुं कीन्हे नियतधर्म यथेष्टहे ॥ निज धर्म स्वभाविक न त्याज्य सदोष तदपि महान हैं । आरंभ सिगरे दोष युत नितिधूम अग्नि समान हैं ॥ नहिं होत कितहूं शक्त निस्पृह रहत सबथर सबिधि जो । फल त्यागते सो लहत अतिबर निवृति पथकी सिद्धिजो ॥ दोहा ॥ सिद्धि मिले जिमि मिलतहै ब्रह्मसुनो मतिमान । कहत सबिधि सो ज्ञानकी निष्ठापर अमलान ॥ त्याग शब्दादिक बिषय तजे द्वेष अरुराग । आत्महि निश्चय धैर्यसों करे द्वन्द को त्याग ॥ शुचि सुबुद्धिसों युक्त अरुध्यान योग परदक्ष । निर्जन बल सेवीकरें कायबाक मनस्वक्ष ॥ बैरागी लघु भोजनी निर्मम निरहंकार । काम क्रोध तजि शान्ततें पावत ब्रह्मउदार ॥ ब्रह्मज्ञानी मोदमें कांक्षा शोच बिहाय । सबमें सममति लहत है मम सुभक्ति सुखदाय ॥ जानत सोमम भक्ति सो ममस्वरूप को भेद । जानि भेद सो ममबिषे प्रविशत तजि निर्वेद ॥ मम जपको आश्रय गहे करै जऊ सब कर्म । मम प्रसादसों लहतसो जो शास्वत पदपर्म ॥ लहि बिवेक बुधि अरपि मोहिं कर्मनित्य नैमित्य । मम शरणागत होत पटु बुद्धि योग आश्रित्य ॥ मम प्रसादसों दूर्गसब तरत ममाश्रित जौन ।

अहंकार सों नहिंसुनत यह मत बिनशत तौन ॥ ज्ञान गर्बसों जोकहौ लरब न तौ सुनिलेहु । सोमिथ्याह्वै प्रकृतिबश लरिहौ हैं ध्रुव येहु ॥ कर्मज सगुण स्वभावसों परबश परे समान। मोह त्यागि लरिहौ सुनत कटुपर बचन अमान ॥ ईश्वर निति सब भूतगण को हृदयस्थ यथार्थ।गुणीदारु दारासदृश सबहि भ्रमावत्त पार्थ ॥ होहुतासु शरणागतै शुभबिधिसों मतिमान। ताके शुभद प्रसादसों लहिहो पर सुस्थान ॥ पारथ हम तुमसों कह्यो परमगुह्य यहज्ञान। तेहि बिचारि सोई करौ ईछो जो मतिमान ॥ परम बचन मम सुनहु फिरि सर्बगुह्य तम जौन। हौं अतिदृढ़ ममइष्ट तुम ताते कहियत तौन ॥ मदाकार मनभक्त मम ममहित करता कर्म। मम सु प्रणामी लहत मोहिं हे प्रिययह दृढ़मर्म ॥ कबित्त ॥ मम सुप्रणामी मदाकार मन ममभक्त होहु हेति होहु मम हेत करता सुकर्म। मोहिं प्राप्तह्वैहौ प्रिय जानिकै कहत सत्य करिकै प्रतिज्ञा यह निज भेदको सुमर्म॥ और एककहत सुनोसो मनदेके गहौ एकमेरो ईश्वर न त्यागिकै सकलधर्म। सिगरेजे पाप ताते तुम्हैं मोचिहौं मैं तात शोच मति आनो सांचमानो मों बचनपर्म ॥ दोहा ॥ जे न सुश्रूषा करहिं जे अतप अभक्त मलान। ममद्वेषी तिनसों कबहुं हैंन बाच्य यहज्ञान ॥ करियोजित ममभक्ति में परमगुह्य यह जौन। परमभक्ति मम बिषे कहि प्राप्तहोत मोहिं तौन ॥ मम प्रियकृत तिनके सदृश है न भूमिपै आन। कहत सांच नहिं अन्यथा सुनोपार्थ मतिमान ॥ सुनहिं पढ़हिं पढ़ि गुणहिं जे यह मम तुव सम्बाद। क्रमसे सो उतकृष्ट पद लहहिं सहित अहलाद ॥ ह्वै यकाग्रचित सुनेहु सो जोहम कही यथार्थ। सुने मोह अज्ञान तुव मिट्यो कहौ हे पार्थ ॥ अर्जुनउवाच ॥ नश्यो मोह प्रगटी सुस्मृति तुव प्रसादसों ईश। गत सन्देह निदेश तुव करिहौं बिस्वेबीश ॥ संजयउवाच ॥ परमगुह्य हरि पार्थको यह अद्भुत सम्बाद। ज्ञानयोग प्रद हमसुने लहिकै व्यास प्रसाद ॥ सुमिरि सुमिरि सम्बादसोअनुक्षणप्रगटतहर्ष। नृपति सुमिरिसो रूपभो बिस्मय मुदउतकर्ष ॥ जहँ योगेश्वर कृष्णप्रभु पार्थधनुर्द्धरयत्र। श्रीमति नीति बिभूतिजय मममतहै ध्रुवतत्र ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिभाषायांश्रीकृष्णार्जुनसंवादे संन्यासादितत्त्वनिर्णययोगवर्णनोनामद्वाविंशोऽध्यायः॥ २२ ॥

संजयउवाच ॥ दोहा ॥ मोह त्यागि यह तत्वसुनि गुणि करतव्य स्वधर्म। रणहित भे सन्नद्धगहि शरधनु पार्थ अभर्म ॥ शरधनु धारे पारथहि निरखि महारथ सर्ब । बीर बचन कहि कहि उमहिं गरजें गहि गहि गर्ब ॥ चौपाई ॥ पाण्डव आदिक सबभट रूरे। शंखबजावत भे मुदपूरे ॥ भेरी आदि बजे बहु बाजे। धीर धुरीन बीरबर गाजे ॥ सुर गंधर्ब पितर गण मोदत। ऋषिगण सुरपति संग बिनोदत ॥ युद्धलखन हित हुलसे मनमें । नभपै थिरे आइ तेहि क्षणमें ॥ ताक्षण धर्मराज बिधि ज्ञाता। तजि शर धनुष कवच तनत्राता ॥ रथते उतरि अकेले सादे । शत्रुसेन मुखचले पयादे ॥ यहिबिधि भूपहि जात निरेखी। पारथ हिय संशय सों भेखी ॥ रथते उतरि पयादे धाये । भाइन सहित भूपपै आये ॥ गे तहँ बासुदेव सब जानत। नृपगण गये आचरज मानत ॥ नृप सों कहे धनंजय ऐसो। अब तुम करत काज यहकैसो ॥ इबिधि जुरे दल तजि उतसाहू। का गुणि शत्रुसेन मधि जाहू ॥ भीमसेन आदिक सबभाई। यहिबिधि कहत भये समुझाई ॥ चलेजात नृप सुनियह बानी। दिये न कछु ऊतर अनुमानी ॥ कहो कृष्ण हँसि हमसों जानी। जो नृपधर्म्म नीति उरआनी ॥ बन्दि गुरुनकहँ कारज करई। सो जयलहै न टारे टरई ॥ सर्बशास्त्रबिद नृप नयगामी। जात गुरुन पै जययश कामी ॥ दोहा ॥ नृपति धर्मकहँ भीष्मपै यहिबिधि आवत देखि। दुर्योधनके सुभट सब कहन भये अवरेखि ॥ लखौ युधिष्ठिर भूप डरि मेलकरण के हेत। जात भीष्मढिग लाज तजि कुलहि कालिमा देत ॥ चौपाई ॥ लरे बिना सेना लखि हारो। ऐसो कहूं न निलज डरारो ॥ जाके ऐसो पक्ष सुभाई। सो कस शत्रुन देखि डराई ॥ अल्प पराक्रम अति भयसाने। नृपतियुधिष्ठिर नितिके जाने ॥ इबिधि परस्पर कहि सुनि सिगरे । हरषित भये भूप मति बिगरे ॥ हँसि बोले अब सुनो चुपाई। का ये कहत भीष्मसों जाई ॥ भो संशय दुहुं दलमधि राजा। जात भीष्मपै नृप केहिकाजा॥ जाइ भीष्मपै नृप भुदराचे । बन्दिचरण करजोरि उबाचे ॥ तात न करत बनत सम्भाषन। चाहत युद्धअर्थ अनुशासन ॥ देहु कृपाकरि आशिष आला। जासों मिलै बिजयकी माला ॥ कहो भीष्म सुत मोढिग आयहु। बर अनरथकर मूल नशायहु ॥ नातरु लखि अनुचितकृत पापा। देइत

दुसह अजयकर शापा ॥ अब प्रसन्न हम सुत मुदपागौ। तजि संशय बांछित बर मांगौ ॥ दास अर्थके पुरुष सबहू । अर्थ न दास पुरुषके कबहू ॥ ताते दुर्योधन बिधि साधे । है मोहिं अर्थ सुगुणसों बांधे ॥ निज दिशिहवै लरिबेसों आना । मांगौ निज हितकर बरदाना ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कहे युधिष्ठिर इतहीं रइहू । ममहित होइ मंत्रसो कहहू ॥ दोहा ॥ कहे भीष्म तुव अर्थको साधन कहो न जाय । कौरव की दिशि त्यागि छल लरब धर्म मम न्याय ॥ मोसों लरि जय जोलहै ऐसोको महिपाहिं। नरपति नरकी को कहै सुरनायकऊ नाहिं ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ योहींसों कर जोरि मैं मांगों कृपानिकेत। कहि औरन मैं आपुसों जय लहिबेके हेत॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ सुनो पार्थ अबरेखि निजदलमें अबजाहु फिरि। मृत्यु कालमम देखि आयहु फिरिममपास तुम ॥ जयकरी ॥ तबहवै बिदाभीष्म सोंभूप। गये द्रोणपै आनँदरूप ॥ करि परदक्षिण करि परणाम। जोरि पाणि करि बिनय सकाम ॥ कहोरहो भीषम सों जौन। कहो द्रोण सों तेहिबिधि तौन ॥ सोई कहो द्रोण मतिमान। प्रथम कहोजो भीष्म सुजान ॥ सोकहि कहो द्रोण सज्ञात। हम प्रसन्न मांगौ बर तात ॥ कहे भूप हम पावैंजीति । सो बिधान साधैं करि प्रीति ॥ कहे द्रोणहै मम ध्रुवधर्म । कौरवके हित लरिबो पर्म ॥ लरि हमसों जयपावै जौन। ऐसो तीनिलोकमें कौन ॥ तुव ईछितके बिधिकीबात। लखि निदानकछु कहो न जात ॥ कहेभूप तुवबिक्रमजानि। हम इमि कहेजोरियुगपानि ॥ तुम ज्ञाताकाकहौं बुझाय। निज बधकीबिधि देहु बताय ॥ कहोद्रोण नहिं असकोउ बीर। मोहिं हतै जो धनुधर धीर ॥ जब हम मरण आपुमों ठानि। होहिं अचेत अचलकरि पानि ॥ शस्त्र बिहीन निरखि तब आय। बधै बधैसो लाजभुलाय ॥ अतिसति बकतासों सबिधान। सुनि दृढ़अप्रिय बचन अमान ॥ त्यागैंगे हमबर धनु बान। सुनोभूप यहसत्य महान ॥ दोहा ॥ द्रोणाचारयके बचन सुनि नृपभरे हुलास। करि प्रणाम हवैबिदा गे कृपाचार्यके पास ॥ सबिधि बन्दिपग कहतभे कहे भीष्मते जौन। सुनि अचार्य सोई कहो कहो भीष्म है तौन ॥ सो कहि कृप नृपसों कहे निज दिशि थितिसों आन। चाहौ सो मांगौ नृपति धर्मशील मतिमान ॥ सोरठा ॥ मम जयहेतु अचार्य निज बधकी बिधि देहु कहि। यह कहिबो

गुणि आर्य कहि न सके मोहित भये ॥ नृपके चितकी चाह गुणि गौतम नृपसों कहे। हम अबध्य नरनाह मम बधको न उपाय कछु ॥ युद्धव्यवस्था देखि हम रणतजि जैहैं अनत। तुम जयलहौ बिशेषि सत्यकहत संशय तजौ ॥ रोला ॥कृपायुत कृपके बचन सुनि नृपति पूरि अनन्द। जाय मातुल शल्यपै करिउचित कृत्य अमन्द ॥ कहौ हैं जो भीष्मसों सो कहो सो सुनि शल्य। कहे भीषम प्रथम जो हो कहे बचन अशल्य ॥ भूप कौरव तरफह्वै हम लरब अब ममधर्म। याहि तजि जो और चाहो कहो तौन सुकर्म ॥ कहे पांडव सूतसुतको तेजनाश सनेम। युद्धमें तुम कीजियो मम सुजयहेत सप्रेम ॥ माद्रपति तब कहे करिहैं अवशि हम यह काज। जाय अबनिज सैनमें तुम करो युद्धसमाज ॥ सहित बन्धुन निज सैन प्रति गये नृप अभिराम। सूतसुतके पासगे तब कृष्ण आनँद धाम ॥ जाय तासों कहो प्रभु हम सुने यह हम कर्ण। भीष्मसों करि द्वेष त्यागो युद्धकरि दृढ़पर्ण ॥ लरैं जौलों भीष्म तौलों चलौ उनकी ओर। आइयो फिरि इतैजूझे भीष्मके लहि भोर ॥ कहो करण कहौ कहा तुम कृष्ण कैसे बैन। भूमिपतिको अप्रिय करिबो उचित हमको हैन ॥ बचन यह सुनि गये केशव जहां पांडुनरेश। हैं युधिष्ठिर खरे निजदल सींव पै शुभभेश ॥ धर्मनृप तहँ पुलतु स्वरसों कहो बांहउठाय। करैं आय सहाय मम जो गुणेधर्म सुन्याय ॥ बचन यहसुनि रहे चुपह्वै सुभट सिगरे धीर। कहो टेरि युजुत्स हमहैं तुव सहायक बीर ॥ भाषि इमि सो भेरि दुन्दुभि कौरवीदल त्यागि। आय पांडव भूपसों भो मिलत अति अनुरागि ॥ राजपुत्र युजुत्सको नृप करि उचित सतकार। कवच भूषण शस्त्रधारे चाहि युद्ध बिहार ॥ आदि नृप ते सर्ब निजनिज बाहननपै जाय। व्यूहढिग करि पूर्ववत भे लसत सुखमा छाय ॥ बजे बाजे दुहूंदिशि गो शब्द दशदिशि पूरि। लगे हींसन तुरँग गाजनलगे मैगल भूरि ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ संशय यहिबिधि दर्पयुत जुटे उभय दल तत्र। चल्यो शस्त्र कितसों प्रथम कहौ तौन अब अत्र ॥ संजयउवाच ॥ दुर्योधनके बचन सुनि दुःशासन बरबीर। भीष्महि आगेकरि बढ़े सह सेना रणधीर ॥ भीमहिं आगे करि प्रबल पांडव सब सहसैन। इच्छि युद्ध बर भीष्म सों संमुख चले सचैन ॥ चौपाई ॥ हय हींसनि गज गर्जनि

भारी। रथ घरघटनकी धुनि बिकरारी॥ अगिनित बाद्य भेद श्रुति मर्दन। अरु भटगणको भूरि निनर्दद॥ भो अति दुसह शब्द तेहि क्षणमें। पूरि रह्यो गुणवान गगनमें॥ ह्वै सरोष तब भीम भयंकर। गरजत भो अरि दल प्रलयंकर॥ सो गर्जनि सब धुनिसों बर्द्धित। ह्वै कीन्हों पर भट हिय मर्दित॥ भीमहि गरजित आवत देखी। तुवसुत सिगरे अतिशय तेखी॥ सत्वर शर धनु योजित कीन्हे। भीमहिं शर छादितकरि दीन्हे॥ जिमि निहार मधि शूर बिराजत। तिमि करि भीमहिं भे सब गाजत॥ तब सपुत्र पांडव बलभारे। सरवर तुव पुत्रनपै मारे॥ बीर अभीर धीर भरि रिसिसों। मारनलगे बाण दुहुदिशिसों॥ चल को दण्डन युतते कोहे। बिजुलिन सहित घननिसम सोहे॥ शरसों बन्धु समागम साजा। कछु क्षण देखिरहे सबराजा॥ चढ़े चाव फिरि भिरि बलबाढ़े। लगे लरन रण कर्कस गाढ़े॥ अतिशय तुमुल युद्धभो मण्डित। हांकि हांकि भट भिरे प्रचण्डित॥ धूर धारमें तरणि छपाने। काहू निजपर नहिं अनुमाने॥ को आयो को गो केहि मारो। इतो न काहू तहां निहारो॥

दोहा॥ श्रोणितसों पूरित धरणि बिरज भई हे भूप। ऊरध रजछाई घनी सुखमा सनी अनूप॥ चारु अमल पावक बिषद अध विषतरित बिभात। रहै धूम ऊपर घुमड़ि यथा भयें निरबात॥ तब भीषम तकि पारथहि निज रथ शीघ्रचलाय। हांकि बाण मारत भये अति उदण्ड दृढ़ धाय॥

चौपाई॥ पार्थ बाण भीषमपै मारे। कोपि भीष्म पारथहि प्रहारे॥ प्रबल बीर दोऊ धनुधारी। दोऊ रण कर्कस रणचारी॥ दोऊ दोउन को बध ईछे। आगे बढ़ैं हटैं नहिं पीछे॥ कठिन युद्ध नृपतिन सों माच्यो। रण महिमै भीषमता राच्यो॥ सात्वकि कृतबरमासों भिरिकै। उद्ध युद्धकीन्हे तहँ थिरिकै॥ रथचलाय अभिमन्यु प्रबीरा। भिरो वृहद्वलसों रणधीरा॥ भीमसेन भट भरि रिस अतिसों। भिरो हांकि नृप कौरव पतिसों॥ भरो गर्ब दुःशासन पुलको। देत भयो भिरि जो रण कुलको॥ तो सुत जो दुर्मुखभट भारी। तासों सहदेव भिरे प्रचारी॥ भिरे शल्यसों पांडव नायक। नृपति धर्म जयलहिबे लायक॥ धृष्टद्युम्न वृत्तान्त बिचारी। चाहि द्रोणसों भिरो प्रचारी॥ भूरिश्रवा भूप सह साजा। भिरो शंख नृपसों जयकाजा॥ जो बाह्लीक भूपवर तासों। अभिरे धृष्टकेतु भरि

भासों ॥ राक्षसबीर अलम्बु सुक्रोधा । तासों भिरो घटोत्कच योधा ॥ भिरे शिखण्डी अश्वत्थामा । कठिन युद्धकरता जयकामा ॥ भिरि भगदत्त बिराट महीपति । लरे चाहि कीरति अति दीपति ॥ दोहा ॥ बृहत क्षत्र भिरि करतभो कृपाचार्यसों युद्ध । तजे शस्त्रप्रति शस्त्रते बधबिचारि अति क्रुद्ध ॥ द्रुपद जयद्रथ भिरि भये बिरचित युद्ध अमान । तजि अन्योन्य अनन्त शर किये कठिन घमसान ॥ लरे जूटिसुत सोम अरु तुवसुत बीर बिकर्ण । हनत परस्पर बाणबर चाहिचाहि परमर्ण ॥ चौपाई ॥ चेकितान अरु सुभट सुशरमा । भिरि भे करत युद्ध भरि परमा ॥ भिरे शकुनि प्रति बिन्ध्य अधर्षन । बारिद बाणबूंदके बर्षन ॥ भिरे सुदक्षिण अरु सुतबरमा तजै बाण तन तरुकै बरमा ॥ इरा बाण अर्जुनसुत सोई । लर्‌यो श्रुतायुषसों रिसभोई ॥ नृपति बिन्द अनुबिन्द सुधीरा । सुतसह कुंतिभोज रणधीरा ॥ भिरि भे करत युद्ध अतिभारी । परबध निज निज सुजय बिचारी ॥ पांचभाय नृप केकय थरके । पांच भूप गान्धार बगरके ॥ ते सर्बग भिरि आनँद लीन्हे । कठिन कंगल युद्धअति कीन्हे ॥ तो सुत बीरबाहु धनुधारी । लरो उत्तरा सों रणचारी ॥ अर्जुनसुत अतिशय रण कर्कस । चेदिराट सों भिरो अमर्कस ॥ यहिबिधि द्वन्द सहस्त्रनि जूटे । रथ गज हयसादी जय ऊटे ॥ भिरे पदाती भट अनगिनते । शस्त्र असंख्य चले तहँ तिनते ॥ ध्वज धनु कवच परस्पर काटैं । हने बाण सहि हनि हनि डाटैं ॥ रहे पूरि शर इतहूं उतहूं । रह्यो न रथ बाकी कहुं कितहूं ॥ बढ़ि बढ़ि बीर गर्बगहि गाढ़ो । हनैबाण कहि अब रहु ठाढ़ो ॥ प्रबल प्रकर्ष पराक्रम सगरे । पृथक् पृथक् कहिजात न निगरे ॥ दोहा ॥ मच्यो युद्ध तहँअति तुमुल कहत होत निरवेद । भूपति रह्योमुहूर्त्त भरि प्रगट द्वन्द कोभेद ॥ तदनन्तर उनमत्तह्वै रह्यो न कछू बिवेक । युग समुद्रसम उमड़ि मिलि लागे लरन सटेक ॥ महाराज तेहि क्षण कटे हयगज पुरुष अनेक । घने घाय घालै सुभट जुरैंमुरैं नहिं नेक ॥ कटि शरसों अभिमन्यु के होतहि ध्वजा पपात । भीम मुदित ह्वै करत भे भीमनाद हेतात ॥ लखि प्रपितामह भीष्मतब ह्वै सरोष अनखाय । छायदेत भे कुंवर पै बाण असंख्य चलाय ॥ चौपाई ॥ यह लखि महारथी दश धाये । अभिमन्युहि रक्षण हितआये ॥ भीम बिराट द्रुपद

धनुधारी। श्वेत उत्तरा अरिमदगारी ॥ पांचभाय केकैपतिराजा। आये ये दश सहित समाजा ॥ तिन्हें देखि भीषम रिसिधारे। तीन बाण बर द्रुपदहि मारे ॥ एक एक शर सब कहँदीन्हें। तब क्षुर प्रशरककरमें लीन्हें ॥ ध्वजा भीमकी काटीतासों। पुरुष सिंहभरि क्रोधमहासों ॥ तीनि बाण भीषम के तनमें। हने भीम गर्बित ह्वैमनमें ॥ एक बाण कृप के तनमारे। कृतबरमा पै बसु शरडारे ॥ उत्तर कुंबर गजस्थ सक्रोधा। चल्यो शल्यपै लखिबरयोधा ॥ अति जबसों गज रथपै आवत। देखि शल्य शर भये चलावत ॥ लगेबाण गज अतिरिस धारी। हतेसि चारि हय नृप रथचारी ॥ तब नृपशल्य क्रोध अतिकीन्हें। शक्ति अमोघ पाणि मेंलीन्हें ॥ तजी ताहि उत्तर पै पविसी। नृपसुतके तन मधिमों प्रविसी ॥ नृपसुत मुरुछि गिरोमहिपाहीं। रह्यो न जीवछनौतन माहीं ॥ तब गहि गड्ग गजहि नृप डाटे। रथ ते तुरित कूदिकर काटे ॥ दोहा ॥ कटे पाणि गज गिरतभो करिधुनि मेघसमान। धरी न तनमधि थिरत भो गोपायन करिप्रान ॥ ऐसी अद्भुत कर्मकरि शल्य भूप हरषाय। कृतबरमाके सुरथ पै भयो बिराजत जाय ॥ बन्धु मरणलखि श्वेततब अति सक्रोध ह्वैडाटि। शल्य आदिभटसातके तुरित दये धनुकाटि ॥ सोरठा ॥ तब तेते धनु डारि और और धनु गहत भे। श्वेत क्रोध बिस्तारि काटि दये तेऊ तुरित ॥ सबते गहि गहि शक्ति तजेश्वेत पै मरण हित। श्वेत शक्तिकी पंक्ति शरसों काटी बीचही ॥ तोमर ॥ तबश्वेति अतिसै क्रोधि। ध्रुवमरण परको शोधि ॥ नृपरुका रथकेकाय। शर हने अतिदृढ़घाय ॥ शरलगे नृप मुरछाय। गिरिपरोचेत गवाय ॥ लखि नृपहि मुरछितसूत। रथ दूरिलागो धूत ॥ तब श्वेत करिअति गौर। जेरहैं षटभट और ॥ हय सूत धनुध्वजतासु। शरमारि काटे आसु ॥ फिरि शल्यपै करिकोप। भो चलत गहि बधचोप ॥ तब भयो हाहाकार। तो सैन मध्य अपार ॥ दोहा ॥ शल्य भूपपै रिस भरो श्वेतहि आवत तेखि। भयो मरण निजु शल्य को यह तोसुत अवरेखि ॥ तब आगेकरि भीष्म कहँशल्यहि पीछे डारि। लरत भये सब शल्यकहँ यमके मुखते वारि ॥ सोरठा ॥ नृप ताक्षण तेहि खर्बभयो युद्ध अतिसै तुमुल। तो सुतसर्ब सगर्ब पाण्डव सर्ब सबर्ग सों ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ यहि बिधि जूटि अधर्म किय युद्ध जिमि ते

सकल। सो सब युद्ध सुकर्म पृथक्पृथक् संजयकहो ॥ संजयउवाच ॥चौपाई॥ शत सहस्र क्षत्री भयत्यागे। सेनापति श्वेतहि करिआगे ॥ भरे बीर-रस आनँद पागे। तोसुतको बल देखनलागे ॥ भिरे हांकि दुहुंदिशि के योधा। करि मारुत की गति अवरोधा ॥ भीष्म श्वेत भिरि गौरव कीन्हें। अगिनित रथ भटबिनु करिदीन्हें ॥ शिर असंख्य शत्रुन के काटे। रण मण्डल रुण्डन सों पाटे ॥ अगिनित गजहय रथबिनुभटके। व्याकुल फिरे चहूं दिशि भटके ॥ लगेबाण कितने भट गिरहीं। उठैं सँभारि हांकि फिरि भिरहीं ॥ लगे बाण भट गिरैं गजनते। जिमि कपिके गण गिरे कुजन ते। बिनाशीश के बहुभट बांके। इत उत फिरैं बीर-रसछाके ॥ बाहुकटे भट कितने डोलैं। हटैं न नेकु सामुहेबोलैं ॥ गज ते गिरत सांकरणि अटके। इत उत फिरैं बीरबहु लटके ॥ कटैंबाजि गज रथ भट केते। महिपे खरे लरें जयहेते ॥ रहे न बिनुक्षत के भट एकौ। बच्यो न श्रोणित सों थरनेकौ ॥ कितेबाण धनु ध्वज दुहुंदलके। कटेकटे गज हयके हलके ॥ महाराज सुनिये दुहुं दलमें। सुभट असंख्य कटे तेहि पलमें ॥ अद्भुत युद्ध भयो तहं राजा। कहैं कहांलों सकल समाजा ॥ दोहा ॥ इत भीषम उत श्वेत यदोऊ प्रबल अमान। उभै सेन मथिसेश-रण रोपे प्रलय महान ॥ बीरश्वेतके शरण सों ह्वै ब्याकुल भयपाय। हमहिं आदि कितने रह शरके बाहेरजाय ॥ तिनके जीवन दानिभे भीपम अचल उतंग। उतके ऐसे भटनको श्वेतशैल अविभंग ॥ गुरुतोमर ॥ बर धनुष के सन्धानसों। नभ छाथदीन्हों बणसों ॥ रविपरे देखि न देरलों। घिरि मघाके घनघेरलों ॥ अति शब्दमढ़ि धनु बाणके। पथ पूरिदीन्हे कानके ॥ तहँ टेरबो रण ठानको। नहि परो सुनि निज आनको ॥ दोहा ॥ पाण्डव के हित श्वेत अरु कौरव के हितभीष्म। किये युद्ध अतिसै तुमुल जो देखे अति भीष्म ॥ भीपम मारत तेहि दिवस पाण्डव की सबसैन। श्वेत जौन बारण करत महाबीर गजजौन ॥ चौपाई ॥ निज दलमर्दत श्वेतहि देखी। पिता तुम्हारभीष्म अतितेखी ॥ बाण बिशाल श्वेतपैडारे। जे तरु पाहन बेधन हारे ॥ तब भीपमहि भटश्वेत प्रचारे। बाण अमान अनगिने मारे ॥ भीष्महि श्वेत श्वेत कहँ भीपम। हने असंख्य बान बरभीष्म ॥ दोऊ बिधिवत धनुबिधि सीखे।

दोऊ बर धनुधर मैलीखे ॥ दोऊ धनु बिधि सिधि के शीक्षक । दोऊ निज निज जयके ईक्षक ॥ दोऊ अस्त्र अमोघ प्रहारैं । दोऊ अस्त्र अस्त्रन सों वारैं ॥ दोऊ बीर सिंहसम गरजैं । लगे अनेक बाणनहिं लरजैं ॥ अस्त्र अमोघ भीष्म के चीन्हें । तिनकहँ श्वेत व्यर्थ करि दीन्हे ॥ यहगुणतो सुत नृपदुर्योधन । गर्बितआय भिरो लैयोधन ॥ तबतजि भीष्महि तिनसों लरिकै। तिन्हैं पराजितकरि मुदभरिकै ॥ फिरि भट श्वेत भीष्मसों भिरिकै। लाग्यो लरन पूर्बवत थिरिकै ॥ वृत्रबिडौजा समते दोऊ। लरत भये नहिं हारैकोऊ ॥ श्वेत सात शर अतिअनिआरे। कोप भीष्म के तनमधि मारे ॥ तबतो पिताभीष्म अतिरोखे । मारेताहि बाण दश चोखे ॥ श्वेत हने तब गहि प्रण मनमें । बाण पचीस भीष्म के तन में ॥ दोहा ॥ अतिअद्भुत यहकर्मकरि बिहँसि श्वेतभट चण्ड। दशशरसों दशधा कियो भीषमको कोदण्ड ॥ काटिधनुष फिरि शीघ्रगहि अन्यबाण उद्दण्ड । तालध्वज बर भीष्मको करतभयो द्वैखण्ड ॥ केतुपतत लखितो तनय करतभये अनुमान । करि निजबश अब भीषमहि बधत श्वेत बलवान ॥ शंख बजावत भेमुदित पांडवभट समुदाय। निज सुभटन सों कहत भे दुर्योधन अनखाय ॥ कुरुकुल को रबि भीष्म अब होन चहत है अस्त। शिथिल पराक्रम ह्वै भये श्वेतदाहसों ग्रस्त ॥ चौपाई ॥ दुर्योधन नृपकी सुनिबानी । भिरे आइ योधा अभिमानी ॥ कृतबरमा बाह्लीक नरेशा। चित्रसेन अरुशल्य सुभेशा ॥ जरासन्ध कोसुत भटभारी । अरुतो सुतबिकर्ण धनुधारी ॥ अरुशल बीरधीर बलवाना । भिरिभे हनतअनेक बिधाना ॥ तिनसों भिरोश्वेत तब तैसे ॥ भिरैबायु धन बनसों जैसे ॥ क्षणमें तिन्हैं बिमुख करियोधा । बहुरि भीष्मसों भिरो सक्रोधा ॥ अतिकरलाघव कीबिधि ठाटे । शरसों धनुष भीष्मको काटे ॥ तबभीषम अतिरिस बिस्तारी । सोधनु त्यागिऔर धनुधारी ॥ बहुशर हनेश्वेतके तनमें । तब भटश्वेत कोपि अतिमनमें ॥ बाणवृष्टि भीषमपै कीन्हे । कुरुपति कहँशंकित करिदीन्हे ॥ हतेभये भीषम यहजाने । पांडव गर्ब सर्ब हरषाने ॥ सो लखिकै भीषम अतिरोखे । तजेश्वेतपै बहुशर चोखे ॥ भीषम जितनेबाण चलाये । शरसोंते सबश्वेतबराये ॥ फिरि भीषम कोबरधनु सोऊ । काटो श्वेतलखो सब कोऊ ॥ तुरितहि भीषम सो धनु त्यागो । लै धनु और

महा रिसपागो ॥ सावधान शर योजित करिकै। भये तजत धनु बिधि अनुसरिकै ॥ दोहा ॥ चारौंहय शरचारि सोंद्वैशरसों ध्वजतासु। एकबाण सों सारथिहि भीषम काटो आसु ॥ मरे सूत हय तब प्रबल योधा श्वेत अमर्ष। रथते कूदिखरो भयो महिपै भरोअमर्ष ॥ महा रथिन कोश्रेष्ठ तिहि भीषम बिरथ निरेखि। तीक्षणबाण अनेकसों हनतभये अवरेखि ॥ महिखरी ॥ तबश्वेत करिअति क्रोधनिज धनुबाण रथपै डारिकै। मणिहेम मण्डित शक्तिबर यमदण्ड समतेहि धारिकै ॥ इमिहांकि बोल्यो भीष्मसों अबजाहु मतिकहुं भागिकै। बपु खिन्न तनसों भिन्न प्राणहि करति यह उरलागिकै ॥ यहिभांति कहिसो शक्तिमारी भीष्मपै बलभूरिकै। लखि सुवनतो सबकिये हाहाकार अतिभय पूरिकै ॥ तेहिज्वलत उलका सदृश आवत देखिवेग महानसों। हनिबीचही नवटूक कीन्हो भीष्मबर बसुबाणसों ॥ निजशक्ति व्यर्थनिरेखि श्वेत समर्थ भट अतिक्रोधिकै। लैगदा बज्र समान घनसम गरजि बढ़ि बिधि शोधिकै ॥ सोभीष्मपै भो तजत तासुप्रभाव बिदते भीतिकै। रथत्यागि महिपै गयेशीघ्र प्रभाव ताकोरीतिकै ॥ सोगदा रथपै परतरथ ध्वजसूत हय भस्मित भये। तबधाय तोसुत भूपभीष्महि और रथपर करिलये ॥ चढ़िऔर रथपैभीष्म धनुटंकारकरि सुखमामये। चलि मंद मंद अनँदयुत बढ़ि श्वेतके सम्मुख गये ॥ दोहा ॥ ताक्षण नभब्राणी भई ऐसेमें अबयाहि। करि उपाय भीषमबधै यहक्षण निर्मित चाहि ॥ तहांबिरथ श्वेतहि निरखि पार्षत सात्विकि भीम। धृष्टद्युम्न अभिमन्यु अरु केकय पतिभट भीम ॥ धृष्टकेतु येमहारथ चलेश्वेतपै धाय। बीचहि तिनसों भिरतभे द्रोण शल्य कृपआय ॥ इमि आड़ेते तिन्हैं जिमि बायुबेग कोशैल। महतयुद्ध भिरिकरत भे जीति तरुणि केछैल ॥ सोरठा ॥ लखि इनको अवरोध श्वेतखड्ग गहिगर्ब युत। अतिप्रगल्भ करि क्रोध काटिदयो धनु भीष्मको ॥ चोपाई ॥ तबभीषम अति रिस बिस्तारे। गहिधनु बाण चढ़ाइ सुधारे ॥ भीमादिक सुभटनके तनमें। बहुशर हने पकरिप्रण मनमें। तबप्रचण्ड शरकरमें लीन्हों। ब्रह्ममंत्रसों मंत्रित कीन्हों ॥ ताकोहने श्वेतपै कैसे। बज्रहिदण्ड वृत्तपै जैसे ॥ सो शर कवच भेदहिय भेदी। गोधरणी मधिपर दलखेदी ॥ अरिदल तमको शूरअमाना। श्वेतगिरी तबह्वै गतप्राणा ॥ सो लखि पांडव अतिशै शोचे। तो

सुत सिगरे चिन्ता मोचे ॥ दुश्शासन आनँद सों छाये । जङ्घमजय दुन्दु-भीबजाये ॥ पांडव अति अमरष सों पागे । थिरि भिरियुद्ध करण फिरि लागे ॥ श्वेतमरण कीअति प्रियबानी । सुनि धृतराष्ट्र कहो अनुमानी ॥ जबमरि परोश्वेत रणधीरा । तबपांडव पांचाल प्रबीरा ॥ किये कहा सो संजयभाषो । सुनिबेको ममन अभिलाषो ॥ पांडव रहिविराटके घरमें । लहेबहुत सुखकहिये धरमें ॥ ताके दोयतनय मरवाये । संजय कहो लाज कछुपाये ॥ हम अनुमानि कहैंतुम मानो ॥ अबअनरथको मूलमिटानो ॥ पारथ भीमकोपि यहिकारण । भरिहैं महिश्रोणित केधारण ॥ दोहा ॥ हम गान्धारी कृष्ण कृप भीष्म द्रोण बलिराम । बिदुर व्यास को कहो नहिं मानो मोसुत क्षाम ॥ सब पण्डव कोमन रह्यो राखैं रीतिसदैव । दुर्योधन हठिरणरचे करैकहा अबदैव ॥ संजयउवाच ॥ महाराज तेहिदिवश कोतब बीतो युगयाम । भयेप्राप्त तीजो पहर भिरे फेरि बलधाम ॥ कृतबरमा सहशल्य कहँदेखि शंख बरबीर । सेवित सुरथ समूहसों भरो कोप रण-धीर ॥ दण्डपाणि समचण्ड ह्वै टंकारत कोदण्ड । चलोशल्यपै बेगसों गुणिकीबो द्वैखण्ड ॥ इमि शंखहि आवत निरखि जानिशल्य कोघात । सातभूप भट सिमिटिकै जुटत भयेहे तात ॥ जयत्सेन अरु बृहद्बल अरु कौशल्य नरेश । बिन्दभूप अनुबिन्दये महारथी भटवेश ॥ रूथशल्य को तनय अरुबीर जयद्रथ भूप । एकसाथ भिरिशंखसों कीन्हों युद्ध अनूप ॥ चौपाई ॥ घूमिघने घनगिरि पै जैसे । बरषत बारिबूंद तेतैसे ॥ बाण अनेक शंखपै मारें । सुभट शंख लखि रिसि बिस्तारें ॥ तिन सबके धनु सुखमा पाटे । सातक्षुर प्रमाणसों काटे ॥ धनुष समूह काटिभो गरजत । परदल भटगणके हियदरजत ॥ सोलखि भीषमअति रिस धरिकै । ताल सदृश धनुशब्दित करिकै ॥ चलेशंखपै घनरव कीन्हें । लखिसब पाण्डव अनरथ चीन्हें ॥ तब सत्वर अर्जुनबढ़ि आगे । भीषमसों रण बिरचनलागे ॥भिरे सिंहद्वैरण काननके । कुशल प्रहारकनख बाणनके ॥ परम प्रचण्डप्रगल्भ प्रचारैं । मारैंशर शरशरसेवारैं ॥ माच्यो कठिन युद्धतेहि पलमें । हाहाकार मच्योदुहुंदलमें ॥ तेहिक्षण शल्य गदालैकरमें । रथते उतरिशीघ्र चलिफर में ॥ बधेतिन्हैं जेमरदन पथके । घोरेचारि शंखके रथके ॥ असि गहिशंख स्वरथ परित्यागी । गेजहँ पारथ रणअनुरागी ॥ गुडाकेशसों युद्धबिहाई ।

भीषम भिरेद्रुपदसों जाई ॥ अगिनितबाण द्रुपदपरडारे । हय गज सुभट असंख्य सँहारे ॥ केरल मत्सदेशके योधा । सहसनहते भीष्मकरिक्रोधा॥ दोहा ॥ दहैघनेबनकों यथा लागि दवाग्निअमान । तथा पाण्डवी सैन कहँ हती भीष्मके बान ॥ तरुण तरणिकहँ ग्रीष्ममें जिमि न सकैलखिकोइ । तिमि ताक्षण तहँ भीष्मकहँ सक्यो न कोऊ जोइ ॥ व्याकुल पाण्डवके सुभट त्राता लहो न तत्र । ऐसे थरनहिं होन हे भीषमके शरयत्र ॥ भीषमको धनु देरलों रह्यो मण्डलाकार । हय गज भट कितनेकटे को करि सकै सुमार ॥ इतनेमें सन्ध्याभई भीषम युद्ध बिहाय । कुरुपतिकहँ मोदितकिये घनरव शंखबजाय ॥ तदनन्तर ते उभयनृप निजनिज डेरन जाय । किये अहारादिक क्रिया सहित सैन समुदाय ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिप्रथमयुद्धवर्णनोनामचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

दोहा ॥ निज सैनिक नृपभटन कहँ दैसुअहार सुपास । धर्म नृपति बन्धुन सहितगये कृष्णके पास ॥ रोला ॥ भीष्मको लखि कर्म चिन्तित धर्म प्रभुपै जाय । सुजय पैबो जानि दुरलभ कहतभे बिलखाय ॥ कृष्ण देखौ भीम बिक्रमभीष्म ममदल भूरि । दहत कच्छहि अग्नि जिमि तिमि दहत बाणन पूरि ॥ सुभटमम रणधीर सम्मुख भीष्मके जे जात । ज्वलनते प्रज्वलितके ढिग सलभ सदृश लखात ॥ बये लाखन रथी भीषम दिव्यअस्त्र चलाय । परमउग्र प्रभावसों नहिं बचतभट समुहाय॥ इन्द्र वरुण कुवेर यमनहिं सकै भीष्महिं जीति । ताहिजीतै कौनमहि पै जोरि जयसों प्रीति ॥ भीष्म जाकेओर तासों युद्धको प्रणठानि । होन चाहत सृष्टिमेंहम अनय अयकी खानि ॥ सुभट सम्बन्धी सुहित मम अर्थ मारेजात । तातताहू अर्थकोन समर्थलाभ लखात ॥ उदधि बिक्रम भीष्मको तेहिमध्य परिहरि सर्ब । अवशि ह्वैहैं मग्नअब नहिं बाचिहैं यहि पर्ब ॥ भीष्मकेसम अस्त्रबिद तोसखासों रणकर्म । लखतहैं मध्यस्थ समनहिं जानिये केहिमर्म ॥ करत कोमल युद्धयासों शत्रुपावत हारि । द्रोण भीषम करण कृपहैं जासुदिशि प्रणधारि ॥ एकभीम सुबीर भुज

बल सों लरत गहिचाव। हतैचौबिधि सैनबहुदे गदनकेगुरुघाव॥ एक भटके लरेऐसे मिलिहि कैसेजीति। भीष्म द्रोणादिकन सों जय अन्य दलकी ईति॥ आपु निरखौ गौरकरि ममसैनमें भटतौन। जलददावहि जिमिकरें तिमिशान्त भीष्महिं जौन॥ कृपाकरि अब करहु प्रभु निज कृपाको फलव्यक्त। राज्यलहि हमसर्ब जाते करैंचिन्ता त्यक्त॥ भाषि यहिबिधि कृष्णसों चुपरहे भूपति धर्म। कहतभे तबधर्म नृपसों कृष्ण ज्ञाता मर्म॥ भरत कुलमणि शोचत्यागो होहु धीरजधाम। अवशि लहिहौ राज्यअरि हति जीतिकै संग्राम॥ दोहा॥ धृष्टद्युम्न तब प्रीति रत सेना नाथ अनूप। हतिहि शिखण्डी भीष्मकहँ निश्चय मानोभूप॥ यह सुनि धर्म नृपालमणि बोलेबचन गँभीर। मम सेनापतिहौ सुतुम धृष्टद्युम्न रणधीर॥ यह सम्मतहै कृष्णको जीनोशत्रु समस्त। हम सबर्ग हैंतुव अनुग लेहोसुयश प्रशस्त॥ चैपाई॥ सोसुनिधृष्टद्युम्न हरषाने। बोले बचन बीररस साने॥ सुद्विज द्रोणके नाशन हेतू। निमित मोहिंकिये वृषकेतू॥ भीष्मशल्य कृप आदिक जेते। ह्वैहैं कालिह व्यथित सब तेते॥ कालिह सैनपै जययश लेहौं। सुभटन समर सिखापन देहौं॥ धृष्टद्युम्नकी बाणी सुनिकै। भूप युधिष्ठिर बोले गुणिकै॥ बिरचोक्रौंच व्यूह मनभायो। जो सुरगुरु सुरपतिहि बतायो॥ सोसुनि धृष्टद्युम्नमुद लीन्हें। क्रौंच व्यूहकी रचना कीन्हें॥ चोंचतासु अर्जुन धनुधरता। पर दल प्रबल बिदीरण करता॥ लैसँग रथीलाखदश साजे। द्रुपद भूप शिरकेथर राजे॥ कुन्तिभोजअरुचैद्य ससाजा। राजेचारुचक्षुह्वैराजा॥ सत्तरि सहस लाखदश भाये। योधाभये ग्रीवछबि जाये॥ एकार्बुद अरु बीससहस भट। सहहैं धर्मपीठिथर परगट॥ सुवन द्रौपदी के रणधीरा। अरु सात्विकि अभिमन्यु सुबीरा॥ बाह्लीक देशकेर धनुधारी। रथी अयुतसह भीम सुखारी॥ दक्षिण पक्षभये अरिमर्दन। गदा प्रहारक घनसम नर्दन॥ नकुलऔर सहदेवहि आदिक। अयुतरथी रणधीर प्रमादिक॥ सहबरवाम पक्षह्वैसोहे। धृष्टद्युम्न सेनापतिकोहे॥ दोहा॥ केकय सैन्य बिराटये जघन पालिहैं भूप। तीस सहस्र रथीनसह आयुधगहे अनूप॥ उभपक्ष अरुपुच्छकहँ करिआवृत बरबीर। गज सादी योधारहे धनुधारी रणधीर॥ क्रौंचव्यूह यहिबिधि बिरचि धृष्टद्युम्न

मतिमान। सूर्योदय निरखतरहे खरेधरे धनुबान ॥ चौ० है ॥ क्रौंच ब्यूह बिरचित लखिराजा। दुर्योधननृप सहित समाजा ॥ द्रोणाचारयके ढिग जाई। भरेमोद इमिकहे बुझाई ॥ ये सिगरे ममभट भटनायक। सदल पांडवन जीतन लायक ॥ तिन्हैं सहित तुममम जयहेतन। रक्षेहु निति भीष्महिं रहिजेतन ॥ संजयउवाच ॥ तदनु सुभीष्म द्रोणसह चावन। बिरचे महाब्यूह मनभावन ॥ सुभटअसंख्य रथिनसह भीषम। आगेचलत भये अतिभीषम ॥ भीष्महिं रक्षत द्रोणाचारय। चले अनेक रथिनसह आरय ॥ सुभट समूह सहित बलभारे। शकुनि द्रोणके हैं रखवारे ॥ भूरिश्रवा शल्यसह राजा। अरु भगदत्त बिन्दु सह साजा ॥ अरु अनुबिन्दु आदिभट जाने। रहे बामदिशि आनँदसाने ॥ सोमदत्त अरुबीर सुशरमा। अरुकाम्बोज अधर्ष अभरमा ॥ अरु अयुतायु श्रुतायु सुदक्षिण। अगनित भटन सहित हे दक्षिण ॥ कृप कृतवरमा अश्वत्थामा। सात्वत आदि भूपबर सामा ॥ सुभट असंख्यन सह धनुधारी। रहेपीठिरक्षक रण चारी ॥ यहिबिधि बिधिवत ब्यूह बनाई। दुर्योधननृप ओजबढ़ाई ॥ सुभट बन्धुगण सहितसोहाते शंखबजावतभे मुदराते ॥ दोहा ॥ सोसुनि पारथ कृष्णप्रभु सहित सुभट समुदाय। शंख बजावतभे मुदित सरस शुभद सुखदाय ॥ बाजे बाजन गहगहे दुहूंओर तहँभूप। नभमहिलौं पूरितभयो शब्दअसह्य अनूप ॥ तबनिज सुभटनसों कहे दुर्योधन बलधाम। लरहु शीघ्र हतिपाण्डवन लेहुसुजस अभिराम ॥ सोरठा ॥ सोसुनि सुभट अमान तजे पाण्डवनपै बिशिष। चलन लगेतब बाण दुहूंओरसों भूपमणि ॥ चौपाई ॥ लागे चलनबाण अनिआरे। सर्पसदर्प सदृशभयभारे ॥ बीर बिरत्वलखावन लागे। परदल दन्द मचावनलागे ॥ बढ़ि बढ़ि इत उत डाटनलागे। रथ हयधनु ध्वज काटनलागे ॥ शरबर इत उत फरकन लागे। लगि कुण्डलपै ठरकन लागे ॥ बहुशिर कटिभुज छेदन लागे। बहु हिय उदर बिभेद न लागे ॥ बहु हययूथ विदारण लागे। बहुगज गरट सचारन लागे ॥ बहु भट महिपै लोटन लागे। बहुगिरि भूमि खरोटन लागे ॥ बहु भटघायल ऊबन लागे। बहु श्रोणित मधि डूबन लागे ॥ बहुभट घायल घूमनलागे। बहुत खरे ह्वै झूमन लागे ॥ बहु भट भटन प्रचारन लागे। तकि तकि बाणन मारण लागे ॥ ऐसो भीषम युद्ध निहारी।

धनुटंकारि भीष्म धनुधारी ॥ भीमादिक सुभटन पैरोखे। तजत भयेअ-
गनित शरचोखे ॥ यहि बिधिवर कर लाघव कीन्हें। व्यूह भेद भेदित
करि दीन्हें ॥ अर्जुन निजदल अर्दित देखी। कहे कृष्णसो अतिसैते-
खी ॥ तात भाष्म मम व्यूह विमर्दत। गहेगर्व बारिद सम नर्दत ॥
अब बिलम्ब मतिकरहु गोसाईं। ताढिग चलहु पौनकी नाईं ॥ दोहा ॥
कहे कृष्ण अब होहु तुम यत्नवान दृढ़धाय। तो रथ भीषम के सुरथ सों
हमदेत मिलाय ॥ इमि कहि प्रभुयहि भांतिगे चीरि सुभट समुदाय ॥
जल प्रवाह में मीनजिमि पीनमीन कढ़िजाय ॥ यथा मत्तद्विप गहनबन
मथि तरु अर्दत जात। तिमि सुभटन मर्दत गये भीषम के ढिगतात ॥
धृष्टद्युम्न सात्वकि सहित अरु अभिमन्यु सुछत्र। सुवन द्रौपदी के गये
अर्जुन के सँग तत्र ॥ चौपाई ॥ यहिबिधि पार्थहि आवत देखी। भीषम
हियो रोषसो भेषी ॥ विदित बोर सुखमासों छाये। रथ बढ़ाइ संमुख
चलिआये ॥ महा रथिनको शीक्षक कूजा। मिरै पार्थ सो को असदूजा
बढ़ि भीषम अर्जुनहि प्रचारे। हने बाण सत्तरि अनियारे ॥ चौसठि शर
दुर्योधन मारे। द्रोणाचार्य पचीस प्रहारे ॥ हने विकर्ण तीनि शरचोखे।
अश्वत्थामा साठि अनोखे ॥ तीनिबाण आर्त्ताइनि दीन्हें। तब सगर्ब
पारथ रिसि कीन्हें ॥ शर पचीस भीषम परघाले। कृपाचार्य पै नवशर
आले। दुर्योधन पै अतिअनियारे। पांच बाण हनि गरजि निहारे ॥ अ
श्वत्थामा के गुरु तनमें। हने साठि शर कोपित मनमें ॥ आर्त्ताइनिपैत्रय
शर छाड़े। तीनि विकर्ण सुभट पै माड़े ॥ द्रोण द्रुपद के सुतसों भिरि-
कै। लागेकरन युद्ध तहँ थिरिकै ॥ फिरि भीषम करलाघव लीन्हें। मारे
असीबाण बर चीन्हें ॥ तबतो तनय हँसे वरिआरे। सुनि पारथअतिरिस
बिस्तारे ॥ पैठितुरित दलमधि अतिकोपे। भटसंहारि प्रलय आरोपे ॥
हाहाकार मच्यो तो दलमें। पार्थहते अगनितभट पलमें ॥ दोहा ॥ तब
दुर्योधन दुखितह्वै कहे भीष्मसों बात। पारथ मर्दत ममबलन तुम्हरे
देखततात ॥ तुम्हरेकारण करतभट मम हित रत रणधीर। लरत न पा-
रथसों लखत खरो मौनह्वै बीर ॥ सोरठा ॥ कछु उपाय करितात हतो
पार्थ कहँ शीघ्र अब। भीषम सुनि यहबात क्षात्रधर्म कहँ धिक कहे ॥
चौपाई ॥ गयेपार्थके रथप्रतिरथलै। दुर्योधनको सुजय अरथलै ॥ द्रोणतनय

दुर्योधन राजा। अरु बिकर्णये सहित समाजा॥ रक्षण हेतु भीष्म के पीछे। ठाढ़े रहतभये जयईछे॥ सात्विकि आदिबीर धनुधारी। हैं पार्थहि रक्षत रणचारी॥ भीषम पार्थहि नवशरमारे। भीष्महि दशशर पार्थ प्रहारे॥ फिरि शीघ्रगशर सहसचलाई। दीन्हें दशदिशि जाल बनाई॥ बाणजाल बाणनसों भीषम। काटिहने शर अहिसम भीषम॥ पार्थहिं भीष्म भीष्म कहँ पारथ। अगिनित शर मारेगुणि स्वारथ॥ दोऊबाण अनगिने मारें। दोऊ बाण बाणसों बारें॥ दोऊ बीर बिदित धनुधरता। दोऊ अद्भुत संगरकरता॥ दोऊ रथ बर इतउत फेरें। दोऊहतिबे की गति हेरें॥ दोउन के रथ अरु धनदोऊ। मण्डल समदरसे सब कोऊ॥ दोऊ शरपंजर करिडारें। दोऊ बाणन मारि विदारें॥ दोऊहनें न दोऊ मोहैं। दोऊ भरे रुधिरसों सोहैं॥ दोउन के हैं बाणनि भेदे। मनसम इतउत फिरत अखेदे॥ दोऊ घनसम धनुटंकारैं। दोऊ गर्व भरे हंकारैं॥ दोहा॥ इक धनुकी धुनिसों दई दोऊ दशदिशि पूरि। सो थर तरकस सो करो दोऊ तजि शरभूरि॥ तहँ प्रभुके उरमधि हनेभीष्म तीनि बरबान। लसेकृष्ण पुष्पित तरुण किंसुक सुतरु समान॥ तब अर्जुन अतिकोप करि तीनिबाण सन्धानि। भीषम के सार्थिहि हने चाप श्रवणतक तानि॥ जेजाके रथसूतहय धनुध्वजनमें बान। मारे तिनके तिनहिं तिमि मारे ते मतिमान॥ भीष्म पार्थ भिरिभांति यहि कीन्हों युद्ध उदण्ड। दोऊ अनुपम परमभट दोऊ प्रबल प्रचंड॥ चढ़े बिमानन सुरनगण देखि सुयुद्ध बिहार। करीप्रशंसा भीष्मअरु अर्जुन कीबहुबार॥ सोरठा॥ यहिबिधि युद्धबिधान सुनि धृतराष्ट्र कहैंतहां। सुनु संजय मतिमान दैवचहै जो सोकरै॥ तीनिलोक के जौन भीषम तासों पार्थ भिरि। इबिधि लरे यहबैन सुनत होत बिस्मय महा॥ जयकरी॥ धृष्टद्युम्न अरु द्रुपद अमान। कैसेलरेकहोमतिमान॥ सुनि बोलेसंजय मतिऐन। भूपति कहो न ऐसेबैन॥ तीनि लोकमें ऐसोकौन। लरिजीतै पारथ कहँजौन॥ धृष्टद्युम्न कहँ द्रोण अमान। बेधत भये मारिबहुबान॥ मारि भल्ल शरबर दृढ़धाय। रथसो सूतहि दयेगिराय॥ धृष्टद्युम्न तब रिस बिस्तारि। मारे नब्बे बाण प्रचारि॥ तब करि द्रोण क्रोध बिकराल। करिदीन्हें सबदिशि शरजाल॥ फिरि लीन्हें शरबरअतिघोर। बज्र

समान अमान कठोर॥ पाण्डव लखि तेहि शरको रूप। हाहाकार किये सुनु भूप॥ धृष्टद्युम्न लखि डरे न नेक। रहे अचल सम खरे सटेक॥ काल्दण्ड सम आवत देखि। काटो ताहिशरनसों तेखि॥ सोशर बीचहि कटत निरेखि। हरषे पाण्डव सुदिन सरेखि॥ धृष्टद्युम्न तब रिस उर आनि। द्रोण बीरको बध अनुमानि॥ तजी शक्ति अतितीक्षण पीनि। द्रोण काटि तेहि कीन्ही तीनि॥ फिरिकाटो हनिबाण कराल। धृष्टद्युम्नको धनुष बिशाल॥ दोहा॥ धृष्टद्युम्म तब गुरुगदा गहिकर अतिशय कोप। तजो द्रोणपै द्रोणके नाशन को लहिचोप॥ मारि बाणबर सोगदा बीचहि काटि अचार्य। धृष्टद्युम्न के गातमधि हनेबाण बहुआर्य॥ सोरठा॥ धृष्टद्युम्न ह्वै चण्ड तबहिऔरको दण्डगहि। पांच बाणउद्दण्ड हनेद्रोण के गातमें॥ चौपाई॥ दोऊ श्रोणित मये अमेहे। पुष्पित किंसुक तरुसम सोहे॥ फेरि द्रोण काटतभे हनिशर। धृष्ठद्युम्न भट बर को धनुबर॥ कर लाघव करिकै अतिहरषे। धृष्टद्युम्न भटपर शर बरषे॥ मारि पांचशर बर धनुधारी। बधेसूत अरुहय रथचारी॥ फिरिहनि बाण धनुष बरकाटे। करलाघव कीसुखमा ठाटे॥ बिरथ बिधनु रिपुबचन नजासों। हनत गदाभो बरभट तासों॥ सोऊगदा बाणसों छेदी। गरजे द्रोणाचार्य्य अखेदी॥ तबगहि खड्गचर्म अतिभारी। रथतजि धृष्टद्युम्न प्रणधारी॥ जबसों चलेद्रोणपै तैसे। चलैसिंह करिबरपै जैसे। तहांद्रोण अतिपौरुष कीन्हे। बाणन मारि न आवनदीन्हे॥ थिरि बीचहि नृपसुत भट चीन्हे। सगरे बाण ढाल परलीन्हे॥ धृष्टद्युम्न कहँ यहि बिधि देखी। भीम महारथ अतिशयतेखी॥ आइबेगि सोंगुरुहि प्रचारे। मारेसात बाण अनिआरे॥ धृष्टद्युम्न कहँअन्य सुरथपैं। थापिलगे बिहरण रणपथपैं॥ तब दुर्योधन कहे सुगतिसों। भट श्रुतायु कालिंग नृपतिसों॥ सेन सहित तुमसत्वर-जाई। करौ सहाय द्रोणकी भाई॥ दोहा॥ सोसुनिकै कालिंग पति नृप श्रुतायु सहसैन। जाइ भीमसों भिरतभो बरषत बाणसचैन॥ धृष्टद्युम्न कहँत्यागि तब निजरथ द्रोणचलाय। द्रुपद बिराट महीपसों भिरतभये हरषाय॥ सोरठा॥ धर्म नृपति केपास धृष्टद्युम्न तब जातभे। बिरचे युद्ध बिलाश भीमश्रुतायु महारथी॥ तबधृतराष्ट्रमहीप कहेकहौ संजयसबि-धि। किमि श्रुतायु कुलदीप लरो भीम भट प्रबलसों॥ तोटक॥ नृपजो

सुनिबो अभिलाषत भे। सुनि संजय सों इमि भाषतभे॥ दुर्योधन को अनुशासन लै। सहसैन श्रुतायु शरासन लै॥ जब सों दुर्योधन के तट सों। चलिगो भिरिभीमहाभटसों॥ निहकंचुक ब्यालसमान बने। शर भीमहिसो तेहिभीम हने॥ दोहा॥ केतुभंग नरनाह तब सहनिषाद समुदाय। नृपश्रुतायु केसाथबढ़ि भिरो भीम सों जाय॥ भानुमान नृपचैद्यपति सोऊबढ़ि सहसैन। भिरोभीमके भटनसों सुनि निज नृपके वैन॥ रथ हय अगिनित सहस्र अरु मैगल अयुत बलिष्ट। पैदरसुभट असंख्य सहभेते समर प्रबिष्ट॥ बोरठा॥ इनसों भिरे सचाय भीमसेन के साथ थिरि। सहितसैन समुदाय चेदिमत्स कारूषपति॥ चौपाई॥ उभैओरके सुभट समाजा। कठिनयुद्ध कीन्हों भिरि राजा॥ पदचारिण सों भिरे पदाती। भिरे रथिन सों रथी बिघाती॥ भिरे अश्वसादी हयसादी। भिरे गजस्थ गजस्थ प्रमादी॥ किये सुरासुर सँगर जैसें। लरतभये तहँ तेसब तैसे॥ रुधिरमास को करदम कीन्हें। निजपर सुभटन काहूचीन्हें॥ कितने साथहि अस्त्रप्रहारे। साथहि गिरिभे तनसों न्यारे॥ साथहि चढ़े बिमानन हरखें। संग अप्सरनके रण परखें॥ कितने बहु प्रति द्वन्दिन मारे। पुरुष सिंहरण बिपिन बिहारे॥ कितेमरें बहुसुभटन ज्वैकै। कितने गिरेंअधमरे ह्वैकै॥ कितने अस्त्रलगेहूं ओलें। कितने शीश कटेहूंडोलें॥ कितने निजसम सुभट निहारी। मारेंअस्त्र अमोघ प्रचारी॥ कितने योजिचापशरडाटें। हटें न शीश शत्रुके काटें॥ कितनेबिनातके शरत्यागें। सन्मुख आइपरें तेहिलागें॥ येहिबिधि घोरयुद्ध तेहिक्षणमें॥ भयो भूप मणिगुणियेमनमें॥ तबउतकेभटअरदित ह्वैकै। गयेपिछिलिबलधीरज ग्वैकै॥ भीमसेन रण कर्कश गाढ़ो। रह्योरथस्थ अकेलो ठाढ़ो॥ दोहा॥ महारथी मणिभीम तहँ करि अतिकोप कराल। कालिंदी दलमधि करी बाणवृष्टि तेहिकाल॥ चौपाई॥ तबश्रुतायु कोसुत धनुधारी। शक्रदेवनामक भटभारी॥ बाणअनेक भीमपैडारे। भीमताहि अगिनित शरमारे॥ तबतिहि हतेभीमके रथके। बाजी गुणि करता अनरथके॥ हयन मारि निजसुदिन निहारी। भयोहनत बहुबाण प्रचारी॥ तेहिलखि भीमक्रोध बिस्तारे। गदा आयसी फेरि प्रहारे। लागति भईगदा तेहिक्षणमें। सूत ध्वजा नृपसुतके तनमें॥ मरिध्वज सहते गिरे गिरैजिमि। युग कपि तरु

संगगिरिबरते तिमि ॥ निजसुतकोमरिबो लखि राजा । नृपश्रुतायु सह सैन समाजा चैद्यनिषाद सदल भरि रिसि सों । घेरि लये भीमहि चहुं दिशिसों ॥ घेरि बाण बर मारणलागे । मारहु धरहु पुकारन लागे ॥ तबभट भीमगदातजि करते । गहिअसि चर्मकूदि रथबरते ॥ कठिनकराल कोपसों पागो । सुभट समूह सँहारण लागो ॥ लखिश्रुतायु अतिरिस सोंक्षायो । अति शीघ्रग शरएक चलायो ॥ सोशर भीम खड्गसों काटो । गजहि सिंहजिमि तिमितेहि डाटो ॥ फिर श्रुतायुनृप रिस करि मारे । चौदह तोमर अति अनिआरे ॥ भीम पराक्रम भीमअखेदे । असिसों बीचहि तिनहूं छेदे ॥ दोहा ॥ इतनेही मेंचैद्यपति भानुमान नृपस्वरथ । धनु टंकारत भीमके संमुख गयो गजरथ ॥ गरजि सिंहसम भीम तब तापै चलेसबेग । हनेचैद्यनृप बाणबहु रुक्यो न सुभट असेग ॥ दीह द्विरद के रदनपै कूदिसुपद धरिधीर । जायखरो भोजहँ रह्योभानु मानभट बीर ॥ सोरठा ॥ निजढिग भीमहि देखिभानुमान इमि जकिरह्यो । सिंहहि निकट निरेखिरहै मूंदिचख द्विरदजिमि ॥ गुरुतोमर ॥ तहँ भीमसेनहि देखिकै कालिंग पतिअति तेखिकै ॥ गुरुशक्ति मार्‌यो तानिकै । तेहिभीम आवत जानिकै ॥ तरवारि तीक्षण बाहिकै । द्वैकरे बीचहि चाहिकै ॥ फिरि चैद्य नृपको डाटिकै । शिरझेलि दीन्हे काटिकै ॥ सोरठा ॥ भीमसेन बलवान भानुमान कहँ बिबिधिबधि । करिकसीस किरबाण हनेद्विरदके शाशमधि ॥ दोहा ॥ लगेखंग चिक्कार करि गिरतभयोगजराज । प्रथमहिकूदिगयो अनत भीमसुभट शिरताज ॥ चौपाई ॥ कूदिजाइ महिपै असिधारी । भीमसेन दुर्मद रणचारी ॥ आप्लुत सूत उष्णा तहिआदी । ग्रामभेद करि घनसम नादी ॥ कितनेके शिरभुज कितनेके । काटेझपटि सुकटि कितनेके ॥ काटेदपटि उरूकाहूके । काटे गिरह गुल्फ काहूके ॥ कितनेके धर उरथर काटे । कितने भटबरके करकाटे ॥ उदर बिदारे भटअगिनितके । फारेचर्म पाणि अगिनितके ॥ द्विरद असंख्य अरदि करिदीन्हें । कितने अपग अकर करिदीन्हें ॥ अद्भुतबिक्रमकरि इमिरणमें । हतीअसंख्यसैन तेहि क्षणमें ॥ मथैग्राहबर लघुशर जैसें । भीमसेनदलमरदो तैसें ॥ चपल प्रबल भटइमि बिरुझानो । कालचक्रसम तहांलखानो ॥ भीमबाहगिरिते संचरिता । बहीतहां श्रोणितकी सरिता ॥ तुङ्गबाजि गजराज नरशके ।

रुण्ड मुण्ड अरुहाथ चरणके ॥ अंग रथनके ध्वज धनुबाना। शक्तिगदादिक आयुध नाना ॥ कटेगिरे तहँपरे अनेरे। तिन्हैंयाद समता मधिहेरे॥ हय गज रथ भट तेहिमधि धावै। तेसब तरणहार समभावै॥ दोहा ॥ लगे धकामरि भूमिपै गिरे अनेकन बीर। अगिनित गिरि दबि चरणतर गेतन तजि यमतीर ॥ इमि अरदित निजसैन लखि नृपश्रुतायु अनखाय। भीष्महि लै निजसैनमधि भिरो भीम सोंजाय ॥ ताहीक्षण रथलै गयो रथी अशोक सुधीर। तापै चढ़िकै सिंहसम गरजो भीम सुबीर ॥ चौपाई ॥ रथचढ़िनृपसोंकह्यो रिसाई। अबरहु खरो न जासि पराई ॥ यहसुनि नृप श्रुतायु अतिरोखे। मारतभये बाण नव चोखे॥ भीमसेन तबधनु टङ्कारी। हने सातशर प्राण प्रहारी ॥ तिनके लगेश्रुतायु नरेशा। गसुरलोक त्यागि यहभेशा ॥ सत्यदेव अरुसत्य सुनामी। ह्वे श्रुतायु केभट अनुगामी ॥ भीमसेन अति गौरव लीन्हें। ताक्षण तिनहूंको बधकीन्हें ॥ तब निषादपति सन्मुख आयो। केतुमत्त जो भटबर गायो॥ तीनि बाण अति तीक्षण गणिके। भीमसेन ताकेउर हनिकै ॥ तुरिततादि यमलोक पठायो। गरजि सगर्ब सुशंख बजायो ॥ तब कालिंग भूपके योधा। चैद्य निषाद बीर करिक्रोधा ॥ तेसब सिमिटि भीमसों भिरिकै। युद्ध करण लागेतहँ थिरिकै॥ शक्ति परश्वध शरअनिआरे। गदा आदि बहु आयुध डारे॥ तबपाण्डव गहि गदा बिशाला। रथसों कूदि भयो बिकराला॥ सत्ताइससै सुभट सँहारे। तबभागे बहुभट भय भारे॥ ह्वै बिनु स्वामि भगे गजकेते। बहुनिज दलभट मरदे तेते॥ भागिकिते भटफिरे लजाई। कितने बहुरै लाज बिहाई॥ दोहा ॥ कितने निजरथ थिरिरहैं भिरैंकिते बलवान। होहिंसबैते ज्वालढिग प्रापत सलभ समान॥ तहांकठिन तरवारिलै भीमसेन उमदाय। हनेकौरवी सैनके अगिनितभट समुदाय ॥ ताही क्षणसेनाधिपति धृष्टद्युम्न हरषाय। मत्स्य चेदि कारूष सों कहे लरौफिरिजाय॥ महिखरी ॥ सेनाधि पतिके बचन सुनिते सुभटफिरि भिरिलरतमे। बहुशस्त्र बहुबिधि वाहि वाहि बिशाल बिक्रम करतभे ॥ चढ़ि सरथ पैतब भीमधनु गहि शरनसों दुरदिन करे। तहँ द्रुपदसुत सँग तासुरेहि बहुभटनके जीवनहरे॥ यहअतुल बिक्रमयुद्ध कर्म निरेखि अति आनँद भरे। नृपधर्म बढ़ि सह सैनमें तहँ भीम के अनुढिग खरे ॥ इमि निरखि

ताक्षणसखा भीमहिं लरत अनुपम भावसों। रथ हांकि सत्वरगये ता ढिगसुभटसात्विकि चावसों॥ दोहा॥ भीमसेन अरुसात्विकी धृष्टद्युम्न बलवान। ह्वैएकत्र कीन्हें तुमुल युद्धसुनो मतिमान॥ ताक्षण कालिंगीसुभट बोलेहोय बेहाल। भीमरूप यहभीमहै यहिदल जनकोकाल॥ चौपाई॥ यहसुनि भीषम धनुटंकारी। बीरभीम पैचले प्रचारी॥ भीष्महि लखिते तीनोयोधा। तीनि तीनि शरहने सक्रोधा॥ तबभीषम अतिरिस बिस्तारे। तीनि तीनि शर तिनकह मारे॥ फिरिशर सहस मारि जग जेना। दई बिडारि पाण्डवी सेना॥ तबतजि चारि बाणकी राजी। हतेभीमके रथके बाजी॥ भीमसेन तबशक्ति चलाई। भीष्म काटि तेहि मगहि गिराई॥ तबगहि गदाभीम रणचारी। कूदिभीष्मपै चलो प्रचारी इतनेमें सात्विकि रिस बरसों। बधेभीष्मके सूतहि शरसों॥ मरे सूतके हय भयपागे। निजदल ओर सुरथलै भागे॥ ताक्षण भीमसेन प्रण लीन्हें। कालिंगी दलभट बिनु कीन्हें॥ लखत रहे तोसुत सबभाई। सके न कोऊ संमुख जाई॥ धृष्टद्युम्न लखिआनँद धारे। भीमहि निजरथपै बैठारे॥ तबसात्विकि सुखनिधि अवगाहे। भीमहि बिधिवत बहुत सराहे॥ कालिंगी दल बलसों रीते। नृपतब दिवस यामयुग बीते॥ तदनुभीम निजरथपै चढ़िकै॥ सात्विकि धृष्टद्युम्न सह बढ़िकै॥ धीरसगर्ब भरेअतिबल सों। लागेफेरि लरनतो दलसों॥ दोहा॥ तहँगौतम अरुशल्य अरु अश्वत्थामा बीर। धृष्टद्युम्न सोंभिरत भे जानि परम रणधीर॥ शुद्धधनुर्द्धर उद्धभट धृष्टद्युम्न बलवान। द्रोणतनय के सुरथके तुरंगहते हनिबान॥ मृत हय रथतजि जायतब अश्वत्थामा बिप्र। बैठि शल्यके सुरथपै हनेबाण बहु क्षिप्र॥ धृष्टद्युम्न रणधीर सों लरत तीनि भट देखि। रथबढ़ाय अभिमन्युतहँ जाय भिरो अतितेखि॥ सोरठा॥ कृपहि हने नवबाण शरपचीस हनि शल्यकहँ। आठनराच अमान द्रोणतनय केतनहने॥ तबद्वादश शर चण्ड शल्य हनेअभिमन्यु कहँ। कृपत्रयबाण उदण्ड हनेद्रोणसुत एकशर॥ तोमर॥ तहँकुंवर लक्षणदेखि। करिअरुण अक्षणतेखि॥ बढ़िसहित पक्षण धाय। भोभिरत ताक्षण जाय॥ लखि बिदित लक्षण अक्ष। अभिमन्यु रक्षणपक्ष॥ भिरि सहित दक्षणतत्र। भेहनत तिक्षण पत्र॥ दोहा॥ दुर्योधनको तनय अरु अर्जुन कोसुतबीर। उभै बंधुये भिरि तहां किये युद्ध

गँभीर ॥ लक्षणके तनपांचशत बाणहने अभिमन्यु । तब लक्षण अभिमन्युको धनुकाटे करिमन्यु ॥ चौपाई ॥ तब अभिमन्यु सुजय अनुरागी। अन्यधनुष गहि सोधनु त्यागी ॥ बहुशरहनि लक्षण के तनमें। व्याकुल करत भयोतेहि क्षणमें ॥ निजपुत्रहि अति व्याकुल देखी। भूपतिदुर्योधन अतितेखी ॥ नृपन सहित बढि झेरि सुभेरी। लगे लरण अभिमन्युहि घेरी ॥ तहँअभिमन्यु लरोसब जनसों। डरो न नेकु न टरो सुप्रणसौं ॥ लखिअर्जुन सुतत्राण बिचारी। सत्वर तिनसों भिरेप्रचारी ॥ क्षणमेंबाण असंख्य प्रहारे। अगिनित गज हय भट बधि डारे ॥ दुर्योधन भूपति के दलमें। हाहाकार मचोतेहि पलमें ॥ इमिअर्जुन शरछादित कीन्हें। दिन रजनी नहिंकाहूचीन्हें ॥ कितनेभट बिनुबाहनकीन्हें। बहुबाहन बिनुभट करि दीन्हें ॥ बिधनु बिध्वज बिनुशर पगकरके। कियेअसंख्यभटन युगधर के ॥ व्याकुलहवै तजिधीरजलाजा। तो सुतको दलबिचलोराजा ॥ जिमि केशरिकेकरसों मरदित। मगेंअसंख्य द्विरदहवै अरदित॥ तिमिअर्जुनकेशर सोंछेदे। भागेहय गजभट अतिखेदे ॥ ताक्षण नृप हेसमबल जेऊ। सके न भिरि अर्जुन सों तेऊ ॥ जेसन्मुख गेधीरज रांचे। तेयमलोक गये नहिं बांचे ॥दोहा ॥ तहँ भीषम हँसि द्रोणसोंकहे लखो आचार्य। कृष्णसहित भटपार्थको अद्भुत बिक्रम कार्य ॥ काल करालसमानभो यहि क्षणपार्थ अमान। अवथासोंलरिजय लहै ऐसोको बलवान ॥ सरित प्रबाहसमान कहुं भागी फौज रुकैन। फेरेहुं घायल श्रमित भट फिरि लरि जीति लहैन ॥ ताते अब संध्यौ भईतजौ युद्ध उपचार। चलि डेरन निजभटन कहँदेहु अहार बिहार ॥ इमिकहि भीषम हांकिरथ सहित सुभट समुदाय। उचितकृत्य सब करत भे निज निवास थरजाय ॥ सोरठा ॥ तब पाण्डव हरषाय जयदुन्दुभि बजवाइकै। निज डेरन मधिजाय किये अहारादिक क्रिया ॥

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिद्वितीयदिनयुद्धवर्णनोनामचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

दोहा ॥ तीजेदिन भोरहि रचो भीषम गारुड़ व्यूह। पृथक् पृथक् सब

अंगमें राखि प्रबल भटजूह ॥ तासु तुण्डथर लसत भे भीषम धीरधुरीन चखभे भारद्वाज अरु कृतबरमा भटपीन। केकय मत्स्य त्रिगर्त्त अरु बाट धान भटभूरि। सह कृप द्रोणतनय भयेशिर गौरवसों पूरि ॥ भूरिश्रवा सुजयद्रथ शाल शल्य भगदत्त । ग्रीवभये ये भूमिपति लै बहुसुभट प्रमत्त ॥ दुर्योधन बन्धुन सहित सहित सैन समुदाय । बिशद पीठि धर लसत भे ह्वै सगर्ब उमदाय ॥ बिन्दभूप अनुबिन्द अरु सूरसेन बलवान। सक कांबोजन सहितहे पुच्छगहे धनुबान ॥ दाशेरक कालिंगभट सहसँग लै निजसैन। जरासन्ध को तनय हो दक्षिण पक्ष सचैन ॥ कानर पौर बिकुंजपति अंधाधिप ये सर्ब । संग वृहद्वल के रहे बामपक्ष गहिगर्व ॥ जयकरी ॥ यहिबिधि तो दल व्यूहित देखि । पारथ धृष्टद्युम्न अवरेखि ॥ अर्द्धचन्द्रवत व्यूह अनूप। विरचि बिराजे सुनिये भूप ॥ भीमतासु हे दक्षिण छोर। लै संग भूपति सुभट अथोर ॥ सात्विकि अरु अभिमन्यु सुबीर। पांच द्रौपदीके सुतधीर ॥ इरावाण करता अतियुद्ध। बीर घटोत्कच दैअति क्रुद्ध ॥ येहेबाम छोर अतिघोर। नृपन जासुबिक्रम कर ओर ॥ द्रुपद बिराट नील क्षितिपाल। धृष्टकेतु अरि कुलको काल ॥ चेदि काशि कारूष नरेश। धृष्टद्युम्न पांचाल सुबेश ॥ बीर शिखण्डी अरि दल जैन। रहेमध्यमें सदल सचैन ॥ गजानीक मधितहँ बलधाम। रहे युधिष्ठिर नृप अभिराम ॥ सबकेरक्षक हे जगऐन। श्रीकेशव प्रभु राजिवनैन ॥ पाण्डव इमिरचि व्यूह सऊह। भेदन हिततो सुतको व्यूह ॥धन सम श्वम दुन्दुभि बजवाय। लागे तजन शस्त्र समुदाय ॥ तोदिशि के भट प्रबल प्रचण्ड। लगे प्रहारन अस्त्र अखण्ड ॥ भटप्रति भटन प्रचारि प्रचारि। लागे हनन सिहारि सिहारि। उभय सैनमधि अति बिकराल। गयोपूरि अस्त्रन कोजाल ॥ दोहा ॥ उमड़ि उमड़ि भिरि लरत भे सुभट समूह सघंट। भूप भूपभिरि रणरचे सह सावन्त गरट्ट ॥ भूपति तेहिक्षण मचत भो यहि बिधि को घमसान । दिशिको अरुनिज आनको रहो न काहुहि ज्ञान ॥ चौपाई ॥ सुभटन के रुण्डन सुण्डनसों। कटेबाजि गजके झुण्डन सों ॥ भूप अगम्यभई तहँ धरणी। रुधिर धारसों भरी बिबरणी ॥ धनुध्वज घण्टाअस्त्र घनेरे । परे कटेरथ अगणित हेरे ॥ भिरत असंख्य कबन्ध निरेखे । बिनु भुज फिरत सुभट बहुदेखे ॥ भरे रुधिर सों भट

बिरुजाने। तहँ सब असुर समान लखाने॥ भीष्मद्रोण पुरमित्र नरेशा। शकुनि बिकर्ण भयानकभेशा॥ शैल्य जयद्रथ येसबराजा। हतीअसंख्य सैनसहसाजा॥ भीम घटोत्कच सात्विकिबीरा। सुवन द्रौपदीके रणधीरा॥ चेकितानये भटधनुधारी। अगणित तोदल हते प्रचारी॥ निजदल मर्दत पार्थहि ज्वैकै। बहु नरपाल एकमतह्वैकै॥ कैयक सहस रथिनसह कढ़िकै। पार्थहि घेरि लियेतहँ बढ़िकै॥ शक्ति परश्वध शर अनिआरे। गदाआदि बहु आयुधडारे॥ तब पारथ करलाघव कीन्हे। दशदिशि शरपंजर करिदीन्हे॥ परके अस्त्र रोकि सब राखै। धन्य धनंजय सुरगणभाखे॥ सात्विकि अरु अभिमन्यु सुधीरा। सदल शकुनि सों भिरेप्रबीरा॥ रण दुर्मद ते गौरव लीन्हे। हेनृप कठिनयुद्ध तहँ कीन्हे॥ दोहा॥ तहँ कर लाघव करि शकुनि हनि बहुबाण अचूक। क्षणमें सात्विकि को सुरथ करिदीन्हें शतटूक॥ तब सात्विकि अति क्रोधसों आयत चखकरिबङ्क। निजरथ तजि अभिमन्यु के रथपैगये निशङ्क॥ सोरठा॥ दोऊबीर अमान धीर धनुर्द्धर अस्त्रबिद। मारि अनगिने बाण किये सदल शकुनिहि बिकल॥ चौपाई॥ ताक्षण भीष्म द्रोणरणचारी। करी शंखधुनि धनु टंकारी॥ जाइ धर्मके सम्मुख चावन। लगे भटनपै बाणचलावन॥ तहँ नृपधर्म नकुल दोउभाई। कीन्हों तिनसों दुसह लराई॥ दुर्योधन भट बिधि अनुसरिकै। रथ सहस्र सह बढ़ि रिस भरिकै॥ भीम घटोत्कच भटसों भिरिकै। युद्ध करणलागे तहँ थिरिकै॥ तहां घटोत्कच भट हे आरय। अतुल युद्ध कीन्हों जयकारय॥ भीमसेन शर एक सुधारी। तो सुतके उरहने प्रचारी॥ लगेबाण नृप मुरछित ह्वैकै। रथपर परेडरे सबज्वैकै॥ दुर्योधनहि अचेत निहारी। भगोफेरि रथसूत बिचारी॥ नृप के रथहि पराजित देखी। भगीफौज सब भयसों भेखी॥ ताक्षण भीमादिक धनुधारी। बहुशर हने प्रचारि प्रचारी॥ लरत रहे पारथसोंजेऊ। ह्वै व्याकुल तब भागे तेऊ॥ भीषम द्रोण बहुत कहिहारे। थिरे न नेकु सुभट भयधारे॥ भीष्मद्रोण रोंकतहैं ठाढ़े। फिरे न तेजे गनेउ सु काढ़े॥ इतने में दुर्योधन चेते। धनु टङ्कारि बहुरि रणहेते॥ निज दल भागत लखि रिसिपागे। फिरहु फिरहु इमि टरन लागे॥ दोहा॥ दुर्योधन के बचन सुनि नृपगण फिरे लजाय। क्रमसों सिगरे सुभट फिरिल

रन चले समुहाय ॥ तब दुर्योधन भूप गुणि कहे भीष्मसों जाय। सुनो पितामह ममबचन लखो कहा अलगाय ॥ चौपाई ॥ तुम्हरे जियत सैन मम अरदित। होति भगति अरिसों ह्वै मरदित॥ ऐसो तुमहिं न उचित गोसाईं। ममदुर्दशा लखौ यहिठाईं ॥ जीतहिं तुम्हहिं पाण्डुसुत रण में। ऐसो कबहुं न भासतमनमें ॥ द्रोण द्रोणसुत कृप तुम देखत। ममदल बिचलत नेकु न तेखत ॥ अबयह बूझिपरो दृढ़हमको। हैं प्रिय पांडुतनय तुमसबको ॥ ताहीसों तुमकौतुक पेखत। ममजयहोय न सोअवरेखत ॥ जो तुमको करिबो हो ऐसो। तौ प्रथमहिं कहिदेते तैसो ॥तौहम तबहीं बूझि करणसों। उचित कृत्यकरि भिरित परनसों ॥ जो हमत्याज न तुम सबहीको। तौलरिये करि अकपटहीको ॥ सुनि दुर्योधन की यहबानी। हँसिबोले भीषम अनुमानी ॥ महाराज हमगोइ नराखे। कइक बारइमि तुमसों भाखे ॥ हैंअजेय पाण्डव सुरबरसों। कबहूं जीति न जैहैं नरसों ॥ तब नहिं मानेहु मानन लायक। अब कत शोच करहु नरनायक ॥ वृद्धपुरुष हम निज अनुरूपा। करबयुद्ध सो निरखेहु भूपा ॥ आजु पाण्डवन कहँयहि रणमें। निरखि पराजित मोदहु मनमें॥ आजु असैन पाण्डवन करिहौं। रणमण्डल श्रोणितसों भरिहौं ॥ दोहा ॥ भीषम के ये बचन सुनितो सुतसब हरषाय। बजवावतभे दुंदुभी घनरव शंखबजाय ॥ ताक्षण पाण्डव नृपनसह शंख बजाये भूरि। बजवाये दुंदुभि घने अति आनँदसों पूरि ॥ सोरठा ॥ तेहिदिन को युगयाम ताक्षण बीतो भूपमणि। उभयसैन बलधाम युगसमुद्रसम फिरि भिरे ॥ रोला ॥ कहेतब धृतराष्ट्र संजय कहो सहित विधान। ठानि प्रण यहिभांति भीषम किये किमिघमसान ॥ कहे संजय भाषि ऐसो भीष्म निजरथ हांकि। पाण्डवी दल प्रबल सों भिरि लरनलागे डांकि ॥ सर्ब सेना सहिततो सुत सर्ब तदनु सबर्ग। जाय भिरि भे लरत रक्षत भीष्म तेहि तेहि पर्ब॥ युद्ध अति सै तुमुल ताक्षण मचो तहँहेभूप। लगे तकि तकि सुभट घालन शस्त्र बिबिधि अनूप ॥ खरोरहु मति भागु मार्‌यो पर्‌यो मारु सँभारि। आउ संमुख जातकित नहिं बचत अस्त्र प्रहारि ॥ एक एक सुशब्द ये बहु बार भाषत भूरि। युद्ध थलपै दुहूं दलमें रह्योतेहि पलपूरि ॥ अस्त्र अस्त्रतनुत्र अस्त्रनके जटनसों शब्द। भयोतहँसो भयदपरसतभयो महि अरुअब्द ॥

रु भट गज हय रथ असंख्यन दुहूंदल केतत्र । कटे पलमें भूपमणि सो कहत बनत न अत्र ॥ तहां भीषमकिये कार्मुक मण्डला कृतवेख । तजे बाण बिशाल अगणित अतुल अकथ अलेख ॥ कुपित अहि समशरन सों सब दिशादीन्हों छाय । हते अगनित द्विरद हय अरु रथिन के समुदाय ॥ सर्ब दिशि में फिरत भीषम को सुरथ मनमान । लखे सब कोउ तहां भूप अलात चक्रसमान ॥ सर्ब थर सब रथिनसों तेहि समय नृप सबओर । एकभीषम सहस समसो जुरोहो तहँजोर ॥ लखे जे जेहि ओर भीषमहि लखे ते तेहि ओर । देखिइमि सब गुणे भीषम करतमाया घोर ॥ एक एक इषूनसों एकैक मैगलमारि । भीष्म क्षणमें दिये अगिनित द्विरद महिपै डारि ॥ भये सम्मुखभीष्मके तहँगये ते यमलोक । एक पलभरि सुभटकोऊ सक्यो नहिंकरि रोक ॥ पाण्डवन के सैन मधितब मचो हाहाकार । भये ब्याकुलसुभट सब नहिं लहेतहँ त्रातार ॥ दोहा ॥ अगिनित गज हय भट बधे तहँ भीषम गहिटेक । जेहि न लगोशरभीष्मको ऐसो रहो न एक ॥ मारतण्ड सम भीषमहि लखि न सक्यो कोउ तत्र । आतप सम छादित दुसह शर निरखे सर्बत्र ॥ भीषमके शर बरन सों मर्दित भई अचैन । सहि धीरज नहिं रहिसकी भगी पाण्डवी सैन ॥ चोपाई ॥ पारथ बासुदेव के देखत । भगी फौज जीवन अवरेखत ॥ कोऊ काहुहि संग न लीन्हें । बन्धु पिता सुत सखा न चीन्हें ॥ गिरतउठत भागत फिरि ताकत । भगे पदाती आरत भाषत ॥ रथी गजी हय सादी केते । निज दल मर्दत भगे अचेते ॥ हैं सधीर पांडव सबभाई । भगे औरसब लाजबिहाई ॥ आरतशब्द महा तेहि पलमें । भयो भूप पाडव के दलमें ॥ तब रथ रोकि कृष्ण अनुमानी । कहो धनंजयसों यह बानी ॥ पूर्ब सभामधि तुमहे पारथ । प्रण कीन्हों सो करहु यथारथ ॥ भीषम द्रोणादिक वरबांके । दुर्योधन के सुभटनिशाके ॥ जे लरिहैं मैं तिनको हनिहौं । रण के बीचकछू नहिं गनिहौं ॥ बहुदिन गये समय सो आयो । अबइत करिये निज मनभायो ॥ भगो जात तोदल यहिक्षणमें ॥ अबसो प्रण करिहौ केहि दिनमें ॥ कहे कृष्ण सो सुनि हितजानी । कहत भये पारथ अभिमानी ॥ तात शीघ्र परदल मधि हलिये । भीषमके ढिग रथ लैचलिये ॥ बूढ़हिएक बाणसों मारी । रथसों देउं भूमिपर डारी ॥

सो मुनि कृष्ण हांकि बरघोरे। रथ लैगये भीष्मके धोरे॥ पार्थहि निज ढिग भीष्म निहारे। गर्जिसिंहसम धनुटंकारे॥ दोहा॥ भीषम सोंपार्थहि मिरत लखि बहुभट धरिधीर। सत्वरफिरिकै भटनसों लरन लगे बरबीर॥ क्षण में अगिनित बाण तजि भीषम वीर प्रसन्न। सध्वज पार्थ के रथ बरहि करिदीन्हें सुप्रछन्न॥ भुजंगप्रयात॥ तहांपार्थ बाणौतको ठाट ठाठो। बनेबाणसों भीष्मकोचाप काटो॥ महावीर ज्यों चापसो डारि दीन्हों। महाचण्ड ह्वै औरको दण्ड लीन्हों॥ सुदोर्दण्डसो तानि टंकार कैकै। लगे मारिबे बाण उद्दण्डलैकै॥ बली पार्थ त्यों वाहिकै बाण चीन्हों। तहां सोऊ कोदण्ड दो खण्ड कीन्हों॥ दोहा॥ तब भीषम तहँ कहत भे साधु साधु हेबीर। ऐसो दुस्तर करमकरि सकै कौन रणधीर॥ निज पौरुष परमान अबकरो युद्ध तजिभर्म। इमि कहि गहि धनु आन फिरि लगे करण रणकर्म॥ अर्जुन पै लागे करण बाणवृष्टि तेहिकाल। अर्जुन लागे भीष्मपै मारण बाण बिशाल॥ चौपाई॥ तहँ प्रभु निज सारथ्य सुजानसु। दरशावत भे सदय सज्ञानसु॥ यहि बिधि सों रथ चालन कीन्हें। अगिनित बाण व्यर्थकरि दीन्हें॥ तब भीषम बहुशर तेहिक्षण में। हने पार्थ अरु प्रभु के तनमें॥ फिरि बहु सहस बाण परि हरिकै। सरथ पार्थ कहँ छादित करिकै॥ पाण्डवकेजे भट फिरि आये। रहेतिन्हैं फिरि मारि भगाये॥ बाण असंख्यमारि नभपथपै। देहिं छाइ पारथपारथ के रथपै॥ जौ लगिपारथ बाणबिदारैं। तौलगि भीषम बहुभटमारैं॥ भीषमको गौरव लखि ऐसो। पारथको मृदुता लखि तैसो॥ मनमें गुणत भये यदुनायक। नहिं कोउ भीष्महि जीतन लायक॥ आजुहि भीष्मबीर जग जेना। हतिहि सर्व पाण्डवकी सेना॥ पाण्डवको दलबिचलित देखी। कौरव हियो गर्बसोंभेखी॥ शोच बिहाय सुचितह्वै मोदत। भीष्महि सबिधि प्रशंसि बिनोदत॥ पारथ लखि भीषम की गुरुता। करि न सकत निज गुणकी पुरता॥ ताते हम पाण्डवके कारन! हतत भीषमहि आनबिचारन॥ कृष्ण बिचार किये यह जौलौं। भीष्महने अगिनित शरतौलौं॥ छायदिये दशदिशि शर चोखे। सोलखिकैकेशव अतिरोखे॥ दोहा॥ इतनेहीमें द्रोण कृपशल्य जयद्रथ आदि। भूप सदल सब पार्थपै झुके प्रकर्षि प्रमादि॥ लखि सात्विकि तिनसों कहे भगत रहे जे बीर। फिरहु फिरहु निजधर्म

गुणि क्षत्री भट धरिधीर॥ ऐसो भाषतपुलित स्वरसों निज सुरथ बढ़ाय। मिरि मम दलसों पार्थकी लागे करन सहाय॥ तब सात्विकि सों प्रभु कहे करि चख अरुण अमंद। जाहि गये जेजे थिरे तेऊ जाहिं स्वछंद॥ चौपाई॥ भीष्मद्रोण आदिकजे रणमें। तिनहिं बधब अब हम यहिक्षणमें॥ इमिकहिचक्र पाणिमें लीन्हें। करि भ्रामित ऊरधभुज कीन्हें॥ रथते कूदि सिंहसम परखत। चले भीष्मपै धीरन धरषत॥ प्रभुको पाणि नालबपु शरसो। लसो चक्रतहँ बारिज बरसो॥ रिसि रबिसों बिकशित रणदिन में। निरखि रह्योतहँ धीरज किनमें॥ जानि कुरुनको क्षय सबराजा। भये प्रकम्पित सहित समाजा॥ पुरुषसिंह अनुपम छबिछावत। कृष्ण चन्द्र कहँ निजदिशि आवत॥ लखि भीषमकरि अचल शरासन। करत भये प्रभुसों सम्भाषन॥ आवहु आवहु त्रिभुवन स्वामी। सादर मोहिं बधहु खगगामी॥ प्रभु तुमसों हतह्वैबो रणमें। इतउत श्रेष्ठगुणैं हम मनमें॥ इतनेमें यह अनुचित जानी। कूदि सुरथसों पारथज्ञानी॥ चलि सत्वर प्रभुको भुजधारी। कहे क्षमहुं प्रभुक्षमहुं बिचारी॥ तऊ सक्रुद्ध कृष्ण नहिंमाने। तब पारथ पगसों लपटाने॥ नृप तबदशये डगपे ताथर। थिरे नीठिकै प्रभु बिषदाहर॥ बिनय करी पारथ बकता बर। क्रोधहि तजहु कृष्ण करुणाकर॥ हम सबको आपुहिकी गतिहैं। यह सबजग नानत प्रभुसतिहैं॥ दोहा॥ सुत अरु बन्धुन की सपथ मोहिं सुनो मतिमान। उतहमजो प्रणहैंकिये सोतजि करबन आन॥ लहब अन्तजि मिकुरुनको करिहैं सोइ उपाय। यहसुनि केशव मुदितह्वै रथपर बैठेजाय॥ पारथ रथपै जाइतब टंकारे कोदण्ड। शंख बजाये कृष्णप्रभु दनुजार्दन अतिचण्ड॥ भुजङ्गप्रयात॥ उभय सैनमें त्यों बजे भूरिबाजे। कली कौशलीते बलीवीर गाजे॥ लगे बाहिबेबाण ते बीरबांके। गणे शूरजे शत्रुसेना निशाके॥ हने पार्थके बजूसे बाणरूरे। बढ़ी कौरवी सैनको पूरपूरे गजी अश्वसादी रथी भूरि जूझे। तब पार्थसोंये प्रमार्थी अरूझे॥ दोहा॥ शल्यभीष्म भूरिश्रवा दुर्योधन क्षितिपाल। हने पार्थ पै वेग सों अस्त्र कराल बिशाल॥ शल्य गदा भूरिश्रवा सातबाण की पंक्ति। तजेहने तोसुत नृपति तोमर भीषम शक्ति॥ तिन सबके तेअस्त्र सब काटि शरनसों पार्थ। किये महेन्द्र सुअस्त्रको बिषद प्रयोगयथार्थ॥

मांह खरी ॥ करि उग्र अस्त्र अमन्द को सुप्रयोग तहँ पारथ हते । बलभरे अचल अनेकभट तोसुवनके जेहितरते ॥ कोदण्डबर गाण्डीवसों निर्मुक्त अनुपम शरघने । रथतुरँग गजनर धनुषध्वज शर भये काटत अनगिने ॥ तेहि समयधनु गांडीवको टंकारसुनि पहिंचानिकै । भटभगे हैं द्रुपदादि ते सब फिरतभ अनुमानिकै ॥ गांडीवकी धुनि दीहसुनि सुनि सुभट तो शंकित भये । निर्मुक्तबाण अमोघसोंबहु मरे बहु शंकित भये ॥ जेबीरतहँ धरिधीर ता क्षण पार्थके संमुखभये । भिदि शरनसों तेसकल तनतजि तुरतही यमपुरगये ॥ कपिराज केतु प्रबीरगो तहँ मण्डलाकृत धनु रह्यो । नहिंएकभट यहिओरको तेहि मारिबेको क्षणलह्यो ॥ सब दिशि बिदिशि सब शरबरणसों पूरिपारथ रिसभरे । नरनाग हयके रुधिर की बरनदी तरु बिरचित करे ॥ मदमेद फेणसमानहे सबजन्तुसे तामधि परे । अरुअस्त्र अखिल अलारसमतहँ फिरतहे इतउततरे ॥ दोहा ॥ इतने में सन्ध्याभई लई अस्तिगत सूर । उभयओर फिरिचलतभो उभयभटन को पूर ॥ शल्यादिक सब भूपगण तेहिदिन निजथर जात । भयेसरा-हत पार्थ को बर बिक्रम अवदात ॥ अयुत रथी अरु सातसै गजकरि दुस्तर काज । हय पदचारी अनगिने पार्थ बिनाशे आज ॥ यहि बिधि लरि तीजे दिवस निशि निजनिज थरजाय । करी अहारादिक क्रिया उभय सैन समुदाय ॥

इतिश्रीकाशीराजमङ्गाराजा धिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगा मिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेकविना कृतेभाषायां महाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिद्वतीय दिवसयुद्धवर्णनोनामपंचविंशोध्यायः ॥ २५ ॥

दोहा ॥ चौथो दिनलहि भोरही उभय भूपदल साजि । बजवावतभे दुन्दुभी समरभूमि मधि राजि ॥ अर्धचन्द्र बरव्यूह अरु गारुड़व्यूह अपार । बिरचि पूर्ववत करतभे धनुषन की टंकार ॥ मैगलस्थ मंजुल महत चख श्रुतिके सुखदान । राजेघने निशानअरु बाजे घने निशान ॥ सोरठा ॥ शंख बजाय बजाय सुधनु चढ़ाय चढ़ायके । सुरथ बढ़ाय बढ़ाय भिरतभये भटभटनसों ॥ भुजङ्गप्रयात ॥ भिरेहांकदै पायदे पायदेसों । रथी सों रथी ऐ भिरे कायदेसों ॥ भिरे बाजि सादीनसों बाजि सादी । भिरे

मैंगली मैंगलीसों प्रमादी ॥ घने बाणमारैं घनेबाण वारैं न टारे टरैं ना टरैं ताहिटारैं ॥ हनैंबाण हीरे भरेक्रोध डाटैं। ऊरूलंक जानू भुजाशीश काटैं ॥ ध्वजा चापछत्रौ रथैभरि छुदैं। करीसूत बाजीनके गात भेदैं ॥ गदाशक्ति औभिण्डिपालैं करालैं । घने तोमरैं भल्ल नाराच घालैं ॥ किते मैंगलीबाजि सादीन मारैं। कितेबाजि सादी गजीये बिदारैं ॥ रथी बाजि सादीनसों रंगराच्यो । रथी मैंगलीये कहूं जंग माच्यो ॥ दोहा ॥ बिनुमारे मारे मरैं मारे मरैं अनेक। मारेबिनु मारैंसदृश मारैंकितै सटेक ॥ घोरयुद्ध यहिभांतिको मचोतहां क्षितिपाल। उभय ओरकेभटन के शिरचढ़ि निरतो काल ॥ पांचताल मितिउन्नत शुचि तालध्वजबान। भीष्म पार्थकहँ लखितहां संमुखचले अमान ॥ चौपाई ॥ द्रोणशल्य कृप आदि प्रमाथी। लैसँग सहसन रथीसुमाथी ॥ दुर्योधन भीषमके गोहन। चले वेगसों जयके छोहन ॥ तिन्हैंदेखि अभिमन्यु रिसाइ। सहसरथिन सह सुरथ बढाई ॥ सरित प्रवाह सदृश अति जबसों । बीचहि भिरत भयो तिन सबसों ॥ कठिन युद्धमाचो तहँतिनसों । पृथक् पृथक् कहि निबरैं किनसों ॥ मंत्रित ज्वलित ज्वलनसम ताथर । लसो पार्थको सुत योधाबर ॥ तहँ अगणित सुभटनबधि कढ़िकै। भिरे पार्थसों भीषम बढ़िकै ॥ सहित द्रोण कृप तोसुत राजा। गये भीष्मके सँगसहसाजा ॥ चित्रसेन अरु अश्वत्थामा। भूरिश्रवा शल्यजयकामा ॥ सुत सांजमन भूपको येसब । भिरे पार्थके सुतसों तहँतब ॥ तिनसों भिरो पार्थसुत तैसे। सरगजसों केहरिशिशु जैसे ॥ लहेनते अभिमन्यु सुभटकी। तुलता धनु बिधि नागर नटकी ॥ अभिमन्युहिं अतिप्रबल निरेखी। सदलसबै नृप अतिशय तेखी ॥ पारथ सुतहिं घेरि सबदिशिसों । लागेहनन अस्त्र भरि रिसिसों ॥ तहँ अभिमन्यु अशंकित मनसों। तिनके अस्त्रन काटि शरनसों। अश्वत्थामाके गुरु तनमें । हने एकशर कोपित मनमें ॥ दोहा ॥ लखि सांजम नरेशके सुतको ध्वजा उदण्ड। आठ बाणसों काटि कै करि दीन्हों बहुखण्ड ॥ सोमदत्त तेहिक्षण हने शक्ति प्रचण्डी चाहि। काटि दये अभिमन्यु भट तीक्षणशर हनिताहि ॥ चौपाई ॥ पांच बाण अतिशय अनिआरे। शल्यभूप के तनमधि मारे ॥ तब नृपशल्य क्रोधसों छाये। करि लाघव शतबाण चलाये ॥ तिन्हैं काटि अभिमन्यु

प्रचारी। हतेशल्य के हयरथ चारी ॥ निरखि बिचार्‌यो तो सुत राजा जीतिंगे येसहित समाजा ॥ तबहिं पचीससहस भट गणको। शाशनदयो कुपित तब मनको ॥ तुम सब शीघ्र बधो हे भाई। मम सम्मुख लरि लहत बड़ाई ॥ ते सिगरेभट सत्वर जाई। लागे तासों करन लराई ॥ सोलखि धृष्टद्युम्न अनखाई। चनुरंगिणि सेना सहआई ॥ भिरो सकल सेनासों कैसे। घने बिपिनसों मारुत जैसे ॥ जात पार्थपै क्रिपहि निरेखी। धृष्टद्युम्न सेनापति तेखी ॥ तीनि बाण अनुपम दुखधारे। भालदेश मधि मारि प्रचारे ॥ भट कृतबरमाको अनुचारी। ताकहँ बधोभल्ल वरमारी ॥ मद्रदेश के श्रेष्टभटन को बेधेहनि दशशर गहि प्रणको ॥ दमनहिं हतो एकशर मारी। धृष्टद्युम्न दलपति धनुधारी ॥ ताथरसुत सांजमन नृपति को। बीरनमें बरणो बल अतिको ॥ धृष्टद्युम्न दलपति के तनमें। दश शर हने कोपकरि मनमें ॥ दोहा ॥ दशशर मारे सूतकहँ नृपको सुत ह्वै चण्ड। तब दलपति नृपतनय को धनुकीन्हों दोखण्ड ॥ चारिबाणहनि हनत भो बाजीचारि अमान। पृष्ठरक्ष अरु सूतको बधे मारिद्वै बान ॥ सोरठा ॥ तब नृपको सुतधीर खड्गचर्म गहि कूदिकै। करत पैंतरे बीर धृष्टद्युम्न पै चलत भो ॥ गुरुतोमर ॥ नृप सुतहि आवत देखिकै। सेनापति अवरेखिकै ॥ बाहुबाण मारे झूमिकै। तेहि बारि नृपसुत घूमिकै ॥ बहु ढालपै ढरकायकै। ढिगगथो असि फरकायकै ॥ तेहि धृष्टद्युम्न के शीशमें। लहिगदा मारी शीशमें ॥ शिरशक्यो नहिं लहि झेलसों। फटि फूटिगो फल बेलसों ॥ तबगिरोमरि सुतभूपको। जो बिदित सागर रूपको ॥ नृप सांजमन बिनु बारभो। यहि ओर हाहाकार भो ॥ तब सांजमन अति कोपिकै। बढ़ि भिरो जयको चोपिकै ॥ दोहा ॥ थिरहु थिरहु रहु भाषिकै नृप सांजमन कठोर। धृष्टद्युम्न के गातमें हने तीनि-शर घोर ॥ हने शल्यनृप तीनि शर धृष्टद्युम्न क गात। धृष्टद्युम्न तिन कहँ हने तितने शर अवदात ॥ दुहूं ओर के भटनसो मचोयुद्ध तहँ घोर। पृथक् पृथक् सोसब कहे भूप लहैको ओर ॥ जयकरी ॥ यहसुनि-कै धृतराष्ट्र महीप। कहे सुनो संजय कुलदीप ॥ प्रतिदिन मम भट होत अचैन। अरु प्रतिदिन हारति ममसैन ॥ बिधिको निर्मित प्रबल प्रयोग नहिं मम सुभटन हारन योग ॥ हँसिबोले संजय मतिमान। नृपहम कहैं

सत्य नहिं आन ॥ तुम जो करी अनीति महान। अब ताकोफल मिलत निदान ॥ सुनिबोले धृतराष्ट्र लजाय। कहत रहेसोकहहु बुझाय ॥ तब संजय बोले सुनुभूप। शल्यनृपति नवबाण अनूय ॥ मारे धृष्टद्युम्न के काय। धृष्टद्युम्न तब क्रोधबढ़ाय ॥ हने शल्यकहँ अगणित बाण शल्य हने बहुबाण अमान ॥ घोरयुद्ध कीन्हे ते धीर। अतुल पराक्रम तुल बल बीर ॥ तबनृप शल्य सुभटता ठाटि। शरसोंदये शरासन काटि ॥ काटि शरासन शरसमुदाय। धृष्टद्युम्नपै हनेसचाय ॥ धृष्टद्युम्नकहँ पीड़ितदेखि श्रीअभिमन्यु वीरअति तेखि ॥ हने तीनिशर कठिन कराल। शल्य भुपके तन मधि हाल ॥ हनि हनि अस्त्र अस्त्र प्रति ऊटि। कठिन युद्ध कीन्हों ते जूटि ॥ सुवन पार्थको बीर अधर्ष। तहां शैल्यपै भयो प्रकर्ष॥ दोहा ॥ तब दशरथिन समेत बढ़ि दुर्योधन नृपजाय। शल्यहि मधि में करिलगे तजन अस्त्रसमुदाय ॥ दुर्मर्षण दुर्मुखसुभट दुःशासन रणधीर दुर्योधन पुरमित्र अरु सत्यव्रत बरबीव ॥ चित्रसेन अरु दुःसह अरु बिकर्ण बलवान। सुभट बिबिंशतये सुदश बीरसुनो मतिमान ॥ तब उतके दशबीरबर भिरे आयहे तात। पांच द्रौपदी के सुवन धृष्टद्युम्नबिख्यात ॥ भीम नकुल सहदेव अरु भटअभिमन्यु उदार। ये दश दशभट भिरि तहां कीन्हे युद्ध अपार ॥ चौपाई ॥ माचो कठिन युद्ध तिन तिनसों। होतहँ जुटोजोर जिन जिनसों ॥ प्रति द्वन्दिनकोनाश बिचारी। मारत भये प्रचारि प्रचारी ॥ तहँ दुरयोधन नृपरणचारी। बरकर लाघव बिधि अनुसारी ॥ चारिबाण अतिशय अनिआरे। धृष्टद्युम्न दलपति कहँ मारे ॥ शर पचीस दुरमर्षण मारे ॥ चित्रसेन शर सात प्रहारे ॥ शरशर हने बिबिंशित बरभट। हनेदुशाशनत्रय शर परगट ॥ धृष्टद्युम्न अति गौरव लीन्हें। भूप कठिन कर लाघव कीन्हे ॥ इन सबके तनमधि अनिआरे बाण पचीस पचीस प्रहारे ॥ भटअभिमन्यु सुबीर प्रकरषो। पुरमित्रहि दशशर हनि हरषो ॥ सत्यव्रतहि दशबाण प्रहारी। गरजो पार्थतनय धनुधारी ॥ माद्रीतनय शल्यसों भिरिकै। बाणवृष्टि कीन्हेतहँ थिरिकै ॥ तिनपै शल्यबाण बहु घाले। एक एक सों तीक्षण आले ॥ तहँ दुर्योधन भूपहि देखी। भीमसेन ध्रुव बध अवरेखी ॥ अति गुरुगदाआयशी गहिकै। रथपर खरोभयो थिरु कहिकै ॥ सानुमान सम भीमहि

देखी। भगे सकल तोसुत भयभेखी॥ लखि सिगरे क्षितिपाल सकाने। अनरथ होनचहत अनुमाने॥ दोहा॥ तब मनधाधिप सोंकहे दुर्योधनक्षिति पाल। निजदल सहबढ़ि लखिबयो भीमहि तुम यहिकाल॥ सोसुनिमग-धाधीश गुणि गुरु जययश कहँचोपि। अयुत गजस्थन सहित बढ़ि चलो भीमपै कोपि॥ आगे करि मगधेश कहँ दुर्योधन सहसैन। दुन्दुभि बज-वात चलोसर्ब गर्बकोऐन॥ सोरठा॥ गजानीक अतिभीम निज सन्मुख आवत निरखि। कूदि चलो भटभीम सुरथ सानुते सिंहवत॥ चौपाई॥ गदापाणि भुज ऊरध कीन्हे। काल कराल दण्डजनु लीन्हे। बढ़िभटभीम सिंहसम गरज्यो। सकल गजस्थनको हिय दरज्यो॥ गजानीक मधिगदाप्रहारो। अगणित द्विरद निमिखि मधि मारो॥ हतेबज्रधर जिमि दनुजनको। हतेभीमतहँ तथा गजनको॥ सुवनद्रौपदी के रणधीरा। सहदेव नकुल बांकुरे बीरा॥ अरु अभिमन्युबीर धनुधारी। धृष्टद्युम्न ये नवभट भारी॥ भीमसेन भटकेढिग रहिकै। सगरब हियो रोषसों नहिकै॥ करिकरि करलाघव अतिगाढ़े। हनि हनि बाण क्षुरप्र उकाढ़े॥ किये गजस्थन के शिरछेदन। को केहि हत्यो लख्यो यहभेदन॥ प्रपतै मुण्ड बितुण्डन ते तिमि। गिरिशिला बहुशृङ्गनि ते जिमि॥ कटैं शीश भटनसे करिणपै। गत शाखा तरु यथा गिरिनपै॥ ऐरावतसम गजपै रूढ़ा। मगधाधीस नरेश अबूढ़ा॥ पार्थतनय के सम्मुख आयो। चाहि प्रबल गज सों हतवायो॥ तब अभिमन्यु द्विरद केतनमें। मारेबाण कोपकरि मनमें॥ करि चिक्कार द्विरद मतवारो। रह्यो खरोहवै भयसों मारो॥ तब अभिम-न्यु क्षितीशहि डाटे। बाण क्षुरप्र मारि शिरकाटे॥ दोहा॥ मगधाधीश महीपको बधि अभिमन्यु कुमार। बाणवृष्टि करि करतभो सुभटन को संहार॥ भीमसेन तहँ हनतभो अगणितमत्त बितुण्ड। तोरे अगणित द्विरद के चरणदन्त अरुसुंड॥ रोला॥ प्रबल मत्तबितुण्ड बरके झुंड बीच अभर्म। भीम बिक्रक भीमभट तहँ कियो अद्भुत कर्म॥ गदा गुर्वी आयसी दृढ़ दीर्घ ताहि प्रहारि। द्विरद अगणित मारिक्षणमें दिये महिपै डारि॥ शैलसम ते द्विरद ताथर लसे महिपै भूरि। गलित जलसंग गेरु खानि समान शोणित पूरि॥ खरे शोणित बमत बहुलहिं गदा को व्यापार। धसी बहु गिरि गुफासों मनु भारतीकी धार॥ भगे बहु

गज भीमको तहँ देखते डरपाय। उड़ै रंहस बायुवशजिमि तरुनको समुदाय॥ रथी हय बहु सुभट पैदर मरे तिनसों महि॥ धृष्टद्युम्नादिक निरखिसो हँसे भूरि ननदि॥ भरी शोणितगदा गुर्बीलये चरतअधीम। मारि गज समुदाय ताथर लसतभो भटभीम॥ शूलभृत कलपांत में जिमि नाशभूत समस्त। कालरूप कराल निरतत करतचालन हस्त॥ दोहा॥गजानीक मरदित निरखि दुर्योधन अनखाय। सर्व भटनसों कहतमे बधो भीमकहँ जाय॥ सुनि अज्ञा नृपशक्रकी सुभट मेघ समुदाय। भीम अचल पै चलत भे युद्धभूमि नभछाय॥ आवत लखि उमड़ो प्रबल सिन्धु सरिस दलसर्ब। भिरि बेलासम ताहि भो रोकत भीम सगर्ब॥ चोपाई॥ प्रविशि सैनमधि भीम रिसाई। लाग्यो हतन सैन समुदाई॥ रथपर हय गज गणपर महिपर। हते असंख्य सुभट सो ताथर॥ गदा पाणि भटबर बिरुझानो। शूल पाणिसम तहां लखानो॥ नहिं बढ़ि जोरदिये भटकेऊ। रहे दूरि डरपत हे तेऊ॥ तहां भीम जिनके दिशि देखे। मरे आजु ध्रुव तिन अवरेखे॥ क्षुधित गयंद इक्षु के बनमें। लसै लसो तिमि भीम भटनमें॥ तहँ अभिमन्यु आदि धनुधारी। रहेभीम भट के सहचारी॥ भूपति कठिनयुद्ध तेहि पलमें॥ मचो दुहूंदल मधि सब थलमें। निजदल मरदत भीमहिं देखी। बिदित धनुर्द्धर भीषम तेखी॥ चलो भीमभट अरिमरदनपै। जिमिबर फरिमणि ग्राहक जनपै॥ फूतकार सम बहुशर छाड़त। गे अरिगणके हियभय माड़त॥ भीष्महि निजपै आवत लखिकै। बढ़ि संमुख मो भीम हरषि कैं॥ सात्विकि यह वृत्तान्त निहारी। चलो भीष्म पै धनुटंकारी॥ तहँ इतके बहुयोधा मिरिकै। सके आड़िसात्विकिहि थिरिकै॥ देखि अलंबुष असुरअमाना। हने सात्विकिहि बरदशबाना॥ सात्विकिताहिचारिशर मारी। बढ़िभीषम पै चले प्रचारी॥ दोहा॥ इतनेमें भूरिश्रवा मिरि सात्विकि सों भूप। हनत भयो नवबाण अति तीक्षण रचित अनूप॥ जेहि सात्विकि बहु शरहने सो सात्विकिहि अनेक। बाहिअस्त्र प्रति अस्त्रते कीन्हे युद्धसटेक॥ चोपाई॥ यहलखिकै दुर्योधनराजा। बढ़िसबन्धु सहसैन समाजा॥ भूरिश्रवहिमध्यमें करिकै। लगे परनसों लरण सँभरिकै॥ तब सब पाण्डव इन सब जनसों। लरनलगे भिरि निर्भय मनसों॥ अतिशय कठिन

युद्धतहँ माचो। सबके हिये बीररस राचो॥ गरुई गदा पाणिमें लीन्हें। तहां भीम अति विक्रम कीन्हें॥ नन्दक तो सुत भट बलवाना। कोपि हनेसि भीमहि बहुबाना॥ दुर्योधननौशर हनिहरषे। लहिअवसरअगणित शर बरषे॥ तब गुणि भीम चढ़े निजरथपै। गरजि बिराजत भेरण पथपै॥ तहां बिशोक सूतसों भाषे। ये सब ममबध हित अभिलाषे॥ ताते इन्हें बधब हम क्षणमें। रहेहु सोयत्नसदातुम रणमें॥ इमि कहिकै निज धनुटंकारे। दुर्योधनहि बाणदश मारे॥ तीनि बाण नन्दक के तनमें। मारे भीम गर्बगहि मनमें॥ तौलगि साठि बाण अनिआरे। दुर्योधन क्षितिपाल प्रहारे॥ हने तीनिशर सूत बिशोकहि। अरुकाटो धनु दृढ़ता ओकहि॥ तुरित वृकोदर सो धनुतजिकै। गहि धनुआन सगर्ब गरजिकै॥ मारि क्षुरप्र सुबाण अखेदे। दुर्योधन नृपको धनुछेदे॥ दोहा॥ सो धनु तजि दुर्योधनौ गहि अतिदृढ़ को दण्ड। भीम सेनके उरविषे हने बाण उद्दण्ड॥ अतिकठोर सो शरलगे मुरछि भीम बलवान। अचल अचेष्टित ह्वैरहे रथपर मृतकसमान॥ ताक्षण सब पाण्डव सिमिटि महाक्रोधसों पूरि। दुर्योधन नृप सदलपै बरषतभे शरभूरि॥ तोमर॥ दुहुंओर सो तेहि जाम। शरचले अति अभिराम॥ शर पूरिगे सबठौर। नहिंपरो लखि कुछओर॥ तब चेति भीम प्रचंड। टंकोरिगुरु को दंड॥ तो तनय नृपके गात। शरआठ मारेतात॥ जोशल्य मद्राधीश। तेहि हने बाण पचीश॥ तो तनयनृपनहिं तत्र। थिरि सको गोअन्यत्र॥ तोतनय चौदह जाय। तब भिरतभेगहिचाय॥ नृपसुनो तिनके नाम। अरु किये जिमि संग्राम॥ दोहा॥ सेनापति जलसन्ध अरु उग्र सुलोचनबीर। भीम अलोलुप भीमरथ भीमबाहु रणधीर॥ दुःप्रधर्ष दुर्मुख बिकटअरु बिवित्सु शलजौन। अरु सुषेण एभीमसो भिरे सुनौक्षिति रौन॥ चौपाई॥ येसब भीमसेन सों भिरिकै। घोरयुद्ध कीन्हो तहँथिरिकै॥ हनि क्षुरप्र शरभीम सुखारो। सेनापतिकोशीशबिदारो॥ फिरि हनितीनि बाण अनियारे। जलसन्धहि बधि महिपैडारे॥ तदनु सुखेणहि हति सुख पाये। बधिउग्रहि यमलोक पठाये॥ तब हनिभीम बाहुको शरसों। न्यारो करत भयोशिर धरसों॥ भीम भीम रथको तेहि क्षण में। मार्यो भीम वृकोदर रण में॥ तदनु सुलोचनको बध करिकै। गरजत भयो मोदसों

भरिकै ॥ यहि बिधितो बसुसुत कहँ स्वामी। बधे भीम दुर्मद जयकामी ॥ तब जे भट हेते भयपागे । थिरि नहिंसके बेग सोंभागे ॥ यह लखिकै भीषम अति माखे । सकल महा रथिकनसो माखे ॥ अब मति क्षोभ जीवको करहू।भिरिभिरियथापराक्रमलरहू ॥ सोसुनिकैसबभटउमदाने। चलेभीम पै अति रिससाने ॥ तिनसो भिरतभये भटउतके। हितकारी पांडव बलयुतके ॥ भिरिइत उतकेभट सहसाजा । तुमलयुद्ध कीन्हों तहँ राजा॥ अतिउन्नतमैगल मतवारो। तदारूढ़भगदत्तरिसारो ॥ धनुषअशनि गरि गरजि प्रकरषो । घनेबाण बारिद समबरषो ॥ दोहा ॥ तबभीमादिक सुभट बरप्रबल द्विरदके गात । बहुशर मारे क्रोध करि बज्रसदृश अवदात ॥ क्षतज रुधिरकी धारबहु तेसोंगज तेहि काल । अगणित अरुण सुलीकयुत घनसम लसो बिशाल ॥ सोरठा ॥ ता क्षणसो गजराज ह्वै प्रेरित भगदत्तसों। परदल मरदन काजचलो गरजिघनघोरसम ॥ चौपाई ॥ लखि तेहि गजको रूप दराजा । डरपे पांडव सहित समाजा ॥ जानि असह्य पराक्रम गजको । लखे उपाव नदुसह मरजको ॥ लखि भीमहि गभदत्त प्रचारे। बाणबिशाल हृदयमधि मारे ॥ लागेबाण भीमभट अरछित । ध्वजसों अभिरि रहोह्वै मुरछित ॥ उतके सुभटन शंकित देखी। अरु भीमहि इमि मूछित पेखी ॥ हँसि गरजो भगदत्त नरेशा । करौंआजु पांडवन अलेशा ॥ मूछित भये भीमभट जबहीं । राक्षसबीर घटोत्कच तबहीं ॥ ह्वैप्रछन्न माया बिस्तारी । प्रगटो भेष भयानक धारी ॥ ऐरावत गजबरपै बैठो । मोछउमेठि ऐंठि सो ऐंठो ॥ दिग्गज तीनि साथ में सोहे । तिनपैं तीनि असुर अतिकोहे ॥ यहिबिधि चारि कालसम धाई। नृप भगदत्त बीरपैं जाई ॥ चारिउ दिशिते घेरिगजन सों । लागे हनन अनेक शरनसों ॥ चतुरदन्त तेगज भरिरिसि सों। लागेहनन गजहिसब दिशिसों ॥ गज भगदत्त भूपको तनसों ह्वैपीड़ित तिनके गजगणसों ॥ करि आरत धुनि चिघरो ताक्षण। सो सुनि मोदित भे पांडव गण ॥ तब भीषम द्रोणादिक सबसों । कहे सुनो यह मनदै हमसों ॥ दोहा ॥मायावी राक्षस प्रबल बीर घटोत्कच जौन । भगदत्तहि चाहत बधन यहि क्षण सोबल भौन ॥ तातेअब उतशीघ्र चलि नृपको करोसहाय । मरननपावै असुरसों भिरिलरि लेहुबचाय ॥ सोरठा ॥ द्रोणादिक भटसर्ब भीषम के ये

बचन सुनि। बरषत बाणसगर्ब चलेबेगसों असुरपैं॥ महिखरी ॥ तहँ इन्हैं जात घटोत्कचपै सकलपांडव देखिकै। अतिबेगसों रथहांकि उनपै चलत मे अति तेखिकै ॥ तबकौरवी दलप्रबल बढ़ि निजओर आवतपेखिकै। बरबीर धीर घटोत्कच तिहि नृपहि तजि अवरेखिकै ॥ बढि तुरत इनपै चलो धनुटंकारि भटन प्रचारिकै। इमिदेखि ताकहँ द्रोणसो तहँकहेभीष्म बिचारिकै ॥ यहप्रबल राक्षस कौतुकी सुसहाय तासो भिरनकों। नहिं होत मम मनचाव युतनहिं गुणत अब इत थिरनको ॥ बल धैर्य्य बिक्रम शूरता अरुअस्त्र बिधिके मर्मसों। यहजीतिबे की योगहैं नहिं बज्रधररण कर्मसों ॥ भिरि पांडवनके शरणसों इत सकल बाहन श्रमितहैं। सबसुभट शस्त्रज क्षतनसों अतिभये पीड़ित भ्रमितहैं ॥ अबलरै यासों अभिरि ऐसो इतैनहिंकोउ सुचितहै। यहबूझि आजु उपाय कछु करि बहुरिचलिबो उचितहै ॥ करि रजनिमें बिश्राम फिरि संग्राम भोरहि करबहे। यह बचनसुनि सबनृपति गुणितुम कहेसो सतिइमि कहे॥ दोहा ॥ इहि मत को सिद्धान्तकरि पलटि जुगुतिसों सर्ब। निजडेरन प्रति चलतभे लज्जित सेतजि गर्ब॥ दुर्योधन नृपके दलहि रणते बिमुख निरेखि। पांडव बजबावत भयेदुन्दुभि सुदिन सरेखि॥ तदनंतर पांडव सदल निज डेरन मधिजाय। उचित कृत्य सब करतभे निशि दिनके सुखदाय ॥ सोरठा॥ निज डेरम मधिजाय चिंतित दुर्योधन नृपति। उचित कृत्य करवाय शोकाकुलगे भीष्मपै॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिचतुर्थदिनयुद्धवर्णनोनामषष्टविंशोऽध्यायः॥ २६॥

बैशंपायनउवाच ॥ दोहा ॥ समाचार चौथे दिवस कोसुनि वृद्धमहीप। संजय सों बूझत भये सुनहु भूप कुलदीप ॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ संजय सुनि पाण्डवनको नित्यअमानुषकर्म। निजपुत्रन की हारि सुनि होत मोहिं अतिभर्म ॥ पाण्डवसबै अबध्यहैं केहैं योगीदक्ष। जातेवै नहिंमरत निति ममसुत मरत प्रतक्ष॥ करणचहतहै भीमअब ममसब सुतको नाश। संजय यहनिश्चय समुझि होतमोहिं अतित्रास ॥ भीष्म द्रोण कृप सहित मम

सुतइमि रणतेजाय। कियेकहा सोसब कहो हेसंजय समुझाय ॥ रोला ॥ कहेसंजय सुनोनृप इतऔर कछुनहिं भेद। कियेजौन कुकर्म तुमयहतासु कुफल सखेद ॥ करत पाण्डव धर्मयुत निति उचित कर्म बिधान। करत नित्य अधर्म अनुचित तनय तोअज्ञान ॥ कियेतो सुत पाण्डवन सों यथा अनुचित कर्म। नीचजन नहिंकरत ऐसे कबहुं अनय अधर्म ॥ द्रोणभीषम व्यास कृपहम बिदुरये बहुबार। मनेकीन्हें सो न मानेभूपतुम तुवबार ॥ पाण्डवन कहँजीति हैंयह सुतनको मतमानि। किये कारण जान ताको काजयह दुखदानि ॥ भूप दुर्योधन रजनिमें भीष्मके ढिगजाय। कहो यह जोकहो हमसों नृपतितुम बिलखाय ॥ कहेतासों भीष्मइमि हेसुनोकौरव नाथ। कहो तुमहिं बुझाय हम बहुबार गहिगहि हाथ ॥ पाण्डवन कहँ भागदैकरि सुहित प्रेम बढ़ाय। भूमिभोगौ सहित बन्धुन कपट बैरबिहाय ॥ सेा न मानेा भूपतुमयह लखेातासु निदान। इहैअवशि कुमंत्र को फल कहत सवल सुजान ॥ भूपजीतै पाण्डवन कहँबीर ऐसो कौन। सुनो मनदै कहतहौंमैं हेतुताको जौन ॥ सदा रक्षक पाण्डवनके कृष्ण करुणाऐन। कृष्णको सुप्रभाव हमसो कहे सुमुनि सचैन ॥ कहैंतुमसों तौम हम तुमसुनो मनदेभूप। सुनेपावन करणसों इतिहास परमअनूप ॥ एकदिन बिधिगंधमादन शैलपै अनुमानि। राजसुरन समेत ध्याये प्रभुहि जग हितजानि। लखे बिधि तहँ गगनपै प्रज्वलित परम अमंद। तेज राशि बिमानपै आसीन पुरुष स्वछंद ॥ लखतही उठितुरित वेधा नौमि युगकर जोरि। भयेगदगद किये अस्तुति गहे भक्ति अथोरि ॥ सुप्रसीद प्रभुपद्ममाक्ष पुरुष पुराण पावनकर्ण। पद्मगर्भ सुपद्मनाभ सुस्वाहि पद्माभर्ण ॥ कवित्त ॥ बिश्वाबसु बिश्वेश बिश्वमूर्त्ति बिश्वकृत बिभवसी निरामयभूत भव्य भगवान। पादतो धरणिदिशि बाहु दिवसी सुतप बलसत्य धर्म्म कर्म करतव्य बलवान। मूर्त्तिहम सुरकाय शशिसूर चखचारु अग्नितेज जलखेद बायुश्वास सुखदान। अश्विनि करणगिरा जीमिवेद संस्कार आपुकहै बिश्वमय नाथ करुणानाथ ॥ दोहा ॥ तुवप्रसादते हम रचत सब थरभूत समस्त। सबकी गतिहै आपुसों सबमधि आपु प्रशस्त ॥ नाथ हते तुम असुरगण जिते सुरनके हेत। ते सब ह्वैहैं भूमिपति व्यथवत महिहि अचेत ॥ ताते प्रभुतुम करिकृपा भूषिबिशद यदुबंश। बासुदेव

ह्वै करहुमहि भार बिबुध अवतंश ॥ प्रथम सिरजि निजअंशसों संकर-
षणहिं उदार। तदनु प्रगटह्वै कृष्णतुम हरेहु भूमिको भार ॥ जयकरी ॥
करि सुप्रद्युम्नहिं आत्मज बार। लहेहु तासु अनिरुद्ध कुमार ॥ इमिबि-
भज्य निजअंश उदार। ह्वै मानुष हरिये महिभार ॥ सुनि तथास्तुकहि
श्रीभगवान। करुणानिधिभे अन्तर्धान ॥ तब सुरगण बिधिसों यहभेद।
बूझेसो बिधिकहे अखेद ॥ परब्रह्म निर्गुण भगवान। जोअव्यय अव्यक्त
महान ॥ तासों हमयह बिनय सचेत। कीन्हों जगधुर नाशन हेत ॥ सु-
नि प्रभुकहे लेन अवतार। क्रमसों हरण भूमिको भार ॥ ह्वै यदुबंशज
कृष्णउदार। करिहैं महिपै भूरि बिहार ॥ तहँजे जनिहैं मानुषताहि।
तेसब मन्दबुद्धि पटुनाहि ॥ ज्ञेय ज्ञेय ज्ञापक चितज्ञान। ज्ञाता करता
प्रभु भगवान ॥ न्यामक ईश्वर कृष्णहि जानि। भजिहैं ते लहिहैं सुख-
खानि ॥ इमि कहिगे बेधा निजलोक। गेसुर ऋषिगण निजनिज ओक॥
सुनो भूमिपति यह इतिहास। परशुराम अरु नारद व्यास ॥ मार्कण्डेय
सुमुनि अवदात। हमसों कहेरहे हेतान ॥ आत्मजजासु बिरंचि प्रधान।
सो जगदीश कृष्ण भगवान ॥ लखि पांडवको धर्म सुनीति। हैं उनपै
अनुकूल सप्रीति ॥ दोहा ॥ यह बिचारि हम प्रथमहीं भूपतुम्हें बहुबार।
दियो शिखापन सुनिनतुम मानैसो व्यवहार ॥ हैं नारायण कृष्ण प्रभु
अर्जुन नर बिख्यात। करि तिनसों इमि बैरतुम लहौ कुशल किमितात।
जहां कृष्ण तहँधर्महै जहां धर्मजयतत्र। इहां न कृष्ण न धर्महै होय सु
जय किमि अत्र ॥ सोरठा ॥ भीषमके येबैन सुनि दुर्योधन भूपमणि। कृ
ष्णहिंराजिवनैन परमेश्वर जाने समुझि ॥ चौपाई ॥ भीष्म पितामहसों
यह सुनिकै। अवनीपति दुर्योधन गुणिकै ॥ कहे कहौप्रभु गुण मन-
भाये। सोसुनि भीषम अतिसुखपाये ॥ जेहिबिधि प्रभुजग उत्पति की-
न्हें। पृथक् पृथक्सो सबकहि दीन्हें ॥ सोकहि कहे भीष्म गुरुज्ञानी।
पांडव यथातथ्य यहजानी ॥ हैं कीन्हे केशवहि अराधित। तासोंपावत
सुजय अबाधित ॥ भीष्मपितामह यहिबिधि कहिकै। चुपह्वै रहेमौनता
गहिकै ॥ तब तोतनय बिदाह्वै जाई। सोइ जगे फिरिनिशा बिताई ॥
निरखि भोरनृप अमरषबाढ़े। उभयसैन सजिसजिमे ठाढ़े ॥ तहांभीष्म
अतिगौरव लीन्हें। मकर व्यूहकी रचनाकीन्हें ॥ मुखथर रहेआपु जग

करि सब अँग चतुरंगिनि सेना ॥ सो लखिकै पांडव अति कोहे । बिधिवत बाजिब्यूह अतिसोहे ॥ मुखथर रहोभीमभट भारी । बिदित पराक्रम अरि मदगारी ॥ धृष्टद्युम्न अरुबीर शिखण्डी । चखभे अनमिष अमल अदण्डी ॥ सात्विकि शीश पार्थभे ग्रीवा । लैसँग बहुभट पालक सीवा ॥ बामपक्षभे द्रुपदनरेशा । सदल सपुत्र भयानक भेशा ॥ दक्षिण पक्षभयो जयलायक । केकयपति अक्षोहिणि नायक ॥ नृपति युधिष्ठिर सहित समाजा । पृष्ठदेश हे सुनिये राजा ॥ सुवन द्रौपदीके अरिमर्दन । अरु अभिमन्यु सिंहसम नर्दन ॥ पुच्छरक्ष ह अरिदल गंजन । निज चरितन गुरुजन मनरंजन ॥ इमिरचि बाजब्यूह अति भीषम । चलो भीमभट जहँहैं भीषम ॥ दोहा ॥ मकरब्यूह मुखभीष्म पै बरषत बाण बिशाल । बाजिब्यूह मुखभीमभट चलो चलैजिमि काल ॥ तब भीषम अति क्रोधकरि बरषिबाण समुदाय । पांडवके दलकेभये मोहित करक सचाय ॥ सोरठा ॥ निजदल अरदितदेखि बीरधनंजय क्रोधकरि । भयो भयानकवेष हन्यो भीष्मपै सहस शर ॥ चौपाई ॥ लखि दुर्योधन भूपति ज्ञानी । कही द्रोणसों यहिबिधि बानी ॥ पूर्वदिवसमें पांडव आई । बधे सुभटबहु अरुबसु भाई ॥ भीष्म आदि तुमसब बलभारे । एक प्रमाण पुरुषनहिंमारे ॥ हम तुमरे भीषमके बलसों । लरन चहतहैं इन्द्रप्रबल सों ॥ नहिं पांडवन गुणतहे रणमें । तेतुव लखत करत इमि रणमें ॥ ताते अबगुणि ममहित धरिये । निजअनुरूप पराक्रम करिये ॥ यह सुनिद्रोण क्रोधसों भरिकै । लगेलरन करलाघव करिकै ॥ निज दल मर्दत द्रोणहिं देखी । भिरोआय सात्विकि अतितेखी ॥ सात्विकिद्रोण बीरबर भिरिकै । कठिन युद्धकीन्हें तहँ थिरिकै ॥ करिकर लाघव द्रोण रिसारे । दशशर भालदेश मधिमारे ॥ सोलखि भीमसेन अति रोषे । तजे द्रोणपै बहुरण चोषे ॥ ताक्षण द्रोण भीष्म धनुधारी । अरु नृप शल्य बिदित रणचारी ॥ बरकर लाघवके बितरणसों । भीमहिं दीन्हें छाय शरनसों ॥ ताथर सुवन द्रौपदीकेरे । अरुअभिमन्यु बीरयहहेरे ॥ तेषटभट अतिगौरव लीन्हें । इन्हैं शरणसों छादित कीन्हें ॥ कठिन युद्धमाचो तहँ ताथर । भिरे उभय दिशिके योधावर ॥ दोहा ॥ भिरोशिखण्डी आयतहँ भीषमताहि निहारि । पूर्वनारि यहजानि तजि युद्धकिये

नतनारि ॥ सोरठा ॥ ताक्षण जानि अनर्थ द्रोण शिखण्डी सोंभिरे। दोऊ बीर समर्थ बीरभाव बिधिमधि थिरे ॥ तोमर ॥ तोतनय तबअतिभाखि। दलमध्य भीष्महिं राखि ॥ बहु दुन्दुभी बजवाइ। बढ़िचलो रिससों छाइ ॥ सो निरखिभट भीमादि। बढ़िभिरे घन समनादि ॥ तहँ मचो संगरघोर। बहुभट कटे दुहुंओर ॥ बहुभये शीश बिहीन। बहुभयेकर पदछीन ॥ बहुतजे तोमर बान। बहुभल्ल शक्ति अमान ॥ हनिभिन्दि-पाल सटेक। बहुहते सुभट अनेक ॥ बहुसुभट गहिअसि चर्म। लरि हने भटन अभर्म ॥ कटिगिरत बेपरमान। शिर उपलवृष्टिसमान ॥ नरमुंड करपग रुण्ड। कटिपरे तुरँग बितुण्ड ॥ केझुण्ड शोणितबीच। इमिलसे अमल अनीच ॥ मनु भारती मधिजाद। परिरहे लहि अहलाद ॥ कटि गिरत सुभट गजस्थ। तनभरै रुधिर अवस्थ ॥ तंगिरत इमि लखिजात। जिमिघने उलकापात ॥ भिरि गिरे कितने बीर। धरु मारु टेरत धीर ॥ बहुबीरह्वै बिनुशीश। करिरहे धनुष कसीश ॥ दोहा ॥ कितने भट भिरि परस्पर बाहनअस्त्र बिदारि। बाहुयुद्ध भिरि करतभे महाक्रोध बिस्तारि ॥ तहां कपिध्वज पार्थभट घनधुनि धनुटङ्कारि । मरदत भो तोदल प्रबल अगणित बाण प्रहारि ॥ चौपाई ॥ अगणितभटन प्राणबिनु कीन्हें। अग-णित अंगभंग करिदीन्हें ॥ बहुगज किये बिनाकर रदके। बहुभट कीन्हें बिना द्विरद के ॥ कितने सुरथकरे बिनुबाजी। अगणित कीन्हें बिनुरथ साजी ॥ बहुहय किये बिगत हयसादी। बहुगज कीन्हें बिगत प्रमादी ॥ बहु बाहन ह्वैह्वै गत बाहक। इत उत भगत फिरे बिनुगाहन ॥ बहु बाहक गतबाहन ह्वैकै। लरत भये थिरि महिपै ज्वैकै ॥ कीन्हें बिनु ध्वज बहुयुथपनको। दिये अधनुकरि बहुसुभटन को ॥ करि अतिकर लाघव हे राजा। छायदिये तो सुभट समाजा ॥ तो सैनिक गणकोतेहि क्षणमें। रह्यो न दिशा ज्ञानगुणि मनमें ॥ इमि पारथ घन केशर बनमें। भये मगन इतके भटरणमें ॥ पारथ के धनुकी धुनि सुनिसुनि । ह्वै अधीर इतके भट गुनि गुनि ॥ भीष्मपितामह के ढिग डगरे। तबसगर्ब भीषम भे अगरे ॥ मद्र त्रिगर्तदेशके योधा । अरु कालिंगज सुभट स क्रोधा ॥ भट गान्धार देशके जेते। अरुसोबीर देशके तेते ॥ हयारोहनिज दल सहचायक। भूप जयद्रथ सैन्धव नायक ॥ चौदह सहस सुभटरण-

धीरा। सहित्त शकुनि दुर्मति बरबीरा॥ बढ़िभीषमके सँगअति बलसों। भिरेजाय पांडव के दलसों॥ रथी गजी तुरँगस्थ बिधाती। भिरे परस्पर बीर पदाती॥ भिरे भीष्म पारथसों जाई। शल्य युधिष्ठिर भिरे रिसाई॥ बीर अवंतिदेशको राजा। काशिराजसों भिरो ससाजा॥ दोहा॥ पुरुषसिंह भटभीमसों भिरो जयद्रथ बीर। हांकि भिरो सहदेवसों भट बिकर्ण रणधीर॥ दुर्योधन अरु शकुनिये निजनिज धनुटंकारि। सदल मत्स्यपति नृपतिसों भिरे सगर्ब प्रचारि॥ चेकितान अरु द्रुपद अरु सात्विकि बीर प्रचण्ड। द्रोण द्रोणके पुत्रसों भिरे करषि को दण्ड॥ सोरठ॥ धृष्टद्युम्न बलवान कृप कृतबरमासों भिरो। करतभये घमसान यहि बिधि द्वन्द सहस्त्र जुटि॥ भुजंगप्रयात॥ मचोघोर संग्राम ताठौर भारी। चढ़ेचाव चोखेभिरे युद्धचारी॥ उभय ओरके वीरलेनामटेरैं। थिरौ हेथिरौ भाषिकै बाण प्रेरैं॥ किते बाणमारैं किते शक्तिझेलैं। किते भिन्दिपालै कितै भल्ल मेलैं॥ किते खड्ग लीन्हे पिले खूबखेलैं। कितेलै गदा घूमिदै घावकेलैं॥ बिनाअस्त्र ह्वैह्वै किते बीर टूटैं। भरे गर्बसों तालदै हांकि जूटैं॥ भिदे भूरि शस्त्रान सों बीरकेते। खरे हे भरे कोप सों युद्ध हेते॥ भिरे बीर कैते गिरैं फेरिऊठैं। न संग्राम के ग्रामसों नेकुतूठैं॥ बिनाशीश के ह्वै किते बीर डोलैं। किते मारुरे मारुरे मारुबोलैं॥ दोहा॥ सुबरण सों बिरचित बिशद बरण बरणके भूरि। अस्त्र अनगिने जेरहे चलत उभय दिशिपूरि॥ हेममय कोदण्ड अरु भूषणमय दोर्दण्ड। चपल असंख्यन होतहे अध ऊरध जे चण्ड॥ जानिपरो तिनकहँ निरखि मनुछन छटाअनेक। अनुक्षन प्रगटति दुरति फिरि प्रगटति दुरतिसटेक॥ चौपाई॥ हय गजभट अगणित तेहि रणमें। कटे कटे अगणित भट क्षणमें॥ कितने मत्त द्विरद बिरुझाने। बिधि बहुभटन गये बधिजाने॥ अस्त्रजानसों थिर तिहि पलमें। भे मोहित सबभट दुहुं दलमें॥ ताक्षण मत्स्याधिप रणधीरा। अरु बिराटबल बुद्धि गँभीरा॥ लै सँग सुभट सिखण्डहि कोपे भिरे भीष्म सों जयहित चोपे॥ कृप विकर्णअरु बहुभट गणसों। भिरे पार्थभरि जयके प्रणसों॥ सदल जयद्रथ के संग ह्वैकै। बहुतो तनय क्रोधसों ग्वैकै॥ भिरे भीमसों अमरष साने। भीम तिन्हैं लखि अतिहरषाने॥ शकुनिउलूक पितासुत ताक्षन। सहदेव सों भिरे अरि तापन॥

नकुल त्रिगर्तनसों भिरिराजा। किये युद्धभिरि जययश काजा॥ केकयअधिप शाल्वसों भिरिकै। भूपति लरतभयो तहँ थिरिकै॥ सात्विकि चेकितान रणचारी। अरु अभिमन्यु बिदित धनुधारी॥ तो पुत्रनसों भिरि रण कीन्हे। बाण नहनि ब्याकुलकरि दीन्हें॥ सेनाधिपति द्रुपदसुत योधा। भिरो द्रोणसों सबल सुयोधा॥ गजानीकयुत धर्म नरेशा। कीन्हो युद्ध भयानकभेषा॥ फिरिइमि बीर धीर तकितकिकै। भिरे बीर रससों छकि छकिकै॥ दोहा॥ मांस रुधिर के पंकसों पूरितह्वै है भूप। रण मण्डल भो कालके पाक सदनके रूप॥ गुरुतोमर॥ तहँ दुन्दुभिके झेरको। हय मैगलन के टेरको॥ बर धनुषके टंकार को। अरु भटनके हुंकारको॥ बहुभल्ल तोमर धानको। असि झिलिम टोप मिलान को॥ रव रह्यो पूरि दिशानमें। तेहि समयकै घमसान में॥ दोहा॥ ताक्षण भीषमभीम कहँ निजदल मर्दत देखि। हनत भये बहुबाण वर बधकी बिधि अवरेखि॥ चौपाई॥ तहां भीम अति रिस बिस्तारी। दीरघशक्ति भीष्म पै डारी॥ भीषम शक्तिहि आवत देखी। बीचहि काटिदये अतितेखी॥ फिरि क्षुरप्रशर करमें लीन्हों। मारि भीमको धनुह्वै कीन्हों॥ लखि सात्विकि भीषम पै रोखे। सत्वर हने बाणबहु चोखे॥ तबहिं भीष्मबर बाण प्रहारो। सात्विकि के सूतहि बधि डारो॥ तब सात्विकि के रथके बाजी। निजबश भये बिनारथसाजी॥ रथयुतइतउत दौरन लागे। धरहु धरहुसब झारनलागे॥ दुचित भये पाण्डव तहि क्षणमें। तहँलहि समय भीष्म गुणि मनमें॥ बरकर लाघव बिधि बिस्तारे। परदलके अगणित भटमारे॥ सोलखि बीर पांडवीदलके। भिरेभीष्म भटसों अतिबलके॥ तब इतकेद्रोणादिक योधा। जुटिकीन्हें तिनको अवरोधा॥नृप बिराटअति कोपितह्वैकै। हने तीनिशर भीष्महिंज्वैकै। तीनिबाण तुरँगणकेतनमें। उरगण सम मारत भे रणमें॥ तबभीषम दशशर अनिआरे। नृप बिराटके तनमधि मारे॥ अश्वत्थामा भट रणचारी। लखि अर्जुनहि क्रोधबिस्तारी॥ मारतभयो बाणषट तैसे। लषणहि हने जलदस्वन जैसे॥दोहा॥ तब पारथ अति कोपकरि मारिबाण उद्दण्ड। अश्वत्थामा बीरको धनुकीन्हें दोखण्ड सो धनुतजिकै द्रोणसुत गहिअनित्यको दण्ड। हनेपार्थकेगातमेंदश कम शतशर चण्ड॥ सोरठा॥ सत्तरिबाण बिशालहने कृष्णकेगातमें। लखि

करिकोप करील पार्थ हने अतिकठिनशर ॥ चौप ई ॥ बेधितासु अतिदृढ़तनु त्राणा। प्रविशो तनमधि सोबर बाणा ॥ भयो नव्यथित द्रोण सुततासों। बरषत रह्यो बाण भरिभासों ॥ जेइमितासु शूरता चाहे। तेइतकेभट ताहि सराहे॥ गुरुको तनयगुरुहिप्रियभारी। अरु विशेषसोविप्रप्रचारी॥ पारथ तापै करुणा धरिकै। गये अनतही रिस परिहरिकै ॥ दुर्योधन भीमहि लखि रोखे। हने बाणदश अतिसे चोखे ॥ तब कुरुपति कहँ भीम प्रचारे। हने बाणदश अति अनियारे ॥ भीमहि सो तेहि भीमप्रहारी। घोर युद्ध कीन्हों धनुधारी ॥ भटअभिमन्यु धीर रणचारी। चित्रसेन कहँ दश शरमारी ॥ सत्तरि बाण भीष्म कहँमारे। पुरमित्रहि शरसात प्रहारे ॥ चित्रसेन मारे तेहि क्षणमें। दशशर पार्थतनय के तनमें ॥ भीषम हने बाणनव ताही। अरुपुर मित्र सातशर चाही ॥ तबअभिमन्यु क्रोधकरि डाटो। चित्रसेन नृपको धनुकाटो ॥ तबबहु भूपक्रोधसोंपागे। घेरिताहि शर मारनलागे ॥ तहां धनंजय को सुत बरभट। करतभयो अति बिक्रम परगट ॥ सब के बाणकाटि महिडारे। सबके तनमधि बाण प्रहारे ॥ दोहा ॥ अर्णव मधि बड़वाग्निसम लस्यो तहां बरबीर। पार्थ तनय अभिमन्यु भट बिदित धनुर्द्धर धीर ॥ ऐसे संगर में निरखि अभिमन्युहि निश्शंक। भिरोजाय लक्षण कुंवरकीन्हें भृकुटीबंक ॥ सोरठा ॥ निरखि लक्षणहि तत्र तयन पार्थकोकोपकरि। गुणि लीबो जयपत्र हनत भयो षट बाणवर ॥ जयकरी ॥ फिरि सूत महाबलके तनमें। षटबाण हनेरिस कै मनमें ॥ तेहि ताक्षणलक्षण बीरबली। बहुबानहने गहि ऐंडि भली ॥ अभिमन्यु महारिस त्यों गहिकै। अब आड़हु मो शरयों कहिकै ॥ सब बाजि हते तेहिके रथके। चलिजे कबहूं पथमें न थके ॥ फिरि सूतहि मारि गिरायदयो। करमेंतबबाण करालल्यो ॥ लखि लक्षण सत्वर शक्तिहने। अभिमन्यु करेतेहि टूकघने ॥ यहदेखतही कृपजू बढ़िगे। तेहि लै अपने रथपै कढ़िगे ॥ दुर्योधन को सुत ताक्षण में। यमके मुखते बचिगो रण में ॥ दोहा ॥ उभयसेनसो होतभो घोरयुद्ध तेहिकाल। पृथक्पृथक् कहि कोलहे तासुअन्त क्षितिपाल ॥ अद्भुत बिक्रमतहँ कियो सात्विकि बीरअमान। करिकरलाघव तजतभो अनुपम अगनित बान ॥ सोरठा ॥ जिमि कब किमि जलदान तजत बारिनाहिँ लखिपरत। तिमि सात्विकिके बाण

गहत तजतनहिं लखिपरे ॥ महिखरी ॥ तहँ छाय दीन्हें बीरसात्वकि बाण बर चित्रित बने। अति चपल प्रति सन्धानमें हति डारि दीन्हेंभटघने ॥ यहिभांति निजदल बधत लखि कुरुनाथ तोसुत रिसभरो। इमि कह्यो अयुत रथीनसो लरि सत्विकीको बधकरो ॥ सुनिरथी ते बढ़ि कोपकरि भिरि सात्विकी सों लरतभे। भिरि सात्विकीके शरन सों बहु सुभट तिनमें मरत भे ॥ बहु भये अकर असूत अधनु अबाजि बहुरण तजि गये। यहदेखि भूरिश्रवा सात्यकि बीरके संमुखभये ॥ दोहा ॥ करिकर लाघव सबिधि तहँ भूरिश्रवा अमान। सात्विकिके दलपै दये छाय उरग समबान ॥ सोरठा ॥ ह्वैब्याकुल तेहिकाल सात्विकि के भट भगे तिमि। जिमि लखि सिंहहि हाल मत्त गजहितजि कलभगण॥ चौपाई ॥ सात्विकि के दशसुत बलभारे। तेसब भूरिश्रवहि प्रचारे ॥ कहत भये इमि अतिसै माषे। हम सब तुमसों रण अभिलाषे ॥ पृथक्पृथक् कै साथहि लरिये। जिमि चाहौ तिमि संगर करिये ॥ कैतुम हमहिं जीति जय लहिहौ। कै हमसों मरि नभपथ गहिहौ ॥ सोसुनि भूरिश्रवा मुसुकाई। कह्यो लरहु सबसाथहि आई ॥ सोसुनि ते दशभट अतिहरषें। भूरिश्रवा पर बर शर बरषे ॥ ते सिगरे अगणित शरमारे। भूपकाटि सब महिपै डारे ॥ तृतियपहर में ते भिरि ताथर। कीन्हों घोरयुद्ध योधाबर ॥ भूरिश्रवा-कियो अतिबिक्रम। काटि दियो सबके धनु क्रम क्रम ॥ फिरि तिनके शिर छेदन करिकै। गरज्योहियोमोदसों भरिकै ॥ निजदल पुत्रनके बधदेखी। भूरि पराक्रम सात्विकितेखी ॥ सत्वर भूरिश्रवा सों भिरिकै। कठिन युद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥ रथके हय अरु धनुध्वजभारी। काटि परस्पर तेरण चारी ॥ खड्ग चर्म गहिगहि रथत्यागी। लरनलगे अतिरिससों पागी ॥ यहि बिधि लरतसात्विकिहि पेखी। पाण्डव भीमसेन अवरेखी ॥ शीघ्र सात्विकिहि रथपैलीन्हें। कहि सुबचन आश्वासितकीन्हें ॥ दोहा ॥ दुर्योधन भूरिश्रवहिलै निजरथपै तत्र। बजवावतभे दुंदुभीमनुपायेजयतत्र ॥ दुर्यो-धन क्षितिपाल मणिह्वै सगर्ब तेहिकाल। अर्जुनपै भेजेसुभट सहसपचीस कराल ॥ तिन्हैं सँहारे निमिषमें पारथधीर धुरीण। नरगजहयकेरुधिरकी सरितहिकीन्ही पीण ॥ ताक्षण भीषम बीरबरघोरयुद्ध करिभूप। अगणित भट क्षणमें हने भयेभयानक रूप ॥ इतनेमें संध्याभईअस्त होत भेसूर।

फिरि निजनिज डेरन गये उभै भटन के पूर ॥ सोरठा ॥ निजनिजडेरन जाय उचित कृत्यसब करतभे । इमि पचर्यो दिनपायभयो युद्धहे भूमिपति ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्वाम्यभिगामिनाश्रीवंदीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेन कविनाद्यतेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिपंचमदिवसयुद्धवर्णनोनामसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

लहि छठयों दिन भोरहीनित्य कृत्य करिसर्ब । सजतभये निजनिज सयन भूपतिगहि गहिगर्ब ॥ लहिआज्ञा नृपधर्म की धृष्टद्युम्न मतिमान । मकरब्यूह बिरचित भये अनघ अभेद्यअमान ॥ चौपाई ॥ शिरभे पारथ द्रुपदनरेशा । सहदेव नकुल चक्षु शुभदेशा ॥ मुख भे भीमसेन अरिमर्दन । पुरुषसिंह बारिद समनर्दन ॥ सात्विकि सहित युधिष्ठिर राजा । अरु अभिमन्युबीर सहसाजा ॥ सुवन द्रौपदीके रणधीरा । अरुभट प्रबल घटोत्कच बीरा ॥ येभेग्रीव बिराट ससेना । पृष्ट देशभे अरिदल जेना ॥ पांचभाय नृपकैकय थरके । अरुभट धृष्टद्युम्न बल बरके ॥ बामपार्श्व ह्वै सदल बिराजे । रण मण्डल सुखमासों साजे ॥ ससयन चेकितान नरनाहू । अरुनृप धृष्टकेतु बरबाहू ॥ दक्षिण पक्ष व्यूहको ह्वैकै ॥ खरेभये अमरष सों ग्वैकै । इरावाण अरुबीर शिखण्डी ॥ पुच्छभये लैसेना चण्डी । कुन्तिभोज नरपति रणचारी । अरु नृप सतानीक धनुधारी ॥ सदल भयेहे पद अरिनाशन । गर्बि गरजि टंकारि शरासन ॥ यहिबिधि मकरब्यूह रचि जतिसों । लसे भूप पाण्डव बलअतिसों ॥ उनको मकरब्यूह लखि भीषम । बिरचे क्रौंचब्यूह अतिभीषम ॥ तुण्ड तासुभेद्रोण सुकामा । चखभे कृप अरु अश्वत्थामा ॥ नृपबाह्लीक भूप कृतबरमा । सदल शीशभे पूरित परमा ॥ दोहा ॥ सूरसेन आदिक नृपन सहदुर्योधन भूप । भे उरक्रौंच सुव्यूह को आयुध गहे अनूप ॥ देश प्रस्थला को अधिप नृपति सुशर्मा बीर । निज दल युतभो व्यूहको बामपक्षगँभीर ॥ चूलिक जवन तुषार अरु सकदेशस्थ समस्त । क्रौंचव्यूह के ह्वोत भे दक्षिण पक्ष प्रशस्त ॥ नृपति श्रुतायुस सतायु अरु भूरिश्रवा नरेश । क्रौंचव्यूहके जघनह्वै शोभित भये सुभेश ॥ सोरठा ॥ यहिबिधि रचिरचि व्यूह उभय बन्धु अमरष भरे । बढ़ि

बढ़ि सह भटजूह भिरिभिरि लागे लरनतहँ ॥ चौपाई ॥ भिरे गजस्थ गजस्थ प्रचारी। जूटे रथीरथी धनुधारी ॥ हय सादिन सों भिरि हय सादी। कीन्हेयुद्ध सिंह समनादी ॥ भिरे पदातिनसों पदचारी। केशरि समरण बिपिन बिहारी ॥ भिरे गजन सों रथी प्रमाथी। भिरे रथस्थ हयस्थ ससाथी ॥ भिरे रथिनसों किते पदाती। कुशल अस्त्र बिधिमें दृढ़ घाती ॥ कितने हयसादी तेहिक्षणमें। मरदन लगे पदातिन रणमें ॥ कितने तुरँग गजनपै डारे। तोमर सांग भल्लअसि मारे ॥ घनसमान सेना चतुरंगी। मणिमय धनु असितुरित सुअंगी ॥ कूजनि हय गजकी चहुंओरा। अरु दुन्दुभि धुनि गरजनि घोरा ॥ आयुध पातबारि झरि दुरदिन। सरुधिर रणमहि शरध्वज कुमुदिन ॥ रथ नेमिन की धुनि सुनि जाने। बोलत बिबिध बिहँग उमदाने ॥ मणिगण मुकुट आभरण वारे। जुगुनू जाल समान निहारे ॥ सुभटन की घुमरनि गहिधाई। सो जनु चली प्रबल चौपाई ॥ रुधिर भरे भटगजहय रूरे। तेजनु बिटप बारिसों पूरे ॥ मरेबाजि नरगणके केशा। साड्वल सम तहँ लसे सुभेशा रणमण्डल सुखमासों सानो। प्राबिटकाल समान लखानो ॥ दोहा ॥ तहां भीम अति बेगसों चलो द्रोणपै तात। देखिद्रोण तब शरहने भीमसेन के गात ॥ भीमसेन तब कोपकरि तीक्षण शरसों मारि। द्रोणबीर के सारथिहि दीन्हें महिपैडारि ॥ सोरठा ॥ द्रोणाचार्य अभर्म आपुबागगहि युगुति सों। कीन्हें अद्भुतकर्म बरषिबाण अरिसैन में ॥ भीष्मद्रोण तेहि ठौर उतके अगणित भटबधे। पारथभीम सगौर भट असंख्य इतकेहते ॥ चौपाई ॥ तब धृतराष्ट्र कहतभे ऐसो। संजय होतलिखे बिधि जैसो ॥ दल अरु बन्धु द्रव्य बलगुणसों। ममसुत भूप अधिकहैं उनसों ॥ जैसे भट अगणित ममदलमें। तैसो एक न उनके बलमें ॥ भीष्मद्रोण कृपअश्वत्थामा। इनसम को उत बिक्रमधामा ॥ ममसुतसो लहिलहि मनभाये। मोदित सब नृप ममदिशि आये ॥ नहिंसुनि बिनै नात गुणि क्षोहन। आय लरत ये नृप ममगोहन ॥ सबबिधि उनकहँ जीतन लायक। हैं दुर्योधन कुरु कुलनायक ॥ सोनहिं जीति लहत नित हारत। नितवै मम अगणित भटमारत ॥ बै भीषम द्रोणादि भटन को। जीतत यह व्यथवत मममनको ॥ बिदुर अनेकबार समुझायो। नहिं दुर्योधन हिये

बसायो ॥ जोकछु बिदुर कहतहे आगे । सोअब आवन चाहतआगे ॥ सुनि यह अन्यभूपकी बानी । कहतभये संजय अनुमानी ॥ नृपअबहोत जितो अनभल है । सोसब तुव अवगुणको फलहै ॥ गृहदाहादिक अनरथ जेते । भये किये नृप तुम सबतेते ॥ गुणेहु न युवा युद्ध करवावत । अबकत इतनो शोच बढ़ावत ॥ अब नित दुस्तर अनरथ सुनिहौ । लहि दुखदुसह दोषनिज गुणिहौ ॥ दोहा ॥ तुम्हैं न बूझे बिनु कियो दुर्योधन कछु कर्म । मनेकियो तुम जौन नहि कीन्हों तौन अधर्म ॥ तातेअब कछु मति कहौ मति कहवावहु भूप । युद्धव्यवस्था सुनहु सब निजकृत के अनरूप ॥ सोरठा ॥ करत कर्म नर जौन सुखद दुखद जेहि भांतिको । अवशि तासुफल तौन लहतभूप इतकै उतै ॥ रोला ॥ मचे संगरघोरभीम असंख्य सेना मर्दि । निरखिकै तो सुतन को समुदाय घनसम नर्दि ॥ चपल रथ चलवाय बाणन मारि व्यूह बिदारि । भयो प्रविशित सैन में बहु बाजि गज भटमारि ॥ पाय निजदल मध्य भीमहि सिमिटि तो सुतसर्ब । लेहु जीवत पकरि यहि यह समुझि गहिगहि गर्ब ॥ चले सम्मुख भीमके सँग लये सेनाभूरि । भीमबीर प्रचण्ड तिनमें देतभो शठ पूरि ॥ हनत आयुध सकल तो सुत सर्ब दिशिसों घेरि । चलेभीम सुधीर पै अब भागुमति इमिटेरि ॥ जानिकै वृत्तान्त तोसुत भटनको तब भीम । गदा गहिकै कूदि रथसों भिरोबीर अधीम ॥ तुरँग रथ गज सुभट अगणित मारि मरदत बीर । सयन के मधि देशमें चलिजात भो रणधीर ॥ तहां बिगत सहाय प्रविशित बीर भीमहि देखि । धृष्टद्युम्न महारथी तजि द्रोण कहँ अवरेखि ॥ चलो सत्वर भीमके ढिग तजतअगणित बान । द्रोणसों उत भिरत भो तबद्रुपदभूप अमान ॥ कौरवीदल मधी प्रविशि भट धृष्ठद्युम्न उदार । भीम बिनुरथ भीमको लखि भयो दुखित अपार ॥ भयो बूझत सारथिहि भरि नयनचैन गँवाय । भीमभट मम प्राणप्रिय का भयो देहुबताय ॥ कहत भो नृप तनय भटसों सारथी इमितत्र । भीम गहि गुरुगदा गे कुरुनाथ भूपति यत्र ॥ दोहा ॥ ममबध हितजे उदितते क्षणमें तिन्हैं बिपोहि । मैं आवों तौ लगि रहौतुम बतकहि गेमोहि ॥ चौपाई ॥ ऐसो बचन सूतसों सुनिकै । धृष्टद्युम्न सेनापति गुणिकै ॥ भीमसेन ममसखा सोहायो । अरु सम्बन्धी जग

में गायो ॥ ताहि बिना निजदलमें जाई। कहब कहा सुभटन सोंभाई ॥ भीरिपरे तजि संगिहि जोई। निजबचाव गुणिन्यारे होई ॥ दैवनकरत तासुभल कबहूं। अयश नरक तेहि अबहूं तबहूं ॥ ताते गयो जहां नर चारी। जाततहां हमव्यूह बिदारी ॥ इमि कहि धृष्टद्युम्न धनुधारी। चलोसैन मधिभटन प्रचारी ॥ जितहवै भीमसेन दल मर्दत। गयो रहो सिंहैसम नर्दत ॥ बरषत बाणगहे मगसोई। गयो न आड़ि सक्यो तेहि कोई ॥ यहिबिधि बीरजाइ मधि दलमें। लखतभयो भीमहि तेहि पलमें ॥ तिमि बिहरत सुभटन तेहिमारत। सोसब दिशिफिरि भटन सँहारत ॥ अगणित गज हय भट बधि डारे। हाहाकार सैनमें पारे ॥ धृष्टद्युम्न इमिभीमहि देखी। निकटगये हिय मुदसों भेखी ॥ सादरनिज रथपर बैठारे। लगेरहे शरतिन्हें निकारे ॥ फिरितेउभै बीरमदमाते। लागेलरन बीर रसराते ॥ दोहा ॥ एककालमें अतिप्रबल अनिल अनल बनपाय। जिमि बिचरैं तिमितहँ लसे ते युगभट गहिचाय ॥ तहँ निज बंधुनसों कहे दुर्योधन अनखाय। द्रुपद तनय इत भीमकी आयो करन सहाय ॥ अबयाको बध करहु लरिकरिकै ककूउपाय। तौ ममजीवन सुफलहैजो यह जियत न जाय ॥ चौपाई ॥ यहसुनि सिगरे भटभय त्यागे। धृष्टद्युम्न कहँ मारनलागे ॥ घनजल जाल अचल परजैसे। तापर बरषेते शर तैसे ॥ धृष्टद्युम्न तहँ अतिरिस धार्यो। तिनपै मोहन अस्त्र प्रहार्यो ॥ तब तो सबसुत मोहित ह्वैकै। जड़सम भयेचपलता ग्वैकै ॥ भूपतितहां लराई बिगरी। भगी फौज तिहि थरकी सिगरी ॥ वादिशि जीति द्रुपद कहँआरज। शंख बजायो द्रोणाचारज ॥ सुनो द्रोण तहँ ताही क्षणमें। मोहितभे सबकौरव रणमें ॥ तुरितगये तित धनुटंकारत। पाण्डवके दलमेंभय भारत ॥ यहि बिधि शीघ्रद्रोण तहँआये। तेभट तिनहि हनत नहिंपाये ॥ तहँतो सुतन प्रमोहित देखी। बरप्रज्ञास्त्र तज्यो अवरेखी ॥ तबही चेतिउठे सबयोधा। लगे पूर्ववत लरन सक्रोधा ॥ ताक्षण धर्म भूप अनुमानी। निज सुभटनसों कही सुबानी ॥ भीमगयो परदलमें जबसों। खबरि न तासुमिली कछु तबसों ॥ होति मोहिं अति चिन्ता भाई। सादर लेहुखबरि उतजाई ॥ भयोकहाका करतबकीन्हों। केहि केहिमारि आजु यश लीन्हों ॥ यहसुनि द्वादशभट बलपूरे। चलेसदल बरषत शर

रूरे॥ दोहा॥ पांचभाय केकय अधिपअरु अभिमन्यु सुबीर। पांचद्रौपदी कसुवन धृष्टकेतु रणधीर॥ ये द्वादशभट चले तहँ रचि सूचीमुख ब्यूह। बंधत इतके ब्यूहपर मर्दत भटगुण ब्यूह॥ सोरठा॥ मचोरहो तेहिकाल अर्जुनसों अरुभीष्मसों। सँगर कठिन कराल दक्षिणदिशिमें भूपमणि॥ तोमर॥अभिमन्यु आदिक बीर। जेचले उत रणधीर॥ भटइतैकै अवलोकि। नहिंसके तिनकहँ रोकि॥ तेहनत भटन बिनोदि। गेभीमके ढिगमोदि॥ तहँभीम तिनकहँ देखि। अतिमुदित भे अवरेखि॥ तहँमचो सँगरघोर। शरपूरि गेअब ओर॥ कैकेयनृपति उदार। भटभीमको करि प्यार॥ निजसुरथ परबैठाय। भिरिलगे लरन सचाय॥ तेहिसमय नृपअभिराम। दिनगयो हो युगयाम॥ सुतद्रुपद कोबलवान। भिरिद्रोण सोंसबिधान॥ करियनुष कोसंधान। मोहनत अगणित बान॥ तबद्रोण ताकहँ डाटि। बरधनुष दीन्हों काटि॥ इमिकाटि कैधनुतासु। बहुबाण मारेआसु॥ भट द्रुपद सुततेहि ठौर। गहितुरित बरधनु और॥ आचार्य्य भटके गात। शरहने सत्तरि जात॥ तबद्रोण बरशर प्रेरि। धनु तासु काट्यो फेरि॥ फिरि मारिबर शरचारि। बरबाजि चारोंमारि॥ नृपसुतहि बिरथ निहारि। आचार्य्य धनुटंकारि॥ सबभटन के तकि काय। शरहनत भोदृढ़घाय॥ दोहा॥ धृष्टद्युम्न रणधीरतब निज रथतजि अनखाय। बिदितबीर अभिमन्युके रथपर राज्योजाय। ताक्षण आयो सुरथलै रथी बिशोक सुजान। कैकेयैके रथसों गयो तापैभीम अमान॥ सोरठा॥ दुर्योधन क्षितिपाल सदलभिरो तबभीमसों। गहिकोदण्ड कराल भीमहने तेहिविशिष बर॥ चौपाई॥ दुर्योधन नृप रिसबिस्तारे। बाण बिशाल भीमकहँ मारे॥ घनसम गरजि भीमतेहि क्षणमें। हनेतीनिशर नृपके तनमें॥ भीमहिहने भूपदुर्योधन। दुर्योधनहि भीम जयशोधन॥ ताक्षण सबतो सुत अभिमानी। भिरे भीमसों अनरथ जानी॥ भिरो भीम तिन सब सोंतैसें। भिरैं बायु तरुगणसों जैसे॥ बाणबिशाल परम अनियारे। सबके तनमेंभीम प्रहारे॥ हनेभीमकहं बहु तिनते तब। तिन कहँ भीम भीमकहँ तेसब॥ सो लखिभट अभिमन्युहि आदी। तिनपैं चले सिंहसमनादी॥ तिनहिदेखि तो सुतभयपागे। तुरितभीमसोंलरिबो त्यागे॥ लरनलगेसबतिन सोंभिरिकै। तजनलगे आयुध फिरि फिरिकै॥ तहँ अभिमन्यु जीतिसों रतिकै हयबि-

कर्णके रथके हतिकै ॥ बाणपचीस बिकर्णहि मारे । अबथिर रहुमति भागुप्रचारे ॥ तबबिकर्ण निजरथ तजिपथपै । गोचलि चित्रसेनके रथपै । तेयुगबीर एकते ह्वैकै । अतिअभर्म अभिमन्युहि ज्वैकै ॥ छाय देतभेजाल शरणके । हरण हारजे प्राण परनके ॥ तेयुग भट जितने शरडारे । सब अभिमन्यु बाणसों वारे ॥ दोहा ॥ पांचबाण अभिमन्यु के तनमें लागे भूप । ताक्षण गतभो दिवसको पहर तृतीय अनूप ॥ कैकयनसों लरतभो दुःशासन बरबीर । दुर्योधन सोंभिरतभे द्रौपदेय रणधीर ॥ सोरठा ॥ इमि भिरि भिरि गहिगर्व घोरयुद्ध तेकरतभे । याहीबिधि भटसर्ब ठौर ठौर भिरि लरतहे ॥ भुजंगप्रयात ॥ महाघोर संग्राम ताद्योस माचो । गुणयों मैं इहै धौं प्रलयकाल साचो ॥ बलीभीम औभीष्म औ पार्थ योधा । तनय पार्थको औ कृपाचार्य क्रोधा ॥ तनय द्रोण को औ बलीद्रोण धीरा । घटोत्कच औ सात्विकी शल्य बीरा॥ गणोबीर भूरिश्रवा रोप रातो । पिता द्रौपदीको हियो जासु तातो ॥ ससेनाइन्हें आदिदै बीरकोहे । सहस्रै सहस्रांशु से तत्र सोहे ॥ लसै अंशुसे अस्त्रके भेद रूरे । चहूंओर जेहे सबै ठौरपूरे ॥ सरी आयसी ज्वालकी जाल जामें । दहैलोमसे सैन के जीव तामें ॥ गजस्थादि बीरानकी बेग मारी । महाबायु सोसर्ब आशा प्रचारी ॥ प्रलय बारि के पूरसी पूरिसोही । बढ़ी श्रोणितोदा नदी तत्र जोही ॥ दोहा ॥ मारुमारु धरु मारु अरु मार्‌यो करौ बचाउ । आउ खरोरहु भागुमति सहु ममशरको घाउ ॥ ये अरु धनु टङ्कार अरु अस्त्र बेगको शब्द । अरुतन अस्त्रमिलापको रह्यो परसि महिअब्द ॥ सोरठा ॥ दुर्योधन क्षितिपाल लखि दिनको चौथो पहर । करि अतिकोप कराल चलो भीमपै बेगसों ॥ चौपाई ॥ दुर्योधनहि आपुपैं आवत । निरखि भीम बोलो मनभावत ॥ चौदह बर्ष कल्पसम बीतो । चाहत यह शुभदिन चित चीतो ॥ अबमें तोहिं बधतहौं क्षणमें । पैमति भागु खरोरहु रणमें ॥ द्रुपदसुताके कचको कर्षण । करवायो तुम जौन अमर्षण ॥ शकुनिकर्ण के मतसों जैसे । कीन्हें हे तुम कर्म अनैसे ॥ आजु तुम्हें तिनको फल दैहौं । हियको ताप मेटि सुख लैहौं ॥ इमिकहि छबिबस शर अनियारे । दुर्योधन के तनमधि मारे ॥ हनिद्वैबाण धनुष द्वैकीन्हों । द्वैशर हनि सूतहि बधिदीन्हों ॥ फिरि हनि चारिबाण छबिछाये । तुरगन हति यम

लोक पठाये ॥ काटो छत्र बाण द्वै मारी। ध्वजकाटो शरतीनि प्रहारी ॥ मणिमय ध्वजबर गिरत लखानो। चपला गिरी जलद ते मानो ॥ घन सम गरजि कालसम रोखो। दरशावत भो बिक्रम नोखो ॥ फिरि दश बाण भूतके तनमें। हने भीम अतिकोपित मनमें ॥ तेहिक्षण बीर जयद्रथ जाई। भिरो भीमसों नृपहि बचाई ॥ कृपाचार्य्य तहँ तुरता कीन्हें। भूपहि निज रथपर करि लीन्हें ॥ दुर्योधननृप मूर्छितह्वैकै। रथपर परे डरे सब ज्वैकै ॥ दोहा ॥ कैयक सहसरथीनसह तहां जयद्रथ धीर। घेरि भीमसों लरतभो तिनसों भीमसुबीर ॥ धृष्टकेतु अभिमन्यु अरु द्रौपदेय कैकेय। ये सब भिरि तोसुतन सों कीन्हे युद्ध अमेय ॥ चित्रसेन चित्रांग अरु चारुचित्र बलवान। उपनन्दक अरुनन्द अरु बीर सुचारु अमान ॥ सुभट चित्र दरशन प्रबल अरु सुचित्र येसर्ब। तोसुत भिरि अभिमन्यु सों कीन्होंयुद्ध सगर्ब ॥ चौपाई ॥ तहँ अभिमन्यु सुयुद्ध बिहारी। तिनके बाण बाणसों बारी ॥ पांच पांचशर तिनकहँ मारे। तेसब फिरिअगणित शरडारे ॥ सब शरकाटि बाण परिहरिकै। क्षणमेंतिन्हें पराजित करिकै ॥ भट अभिमन्यु बिदित धनुधारी। तब बिकर्णसों भिरो प्रचारी ॥ तापे तजि चौदह शरगणिकै। हयध्वज धनु अरु सूतहि हनिकै ॥ डारिदिये महिपै तेहि क्षणमें। भट अभिमन्यु कोपकरि मनमें ॥ फिरि शर एक श्रवण लौंतानी। हन्यो बिकर्णहि भटअभिमानी ॥ सोशर अति तीक्षण निरवेदी। लगि बिकर्ण को दृढ़तन छेदी ॥ रुधिर भरो धरणी में धसिगो। तब बिकर्ण मूर्च्छा के बसिगो ॥ यह लखि भट बिकर्ण के भाई। पार्थतनय सो करी लराई ॥ सुवन द्रौपदी को श्रुतकरमा। ता सों भिरि दुर्मुख बरपरमा ॥ सात बाण हनिताके तनमें। फिरि काट्यो धनुध्वज तेहि क्षणमें ॥ फिरि हनि तेरह शर रिस अतिके। डारि देत भो सूतहि हतिकै ॥ तब श्रुतकरमा अतिरिस कीन्हों। शक्ति बिशाल पाणि में लीन्हों ॥ तासों दुर्मुख को तनभेदो। सो लखिकै तो सुत अति खेदो ॥ श्रुतकर महि गत रथ लखिआई। भटसुत सोम तासु प्रिय भाई ॥ लैनिज रथपै आनँद पागो। सरुचि पूर्ववत् बिहरण लागो ॥ ताक्षण में श्रुतिकीर्त्ति सुवीरा। सुवन द्रौपदीको रणधीरा ॥ तो सुतजो जयसेन गनायो। तासों भिरि अतियुद्ध मचायो ॥ तहँतो सुत जयसेन

सुनामी। काट्योतासु धनुष जयकामी ॥ दोहा ॥ सो लखिकै सुतनकुलको शतानीक बलवान। हनत भयो जयसेनके अँग में बर दशबान ॥ तबतो सुत दुःकर्ण भट मारोबाण उदण्ड। शतानीक रणधीरको काटिदियोको दण्ड ॥ गुरुतोमर ॥ तब शतानीक रिसाय कै। गहि आन धनुष चढ़ायकै ॥ रहु खरो कहि शरएकसों। धनुतासु काटो टेकसों ॥ षटबाण फेरि प्रहारि कै। हय सहित सूतहि मारिकै ॥ शरएक दीरघ झेलकै। दुःकर्ण के उर मेलिकै ॥ हतिभूमिपै करिदेतभो। अति दीह आनँद लेतभो ॥ दुकर्ण कहँहत देखि कै। तोपांच सुत अतितेखिकै ॥ भिरि शतानीक अमान सों। थिरि हनन लागे बाणसों ॥ तहँभिरो तिनसों गौरसों। भट शतानीक सुडौरसों ॥ दोहा ॥ ताक्षण केकयके अधिप पांच भाय रणधीर। तिनपांचौ भटसों भिरे हनत अनगिने तीर ॥ घोरयुद्ध तहँहोतभो तिनसबसों क्षितिपाल। रण मण्डल में तेहि दिवस निरतो कालकराल ॥ महिखा ॥ अतियुद्ध घोर महान नृपसब ठौर तहँ तिहिदिनभयो। गन तुरँग नरके रुण्ड मुण्डनसों सुरनमण्डल भयो॥ तिहि दिवस रजनि मुहूर्त्त गतलों सुभट सिगरे तहंलरे। लखि लखि परस्पर भरे अमरष गरब गहि गहि नहिंटरे ॥ तब भीष्म शंख बजाय भट समुदाय लै निजदिशि गये। नृपपाण्डु शयन समस्त लै निजसिविरको शुभ मंगलये ॥ निज निज सुडेरन जाय बिधिवत निति करम सबकरतभे। करि सयन सहित बिधान श्रमको खेद सबपरि हरतभे ॥ दोहा ॥ यहि बिधि छठयें दिनभयो घोरयुद्ध हेभूप। पृथक् पृथक् नहिंकहिसके कहेबिशेष अनूप ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनःश्रीवंदीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजनगोपीनाथेनकविना विरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिषष्टदिन युद्धवर्णनोनामअष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ८२ ॥

दोहा सप्तम दिनके आगमन की रजनी लखि शेष। सजन लगेसब उभयदल के सैनिक भटवेष ॥ ताक्षण दुर्योधन नृपति चिन्तित ह्वै अनुमानि। भीष्मपितामह सों कहे निजहित करताजानि ॥ चौपाई ॥ तुम सब बिधि करतामम प्रियको। ताते कहउँ शोच निजहियको ॥ भीम अकेलो कढ़ि निजदलसों। करि ममव्यूह विदीरण बलसों ॥ आयोसिंह

सदृश मधि दलमें। अगणित भटन संहास्यो पलमें ॥ तहँ तेहि बिधि तेहि देखेउँ तबलों। मा मन धीर धरत नहिं अबलों ॥ तासों हम जय चाहत स्वामी। ह्वै तो भुज बलके अनुगामी ॥ यह सुनिकै भीषम हँसि बोले। भरे बीररस बचन अमोले ॥ मन बच क्रम हम तो जय चाहत। जीवन चाहि न निज तन पाहत ॥ जेहि बिधि तुम जय पावहु राजा। हम सबघरी गुणत सो काजा ॥ परजे महारथी भट रूरे। हैं पाण्डव के सँगबलपूरे ॥ नृप न सहज तिनसों जय लहिबो। यथा जियत केशरि को गहिबो ॥ तथा पराक्रम तिनसों लरिहौं। तन त्यागावधि तोहित करिहौं ॥ लरि पाण्डवन बिकल करिदेहौं। तोप्रिय करिरणमें मुद लेहौं ॥ भीषम की यहबाणी सुनिकै। दुर्योधन नृप पुलके गुणिकै॥ चावचढ़े दुदुंभि बजवाये। परदलमुख निज दल चलवाये ॥ बिबिध रंग के ध्वज छत्रणसों। अरुहय गज रथ भट अत्रणसों ॥ तोसुतकी सेनातहँ राजी। गहि यहिबिधि की सुखमाताजी ॥ मानहुं उदयाचल ह्वैजंगम। चाह्यो अस्ताचल को संगम ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण दुर्योधन नृपहि निरखि शोचसों ग्रस्त। कहे भीष्म साहस जनक बचन बिशाल प्रशस्त ॥ हम कृपद्रोण बिकर्ण शल द्रौणिशल्य भगदत्त। बिन्दभूप अनुबिन्द अरुकृतबरमा मदमत्त ॥ भूरिश्रवा बाह्लीक अरु बीर वृहद्बल भूप। इन्हैंआदि अगणित नृपति जे अतिरथी अनूप ॥ बोरठा ॥ ये सब कीन्हे कोह देवन जीतन योगहैं। त्यागे तिनको मोह तोजय हितते सुभट सब ॥ पै नृप पाण्डव सर्ब हैं अजेय निश्चय सुनो। सबदिन क्षण सब पर्बजासु सहायक कृष्णप्रभु ॥ चौपाई ॥ इमिकहि भीष्म पितामह ज्ञानी। मण्डलब्यूह रचे अनुमानी ॥ रथगज हय अरु पैदर गणसों। कीन्हों आवृत परम यतनसों ॥ प्रतिगज सात सात रथ कीन्हे। रथप्रति सात तुरँग करि दीन्हें ॥ हय प्रति सात सात भटरूरे। राखे खड्गपाणि बलपूरे ॥ तिन प्रतिसात धनुर्द्धर राखे। प्रबल बीरजे जयअभिलाषे ॥ अयुत अयुत गज रथ हयचीन्हें। तोसुत सिगरे निज सँगलीन्हें॥ भीषमके रक्षक ह्वैरणमें चले शत्रुपै गर्बित मनमें ॥ इतको मण्डल ब्यूह निहारी। बज्र ब्यूहबन रचो बिचारी ॥ बिरचित ब्यूह निरखि दुहुं दिशिसों। बढ़िबढ़ि भिरेबीर भरि रिससों ॥ द्रोणाचार्य जीति कीमति सों। भिरे मत्स्यपति बीर

पतिसों ॥ भिरो शिखण्डी सों बलधामा। बीर बांकुरो अश्वत्थामा ॥ सहदेव नकुल सदल मामासों। भिरे मद्रपतिनिज मामासों ॥ धृष्टद्युम्न सों भिरो प्रचारी। दुर्योधन नरपति रणवारी ॥ भूप बिंद अनुबिंद रिसाई। युधामन्यु सों करी लराई ॥ बीर घटोत्कच बढ़िरिस अतिसों। भिरो प्राग्जोतिष के पतिसों ॥ भिरो सात्विकी सोतहँ राजा। बीरअलम्बुष सहित समाजा ॥ दोहा ॥ धृष्टकेतुसों भिरतभो भूरिश्रवा नरेश। चेकितान सों भिरत भे कृपाचार्य बरवेश ॥ चित्रसेन तो तनय अरु दुर्मुख हे रणधीर। अरु बिकर्ण सों भिरतभो भट अभिमन्यु सुधीर ॥ भूपश्रुतायुधसों भिरे धर्मराज बलवान। यहि बिधि भिरि भिरि सुभट सब किये कठिन घमसान ॥ चौपाई ॥ अगणित सुभट भीमसों भिरिकै। लगे लरन चहुंदिशि फिरि फिरिकै ॥ कइक सहस्त्र सुभट जय ऊटे। चहुंदिशि घेरि पार्थसों जूटे ॥ तिन्हैंदेखि पारथ धनुधारी। कहे कृष्णसों बचन बिचारी ॥ जे ये मम हत हित अनुरागे। तजत अस्त्र अति रिसिसों पागे ॥ नाशत तिन्हें आजुहम क्षणमें। ममबिक्रम निरखोयहि रणमें ॥ इमिकहि पार्थ शरासन करषे। नृप समूह पर बरशर बरषे ॥ ते सिगरे अति गौरव लीन्हें। पार्थहि सरसों छादित कीन्हें ॥ तब पारथ अतिरिस बिस्तारे। सादर ऐन्द्र सुअस्त्र प्रहारे ॥ काटिबाण सब इतके क्षणमें। हने अस्त्र तिन सबके तनमें ॥ असनहिं रह्यो एकभट तिनमें। युगशर लगो होइ नहिं जिनमें ॥ ऐन्द्र अस्त्रसों बेधित ह्वैह्वै। भगे सुभट सबब्याकुल ह्वैह्वै ॥ गे भीषमके ढिग अति आरत। शङ्कित फिरिफिरिअरिहिनिहारत ॥ सोलखि भीषम रिसि बिस्तारी। चलेपार्थपै धनु टंकारी ॥ ताक्षण दुर्योधन अनखाई। सत्वर तिन सुभटन पै जाई ॥ कह्यो भीष्म मम दल को नायक। जात अकेलो बरषत शायक ॥ बेगितासु सँग तुमसब जाहू। लरि निःशंकलेहु जयलाहू ॥ दोहा ॥ दुर्योधन के बचन सुनि तेसब शंक बिहाय। लरनलगे परभटन सों भीषम के सँगजाय ॥ इमि शासन दै भूप भिरि धृष्टद्युम्न पै जाय। लगो पूर्ववत लरन भिरि मारिबाण दृढ़ घाय ॥ सोरठा ॥ घोरयुद्ध तेहि याम दलमण्डल में मचत भो। सबकेहिय अभिराम बिशद बीर रस रचत भो ॥ तोमर ॥ तहँ द्रोणबीर कराल। अति कोप करि त्यहिकाल ॥ नृप मत्स्यपतिकेकाय। हनि बिशद बाणसचाय॥

फिरि मारिद्वै शर आसु। धनु ध्वजाकाटे तासु॥ तब भूपसो अनखाय। गहिआन धनुष चढ़ाय॥ भट द्रोण कहँ ललकारि। तकि तीनि बाण प्रहारि॥ हे सुरथके हय चारि। शरचारि तिनकहँ मारि॥ फिरि सूतके तनपांच। भो हनत बर नारांच॥ फिरि दोय शरसों बीर। ध्वज धनुष काटो धीर॥ दोहा॥ तदनु द्रोणशर आठ हनि बधे तासुहय सर्ब। सूतहि बिधिशर एकसों गरजों अहि अति गर्ब॥ तब निज रथसों कूदिकै मत्साधिप मतिमान। निजसुत शङ्ख सुवीरके रथपैगयो अमान॥ चौपाई॥ पितापुत्र ते अतिरिस लीन्हें। द्रोणहि शरसों छादित कीन्हें॥ तिनके सबशर काटि अचारय। तजे अमोघ बाण जय कारय॥ लागि शंखके उरमें सोशर। काटिगो बेधि गिरोसो महिपर॥ निज आत्मजहि मरो लखि डरिकै। मत्साधिपति युद्ध परि हरिकै॥ गो बिराट नृपके ढिग तबही। तबतेहि जियत बिचार्यो सबही॥ सो लखिकै अगणित भट उतके। भिरे द्रोणसोंअतिबल युतके॥ बीर शिखंडीअस्वत्थामा। कठिन युद्धकीन्हों जय कामा॥ तहां शिखंडी लाघव करिकै। भयद असंख्य बाण परि हरिकै॥ तीनिबाण अतिशय अनिआरे। द्रोण तनय के भ्रू मधिमारे॥ तदनु द्रोणसुत धनुविधि ठाटे। तासु सूतहयधनुध्वज काटे॥ तब नृप तनय चर्मअसि गहिके। रथसों कूदि खड़ोरहु कहिकै॥ बिचरण लगोभूमि पै तैसे। बाज बिशाल गगन में जैसे॥ बहुशर हने द्रोण सुत ताक्षन। लगोन एकबाण ताके तन॥ कितने असिसों काटिगिराये कि.ते चर्मपैआड़ि बराये॥ तबद्विज मारि बाणबरआसू। दीन्होंकाटिचर्म असि तासू॥ तदनुकोपि बहुशर अनिआरे। द्रुपद तनयके तनमधिमारे॥ दोहा॥ धीर शिखण्डी बीरतब खण्डित असिजो ताहि। बाहत भो द्विज तनय पै अतिबलसों वधचाहि॥ लखि आवत अशिखण्डसो द्विज सुत बीर उदण्ड। मारिबाण बरबीचही करिदीन्हें दोखण्ड॥ ताहि काटि बहुशर हने द्रुपद तनयके काय। सात्विकिके रथपर गयो तब सो युद्ध बिहाय॥ रोला॥ सात्विकि रणधीर भटतहँ क्रोधबर बिस्तारि। हनतभो बहुबाण सुभट अलंबुषहि ललकारि॥ राक्ष सो सोकोपि सात्विकि को शरासन काटि। भयो बरषत बाण अगणित राक्षसीबिधि ठाटि॥ सात्विकी भटप्रबल तत्र ऐन्द्रास्त्र प्रहारि। किये ताकहँ बिफल ताकीसर्ब

माया बारि ॥ भयो यहिबिधि बिकलराक्षस सकोनहिं थिरतत्र। छोड़ि सन्मुख सात्विकी को भागिगो अन्यत्र ॥ प्रखर ह्वै तेहिसमय सात्विकि बर्षिबाण सटेक। हते इतके सुभटअरु गजराज बाजिअनेक ॥ धृष्टद्युम्न उदण्डभट टंकारिबर कोदण्ड। हने तो सुत भूपके तनबाण बहु अति चण्ड ॥ भूप दुर्योधनहने तेहिबाण अहिसमभूरि ॥ धृष्टद्युम्न सुदेतभो तो तनयपर शरपूरि ॥ धृष्टद्युम्न नरेन्द्रसुत हनिचारिशर तेहि काल। वधत भो तो तनयके रथते तुरंग बिशाल ॥ फेरिमारे भूपकेतन सातशर रिसि पागि। चर्म असिगहि चलोतापै नृपतितब रथत्यागि ॥ शकुनि सत्वर जाय ताथर नृपहि नीति सुनाय। गयो लैढिग भीष्मके निज सुरथपर बैठाय ॥ रथी कृतबरमा सुअरथी सुजयको बलवान। भीम भटसों करत भो तेहिसमय अति घमसान ॥ भीम हनिशरचारिताके सुरथकेहयमारि। सारथिहि बधि काटि केतुहि दयेमहिपै डारि ॥ खड़ोरहु कहिहने अगणित बाणताके काय। भूप कृतबरमा न तहँ करिसकोकछु व्यवसाय ॥ त्यागि निजरथ भागिबैठो वृषभके रथजाय। भीम ताक्षण हतेहय गज भटनके समुदाय ॥ बचन यहसुनि कहेनृप धृतराष्ट्र रिसि बिस्तारि। सदा संजय कहतहौ ममओरकी तुमहारि ॥ सदलसब पांडवनको अति बिशद बिक्रम ओज। भांति भांति प्रशंशि संजय कहतहौ तुम रोज ॥ दोहा ॥ यहसुनि संजय कहतभे सुनिये कुरुपति भूप। तोसुत सिगरे लरतनिति निज बिक्रम अनुरूप ॥ सदल पुत्रतो प्रबल अति करता युद्ध बिनोद। पैतुव निज अपराधसों लहत न रणमें मोद ॥ प्रापि पांडवनके निकट व्यर्थ पराक्रम होत। जिमि सागरमधि उदधिजल स्वाद नकरत उदोत ॥ सोरठा ॥ सब क्षितिपणको नाश ह्वैहैतुव अपराध सों। करिके युद्ध प्रयास मरि बसिहै सुरलोकमें ॥ चौपाई ॥ अब नृप युद्ध व्यवस्था सुनिये। सोनिजकृत तरुकोफल गुणिये ॥ भूपबिन्द अनुबिन्द सुबीरा। अरुभट इराबाण रणधीरा ॥ कीन्हों घोरयुद्ध तहँ भिरिकै। मारिपरस्पर सबदिशि फिरिकै ॥ इराबाण करलाघव करिकै। षटक्षुर प्रसायक परि हरिकै ॥ अति अनुबिन्द भूपके बाजी। काटे धनुष ध्वजाछबि साजी ॥ तब अनुबिन्द सुरथ परित्यागी। गयो बिन्दके रथपैभागी ॥ तहांकठिन कोदण्डहि गहिकै। गर्बितक्रोध दबासों दहिकै ॥ बरषतभयो भयानक

शायक। जेतन त्राण बिदारण लायक ॥ ते युगबन्धु एकथर ह्वैकै। मारे जितने शायक ज्वैकै ॥ सिगरेबाण काटितेहि क्षणमें। इराबाणअति कोपित मनमें ॥ अति तीक्षण गुरुशायक हनिकै। सूतहि बधो खड़ोरहु भनिकै ॥ ह्वै असूत हयरथ लैभागे। गये दूरि चलि भयसों पागे ॥ इमि अबंति पतिसों जय लहिकै। मोदो इराबाण तहँरहिकै ॥ नागसुता को सुतसो भारत। भयो तहां अगणितभट मारत ॥ नृप भगदत्तघटोत्कच भिरिकै। कीन्हें कठिन युद्ध तहँ थिरिकै ॥ नृप भगदत्तगजस्थ सोहायो। रथीघटोत्कच सुखमा छायो ॥ दोहा ॥ भगदत्तहि अगणित बिशिख हनेघटोत्कचबीर। घटोत्कचअगणितबिशिख हनेनृपति रणधीर ॥ कोपि तजे भगदत्त नृप चौदह बिशिष अमान। तिन्हें काटिराक्षस नृपहि मारे सत्तरिबान ॥ गुरुतोमर ॥ भगदत्त नृप तब तेखिकै। हनिचारि शर अवरेखि कै ॥ हय तासु रथकेमारिकै। भोनदत्त धनुटंकारिकै ॥ तब राक्षसाधिप क्रोधिकै। तकि शक्ति मारी सोधिकै ॥ भगदत्त नृपसो काटिकै। बरबाणडारौ डाटिकै ॥ हैडम्ब ताक्षण भीतिकै। गोभागि तिमिरथरीतिकै ॥ लरि इन्द्रसों भयपूरिकै। जिमि नमुचि धीरज दूरिकै ॥ भगदत्त नृप तेहिकालमें। भोधसत परदल जालमें ॥ भट पांडवन के सैनके। करिदेतभोबेचैनके ॥ दोहा ॥ सहदेव नकुल सुवीर अरु शल्य मद्रपति भूप। घोरयुद्ध तहँ करतभे अनुपम अप्रतिम रूप ॥ तेयुग भ्राता शल्य कहँदये शरणसों छाय। शल्य हते तब नकुलके थरके हय हरषाय ॥ गुरुतोमर ॥ तब नकुल अनुपम भेवके। गेसुरथ पै सहदेवके ॥ युग सुभट ते यकठौर ह्वै। सन्धानि धनुषसगौर ह्वै ॥ निज मातुलहि शरपूरसों। तहँछाय पूरे नूरसों ॥ तब शल्यभूप सुठानसों। तकि निन्हें छाये बाण सों ॥ सहदेव तब अति कोपकै। शरहनो बधको चोपकै ॥ सो बिशिख कठिनकराल ह्वै। तन बेधि कटिगो लाल ह्वै ॥ तब शल्य इत उत जोहिकै। गिरिपरो रथपै मोहिकै ॥ लखि सूत भयसों पागिगो। रथ हांकि सत्वर भागिगो ॥ दोहा ॥ इमि शल्यहि भागतनिरखि तोसुतअचरज जानि। माद्रीसुतपैशल्यकी कृपा गुणी अनुमानि ॥ तेयुग धनु टंकारितब इमिमरदी तोसैन। असुरचमूहि मरदीयथा इन्द्र उपेन्द्र सचैन ॥ सोरठा ॥ तहँ श्रुतायुषहिदेखिनृप तेहिदिनकेमध्यमें। नृपतियुधिष्ठिर तेखि

थिरुथिरु कहि नवशरहने॥ चौपाई ॥ नृपश्रुतायु निज धनु टङ्कारी। हने सातशरप्राणप्रहारी ॥ तेशरकवचछेदिधसितनमें। रविकर समदरशेतेहि क्षणमें॥ तब पाण्डवपति अतिशय रोखो। मार्‌यो तासु हियो शरचोखो॥ फिरिहनि एकबाण मनभायो। काटेतासु केतुछबिछायो॥ तबश्रुतायुअति रिसबिस्तारे। सातबाण नृपके तनमारे॥ ताक्षण कोपि धर्म बलवाना। भोप्रचंड सहस्त्रांशु समाना॥ लखिइतकेसबसुभटसकाने। बिबरणमये मरणअनुमाने॥ हनिक्षुरप्रशर पाण्डवराजा। काटो ताको धनुषदराजा॥ फेरिश्रुतायुष नृपके हियमें। मारेबाणजानिबधजियमें॥ फिरि हनिचारि बाणअनियारे। हति चारोंहय महिपरडारे॥करिकर लाघव हनिशरभा-यो।हतिसूतहि यमलोक पठायो॥ताक्षणअतिभय भरोश्रुतायुष। सत्वर भागि गयो लै आयुष॥ करि ऐसो बिक्रम क्षिति नायक। बर्षत भो तो दलमधि शायक॥ ब्याकुल ह्वै भागो दल इतको। मिटो चाव तो सुत के चितको॥ बदन बगार काल समाना। लर्‌यो तहां नृपधर्म अमाना॥ दोहा॥ कृपाचार्य सोंयुद्ध करि चेकितान अनखाय। कर लाघव करिदेत भो शर समूह सों छाय॥ कृपाचार्य अति क्रोध करि शरसो सब शर काटि। चेकितान के गातमें बहुशर मारे डाटि॥ बहुरि बाणषट मारिकै धनुष काटि गहि गर्ब। हति सूतहि फिरि हतत भे रथके घोड़े सर्ब॥ बसुकला॥ तब चेकितान। करि रिसि महान॥ गहि गदा घोर अतिशय कठोर॥ बलसों असूदि। तजि सुरथ कूदि॥ हनि गदा आसु। हति तुरँग तासु॥ सारथिहि मारि। तहँ दयोडारि॥ तेहि हन्यो आर्य्य। भट कृपाचार्य्य॥ षट दश सुबान। लखि अति अमान॥ तन त्राणभेदि। तन दयो छेदि॥ दोहा॥ चेकितान तब गरजिकै गदा आयसी ताहि। झेलत भो कृप बीर पर अतिबल सों बधचाहि॥ अशह अशनि सम तेहि गदहि आवत लखिद्विजराज। हनि सहस्त्र शर बीचही काटिदयो जय काज॥ चौपाई॥ तब असि चर्म पाणिमें लैकै। चेकितान नृपमन निर भैकै॥ कृपपै चलो सिंह सम गरजत। तासु सहाइन के हिय दरजत॥ कृपाचार्य्य लखिभरि रणभासों। गहि असि चर्म भिरे बढ़ि तासों॥सम रणधीर बीरते भिरिकै। अनुपम युद्ध किये तहँ थिरिकै॥ हनि अन्योन्य सक्षत तन ह्वैह्वै। गिरे भूमिपै मुर्च्छित ह्वैह्वै॥ लखि रण कर्षआइ

रण पथपै। लेगो नृपहि डारि निज रथपै। शकूनि कृपहि निज रथपै लीन्हें। क्षत निरेखि अति विस्मय कीन्हें॥ धृष्टकतु अनुपम रणचारी। भूपति भूरिश्रवहि प्रचारी॥ नव्वेबाण हनत भो बलसों। अनर करहि जे लागि उपल सों॥ भूरिश्रवा भूप रिसि अतिकै। नृप सुतके हय सूतहि हतिकै॥ करतभयो बाणनकी बर्षा। करि धनु बिधिकी गतिउत कर्षा॥ धृष्टकेतु गो निज रथ तजिकै। शतानीक के रथपर लजिकै॥ तो सुत चित्रसेन रण कर्कस। अरु दुर्मर्षण बीर अधर्कस॥ अरु बिकर्ण ये भट योधा बर। लखि अभिमन्यु बीर कहँ ताथर॥ हांकि हांकि भिरि सहित समाजा। कठिन युद्ध कीन्हें तहँ राजा॥ भट अभिमन्यु कोपि तेहि क्षणमें। बहुशर मारे तिनके तनमें॥ दोहा॥ क्षणमें तिन तीनों भटन के हय सूतहि मारि। अर्जुन सुत अभिमन्यु भटदीन्हों महिपैडारि हनि बाणन सों करत भो तिन्हैं पराजित बीर। जिमि त्रिदोष कहँ सुरससों सतबइद्य गंभीर॥ समुझि भीमके बचन नहिं वध्यो तिन्हैंअभिमन्यु। हतत भयो अगणित भटन अति प्रवृद्ध करि मन्यु॥ महिपरी॥ यह निरखि भीषम हांकिरथ अभिमन्यु भटपै चलत भे। चलि रथी कइक हजार ता संग शत्रुदल दल मलत भे॥ निज सुवन पै इमि जात भीष्महि देखि पारथ रिसि गहे। टंकारि बर को दण्ड शर सन्धानिकै सबसों कहे॥ करि चपल अश्वन शीघ्र भीषम पैचलो अब चाहिकै। अभिमन्युपै जे जात तिनको नाश करिबो चाहिकै॥ सुनि कृष्ण सुरथ चलाय लत्क्षण भीष्मपै सत्वर चले। तेहि समय इतके सुभट सिगरे निरखि पार्थहि खल भले॥ तहँ भट सुशर्मा वीर रक्षक भीष्म को तेहि देखिकै। चहुंओर बर्षत बाण पारथ कहत भे अवरेखिकै॥ तुम किये जितक अनीति ताको पाय फलयहि जाममें। तन त्यागि निज पितु के निकट अबजातहौ यमधाममें॥ यहसुनिसुशर्मा बीरतहँ नहिंकछुक उत्तर देत भो। बढि कइक सहस रथीन सह भिरि घेरि सबदिशि लतभो॥ अति घोर संगर मचो तहँ सब ठौर शर पूरित भये। भिदि पार्थ केशर बरणसों मरि सुभटबहु यमपुर गये॥ दोहा॥ तिनके बाणनसों तहां ताड़ित ह्वैतेहिकाल॥ पार्थ धनुर्धर करतभो बिक्रम कठिन कराल॥ प्रति बाणन सों काटिकै सबके सबको दण्ड। सबके तनमधि हनत भो चारि

पांच शर चण्ड ॥ सोरठा ॥ पार्थ सुभट रणधीर भट असंख्य क्षणमें बधे। तकि त्रिगर्त पति बीर हांकिभिरो निज भटन सह ॥ चौपाई ॥ साठिरथी हैं ताके रक्षक। काल सदृश परदल के भक्षक ॥ ते सिगरे अतिबल सों हरषे। बाण असंख्य पार्थपर बरषे ॥ तब पारथ धनु बिधि अनुसारे। साठि बाणसों तिनकहँ मारे ॥ मण्डल सम कोदण्डहि करिकै। हतेअसंख्य सुभट रिसि मरिकै ॥ जीति तीन्हैं पारथ रणचारी। चलो भीष्म पै धनुटंकारी ॥ तब कुरुपति अति रिसि सों मढ़िकै। सहसन भूप रथिन सह बढ़िकै ॥ सबदिशि करत बाणको दुरदिन। सत्वर भिरो पार्थसों त्यहि छिन ॥ पार्थधनुर्द्धर सहित समाजा। क्षणमें तिन्हैं जीति सुनराजा भिरोजाय भीषम सों तैसे। गज प्रमत्त करिबरसो जैसे ॥ भीम नकुल सहदेव समेता। सदल युद्धिष्ठिरभूप सचेता ॥ ताक्षण तहांगये अतिबल सों। लहत जीति इतके सब दलसों ॥ कृप शल शल्य जयद्रथ भूपा। चित्रसेन ये सुभट अनूपा ॥ तिनसों आइ भिरे तेहि पलमें। घोर युद्ध माचो तेहिथलमें ॥ हनि हनि हनि अगणित अनियारे। मारु मारुथिरु मारु उचारे ॥ सनसन ठनठन घन घन घोरा। छम छम छप छप धुनि दुहुंओरा ॥ प्रगट पूरिगो सब दिशि माहीं। शर बिनु रहोन नेकु थल नाही ॥ दोहा ॥ बीर शिखण्डी बिधनु ह्वै मुरत भयो तेहि ठौर। देखि युधिष्ठिर भूप तहँ रिसिकरि कहे सगौर ॥ भीषम के बधको कियो तुम सु प्रतिज्ञा तात। सो भुलाय बिबरण भये अब कत मुरुके जात ॥ यह सु बचन शर सान सों निजमन आयुध ओपि। चलो शिखण्डी भीष्म पै शर बर्षत अति कोपि ॥ भुजङ्गप्रयात ॥ घनेघोर नाराच को जाल कीन्हें बली भीष्मपै ज्योंचलो घात लीन्हें ॥ भिरोधाय त्यों शल्य भूपालतासों। लरे ते तहां सो कहो जाय कासों ॥ महीपाल सो अग्निमय अस्त्र डार्‌यो। शिखण्डी तहां बारुणास्त्रै प्रहार्‌यो ॥ मिटो अस्त्रसों अस्त्रको दर्परूरो। नशै शांति सों ज्यों महाकोप कूरो ॥ दोहा ॥ यहिबिधि दोऊ बीर तहँ कीन्हें युद्ध बिशाल। जानन पायो भीष्मपै द्रुपद तनय तेहि काल ॥ नृपति युधिष्ठिर को धनुष काट्यो भीषम धीर। हँसो जयद्रथ देखिसो कोपो भीम सुधीर ॥ चौपाई ॥ गहि गुरुगदा कूदि रथ बरसों। चलो जयद्रथ पै त्यहि थरसों। देखि जयद्रथ रिसि बिस्तारो। नव

शर आउ आउ कहि मारो ॥ सहितिन बाणन कहँ भटमारी। मार्‌यो तब गतासु रथचारी ॥ तोसुत चित्र सेन तेहिक्षण में। बहुशर हने भीम के ततमे ॥ तहाभीम अति रिसिसों छाये। चित्रसेन पैगदा चलाये ॥ गदहि देखि तोसुतके साथी। बिडारिगये जे गणप्रमाथी ॥ तिमिते बिडरि गये भयराखी। जिमि कर लखि गुरपरते माषी ॥ चित्रसेन अति भयसों पागी। गहिअसि चर्मगयो रथत्यागी ॥ रथसोंकूदि गयोसो तैसे। चारु शृंगसों केशरि जैसे ॥ लागीगदा तासुरथ पै तिमि। प्रपतै बज्र सुतरुबर पै जिमि ॥ सहय सूत ध्वज भो रथचूरण। कपि खग शाखस जिमि तरु पूरण ॥ खेदियभयो भीम तेहि क्षणमें। तोसुत सिगर मोदे मनमें ॥ चित्र सेनकहँ वै निज रथपै। लगो बिकर्ण चरण रण पथपै ॥ तिहि क्षण घोर युद्ध तहँ माचो। मानो काल क्रोधकरिनाचो ॥ तहँभीषम अतिसै रिसि करिकै। सकल दिशा बाणन सों भरिकै ॥ सत्वर रथचलाय सुनुराजा। चले धर्म पैसहित समाजा ॥ दोहा ॥ कोपि युधिष्टिर भूप तब सहित नकुल सहदेव। चले भीष्म पै बेगसों यथापथिक पै मेव ॥ भीष्म युधिष्टिर पै किये शरपंजर तेहिकाल। धर्म भीष्मपै करत भे कठिन शरण कोजाल ॥ सोरठा ॥ दोऊ बीर बिशाल काटिकाटि शर शरणसों। तजै शरणको जाल भरे जीति के परणसों ॥ चौपाई ॥ भीषम अति करलाघव कीन्हें। क्षणमें नृपहि अलख करिदीन्हें ॥ धर्म नृपति तब अनर बिचार्‌यो। अतिसै चण्ड एक शरमार्‌यो ॥ भीषम सो शरआवतदेखी। बीचहि काटिदये अवरेखी ॥ सोशर काटि चारिशरमारी। मारेतासु तुरग रथचारी ॥ तबतहँ तजिसो सुरथ समाजा। गयो नकुलके रथपर राजा ॥ ताक्षण में सहदेउ दोउभाई। करी भीष्मसो कठिन लड़ाई ॥ तहँभीषमके शर चण्डन सों। पीडित भरे रुधिर मण्डनसों ॥ निज बन्धुन लखि अनरथजानी। धर्मकहे भूपनसों बानी ॥ तुमसब महारथी अबलरिकै। बधौ भीष्म कहँ धीरज धरि कै ॥ सो सुनिभट अतिरिससों पागे। घेरि भीष्म कहँ मारण लागे ॥ तहाँ भीष्म बिक्रम बिस्तारे। अगणित सुभठ निमिष मे मारे ॥ नाग यूथमधिकेशरि जैसों। लसै लसौ तहँ भींषम तैसों ॥ तहां युधिष्ठिर नृपके दलमें। हाहाकार मचो तेहिपल में ॥ निरखि शिखण्डी रिसिसों छायो। बढ़ि भीषम के संमुख आयो ॥

टेरि कहतइमि यहिथर थिरि कै। करहु युद्ध अबमोसों भिरिकै॥ देखिशि खण्डिहि भीषम ज्ञानी। अनत गये तेहि तिय अनुमानी॥ दोहा॥ संजय गणसों भिरेतब भीष्मपितामह जाय। तीनि पहर दिनको तहा बीतिगयो क्षितिराय॥ धृष्टद्युम्न अरु सात्विकी तेहिक्षण धनु विधिधारि। अगणित भट यहिओरके दीन्हें महिपैडारि॥ चौपाई॥ तेहि दिन तेहि क्षिनमें तेहि थरमें। हाहाधुनि सुनिइतरणघरमें॥ भूपबिन्द अनुबिन्द ससाजा। तिन सों जाइभिरोसुनुराजा॥ अतिरणधीर बीरते बाँके। युद्धकलामे निपुण निशाके॥ घोरयुद्धकीन्हें भिरि भिरिकै। चपल चक्रके समफिरि फिरिकै॥ तहां द्रुपद सुतक बरबाजी। हत्यो अवन्ति नाथ रणसाजी धृष्टद्युम्न तब निजरथतजिकै। सात्विकिके ढ़िगगयो गरजिकै॥ यहलखि धर्मभूप अन खाई। चपलप्रबलदलशहतहँजाई॥ भिरे अवंत्याधिपति नृपतिसों। गुणि दीबो नभ गति बल अतिसों॥ तबलोतयन क्रोधसों मढ़िकै। कैयकसहस रथिनसह बढ़िकै॥ भूपबिन्द अनुबिन्दहिघेरी। अरिसोंलरणलगेदैभेरी॥ तेहिक्षणअर्जुन वीरधुरन्धर। कीन्होबाणानलको वन्धर॥ अगणितहयगज भटबधिडारे। श्रोणितकीसरिताबिस्तारे॥ लख्योद्रोणकहँतहँतेहि क्षणमें। लसै अग्निजिमितृणके बनमें॥ तेहिक्षण अस्ताचल गिरिवरपर। बिलसे अरुणअरुणद्युतिधरवर॥ लखिदुर्योधन निजभटगणमें। कहेकरोअति बिक्रमरणमें॥ सोसुनि सिगरेभटरणचारी। कीन्होंघोरयुद्ध पणधारी॥दोहा॥ तिमिउतक भटकरतभे घोरयुद्धतेहिकाल। पृथक् पृथक् है अकथ नृप सब संगरको जाल॥ इतनेमेंसंध्याभई भेअदृश्यदिनराय। निजनिजडेरनचले नृप शंख बजाय बजाय॥ महिलता॥ जेलरतभे जेहिठौर तितसोंबीरते डेरन गये। अस्नानओषधि भोजनादिकक्रिया करिसानद भये॥ नरपालसिगरे बसन भूषण गन्धरुचिसों धरतभे। फिरिगान नृत्यादिकन मैं रतहोइश्रम परि हरत भे। करि सैन कीन्हें चैनसिगरी रैनभट आनँद भरे। नहिकिये तिनके शोचजेसुतबन्धुपित रणमधिमरे॥ उतयुद्धमहिमें शिवाभूत पिशाच गण बिरहतभय। अरुगृध्रआदिक जीवशोणित मांसभक्षणव्रतलये॥दोहा॥ सतयेदिनमेंहोतभो यहिविधि कोसंग्राम। कहे भूपमणिआपुसोहैं बिशेषजे ग्राम॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिभाषायांसप्तमदिनयुद्ध वर्णनोनामएकोनविंशोऽध्यायः॥ १९॥

दोहा ॥ अब अठये दिनको सुनो महत युद्ध हेभूप। शेष रजनि लखि सजत भे सैनिक सुभट अनूप॥ रथ हैं कुंजर भटन के साजन सजन विधान। उभै सैनमें होतभो तेहि क्षण शब्द महान॥ चयकरी ॥ दुर्योधन भीषम रण धीरा। चित्रसेन अरु द्रोण सुवीरा ॥ सागर प्रतिम अमोघ सुव्यूह। बिरचत भये तहां करि ऊह ॥ दाक्षिणात्य मालव आवंत्य। देशी जे नृप भटहित संत्य ॥ तिन्हें सहित भीषम बलवान। आगे चले धरे धनुबान ॥ क्षुद्रक पारद और पुलिन्द। गणन सहितफिरि द्रोण अरिन्द ॥ मगध कलिंग पिशाच सुदेश। के भट सह भगदत्त नरेश ॥ चलो द्रोणके पीछेगाजि। प्रबल प्रचण्ड सैनबर साजि॥ मैकल त्रैपुरअरुचिबुकस्थ। अरु असंख्य भट निजदेशस्थ॥ सहितवृहद्बलबीर उदण्ड।तदनु चलतभोगहि कोदण्ड॥ तदनुत्रिगर्तचलो बलपूरि। सहकांबोजप्रबलगण भूरि॥ अनुत्रिगर्त नृपको बलभौन। अश्वत्थामा कीन्होंगौन॥ तदनु सबन्धु ससेनासर्ब। दुर्योधननृप चलोसगर्ब॥ दुर्योधन के अनु अवदात। राजेकृपाचार्य्य बिख्यात॥ सागर प्रतिम व्यूह यहिडौर। बिरचेभीषम करिकैगौर॥ अगणित रंगकेअगणित आम। लखे पताकाछत्र ललाम॥ तोदलकी सुषमा तेहि याम। लसतभई अनुपम अभिराम॥ दोहा ॥ इत कोऐसो व्यूह लखि पाण्डव कुलपति भूप। धृष्टद्युम्नसों कहत भे बिरचो व्यूह अनूप॥ धृष्टद्युम्न यहसुनि रचे शृङ्गाटक बरव्यूह। इबिधि राखि सब दिशन में बिधिवत सुभट समूह। चौपाई ॥ भीमसेन सात्विकि रणधीरा। लसेशृङ्ग ह्वै सदल सुबीरा। लै सँग कइक सहस भट साजे। पारथ शृंग मध्यमें राजे॥ नृप समूह सह सहित समाजा। ह्वै मधिदेश युधिष्ठिर राजा॥ यहिबिधि नृप समूह सब अंगमें। राजे लैलै सेनासंग में॥ सुवन द्रोपदी के मन रंजन। बीर घटोत्कच अरिदल गंजन॥ अरु अभिमन्यु बिराट नरेशा॥ राजत भे रहि पश्चिम देशा। पाण्डव यहि बिधि व्यूह बिरचिकै। लसे बीररस रंगसों रचिकै॥ भेरी शङ्खादिकबहु बाजे। जे बाजो धुनि सुनि घन लाजे॥ निज निज प्रतिम निहारि निहारी। योधा भिरे प्रचारि प्रचारी॥ शक्ति परश्वध भल्ल कृपाना। भिन्दिपाल तोमर बर बाना॥ तकि तकि हनन लगे दुहुंदिशि सों। धीर धुरीण भरे अति रिसि सों॥ तहां भीष्म बिक्रम बिस्तारे। अग-

णित सुभट निमिष में मारे ॥ कितने रथी बिरथ करि दीन्हें। कितने सुरथरथीबिनु कीन्हें। कितने तुरँग किये बिनु सादी ॥ हय बिनु कीन्हें किते प्रमादी ॥ किते द्विरद द्विरदस्थ सँहार। किते पदाती महिपर डारे ॥ कितने धनुष ध्वजा रथ काटे। परदल मध्य भूरभय पाटे ॥ ॥ दोहा ॥ भिरो भीष्मसों भीम तब दीरघ धनु टंकारि। गरजि मेघसम बज्रसम बाण अनगिने मारि ॥ ताक्षण तोदलमें भयो ऐसो शब्दअपार। भिरो भीष्मसों मीम तब कहा करत करतार ॥ चौपाई ॥ भीष्म भीम को निरखि समागम । इतसब गुणो बिपति को आगम ॥ तहां भीम अति बिक्रन कीन्हें। लखि दुर्योधन चिन्ता लीन्हें ॥ ह्वै प्रकर्ष पाण्डव सब हरषे। बाण बारि बारिद सम बरषे ॥ लखि दुर्योधन भूप बिचारी। लै संग सब सुबन्ध रणचारी ॥ वढ़ि भीषम के ढ़िगह्वै ठाढ़े। बर्षण लागे बाणउकाढ़े ॥ तहां भीमहनि शर मजबूतहि। वधि डारो भीषम के सूत हि ॥ बिगत सूतह्वै यह भयपागे। रथ लै इतउत दौरण लागे ॥ भीम बीर तब अवसरपाई। अति तीक्षण शर एक चलाई ॥ तोसुत भटसुनाम तेहि बधिकै। सिंहसदृश गरजोमहिमधिकै ॥ सोलखितोसुतसातरिसाई। भिरेभीमसों भीतबिहाई। बह्वासी अपराजित योधा। अरु आदित्यकेतु करि क्रोधा ॥ दण्डधार पण्डि तक महोदर। अरुबिशाल चख सातमहोदर ॥ एसिगरे अतिरिसिसोंछाये। क्षणमें बाण असंख्य चलाये ॥ बीर महोदर भटतेहि क्षणमें।नवशर हन्यो भीमके तनमें ॥ भटआदित्य केतु शत्तरिशर। पांच हन्यो बह्वासी तेहिथर ॥ दण्डधार नब्बे शरमारे। अरु बिशाल चख सात प्रहारे। दोहा ॥ अपराजित बहुशर हन्यो भीमसेन के कायबीर पण्डि तक हनतभो तीनि बाणदृढ़घाय ॥ तहाभीमअति चण्डह्वै सातबाण बरमारि। क्रमसोंतिनके काटिशिरदीन्हें महिपरडारि ॥ समुझि प्रतिज्ञा भीमकीताक्षणतोसुतसर्ब। लखिसिंहहिकरि यूथसम भागे तजि तजिगर्ब ॥ रोला ॥ भूप दुर्योधन कहतभो भटनसों तेहिक्काम। घेरिभीमहि बधौ तुमसबबीर बल बुधि धाम ॥ भूपको सुनि बचन बढ़िबढ़िबीर बहु एकवार ॥ भीमसों भिरि करतभे तेहि ठौरयुद्ध अपार ॥ निरखिबन्धुनको मरण कुरुनाथ अति दुख पाय। भीष्म के ढिगजाय ऐसो कहत भे बि लखाय। भीम मारत बंधु ममअरु भटनको समुदाय ॥ आपुसों मध्यस्थ

समहौ लखत छोह छपाय ॥ करत आंसू पतन जब इमि कह्यो तो सुत भूप। भीष्मतब इमि कहो नृपसों सत्य बचन अनूप। पूर्व तुमसों कहे हम कृप द्रोण बिदुर बिचारि। सो न मानेहु तासुफल अब लखहु नैन पसारि ॥ युद्ध के आरंभमें हम कह्योहो समुझाय। द्रोण केकय संग मम निति रहेहु तुम सब भाय ॥ भीम न्यारो लहैगो ज्यहि बधेगोतेहि तत्र। भूलिसो कत गये हमसों द्रौणसों अन्यत्र ॥ शोच अबकत करौ भावी होइगी नहिं आन। सर्व पांडव सुरनहूं सोहैं अजेय अमान ॥भूप तातेधीर धरि अबलरौ त्यागौ शोच। युद्धमें तनत्याग क्षत्रिहि श्रेष्ठगति नहिं पोच ॥ बचन यहसुनि कहे तहँ धृतराष्ट्र नृप भरि नयन। दैव चा हत होत सो कछु पुरुषक बसि हैन ॥ द्रोण भीषम द्रोणसुत कृप भूरि श्रव भगदत्त। आदि सबमम सुभट बीर अजेय प्रबल प्रमत्त ॥ तिन्हैं आछत रोजमम सुत सदल मार जात। पाण्डवन में एक को नहिं होत कबहूं घात ॥ अन्ध नृपको बचन यह सुनि कहे संजय बैन। द्यूत बिरचत समय बरजे बिदुर दायक चैन ॥ सो न मानो ससुत तुम अबलीजिये फलतासु। सुनो क्रमसों पुत्रमित्र सबर्ग सब को नासु ॥ सुनोनृप अबभयोजिमि युगयाममेंसंग्राम। वढ़ीजामें शोणितोदानदीअमलअछाम। दोहा ॥ तोसुत को समुझाय तिमि भीषम ह्वै अति चंड। परदल मर्दन लगेकरि मंडल सम कोदंड। तहँआज्ञालहि धर्मकी भिरे भीष्मसों बीर। धृष्टद्युम्म सात्विकि द्रुपद धृष्टकेतु रणधीर ॥ भूपति बीर विराट अरु कुन्ति भोज कैकेय। सुभट शिखंडी सब सहित निजनिज सैनअमेय ॥ सोरठा ॥ तिनसों अतिसंग्राम सदल भीष्मसों मचतभो। कोकहि सकैप्रमान जहँ जैसो संगरभयो ॥ दुर्योधन तेहि काल कहे अनेकन नृपनसों। तुम सिगरे क्षितिपाल होहु सहायक भीष्मके ॥ चौपाई ॥ नृप दिनेशसुनि अगणित राजा। चले भीष्मके ढ़िग सह साजा ॥ तिनसो भिरे बीचही जाई। चेकितान अर्जुन बरदाई ॥ अरु सुत द्रुपद सुताकेयोधा। सदल प्रचारि किये अवरोधा ॥ माचो घोर युद्ध तहंतिनसों। पृथक्पृथक् कहि निवरै किनसों ॥ भीमसेन अभिमन्यु सुधीरा। सुभट घटोत्कच अतिरण धीरा ॥ लै संग सहसन भट मनभाये। सिगरे दल मधि द्वन्द मचाये ॥ इमि रचि तीनि गोलते अतिबल। मर्दनलागे तोसुतकोदल ॥ भूपतिसुनो

द्रोण तेहि क्षणमें। अद्भुत बिक्रम कीन्हें रणमें॥ हति उतके हय गज अरु बीरन। यमपुर में कीन्हो संकीरन॥ भीमसेन अति गौरव लीन्हें। द्विरद असंख्य प्राणबिनुकीन्हें॥ अगणित द्विरद किये विनु रदके। अगणित रथी गजी हय सादी॥ बधत भयो तहँभीमप्रमादी॥ सहदेव नकुल वीरतेहि पलमें। प्रलयकाल रोपेतोदलमें॥ ह्वै सरोस मर्दत भे हयदल। अगणितभटकरिदीन्हें पैदल॥ अगणित तुरग कियेबिनु भटके। बहुभट किये हाय हा रटके॥ तेहिक्षण बहुहय गजभय पागे। भटबिनु फिरे सकल दिशिभागे॥ दोहा॥ बाणन को दुरिदन तहां करि पारथ रणधीर। शोणित की सरिता बही समुद्र समान गँभीर॥ कृत बर्मा कृप द्रोणसुत भगदत्तादिक बीर। हति इनके अगणित सुभट भेजि दये यमतीर॥ इत उतकै बर प्रबलभट भये सक्रुद्ध कराल। उभय सैनमें करत भो प्रलय कालसम काल॥ सोरठा॥ शकुनि सबन्धु ससैन अरु हार्दिक्य महीप मणि। भरेगर्ब बल ऐन चले शत्रुकी सैन प्रति॥ चौपाई॥ इन्हें देखि तहँ भयो सक्रोधा। इरावाण अर्जुन सुत योधा॥ हयानीक सह बढ़िअति बलसों। सत्वर भिरो शकुनिके दलसों॥ तिनसों भयो घोर संग्रामा। कटे असंख्य सुभट बलधामा॥ इरावाण बल बुद्धि निकेता। ताक्षण तहँ करिकै शरसेता॥ करिकै प्रखरचतुर बिधिबलको। ब्याकुल कियो शकुनिके दलको॥ सो लखिकै अतिशै अनखाई। षटभट प्रबल शकुनि के भाई॥ गज गबाक्ष सुक आर्जव बीरा। चर्म बाण अरु वृषभ सुधीरा॥ बर्षत तोमर बाण दपटिकै। इरावाण पै चले झपटिकै॥ बरज्यो शकुनि न तेसब माने। इरावाण पहँगे उमदाने॥ सदल जाय ताके दलमाईं। करणलगे सुभटन की नाईं॥ इरावाण तब निजभट गणसों। कहत भयो अति गर्बित मनसों॥ येअब जानन पावें फिरिकै। बधौ इन्हें लरि बिधिवत भिरिकै॥ सोसुनि सुभट भिरेतिन सबसों। कहि कहि मृतकमयेतुम अबसों॥ तिनसों निजदल मर्दित देखी। तेषटबन्धु बीर अतितेखी॥ घेरि इरावत कहँ सब दिभिसों। मारणलगे बाणभरि रिसिसों॥ हनि हनि अति तीक्षणशर चीन्हें। इरावान कहँ कीलितकीन्हें॥ दोहा॥ नाग सुतासों प्रगट सुत अर्जुन को गतमर्म। भूपति ताक्षण करभो अतिशय अद्भुत कर्म॥ तासु गातमधिहे गड़े इनके मारेबान

तिनहीं को लय लय हने इनकहँ बीर अमान ॥ परके शोणित सों भरे परके हने सडौर। निज निज बाणन सों भिदि मोहित एतिहि ठौर ॥ तेामर ॥ तहँ इन्हैं मूर्च्छित देखि। सुत पार्थको अवरैखि ॥ गहिचर्म अरु किरवान। ह्वै पायये बलवान ॥ भो चलत इनपै धाय। बध करण को उमदाय ॥ तेहि समय ये भट सर्ब। फिरिह्वै सचेत सगर्ब ॥ बढ़ि इरा बानहिं घेरि। शर तजन लागे टेरि ॥ भट इरावाण बिशाल। इमिच-पल भो त्यहिकाल ॥ इन सर्बको शर घात। नहिं छुवन पायो गात ॥ तब सर्बये यह चाहि। गहिलेन चाहे ताहि ॥ तब पार्थको सुत शूर। सबअस्त्र विद्यापूर ॥ असि चर्मकी बिधि ठाटि। धनुबाण सबकेकाटि ॥ भटपांच तिनमें मारि। तहँदये महिपर डारि ॥ हो वृषभ नामक जौन। गोभागि घायल तौन ॥ तहँ तिन्हैं निपतित पेखि। तो तनय नृप अति तेखि ॥ हो आर्ष्यशृङ्गी नाम। भटबीर राक्षश आम ॥ इमिदयो शासन ताहि। तुम बधौ सादर याहि ॥ सोबीर धनु टङ्कारि। बढ़िचलो तेहि हङ्कारि ॥ दोहा ॥ मायाबी राक्षस प्रबल दै सहस्त्र हत शेष। हय सादी सुभटन सहित लस्यो भयानक भेष ॥ अति प्रचण्ड भट राक्षसहि निज पर आवत देखि। गरजि सदल बढ़ि भिरत भो इरावान अति तेखि ॥ चौपाई ॥ परदल निजसों अधिक निहारी। राक्षस तहँनाया बिस्तारी ॥ रहे शत्रुके संगभट जितने। आपु करतभो निमित तितने ॥ उभय ओर के योधा भिरिकै। घोरयुद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥ हनि अन्योन्य परा-क्रम करिकै। दिवगे अस्थूल देवपरि हरिकै ॥ तेयुग योद्धा हवैगतसेना॥ भिरे हांकि दुर्मद जगजेना ॥ जिमि प्रमत्त मैगल युग लरहीं। अनुपम अतुल परांक्रम करहीं ॥ तिमि सोहे तहँ तेरण चारी। निजनिज जय यशके अनुसारी ॥ इरावान तहँ गुरता लीन्हों। असिसों तासु धनुष द्वै कीन्हों ॥ ह्वै अचाप राक्षस भयपागी। गयो गगन मधिधीरज त्यागी॥ इरावान अति रिसिसों पागो। नभपैं गयो तासु संग लागो ॥ तहँ बर भट तो ठाढ़न लागो। असुरहि असिसों काटन लागो ॥ आर्ष्यशृङ्ग तहँ निदरि जिमूतन। अद्भुत कला करत भो नूतन ॥ इरावान काटै तनता-सों। नूतन ह्वै प्रगटत भरि भासों ॥ इरावान सोऊ तन काटै। फिरिसो प्रगटि वीरताठाटै ॥ स्वप्न मनोरथ कैसो कौतुक। राक्षस करतभयो तहँ

सौतुक ॥ फिरि राक्षस कछुमाया करिकै। प्रगटो अति दीरघबपुधरिकै॥ दोहा ॥ प्रबलघोर बपु गहिचलो गहन ताहि त्यहि ठौर। इरावान तब भो बिकट नागरूप करि गौर ॥ अरु सहसन अहि प्रगट करि घेरिलेत भो ताहि। गरुड़रूप तब गहतभो राक्षस निज जय चाहि ॥ गरुड़रूप गसिलेत भो सब नागत कहँ खाय। इरावान लखि जकिरहो करिनसको व्यवसाय ॥ मातृपक्ष के छाव अरु धृत स्वरूप केभाव। गरुड़रूप लखि जकि रहो इरावान तजि चाव ॥ तब सो राक्षस समय लहि काटि चारु शिर तासु। लहि अपूर्व जयगयो ढिग दुर्योधन के आसु ॥ सोरठा ॥ उतके सुभट प्रधान अरु पाण्डव नहिं हेतात। इरावान बलवान यहिबिधि मारोगा यहां ॥ मालिनी ॥ तेहिसमय युगदल मध्यसब थर मचो हो संगर महा। जिमिलरे सबभट तत्रनहिं अब जातसो बिधिवत कहा॥ अभिमन्यु सात्विकि भीष्मपारथ भीम द्रोणहि आदिकै। भट उभयदिशि में प्रलय पारो रहेघन सम नादिगै ॥ तहँ इरावान सुबीरको बध निरखि अति अकुशासिकै । हैडम्बराक्षस भट घटोत्कच भयोगर्जत रोसकै ॥ नृपतासु गरजनि घोर धुनि ब्रह्मांड मधि व्यापित भई। सबओर सागर छोरलों सहशैल महि कम्पित भई ॥ बहु सुभट इतके ह्वै रोमांचित श्वेद मरि बिबरण भये। सुनिसिंहकी गरजनि द्विरद गण सदृश दीह डरण मये ॥ इमि गरजि घनसम बीर राक्षस भटन सह बल मद मयो। अति कुपित काल कराल सम कुरुनाथ के सम्मुख गयो ॥ तेहि समय इतकेबीर अगणित भीति भूपहि तजि गये। तब कोपि भूपतितजे तापैंबाण अगणितमणिमये ॥ तहँअयुतगजदल सहितथिरिबंगाधिपति नृपसाथमें। भोकरत अतिसंग्राम मण्डलसदृशकरि धनुहाथमें॥दोहा॥गजारूढ़ भटजूहसोंराक्षसगण सोंतत्र। घोरयुद्ध नृपहोतभोकहैकहांलोंअत्र ॥ शक्ति परश्वध भल्ल शर आदिक आयुध भूरि। बारिवृष्टि सम उभय दल मध्य रहे तहँपूरि ॥ राक्षस गण अति प्रबल हनि शक्ति शिलातरु बान। क्षणमें बधेअनेक गजअरु बहुभट बलवान ॥ सोरठा ॥ ह्वैअर्दित तेहिकाल मरेरुधिर अगणित द्विरद। मर्दत निजदल जाल चिघरत भागिगये अनत ॥ निजदल बिचलत देखि दुर्योधन भूपाल मणि। भरोगर्ब अतितेखि भिरो राक्षसी सैनसों ॥ चौपाई ॥ भिरि राक्षस गणसों तेहिक्षणमें। अद्भुत

विक्रम कीन्हे रणमें ॥ बीर चारि राक्षसके दलके रहेमुख्य बरभटअति बलके ॥ बिद्युत जिह्वाअपर प्रमाथी। बेगवन्त जिमि मद युत हाथी ॥ अरुभट महा रउद्रप्रबीरा । तिन्हैंमारि भेजेयम तीरा ॥ सोलखि बीर घटोत्कच योधा। कह्योभूप सोंकरि अतिक्रोधा ॥ संगछलिन कहँलै छल करिकै। ममगुरु जनसों महियन हरिकै ॥ बहुदिन कियेराज्य मुदभरिकै। अबरहु खड़ोभागु मतिडरिकै ॥ आजुतोहि हतिकठिन शरन सों। उत्रन ह्वैहौं निजगुरु जनसों ॥ इमि कहि दाबि अधर दातन सों। हनत भयो शरबर घातमसों ॥ तब दुर्योधन रिसि बिस्तारे। बाण पचीस तासु तन मारे ॥ तबराक्षस करिक्रोध अथोरा। मारत भयोशक्ति अतिघोरा ॥ बज्र सदृश तेहि आवत देखी। बङ्गाधिपति भूप अब रेखी ॥ गजचलाय करि कैमन गाढ़ो। सोभूपति केआगे ठाढ़ो ॥ तबसो शक्तिभीमता पागी। गज केकुम्भन कंमधि लागी ॥ मैगल तुरित गिरोतहँ मरिकै। नृपगो कूदिगजहि परि हरिकै ॥ ताक्षण में दुर्योधन राजा। भग्न निरखि निज सुभट समाजा ॥ क्षात्र धर्म को चिन्तन करिकै। खडोरहो तहँ धीरज धरिकै ॥ दोहा ॥ साहस करितहँ रहिखड़ो योजित करिशर चण्ड। तज्यो राक्षसाधिपतिपैं करषि कठिन कोदण्ड ॥ बजूसदृश निपतत निरखि दुर्योधनको बान। सोथर तजिकीन्हों व्यरथ राक्षस चपल अमान ॥ भूपति को शर व्यर्थकरि निज कार्मुक टंकारि। घनसम गर्जत भोअसुर तोदलमधि भय भारि ॥ सोरठा ॥ सोगर्जनि सुनिभूप भीष्म कहतभे द्रोणसों। राक्षस काल स्वरूप गर्जत भयो प्रचण्डअति ॥ रोला ॥ तासु गर्जनि सुनिसुनो यह परत हमको बूझि। लरतहै कुरुनाथसों वह भरो गर्ब अरूझि ॥ आसि भूपहि जीति राक्षस गहेहै उत्कर्ष। प्रगट जान्यौ जातधुनिमें जीतिकैसो हर्ष ॥ करोरक्षण भपको उतजाय तुम सब आर्य्य। भूपको रक्षण सबहि है एक उत्तम कार्य्य ॥ जाहिजौ वोहिओर हमतौ पार्थइत हब सैन। बधै क्षणमैं सव्यसाची अस्त्रबिद्या ऐन ॥ भीष्मको यहबचन सुनिउत चले सत्वरवीर। द्रोणकृप बाल्हीक भूरिश्रवा शल्य सुधीर ॥ चित्रसेन बिकर्ण अरु अनुबिन्द बिन्दनरेश । नृप जयद्रथ वृहद्बल अरु सोमदत्त सुभेश ॥ अरु बिबिंशित बीरअरु सुत द्रोणको गहि गर्ब। कइक सहस रथीन युत तहँ जातभे येसर्ब ॥ देखिइन सब भटनको नहिं भयो कम्पित तौंन। भयोसबपैं

बाण बर्षत उपल भेदक जौन दोहा ॥ उतके राक्षस प्रबल अरु इतकेयो धासर्ब। भिरे प्रचारि प्रचारि तहँभरे बीररस गर्ब ॥ भूपति ताक्षणहोत भो तहां कठिन घनसान। सनसन चलि ठनठन लगन लगे दुहूं दिशि-वान ॥ दहत बाँसको बनयथा गिरिपै गिरत पषान। होइशब्द तिमिहो तभो तायर शब्दमहान ॥ सोरठा ॥ महा घोर सग्राम तिनसों ताक्षण होत भो। बीतिगयो युगयाम तेहि दिनको क्षिति पाल मणि ॥ चौपाई ॥ अति दुर्मद राक्षस रणचारी। इन्द्रधनुप समधनु टंकारी ॥ हनिक्षुर प्रशरअति शैचोखो। काट्यो धनुप द्रोणको नोखो ॥ मारि भल्ल चोखो मन भायो। सोमदत्त कोध्वजा गिरायो ॥ तीतिबाण बाल्हीकहि मारे। चित्र सेन पैं तीनि प्रहारे ॥ फिरिहनि एकबाण बरचीन्हों। भट बिकर्णके भ्रूमधिदी-न्हों ॥ तबबिवर्ण भटमूर्च्छित ह्वैकै। रथपर पर्यो चेतबल ग्वैके ॥ नृप अवन्ति पतिकेबर रथके। हनिशर चारिबधे हयरथके ॥ नृपति जयद्रथ केधनु केतू। काटत भयोबिरचि शरसेतू ॥ भूप वृहद्बल कहँकरि सीक्षण। मारत भयोबाण बरतीक्षण ॥ हनिबहु बाण शल्यके तनमें। मोहित कर त भयोतेहि क्षणमें ॥ इमि सबके तनमधि शरमारी। सबकेहने बाणसब बारी ॥ सबकहँ बिमुख करतभो रणसो। बीरघटोत्कच पूरोपनसों ॥ येहि प्रकार सबभटन बरजिकै। दुर्योधन पैं चलो गरजिकै ॥ कुरुपति तहँतेहि आवत देखी। फिरि फिरि भिरेबीर सबतेखी ॥ हनि असंख्य आयुधअ-नियारे। राक्षस भटहि बिकलकरि डारे ॥ ताक्षण में राक्षस रण धीरा। गोनभमधि जिमि सतन समीरा ॥ दोहा ॥ घूमिजलद सम गगन मधि गर्जतभो तेहिकाल। सोधुनि सुनिकै भीमसों कह्योधर्म क्षिति पाल ॥ दुर्योधनकी सैनसों लरत घटोत्कच बीर। तासुगरज सुनिताहिपैं बूझिपर तबर भीर ॥ भीषमसों भिरि फाल्गुण हैं रक्षत निजसैन। तुमसब सादर जाहुतहँ है राक्षसबल अैन ॥ चयकरी ॥ सोसुनि शिघ्रचलो बलवान। अरि दल मर्दत बर्षतबान ॥ भीम सत्य धृति सोचिति बीर। सुवन द्रोपदी के रणधीर ॥ छत्रदेव बसुदान महीप। अरु अभिमन्यु बीरकुल दीप ॥ काशिराजको सुतभट चण्ड। अरुनृप क्षात्रधर्म उदण्ड ॥ जोबिख्यात अनूप सुदेश। नायक ताकोनील नरेश ॥ कैकय सहसरथी लैसंग। अरुषट स हसमत्त मातंग ॥ बर्षतशर सत्वर तहँजाय। लागेकरण युद्ध दृढ़ घाय ॥

सहित घटोत्कच तेभट सर्ब। रोपे प्रलयकाल तेहि पर्ब॥ दोहा॥ धीरधनुर्द्धर बिदित भट इत द्रोणादिक सर्ब। भीमादिक उतके सुभट सिगरे प्रबल सगर्ब॥ उभैओर सों उभैदिशि छायदये शरजाल। यमपुर बर्द्धितकियेकरि शोणित नदीबिशाल॥ जिमिआये जलकी उलद भगतलोक तजिओक। तिमि अगणित देहीतहां तनतजिगे यमलोक॥ भुजंगप्रयात॥ गजी अश्वसादी रथीभूरि योधा। भिरेहांक दैदैगहे क्रूरक्रोधा। कितेशक्ति चालैंकिते भल्लघालैं कितेतोमरैं औकिते भिन्दिपालैं॥ कितेखड्ग बाहैंकिते बाणडारैं। कितेकौ गदाआयसी जष्टिमारैं॥ कहूंजंगमाच्यो रथीऐ रथीसों। कहूंबाजिसादीन सोंऔरथी सों॥ कहूंजङ्घ हो पैदरों औ रथीसों। गजी ऐगजी ऐगजी औ रथीसों॥ कहूं बाजिसादीन सों बाजिसादी। कहूं बाजिसादी पदाती प्रमादी॥ कहूंबाजिसादी गजीसों भिरेहे। कहूं पैदरै पैदरै सों थिरेहे॥ कहूं मैगलैं मैगलैं युद्धमाच्यो। सुबाजीन बाजीन सों रङ्गराच्यो॥ बिनाबाहनै ह्वै किते बीरबांके। भिदेबाण भल्लानहू सों निसांके॥ भरेगर्ब बैरीन को देखि टूटैं। भिरैं ताल दैदै कुटैं फेरिजूटैं॥ कटे शीश केते फिरैं रोषराते। खरे ह्वे किते गर्बके दर्पमाते॥ किते मोहि बाहैं गदा शाप ऐपैं। मरे बीरकेते परेहाथि ऐपैं॥ कितेको खिले भल्लसों तत्र ठाढ़े। हनै भूरिबाणौ महारोष बाढ़े॥ गहे धीरता बीरता भूरि ठाटैं। करीबाजि बीरान के गात काटैं॥ करैंदीह चिघार केते बितुण्डैं। भगैं औ गिरैं औ मरैंह्वै बिसुण्डैं॥ भयो भूपताठौर संग्राम जैसो। यथायोग कासींकहो जाय तैसो॥ सोरठा॥ सोधनु तजिधनु और भीमचह्यो जौ लगि गहण। तौलगि नृपकरि गौरहन्यो तासु उरमधि बिशिष॥ लागे सो शरघोर भीमबीर मोहित भयो। सोलखि घनसम सोर करिराक्षस नृपसों भिरो॥ चौपाई॥ अभिमन्युहि आदिक बरबलके। महारथी जितने ओहि दलके॥ रहे तहांते सब त्यहि क्षणमें। चले भूपपै बधगुणि मनमें॥ सो लखिकै चिन्तित ह्वै मनसों। द्रोणकहे इतक सुभटन सों॥ उतके महारथीभट सिगरे। जे धनुधरमें लिखे अदिगरे॥ चले बेगसों नृप परतेसब। रक्षहु नृपहि जाइ सत्वरअब। सुनि अचार्य को यह अनुशासन। चलेसुभट टङ्कारि शरासन॥ भूरिश्रवा शल्यकृप आदी। रहे तहांजे सुभट प्रमादी॥ बर्षत शरते सब अति जबसों। गर्जत जाय भिरे तिन सबसों॥

तौलगि चेति भीम रणचारी। बर्षन लगो बाण धनुधारी॥ ताक्षणद्रोण भीम कहँमारे। छब्बिस बाण सरस अनियारे॥ तहां वृकोदर अतिरिस कीन्हें। दशबर शर गुरुके उर दीन्हें॥ तिन बाणन सों बेधित ह्वै कै। मोहिपरो द्विज इतउत ज्वैकै॥ द्रोणाचार्यहि मुर्च्छित देखी। नृप अरु अश्वत्थामा तेखी॥ चले भीमपै बर्षत बाना। सोलखि कोपि भीमबलवाना॥ धनुतजिदीर्घ गदा गहि करसों। नृपपै चलो कूदिरथ बरसों॥ सो लखिद्रोण कृपादिक योधा। किये भीम भटको अवरोधा॥ दोहा॥जिमि घन सब दिशिसों सरहि देहि बारिसों पूरि। भीमहि शर छादित किये तिमिते तजि शरभूरि॥ अभिमन्युहि आदिक सुभट सो लखि अनर बिचारि। सत्वर इतके भटन सों भिरे प्रचारि प्रचारि॥ तिहिक्षण देशअनूपको नृपतिनील बलवान। अश्वत्थामहि टेरिकै हन्योहिये मधिवान॥ चौपाई॥ तब अति रिसकरि अश्वत्थामा। करत भयो अति अद्भुतकामा॥ हतिसब बाजी नृपके रथके। किये पथिक यमपुर के पथके॥ फिरि बर बाणलाय धनु गुरुमें। हन्योनील भूपति के उरमें॥ तब अनूपपति मूर्च्छित ह्वैकै। लस्यो मृतकसम रथपर स्वैकै॥ नीलहि मूर्च्छित निरखि तरजिकै। बीर घटोत्कचअसुर गरजिकै॥ सदल चलो संमुखद्विज बर के। रचत सेतु रणनद में शरके॥ अगणित भट दलसों कढ़िकढ़िकै। भिरे द्रोणसुतसों बढ़िबढ़िकै॥ द्रोणतनय तहँ अतिरिस लीन्हें। क्षण में तिन्हें पराजित कीन्हें॥ निज सुभटन कहँ बिचलत देखी॥ राक्षसराज घटोत्कच तेखी॥ प्रगट करतभो माया ऐसी। लखी न सुनी आज तक जैसी॥ इतकेभट मोहित ह्वै जासों। लखत भये पूरे बिपदासों॥ इतके द्रोणादिक भट जेते। हते गये राक्षससों तेते॥ इमि अन्योन्यदेखि भट सिगरे। भीतिभगे धीरज सों निगरे॥ तेहिक्षण में उतके भटरूरे। शङ्ख बजाइ मोदसों पूरे॥ सोगति हम अरु भीषम हेरे। रहि चैतन्य बार बहु टेरे॥ फिरौ फिरौ भट धीरज धारौ। यह मिथ्या जो प्रगट निहारौ॥ दोहा॥ मायाबी राक्षस प्रबलजौन घटोत्कच बीर। ताकी यहमाया सकल फिरहु लरहु धरिधीर॥ सोसुनि कोऊ सुभट नहिं थिरो फिरो धरिधीर। दुर्योधन नृप अतिदुखित गयेभीष्म के तीर॥ पाणिजोरिकै कहत भे लै लै ऊबि उसास। यथा घटोत्कच जय लहो करिकै अतुल

प्रयास ॥ सोरठा ॥ सुनों पितामह दक्षतो भुजबल को अनुग ह्वै । पा-
ण्डव प्रबल सपक्ष तिनसों हम सङ्गर रचे ॥ दोहा ॥ एकदश अक्षोहिणी
मम बिदित सेना सर्ब । लरति करत निदेश जिमितुम तथा नितियहि
पर्ब ॥ आशरित तो तुव सुबशहम सहित सेना जौन । भीमसेन घटो-
त्कच सों हारि पावत तौन ॥ पाण्डवन सों हारि हमजो लहतसो दुख
भूरि । अरस काठहि अगिनि जिमि तिमि मोहिं दाहत पूरि ॥ सुनोताते
आजुलहि तो कृपाको परसाद । राक्षसहि निज हाथसों हति चहतअति
अहलाद ॥ होइ ममकर तासुबध तिमि करहु बिक्रम तात । भूपके सुनि
बचन भीषम कहे उचित सुबास ॥ आपु सबके अधिपहौ महाराज यह
सुनिलेहु । आपु सबसों लरौ सबथर तुम्हहिंउचित न येहु ॥ धर्म आ-
दिक आय बनसों लरहु तुम गहिचाय । अधिपह्वै तुम भृत्यगण सों
लरहुमति बढ़िजाय ॥ द्रोणहम कृपशल्य सात्विक शकुनि अरुभगदत्त ।
द्रोण सुवन बिकर्ण आदिक बीरसकल प्रमत्त ॥ करब संगर घोर सब
कहँ बधब कै बधिजाब । बधब अरु बधिजायबे में नेकुनहिं अरसाब ॥
बीर राक्षसके बधनको तुम्हैंजो अतिचाह । देहु शासन बधैवहि भगदत्त
भट नरनाह ॥ भाषि यहिबिधि भूमि पतिसों भीष्म कुरुकुल वृद्ध । क-
हतभे भगदत्त नृपसों बचन करण समृद्ध ॥ इन्द्रसम अति प्रबलहौ भग-
दत्त तुम जगजैन । सदल बढ़ि भिरिलरि बधहु भट राक्षसहि सहसैन ॥
भीष्मको यह बचन सुनि भगदत्त भेरि निशान । पाण्डवीदल प्रति च-
लत भो तजत अगणित बाण ॥ निरखि भूपहिबीर उतके भीम आदिक
सर्ब । भिरे बढ़िबढ़ि तजत आयुध करत सोर सगर्ब ॥ घोर संगर किये
तहँ भिरि उभय दिशिके बीर । कटे अगणित बाजि गजरथ धनुष भट
रणधीर ॥ मचो संगर घोर तब भगदत्त द्विरद बढ़ाय । चलो सम्मुखभीम
के बर बिशिष सों दिशिछाय ॥ देखिसो अभिमन्यु आदिक बीर धीरस-
मस्त । भिरतभे भगदत्त सों करि जीतिबे को कस्त ॥ भूरिशक्र समान
तेसब बज्रसम बहुबान । हने सद्विरद भूप गिरिपै जानि परम अमान ॥
क्षतज शोणित धारसों भरिगहे अनुपमरूप । धातु चित्रित शैलसम तहँ
लसो सद्विरद भूप ॥ बीर भूप दशार्णपति द्विरदस्थभट त्यहिकाल । चलो
नृप भगदत्तपै करि शरनको अतिजाल ॥ दोहा ॥ देखिताहि भगदत्त नृप

करि अति क्रोध अमान। तकि ताकेगिरि सम गजहि मारे चौदह बान॥ लगेबाण भागेद्विरद करिआरतचिग्घार। मर्दत निजदल कढ़िगयो दूरि भयोभय भार॥ ताहिपराजित देखिकै भीमादिक भटसर्ब। प्राग्जोतिष पतिसों कियो घोरयुद्ध गहिगर्ब॥ सोरठा॥ कालानलहि समान भयो तहां भगदत्त नृप। मारि अनगिने बाण उतके अगणित भटबध्यो॥ अगणित भटतजि धीरह्वै पीडित रणतजि भगे। जिमि सिंहहि लखितीर भागे करिबर को निकर॥ चौपाई॥ भगे सुभट पाण्डव के दलके। जेबिर दैत गिनेबर बलके॥ निजदल बिचलत लखिबलवान। बीरघटोत्कच सुभट अमाना॥ अति कराल ह्वैरिस बिस्तारी। मारत भयो शूल अतिभारी॥ लखिसो शूलबज्रसम आवत। नृपति काटिभो मगहि गिरावत॥ शूलहि काटिशक्ति लैकरमें। तज्यो घटोत्कच पैनृपफरमें॥ बीरघटोत्कच शक्ति निरेखी। कूदि पकरि तोरत भो तेखी॥ यह लखि बिस्मय भेसुर सिगरे। करत प्रसंसा पाण्डव अगरे॥ तबभगदत्त शरासन गहिकै। अब मतिभागु खरोरहु कहिकै॥ हनिशर एक भीमके तनमें। हने राक्षसहि नवशर क्षणमें॥ तीनिबाण अभिमन्युहि मारे। कैकेयन कहँपांचप्रहारे॥ क्षत्रदेवको दक्षिण भुजवर। काटिदेत भोहनि तीक्षण शर॥ पांचपांचशर अति अनियारे। पांचौद्रौपदेय कहँ मारे॥ फिरितजि चारिबाण कीराजी॥ बधेभीमके रथके बाजी॥ हनिशर तीनि ध्वजा ह्वैकीन्हे। एक सारथीके उरदीन्हें॥ तबभट भीमगदा गहिकूदो। लखितो सुतगणको मुदमूदो॥ नृपतेहि थर ताही क्षण आये। कृष्ण सहित अर्जुन छबिछाये॥ दोहा॥ दुर्योधन तहँदेखि तेहिह्वैचिन्तित तेहिठौर। भेजतभो अगणित सुभटजे ज्ञाता रणतौर॥ तेहिक्षण नृपतेहि थरमचो सँगर अतिशयघोर। अरुण अरुणाई गहतभे प्रापि प्रतीची छोर॥ सोरठा॥ कृष्णार्जुनहि सखेद भीम सुनावत भीतहां। करता अति निरवेद इरावानको बधदुखद॥ जयकरी॥ निजसुत इरावानको नास। सुनिपारथ लैऊबि उसास॥ भरि करुणासों भयेअचैन। कहेकृष्णसोंऐसेबैन॥ कुरुकुलको क्षयहेतुलखाय। प्रथमकह्यो जोबिदुर बुझाय॥ ब्यासादिक सिगरे मतिमान। कहो न मानैंवे अज्ञान॥ सोदिन भयोप्रगट यहआय। अब मोसों कछुकहो न जाय॥ ज्ञाति बन्धुको नाशमहान। दुहूं ओर सोंहोत निदान॥ राज्य हेत करि इतो

प्रमाद। राज्य लहेको धिकअहलाद॥ अधनहि मरणश्रेष्ठ हेआप्त। नहिं हति बन्धु राज्यको प्राप्त॥ नृपति धर्मजब मांगे ग्राम। तबनहिं हमको लगो ललाम॥ अबसो जानिपरो अभिराम। लखिकरिबो यह कुत्सित काम॥ जोप्रभु अबहम त्यागैंयुद्ध। क्लीवकहैं तौक्षत्री शुद्ध॥ ताते अबकरि युद्धबिहार। उचित जाव रणआर्णव पार॥ तातकरहु अबचपल तुरंग। निरखौ ममदुस्तर रणरंग॥ यह सुनिकै केशव हरषाय। कीन्हेंचपल तुरंग बढ़ाय॥ घोरयुद्धभो नृपतेहिठौर। कहैंकहांलों गुरुतागौर॥ मारु मारु धरु मार्योमारु। शब्द भयो अतिभयद अपारु॥ दोहा॥ तेहिथर नृपतोतनय सब लैभटद्रोणहि संग। बढ़िबढ़ि कैभिरिभीमसों लगे करण सफजंग॥ भीषम कृप भगदत्त अरु नृपति सुशर्म्माबीर। पारथसों भिरिकैतहां लगे लरनरणधीर॥ हारदिक्य बाह्लीक ये भिरेसात्विकिहि देखि। भिरतभयो अभिमन्यु सोंनृप अम्बष्ट पतितेखि॥ यहिबिधि सिगरे सुभट भिरि किये घोर संग्राम। शोणित की सरिता भई समुद्र समान अछाम॥ चौपाई॥ मचेघोर सँगरहे आरज। भीमकियो अतिदुस्तर कारज॥ ब्यूढोस्त्रु सुवनतो ताको। शिरकाटे हनिशर सुप्रभाको॥ फिरिकुण्डलिन कर बध कीन्हों। फिरि बैराटहि यमपुर दीन्हों॥ अना धृष्ट कोबध फिरि करिकै। बध्यो सुबाहुहि शरपरि हरिकै॥ कुण्डेलहि यमलोक पठायो। दीर्घबाहु कहँहति मुदपायो॥ दीर्घबर्चसहि हति फिरितरजो। कनक ध्वजहि हति घनसम गरजो॥ इमिनव बन्धुनको बधदेखी। भगेसकल तोसुतभय भेखी॥ तोपुत्रन कहँभीम निपाते। हवैतिहि समय द्रोण रिसराते॥ डारै बाणभीम पैतैसें। घनबन बरषैं गिरिपै जैसें॥ गिरिसम भीम बाण बन सहिकै। बध्यो तिन्हें अतिरिस सों हनिकै॥ छाग सदृश तोसुत रणधीरा॥ वृकसम लसो वृकोदरबीरा॥ करिकै बिरथ अम्बष्टहि क्षणमें। भट अभिमन्यु कोपकरि मनमें॥ मारतभयो बाण अनियारे। जे उतुंग गिरि बेधन हारे॥ तब अंबष्टपति युद्ध बिहारी। मारत भयो फेंकि असिभारी॥ सो अभिमन्यु बीचही काटे। फिरि तीक्षणशर हनितेहि डाटे॥ तब अंबष्ट बिचरि रणपथपैं। गो हार्दिक्य भूपके रथपैं॥ दोहा॥ इमिसिगरेभट जुटि तहां किये युद्ध उद्दण्ड। रुण्डन मुण्डनसों किये रण मंडल अतिचंड॥ महिखरी॥ तहँरुण्ड मुण्ड बितुण्ड मानुष तुरँगके अगणितपरे। करकुण्डलन

सहघने बहुकर कुंडलन बिनुछबि भरे ॥ तनुत्राण सहतनुत्राण बिनुशिर त्राणयुत शिरत्राणके। बहुपरे ह्वै अधमरे भटबहु परेह्वै बिनु प्राणके ॥ कटिगिरे धनुसहपरे अगणित भुजातहँ अनुपमबने। शर धनुष तानेशो-णितक भिदिपरे मरिभट अनगिने ॥ असिशक्ति मुद्गरगदा पट्टिश भ-ल्लकर कसि कसि गहे। बहुसुभट कटिकटि परेठटि अटि भूरि छबिसों लसिरहे ॥ बहुछत्र धनुध्वज चक्रचामर मुकुट भूषण मणिमये। रथ चर्म आयुध दन्तअंकुश परे थरथर लखिलये ॥ जिमि चलतआयुध दुहूंदिशि सोंघने मढ़ि तकि तकि नखे । तिमिगिरत नरगज बाजि एकहि बार अगणित तहँलखे। मदमेद मज्जा मांसशोणित अस्थिसों धरणीभई । जिमि पूर्व मधुकैटभ दैत्यके नाशमें मेदिनिभई ॥ इमिहोत संगर भूपतेहि दिन रजनि द्वैघटिका गई। तब युद्ध तजितजि उभय सेना उभयदिशि कीमग लई ॥ दोहा ॥ निजनिज डेरन जायसब कियेअहार बिहार। अठये दिनमें इमि भयो प्रलय पयोधिपसार ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्वाम्नाभिगा मिनाम्नीवंदीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेनकविना विरचितेभाषायां महाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिअष्टम दिवसयुद्धवर्णनोनामत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

संजयउवाच ॥ दोहा ॥ गत अठयेदिनकी रजनि मधि दुर्योधनराय। सौबल दुश्शासन करण सों इमिकह्यो बुलाय ॥ सदल पाण्डवनसों लहबकेहि प्रकार जयतात। उनसों जयपैबो हमें दुस्तर परमलखात ॥ भीष्म द्रोण कृप शल्य अरु भूरिश्रवा सुबीर। नहिं उनसों जयलहतसो कारणकौन गँभीर ॥ यह संशय व्यथवत हमहिं करहु तासु परिहार । यह सुनिकै बोल्यो करणसुनिये भूप उदार ॥ शपथ आपुकी करिकहत हमयहसांची बात। भीषम पांडवपै करत दीह दया हेतात ॥ शस्त्रग्रहण तजिकै तजै भीषम युद्धबिहार। सहित सदल पांडवनको हमकरिहैं सँहार ॥ ताते भीषमके निकट आपुशीघ्र अबजाय । शस्त्र त्याग करवाइये यह बिधि सबिधिबुझाय ॥ सूततनयके बचनसुनि दुर्योधन तजित्रास। सेवितसुभट समूहसों गयेभीष्मके पास ॥ सोरठा ॥ करि बिधिवत परणाम बैठि सु-आसन बिशदपै। जोरिपाणि अभिराम कहतभये चखसयलकरि ॥ रोला ॥

तात आश्रय आपुको लहि रहतही ममपास। सहितशक्र सुरा सुरन के जीतिबेकी आस॥ पाण्डवनकी कौन गिनती जहां ऐसोमान। सुनोताते करौ ऐसी कृपाकरि अनुमान॥ सदलयोधा प्रबल अरिको नाशकै यहि काल। होहिं हम अति धन्यमहिपै पाय सुयश बिशाल॥ मन्दभाग्य विलोकि ममकै मोहिं दोषीजानि। करहु उनपै दया जोतौ देहु शासन मानि॥ कर्ण उनकहँ बधै यामें नहीं संशयनेकु। भाषि इमि ह्वै रह्यो चुपतो पुत्रमानी एकु॥ भीष्म सुनि यहबचन चुपरहि धरिकलों करि शोच। कोपयुत ह्वै कहतभे फिरि कोपको करिमोच॥ वाक शरसोंहियो ममकत वृथाबेधत भूप। करत हमतो काज नितनिज शक्तिके अनुरूप॥ छिप्योहै का तुम्हें बिक्रम पांडवनको जौन। दह्यो जब खांडीवबन को जीति इन्द्रहितौन॥ छोड़ि तुमकहँ भगेजब कर्णादियोधा सर्ब। छोरि पांडव लये तुमकहँ गह्योजबगन्धर्ब॥ हमहिं आदिककर्ण तकसबसुभट हे तो संग। आपु जबहि बिराटपुरको गये सहित उमंग॥ बीरअर्जुन सुभट एकै तहां सम्मुखआय। जीति सबको बसन भूषण सहित लैगो गाय॥ बिदितबीर निवातकबची तिन्हैं जीत्योपार्थ। जिन्हैं जीति न सकै बासव सुरन सह गुणिस्वार्थ॥ दियेद्रुपद भगाय तुमकहँ सूतसुत सह यत्र। पार्थ द्रुपदहि जीतिगहिकै दये द्रोणहितत्र॥ जानिबिक्रम पाण्डवनको कहतहौ इमिभूलि। कियेबिनु अनुमान भूपति बुमतिपै अनकूलि॥ जासु रक्षककृष्ण करता गजतके जगदीश। सकैको तेहि जीतिसो जय लहहि बिश्वेबीश॥ निदरिसबके बचन तुम हठि रचो रण व्यापार। मारि उनकहँ आपुकत नहिं लेत सुजयअपार॥ पाण्डवनकहँ बधहु तुम करिप्रगट बिक्रमउद्ध। तजिशिखण्डहि और सबकहँ बधब हमकरियुद्ध॥ बधहिंगे कै हमहिं उतके सुभटहे क्षितिपाल। मारिउनकहँ लेब हमकै सुजयसुयश रसाल॥ तजहु चिन्ता भूप हम इमि करब संगर आजु। लोकसकल प्रशंसिहैबहु दिवसलों जोकाजु॥ भीष्मके ये बचन सुनिनृप जानि कारयसिद्धि। मोदिगे निज सिबिरकहँ जो लसतपूरित ऋद्धि॥ तहांरजनि बिताय नृप सजवाइकै निजसैन। कहे दुश्शासन सुभटसों जानि बल बुधि ऐन॥ प्रबलदै अरु बीश बिशद अनी कनी भटभूरि। करहु नियमित रक्षणारथ भीष्मके मतपूरि॥ भीष्म बधिहै आजुसिगरे

शत्रुको समुदाय। तजि शिखण्डहि कहो हमसों पितामह गहिचाय॥ काज सबकहँ एक रक्षण भीष्मको हेतात। भीष्म सबकहँ मारिदेहैं सुजय अतिअवदात॥ द्रोण गौतम नृप बिबिंशित शकुनि शल्य नरेश। सदा रक्षहिं भीष्मकहँ ये निकटरहि सबदेश॥ भूपक ये बचन सुनि ते सकल भीष्महिंघेरि। सहित तोसुत भयेठाढ़े दीहदुन्दुभि भेरि॥ पार्थ धीर धुरीण भीष्महिं सदल इबिधि निहारि। धृष्टद्युम्न सुबीरसों इमि कहे बचन बिचारि॥ भट शिखण्डहि करहु सम्मुख भीष्मके गहिचाव। रहब रक्षक तासुहम करिप्रगट आत्म प्रभाव॥ दोहा॥ भीषम तेहिदिन रचतभे ब्यूह सर्वतोभद्र। राखि सर्वथल प्रबलभट जे करता रणभद्र॥ कृप कृतबरमा सैन्यअरु शकुनि जयद्रथ बीर। नृपति सुदक्षिण भीष्म अरु सिगरे तोसुत धीर॥ राजेआगे ब्यूहके रहेदाहिनीओर। द्रोणशल्य भूरिश्रवा अरु भगदत्त अथोर॥ भूपबिन्द अनुबिन्द अरु सोमदत्त क्षितिपाल। अश्वत्थामा भटसदलरहे बामदिशिपाल॥ सुभट त्रिगर्त्तन सहित तहँ दुर्योधन क्षितिनाह। ब्यूह मध्यमें थिरत भे पूरित परमउछाह॥ नृपति श्रुतायू प्रबलभट असुर अलम्बुष बीर। पृष्टदेश रक्षतरहे सह सेना रणधीर॥ यहिबिधि ब्यूह बनायह्वै मारतगड समचगड। भीष्म पितामह लसतभे सहकरशर कोदण्ड॥ सोरठा॥ उतै युधिष्ठिर भीम अरु माद्रीके उभयसुत। महारथी भटभीम दलके आगे लसतभे॥ सात्विकि भूप बिराट धृष्टद्युम्न ये सैनसह। करि संगरको ठाट खरेभये दिशि दाहिनी॥ बिजय शिखण्डीबीर चेकितान अरु घटोत्कच। कुन्तिभोज रण धीर सदल लसतभे बामदिशि॥ केकयपति सबभाय द्रुपद और अभिमन्यु भट। सैनसहित उमदाय पृष्टपालह्वै लसतभे॥ महाब्यूह अति उग्र इमि पांडवरचि भटनसह। मुदसोंभरे समग्र अरुण बदनकीन्हेंखरे॥ जयकरी॥ यहिबिधि रचिरचि ब्यूहबिशाल। उभयबन्धु कौरवकुलपाल॥ दुन्दुभि आदिबाद्य बजवाय। दुहुं दिशिसों बढ़िचले सचाय॥ महाराज सुनिये तेहिकाल। भो अनेक अपसगुन कराल॥ दुहूं ओरसों आयुध भूरि। लगे चलन भीषमता पूरि॥ चौपाई॥ माचो घोरयुद्ध तेहिक्षणमें। लखि सुरगण बिस्मितभे मनमें॥ तहँ अभिमन्यु बीर रणचारी॥ सुरथ बढ़ाय सुभटन प्रचारी॥ घनसम गर्जतभयो अमाना। बारिधार समबर्षे

बाना ॥ काल दण्डसम बाण प्रहारी। अगणित भटकीन्हें नभचारी ॥ ह्वै बिकराल प्रलय आरोप्यो। घने भटनकी गुरुता लोप्यो ॥ सगज गजस्थ सहय हयसादी। हते असंख्य रथस्थ प्रमादी ॥ अर्जुनसुवन दवाग्नि अमाना। बाणजाल बरलपट समाना ॥ इतके सुभट बिहँगभय पागे सहि न सके साहस बनत्यागे ॥ मरेकिते कितनेभट भागे। उड़त झोलजिमि तिमिते लागे ॥ तासुबाण करिनिकर महाना। पंकिल थल समतहां लखाना ॥ इतकेभट करिगण समतामें। परि न लखत्राता बिपदामें ॥ लर्‌यो फाल्गुण सुततेहि क्षणमें। बज्रपाणिसम बिचरत रण में ॥ सब थरलसे तासु शरतैसें। पुष्पित बनमें षटपदजैसें ॥ द्रोणजयद्रथ अश्वत्थामा। कृपहि आदिजेभट जयकामा ॥ तिन सबकहँ मोहित करिबीरा। लर्‌यो अरजुन अतिरणधीरा ॥ मण्डलसदृश धनुष तहँताको। लसत भयोनृप परम प्रभाको ॥ दोहा ॥ निजदल मर्दत देखिकै अभिमन्युहि तेहिकाल। असुर अलम्बुष सों कह्यो दुर्योधन क्षितिपाल ॥ तुम बिनुयाको नाश नहिं करि सकिहै भटओर। ताते तुम बढ़िलरिबधौ याहि सुभट शिरमौर ॥ यह सुनिकै अतिघोर धुनि करिराक्षस रणवीर। रथ बढ़ायकै जातभो जहँ अभिमन्यु सुबीर ॥ सोरठा ॥ प्रबल राक्षसहि देखि निजरथ चपल बढ़ायकै। अर्जुन को सुत तेखिचलो बेगसों तजत शर ॥ चौपाई ॥ अर्जुन सुवन भिरै बढ़ि जबलों। राक्षसबीर अलम्बुष तबलों ॥ मर्दि असंख्य सुभट जगजेना। दई बिडारि पाण्डवीसेना ॥ तहां द्रौपदीके सुतगणको। लखिसरोष प्रमुदितकरि मनको ॥ तिनपै तजतभयो बरबाना। हने ताहितेऊ बलवाना ॥ शशिहि पांचग्रह घेरहिं जैसें। भिरे असुरसों ते सबतैसे ॥ अगणित बाण असुर के तनमें। हनतभये ते कोपित मनमें ॥ रुधिर भरोतहँ असुर लखानो। रबिक्रकिरिण सहित घनमानो ॥ वरबाणनसों बेधित ह्वैकै। मूर्च्छि चेति फिरि तिनकहँ ज्वैकै ॥ शर धनु ध्वजाकाटि तिनके सब। पांचपांच शर हनत भयोतब ॥ फिरि सूतहि हनि शायक चोखे। बध्यो हयन करि बिक्रमनोखो ॥ तबलखि तिन्हैं बिरथबलवाना। चलो बधनको करिअनुमाना ॥ सो लखि अर्जुनसुत भटभारी। हनत भयो बहुबाण प्रचारी ॥ सोअभिमन्युहि बहुशर मार्‌यो। सोअसुरहि बहु बाण प्रहार्‌यो ॥ दोऊ बीर धीर रणचारी। दोऊ बिदित महत

धनुधारी ॥ तुल्यबल बीर भावसों भिरिकै। घोरयुद्ध कीन्हें तहँ थिरिकै॥ सुनि धृतराष्ट्रकहे अनुमानी। सहबिस्तार कहौ गुरुज्ञानी ॥ दोहा ॥सुनि संजय बोले सुनो भूपति सहबिस्तार । राक्षस अरु अभिमन्यु जिमि कीन्हें युद्धबिहार ॥ बर्षत अगणित बिशिषवर राक्षस भट उद्दण्ड। थिरु थिरु कहि अभिमन्युपै चलत भयो ह्वैचण्ड ॥ गुरुतोमर ॥ अभिमन्यु ताकहँ देखिकै। गुणि वन्धु हन्ता तेखिकै ॥ कोदण्डबर सन्धानिकै। बहु हने शरप्रणठानिकै ॥ सो असुर ताहि प्रचारिकै। भो मुदित बहुशर मारिकै ॥ शरतासु अगणित काटिकै। अभिमन्यु ताकहँ डाटिकै ॥ शर आठताकी देहमें। भो हनत चुभि जय नेहमें॥ तब असुर अतिशय कोप कै। भो हनत नवशर चोपकै ॥ तजि शर हजारन जोरसों । भो भरत नभ धुनि घोरसों ॥ अभिमन्यु तबनव बानसों। तेहि दयो वेधि बिधान सों ॥ तब असुर योधा तरजिकै। भो हनत बहुशर गरजिकै ॥ अभिमन्युको तनभेदिकै। ते गयेकढ़ितेहि खेदिकै॥ अभिमन्यु असुरहि हांकिकै। बहुबाण मारेताकिकै॥ तेबेधि असुर सुवीर को। कढिगये भूषिशरीर को॥ तब असुर भयसों पागिकै। तजियुद्ध पगद्वैभागिकै॥ भोकरत माया मोहनी। तममयी जो भय पोहनी ॥ वहि सैन मेंतम छायगो। मुदिभटनको व्यवसायगो॥ अभिमन्यु ताके भानको। तब तजे भास्कर बानको॥ दोहा॥ भास्कर अस्त्र अमोघ के बरप्रभावते भूप। बिनशी माया आसुरी भयो प्रकाश अनूप॥ अगणित माया करतभो यहि बिधि असुर सगर्ब। व्यर्थ कियो अभिमन्यु इमि दिव्य अस्त्रसोंसर्ब॥ तब अभिमन्यु प्रचारतिहि मारे अगणितबाण। थिरि नसको राक्षस भगो रथहि त्यागिलै प्राण ॥ सोरठा ॥ राक्षस पतिहि भगाय अर्जुन को सुत लसतभो। दाहि बनहिं छबिछाय प्रज्वलित अग्नि अधूम सम ॥चौपाई ॥ तेहि भगाय अभिमन्यु सुजेना। मर्दत भयो तावकी सेना ॥ जिमि मद गलित मतंग अमाना। चलै पद्मको बनतेहि माना॥ निजदल मर्दित बिचलित देखो। पितातुम्हार भीष्म अतितेखी॥ अगणित रथिनसहित धनुकरषत। भे अर्जुन सुतपै शर बरषत ॥ सबदिशि घेरिघोर धुनि कीन्हें। सारद शरपंजर करिदीन्हें ॥ उभै बंशको गुण अनुसरिकै। अर्जुन सुत तहँ बिक्रम करिकै॥ सबसों भिरो अकेलो तैसे। तरुणतरुण सों मारुत जैसे॥ निज सुतपै इमि भीर निरेखी। अर्जुन अतिअनरथ

अवरेखी ॥ तजत असंख्य बाणबर रूरे। मर्दत अगणित भटबलपूरे ॥ भिरो आय भीषम सों कैसे। भिरै सुसिंह सिंहसों जैसे ॥ दुर्योधन नृप सहित समाजा। हे रक्षत भीष्महि तहँ राजा ॥ तिमि उतके बहुभटभरि प्रणसों। हे रक्षत अर्जुनहि यतनसों ॥ तहँकृप बढ़िकै धनु टंकारे। बाण पचीस अर्जुनहि मारे ॥ इतने में सात्विकि भट बढ़िकै। हन्यो कृपहि शर रिसिसों मढ़िकै ॥ तब कृप नवशर ताहि प्रहारे। जे अतिशयसुन्दर अनियारे ॥ तब सात्विकि अतिरिस बिस्तारे। अति प्रचण्ड शर कृपपर डारे ॥ दोहा ॥ अश्वत्थामा बीचही सो शर दीन्हों काटि। तब सात्विकि तजि कृपहि शर ताकहँ मारे डाटि ॥ अश्वत्थामा बीरतब मारोबाण उदण्ड। सात्विकिको धनु काटिकै हने बाणबहु चंड ॥ तब सात्विकि सो धनुष तजि गहि दूजोको दण्ड। अश्वत्थामा कहँ हने साठि बाण उदण्ड ॥ भिदितिन बाणन सोतहां मूर्च्छि द्रोण सुतबीर। चेति हनत भो सात्विकीके तन अगणित तीर ॥ सोरठा ॥ फिरि हनिबाण बिशालकाटि ध्वजा घनसम गरजि। हनि बाणन को जाज गोपिदेतभो सात्विकिहि ॥ चोपाई ॥ सात्विकि तिहि अगणित शरमारे। सो सात्विकि पहँ बहु शर डारे ॥ मारि असंख्य बाण बरलैसे। सात्विकि छाय दयो तेहि तैसे ॥ प्राबिटकाल यथा घनघोरा। गोपहि रबिहि घेरि चहुंओरा ॥ सोलखिद्रोण कोपअति गहिकै। हने बाण बहु थिरुथिरु कहिकै ॥ तब सात्विकि बिक्रम विस्तारी। द्रोणहि हने बीशशर भारी ॥ इतनेमें अर्जुन रणचारी। भिरे द्रोणसों धनुटंगासी ॥ अर्जुन द्रोण भिरेतहँ राजा। जिमि नभमें बुध शक्र ससाजा ॥ यह सुनिवृद्ध भूपअनुमानी। संजयसों बूझी यहबानी ॥ अर्जुन द्रोणहि सरस सनेहू। रहो परस्पर तुम गुणिलेहू ॥ ते निर्दयह्वै ह्वै कै तेहि थर। कैसे लरे कहोसो बुधिवर ॥ यह सुनि बोले संजय आरय। नृप गुणि क्षात्र धर्मको कारय ॥ हने यथेष्ट द्रोण कहँ पारथ। पार्थहिहने द्रोणलखि स्वारथ ॥ पारथबारि द्रोणके बानन। हनिशरतीनि पुरुषपंचानन ॥ छायदेतभो बहुशरद्विजपै। तबअतिकोपि द्रोणअरिरुजपै ॥ करिकर लाघव बिक्रम बरसा। पार्थहि छायदेत भो शरसों ॥ पारथबीर कोपि तेहिक्षणमें। बहुशर हनेद्रोणके तनमें ॥ सोलखि दुर्योधन अतिमाखे। बीर सुशर्म्मा नृपसोंभाखे ॥ करौद्रोणको रक्षणबढ़िकै। सो सुनि भूप

सुशर्म्माकढ़िकै ॥ घनसमगरजत बोरअमान॥ वर्षतभयोबारिसम बाना ॥ दोहा ॥ द्रोण सुशर्मा के बिशिष हंस सदृश नभछाय। मुकुतरासि सम पार्थपै पतत भये दृढ़घाय ॥ तब अर्जुन अति कोपकरि मारि अनगिने बान। ससुत सुशर्मा भूप कहँ व्यथितकियो बलवान ॥ तहँ त्रिगर्तपति पुत्रसह मरिबे के प्रणलागि। शर बर्षत भटपार्थ पै चलो क्रोधसों पागि॥ अति बिक्रम कीन्होंतहां पार्थबीर उद्दण्ड। निज बाणनसों तासु सबशर काटे ह्वैचण्ड ॥ सोरठा ॥ तब पारथ करिशोर तज्यो अस्त्र बायव्य बर। मढोबायु अति घोर इतनृप तासु प्रभावसों ॥ अगणित सुभट अमान तासों मर्दितभे इतै। सोलखि द्रोण सुजान शैलअस्त्रछोड़त भये ॥ चौपाई॥ मारुत शमित भयो नृपतासों। तब पारथ भरिक्रोध महासों ॥ हनिअसंख्यशर हतिबहुबीरा। कियो सुशर्महि बिगलितधीरा ॥ सोलखिदुर्योधन कृपयोधा। अस्वत्थामा शल्य सक्रोधा ॥ बिंदअौर अनुबिंद नरेशा। अरु बाह्लीक भूप भटभेशा ॥ अरु कम्बोजाधिपति सुदक्षिण। घेरिपार्थ कहँ लरे सपक्षिण ॥ नृप भगदत्त श्रुतायु ससेना। भिरै भीमसों लखि दल जेना ॥ भूरिश्रवा शकुनि शलराजा। माद्रीसुत सों भिरे ससाजा॥ सहतो सुतनभीष्म रणचारी। भिरे धर्मसों धनुटङ्कारी ॥ गजानीकलखि भीम उमहिकै। रथसों कूदो सुगदा गहिकै ॥ गदापाणि तहँ भीमहिं ज्वैकै। सब गजस्थ योधारिसि ग्वैकै ॥ घेरिलये भीमहि बढ़ितैसे। घन समुदाय शूर कहँ जैसे ॥ तहांभीम अति बिक्रम करिकै। बधोअनेकद्विरद संचरिकै ॥ लसोभीम यहिभांति गजनि में। जैसे प्रबल बायु घन बनमें ॥ मारिगदा करि कुम्भ पदन पै। अति उतंग अति दीहरदनपै॥ हते असंख्य द्विरद मतवारे। भगे असंख्य भीतिसों मारे ॥ मर्दत निज दल ते गजरूरे। सबदिशि में आरत धुनिपूरे ॥ दोहा ॥ गजदल बिचलत देखिकै भगे सुभट समुदाय। त्यहिक्षणमें युगयाम दिन गयोसुनो मनलाय ॥ मध्य दिवश में भीष्मतहँ कियोथोर संग्राम। लुनित धान्य समपरद लहि मर्दित भो बलधाम ॥ तहां शिखण्डी द्रुपद अरु धृष्टद्युम्न बलवान। नृप बिराट ये भीष्मसों किये कठिन घमसान ॥ नृप बिराट कहँ एकशर तीन द्रुपद कहँ मारि। धृष्टद्युम्न कहँ एक शर मारेभीष्म प्रचारि ॥ सोरठा ॥ धृष्टद्युम्न बलवान तीनिबाण भीष्महिहने। नृपबि-

राट दशबाण मारे द्रुपद पचीशशर ॥ बाणपचीस अमानहन्यो शिखंडी शंकतजि। तहँभीषम मतिमान पुष्पित किंशुक समलसो ॥ जयकरी ॥ तब भीषम अति रिसि बिस्तारि। तीनितीनि शर तिनकहँ मारि ॥ सुभट शिखण्डी युवति बिचारि। हन्योन शायक दीन्हों बारि ॥ बाण एकहनि द्रुपदहि डाटि। शरसोंदयो शराशन काठि ॥ तबनृपद्रुपद औरधनुधारि मारे पांचबाण ललकारि ॥ सूतहि हनेतीनि बरबान। जे करता अनरथ को ठान ॥ त्यहि क्षण भीम सात्विकीबीर। सुवन द्रौपदी के रणधीर ॥ पांचभाय केकय पतिभूप। अरु सात्विकि क्षितिपाल अनूप ॥ महारथिन सहधर्म नरेश। भिरेभीष्मसों नृप तेहिदेश ॥ दोहा ॥ तिमि इतसों तो तनय सब महारथिन सह ऊटि। पाण्डव भटसों लरतभे अमर असुर सम जूटि ॥ घोरयुद्ध तहँ होतभो कहे कहालों भूप। शोणितकी सरिता बही समुद समान अनूप ॥ कितने रथहय बहिगये परि शोणित केधार। कितने गिरत मतङ्ग के तर दबिगे लहिभार ॥ सोरठा ॥ अर्जुन बधे सटेक सुभट असंख्य त्रिगर्तके। तीक्ष्ण बिशिष अनेक तज्योसुशर्मा पार्थपहँ ॥ चौपाई ॥ नवशर हने पार्थके तनमें। सत्तरि हने कृष्णकहँ क्षणमें ॥ तब अर्जुन अतिरिस बिस्तारी। नृपके शर निज शरसों बारी ॥ प्रलयपारि भूपति के दलमें। दियो बिडारि सुभट सब पलमें ॥ भगे त्रिगर्त भूपके योधा। ह्वै अनाथ सब बिगलित बोधा ॥ बहुगज रथ हय तजि तजि भागे। गिरत उठत ताकत भय पागे ॥ हांकिबाजि गज रथ भटरूरे। भागेदीन दशासों पूरे ॥ तिन्हैं सुशर्मा बहुबिधि टेरे। तेनहिं मन मगिबेसों फेरे ॥ यहलखि दुर्योधन अनखाई। लैसँग सबसेना सहभाई ॥ करि आगे भीषम कहँराजा। भिरे पार्थसों सहित समाजा ॥ उत सब पाण्डव बढ़ि सबदिशिसों। भिरे कौरवनसों भरि रिसिसों ॥ अर्जुनअरु भीषम तहँ भिरिकै। घोरयुद्धकीन्हों थिरिफिरिकै ॥ भिरि सात्विकिअरु नृपकृतवरबामा। कठिन युद्धकीन्हों तेहि थरमा ॥ दोहा ॥ द्रुपदद्रोण येभिरितहां किये घोर घमसान। भीमसेन बाह्लीक भिरि कीन्हो युद्धमहान ॥ चित्रसेन अभिमन्यु कहँ हने अनगिने बान। बेधे ताकहँ तीनिशर हनिअभिमन्यु अमान ॥ चित्रसेनके सुरथके हनिहति सिगरे बाजि। सिंह सदृश गरजत भयो सुरथ शृङ्गपै राजि ॥ चित्रसेन तब शीघ्रही कूदि सुरथसों

त्यागि। दुर्मुखके रथपैगयो भभरी भीतिसों पागि ॥ बोरठा ॥ सूत सहित तेहिदेश ह्वै बेधितभट द्रोण सों। भयगहि द्रुपद नरेश भागिगये निज सैनप्रति ॥ भीमसेनके चण्ड बाणनसों भिदि बिरथह्वै। तजि बाहलीक घमंड लक्ष्मणके रथपैगयो ॥ चौपाई ॥ कृतबर्मा कहँ बहुशर हनिकै। सात्विकि अति आनँदसों सनिकै ॥ रथबढ़ाय भीषमसों भिरिकै। हनेशाठि शर छबिसों घिरिकै ॥ तब भीषम करिकोप कराला। तजेशक्ति अतिबिशद बिशाला ॥ सात्विकि ताहि बीचही छेदे। सोलखिकै दुर्योधन खेदे॥ तबसात्विकि निजशक्ति चलाये। भीषम ताकहँकाटि गिराये ॥ काटिशक्ति भीषम अति रोखे। हने सात्विकिहि नवशर चोखे ॥ सो लखि रथी पांडवन केरे। राखि सात्विकिहि भीष्महि घेरे ॥ अतिशयघोर युद्ध तहँ माचो। मानहुं काल कुपित ह्वैनाचो ॥ यहलखि दुर्योधन अनुमानी। दुश्शाशन सों बोले बानी ॥ भीषम पाण्डव के सुभटन सों। घिरिछादित भे सरस शरन सों ॥ रक्षण तासु महतहै कारय। ममजय को कारण हे आरय ॥ महा रथिन सह बढ़ि तुमआसू। रक्षहु भीष्महि हति दल तासू ॥ यह सुनि सइसेना बढ़ि सोई। भिरो पाण्डवनसों भयगोई ॥ उभय सैन के भट भिरि भिरिकै। घोर युद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥ हय दल सहित शकुनि तेहि क्षणमें। जय हित उमहि गर्व गहि मनमें ॥ बरषत बाण भिरत भो जितिसों। सहदेव नकुल सुधर्म नृपति सों ॥ दोहा ॥ तोमर पट्टिश भल्ल अरु शक्ति परस्वधबान। झेलि उभय दिशि के सुभट किये कठिन घमसान ॥ दशहजार योधा प्रबल हयसादी तिहि काल। तहँ भेजतभो चाहिजय दुर्योधन क्षितिपाल ॥ तेहि क्षण चपल तुरीन के खुर थारन को शब्द। दहत बांसको बिपिन तिमि कढ़िपरसत भो अब्द ॥ बोरठा ॥ हय हिंसन को शोर पूरि गयोसब दिशनिमें। उध्व युद्ध अतिघोर क्रुद्धि क्रुद्धिभट करत भे ॥ वसुकला ॥ तेहि क्षण ससैन। बल बुद्धिऐन ॥ युत बन्धुवीर। नृप धर्मधीर ॥ ह्वै चपल हिष्टि। करि बाण वृष्टि ॥ हति हय समूह। अरु सुभटजूह ॥ तोदल दबाय। दीन्हों भगाय ॥ तजि सकल सौज। भगिचली फौज ॥ पाण्डव अमान। लहि मुद महान ॥ करि शंखनाद। गहिअति प्रमाद ॥ झेरत निशान। बढ़ि भरे शान ॥ यह समय देखि। तो तनय तेखि ॥ नृप शल्यताहि। अ-

ति प्रबलचाहि ॥ भो कहत येहु। सुनु सुबल गेहु ॥ तोभागि नेय। तजि शर अमेय ॥ अरु धर्म भूप । ह्वै बिकट रूप ॥ मम दल सँहारि। दीन्हों बिडारि ॥ तुमबढ़ि सरीति। लरिलेहु जीति ॥ दोहा ॥ दुर्योधनको बचन सुनि शल्यभूप हरषाय । रथ समूह सह बढ़िभिरो धर्मनृपति सों जाय ॥ धर्म नृपति तिनसों भिरो लैसँग सुभट अथोर। महतयुद्ध तहँ होत भो यमपुर बर्द्धन घोर ॥ शल्य भूप के हियहने धर्मभूप दश बान। हने नकुल सहदेव शर सातकठोर अमान ॥ शल्य मारि तिन-कहँ प्रथम तीनि तीनि शरचण्ड । साठि धर्म नृपकहँ हन्यो द्वैद्वै तिन्हैं उदण्ड ॥ सोरठा ॥ घोर युद्ध तेहिकाल भूपति तेहिथर मचतभो। शोणित सरित बिशाल रुण्ड मुण्ड मय बढ़िबही ॥ यह लखि धीर धुरीन भीम सुवीर अमित्र जित । करत सुबिक्रम पीन भिरो शल्य नृपसों तहां ॥ तेहि क्षण भीषम क्रुद्धि कठिन पराक्रम करतभो। जिमि मृगराज प्रबुद्धि गजराजन के यूथमधि ॥ चौपाई ॥ द्वादश बाण भीमकहँ मारे । नवशर हनि सात्विकिहि प्रचारे ॥ तीनि सुबाण नकुलके तनमें। हने सात सह देवहि क्षणमें ॥ द्वादश बाण धर्मके उरमें । धनु टंकारि हन्यो अतितुर में ॥ धृष्टद्युम्न कहँ बेधिननरदे। यहिबिधि अगणित सुभटन मरदे ॥ द्वा-दशबाण सरस अनियारे। नकुल प्रचारि भीष्मकहँ मारे ॥ सात्विकि हने तीनि शरचोखे। धृष्टद्युम्न सत्तरि शरनोखे ॥ गरज्यो भीम सातशर हनिकै। द्वादश हने धर्मनृप गणिकै ॥ तेहिक्षण द्रोण सात्विकी भीमहि। पांचपांच शरहने अधीमहि ॥ सात्विकि भीम क्रोधअति करिकै। तीनि तीनि शायक परिहरिकै ॥ बेधि द्रोणकहँ गर्बित मनमें। सिंहसदृश बि-चरेरण बनमें ॥ त्यहिक्षण सकल देशके योधा। घोरयुद्ध कीन्हों गहि-क्रोधा ॥ भीषम तहां धनुष टङ्कारे। करि मण्डलसम भटसँहारे ॥ अग्नि-समान भीष्मके बाना। अरिदल भो तृण बिपिन समाना ॥ सुभट चेदि कारूष सुथरके। चौदह सहस बीरबल बरके ॥ भिदि भीषम के शरसों तेहां। गये शूरगण निवसत जेहां ॥ यहिबिधि अगणित सुभट सँहारे। हाहाधुनि परदल मधिपारे ॥ दोहा ॥ कालचक्रसम धनुष रथ करिकै भीषम तत्र। अगणित भटहति निमिषमें भेजे यमपति यत्र ॥ काटिसरथ अगणित रथी सहहय नेक हयस्थ । सगज अनेक गजस्थ हतिपर

दल कियो अस्वस्थ ॥ डाटि डाटि अगणित सुभट काटिकाटि रणधीर। काल कुदेरेको अजिर रणमहि कियो सुबीर ॥ सोरठा ॥ भगी पांडवी फौज ह्वै मर्दित भट भीष्मसों। तजि तजि संगरसौज ॥ भगत गिरत उठि लखि भगत ॥ चौपाई ॥ पांडवको दल बिचलत देखी। रोको सुरथकृष्ण अवरेखी ॥ कहे पार्थसों सुनो यथारथ। यह सोई दिनहै हे पारथ ॥ जो दिन तुम इच्छितहे बहुदिन। निरखौ प्राप्त भयोअब सोक्षिन ॥ अबकत मोहिं रहेहौ आरज। करहु समामधि कोपन कारज यहसुनि पार्थकहत भे शोचत। नहिं अवध्य का बध मोहिं रोचत ॥ धिग राज्यहि जाकेहित स्वामी। होत बनत अनुचित पथगामी ॥ करहु चपल अश्वन कहँसाईं। निरखो मम बिक्रम यहिठाईं ॥ सुनि प्रभुहांकि श्वेतरँग घोरे। कीन्हें शीघ्र भीष्मके धोरे ॥ भिरे भीष्मसों पारथ जबहीं। पलटे उतके योधा तबहां ॥ भीषम तहँ करलाघव करिकै। तीक्षण शर असंख्य परिहरिकै गोपिदयो पारथ कहँ क्षणमें। लखिसब भट बिस्मित भे मनमें ॥ तहँ यदु नायक अनरथ चीन्हें। बेधित हयन चपल अति कीन्हें ॥ तेहिक्षण पारथ हनिशर चोखो। काटो भीषम को धनुनोखो ॥ तब भीषम धनु आन चढ़ायो। पारथ सोऊ काटि गिरायो ॥ साधु साधु तब भीषमकहि कै। बर्षेशर अति बरधनु गहिकै ॥ भीषम ह्वै प्रचण्ड अति तेहिक्षिन। कीन्हों कठिन बाणको दुरदिन ॥ दोहा ॥ केशव करिकै प्रगट तहँ निज सारथ्य महान। रथ चालनमें व्यर्थकरि दये अनगिने बान ॥ काटेपार्थ असंख्य शर तऊ अनगिने बान। सहैं कृष्ण पारथहि तहँ मारे भीष्म अमान ॥ सहस छिद्र जलयंत्र सों कढ़ैयथा जलधार। चलेभीष्मके धनुष सों तिमितहँ बान अपार ॥ यहिबिधि पारथके रथहि छाय शरन सों बीर। बधे असंख्यन भटन कहँ भीषम भट रणधीर ॥ सोरठा ॥ पारथ कोमृदु युद्ध लखि भीषम कहँप्रबल लखि। यदुनायक ह्वैक्रुद्ध रथतजि भीषमपैचले॥करेउतंग प्रतोद अनुमानत बधभीष्मको। चले भीष्मकेकोद पुरुष सिंह यदुनाथ प्रभु ॥ रोला ॥ महिहि मर्दत यदुपतिहि तेहि समय आवत देखि। जातमारे भीष्मइमिसब कहतभे अवरेखि ॥ भीष्मआवत प्रभुहिलखि सन्धान धनुको बारि ॥ कहतभेइमि कृष्णके करमरण श्रेय बिचारि ॥ आयममबध कीजिये प्रभुकृष्ण करुणाऐन। युद्धतुव हाथमरिबो

परम महिमाऐन ॥ इतेमैं गुणकूदि रथसों पार्थपीछेधाय । गहे चरणहि रुके तबगे चरणसों लपटाय ॥ खरेभे तब कृष्णपारथ कहतभेकरजोरि। नाथऐसो करें होइहि महत लघुतामोरि॥ सत्यसत्कृत शस्त्रकी मोहिंशपथ हे मतिमान। मारि भीष्महि लहब जय तिमिकरब युद्ध बिधान ॥ बचन यहसुनि कृष्णराजे सुरथपै फिरिजाय । टंकारि बरको दंड भीषम दये फिर शरछाय ॥ किये दुरदिन पार्थबर्षा बाण की करि भूरि। उभय दिशि सोंचले आयुधरहे सबदिशि पूरि ॥ बधेसैन असंख्य इतके सुभटपांडव बीर। बधेउतके सुभट अगणित पिता तोरणधीर ॥ उभै दिशि के सुभट सिगरे किये बिक्रम घोर। मारुमार्यौ मारु थिरु धुनि पूरिगो सब ओर ॥ चण्ड ग्रीषम समय कैसो मारतंड समान। भयो भीषम भीष्मतेहि दिन दुसह अमल अमान ॥ दयोकरि शरजाल सबदिशि बध्यो अगणित सैन। पांडवीदल मधि न भट कोउरह्यो तहँसहचैन ॥ दोहा ॥ दहैंदवानलकी लपट जिमि तरु सलभ समूह । तिमि भीषमके शरबधे भट हय मैगल जूह ॥ काटि असंख्यन बाण धनु ध्वज रथ शक्ति अनेक। रुंड मुंड शोणित मयी रणमहिकरी सटेक ॥ भुजंगप्रयात ॥ महाबीर बीराधि श्रीभीष्म योधी। अरीत्रै करीपै महासिंह क्रोधी ॥ प्रलय कालके कालसोक्रूर ह्वैकै। प्रलयकाल रोष्यो प्रबीरान ज्वैकै ॥ करे मंडलाकार कोदंड भारी। दयेपूरि नाराचजे गात चारी ॥ यथा भूरि भेकीनमैं ब्याल कोह्यो। तथा पांडवी सैनमें बीरसोह्यो ॥ दोहा ॥ सब थर सबजनपै दयोपूरि शरन कोसेत। रह्यो न उतके भटनकहँ थिरि लरिबे कोचेत ॥ जिमि सबात अति वृष्टिमें कछु करिसकै न कोई। तिमि तेहि क्षण उतते सुभट रहे अचेष्टित होइ ॥ महिखरी ॥ तिहिसमय भीषमबीर केबर शरनसों भिदि भट घने। मरिगिरत हेएकसाथ अगणित रहेजकि तकिमय सने ॥ बहुभगे आयुध डारि कितने लये आयुध भगिचले। बहुभगे बाहन त्यागि कितने सहित बाहन भयरले ॥ बहु निरखि बिनु असवार बाहन पकरि चढ़िसादर भगे। बहुबीर घायल भगत फिरिगिरि रहत परिश्रति भयपगे ॥ यहि भांति हाहाकार नृपवहि सैनमधि सबथर मचो । कल्पान्त सोदिनभीष्मभव धनु शूल गति बिधिवत नचो ॥ दोहा ॥ यहि प्रकार करिएक रस बिक्रम भीषम धीर। रबिअथये लोंलरत भोप्रलय पारि रणधीर ॥ इमि

निजदल मर्दित निरखि लहितेहि दिनको अन्त। सहित सैनडेरन गये धर्मराज क्षितिकन्त ॥ दुर्योधन तब सहसयन निज डेरन मधिआय। किये अहारादिक क्रिया महामोदसों छाय॥ सोरठा ॥ ससयन पांडवभूप किये अहारादिक क्रिया। समुझि भीष्मको रूप तजी आश जयलहन की ॥ रोला ॥ निरखि बिक्रम भीष्मको ह्वै व्यथित पांडवभूप। बैठिपुरुष प्रधान सहभे करत मंत्रअनूप ॥ मंत्रिऊबि उसांसलै तहँबिकल ह्वैनृप धर्म। कृष्णप्रभु सोंकहत मे निजपिता महको कर्म ॥ कृष्ण देखो भीष्म कीन्हों अतुल बिक्रम आजु। दल्योइमि ममसैन जिमि बन नलिनकोग-जराजु ॥ गणेभट ममओर केजेभये संमुख तासु। ज्वलन ढिग गतसलभ सम तहँ भयेते सब आसु ॥ बरुण इन्द्र कुवेर यमके जीतिबेके योग। भीष्मतासों युद्धकरिकै लहै जय कोलोग ॥ कृष्ण लरिबो भीष्म सों सो वृथा गहिजय आश। जानिकै करवाइबोहै बन्धुगण कोनाश ॥ भीष्मके शरघात सोंहै व्यथित हित समुदाय। तासुरक्षण हेतअब हम बसब बन मेंजाय ॥ भूपको यहबचन सुनिकै कहो यदुकुल चन्द। धर्मभूपति धीर धारो तजौ सिगरो दंद ॥ आपुकेसब बंधुयहैं प्रबल बिक्रम भूरि। भीष्म कोबध करहिंगे येबिशद बाणन पूरि ॥ अर्जुनहिको नहिंरुचै बधि भीष्म कोतौ मोहिं। देहुशासन मारि भीष्महि देउंआनँद तोहिं ॥ पण्डवन को अहित जोमम अहित सोनहिं आन। अहित मम सो पांडवन को अहित कहत सयान। शिष्य सम्बन्धी सखामम अनुजतो बलवान। तासु हित हम प्राणदीबो गुणत तूलसमान ॥ कृष्णके येबचनसुनिकै कहेधर्मनरेश। सत्यमम समकौन जाकेपक्ष आपु सुभेश ॥ कहेहम केहिभांति प्रण तजि आपुकीजै युद्ध। नाथ अबमैं कहतहौं जोमंत्र अतिशयशुद्ध ॥ भीष्म मोकहँ देनभाषो मंत्रवादिन जौन। भीष्मपहँ चलि बिनयकरि अब आजु लीजै तौन ॥ भीष्मकरिहैं युद्धउनकी ओरयह ध्रुवतात। अवशिहम जयलहब उनको पायमंत्र बिभात ॥ दोहा ॥ धर्मभूपको वचनयह सुनिकृष्णादिक तत्र। करिसम्मत सादर गयेवृद्ध भीष्महेयत्र ॥ कृष्ण नृपति सबबंधुसह धर्मभीष्म पहँजाय। यथा उचित अभिबंद्यभे बैठत आनँद पाय ॥ जयकरी ॥ ह्वै प्रसन्न तहँभीष्म उदार। कीन्हें कुशल प्रश्न व्यवहार ॥ फिरिबूझे आगमको हेत। तबबोले नृपधर्म सचेत ॥ तातपूर्व बिनती गुणि मोरि।

करिमोपैं तुमकृपा अथोरि ॥ देन कहोहो श्रेयद मंत्र। आयोआजु चाहि सोतंत्र ॥ निजबधकी बिधिमंत्र अघोर। देहु बताय सुजय गुणि मोर ॥ यहसुनि बोलेभीषम चाहि। पूर्वशिखंडी युवती ताहि ॥ आगेकरि सब सुभट समूह। मम संमुख आवै रचिब्यूह ॥ हम तापै शर हनब न नेक। रहिताके आड़ेगहि टेक ॥ बढ़िहनि अति अनियारे बान। ममबध करै पार्थ बलवान ॥ पार्थबिना कोउसुभटअनूप। तऊ न मारि सकिहि मोहिं भूप ॥ जाहु काल्हि कीजो यह काज। सुनि भूपति गे सहित समाज ॥ बहुरि बैठिडेरन मधिजाय। लागेकहन पार्थ बिलखाय ॥ बाल पने में रजभरि गात। जबहम जायकहत हेतात ॥ तबभीषम मोहिंअङ्क लगाय। ऐसो कहत रहेदुलराय ॥ हमतो तातकेरहैं तात। नहिंहम तातितिहारे तात ॥ इमिबहु बिधि सब दिन सबयाम। लालत रहेभीष्म गुणग्राम ॥ दोहा ॥ ज्ञानी योगी ब्रतीपटु वृद्धपितामह स्वच्छ। यहिबिधि पालत सुब्रत तेहि हम न बधबहे दच्छ ॥ बधैभीष्म ममसैनकै बन्धुन अरुकै मोहि। होइ अजयकै जय न हम बधब भीष्म कहँ जोहि ॥ अर्जुन के येबैन सुनि क्षात्रसुधर्म सुनाय। कियेकृष्ण सन्नद्धहठि बहुप्रकार समुझाय ॥ सोरठा ॥ अर्जुनसो सिद्धान्त करिभीषम केबधनको। कियेरजनि अतिक्रान्त निज निज डेरन जायसब ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्वामाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिनवमदिनयुद्धसमाप्तिर्नामएकचिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

संजयउवाच ॥ दोहा ॥ दशयें दिनको भोर लहि उभयभूप दल साजि। ब्यूह बिरचि मिरि लरत भे भेरि दुन्दुभी गाजि ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ यह सुनिकै धृतराष्ट्रनृप कहोकहौ करि ब्यक्त। किमि रचि ब्यूह लरे उमगि हवै जयसों अनुरक्त ॥ संजयउवाच ॥ रोला ॥ भोर लखिकै रज निके वहिमंत्रिके अनुसार। साजि सेनारचे पांडव ब्यूहबिशद अपार ॥ किये आगेभट शिखण्डहि तासुतहँ दुहुंतीर। रहे रक्षक भीम अर्जुन अति प्रबल रणधीर ॥ रहे तिनके पृष्ठरक्षक द्रौपदीकेबार। अरु सुभट अभिमन्यु करता दुसह युद्धबिहार ॥ सुभट सात्विकि चेकितान नरेश

सैनसमेत। रहे तिनके पृष्ठपाहक करे अबिचल चेत ॥ तासु पीछू रहो दलपति धृष्टद्युम्न ससैन । रहे तब नृपधर्म अरु सहदेव नकुलसचैन ॥ तासुपीछू रहोदलसह नृपबिराट प्रकर्षि । बीर रसमय द्रुपदहो तब सहित सेनाहर्षि ॥ पांचभाय महीप केकय देशके रणधीर । धृष्टकेतु ससैनहे सबचमू रक्षक बीर ॥ बिरचि यहिबिधि ब्यूह पांडव दुन्दुभी बजवाय। चलेबढ़ि यहिओर बिधिवत शरनसों दिशिछाय ॥ दोहा ॥ इत आगेकरि भीष्मकहँ महारथिनसह संग । सबतो सुतहैं तदनुहैं द्रोण सपुत्रसढंग ॥ गजानीकसह तदनुहो नृपभगदत्त अमान। कृप कृतबरमा सुभटहैं तासुअनुग बलवान ॥ तबहो काम्बोजाधिपति सदल सुदक्षिण बीर। तदनु वृहद्वल शकुनि अरु जयत्सेन रणधीर ॥ तदनुसदल सब भूपहैं पृष्टपाल उद्दड ॥ यहिबिधि रचिरचि ब्यूहभे भिरत उभय दलचंड ॥ चौपाई ॥ होतभयो तेहिकाल उभै ओरके भटनसों । उद्धयुद्ध बिकराल यमपुर अति बर्द्धन करन ॥ चौपाई ॥ तिहिक्षण पाण्डव भट रणधीरा। अति प्रकर्ष दुर्मद रणधीरा ॥ शर बर्षत बरब्यूह बिदारत । बलसोंसु-भट असंख्य सँहारत ॥ चले शिखण्डहि आगे करिकै। भीषम के बध को प्रण धरिकै ॥ तिहि क्षण भीमार्जुन के मारे। अगणित भट यमलोक सिधारे ॥ सहदेव नकुल सात्विकिहि आदिक। जेउत के भट परम प्र-मादिक ॥ तिनके शर घातनसों पीड़ित। ह्वै भागे इतके भटब्रीड़ित ॥ सहि न सके शर घातअहित के । दश दिशिभगे सुभटसब इतके ॥ नृप धृतराष्ट्र हारि निज सुनिकै। संजयसों बूझे इमि गुणिकै ॥ भीषमनिज दल बिचलित देखी। बहो कहा कीन्हें अवरेखी ॥ संजय कहो सुनोते-हि क्षणमें। भीषम गहि अतिशै रिस मनमें ॥ बाणवृष्टि को दुरदिन कीन्हें। अरिको दल ब्याकुल करिदीन्हें ॥ अगणित गज हय भट रथ काटे। रुण्ड मुण्डसों रणमहि पाटे ॥ सब दिशिमें भीषम कहँ तेहिक्षण। लखि सब होतभये बिस्मित मन ॥ मण्डल सदृश धनुष करि सरस्यो। घनसम गर्जि बाण बन बरस्यो ॥ तहँ भीषमको बिक्रम तकिकै। रहे सकल पाण्डव तकि जकिकै ॥ तोसुत जब इमि बिक्रम चाहे। भीष्महि भांति अनेक सराहे ॥ दोहा ॥ तेहि क्षण अर्जुन बरषि शर हति अगणित भट आसु। सुभट शिखण्डहि बेगसों संमुख कीन्हेंतासु ॥ हन्यो शिखण्डी

भीष्मके उरमधि शायक तीन। उदासीन सम भीष्म तबबोले बाणीपीन॥ हनौ बाणवा मतिहनौ हम न मारिहैं तोहि। पूर्व रच्योबिधि तोहिं जो सोई अजहूं जोहि॥ चौपाई॥ शरसम बचन भीष्मको सुनिकै। कोपि शिखण्डी बोल्यो गुणिकै॥हम तुम्हार सबबिक्रम जानैं। जानिअजु तुमसों रणठानैं॥ बधब आजु हम तुमकहँ आरय यहसुनि करौबनै जोकारय॥ इमि कहि पांचवाण अनियारे। तकि भीषमके उरमधि मारे॥ समय बिलोकि मुदित ह्वै पारथ। कहे शिखण्डीसों गुणिस्वारथ॥ हमतुव अनुग रुकौमति नेकौ। पीड़ि न सकिहि तुम्हैं भटएकौ॥ कृप अरु द्रोणआदि जो योधा। हम करिहैं सबको अवरोधा॥ तुम बढ़िबधौ भीष्मकहँ भाई। लहौ अपूरब सुयश बड़ाई॥ भीष्महिं बधेबिना भिरिजगमें। हमतुम सुनब हास्यपग पगमें॥ तातेकरौ काज अबसोई। जाते जगमें हँसी न होई॥ इतने में इतके भटरूरे। भिरे करत बिक्रम बलपूरे॥ पारथभीम शिखंडिहि शरसों। छायदये करलाघव बरसों॥ तहँ अर्जुन अति बिक्रम कीन्हें क्षणमें तिन्हैं पराजित कीन्हें॥ तेहिथर निजदल बिचलत देखी। भूपति दुर्योधन अतितेखी॥ कहे भीष्म सों लखौ न नरदत। पांडव सदल सैनमम मरदत॥ दहै अग्निबन जिमि गिरि पाहीं। तिमिते बिहरत ममदल माहीं॥दोहा॥ जिमि गोपालक अति प्रबल वृषभन को समुदाय। जाय भजावत भीमतिमि ममदल देत भजाय॥ ऐसे आपत काल में तात तुम्हैं बिनु और। ममत्राता को होयहे सुभटन के शिरमौर॥ जयकरी॥ यह सुनिकै भीषम करि गौर। कहे सुनो भूपति शिरमौर॥ तुमसों जो हम कीन्हों पूर्व। परम प्रतिज्ञा गहिप्रण गूर्ब॥ अयुत रथी मारब हम रोज। सो प्रतिदिन कीन्हों कहिओज॥ तासों अधिक बधे निति जौन। हय गज भट तुम निरखे तौन॥ अजु करब तिमि दुस्तर कर्म। पालि सत्यको जो शुभधर्म॥ बधब पांडवनकहँ कै तात। हम बधिजाब अचल यह बात॥ इमि कहिकै भीषम बलवान। लागो तजन बज्रसम बान॥ तेहि क्षण निजबिक्रम दरशाय। बधे सहस्त्रन भट समुदाय॥ दोहा॥ पांडव जलनिधि के अनुग गे भटसरित महान। करष्यो तिनको तेज जल भीषम शूरसमान॥ मार्‌यो अयुत गजस्थ अरु अयुत हयस्थ सुधीर। लाख पदाती भट बध्यो तेहि क्षणभीषम बीर॥ इमि भीष्महिनिज

दल बधत लखि पांडव भट सर्ब। बधको करि अनुमान भे भिरत उमँगि गहि गर्ब ॥ सोरठा ॥ एक भीष्म तेहिकाल बहु पांडव भटसों लरत। देखि परो क्षितिपाल भिरो घननसों मेरुसम॥ सोलखि सबतो पुत्र महारथिन सह ऊटिकै। भीष्महि रक्षण सुत्र करि रण बिरचे जूटिकै ॥ चोपाई ॥ माचो घोरयुद्ध तेहि क्षणमें। भरो वीररस सबके मनमें ॥ तोमर शक्ति भल्ल शररूरे। रणमंडल में अबिरल पूरे ॥ तहँ भीषम अति गौरवलीन्हें। अबिचल अरिदल अरिदित कीन्हें ॥ भीषमको बिक्रम लखि पारथ। कहे शिखंडीसों गुणिस्वारथ॥ भय मति गहहु भीष्मसोंआरय। हमहनि बाण बधबजयकारय ॥ यह सुनि भूपसुवन भयत्यागी। चलो भीष्मपै रिस सों पागी॥ सहदेव नकुल द्रुपद रणधीरा। चेकितान अभिमन्यु सुबीरा ॥ नृप बिराट अरु भट सेनानी। सात्विकि आदि सुभट अभिमानी ॥जबसों चले भीष्मपै तैसे। अगणित गरुड़ ब्यालपै जैसे ॥ सो लखि इतकेभट भय धारे। यहिबिधि भिरत भये रिसि भारे ॥ चेकितान सों भिरो अमर्षण। चित्रसेन अरिदल को धर्षण ॥ धृष्टद्युम्न सों भिरो प्रचारी। कृतबर्मा अनुपम रणचारी ॥ बहत सुबीर वृकोदर तासों। भूरिश्रवा भिरो भरि भासों ॥ बीर बिकर्ण नकुल सों भिरिकै। कीन्होंघोर युद्ध तहँ थिरिकै ॥ कृपाचार्य सहदेवहि आड़े। बाण असंख्य बज्र सम छांड़े ॥ दोहा॥ भिरो घटोत्कच असुर सों तो सुत दुर्मुख बीर। सात्विकि सों भिरि लरत भो दुर्योधन रणधीर ॥ भिरतभयो अभिमन्यु सों भूप सुदक्षिण दक्ष। अभिरो द्रुपद बिराटसों द्रोणतनय भटअक्ष ॥ भिरो युधिष्ठिर भूप सों द्रोणाचारय हर्षि। बढ़ि अर्जुनसों भिरतभो दुःशासन धनुकर्षि ॥ सोरठा॥ बर्षत बिशिष सगर्ब चले भीष्मपै जे सुभट। इतके योधा सर्ब इमिबढ़ि बढ़ि तिनसों भिरे ॥ सघन सस्त्रगो पूरि जलप्रवाह सम नृपतहां। हय गज रथ भटभूरि याद सदृश तामधि लसे ॥ चोपाई ॥ उतसब भीष्महिमारणहारे। इतसब भीषम के रखवारे ॥ घोरयुद्ध माचो तिन तिनसों। भयो समागम नृप जिन जिनसों ॥ तहँ दुःशासन भट रणचारी। कीन्हों अद्भुतबिक्रम भारी ॥ तिमि पार्थहि बाणनकी मेला। करिरोंक्यो जिमि सिंधुहि बेला ॥ तीनिबाण अतिशय अनिआरे। हांकिपार्थ केतन मधिमारे ॥ बीसबाण केशवके तनमें। मारतभयो मर्मगुणिमनमें ॥ कृष्णहि

पीड़ित लखि रिसि गहिकै। शत शर हन्यो पार्थ थिरु कहिकै॥ तेशर दुःशासनके तनमें। कवचभेदि प्रविशे तेहिक्षणमें॥ तीनिबाण दुःशासन तबहीं। भ्रू मधि हन्योलख्यो सो सबहीं॥ तेहिक्षण पारथ अति उतकरषे। दुःशासन भटपर शर बरषे॥ दुश्शासन अति रिसि सों मार्‌यो। तापै अगणित बाण प्रहार्‌यो॥ तब पारथ काटेधनु तासू। अरुरथ मारि तीनिशर आसू॥ बहुशर हने दुशासन बीरहि। तब दुःशासन गहिअति धीरहि॥ गहिधनुबान चढ़ाय सुधार्‌यो। बाण पचीस पार्थकहँमार्‌यो॥ तब पारथ बहु बाण चलाये। दुश्शासन सब काटि गिराये॥ तब पारथ अति चोखे शायक। मारेजे तरु भेदन लायक॥ दोहा॥ तिन बाणन सों ब्यथित ह्वै भागिभीष्म के तीर। जायके मूर्च्छित ह्वै बहुरि चेतिलरत भोवीर॥ फिरि चढ़िकै रथऔर पै भटसमूह सहजाय। भिरतभयोफिरि पार्थसों महा क्रोधसों छाय॥ गुरुतोमर॥ यहिभांति सबभट जूटिकै। भे लरत अनरथ ऊटिकै॥ दोर्दंडगड बिक्रम भूरिसों। कोदंडगड केक्रम मूरि सों॥ दिशि छायदीन्हों बाणसों। अरु भल्ल शक्ति अमान सों॥ बहु शरन सों शर काटिकै। हनिशस्त्र अगणित डाटिकै॥ बध चाहि चाहि प्रकर्षह्वै। तजिजीवनाश अधर्षह्वै॥ वैभीष्मपै चलिजान को। अति करौ संकर ठानको॥ ये आड़िबेकी रीतिसों। अतिलरे करि रतिजीतिसों धनुकाटि बाण प्रहारहीं। धनुआन गहिशरमारहीं॥ बहुबाण मारिप्रचारहीं। डटि डारि डर डर डारहीं॥ भिदिशरन सो नहिं मानहीं। बढि चलैं वधिबे आनहीं॥ अरि अनुग अगणित मारिकै। करि ब्यथित द्वन्दहि टारिकै॥ बहु सुभट उतके जोरसों। तकि चलहिं भीष्महि तोरसों॥ तब सुभट इतके जूटिकै। त्यहिआड़ि राखै टूटिकै॥ जिमि नाव परिजल भौंरमें। रुकिरहै ते तेहि तौरमें॥ बहु ब्यथिह्वै टरि आयकै। फिरि सँभरि जूटैं आयकै॥ जलफेर लहि जेहि भावसों। दुरि जुरैं नौका बायुसों॥ दोहा॥ होत भयो तेहिठौर नृप यहि प्रकारको युद्ध। दुसह पराक्रम करतभे सिगरे योधाशुद्ध॥ तेहि क्षण द्रोणाचार्य लखि बहु असगुण बिकराल। अश्वत्थामा सों कहे गुणि अनरथ की माल॥ यहिदिन में अतिहोत है अगणित असगुन घोर। होन चहत अनरथ कछूमरिहैं सुभट अथोर॥ भीषमके बधकोकियो प्रणजेहि दिनकोपार्थ।

सोदिन आज लखातहै चाहत होन यथार्थ ॥ सोरठा ॥ पारथ गहि अति गर्व करि आगे द्रुपदात्महि। लैसँग योधासर्ब जान चहत हैं भीष्मपहँ॥ भीष्म शिखंडिहि जोहि युद्धत्याग करिहैं अवशि। जानि परत यहमोहिं बधिहि भीष्मकहँ पार्थतब ॥ चोपाई ॥ ससयन धर्मनृपति सों भिरिकै। हमइत लरब चक्रसम फिरिकै ॥ तुम अब निकट भीष्मके जाहू। रक्षहु भिष्महि सहित उछाहू ॥ रणचढ़ि मरब श्रेष्ठ कै जीतब। हारि जियब लघुगरिमा रीतब ॥ अति चिरकाल पुत्रको जीवन। जगमहँ को चाहत है जीवन ॥ स्वामि काज हित ताहि मरणको। कहियतु सास्वत धर्म्म धरणको ॥ हाहाकार मचोसब थलमें। माचो तुमुल युद्धयहि पलमें ॥ मरिबेको निश्चय ध्रुव करिकै। करत युद्धसब भट प्रण करिकै ॥ भीषम के बध रक्षणहेतू। बँध्यो उभय दिशिसों शरसेतू ॥ भीष्म अमृतके हित सब तैसे। लरतलरे दितिसुत सुर जैसे ॥ आमिष हेतु बाज युगभिरिकै। लरत लरत तिमि युगदल थिरिकै। ऐसेमें करि बिक्रम चावन। रक्षहु जाय भीष्मकहँ भावन ॥ यह सुनि अश्वत्थामा परखत। चलो भीष्मके ढिग शरबरषत ॥ इतनेमें दशभट रणचारी। मिरे भीमसों प्रबल बिचारी कृप भगदत्त शल्य कृतबर्मा। चित्रसेन दुर्मर्षणशर्मा॥ सुभटबिन्द अनुबिन्द नरेशा। बीर जयद्रथ अनुपमभेशा ॥ अरुतो सुत बिकर्ण धनुधारी ये दश बीर बिदितभटभारी ॥ दोहा ॥ येदशबीर महारथी सहित सुभट समुदाय। भीमसेनके सुरथपहँ देतभये शरछाय॥ नवनवशर कृपशल्यके कृतबर्मा के तीनि। लगिबेयतभे भीमको देह अनूपम पीनि ॥ चित्रसेनभगदत्त अरु भट बिकर्ण बलवान। भीमसेन कहँघेरिकै मारे दशदश बाण। हन्यो जयद्रथ तीनिशर दुर्भर्षण शरबीश। हनेबिंद अनुबिंद नृप पांच पांच शरईश॥ सोरठा ॥ बहुशर तिनकेकाटि भीमसेन अति क्रोधकरि। गरजि सिंह सम डाटि हनत भयो तिनकहँ बिशिष ॥ चोपाई ॥ आठबाण कृतबर्महि मारे। शल्यहि सात बाण अनियारे॥ कृपको धनुषकाटि धनुधारी। हनेसात शर अरिरण चारी ॥ तीनि तीनि शर तीक्षणचीन्हें। बिन्द और अनुबिन्दहि दीन्हें ॥ दुर्मर्षण पहँ बीस प्रहारे। चित्रसेन परशर शर डारे ॥ दशशर हने बिकर्ण सुयोधहि। आठ जयद्रथ नृपति सक्रोधहि ॥ कृप तबगहि सुबान को दण्डहि। दशशर मारे भीम प्रचण्डहि ॥ तहां भीम अति

रिससों सनिकै। कृपाचार्य्य कहँ बहुशर हनिकै ॥ तुरँग जयद्रथ नृप के रथके। बधत भयो जे गरुवे गथके ॥ फिरि हनि एकबाण मजबूतहि। दयो गिराय सचिव सम सूतहि ॥ तब रथत्यागि जयद्रथ आरय। बहु शरहन्यो सुजय के कारय ॥ सोलखिभीमबीर अतिरोखे। काटिदयो धनुहनि शर चोखे ॥ चित्रसेन के रथपै तबही। गयो भूपभो बिनु धनु जबही ॥ अति बिक्रम तेहिदिनके रणमें। कीन्हो भीमसेन तेहिक्षणमें ॥ काटि काटि सबके अगणित शर। सब कहँ हनि बेधत भो तेहि थर ॥ तिहि क्षण शल्य आदि सबयोधा। मुरि फिरि जुरि कीन्हें अवरोधा ॥ अब रहु खरो भागु मति कहिकहि। बरषे शरअसंख्य रिस गहिगहि ॥ दोहा ॥ तहँ सबके तनमें हने पांच पांच शर भीम। सत्तरि मारे शल्यकहँ जे अति तीक्षण भीम ॥ पुरुषसिंह फिरि सिंहसम गरजि बाणदश मारि। सबपै डारे बाणबहुसबके बाणन बारि ॥ शल्य शल्य समबाण नव तेहि हनिभयो बिशल्य। मारि बिशोकहि एकशर कियो प्रगट कौशल्य ॥ घोरठा ॥भीमसेन तेहिकाल सेन समान परो निरखि। इतकेभट खग माल लसे कालबश बिवश सम ॥ ते बहुभट बहुबार हने भीमकहँ बाणबहु। बहुबिधि बहुशर धार भीम हने तिन बहुन कहँ ॥ तोमर ॥ तिहि समय सब क्षितिपाल। शर तीनि तीनिबिशाल ॥ भट भीमसेनहि मारि। भे मुदित धनु टंकारि ॥ तब भीमबीर प्रचारि। शर तीनिशल्यहि मारि ॥ भगदत्त कहँ शतवान। भोहनत जानिअमान ॥ कृतबर्म को धनुकाटि। भो बाण मारत डाटि ॥ सो भूपगहि धनुऔर। शरहनत भो भ्रूठौर ॥ तब भीमतिन केगात। मधि किये बहुशर पात ॥ तब तजे येभट सर्ब। बहु अस्त्र गहिगहि गर्ब ॥ सब काटि सो रणधीर। भोहनत बहु शरबीर ॥ बहुभटनसों तेहि याम। लखि घिरो भीमहिआम ॥ भट प्रबल फाल्गुण कोपि। शर पात प्रलय अरोपि ॥ जेसुभट भीमहि घेरि। हेलरत तिनकहँ हेरि ॥ तिन सबन पै शरजाल। हनिभयो कढ़त बेहाल ॥ अति प्रबल भट दृढ़घाय। तेबीर दोऊभाय ॥ सह बिशद बज्र सुचक्र। सम शक्र अरु उपशक्र ॥ भट दितिज केमन मोरि। जय स्वर्गली न्हों छोरि ॥ दोहा ॥ भीमार्जुन को निरखि तब अति बिक्रम तिहियाम। कहो सुशर्म्मा बीरसों दुर्योधन ह्वै क्षाम ॥ अमर असुर पति शदृश ये

डारि अस्त्र गिरि भूरि। भीष्म अमृतके हेतदल उदधि मथतु बलपूरि॥ ताते तुम सहसैन बढ़ि बीरभावसों जूटि। भीमार्जुन को बध करहु परम अगम जय ऊटि॥ सोरठा॥ दुर्योधन को बैन समुझि सुशर्मा सैनसह। बढ़ि बुधि बिक्रम ऐनभिरो आर्जुन भीमसों॥ चौपाई॥ तिहिक्षण पाण्डु-तनय दोउभाई। भूपति कीन्हों कठिन लराई॥ सबके बाण हजारन छेदे। सबके गात शरन सों भेदे॥ बहु शरकाटि पाण्डवन केरे। येबहु शर तिनके तनमेरे॥ भीमपार्थ जग जोतन लायक। तजि सबदिशनि अनगिने शायक॥ बिदित एकादश भट जे इतके। करता अबिरल नद श्रोणित के॥ क्षण में तिनकहँ मोहित करिकै। बधे सहस्त्रन भटमुद धरिकै॥ गज हय धनु ध्वज अगणित काटे। भीषम तारण महिमधि पाटे॥ कालसदृश तहँ पार्थहि ज्वैकै। भगी फौज अतिब्याकुल ह्वैकै॥ भीमार्जुन को बिक्रमदेखी। दुर्योधन भूपति अवरेखी॥ नहिं तहँ बढ़ि तिनसों मुंहजोरे। खिसिलि गये भीषम के धोरे॥ सुभट एकादश तेतहँ थिरिकै। लरे भीम अर्जुन सों भिरिकै॥ तहां शल्य बिक्रमबिस्तारो। भल्ल पार्थ के उरमधि मारो॥ सो सहि पार्थ कोपिशर चोखो। काटेतासु धनुष अतिनोखो॥ तब गहि आन धनुष नृपचायक। हने पार्थकहँ तीनि सुशायक॥ पांच बाण केशव के तनमें। नवशर हने भीमकहँ रणमें॥ तहि क्षण भीमार्जुन बलभारे। शर झरि प्रलय पयोधिपसारे॥ दोहा॥ लहि शासन तो तनय को तेहिक्षण गे तेहि देश। शर बर्षत भटद्रोण अरु जयत्सेन मगधेश॥ जयत्सेन तहँ भीम के बहु मारे बसुबान। तेहि पन्द्रह शर हनिबध्यो सूतहि भीम अमान॥ बिना सूतसब तासुहय रथ लैभागेतासु। लखि पैंसठिशर भीमकहँ द्रोण हनेतब आसु॥ सोरठा॥ तबहीं भीम सुवीर हन्यो द्रोणके गातमधि। पैंसठि तीक्षण तीर हर्षि गर्बसों करपिधनु॥ अर्जुन बहुशर मारि बेधि सुशर्म्मादिकन कहँ। अनुपम धनु टंकारि सदल चलो बढ़ि भीष्मपहँ॥ चौपाई॥ सुभट शिखण्डिहि आगेकरिकै। भीषम के बधको प्रणधरिकै॥ पाण्डव सकल सहित सब योधा। चले बिदारत भट अवरोधा॥ धृष्टद्युम्न को शासन लहिकै। बढ़ो चतुर्बिधि दल बिधिगहिकै॥ भीष्म आदि इतके भट रूरे। तिनसों भिरे रोषसों पूरे॥ यह सुनिकै धृतराष्ट्रउबाचे। कहोलरे किमि ते रिसि

राचे ॥ सुनि संजय बोले सुनुराजा। लरें यथा भट सहित समाजा ॥ भीष्मार्जुनको दुसह समागम। भयो अजय जयलयको आगम ॥ बाहन सहस सुभट रथधारे। बधे भीष्म अगणित रथ तोरे ॥ नृप तेहि क्षण में भीषम ज्ञानी। गहि निर्वेद दशा अनुमानी ॥ चाहि स्वबध करुणासों सानी। बोले धर्मभूपसों बानी। हे सर्बज्ञ युधिष्ठिर आरय। निति जन बधको गुणि निजकारय ॥ मोकहँ भइ गलानि अब ताते। करौ प्रयत्न बधो मोहिंजाते ॥ जोहेतात मोर हितु चाहो। तौबधिमोहिं बचन ममपा हो ॥ यह सुधि सब पांडव मुद लहिके। बढ़तभये जै श्रियपति कहिकै ॥ चले सुभट भीषम पैतैसे। बहु हरि वृद्ध द्विरदपहँ जैसे ॥ दोहा ॥ धृष्टद्यु-म्न भाषत चल्यो चलो चलो रणधीर। बधत भीष्म कहँ आजु हठि पार्थ शिखंडीबीर ॥ तेहि क्षण तो सुतसर्ब अरु द्रोणादिक भटसर्ब। घेरिभीष्म कहँ बढ़िभिरे तिनसों गहि अतिगर्ब ॥ पांचालन सुभटन सहित पारथ बर्षतयत्र। आगे राखि शिखंडिकहँ चलो भीष्म हेतत्र ॥ सोरठा ॥ जेइतके रणधीरतेहिक्षणबढ़िआड़ेपरे। तिनसोंउतकेबीरभिरेप्रचारि प्रचारिइमि ॥ चौपई ॥ सात्विकि भिरोद्रोण केसुतसों। धृष्टकेतु पौरव बलयुतसों ॥ भट अभिमन्यु धनुष टंकारी। दुर्योधनसों भिरो प्रचारी ॥ भिरो भीम भग-दत्तनृपति सों। गजानीक मर्दत बल अतिसों ॥ सहित बन्धुसह सैन सुभेशा। भिरोद्रोणसों द्रुपदनरेशा ॥ भिरो वृहद्बल नृपकेछोहन। पार्थ-तनय सों लैदल गोहन ॥ पार्थ शिखण्डी सोंबलभारे। भिरे नृपन सह सबसुत थारे ॥ यहिबिधि सकल सुभट भिरि भिरिकै। कठिनयुद्ध कीन्हों थिरि थिरिकै ॥ घोरयुद्ध माचोतेहि पलमें। गिरे असंख्य सुभटदुहुं दल-में ॥ शब्द अघात मढ़ो महिदिवलों। कियेयुद्ध सब भिरि पुरशिवलों ॥ दुर्योधन अभिमन्यु महासै। कीन्हेघोर युद्ध तजित्रासै ॥ अगणित बाण काटिके ताके। नवशर हनेभूप बरभाके ॥ तब अभिमन्यु सुशक्ति चलाई। नृपतेहि शरसों काटि गिराई ॥ पार्थतनय तब नृपके उरमें। तेरह बाण हनेअति तुरमें ॥ इमितेहि भूपभूप कहँ सोऊ। हनि अति बिक्रम कीन्हों दोऊ ॥ यहि प्रकार सिगरे भटराजा। कीन्हों महतयुद्ध सहमाजा ॥ दोहा ॥ काटि काटि धनुध्वज लरेडाटि डाटि रिसपूरि। बारि बारि अग-णित बिशिष मारिमारि शरभूरि ॥ सुवनभूप शिशुपालको धृष्टकेतु बल-

वान। अरुपौरव ये भटतहां किये कठिन घमसान॥ टारि टारि डर मरण कोडारि डारि बहुबाण। छेदि छेदि शरशर हने भेदि भेदि तनु त्राण॥ हठधरि धरिकरि करि बिधनु बधिबधि तुरँग समस्त। रिसिसों भरिभरि लरतभे गहि गहि खंगप्रशस्त॥ सोरठा॥ जूटि जूटि सबिधान उठि उठि फिरि फिरि चक्रसम। टूटि टूटि बलवान छूटि छूटि जुटि छुटि जुटे॥ तहँ लरि लरि यहिभांतिहवै अचेत गिरि गिरि लसे। लहि लहि अनुपम कांति जिमि दहि दहि युगतरुलसे॥ जयत्सेन तबजाय लयोपौर वहि सुरथपर। उतसह देवसचाय चेदिपतिहि रथपैलयो॥ महिबगी॥ तिहि समयलहि नरपतिहिसों अभिमन्यु ह्वै गरबित खनो। नृप कोशलेश वृहद्वलहि हनि बाणकीन्हों अनमना॥ शरपांच हनिफिरि बीसशर नृपवृहद्वल तेहि हनत भो। अभिमन्यु तेहिशर आठहनि तबकाटि धनुशर हनतभो॥ गहि आनधनु नृप वृहद्वल अभिमन्यु कहँबहु शरहने। अभिमन्यु ताकहँ हने अगणित बाण अतिअनुपम बने॥ इमिउभय भटते बिशद बिक्रम बितरि अति संगरकरे। सबसुभट यहिबिधिकरे अतिशय युद्धअति अमरप भरे॥ दोहा॥ जिनजिनसों भिरणी भई ते ते भट तेहिठौर। कीन्हे अद्भुत युद्ध तहँ बूझि लेहुकरि गौर॥ अर्जुन अगणित भटमरदि प्रतिद्वन्दिन बिचलाय। सहित शिखण्डी भीष्मढिग आयो दलहि दबाय॥ तेहिक्षणमें भगदत्तनृप गजारूढ़ भटउद्ध। जायशीघ्र आड़त भयो त्यागि भीमसों युद्ध॥ सोरठा॥ दयोशरन सोंछाय प्राग्ज्यो तिषपति पार्थकहँ। हन्यो पार्थ दृढ़घाय तेहि बहुशर सबकाटि शर॥ चौपाई॥ तहँ भगदत्त भूपभिदि लहि दुख। रहि नहिं सको पार्थके संमुख॥ गज चलाय जियबे कि रीतिसों। जायभिरत भो द्रुपह नृपति सों॥ पार्थ शिखण्डी सों तबसादर। कहोचलौ भीषम पहँसादर॥ तेहिक्षणमें इतके बहुयोधा। भिरे पार्थसों करि अवरोधा॥ माचो घोरयुद्ध तहँराजा। कटे असंख्यन भटसह साजा॥ भीषमके बध रक्षण लागी। लसेसकल भटसंशय त्यागी॥ युद्धयुवा भटखेलन हारे। प्रणसम भीषम सुखदुख द्वारे॥ तेहिक्षण भीषम गौरवलीन्हें। भूपसुनहु अति बिक्रम कीन्हें॥ चौदह सहस सुभटबधिडारे। अगणित गजहय सुरथ बिदारे॥ तजि पाखडवन भूपतेहि पलमें। तजे धीर सबभट वहि दलमें॥ असनहिं एकरह्यो उतकोई। उबरत गुणैआपु कहँजोई॥ नृप

तेहिसमय शिखण्डी बिनुडर। हनेभीष्म कहँ तीक्षण दशशर॥ तबभीषम तिहि लखो तिरीछे। युवति बिचारिन बधिबो ईछे॥ कहो पार्थनृपसुत सों तेहिक्षण। अबबढ़ि बधौभीष्म कहँ गहिपण। नहिंतुम बिनु यहिदल में चायक। हैं कोउ भीष्महि बधिबे लायक॥ यह सुनि सुभट शिखंडी बढ़िकै। गरजो भीष्महि शरसों मढ़िकै॥ दोहा॥ तृणसमान तिन शरन कहँ जानिभीष्म अनखाय। तोमर शरमल्लान सों दयो पार्थकहँ छाय॥ मण्डल समको दण्डकरि बरषिबज्र समबान। अगणित हय गज सुभट बधि पूरो प्रलयमहान॥तिहिक्षण पाण्डव सैनसह धरिधीरज करिकोप। बढ़िभीषम सोंभिरतभे गहिबधिबे कीचोप॥ सोरठा॥ परदल मथितेहि काल लसोभीष्म अस्त्रन सहित। जिमिलहि केतरु जाल ज्वलितज्वलिन ज्वालन सहित॥ बसुकला॥ तहांतिहि याम। बलीभट आम॥दुःशासन कर्षि। सुआयुध बर्षि॥ असंख्य रथीन। कियेरथ हीन॥ अनेकरथान। अमानववान॥ किये तहँ गाजि। हतेबहु बाजि॥ लख्यो तेहि ठौर। मनोयम और॥ धनंजय देखि। भिरोतब तेखि॥ उभैभट उद्ध। किये अतियुद्ध॥ दोहा॥ लरिमुहूर्त मेंफालगुण भूप जीति तहँ ताहि। सहित शिखण्डी भटनसह चलोभीष्म पहँचाहि॥ भीषमके भुज बल बिशद के पनाह में आय। रहि बढ़ि मुरि रहि बढ़ि बहुरि सहैं दुशासन घाय॥ सोरठा॥ तेहिक्षण भीषमपार्थ भट समूहसों लरतहे। द्रुपदपुत्र गुणिस्वार्थ बर्षत होशर भीष्मपहँ॥ चौपाई॥ भीषमसहैं तासुशर कैसे। मंगलमत्त बारिझरि जैसे॥ इतकेसब सुभटन सों ताक्षन। कुरुपति कहे शोचयुत करिमन॥ बढ़िबढ़ि लरौपार्थ सोंभिरिकै। सादर बर्योशिखंडिहि थिरिकै सोसुनि सबभट संशय त्यागी। भिरेपार्थ सों नृपहितलागी॥ तहँ इत के सुभटन कोरक्षण। भीष्मकरत हे हनिपर पक्षण॥ अंग बंग कलिंग सुरथ के। कोकण कैकय आदि नगरके॥ सकल दिशन के नृप उमदाने। भिरेपार्थ सोंअमरष साने॥ दिव्यशरन सों पारथ क्षणमें। सदल तिन्हें जीतेतेहि रणमें॥ अगणित हय गज भट बधिडारे। अगणित भगे न साथसिहारे॥ तिहिक्षण पारथ सुभट अमाना। सज्यनु सरथ ह्वै चक्रसमाना॥ नृपसमूह बधिसहित समाजा। सबथर पूरिबाण सुनि राजा॥ दुश्शासन कहँहनि बहुबाना। तुरँग सारथिहि बध्यो

अमाना ॥ नृप बिबिंशतिहि हनि बहुशायक । कीन्हों बिरथ भटन को नायक ॥ हनिबहु शायक शल्य नरेशहि । अरु बिकर्ण कृप सुभट सुभेशहि ॥ कीन्हों बिरथ मारिसब सूतन । अरु सुदेशके हय मजबूतन ॥ ह्वै ह्वै बिरथ भागिते योधा । गये दूरकढ़ि तजि अवरोधा ॥ दोहा ॥ महा रथिनकहँ जीतितहँ गयेदिवस युगयाम । तरुण तरणिसम दुसह भो पारथ सुभट ललाम ॥ शर किरणन सों करषिभट शस्यन को रस धीर । बर्षावतभो रुधिरजल रबिसम पारथ बीर ॥

स्वतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्वाङ्गाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेनकविना विरचितेभाषायां महाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिदशमदिनयुद्ध युगयामसमाप्तिर्नामद्वाचिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

रोला ॥ उभय दिशिके भटनको तहँलख्यो करतब जौन । गूंगकैसो स्वप्नअब नहिंजात भाखो तौन ॥ चित्रसेन बिकर्णकृप अरु शल्य तो सुत बीर । बिरथह्वै दुरिआय फिरिचढ़ि सुरथपै रणधीर ॥ धनुषकर्षन बाण बर्षत जायफिरि तेहिठौर । लगे मर्दन पांडवीदल गहे अनुपम डौर ॥ ब्यथित ह्वै तेहिसमय परदल लसत भो यहिभाव । लसै बरधित सरितमें जिमि बायुबश परिनाव ॥ बीर भीषम बिरचि अबिरल सेततजि शरभूरि । रुण्ड करपग मुण्डसों रणभूमि दीन्हीं पूरि ॥ पार्थ आदिक सुभट उतके बर्षि आयुध सर्ब । बधे अगणित सुभटगज हय जूहते तेहि पर्ब ॥ सुभट सिगरे दुहूंदलके जीविताशा बारि । घोरसंगर किये लैलैनाम टेरि प्रचारि ॥ भीष्मपै वैचले इतशर आड़िबे के हेत । डरैं नहिं नहिं टरैंमारैं मरैंरचि शरसेत ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण भीषम राम की दई शस्त्रबिधि सर्ब । ह्वै ताड़ित शरपातसों प्रगटकियो गहिगर्ब ॥ पांच हजार रथीबये बधेसहस्त्र नरेश । हय पैदर चौदह सहस सहस मतंग सुभेश ॥ मारेसात महारथी अरु बिराटको भाय । सतानीक तेहि बधतभो मारिबाण दृढ़घाय ॥ जेनृप पारथके अनुग बढ़िआये सहसैन । तिन्हैंमारि यमपुर दयो भीष्मबीर जगजैन ॥ सोरठा ॥ इमिहति सुभट समूह चमूमध्य बिलसत भयो । तहँ उतके भटजूह लखि न सकेदिशि भीष्मकी ॥ चौपाई ॥ भीषमको इमि बिक्रम देखी । कहे पार्थसों प्रभुअब-

रेखी ॥ तोदल मरदि भीष्म रणधीरा। लसत सैनमधि अनुपम बीरा ॥ बधौताहि अतिबिक्रम करिकै। तौजयलहौ सिन्धुरण तरिकै ॥ तुमबिनु आन न सुभट अमाना। सहिजो सकै भीष्मकर बाना ॥ यहसुनि पार्थ मारिशर चीन्हें। सरथ भीष्मकहँ गोपित कीन्हें तहँभीषम सिगरे शर तासू। काटिदये बाणनसों आसू ॥ तिहिक्षण धृष्टकेतु धनुधारी। सहदेव नकुल भीमरण चारी ॥ चेकितान अरु द्रुपद नरेशा। धृष्टद्युम्न सात्विकि भटवेशा ॥ पांचभाय केकयपति राजा। अरु बिराट नृप सहित समाजा ॥ कुन्तिभोज हैडम्ब सोहाये। द्रोपदेय सौभद्र गनाये ॥ सुभट सुशर्मादिक तहँ लरिकै। भीष्मबाण सागरमें परिकै ॥ बूड़त हे ब्याकुलता गहिकै। तरेपार्थ बल बोहित लहिकै ॥ धरि धीरज जयसों अनुरागे। ह्वै सरोष रणबिचरन लागे ॥ पारथसों रक्षित भयहीना। रथी शिखंडी सुभट नवीना ॥ बिगत भीति बिक्रमसों सरस्यो। शरसमूह भीषमपै बरस्यो ॥ सुभटन सहित पार्थतेहि क्षणमें। चलो भीष्म पहँ गर्बित मनमें ॥ दोहा ॥ चेकितान सात्विकि द्रुपद धृष्टद्युम्न सहदेव। चले भीष्मपहँ हनतशर नकुल बिराट सुभेव ॥ द्रौपदेय अभिमन्यु ये बर्षत शायक भूरि। भिरे भीष्मसों प्रबलभट महाक्रोध सों पूरि ॥ इन सबके अगणित बिशिष काटि भीष्मरणधीर। सहि असंख्य शर शरबरषि बधे अनगिने बीर ॥ सोरठा ॥ होतभयो तेहिकाल उभय ओरके भटन सों। कठिनयुद्ध बिकराल पृथक् पृथक् को कहिसकै ॥ भुजङ्गप्रयात ॥ धनंजय सुनो भूपतेहां सुयोधा। गुणी अस्त्रओ शस्त्रमें जो सुबोधा ॥ मढ़ो भूरि नीहारको मानु जैसे। इतेके सुयोधान को टारितैसे ॥ बली दीहकैकै शिखण्डीहि आगे। चलो भीष्मपै क्रोहओ मोहत्यागे ॥ अनेकै सुयोधान के बाणआड़ै। घनेबाणसों भीष्मको गातमाड़ै ॥ दोहा ॥ तिहिक्षणसेनापति प्रभृत उतके योधाखर्ब। अगणित आयुध भीष्मपहँ डारे गहि गहि गर्ब ॥ तिनसों मर्दत ह्वै सुभट भीष्मभूप तेहिकाल। नेकु जनायोनहिं ब्यथा भयोकोपि बिकराल ॥ चौपाई ॥ तेहिक्षण भीषमधीर धुरीना। रोप्यो प्रलयकाल कालीना ॥ चाप ज्वलन शरज्वाल महाना। पर चतुरंगी जगत समाना ॥ दिव्यअस्त्र मारत समघोरा। करिदीन्हों ब्यापित चहुं ओरा ॥ रुधिर वृष्टितेहि दिनकी बर्षा। सदृशभई अतिशय उतकर्षा ॥

क्षण परदलमधि क्षणनिजदलमें। क्षणदालसे भीष्मतेहि पलमें॥ धुनि धनु नेमिअस्त्र बर्मनकी। महत गरजबारिद शर्मनकी॥ यहिबिधिप्रलय कालसम करिकै। बध्यो असंख्यन सुभट बिचरिकै॥ भीमधनंजय द्रुपद बिराटहि। सात्विकि धृष्टद्युम्न भटडाटहि॥ हनि अगणित शरबेधि प्रचारे। ते अगणितशर शरसों वारे॥ तेषटभट दशदश शरचीन्हों। मारि भीष्मकहँ बेधित कीन्हों॥ भीषमको तनशरसों मढ़िकै। शर झरिकियो शिखण्डी बढ़िकै॥ हनि क्षुरप्रशर पारथ तबही। काट्यो धनुष लख्यो सो सबही॥ सोसहिसके न शल कृतवर्मा। द्रोण जयद्रथ शल्य सुपर्मा॥ भूरिश्रवा कठिन रणचारी। अरु भगदत्त बिदित धनुधारी॥ दिव्यशरन को बर्षा करिकरि। भिरे पार्थसों अतिरिस धरिधरि॥ मारुमारु धरु मारु पुकारत। गे परदलमधि अतिभय भारत॥ दोहा॥ सो लखि सात्विकि भीम अरु द्रुपद बिराट नरेश। अरु अभिमन्यु घटोत्कच धृष्टद्युम्न शयवेश॥ द्रोणादिक भटसातसों भिरिये सातौबीर। घोरयुद्ध कीन्होंतहांसबदुर्मद रणधीर॥ रक्षित पारथ सुभटसों अभय शिखण्डी तत्र। अधनु भीष्मपहँ बरषिशर ध्वजकाट्यो हनिपत्र॥ गहोभीष्म तब औरधनु सोऊकाटो पार्थ। गहत मात्रइमि बहुतधनु काटेगुणिकै स्वार्थ॥ सोरठा॥ सुनोभूप तेहिकाल भीषम अतिशय क्रोधकरि। मारीशक्ति बिशाल तेहिकाट्यो शरपांच हनि॥ महिखरी॥ तहँकटे बहुनिज धनुष पर बल शक्तिव्यर्थ निहारिकै। इमिभये मनमें गुणत भीषम शोचअति बिस्तारिकै। हमएक धनुसों पांडवनकहँ बधनशक्ति अमानहैं। परमरें वै किमि जासुरक्षक कृष्णप्रभु भगवानहैं॥ यहिहेतु वेसब अबधहैं अरु द्रुपदसुत तिय भावसों। नहिं लहब उनसोंजीति नाहक लहब दुखशर घावसों॥ पितुदयो जो बरदान मोहिं स्वच्छन्द मरण सुतोषिकै। अब आजुआयो समयसो अबमरें हम मन मोखिकै॥ यहसमुझि आशयभीष्म की गगनस्थ बसुऋषि कहतभे। तुमगुने सोमत श्रेष्ठयह सुनि भीष्म आनँद गहतभे॥ यहसुनो भीषम सुबुधिकै हमसुनो सुमुनि प्रभावसों। तवबजी दुन्दुभि गगनमें सुरझरे सुमन सुचावसों॥ तेहि समय भीषम ज्ञानबर तहँभये मृदुरिस त्यागिकै। लखिसह शिखण्डी पार्थभे अति प्रबल रिससों पागिकै॥ बहुशर शिखण्डी हनेभीषम तिन्हैं मृदु तृण

समगने। तबपार्थधनु गांडीवकहँ टंकारि बहुशायक हने॥ दोहा॥ तिहि क्षण बहुभट बज्रसम हने अनगिने बान। तिनपैशर बर्षत भयो भीषम बीर अमान॥ द्रुपद तनयके शरनसों भीष्महिं अब्यथित देखि। बज्र सदृश अगणित बिशिष हने धनंजय तेखि॥ फिरि काटत भो भीष्म को धनु क्षुरप्र शर मारि। काटि धनुष अगणित बिशिष मारेमरण बिचारि॥ सोरठा॥ तब भीषम धनुआन गहितिहि मारे तीनिशर। हनि क्षुरप्र बर बान पारथकाटो सोउधनु॥ चोपाई॥ इमि जेजेधनु भीषम धारे। तेतै पारथ द्वैकरि डारे॥ काटिकाटि धनु अगणित बाना। हन्यो भीष्मकहँ पार्थ अमाना॥ अति बेधित भीषम तेहिक्षनमें। कहोदुशासन सों गुणि मनमें॥अमर असुरकहँ जीतन लायक। पारथ हनत बज्रसम शायक॥ बाण सहस्त्रनसो ममगातहि। बेधत उपलपात जिमि पातहि॥ पारथ हने बाणतहँ जिमिजिमि। कहतभये भीषमइमि तिमितिमि॥ पारथ के ये शर अनियारे। हैंन शिखण्डी भटके मारे॥ बज्र सारसम गरुतापूरे। मम गातहि बेधतजे रूरे॥ ते येशर अर्जुनके डारे। हैंन शिखण्डी भट के मारे॥ जेमम गातहि बेधत तैसे। बरमाधमहिं सेंगवा जैसे॥ अति तीक्षण अर्जुनके येहैं। नहिं नहिंबाण शिखण्डी केहैं॥ कालदण्ड सम लागत जेते। नहिं शिखंडिके अर्जुनके ते॥ रुद्र शूलसम जेशर चोखे। अरु कोपित फणिपति समजोखे॥ अति अबिरल ममतनमेंलागत। जिनके लागत धीरज भागत॥ तेयेशर अर्जुनके सिगरे। नहिं शिखंडि के लागत निगरे॥ जेयेलगि ममजीवहि करषत। तेयेबाण धनंजयबरषत॥ दोहा॥ आयुध सिगरे भटनके तिमिनहिं ब्यथवत तात। जिमि पारथके बज्रसम बरबाणनकेघात॥ इमिकहि भीषमपार्थकहँ मारीशक्ति कराल। तीनि बाणसों पार्थतेहि काटिदयो क्षितिपाल॥ तिहिक्षण इतके भटन सों उतके सबभट जूटि। लरतरहे नहिं भीष्मपहँ जाय सक्यो कोउ छूटि॥ सोरठा॥ तबतहँ भीषम कोपि खड्ग चर्मबर गहतभे। मनमें ध्रुव पणरोपि मरिबेको जयलहन को॥ लखिहनि अगणित बाण बिदित धनुर्द्धर पार्थभट। काटिचर्म तनुत्राण शतधा कीन्हों निमिष में॥ चोपाई॥ नृपति युधिष्ठिर यहगति देखी। अति प्रसन्नता सों हियमेखी॥ कहो भटनसों अनतन थिरहू। सादर बढ़ि भीषमसों भिरहू॥ सोसुनिकैसब

भट धनु करषत। चले भीष्मपर आयुध बरषत ॥ जिमि सुरपति को शासन लहिकै। ब्रजपैचले मेघमुद गहिकै ॥ तिमि इतके सबयोधा फिरिफिरि। सिमिटि लरेफिरितिनसों भिरिभिरि ॥ घोरयुद्धमाचो तेहि थलमें। कटी असंख्य बाहिनी पलमें ॥ पूरिमांस शोणित सों धरणी। भई भयावनि बिशद बिबरणी ॥ तिहिथर पार्थ बिदित धनुधारी। करि अद्भुत बिक्रम रणचारी ॥ मारि असंख्यनभट जगजेना। दई बिडारि तावकी सेना ॥ जे इतके बरणेबर योधा। तिन न तजेतहँ को अवरोधा ॥ पतित मतंगन समबल आगर। बिहरेलहि अनुपम रणसागर ॥ मारु मारुधुनि अतिशय घोरा। रह्योपूरि तेहिक्षण चहुंओरा ॥ सहितशिखंडि पार्थभट लायक। बर्षतभयो भीष्मपहँ शायक ॥ तेहिक्षण भीषम सुभट सुमेधा। रह्यो न कहुंतिलभरि बिनुबेधा ॥ भिदिभो भीषमको तनतैसो। लसत कुम्भ झिझियाको जैसो ॥ भीष्म सुबुधिहे ताहू क्षनमें। भूपति रह्योन बिक्रम तनमें ॥ दोहा ॥ इमि बेधितह्वै भीष्मके भयेशिथिल सब गात। मूंदिगयेनष तपितह्वै छूटिपरो धनुतात ॥ रहे कछूदिन भीष्म तब व्यथित दशायह पाय। प्राचीदिशि शुचि शीशकरि गिरे ईश्वरहि ध्याय ॥ पतत भीष्मके होतभो हाहा धुनिसबठौर। गिरोकेतु सबभटन को सुबुधिनको शिरमौर ॥ इते लगेहे भीष्मके तनमधि दीरघ बान। जिनपैरहिनहिं भूमिकहँ परस्यो भीष्मसुजान ॥ तेहिक्षण कीन्होंभीष्म महँ दिव्यभाव आवेश। भई प्रकम्पित मेदिनीघनबरषे तेहिदेश ॥ सोरठा॥ रहि मूर्च्छित क्षणएक फिरि सचेतह्वै भीष्मतहँ। ज्ञाता शास्त्र बिबेक सुने सुरनके बचन ये ॥ दक्षिणायण सुभानुशुचि न कालतन तजनको। यहसुनि भीष्म सुजान कहोबकछु दिनतजब तन ॥ रोला ॥ जानिभीषम को पतन सुरसरितकरि अनुमान। तहांपठये ऋषिनकहँ तेचले हंस समान ॥ हंसरूपी आयते ऋषिदेखि भीष्महिं तत्र। करि प्रदक्षिण चलतऐसे कहनलागे तत्र ॥ दक्षिणायन भानुहैं यहि समयमाहिं सुजान। भीष्मकैसे देहतजिहैं बीरबर बलवान ॥ भीष्म आशय समुझि तिनको कहतभे इमितात। दक्षिणायन सूर्य्य तौलगि तजब नहिं हम गात ॥ पिता हमको दयोबर स्वच्छन्द मरण अबाध। समय लहि तन तजबकरि तेहि बचनको अवराध ॥ भीष्मको लखि पतनपांडव सैनसह

हरषाय। कियो पूरित शंखधुनि जयदुन्दुभी बजवाय ॥ भये अतिशय व्यथितसब तोतनय सैनसमेत। रहेठगि नहिं सकेकरि करतव्य कछु जयहेत ॥ बचन यहसुनि कहतभे धृतराष्ट्र नृपति सशोक। तबहिं हम यहगुणो अब हतिगयो बलव्रत ओक ॥ जबहिं भीषमकहो युवति शिखंडिसों न कदापि। लरबहम तजिहियो अतिधृत बिशद व्रतहि उथापि ॥ भीष्म को सुनिमरण मोहिय बज्रसदृश कठोर। नहीं दरकत हाय यासों कौनकष्ट अथोर ॥ रामसों लरि बहुत दिन नहिं गयो हति जो बीर। ताहि मार्‌यो द्रुपदसुत हनि होति अतिशय पीर ॥ भीष्मजब शर तल्पपर परि लसे तदुपरि जौन। भयो सहित बिधान अबइत कहो संजय तौन ॥ भूपके ये बचन सुनिकै कहे संजय बैन। गिरत भीष्महिं देखि इतको भयो चूरण चैन ॥ उतें पूरो मोदसों थरलसोतेहिक्षणतात। कुमुद कंजन सहित शरजिमि होतलहि परभात ॥ धाय कौरव सकल पांडव आय भीष्महिं घेरि। तजत चप जल भयेठाढ़े शोकसों मनमेरि॥ सिद्ध चारण ऋषय मानव गहेशोच महान। करी अस्तुति भीष्मकीकरि कर्म व्रत गुणगान ॥ भीम आदिक भटनसों कर्णादि भटमन मोरि। धारि तीक्षण लाज तहँ नहिं सके इक्षण जोरि। पाय शासन भूपको तेहि समय सुरथ चलाय। गयो दुश्शासन रहेजहँ द्रोण लरत सचाय ॥ द्रोण सों भो कहत निपतन भीष्मको सुनि ताहि। शोच क्षणक अचेत रहि फिरि चेति इतउत चाहि ॥ युद्ध करिबो बारि भटनसमेत आयुध त्यागि। द्रोण आये भीष्मके ढिग महत दुखसों पागि ॥ दूत सबथर पठै पांडव कियो युद्ध निवृत्त। सकल पुरुष प्रधान आयेतहां शोच प्रवृत्त ॥ प्रजापति केनिकट सुरगण सदृश भट समुदाय। लसे शरशय्यास्थ योगी भीष्मके ढिगआय ॥ देखि प्रांजलि खरे कुरु पाण्डवन कहँ बिलखात। भीष्मबूझो कुशल सबसों बचन कहि अवदात ॥ कहो फिरि मम शीश अधको लंबिअति दुखदेत। देहुशुचि उपधानतिहि अवलम्ब ताके हेत ॥ सुनत तोसुत दीर्घमृदु उपधान शुचि मँगवाय। देनचाहो भीष्म तेहि लखि कहत भे अनखाय ॥ सुनो ऐसी बीरशय्या को न यह उपधान। भाषि इमितहँ देखि पार्थहि कहो कहि अनुमान ॥ देहु तुम उपधानपारथ उचित जैसो अत्र। बचन यहसुनि पार्थ शरधनु पाणिमें करि तत्र ॥

गरो गद गद करें जलसों पूरि आयत नैन। देहुआज्ञा करों सोंमैं कहे ऐसे बैन॥ बहुरि आज्ञा भीष्मकी लै मंत्रि तीनि सुबान। योजि धनुमें त्यागि दीन्हों बिरचि शुचि उपधान॥ तूलके सम पायकै उपधान भीषम मोदि। कहे बहुत प्रशंसि पार्थहि निरखिकै सब कोदि॥ जोन देते पार्थ तुम उपधान शय्यारूप। पावते तौशापहमसों हरण सत्व अनूप॥ नृपन सों फिरिकहे हम इमि रहब जौलगि सूर। जाइहैं नहिं दिशाउत्तर शुभद आनँदपूर॥ इतेमेंबहु भिषज आये शल्य उधरण हार। लिये निज हथियार औषध जासु सगुण उदार॥ तिन्हैं लखि तो तनय नृप सों कहेभीषम बैन। इन्हैं धनदै मुदित करिकैबिदा करहु सचैन॥ पाइ ऐसी दशा अबकछु भिषजको नहिं काम। पालिक्षात्र सुधर्म अब हम लही गति अभिराम॥ खोदि परिखा चहूंदिश इत गात रक्षक राखि। जाहु निज निज सिबिर प्रति सब मोह मनको नाखि॥ शरन सह मम दग्ध करियो भूपसुनि यह बात। किये धनदै बिदा सिगरे भिषज गण को तात॥ आदि परिखायतन सब करवाय नृपति अखर्ब। तीनितीनि प्रदक्षिणा करि नौमि बिधिवत सर्ब॥ भीष्म की सुमहानता को करत बर्णन मोहिं। जाय निज निज सबिर प्रतिकरतब्य कीन्हेंजोहि॥भीष्म भटके पतन सोंअति मुदित पाण्डव यत्र। रहे केशव कहो तिनसोंजाय निशिमें तत्र॥ सुरासुरहू सों अजेयसुबीर योधा पर्म। भीष्म जूझेआजु सो तो तेजसों ह धर्म॥ कहेतब नृपधर्म प्रभुतो कृपासों सब होत। तरत भवनिधि जपत जेतो नाम करण उदोत॥ जगत उतपत्ति करणपालन हार कृत संहार। होति ममहित चरत महिहि कहा यह उपचार॥ सत्यजो तुम कहे ऐसो भाषि प्रभु सुखदाय। जातभे निज सिविर कहँ सबभांति सुख सरसाय॥ रजनि बीते उभय नृपअरु सकल पुरुष प्रधान। गयेजहँ शर तल्पपैहे भीष्म धारे ध्यान॥ नारि नरजन नगरसों तहँ आय लहि दुख पूर। भयेबरषत भीष्मपहँ स्त्रक लाज चन्दन चूर॥ शस्त्र कवच बिहीन नृपअरु भटन को समुदाय। बन्दि भीष्महि भयबैठत महत दुखसों छाय॥ भीष्म तब शरघात बेदन ग्रहण करि चष खोलि। देहुपानी पियन को इमिकहे धीरे बोलि॥ बारि शीतल भोज्य अनुपम तनय तो मँगवाय। देनचाहे भीष्म तबइमि कहतभे अनखाय॥

बाणशय्या प्राप्त हमहिं न उचित मानुष भोग। देन चाहत ल्याय जो बिनुलखे उचित प्रयोग॥ भाषि इमितहँकहो भीषम कहां अर्जुन ख्यात। पार्थ उठि करजोरि बोले देहुआज्ञा तात॥ भीष्म बोले पार्थतो शरघात सों ममगात। तपित बेदन दुसह पूरित वदन सूखत जात॥ देहु पानी यथाबिधिसुनि पार्थ धनुष चढ़ाय। सुरथ पैचढ़ि करि प्रदक्षिण दाहिनी दिशिजाय॥ धनुष कहँ टंकारि कै परजन्य अस्त्र लगाय। तानि श्रुति लों त्यागि बेध्यो भूमिकहँ दृढ़घाय॥ प्रगटितासों भीष्मके मुख परी अमल उदार। सौरभित अति परम शीतल अमृत सम जलधार॥ पार्थ को यह अति अमानुष कर्म अद्भुत जोय। साचरज ह्वैह्वै रोमांचित त्रसे इत सबकोय॥ अमृत सम जलपान करिकै तृप्त ह्वै गांगेय। करि प्रशंसा पार्थकी इमि कहे बचन अमेय॥ पार्थ तुमसों कौन जगमें धनुर्द्धर तपधाम। नार्दसों हम सुनेतो ह्यारख्यान सर्ब ललाम॥ तेजवत में श्रेष्ठरबि जिमि बिहँगमें बिहगेश। धनुषधर में तथा होतुम श्रेष्ठ बीर बिशेश॥ रामहम कृपव्यास संजय बिदुर दोणाचार्य। कहे बहु बिधि सुन्योनहिं धृतराष्ट्र सुवन अनार्य॥ कछूदिन में तौन भटसह बन्धु नृप समुदाय। सुनहु पारथ समर महिमधि गिरीह्वै हतकाय॥ भाषिइमि दुर्योधनहिं लखि दुखित बिबरण रूप। कहेतासों भीष्म त्यागो क्रोध हे कुरुभूप॥ करत पारथ धनुष बिधिमें जौन अद्भुत कर्म। तासुकर्ता कौन जगमें गहे क्षात्र सुधर्म॥ जिते दिव्य सुअस्त्रहैं तिन सर्बको ज्ञातार। एक पारथ जगतमें कै कृष्ण जग करतार॥ सर्बबिधि सर्बज्ञ पारथ सर्बथा जगजैन। सुरासुर गंधर्बहू सों जेय कबहूं हैन॥ सुनो ताते तात तासों मिलौ तजि सब बैर। निरखि इनको कर्मत्यागो गर्ब गुरता घैर॥ बन्धुनृप हतशेष सब नहिं जाहिजौलगि मारि। करौ तौलगि पांडवन सों मेलनीति बिचारि॥ हाइ अबमम मरणलों यहि युद्ध बरको अन्त। बचे अबतक बचेजेते सदल सब क्षितिकन्त॥ हमें यह मत रुचत है क ल्याण को करतार। औशि करिबे योगहै गुणिशुद्ध शुभ उपचार॥ देहु आधोराज्य उनको इन्द्रप्रस्थ सुधाम। हस्तिनाएर रहौ तुम सब पूर्बवत ह्वै आम॥ भाषिऐसे बचन भीषमशल्य प्रतपित गात। मूंदिचष फिरि रहे चुपह्वै योग बिधिगहि तात॥ परम सुखद सनीति ऐसे भीष्म के

ये बैन। रुचे नहिं तोसुतहि जिमि म्रियमान पथ्य गहैन ॥ दिव्य योगी भीष्मकहँ तब निरखि ध्यानावस्थ। गयेसब दुहुंओर निज निज सिबिर स्वस्थ अस्वस्थ ॥ दोहा ॥ तब भीषम को चिन्तिकै अनुपम दिव्य प्रभाव। कछु शंकित ह्वैकै तहां आयो करण अचाव ॥ भीषम के ढिगभो खरो महत मोहसों मोहिं । चारुजन्न शय्यास्थप्रभु कार्त्तिकेय समजोहि ॥ महाबाहु हे भीष्महे हे योगीकुरुश्रेष्ठ। प्रभु निरखौ राधेयमैं कीजैकृपा यथेष्ट ॥ यहसुनि भीषम नेहयुत एक सुपाणि पसारि। कर्णहि अंकल-गाइकै कही रक्षकन टारि ॥ सोरठा ॥ बत्सन तुम राधेय नार्द व्यास-यह है कहे। सूर्य सुवन कौन्तेय तुम सुवनन सुत सूतके ॥ जयकरी ॥ हो तुम दान शील मतिमान । क्षात्रधर्म महँ प्रौढ़ महान ॥ अर्जुन सदृश धनुर्द्धर बीर। सर्व अस्त्र ज्ञाता बरबीर ॥ काशीपुर में नृप समुदाय। तुम जीते धनुबिधि शरसाय ॥ जरासंध अतिशय बलवान । भयो न रणमें तुम्हैं समान ॥ होतुम सर्बभांति गुणवान। इतो दोष हो करताम्लान ॥ कौरव अरु पाण्डवमें बीच। तुम जातन हे गहिमतनीच ॥ मंत्रकरत हे बर्द्धनबैर। कहतरहे कटुबचन सधैर ॥ सोयह सूतसंगको दोष। हो तो मधि अवगुणको कोष ॥ तातें हम निदरतहैं तोहि। कुलभेदन कृत अन-रथजोहि ॥ अबतुम जो इत आये हाल। तातें हम प्रसन्न यहिकाल ॥ हम अबकहैं सुनो तुमतौन। करौ काज कुलरक्षक जौन ॥ पाण्डव अरु तुम सोदरभाय। मिलोप्रेमसों बैरबिहाय ॥ तुम्हरे मिलतमिलैंगे सर्ब। मिटिहिनाशको कारणखर्ब ॥ ममबध प्रभृत भारतीयुद्ध। राखि प्रसिद्ध मिलो ह्वैशुद्ध ॥ यहसुनि कह्यो कर्ण प्रणवान। तात कहे तुम सत्य न आन ॥ दृढ़व्रती योगी मतिमान। कस न कहौं अस सहित बिधान ॥ दोहा ॥ पर यह सुनिये त्याग मम कुन्ती कीन्होतात। बर्द्धितकीन्हो सूत नृप दियो मोद अवदात ॥ यथा पाण्डवनके परम हितकेशव बिख्यात। तिमि हम हित कौरवनकेहै प्रसिद्ध यहबात ॥ मालिखरा ॥ यह बातपालन हेत हमकहँ औशि करिबो उचितहै। धन पुत्र तन तिय त्यागिसों कुरु-नाथकहँ जो रुचितहै ॥ प्रभुहोत जो भवितव्यसो नहिं टरतटारे होतहै। सबचरितसो अनुक्रमण गहि भवितव्य करजो सोतहै ॥ हमगुणत पांडव सर्ब सबसों समरमध्य अजेयहै। है एकहमसों जेय जगमें यदपि प्रबल

अमेयहै॥ अब बैर करब निवृत्त नहिं ममसुबश हमसति कहतहैं। ध्रुव भयो तिनको चहै फल जे होत असगुण महतहैं॥ हमकरब संगर पार्थ सों तुम देहुशासन मोदिकै। तो कृपाते जयलहब अरिदल मध्यप्रबिशि बिनोदिकै॥ कटुबचन बहु अज्ञानबश हम कहे तुमकहँ तातजे। तेक्षमहु सब पितु क्षमत जिमि शिशु कहतअनुचित बातजे॥ सुनि कहे भीषम कर्णसों इमिसत्य जो यह तुमकहे। नहिं टरति भावी लरौ ताते स्वर्ग हित प्रणकरि अहे॥ तजिशङ्क सम्मुख समरमें लरि मरबसो गतिपरम है। लरिकरौ बिक्रमयथा रुचियह क्षत्रियनको धर्महै॥ दोहा॥ इमिकहि भीषममूंदि चष मे फिरि ध्यानावस्थ। नौमि कर्णरथ चढ़िगये जहँ कुरु-नाथ अस्वस्थ॥ भीष्मपर्वमेंनृपभयो यहिबिधिदशदिन युद्ध। पढ़िहिसु-निहि जो याहिसो लहिहि चारुपद शुद्ध॥ सोरठा॥ मूको बांचै बेद पंगु तरै गिरि ध्यायजेहि। अगमजासु शुचिमेद तासु कृपालहि इमि कहे॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्वाम्नाभिगा मिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेनकविना विरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिदशमदिन युद्धवर्णनोनामद्वाचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४२॥

भीष्मपर्व समाप्तः॥

श्रीगणेशायनमः॥

महाभारतदर्पणे॥

द्रोणपर्वदर्पणः॥

दोहा ॥नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नौमि। बन्दि गिराव्या-सहि रचत भारतभाषा सौमि॥ जयकरी॥ रामचन्द्र के पद जलजात। मधि वसाय मन अलिअवदात॥ पाय अमल महिमा मकरन्द। करत गान भारत शुभछन्द॥ जोश्रुति परशत सबसुखदान। करनहार सर्बज्ञ सुजान॥ प्रभु सर्बज्ञ सर्बकृत जौन। सबथर सोईदूजो कौन॥ जोईछित जा सोईहोत। औरन करताकछू उदोत॥ यह बिचारि तजिसंशयसर्बा। बिरचत भाषा भारत पर्ब॥ ताकी ईहाकी अनुसार। लहब मार्त अरणव कोपार॥ श्रीश्री सीतापति श्रीराम। सिद्ध करत निजजनको काम॥ दोहा॥ पारथ के स्वारथ भये सारथि परम अनूप। तेसारथ देहैं बिरचि भारत भाषा रूप॥ सोरठा॥ बन्दौं कपिवर वीर राम परमपद पारषद। मंगल मूरति धीरपारथ स्वस्थ ध्वजस्थ वर॥ सुमिरि उच्छलनि अक्ष उदधि उलंघन समयकी। भारतसमुद प्रतक्ष भाषाकरि चाहत तर्‌यो॥ जनमेजयउवाच॥ जब प्रभु परमामधि मनमोये। भीषम शरशय्या परसो-ये॥ किये कहातब सहित समाजा। निज निज सिविर जाइ सबराजा॥ बैशम्पायन मुनि यह सुनिकै। कहतभये भूपतिसों गुणिकै॥ तिहिदिन संजय दलमधि आई। संध्याभये भूपपहँ जाई॥ करि प्रणाम शोकाकुल भूपहि। बैठे ध्याय श्यामघन रूपहि॥ तहँ उसाश लै शोक महासों। भूपति कहत भये इमि तासों॥ तातभयो तदनन्तर जैसो। पृथक्‌पृथक् अब कहु सबतैसो॥ सुनि संजय बोलेतजि अनदैं। भूपति सब सुनिये सो मनदै॥ फिरिलरिबे कहँ अमरष मारे। उभयभूमि पति शयन सबा-

रे ॥ घने निशान गहगहे बाजे । बने निशान बहबहे राजे ॥ नृपतेहि समय तावकी सेना । भई बिना भीषम जगजेना ॥ जिमि अजयुद्ध वृकन सों घेरित । रक्षक बिना होइ भयभरित ॥ बलि बिनु भयो असुरदल जैसो । भयोभीष्म बिनुतोदल तैसो ॥ तहँइतके सबभट गुणि मनमें । करण करण कीन्हें तेहिक्षणमें ॥ भीषम सदृश बिदित धनुधारी । करण बीर कर्कस रणचारी ॥ परशुराम सों धनुबिधि शीखो । सब धनु धर के पहिले लीखो ॥ दोहा ॥ महीरथी मणिकरण तेहि कहे अर्द्धरथियत्र । भीषम सो सुनिकै करण कियो प्रतिज्ञा तत्र ॥ जौलगि गिरि पाण्डवन सों भीषम करिहैं युद्ध । हम तबलगि नहिंधनुगहब पालि प्रतिज्ञाशुद्ध ॥ भीष्म जीतिहैं पाण्डवन कहँ तोभूति बिहाय । हम भूपतिसों ह्वै बिदा बसब बिपिन मधि जाय ॥ पाण्डव बधिहैंभीष्मकहँ जोतौ लरि हमएक । मारि पाण्डवन भूपकहँ देबराज्य गहि टेक ॥ करि ऐसो प्रण दश दिवस लरोनहीं रणधीर । अब लरिकै यहि सैनको रक्षणकरो सुबीर ॥ रोला ॥ समुझि बिक्रम पार्थको गहि भूरिभीति अपार । भीष्म भटके गिरे नृप सब भये बिनु त्रातार ॥ भाषिऐसे बोलि करणहि कहेनृपति समस्त । भीष्म पारथ के सदृशतुम करणबीर प्रसस्त ॥ सिन्धु बिक्रम पार्थ को तेहिमध्य परिहमसर्ब । होनचाहत मगन रक्षण करोतुम यहिपर्ब ॥ नृपनकी यहदशा सुनि धृतराष्ट्र नृपति अचैन । कहो यहसुनि करणतिहि थर कहे कैसेबैन ॥ कहो संजय नृपणके बे बचन सुनिरणधीर । करण धीर अभीतवत इमिकह्यो बचन गँभीर ॥ बुद्धि बिक्रम शक्ति स्मृति धृति धर्म तेज असेग । दिव्य अस्त्रनकी कुशलता आदि सुगुण अनेग ॥ जासु मधि सो भीष्म रणमें गयोबधिजौं तात । तौन इतभट एकको अब बाचिधो लखिजात ॥ ब्रतीदेव समान कुरुकुल वृद्ध भीषमबीर । गिरो रणमें समुझियह नहिँ गहत मोमनधीर ॥ भाषि ऐसोकरण लागेरुदन करण सक्षोह । तदनु नृपसब उच्चस्वरसों किये रुदन समोह ॥ बहुरि धीरजधारि ऐसो कह्यो करण सुजान । सत्यजगत अनित्य जोगिरि परो भीष्म अमान ॥ बध्यो भीष्महि पार्थ तासों भिरैगो भट कौन । सहै किमि तोंह वृक्षउलटै गिरिनकहँ ज्यों पौन ॥ रहे जिमि यहि दलहि रक्षत भीष्म उनसों जूटि । तथाअब हम करब रक्षण लरब उनसों ऊटि ॥

शरणसों बधि पाण्डवन कहँ देउंगो यमलोक। बधिहि हमकहँ समरमें कै पार्थ बिक्रमओक ॥ सर्व पाण्डव कृष्ण सात्विकि वृहत बिक्रमभौन। जूटि तिनसों युद्धकरिकै बचिहि दूजोकौन ॥ तपहि बांधत वृहत तप अरु बलहि बल नहिंआन। जीति उनसो लहब हम मनहोत उत्सव-वान ॥ मित्रसो जो करै शङ्कट समय में उपकार। बूझिसो हमहोब उ-त्रिण भूपसों यहिबार ॥ भाषि यहिबिधि करण बीर सुबीर रससोंछाय। बस्त्र भूषणकवच नूतन गहत भे मँगवाय ॥ भयो धारत अस्त्र धनुष तुणीर आदि अशेष। चपल अश्वन लायरथमें लस्यो अनुपम भेष ॥ पूर्ण दधि सों पात्र लखिकै दुन्दुभी बजवाय। कहतभो इमिजोरि युगकर भीष्म के ढिगजाय ॥ करण हमहैं देवब्रतकरि कृपाहेरो मोहि। कहौ मंगल प्रद बचन कल्याण कारणजोहि ॥ कोप अर्जुन करणमंत्री ब्यूहबित-रनहार। भूपके अबकौन तुमसों अरिण को हन्तार ॥ मृगन को क्षयकरत जिमि मृगराज तिमि अरितास। तुम्हैं बिनु सब कौरवनको कियो चाहत नास ॥ बज्रसदृश अमोघ धनु गाण्डीव को शरपात। समुझि सङ्कित कौरवीदल तुम्हैं बिनुहे तात ॥ पार्थ के रथ नेमिकी धुनि धनुष की टंकार। शरनकीझर सहैऐसो और कौन उदार ॥ लहेजय भृगुराम सों तुमताहि जीत्यो जौन। पार्थतासों सकैलरि असबीर दूजोकौन ॥ कृपा लहिकै आपुकी हमचहत जीतन ताहि। देहुशासन सुजय हितचित चाव युतकरि चाहि ॥ कर्णके सुनिवचन भीषम देशकाल बिचारि। करिप्रशंसा तासुतासों कहेसरुचि निहारि ॥ सर्व दिशिके नृपन कहँ तुमजीति करि रणघोर। दयेकरि कुरुनाथ केवसमारि सुभट अघोर। बंधुसम बन्धीन सोहे मित्र जगमें श्रेष्ठ। कहत हैं हम मुदितह्वै तुमकरो युद्धयथेष्ठ ॥ यथाकौर व पौत्रमम तुम तथाहौ प्रिय मोहि। होइहित कुरुनाथको तिमि करोबिक्रम जोहि ॥ भीष्मके ये बचन सुनिकै नौमिकण सचाय। गयो योधन सहित जेहियर रहेकुरुकुलराय ॥ देखि कर्णहि युद्धहितसन्नद्ध तो सुतसर्व। सहित योधनभये मोदित बहुरि गहिबरगर्व ॥ कह्यो दुर्योधन नृपति इमि कर्णसों सबिचार। लरैंकेहि बिधिशत्रुसों अब कहौसो उप-चार ॥ कर्णयह सुनिकह्यो नृप तुम सकल भांति सुजान। आपु कहिये समुझि अब करतव्य जौन बिधान ॥ कर्णके ये बचन सुनिकै कह्यो कुरु

कुलभूप। सैनपति ह्वैभीष्म दशदिनकियोयुद्ध अनूप॥ परोसो शरतल्य परअब सैनपति करिकहि। लरैंताहि बताय दीजै तेजबल बुधि चाहि॥ बिना सेनापति सयन जिमि बिना करिया नाव। सकति नहिं करतव्य करिबिन सूतरथ जेहिभाव॥ भूपकेये बचन सुनिकै कह्यो बचन सुबीर। सैनपति केयोग्यहैं इतसकल नृप रणधीर॥ बुद्धि बिक्रम धैर्य्ययुत हैं सकल सब कुलवान। रुचै ता कहँकरो सेनाधिपति सहित बिधान॥ मान्यसब कहँ वृद्धगुरुहै द्रोणधीर धुरीन। रुचैतौ तेहिकरो सेनाधिपति यहमतपीन॥ और ह्वैहै सैनपति तोबढ़िहि इर्षादोष। द्रोणह्वैहै सैनपतितौ सबनके सन्तोष॥ मंत्रयह सिद्धांत करिकै भूपनृपन समेत। करि प्रशंसा द्रोणसों इमिकह्यो निजजय हेत। तातह्वै सेनाधिपतितुम करहु रक्षण सैन। पायतुम कहँ अधिपह्वैहै सैनमम जगजैन॥ भूप केय बचन सुनिकै कह्यो द्रोणाचार्य्य। होब हम सेनाधिपतितो सुयश हितहे आर्य्य॥ सर्बबिद्या शस्त्रबिधि अभ्यसित सब व्यवसाव। करब हमभिरि पाण्डवन सोंगहे अनुपमभाव॥ मारि सुभटन पाण्डवन कहँदेउंगो करि मौन। धृष्टद्युम्न नबध्य हमसों प्रगट कारणतौन॥ बचनयह सुनिमुदित ह्वैसह नृपन सहित बिबेक। भूपद्रोणहि कियो सेनाधिपतिको अभिषेक॥ बजेअगनित बाद्य भेउत्साहयुत सबबीर। कढ़ोसबके बदन सोंइतजयति शब्दगँभीर॥ सैनपति ह्वैद्रोण बिरच्यो सकटव्यूह अभेद। राखि सब थरसुभट ज्ञाता शस्त्रसंगर भेद। भूप सैन्यव कलिंग को अरु भटबिकर्ण ससैन। अरुजयद्रथ रहे दक्षिणओर दायकचैन॥ सहित हयदलशकुनि सब गन्धारभटन समेत। रहो तिनको पक्ष रक्ष सचाव चपल सचेत॥ चित्रसेन ससैन कृप कृतवर्मकृत रणउद्ध। भट दुशासन अरु बिबिंशित लयेयोधा शुद्ध॥ बामदिशि ह्वेरहे तिनके पक्षरक्षक बीर। यवन सकाम्बोज गणसह नृपसुदक्षिण धीर॥ शिवयमद्र त्रिगर्त मद्रुअव्रष्ट आदिकसर्ब। भटनसह तोतनयभूपति गहे गुरुता गर्ब॥ सहित द्रोणाचार्य्य कर्णहि कियेआगे भूप। पृष्ठरक्षक लसोमधिमें समर मखको जूप॥ सकटव्यूह अभेद्य इतको धर्मभूप निहारि। रचेनिज दल मध्य अनुपम क्रौंच व्यूह बिचारि॥ व्यूह मुखमेंरहो अर्जुन बिदित धीरधुरीन। रहेसब थर पूर्ववत सबसुभट योधापीन॥ बिरचि यहि बिधि व्यूह अगनित दुन्दुभी

बजवाय। युद्धहित बढ़िचले दोऊभूप सदल सचाय॥ घोर असगुणहोत भेतेहि समय सुनियेतात। तुरँगगज नर नृपन केजेनाश करण विख्यात॥ घोर संगरकियो तेहिदिन सुभट सिगरे जूटि। द्रोण पारो प्रलय परदल मध्यजय यशऊटि॥ पांचदिन अतियुद्ध करिकै भटनको शिरताज। द्रोण हतिअक्षोहिणी सों अधिक सैनसमाज॥ धृष्टद्युम्न सुधीरसों लहि नाश तनतजि जाय। भयो निवसत जहां बिलमत शूर शुचि पदपाय॥ परम आनँद लहे पाण्डव पायजय अभिराम। सैन सह तासुवन सबभे दुसह दुख लहि छाम॥ मढ़त हाहाकार धुनितरि बिसत बेलाधीर। भरत भो तोसैन महिं मधि शोकसिंधु गँभीर॥ दोहा॥ द्रोणाचारयको मरणसुनि धृतराष्ट्र सुभूप। कुलिशपात सोंहत सदृश भेभयरत गतरूप॥ जकिअ-बोल रहि घरिकलों फिरिलैऊबि उसाश। संजयसों बूझतभये तजि निज जयकी आश॥ सिगरे दिव्यसु अस्त्रको शीक्षक द्रोणाचार्य्य। धृष्टद्युम्न ताको बध्यो करिकै सोरणकार्य्य॥ भयो बिरथ कैबिधुनकै कैभो मोहित धीर। जातेरणमें बधिगयो परशुराम समधीर॥ त्रयकरा॥ मरण द्रोणको-सुनिहेतात। अबमोसों कछुकहान जात॥ चाहत दैवहोत सोअर्थ। सिगरो पुरुष पराक्रम व्यर्थ॥ कुलिसहुते ममहृदय कठोर। फटत न सुनियेसो दुखघोर॥ द्रोणहि रक्षतहे तेहिकाल। केके इतके सुभट बिशाल॥ केके सुभट उतैसों ऊटि। लरे द्रोण सों सम्मुख जूटि॥ लहि पाण्डव भटको शरजाल। केइत कियेस्वर्ग पथचाल॥ केके भगे द्रोणकहँ त्यागि। केके लरे बीररसपागि॥ किहि किहि बधे द्रोण वहि ओर। किन्हें भगायो करिशर जोर॥ कैसोसंगर भो तेहिठौर। जूझो जहां सुभटशिर मौर॥ रणमें सुभट द्रोण कोपात। कबहूंरहो नजानो जात॥ तौन अनर्थ भयो यहहाय। अब मोसों कछुकहो न जाय॥ करिप्रलाप बहिबिधि बहुबार। गिरोभूप लहि-शोक अपार॥ भूपहि मुरछित लखिलहि त्रास। दौरि उठाये दासी दास॥ अतिशीतल जलसों मुखधोय। अँगमें अतर गुलाब समोय॥ गतमुरछा लखिकै सुखपाय। सिंहासन परधरे उठाय॥ शोकाकुल ह्वै ब्याकुल फेरि। बूझतभे नृपदुखहि बखेरि॥ दोहा॥ एकधनुर्द्धर बिदित जो सबगजकोजेतार। धृष्टद्युम्न तेहि किमि बध्योकहो तौन उपचार॥ तृणबन दाहत अगिनि जिमि तिमिमरदत परसैन। द्रोणहि बारिद सदृश केहि कियोशमित

गहिचैन बरणि बरणि गुण द्रेणकेअरु बिक्रम व्यवहार । बार बार बूझो नृपति भोजिमि युद्धबिहार ॥ सोरठा ॥ मोहित भये अचैन नृपलहि दशा प्रलापकी । भरोशोक सोंऐन बूझेकहे अनेक बिधि ॥ जासु सहाई बिष्णु उतपति पालन नाशकृत।सकल भांतिसों जिष्णु कहि प्रभावप्रभु केकहे ॥ दोहा ॥ ब्रजमथुरा द्वारावती सोजे अद्भुतकर्म । कियेकृष्ण सोसकल कहि कहे भूपगुणि मर्म ॥ चौपाई ॥ जोजो जोकृत चाहै मनमें । प्रगटहोइ सो सोसबक्षणमें ॥ सो सारथी धनंजय सुरथी । जीतै ताहि कौन जयअरथी ॥ येयुग नरनारायण जाने । दुर्योधन तिनसों रणठाने ॥ किमि कल्याण होइ ममसुतको । कसन होइ हित ईछित उतको ॥ भयो काल बशनृप दुर्योधन । करत न प्रभु महिमाकोशोधन ॥ जग जेतार अबध्यसु आरय । बिदितभीष्म अरु द्रोणाचारय ॥ तेजूझेलखिअजौ नचेतत । नहिं हठतजि कुलरक्षण हेतत ॥ जौ बिभूति तवलखि येमाखे । पाण्डव तासु द्विगुण अभिलाखे ॥ होइहि सिद्धि अवशिसोकारय । जोजूझेये युगभट आरय ॥ धन्य युधिष्ठिर जाहित कारण । इमि बिचरत जगभार निवारण ॥ मरण द्रोण अरु भीषम केरो । संजयसहि न सकत मनमेरो ॥ कढ़त न प्राण गहत निठुराई । अब मोसों कछुकहो न जाई ॥ होत चहत है धरमीजोई । चहत अधरमी सो नहिं होइ ॥ ममसुतके जय हेतुअरूझो । कैसो बिक्रम करिद्विज जूझो ॥ किमि उतके योधा भट नायक । चले द्रोणपहँ बरषत शायक ॥ किमिशर बरषत इतके योधा । बढ़ि तिनको कीन्होंअवरोधा ॥ दोहा ॥ कहो पांचदिन तहँ भयो केहिप्राकार को युद्ध । लरे मरे किमि किमिचरे केके योधाउद्ध ॥ वृद्ध भूपके येबचन सुनि संजयमतिमान । कहे सुनौ मनदै कहत हम सब सहित बिधान ॥ सोरठा ॥ लहि अभिषेक अमंद सेना अधिपतिको सबिधि । पूरे परम अनंद ह्वै प्रसन्न नृप सों कह्यो ॥ जयकरी ॥ भीषम के पीछे हितजोहि । तुम कीन्होंसेनापति मोहि ॥ ताते हम प्रसन्न यहिकाल । मांगौ ईछित सुबर रसाल ॥ सुनि भूपति हरषे जयहेत । दुःशासन अरु करण समेत ॥ करिकै मंत्र कहे हरषाय । जीवत पकरि धर्मकहँ ल्याय ॥ देहु मोहिं मागौं बरयेहु । यह सुनिबोले द्रोण सनेहु ॥ धन्य युधिष्ठिर नृप तुमजासु । चाहे गृहण न बधकुल नासु ॥ निरखि धर्मको धर्मअनूप । अहितौ चरत सुहित अ-

नुरूप ॥ अथवा पाय सुजय गहिचैन । रक्षणहेतु सुहित कुलसैन ॥ आधोराज्य देन अनुमानि । माँगे तुमयह बरनय जानि ॥ द्रोणाचारय के ये बैन । सुनि दुर्योधन भूपसचैन ॥ सके छपाय न हियकी बात । कहे द्रोणसों गुणि अवदात ॥ कपट न छपत छपाये तात । आपुहि प्रगटि होत बिख्यात ॥ कह्योभूप सुनिये यहनीति । धर्महि मारि न पाइबजीति॥ नृपति युधिष्ठिर कोबध देखि । सबकहँ बधी पार्थभटतेखि ॥ सब पाण्डव कहंमारै जौन । ऐसोबीरसुरासुरकौन ॥ बचिहि पांचमेंजोभटएकानाशिहि सबकहँ सोगहि टेक॥ दोहा॥ताते यह मत जयदहैधर्मनृपति गहिल्याय । खेलिद्यूत फिरिजीतिकै बनकहँदेहु पठाय ॥ सत्य प्रतिज्ञाधर्म जब बसिहैं बनमें जाय । भीमआदिसब तासु सँगजैहैं तजिव्यवसाय ॥ करि निबन्ध बहुदिवसको रचि जूवाजयपाय । होब बहुत दिनकहँ सुचित यह ममत सुखदाय ॥ सोरठा ॥ कपटभरे दुखदाननृपके ऐसे बचनसुनि । द्विजबर करि अनुमानबोले बरबाधक बचन ॥ करिअद्भुत रणरंगतबहम भूपहि सकब गहि । जोरहि नृपकेसंगलरिनहिं पाहैपार्थभट ॥ चौपाई ॥ रणमेंपाहत पारथ जाही । पकरि नसकै इन्द्र यमताही ॥ भूपसुबीरपार्थयुतजबलौं। रबि सम लखिबो योगन तबलौं ॥ मम सुशिष्य अरुतरुणउजागर । धर्मशील बिक्रमको सागर ॥ दिव्य अस्त्र देवनसों लहिकै । हमसों अधिक भयो ब्रत गहिकै ॥ तापै केशव तासु सहाई । ताढिग धर्महि सकब न पाई ॥ ताते तुम सब सम्मत करिकै । रचिउपचार चावसों चरिकै ॥ पार्थहिकी न्हेंउ नृपसों न्यारे । नृपहि देव हमहाथ तुम्हारे ॥ यह सुनितो सुतअति हरषाने । धर्मभूप कहँ निजकर जाने ॥ भयो द्रोणसों जो सम्भाषन । तेहिको दृढ़ करिबे हित शासन ॥ सबदलमें बजवाइ नगारे । सब सुभटन के श्रुतिमधि डारे ॥ इतके सबयोधासोसुनिकै । हरषितभे सहजहि जय गुणिकै ॥ सुनि यह सब वृत्तान्त सोहाये । चारधर्म कहँ जायसुनाये ॥ सुनियह वाणी निज चारणकी । नृप गुणि बिधिसो बिधि टारन की ॥ भट बन्धुन कहँ निकट बोलाये । सबसों यह वृत्तान्त सुनाये ॥ कह्यो धनंजय सो तुमतैसे । रहेहुन लहै मोहिं द्विजजैसे ॥ द्रोणाचारय ममहित कारण । कीन्हें यह अन्तर बरबारण ॥ दोहा ॥ ताते तुम रक्षत रहेहु मोहिं सदासब ठौर । जाते नहिं ईक्षित लहै दुर्योधन यहिडौर ॥

भूपति केये बचनसुनि पार्थ कहे भवितव्य। त्याग आपुको द्रोणको बनन हमें करतव्य॥ मम जीवत कुरुनाथ को सिद्ध न यह अनुमान। तुम्हैं गहनको जो लहै शक्रहुसों बरदान॥ सोरठा॥ अर्जुन केय बैन सुनि पाण्डवनृप चैनलहि। उमँगि चलाईसैन बजवावत दुन्दुभिघने॥ चौपाई॥ दुंदुभि शंख आदिसब बाजे। अगिणित दुहूं ओरसों गाजे॥ भरो बीर रस सबके मनमें। लागोहोन युद्धतेहि क्षण में॥ माचत भयो युद्ध अति घोरा। पूरि रहे आयुध दुहुंओरा॥ बढ़ि बढ़ि योधा भरि भरि रिससों। डारनलगे अस्त्र दुहुंविशिसों॥ थिररहु खरो देखु बकि बकिकै। मारण लगेबाण तकि तकिकै॥ मारुबचाउ आउकहि कहिकै। झेलनलगेशक्ति गहि गहिकै॥ बरषत शर बढ़ि द्रोणाचारय। भो प्रविशत परदल मधि आरय॥ क्षणदा समजहँ तहँदुहुं दलमें। विचिरतभयोद्रोणतेहि पलमें॥ अतिशय चपल धनुषरथ करिक। लसोअनेकसदृश रणचरिकै॥ ज्वलित कृशानुचरैजिमि बनमें। तिमि बलसोपरदलमधि रणमें॥ रथीपदातीभट हयसादी। मारि असंख्य गजस्थ प्रमादी॥ वरधित कियो रुधिरकोसागर। बिशद बिक्रमीद्रोण उजागर॥ निजदलमरदत द्रोणहिदेखीसुभटन। सहित युधिष्ठिर तेखी॥ चलेद्रोण पहँबरषत सायक। सो लखिकै कौरव कुलनायक॥सुभटन सहितसराशन करषत। तिन सोंभिरत।भये शरबरषत॥ शकुनि सुभट सहदेवहि तकिकै। भिरोबीररस बरसोंछकिकै॥दोहा॥ शर क्षुरप्रसों काटिध्वजबंधि सूतको गात। माद्रीसुतके गातपै करत भयो शरपात॥ तासुसूत धनुध्वज तुरँगबन्धि शरणसों बीर। शकुनिहि मार्‌यो साठि शर माद्री सुत रणधीर॥ सोरठा॥ शकुनि बीर उद्दण्ड कूदि सुरथ सोंगहि गदा। भटसह देवप्रचण्ड केदेखत सूतहिबध्यो॥चौपाई॥ लखिसह देवबिदित रणचारी। गहि गुरुगदा त्यागिरथ भारी॥ फेरत दण्ड दण्ड केडौरणि। गहत पैतरेके सब ठौररणि॥ झपटत करत उदाबद पटिकै। दारुण दण्ड पाणिसम दटिकै॥ चाहि चटकता सोंचढ़ि अड़दै। मार्‌यो गदा गदापै धड़दै॥ छूटत जुटत छूटिकै छावन। लगे लरन लखि चख ललचावन॥ थिरि थिरि उचटि उचटि फिरि फिरि फिरि। घनेघाव घा लेधिरि घिरि घिरि॥ खरेखेलार बलीभट दोऊ। कोपित गणे न गोपित कोऊ॥ धृष्टद्युम्न भटवर सों भिरिकै। लागे लरन द्रोण तहँ थिरिकै॥

भिरो बिबिंशतिभीम प्रबलसों। धनु करषत शरबरषत बलसों॥ शायक बीस परम अनिआरे। भीम बिबिंशतिके तनमारे॥ बीर बिबिंशति हनि शरचोखे। बधेभीमके तुरँग अनोखे॥ धनु ध्वजकाटि गरब गहितोखो। तदनु वृकोदर भट अतिरोखो॥ गदापाणिह्वै कूदि झपटिकै। बधे तासु सबतुरँग दपटिकै॥ गहिअशि चर्म बिबिंशतियोधा। सुभट भीम सों भिरो सक्रोधा॥ शल्य न कुलसों भिरिकै चावन। लखो पराक्रममय सरसावन॥ धृष्ठकेतु सोंभिरि कृपआरय। कीन्हों घोरयुद्ध जयकारय॥ दोहा॥ भिरे सात्विकी सोंगरजि कृतबरमा रणधीर। घोरयुद्ध कीन्होंतहां तेदोऊ बरबीर॥ सुभट सुशरमा सभापति भिरिकीन्हों अतियुद्ध। सस-यनकरण बिराट भिरि कीन्हो सँगरउद्ध॥ जूटिद्रुपद भगदत्त नृप कलित कराल कठोर। बारि बारि शरमारि शरकोन्हों संगरघोर॥ भिरोशिख ण्डी बीरसों भूरिश्रवा अमान। शक्तिभल्ल तोमरबरशि कियो कठिनघम-सान॥ चौपाई॥ राक्षस प्रबल अलम्बुष बीरा। भिरो घटोत्कचसों रण-धीरा॥ दोऊमाया बिदरणचारी। दोऊबली बिदित भटभारी॥ गुप्तप्रगट ह्वैह्वै बहु बिधिसों। कीन्होंयुद्ध राक्षसी सिधिसों॥ लक्षण कुंवरक्रोध सोंमढ़िकै। अभिरो क्षत्रदेवसों बढ़िकै॥ नृप अनुबिन्द महारिसकीन्हों। चेकितानसों भिरिरणलीन्हों॥ लखिसौभद्रहि प्रबलबिचारी। ढूढ़ो नृप हार्दिक्य प्रचारी॥ तेहिअभिमन्यु जानि रणकरकश। कीन्हों बाणवृष्टि करि बरकश॥ पौरव वरषि बाणबर चीन्हें। तापहँ शरपंजर करिदीन्हें॥ अर्जुनको सुतरचि शरसेतू। काटेतासु क्षत्रधनु केतू॥ बहुशर हनि पौरव केतनमें। बेधेतुरँग सारथिहि क्षणमें॥ फिरिअमोघ शर योजितकरिकै। गरजो अरिबधको प्रणधरिकै॥ लखिपौरव करिलाघव करसों। काट्यो तासुधनुष युगशरसों॥ तबअभिमन्यु तौन धनुतजिके। खड्ग चर्म गहि कूदि गरजिकै॥ चंचल चरत पैतरे पयपै। गो हार्दिक्य भूप के रथपै॥ करिपदघात सूतके उरमें। दयो गिराय सुरथते तुरमें॥ असिसों काटि ध्वजामणि भूषित। गहेभूपके चिकुर अदूषित॥ दोहा॥ परो सिंह वश द्विरद सम नृपहार्दिक्यहि देखि। गहि अशि चर्म चलो गरजि नृपति जयद्रथ तेखि॥ आवत देखिजयद्रथहि तजिहार्दिक्यहि बीर। कूदिग-र्जितापै चलोअर्जुन सुतरण धीर॥ तेहिक्षण इतके भटहने तोमर पट्टिश

बाण । तिन्हैंकाटि नृपसोंभिरो भटअभिमन्यु अमान ॥ सोरठा ॥ क्रुद्धिक्रुद्ध भटउद्धजूटिछूटिजुटि छूटिजुटि। खड्गयुद्ध बिधियुद्धशुद्धबीररस गहिकरो॥ रोला ॥ ढालमें अभिमन्यु केलगि भूपकी तरवारि । टूटिआधी गिरीसोनृप सिन्धुनाथ निहारि ॥ चपलतासों तुरित षटपद कूदिपीछू जाय । बेगसों फिरिबीर आयो सुरथपै अनखाय ॥ मत्तगजहि भजाय गरजत करतचालन सुगड । लसैजिमि गजराज तृणसम गुणत करिबर झुगड ॥ करत चालन खड्गगरजत लखत लसत निशङ्क । खरोतिमि अभिमन्यु कहँलखि शल्यअरिगज पंक ॥ शक्तिडारत भयोतहँ अभिमन्यु आवत देखि । कूदि गहिकै बध्योतासों तासु सूतहि तेखि ॥ देखिकै अभिमन्यु कोयह अतुल बिक्रमभूरि । सकल पाण्डव तेप्रशंसत महामुदसों पूरि ॥ पांडवनको हरषलखि तोतनै सबदुख पाय । बाण बरषत भयेतापै गर्बसों सर साय ॥ पार्थसुत कोदेखि बिक्रम शल्यधीर धुरीन। कूदिरथसों चलोगहि कै गदाअतिशय पीन ॥ दोहा ॥ इमि शल्यहि आयत निरखि दण्डपाणि समचण्ड । कालदंडसम गदागहिसो चलोभीम उदंड ॥ आउशीघ्र भाषतखरो पार्थतनय कहँबारि। आउइतै इमिभूपसों भाषत भयोप्रचारि॥ सोसुनिकै अभिमन्यु पहँगयो न नृपरणधीर । रहु उतही रहुउतहि इमि कहि बढ़िभिरो सुबीर ॥ सोरठा ॥ दोऊखरे खेलार दोऊ बरणे बिक्रमी। दोऊ रणजेतार गदायुद्ध कीन्हों तहां ॥ चौपाई ॥ अद्भुतयुद्ध कियो तहँ दोऊ। दोऊप्रबल कहैं सबकोऊ ॥ दोऊघूमि चक्रसम झपटैं । घालैंचाव चावसों दपटैं ॥ दोऊदटि दटि दुहुंन प्रचारैं । कूदिकूदि हठिबढ़ि बढ़ि मारैं ॥ दोऊमन ममतासों माडैं। सहैंघाव नहिं धीरज छाडैं ॥ दोऊ घालैं गदा उकाढ़ैं। दोऊ गदा गदासों आढ़ैं ॥ लागैगदागदा पहँ जबहीं । कढ़ैं फुलंग दुहुनसों तबहीं ॥ दोऊलसे रजनि महंजैसे । युगतरु बर जुगुनू युत तैसे ॥ दोऊगात दुहुंनके थूरे । दोऊरुधिर धारसों पूरे ॥ दोऊ कूदि कूदि दुरिजतिसों । टूटिटूटि अभिरैं बलअतिसों ॥ दोऊगदा हनैंअतिबलसों । दोऊगात बचावैं कलसों ॥ दोऊभट रणदुन्द मचावहिं । अरदित भयेगदाके घावहिं ॥ इमिदोऊ लरि थिरि थिरिकै । मुरछिपरे महिपैगिरि गिरिकै ॥ लखि कृतबरमा तुरता करिकै। नृप शल्यहि निजरथपै धरिकै॥ पांडवगणसों शंकित मनमें । रथचलाय दुरिगो भटगणमें ॥ क्षणमें चेति

भीम रसपागो॥ बहुरि खरोह्वै गरजन लागो॥ माचो घोरयुद्ध तेहिपल में। कटे असंख्य सुभट दुहुंदलमें॥ दोहा॥ ह्वै मरदित पांडवन सों बिमुख भई ममसैन। बजवाये जय दुन्दुभी धर्मभूप जगजैन॥ सोलखिकै वृषसेन भट सुवन कर्णको बीर। मरदत भो दलपांडवी करिशर झर रणधीर॥ बधिसहसन हय गज सुभट बरधित करि यमलोक। कुपित कालसम लसत भो रणमहिमधि बलओक॥ सोरठा॥ नकुल तनयरण धीरशतानीक तासों भिरो। दोऊभट बरबीर घोरयुद्धकीन्होंतहां॥ गुरुतोमर॥ तहँकरण-को सुतकोपिकै। तिहिबाण बरषोतोपिकै॥ बरभटनकी बिधिठाठिकै॥ भो मुदित धनुध्वज काटिकै॥ सोतासु सोदर देखिकै। भिरिकरण सुत सों तेखिकै॥ भट प्रबल धनुष बिधानसों। तेहि छायदीन्हों बाणसों॥ वृषसेनकहँ शरधारमें। लखिमगन तेहि रणगारमें॥ भटद्रोण सुवनहिं आदिकै। भे भिरत तिनसों नादिकै॥ सो देखिभट वहि ओरके। बल बुद्धि सैन अथोरके॥ बढ़िभिरे इनसों हांकिकै। येभिरे उनसों दांकिकै॥ तेहि समय संगर घोरभो। थिरमारु मार्यो शोरभो॥ भीमादि भटतेहि कालमें। चरि कालसम भटजाल में॥ इत प्रलयपूर पसारिकै। बहु सुभट गज हय मारिकै॥ शरशक्ति पट्टिस छायकै। भे नदतदल बिच-लाइकै॥ निज भटन बिचलत हेरिकै। जनियुद्ध त्यागहु टेरिकै॥ दैधीर तिनकहँ फेरिकै। भट द्रोणक्रोध बखेरिकै॥ करि दुसह दुरदिन बाणसों बढ़ि बितरि बिधि घमसानसों॥ गोप्रविशि परदल बीचमें। बधिकरत बहुभट कीचमें॥ दोहा॥ बरषतशर मरदत भटन चलो भूपकी ओर। हने युधिष्ठिर द्रोणकहँ तीक्षणबाण अथोर॥ काटिबाण सबभूपके काटि कठिन कोदण्ड। चलो बेगसों गहन को द्रोणाचार्य प्रचण्ड॥ सोरठा॥ धृष्टद्युम्न रणधीर तेहिक्षण बढ़िआवत भयो। भयोयुद्ध गम्भीर धृष्टद्युम्न अरु द्रोणसों॥ चौपाई॥ तहां द्रोण अतिबिक्रम कीन्हों। सब दिशि शर-पंजर करिदीन्हों॥ द्वादश बाण शिखण्डिहि मारे। उतमौजा पहँबीश प्रहारे॥ हने पांचशर नकुल सुबीरहि। हनेपांच सात्विकि रणधीरहि॥ द्वादश बाण भूपके तनमें। हन्योसात सहदेवहि क्षणमें॥ द्रोपदेय गण कहँ गनिनोखे। मारे तीनि तीनि शरचोखे॥ दश शर मारि मत्स्यपति राजहि। व्यथितकियो परसैन दराजहि॥ इमि हनि सबकहँ मोहित

करिकै। चलो भूपपहँप्रण अनुसरिकै॥ तेहिक्षण हांकि जुगन्धर राजा। भिरत भयोबढ़ि सहित समाजा॥ भल्ल प्रहारि ताहिबधि आरय। बहुरि भूपपहँचलो अचारय॥ तब फिरिबढ़ि कीन्हों अवरोधा। पांचभाय केकयपति योधा॥ द्रुपद बिराट सात्विकी बीरा। सिंहसेन सिविभट रणधीरा॥ व्याघ्रदत्त येसबभट नायक। भिरेद्रोणसों बरपत शायक॥ तहँ अति बिक्रमकरि रणचारी। सबपै अगणित बाणप्रहारी॥ काटि असंख्यन शर सबहीके। द्वैद्वैकरि सबके धनुनीके॥ बधिकै व्याघ्रदत्त बल औकहि। भेजि सिंहसेनहिं यमलोकहि॥ सबदिशि सेतु शरणको जोरे। गयो धर्मके रथके धोरे॥ दोहा॥ तेहि क्षणमें वहिसैन में भयोसोर हे आर्य्य। गहि भूपहि लैजान अब चाहत द्रोणाचार्य्य॥ यहि दलमेंआनँद मयो भयोशब्द गम्भीर। भूपहिगहि ल्यावत अवशि भटअचार्य रण-धीर॥ ताही क्षणमें पार्थभट प्रबल बायुसम आय। बाणबेग बशकरि द्विजहि देतभयो बिचलाय॥ लखि पार्थहि आचार्य तजि नृपति गहनकी आस। युद्धत्यागि रथहांकिकै, आये नृपकेपास॥ इतने में सन्ध्या भई तजितजि रण उपचार। आयजाय निजनिज सिविर कियेअहार बिहार॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभि
गामिनाश्रीबंदीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलना
थेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणि
प्रथमदिनयुद्धसमाप्तिर्नामप्रथमोऽध्यायः॥ १॥

दोहा॥ निज सुपर्बके प्रथमदिन कीनिशिमध्य बिचारि। द्रोण कहत भे भूपसों बिहित बचन निरधारि॥ रोला॥ भूप तुमसों प्रथमही हमकहे करि अनुमान। धर्मकेढिग रहिहिजब नहिं पार्थ सुभट अमान॥ तबहि हमगहि धर्मनृप कहँदेब तुम कहँ ल्याय। रहे पार्थहि भूपकहँ नहिं सकिहि सुरपति पाय॥ सुनौतातें कहैं हमजो करौतौन उपाय। युद्धहित कोउ उठैपार्थहि अनतकहुँ लैजाय॥ इतैतब हमजीति सबकहँ पकरि भूपहि भूप। देब तुमकहँ लहेहुजय निजमंत्रके अनुरूप॥ द्रोणकोसुनि बचन भूप त्रिगर्तपति गहिसोष। कहो नृपसों पार्थको कहिपूर्ब रणकृत दोष॥ पार्थकीन्हों पूर्ब हठकरिबहुत ममअपकार। करत प्रतिअपकार तेहिलै अनतलरि यहिबार॥ भाषियहिबिधि सत्यरथ अरुसत्य बरमहि

आदि। पांचभाय त्रिगर्तपतिरथ अयुत सहित प्रमादि॥ तगडकर सुमालवहिके बीरधीर धुरीन। तीन सहस रथीनसहु तिमिकरतभे प्रणपीन॥ सुभट माबेल्लकललिस्थन युतअयुत रथवान। नृप सुशर्मा प्रस्थलापति कियोतिमि प्रणठान॥ औरबहु देशीय भूपति अयुत सुरथीबीर। किये सम्मतसर्ब साठिहजार योधाधीर॥ द्विजनकहँ दैदान बिधिवत पूजिसुर समुदाय। ज्वलनकहँ तहँ ज्वलितकरि सबकिये शपथ सचाय॥ हरैजो परदत्तबा निजदत्त जो ऋतुकाल। रमैनहिं निजतरुणि सों रहिस्वस्थ कुमति कराल॥ तजैजो शरलाग तनकहँ करैद्विजको द्वेष। करैजोअपकार दाहैग्राम जौनकुभेष॥ श्राद्धके दिनकरै मैथुन जौन अरुजे मूढ़। देहि पिण्डा जीव गणकहँ करैममता रूढ़॥ औरपाप अनेक करि करि लहै नरगति जौन। तजैरण बिनुबधे पार्थहि लहैसो गतितौन॥ शपथ करि यहिभांति भाषो पार्थसों भटउद्ध। चलौ दक्षिण ओर कढ़िकै करौ हमसों युद्ध॥ पार्थ तिनके बचनसुनि गहिक्रोध रणउत्साह। धर्मनृपसों कहतभे करिशत्रुबध की चाह॥ सर्ब संसप्तक करतहै युद्धहित आह्वान। जातहैं हमलरन तिनसों करहु शासनदान॥ पार्थसों इमिकहे भूपति कियोजो प्रणद्रोन। सुनेहौ तुमतौनकीजै होइजाते सोन॥ कहो पारथ सत्यजितहै परमभट रणधीर। जियततताकेतुम्हैंगहिनहिं सकिहि कोऊ बीर॥ सत्यजित रणसिंह बिधिबश जायनब हतिअत्र। युद्धतजि तबशीघ्र आयहु रहैंहम नृपयत्र॥ भाषिइमि पदबन्दि नृपके पार्थ आशिष पाय। गयेतहँ जहँरहेभूप त्रिगर्तके समुदाय॥ देखि पार्थहिजात उत कुरुनाथ अति हरषाय। सैनसह बढ़िभिरे नृपसोंदुन्दुभी बजवाय॥ उतै पार्थहि देखि संसप्तक सुयोधा सर्ब। भेरि दुन्दुभि किये अतिशय घोरधुनि गहिगर्ब॥ देखि तिनकहँ मृत्युबश गुणिपार्थ शंख बजाय। किये शंकित सहित बाहन सकलभटन अचाय॥ धीरधरि तेभये बरषत बाण धनुबिधिठाटि। सहस पन्द्रह बाणसों सबपार्थ दीन्हेकाटि॥ बाण दशदश हनेपार्थहिसुभटसब तेहिठौर। पार्थतिनकेहने शायकतीनितीनि सडौर॥ पांच पांच सुबाणते सबहने पार्थहि फेरि। पार्थतिनकेगात द्वैद्वै बाण दीन्हें मेरि॥ पूरिदीन्हों पार्थकोरथ डारिते शर भूरि। यथा बारिद वारिधारण देतशरबर पूरि॥ कृष्णपारथ सुरथपर इमिपरे शायकघोर।

यथा पुष्पित तरुण पै अलिवृन्द बितरत सोर॥ काटि तिनके बाण अग-णितपार्थ वीर धुरीन। हनेसबके गातमधि बहुबाण तीक्षणपीन॥ पार्थके सुकिरीट मध्य सुबाहु हनिशर तीस। भयो गरजत मेघसम जय जानि बिश्वे बीस॥ काटिताको धनुष पारथ हनेतेहि बहुबान। भूप तहँ तेहि समय तिनसों भयोअति घमसाम॥ भट सुशर्मा सुधनु सुरथ सुधर्मगहि गहिटेक। हने पार्थहि पार्थ तिन कहँ हने बाण अनेक॥ काटि धनुध्वज मारि सूतहि बिधिसुधन्वहि बीर। कियो सबकहँ ब्यथित तेहिक्षण पार्थ भट रणधीर॥ लखिसुधन्वहि गिरत रथसों भरे अनुचरतासु। रहेज-हँकुरुनाथ दलसह गयेतहँ सबआसु॥ पार्थके शरजालसों ह्वै ब्यथित तजि उत्साह। नहींभट संसप्तकन तहँ भागिबे की चाह॥ कह्यो तबहिं त्रिगर्त पतिकरि शपथको अनुमान। लरौधीरज धारि जैहैं एकदिन कढ़ि प्रान॥ बचन यह सुनि सुभट सिगरे बहुरि धीरजधारि। लगे बरषण बाण बधबधि जायबो निरधारि॥ मढ़ोसंगर घोर पारथ दिब्य अस्त्रच-लाय। दियेमरि सबपर भटनके आपने मनकाय॥ सूतरथ ध्वज धनुष भूषण वसन देखि अभेद। लगे मारन परस्पर सबजानि पार्थ अखेद॥ जानिकै सबपार्थ निजभट मारिगहि गहिमोद। दुन्दुभी बजवाय बहुनृप लगेकरण बिनोद॥ सुभट अगणित पार्थ सों भिरिदये शरसों छाय। कृष्ण पारथ तुरँग तहँनहिं परेनेकु लखाय॥ कहेतेहि क्षणपार्थ सों यदु-नाथ ह्वै अतिखिन्न। जियतहौ कै नहीं कै तुमभये रथसों भिन्न॥ कृष्ण केये बचन सुनिकै पार्थ अतिअनखाय। अस्त्रबर बाइब्य तजिकै दयेमारुत छाय॥ उड़शर संसप्तकनके परणसम सबओर। तुरंग गज रथ सुभट लागे भ्रमण सभय अथोर॥ बाहुपग कटिशीश जानुभटन को तेहिकाल। भयो काटत शरणसों तहँपार्थ भटबिकराल॥ धनुष ध्वजकर गजनके अरुहयन केशिरपाय। काटि दीन्होंपाटि महिशर रुधिरको रससाय॥ इतेद्रोणाचार्य्य बिरचे बिसद गारुड़ब्यूह। राखि बिधिवत अंगप्रति अति रथी योधा जूह॥ लसे गारुड़ ब्यूहको मुख आपु द्रोणाचार्य्य। लसेबन्धुन सहित शिरह्वै भूपगुणि जयकार्य्य॥ कृपाचार्य्य सुबीर अरु कृतवर्म भूपसुभेश। लसेयोधन सहित गारुड़ ब्यूह के चखदेश॥ भूत शर्माक्षेम शर्माअरु नृपति करकर्ष। यवनसक कम्बोज सिंहल अरुकलिंग

सहर्ष ॥ शूरसेन अभीर कैकय दरदभट समुदाय । लसे गारुड़ ब्यूहको ह्वैग्रीव धनुष चढ़ाय ॥ शल्य भूरिश्रवा बाह्लीक सोमदत्त नरेश । एक अक्षोहिणि सैनसह लसेदहिने देश ॥ नृप सुदक्षिण बेद अरु अनुबिन्दु नृप सहसैन । बामदिशि होद्रोणको सुतबिदित भट जगजैन ॥ मद्रमा गद पौंड्र अरु सांबष्ट अरु गान्धार । पार्बती भट पीड़ि थरमधि लसेरण करतार । कर्णबैकर्तन सपुत्र सज्ञातिसैनसमेत । लसे गारुड़ब्यूहको ह्वै पुच्छ गर्बनिकेत ॥ जयद्रथ सम्पाति भोजअरु भीमरथवृषपर्ब । क्राथनैषध भूमिजय उरभये सदल सगर्ब ॥ देखि गारुड़ब्यूह इत सेनाधिपति करिऊह । रचेबिधिवत अर्द्धचन्द्राकार अनुपम ब्यूह ॥ देखिगारुड़ ब्यूह इतको धर्मनृपति सशंक । गहेधृष्टद्युम्न सुबीरसों इमि कहे तत्रसशंक ॥ गहैहमहिं न द्रोण जाते करेहुसो उपचार । बचन यहसुनि कह्यो नृपसों धृष्टद्युम्न उदार ॥ हमहिं जीवत तुम्हहिं गहिनहिं सकिहि द्रोण कदापि। आजु महिमा द्रोणकी करियुद्ध देउं उथापि ॥ भाषिइमि बजवाइ दुन्दुभि सैनसह बढ़िबीर । द्रोणसों भिरिलरन लागो द्रुपदसुत रणधीर ॥ दुहूं दिशिसों चलनलागेशक्तिशरदुहुंओर । दुहूंदिशिकेभटनसों तहँमचोसंगर घोर ॥ धृष्टद्युम्नकहँद्रोणसोंयुद्ध करत तहँदेखि । धृष्टद्युम्नसों भिरतभोतो सुत दुर्मुख तेखि ॥ तेयुग योधा उद्धभट कियेतहां अतियुद्ध । जीति दुर्मुखहि द्रोणसों भिरोद्रुपद सुतक्रुद्ध ॥ फिरि दुर्मुख अतिक्रोधकरि बरषि बज्रसम बान । धृष्टद्युम्न सों भिरिगयो करत कठिन घमसान ॥ चौपाई ॥ द्रोणाचार्य्य कोपि तेहि पल में । पारे प्रलय पाण्डवी दलमें ॥ भिरेपदातिनसों पदचारी । भिरे रथिनसों रथी प्रचारी ॥ भिरे हयस्थनसों हय सादी । भिरे गजस्थ गजस्थ प्रमादी ॥ हांकि हांकि बढ़ि बढि भिरि भिरिकै । लागे करण युद्ध थिरिथिरिकै ॥ तोमर शक्ति भल्ल अनियारे । भिन्दिपाल आदिक भयहारे ॥ आयुध बिबिध बिबिध बिधि मारण । लगे बीरपर ब्यूह बिदारण ॥ कितने द्विरदअमट ह्वैह्वैकै । लगेलरन सम्मुख ज्वैज्वै कै ॥ जुटै कुम्भ कुम्भनसों गरजैं । हटि हटाय अतिबल सों तरजैं ॥ गहि गहि करन करनसों झटकैं । मारै रदन रदनसों हटकैं ॥ अभिरें रदन रदनसों जबहीं । प्रगटै अगिनि रदन सों तबहीं ॥ रदक्षत युत कितने जग कोहे । झरना सहित शैल समसोहे ॥ कितने

हटिडरि चिघरत भागे। गरजत किते जातसँग लागे ॥ इमि निज निज अधिपनके बैरण। लरे अनेक तुरँग मद मैरण ॥ यहि बिधि मचेयुद्ध हे आरय। चलो धर्मकहँ गहन अचारय ॥ बाणवृष्टि करि व्यूह बिदारण। मरदत भटन भूरिभय भारण ॥ मण्डल समको दण्डहि कीन्हें। फिरत चक्रसम गुरुता लीन्हें ॥ दोहा ॥ इमि बिप्रहि आवत निरखि नृपति युधिष्ठिर कोपि। बाणवृष्टिकरि द्रोणकहँ दयेनिमिष मेंतोपि ॥ काटिशरण सों सकल शर भयो भयानकरूप। चलो द्रोण तेहि क्षण उतै हाहाधुनि भोभूप ॥ सोरठा ॥ तेहि क्षणहवै अतिचण्ड सुभट सत्यजित बेगसों। टंकारत को दण्ड भिरत भयो बरषत बिशिख ॥ चौपाई ॥ भिरो सत्यजित द्विजसों तैसे। भिरो वृत्र बासवसों जैसे ॥ दोऊ बीरबांकुरे गाये। मत्त मतंग सरिस रिस छाये ॥ धीर धुरीनधनुषबिचिरिचरि। तोमरभल्लन की झरि करिकरि ॥ भरे गर्ब भिरि सहित समाजा। घोर युद्धकीन्हों सुनराजा ॥ बरषि सत्यजित शरवर धरके। काटि अनगिने शरद्विज बरके ॥ पांचसुबाण सूतकहँ मारे। दशदश शर सब हयन प्रहारे ॥ उभय पार्श्व रक्षित के तनमें। दशदश शर मारे तेहिक्षणमें ॥ बहुरि बिरचि बाणन के सेतुहि। काटतभयो द्रोणके केतुहि ॥ सोलखि द्रोण महारिसि लीन्हें। शरसों तासु धनुष द्वैकीन्हें ॥ भिरि दश बाण परम अनियारे। बीर सत्यजित के तनमारे ॥ सोधनु त्यागि औरधनु गहिके। नृप शर तीस हन्यों थिरुकहिकै ॥ तेहिक्षण वृकभट उतसों बढ़िके। भिरो द्रोण सों इतलखु पढ़िके। अतिसै बाणवृष्टिकरि तुरमें। हन्योसाठि शर द्विजके उरमें ॥ तेहि क्षण रिसकरि द्रोणाचारय। भयोकाल सम ताबध कारय ॥ तिनदूनों भटके धनुनोखे। काटतभयो मारिशर चोखे ॥ फिरिहनि एकबाण मजबूतहि। भेज्यो यमपुर वृकके सूतहि ॥ दोहा ॥ करि अतिशै करलाघवै बधिसब हयबल ओक। शरक्षुरप्रसों वृकहिबधि देतभयो सुरलोक ॥ तुरितसत्य जित और धनुगहिहनि अगणितबाण। तुरंग सूतसह द्रोणकहँ बेधतभो बलवान ॥ तोमर ॥ तेहि समय द्रोणाचार्य। बधतासु गुणिजय कार्य्य ॥ शर भल्लको समुदाय। हनिदियेतापै छाय ॥ फिरि धनुषताकोकाटि। भो हनत बहुशर डाटि ॥ गहि सत्यजितधनु और। भो हनतबाण सडोर ॥ तब द्रोणकरि अतिकोप। गहितासु बधको चोप ॥ शर

अर्द्धचद्राकार। हनि बधे तेहि तेहि बार॥ जब सत्यजित रणधीर। मरि गिरो महिपै बीर॥ तेहि समय सब पांचाल। भे व्यथित बिकल बेहाल॥ दोहा॥ सत्य जितहि निपतत निरखि ह्वै नृपधर्म बिरूप। बैठि यामिनी तुरँग पहँ गये दूरिकढ़ि भूप॥ चेदि मत्स्य कारूषपति अरु केकय पाञ्चाल। अरु कोशलपति द्रोणसों भिरत भये तेहिकाल॥ तिन सबके मधि नृपतहां लसो द्रोण भटनाह। लसत प्रज्वलित ज्वलन जिमि महा गहन बनमाह॥ चौपाई॥ मत्स्यराज को अनुज सुबीर। शतानीक अनुपम रणधीर॥ सूत तुरँग अरु द्विज के तनमें। हनत भयो षटशर तेहि क्षणमें॥ फिरिसगर्ब ह्वै घनसम नादित। द्रोणहि कीन्हों शरसों छादित॥ सबशर काटि द्रोणअति रोखो। बध्योताहि हनि शर अति चोखो॥ भगेमत्स्यपतिके भट सिगरे। गणे रहेजे बली अदिगरे॥ पुरपसिह द्विजबरकी दपटें। दावानलसम शरकी लपटें॥ सहि न सके उतके भटएकौ। थिरन सके धरि धीरज नेकौ॥ प्रलयकालके रुद्र समाना। लसत भयो तहँ द्रोण अमाना॥ हय गज रथ भट अगणित काटे। रुण्डमुण्डसों रणमहि पाटे॥ बरषित कियो रुधिरकी सरिता। निज बिक्रम गिरिवर की चरिता॥ निज विक्रमकी गुरुता लीन्हें। सब थरपर भट कीन्हें॥ यहिबिधि निजदल मरदित देखी। सदल सबन्धु धर्मनृप तेखी॥ घन समूह सम बढ़ि अतिबलसों। भिरेआइ द्विजराज सदलसों॥ घोरयुद्ध माचो नृप तिनसों। पृथक् पृथक् कहि निबरै किनसों॥ पांचबाण अतिशय अनियारे। बीरशिखण्डी द्रोणहि मारे॥ पांच बाण बसुदान प्रहारे। सात्विकि शतशर मारि प्रचारे॥ उत मौजा शर तीनि अरु युधामन्यु बसुबान। बीस बाण मारत भयो क्षात्रधर्म बलवान॥ धृष्टद्युम्न दशबाण अरु क्षत्रदेव शरसात। तीनि बाण मारतभयो चेकितान दृढ़गात॥ द्वादशशर मारतभयो धर्मभूप ह्वै चंड। काटे तिनके बहुबिशिष द्रोण कर्षिको दंड॥ सोरठा॥ बिरचि शरण को सेतु सब बीरनपहँ द्रोणतहँ। भटदृढ़सेन सचेत ताहि बधो हनिवर बिशिख॥ सबके अगणितबाण काटि काटि सबकहँ बिशिख। हनिनवबाण अमान बधतभयो भट क्षेमकहँ॥ महिखरी॥ हनि शिखण्डिहि बाणद्वादश बीस उतमौजहि हने। नृप क्षत्रधर्महि हनतभो शर असी अतिअनुपम

बने ॥ बसुदान कहँ हनि भल्ल तीक्षण बधितुरित यमपुर दयो। बधि क्षत्रदेवहि भल्लशरसों गरजि घनसम मुदलयो ॥ नृपभट सुदक्षिण बीर तेहि तकि बाण कुब्बिस हनतभो। हनियुधामन्युहि बाण चौंसठि सेतु शरको तनतभो ॥ भट सात्विकिहि हनि तीसशर द्विजराज घनसम गरजिकै। सब भटन पहँ इमिबाण बरषत चलो नृपपहँ तरजिकै ॥ दोहा ॥ इमि द्रोणहि आवत निरखि भूपभूरि भयपाय। गयेदूरि कढ़िबेगसों चंचल तुरंगचलाय ॥ तेहिक्षण नृप पांचालको सुवन सुरथहि बढ़ाय। भिरो द्रोणसों हांकिकै बरषत बाण सचाय ॥ हतिताके सूतहि तहांकाटि धनुष बधि ताहि। मर्दतभो सब भटन कहँ द्रोण सुभट जयचाहि ॥ चोपाई ॥ उड़ै बायुबश ह्वै तृणजैसे। भयेपराजित परभट तैसे ॥ द्विज के शरझरसों तेहिपल में। हाहाकार मचो परदल में ॥ यहसुनि वृद्ध भूप लहि आनँद। संजयसों बूझे सुनु मानद ॥ इबिधि रुद्र समद्रोणहि देखी। केभट तहां थिरे अवरेखी ॥ कुरुपति लसो मोदलहि कैसो। अब कहु शीघ्र सूतसुत तेसो ॥ संजय कह्यो सुनोतेहि क्षणमें। कुरुपति ह्वै अति मोदित मनमें ॥ कह्यो कर्णसों यहि पलमाहीं। द्विजसों जूटि सकत कोउनाहीं ॥ अगिनि अलात अनगिनेदेखी। मगेंकरिणि जिमि भय सों भेखी ॥ तिमिलखि बाणजाल द्विजबरके। थिरि न सकत अवयोधा परके ॥ जिमि सिंहहि लखि मृगगण भाजत। भगेजात तिमि भयसों पागत ॥ थिरिहैं ये लहि निज निजठीहा। नहिं फिरिहैं गहि रणकीईहा ॥ सगरब भीह क्रोध गहि गाढो। है अबलरत अकेलो ठाढ़ो ॥ देखि याहि मोमन मुदरांचत। बधोजात अब यह नहिं बांचत ॥ यहसुनि कर्णकहो सुनुराजा। भीम बधिहि सब सैनसमाजा ॥ बधै भीमकहँको असयोधा। करिहि भीम कर को अवरोधा ॥ पांडव सब अजेय अनुमानो। बिचलित लखिमति निजजय जानो ॥ दोहा ॥ सुनि गरजनि भट भीमकी क्षणमें फिरि सबबीर। तोदल में चाहत प्रलय पारण सब रणधीर ॥ परन चहतहै द्रोणपहँ दुसह युद्धको भार। ताते ढिगचलि द्रोणकोरक्षण करो सवार ॥ समुझि कर्णके बचन ये दुर्योधन सहसैन। शीघ्रद्रोण के ढिग गये दुंदुभि झेरि सचैन ॥ चोपाई ॥ इतने में पांडवकी सेना। फिरत भई दुर्मद जगजेना ॥ सात्विकि आदि बीरभट रूरे। चलेद्रोण पहँ अमरष

पूरे ॥ इतके सब योधा जयऊटे। पृथक् पृथक् तिनसों इमि जूटे॥ तासुत दुर्मुख भट रणचारी। भिरोभीमसों धनुटंकारी॥ सात्विकि सों कृतबरमा भिरिकै। घोरयुद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै॥ भिरो क्षत्रधर्मासों राजा। नृपति जयद्रथ सहित समाजा॥ लखि युयुत्सुकहँ भिरोप्रचारी॥ तोसुत भट सुबाहु धनुधारी॥ करि अतियुद्ध युयुत्सु अखेदे। शरसोंतासु उभयभुज छेदे॥ भिरो युधिष्ठिरसों रणकर्कस। सङ्गभूप रणधीर अधर्कस॥ नृप बाह्लीक सदलबढ़ि हदसों। भिरोससैन महीप द्रुपद सों॥ भूपबिन्द अनुबिन्दरिसारे। भिरि बिराटसों रणबिस्तारे॥ शतानीकज-सुवन नकुलको। तासों भूतकर्म भिरि पुलको॥ शतानीक ताको बध करिकै। मर्दतभो ममदल रणचरिकै॥ जो सुत सोमबिदित भटतासों। भिरो बिबिंशति क्रोधमहासों॥ श्रुतिकरमासों भिरि रिसलीन्हे। चित्र-सेन अतिसंगर कीन्हे॥ नृपप्रतिबिन्ध्य बिदित जयकामा। तासोंअभिरो अश्वत्थामा॥ दोहा॥ अर्जुनसुत श्रुतिकीर्त्ति जो तासों भिरो प्रचारि। दुःशासनको सुत बरषि शायक धनुटंकारि॥ तासु सूत ध्वज धनुषकहँ तीनिबाण सों काटि। अर्जुनको सुत द्रोणपहँ चलो बीरबिधि ठाटि॥ सोरठा॥ तब लक्ष्मण रणधीर बढ़िताकहँ आड़तभयो। लरिकाट्यो बर बीर लक्ष्मणको ध्वज अरुधनुष॥ तबलक्ष्मण बलवान् आन धनुष गहि क्रोधकरि। कियोकठिन घमसान श्रुतिकरमा रणधीरसों॥ चौपाई॥ मारु मारु धरु मार्यो रटसों। भिरोविकर्ण शिखंडी भटसों॥ अंगदबीर भिरो अतिबलसों। उतमोजा नरनाह सदलसों॥ पनी पुहुमिपालक पुरजित सों। भिरो दपटि दुर्मुखभट इतसों॥ दुर्मुख के भ्रूमधि हनि शायक। कियो सनाल कमलमुख लायक॥ पांचभाय नृपकेकय पतिसों। भिरो ससैन कर्ण अतिबलसों॥ तिन्हें करण करणहि ते चीन्हे। शर घनमें गोपित करिदीन्हे॥ दुर्जयभिरो नीलसों राजा। जयत्सेनसों बिजयस-माजा॥ तोसुत जयभट अनुपम योधा। कियो काशिपतिको अवरोधा॥ क्षेमधूर्त्ति अरु बृहत सुबाइ। सात्वतसों भिरिकियो लराइ॥ भिरो अ-म्बष्ठ भूपसों चावन। चेदिराज रणद्वन्द मचावन॥ चेदिराज सों लरि अति जिदिकै। गिरो अम्बष्ठ शरणसों भिदिकै॥ बार्धक्षेमसों भिरो प्र-चारी। कृपाचार्य्य अनुपम रणचारी॥ भिरोभूप मणिमन्तबलीसों। भूरि-

श्रवा नृप भांतिभलीसों ॥ भूरिश्रवा काटि धनुतासू। काटतभयो क्षत्र ध्वजआसू ॥ काटि पताकहि घनसम गरज्यो । बधि सूतहि तड़ितासम तरज्यो ॥ तब मणिमन्त भूप असि गहिकै। कूदो रथसों थिरुथिरु कहिकै ॥ दोहा ॥ असिसों बध्यो तुरंगसब अरु सूतहि नरनाह। तबहिकूदि भूरिश्रवा गयो और रथमाह ॥ पांडव भूपसों भिरतभो भट वृषसेन ससैन। घोरयुद्ध कीन्हों तहां तेदोऊ दलजैन ॥ भिरो घटोत्कच असुर सों असुर अलम्बुषबीर। घोरयुद्ध कीन्होंतहां तेदोऊ रणधीर ॥ यहिबिधि द्वन्दहजार जुटिकीन्होंयुद्धअपार। पृथक् पृथक् सो सब बरणि सकै भूप कोपार ॥ सोरठा ॥ यहसुनि वृद्धनरेश संजयसों बूझतभये। इविधि जूटि तेहिदेश कीन्होंकैसोयुद्धसब ॥ संजयउवाच॥ चौपाई ॥ यहिबिधि जूझे सुभट समाजा। गजानीकसह बढ़ि कुरुराजा ॥ सगरब चलो भीमपहँ तैसे। चलेजलद जुरि ब्रजपहँ जैसे ॥ भूपहि निरखि भीम धनुकरषत। सम्मुख भयो भूरिशर बरषत ॥ भीमसेनकी शर वीबरषा। सहि न सको गजदल गहिधरषा ॥ बहुगज भागिचले भयपूरे। जिमिमारुत बश ह्वै घनरूरे॥ गजदल बिचलत लखिदुर्योधन। अतिरिस गहिकरि धनुबिधि शोधन॥ भीमसेन कहँ बहुशर मारे। जेतरु पाहन बेधनहारे ॥ भीमसेनतब अति रिसलीन्हे। नृपहि शरणसों क्षादित कीन्हे ॥ काटिधनुष ध्वज क्षत्रहि क्षणमें। बहुशर हने भूपके तनमें ॥ दुर्योधनहि बिकलतहँ देखी । बंगाधिपति भूप अतितेखी ॥ मैगलमत्त बढ़ाय प्रचारत। भिरो भीमसों धनु टंकारत ॥ तेहिलखिभीम बिशिष अनियारे। तासुद्विरदके शिरमविमारे॥ लागेबाण द्विरद शिर धुनिकै। गिरोभूमिपै आरत धुनिकै ॥ मैगलगिरो भूमिपहँ जबलों। भीमबधे तेहिभूपहितबलों ॥ नृपहिमरत लखि नृपके अंगी। भागिचले मरदत निजसंगी ॥ भूपहि तेहिक्षण भीम प्रमाथी। बधे असंख्यन भट हय हाथी ॥ दोहा ॥ गजानीक बिचलत निरखि असुर राज भगदत्त। चलो गरजिकै भीमपहँ चंचलकरि गजमत्त ॥ कसिमस्तकहि वितुंडसो गरजत सुंडउठाय। धायजाय युग पायसों बध्यो तुरँग समुदाय ॥ बधितुरंग महिरथ मरदि जब गरजो गजघोर। तबहि भीमगे द्विरदके पिछिले पगकी ओर ॥ चौपाई ॥ लगोपिछोंहे मूक प्रहारण। घूमन लगो द्विरद गुणिधारण ॥ फिरो चक्रसम मैगल जिमि जिमि । तासँग

फिरो वृकोदर तिमितिमि ॥ यहिबिधि घरिकघूमि रणकर्कश। कूदिसामने गयो अधर्कश ॥ तबकर कुण्डलमधि तेहिकरिकै। पगसों हननलगो गज अरिकै ॥ तबगहि सुंड घूमिसो भटबर। गयोमत्त मैंगलके उत्तर॥ तेहिक्षण सोरभयो वहिदलमें। भीमहिं बध्यो द्विरद यहिपलनें ॥ सो सुनि धर्मशोचसों मढ़िकै। धेर्योगजहि रथिनसह बढ़िकै ॥ सहसनबीर रथी उतकरषे। सगज भूपपहँ शायकबरषे ॥ तेहिक्षण नृप अंकुशके वारण। किये असंख्य शरनके बारण ॥ चलोबढ़ाय द्विरद भयछावन। पग सांचाहि रथिन मरदावन ॥ तब निजद्विरद बढ़ाय सुबीरा। भिरो दशार्णाधिप रणधीरा ॥ प्राग्ज्योतिष बरबलसों पूरण। बधै अरिहि जो रण में तूरण ॥ भिरिभे लरत द्विरदते तैसे। लरैं सपक्ष शैल युगजैसे ॥ गज प्रमत्त भगदत्त असुरको। ताके गजहि बध्यो बलपुरको ॥ हनि भगदत्त सातशररूरे। बधि दशार्णपति कहँ मुदपूरे ॥ उतक महारथी सबदिशिसों। हनेअसंख्यन शर भरि रिससों ॥ लगे शरण सहनृप गज कोहे। लघु तरुबन सह गिरिसम सोहे ॥ दोहा ॥ पाय इसारा भूपको बढ़िसो गजबल भूरि। सहय सात्विकीके रथहि फेंकि देतभो दूरि॥ तुरित कूदि तेहि सुरथसों सात्विकिबीर उदण्ड। राजि और रथपै भयो टंकारत को दण्ड ॥ जेहि भटकी दिशिलखतभो नृपसो गज तेहिकाल। रथ चलाय सो दूरगो जानिकाल बिकराल ॥ रोला ॥ मारि बहुगज मर्दि अगणित शुभट हय रथ साज। प्रलय पारतभयो परदल मध्य सो गजराज ॥ सुभट भीम रथस्थह्वै तेहिसमय सुरथबढ़ाय। चलतभो भगदत्त नृपपहँ तजतशर दृढ़घाय ॥ देखिभीमहि बली बारण सुंडमधि भरिबारि। दूरही सों भयो बरषत भीमपहँ बहुधारि ॥ लगेसो जलधारताके सुरथके हय सर्ब। सकेनहिं समुहाय रथलै दूरिगे तजिगर्ब ॥ देखिसो रुचिपर्ब नृप रथहांकि धनुटंकारि। बिशिषबरषत भिरतभो भगदत्तसों ललकारि ॥ रोंकिताहि सुपर्ब भूपहि बज्रसम हनिबान। बेधिहिय बधिलस्यो वृत्रहि मारि जिमि मघवान ॥ देखिसो सौभद्र अरुसुत द्रौपदीके बीर। धृष्टकेतु युयुत्सु अरु नृप चेकितान सुधीर ॥ भयेबरषत बाण तबबढ़ि गरजिसो गजराज। गहि युयुत्सु सुबीरकोरथ कियोचूर्ण ससाज ॥ कूदिबीर युयुत्सु तबगो और रथपहँ धाय। बाणबरषत भये सबभट द्विरदपहँ भयपाय ॥

क्रोधसों युत उग्रउन्नत करे रद शिरमुंड। चपल सबदिशि घुमड़िगरजत कालशदृस बितुण्ड॥ सुभटउतके भीति गहिगहि दूरिरहिफरकोल। रहेबरषत प्रबल गजपहँ बरशरणके गोल॥ देखि बनमंजारकहँ जिमि करे पक्षीशोर। तथा उतके रथी सबरव कियेरहि चहुंओर॥ भीतिपूरित निज भटनको शब्दसुनि यहि ओर। अरु नृपति भगदत्तको गज गरज की धुनिघोर॥ कह्यो पारथ कृष्णसो उत शब्द भीषण होत। जानियतु भगदत्त ममदल मध्य प्रलय तनोत॥ इन्द्रके गजराजके कुलजनित तासु मतंग। जानियतु यहि समय मरदत सैन के सबअंग॥ भूप वह अति प्रबल अरु अतिप्रबल वह गजराज। तुम्हें बिनुउत तिन्हें जीतै कौन सुभट समाज॥ दोहा॥ बेगि उतै अब चलहुप्रभु नातरु वह जगजैन। प्रलय पारियहि दिवस में बधिहि सकल मम सैन॥ यह सुनि केशव हांकिरथ शीघ्रचले वहि ओर। लखि पीछू टेरत चले सप्तक भटघोर॥ चौपाई॥ चौदह सहस रथी बलभारे। फिरहु फिरहु इमि टेरि प्रचारे॥ सोसुनि अर्जुन इत उत गुणिके। रथ फिरवाय भिरो धुनि धुनिकै॥ चौदह सहस रथी अति हरष। बाण असंख्य पार्थपहँ बरषे॥ तहां पार्थ अतिकोप प्रकाशे। ब्रह्म अस्त्रसों सबकहँ नाशे॥ क्षण में तिन्हें जीति रणजेता। बहुरि चलो अतिसुबल निकेता॥ तदनु सुबन्धु सुशरमा राजा। चलो प्रचारत सहित समाजा॥ तब पारथ अतिचिन्तित ह्वै कै। फिरिभो भिरत धर्मनिज ज्वैकै॥ बेधि सुसरमहि सात शरण सों। धनुध्वज काटि क्षुरप्रबरणसों॥ बन्धु सुशरमाको रणधीरा। सहयससूत बध्यो तेहिबीरा॥ देखि सुशरमा अतिरिस गहिकै। मार्यो शक्तिखरो रहु कहिकै॥ पारथ निरखि बाण विधि ठाटी। तीनि बाणसों बीचहि काटी॥ तोमर तज्यो कृष्णकहँ देखी। काटोताहि पार्थ अवरेखी॥ बहुरि असंख्यन शर परिहरिकै। नृपति सुशरमहि मोहित करिकै॥ नृप आयो ममदल कहँ कैसे। बन बरषत घन गिरिपहँ जैसे॥ लखि तेहि साहस गहिभट एकौ। बढ़िभिरि आड़िसको नहिं नेकौ॥ निपतै बाज लवापहँ जैसे। भिरो असुर भूपतिसों तैसे॥ दोहा॥ बज्र सदृश शरवृष्टि करि सिगरो दल बिचलाय। नृप प्रमत्त भगदत्त पहँ देतभयो शरछाय। दश हजार धनुधर रथी नृपतेहि क्षण धरिधीर। भिरि बरषे शरपार्थपहँ

घनजिमि गिरिपहँ नीर ॥ गिरि तिनसों पारथ तहां शरदुर दिनताछाय बधे असख्यन सुभटभट अगणित दये भगाय ॥ चौपाई ॥ लखि भगदत्त क्रोधकरि मनमें। द्विरद बढ़ायचलो तेहि क्षणमें ॥ पारथ लखिशर पंजर कीन्हों। द्विरद प्रमत्तहि बढ़न न दीन्हों ॥ तब भगदत्त शरासन करष्यो । अबिरल बाण पार्थपहँ बरष्यो ॥ पार्थकाटि अगणित शरतासू। हने असंख्यन शर तेहि त्रासू ॥ तिमि शर काटि हनत भो बाणन।नृप भगदत्त पुरुष पञ्चानन ॥ रथी गजी दोऊ बलधामा। यहिबिधि कियो घोर संग्रामा ॥ मचोघोर संग्राम गरजिकै। द्विरद पार्थपहँ चलो तरजिकै ॥ कृष्णहांकि तब तुरँग सुसजके। रथलैगये बामदिशि गजके ॥ बढ़ि सम्मुख सों गजरिस लीन्हें । बहुहय भट रथ मरदित कीन्हें ॥ सुनि धृतराष्ट्र कहो कहु तैसो। तदनंतर तिन कीन्हों कैसो ॥ संजय कह्योभूप तेहिपलमें। भोअतिघोर युद्ध सबदलमें ॥ भूपपार्थ के शरदुहुं दिशिसों। चले यथा अहिपूरित रिससों ॥ नृप भगदत्त प्रबलभट रोखो। कृष्णहि हन्योबाण अतिचोखो ॥ नृपको धनुष काटितब पारथ । बरषत भयो बाणगुणि स्वारथ ॥ तुरित औरधनु गहि नृप मारे। चौदह तोमर अति अनिआरे ॥ एक एक शरहनि तिन सबमें। पार्थदिये करि द्वैद्वै मगमें ॥ दोहा ॥ काटि असंख्यन बाणबर मारि असंख्यन बान । मत्तद्विरद को बरम बर काट्यो पार्थ अमान ॥ टूक टूकह्वै आयसीबरम गिरो महिपाहि। तब बेधित भो शरनसों मेगल बिगत पनाहि ॥ तज्यो कृष्ण पहँ शक्तिवर प्राग्ज्योतिषपति धीर। ताहि बीचही बाणसों काट्यो पार्थ सुबीर ॥ सोरठा ॥ बाण अनगिने काटि काटिछत्र अरु काटि ध्वज। हने नृप गजहि डाटि पार्थ सिंह दशबाण नख ॥ बाण अनगिने काटि साठिबाण फिरि हनतभो। घोर धनुषबिधि ठाटि हनत भयो फिरि उभय शर ॥ चौपाई ॥ रहि सधीर तहँधीर धुरीना। नृप भगदत्त सुभट कालीना ॥ बिधिवत मंत्र सु बैष्णव पढ़िकै। बर प्रभाव अंकुश मधि मढ़िकै ॥ भोडारत पारथपै तैसे। बासव बज्र वृत्र कहँजैसे ॥ कृष्णदेखि तेहि अनरथ चीन्हों । ह्वै संमुखनिज उरपहँ लीन्हो ॥ उरहि परसिसो अस्त्र सुहायो। बैजयन्ति स्रजह्वै छबिछायो ॥ सोलखि पारथ भट अभिमानी। कह्यो कृष्णसों अनुचित जानी ॥ मोहिं अछत प्रणतजि हे आरय। कतकीन्हों

तुम ऐसो कारय ॥ हम अशक्यजब होब गुसाईं। तबतुम उचित किहेहु यहिठाईं ॥ यहसुनि कृष्ण मोदसों पागे। अस्त्र प्रभाव बतावन लागे॥ तात सुनहु यह कथा सोहावनि। है मम चारिमूर्त्ति मन भावनि ॥ करें उग्रतप महिपै एका। एकलखै सत असत बिवेका ॥ एकलोक के आश्रित ह्वैकै। करैं कर्म निजमाया ज्वैकै ॥ सहसचौकड़ी युगयक सोवति। जागि बहुरि जगरचि मुद मोवति ॥ सोवह मूर्त्ति जगतको नायक। जे बरयोग्य तिन्हैं बरदायक ॥ तेहि तेहि समय देतबर देखी। मांगत भई भूमिमुद भेखी ॥ दानव देवतादि गण सबसों। होइ अबध्य सुवन मम अबसों ॥ दोहा ॥ नरकासुर सुत तासु तेहि ह्वै प्रसन्न तेहिकाल। अस्त्र सुवैष्णव दीन हम सोयह अस्त्र बिशाल ॥ याके सहिबे योगनहिं और तिहूंपुर माह। ताते हम याकहँ कियोऽर्थ सुनो भटनाह ॥ यथा पूर्व नरकासुरहि हम मार्‌यो हेतात। तथाबधो तुम याहिअब बेधि शरणसों गात ॥ सोरठा ॥ सुनि केशवके बैन पार्थ ऐनबल बुद्धिको। धनु टंकारि सचैन रचतभयो शरसेतु फिरि। छाय असंख्यन बाण मारि असंख्यन बाणवर। पारथ बीर अमान भगदत्तहि व्याकुल कियो॥ तोमर ॥ तहँबरषिशर रणधीर। भटपार्थ अनुपमबीर ॥ अतिदीर्घ तीक्षणबान। सबिधान करि सन्धान ॥ अति दीह बलकोभौन। गजमत्तनृपकोजौन॥ तकितासु कुम्भनकेर। मधिभाग उन्नतफेर ॥ मोहनत बज्रसमान। सोधस्यो पुरुष प्रमान ॥ बढ़िचलनको तेहिदेश। नृपदयो गजहिनदेश ॥ गजदयोशासन टारि। जिमि दारदीकी नारि ॥ करि आर्तधुनि बलवान। गज गिरत भो तजिप्रान ॥ दोहा ॥ चख उघरन के हेतुनृप लटके पलन उठाय। रहत रह्यो बांधे सदा सुबसन पट्टबनाय ॥ सुनि नभबाणी सुरनकी ताहिबाणसों काटि। हन्यो भूपके हृदयमधि भल्ल पार्थ भटडाटि॥ अर्द्धचन्द्र शरमारि भिरि धरसों शीश बिदारि। भट प्रमत्त भगदत्त कहँ दीन्हों महिपैडारि ॥ सोरठा ॥हति भगदत्तहि तत्रवीर धनुर्द्धर पार्थभट। अगणित सुभट एकत्र करतभयो यमलोकमें॥ चौपाई ॥ तदनुबीर गान्धार राजसुत। परपुर जयकर बर तेजसयुत ॥ निजदल दलत देखितेहिक्षणमें। वृषकाचल गरबित ह्वै मनमें ॥ बरषत बाण सदलबढ़ि भिरिकै। लगेलरन पारथ सों थिरिकै ॥ सोबलते युगबंधु अमाना। कीन्हें तहां कठिन

घमसाना ॥ रचिशरजालपार्थतहँ तेहिक्षन। हनेअसंख्यनशरसबकेतन॥ गरजि सिंहसम धनुबिधि ठाटे। हय धनु सूतवृषकके काटे ॥ वृषकाचलके सम बलभारे। सुभट पांचशर तेहिक्षण मारे॥ निजरथ त्यागि बिचरि रणपथपै। वृषक गयो काचल के रथपै॥ एक रथस्थ बन्धुदोउ बीरा। घोरयुद्ध कीन्हों रणधीरा॥ इनबहु बाण पार्थपहँडारे। पार्थइन्हैं अगणित शरमारे॥ येबहुबाण पार्थके छेदे। इनके बहुशर पारथ भेदे॥ क्षणमें पार्थबाण झरिकरिकै। बेधेतिन्हैं गिरे तेमरिकै॥ युगमातुलन प्राणबिनु ज्वैकै। रुदन किये तो सुतमुदग्वैकै॥ निज बन्धुन कहँ निपतित देखी। माया कियो शकुनि अतितेखी॥ आयुध भेद जगत में जेते। लागे गिरन पार्थपहँ तेते॥ भूत पिशाच सिद्ध वृक ब्याला। रीछ शृगाल गीध बिकराला॥ करत घोर धुनिभरि अति रिससों। चलेधनंजय पहँ सबदिशिसों॥ दोहा॥ दिव्य अस्त्रसों पार्थतब माया सकलबिनाशि। शर बरषत भो शकुनि पहँ धनुष बिधान प्रकाशि॥ सोलखि बिरची तममई माया शकुनि सचाय। अर्जुन के रथपै गयो महाघोर तम छाय॥ ज्योति शास्त्रसों पार्थ तब लोप करतभो तासु। शकुनि देखि सो जलमयी माया कीन्होंआसु॥ तब आदित्य सुअस्त्रको अर्जुन कियो प्रयोग। भो लोपित जलधार सब उतहरषे सबलोग॥ इमि निजमायाव्यर्थ लखि लहिबाणन को घात। चढ़िसु अश्वपै भगत भो शकुनिबीर बिख्यात॥ सोरठा॥ तेहिक्षण पारथबीर कालरुद्र सम चण्डहवै। बरषि बाण रणधीर दलत भयो दलकौरवी॥ मत्तिखरी॥ तेहि समय इतके सुभट सिगरे बिकल ह्वै अति भयपगे। तजि सखास्वामी पिता पुत्रन हांकि गजरथ हयभगे॥ बहु गयेढिग कुरुनाथ के बहुद्रोण द्विजके ढिग गये। बहुगये कढ़ि अतिदूरि फिरि नहिं लखे उत अतिभयमये॥ करि श्रुवासम बरबाण अगणित पार्थ सबथर गवनकै। रण अग्नि रणमह कुण्ड मधि बहु सुभट दीन्हें हवनकै॥ करिचक्र समरथ धनुष इतसब ठौर तेहि बिचरत तहां। नहिं भये संमुख सुभट कोऊ भगेहे निरखत जहां॥ गज तुरँग अगणित सुभट रथशर बरषि पारथ बधतभो। तेहि समय नृप तोसैनमधि अतिप्रलय पूरण नधतभो॥ यहि भांति तोदल मर्दि अर्जुन बहुरि दक्षिण दिशिगये। गाण्डीव धनु धुनि दुसह धुनिसह

सर्प समशर भरिदये ॥ इतसैन आरत देखि द्रोणाचार्य्य अति कोपित भये। निजधनुष चक्रसमान करि शर परसैन मधि भरिदये ॥ गजतुरँग भट समुदाय वेधत बधत शरपंजर करे। भोचलत धर्मनरेश पहँ तहि गहन को मनप्रणधरे॥ दोहा ॥तेहिक्षण सात्विकि भीमअरु धृष्टद्युम्नरण-धीर। चले बेगसों द्रोणपहँ सहित सुदल नृपबीर ॥ यहिबिधि आवत द्रोणपहँ निरखि पाण्डवी सैन। सदल गयोढिग द्रोण के तोसुत नृपबल ऐन ॥ बिपिन बासको दुखसमुझि तजि जीवन की आस। पाण्डवतेहि क्षण करत भे अतिशय युद्ध प्रयास ॥ सोरठा ॥ जैसो युद्ध महान नहिं वृ-द्धन देख्यो सुन्यो। भो तैसो घमसान सुनो भूपतेहि क्षणतहां ॥ चौपाई ॥ कम्पित भई भूमितेहि पलमें। कटे असंख्यन भट दुहुंदल में॥ परदल दलत द्रोण जहँ फिरिकै। आड़त धृष्टद्युम्न तहँ भिरिकै॥ तिहि क्षणनील नृपति भटभारी। मरदत भो ममदल रणचारी ॥ निजदल मरदत नीलहि देखी। टेरिकह्यो इमि द्विजसुततेखी ॥ हेनृपनील आइ भिरुमो-सों। मेंजयलेन चहतहौं तोसौं ॥ यह सुनिनील भटन परिहरिकै। भिरो द्रोणसुतसों शरझरिकै ॥ तहँ द्विजसुत करि लाघव ठाढ्यो। धनु ध्वज छत्र नृपतिको काढ्यो ॥ तबगहि खड्ग चर्म रथ तजिकै। नृपति बिप्रपहँ चलो गरजिकै ॥ तिमि आवत लखि अश्वत्थामा। मारि भल्ल शर अति अभिरामा ॥ शिरबिनु कियो नीलके गातहि। दियो अतुलआनँद तोता-तहि ॥ लखि सब पाण्डव अतिदुख लीन्हें। द्रोणतनय परशर झरिकी-न्हें ॥ भीम गरजि निजधनु टंकारे। द्रोणहि साठि बाण बरमारे ॥ दश शर हन्यो कर्णके तनमें। भीम भीम भट गर्बित मनमें ॥ छब्बिस बाण द्रोणतेहिमारे। द्वादश शरबर करणप्रहारे ॥ सातसुबाण द्रोणसुत दी-न्हें। षटशर हनि कुरुपति मुदलीन्हें ॥ अगनित बाण काटितिन केरे। भीम तिन्हैंशर हने घनेरे ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण धर्मनरेश कर अनुशासन सुनिधाय। आवतभे ढिगभीमके गणे सुभट समुदाय ॥ इतके उतके अतिरथी बरणे बीरअमान। गरजि गरजि भिरि भिरितहां कियेघोरघम-सान ॥ सोरठा ॥ यथा घेरि घहराय बारि बूंद बरषत जलद। तथासुभट समुदाय टेरिटेरि बरषे बिशिष ॥ चौपाई ॥ तोमर शक्ति भल्ल अनिआरे। गदा परश्वध शरभय भारे ॥ खड्ग शतघ्नी आदिक रूरे। आयुधभेददुहूं

दिशि पूरे ॥ गजहय सुभट असंख्यन मरिकै। शोभित भये रुधिर मधि परिकै॥ बहु भटभिरि मूर्छित ह्वै गिरहीं। चेति टेरि फिरि फिरि उठि लरहीं॥ मारे मरे किते हयसादी। मरे अनगिने गजी प्रमादी॥ मरेअसंख्य रथी तेहि क्षणमें। हाहाकार मचतभो रणमें॥ उमँगि बही श्रोणित की तरणी। रुण्ड मुण्ड मयमहा बिबरणी॥ नृप तेहिक्षण सेनापति उतको। बिदित बीर अनुपम युत बलको॥ सदल द्रोणके ढिग नियरानो। बरषत दिव्य अस्त्र मनमानो॥ सो लखि नृप अरु अश्वत्थामा। करण शल्य भूपति बलधामा॥ भूप बिन्द अनुबिन्द ससाजा। अरु जगजैन जयद्रथ राजा॥ बरषत बाण मंत्र पढ़ि पढ़िकै। तासों भिरतभये बढ़िबढ़िकै॥ तहांद्रोण अतिबिक्रम कीन्ह्यों। अगणित भटन कालपुर दीन्ह्यों॥ ताहीक्षण अर्जुन भट गायो। संसप्तकन जीति तहँआयो॥ बिरचि बाणपंजर सबथलमें। पार्‌यो प्रलय तावकीदलमें॥ प्रतिसन्धान अनगिनी सेना। मारतभयो बीर जग जेना॥ दोहा॥ ब्याकुल ह्वै इतके सुभट सके न धीरज धारि। भागि करण केढिग गये पाहक प्रबल बिचारि॥ सोलखि करण प्रचण्डभट कोदण्डहि टंकारि। भिरत भयो भट पार्थसों बरषत बाण प्रचारि॥ काटि अनगिनेबाण करि पारथक्रोध अमेय। प्रलयकरणभटकर्णपहँ तज्यो अस्त्र आग्नेय॥ सोरठा॥ दिव्यसु अस्त्र चलाय दिव्यअस्त्र धारतभयो। करणबीर दृढ़घाय धीर धनुर्द्धर बिदित भट॥ प्रबल उभैरणधीर घोरयुद्ध कीन्हों तहां। डारिसु अस्त्रगँभीर बारि सुअस्त्र अमोघसों॥ चौपाई॥ भीमसेन सात्विकि भटनागर। धृष्टद्युम्न दलपति बलआगर॥ तीनि तीनि शर करणहि मारे॥ जे शरपाहन बेधनहारे॥ तेहिक्षण काटि पार्थके बाणन। रिसकरि करण पुरुष पंचानन॥ काटि शरणसों तिनकेचापन। लागेबाण पार्थपर थापन॥ तबते भटअति रिस बिस्तारी। तीनिसु शक्ति करण पहँडारी॥ तीनितीनि तीक्षण शरबरसों। काटेतिन्हें करणतेहिथरसों॥ शक्तिनकाटि शरासन करषत। भयोबाण पारथपहँ बरषत॥ काटि तासु अगणित शरनोखे। पार्थहने तेहि बसुशर चोखे॥ होलघु बन्धुकरण को ताको। नाशकियो हनिशर बरभाको॥ शत्रुंजयहि मारि षटशायक। बधत भये पारथ भटनायक॥ बहुरि ठाटि धनुधर के ठाटहि। बधत भयो भट बीर

बिपाटहि ॥ यहिबिधि तीनि सुबन्धु करणके। बधेपार्थ रचिसेतु शरण-के ॥ तेहिक्षण भीमक्रोध सों नहिकै । रथसों कूदि चर्म असि गहिकै ॥ बधत भयो रणरंग बिचक्षण। पंद्रह सुभट करणके पक्षण ॥ बहुरिजाय रथपै तेहिक्षणमें। दशशर हन्यो करणके तनमें ॥ एकसुबाण सारथिहि मारे। चारिबाण तुरँगनहिं प्रहारे ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न असिचर्म गहि कूदि सुरथसों धाय। वृहच्छत्र नैषद नृपहि बधत भयो रिसछाय ॥ तदनु चन्द्रवर्मा नृपहि बधि निजरथपैजाय। धनुगहि बाणतिहत्तरि हने करणके काय ॥ सात्विकि भटधनु आनगहि चौंसठि शर अवदात। हने प्रचारि प्रचारिकै करणबीरके गात ॥ फिरि सात्विकि बर भल्लसों धनुष करण कोकाटि। तीनिबाण मारतभयो गरजि सिंहसमडाटि ॥ सोरठा ॥ तोसुत नृपसो देखि द्रोण जयद्रथ सैनसह। बरषत शायक तेखि भिरेसात्विकीभी-मसों ॥ जयकरी ॥ इतउतके योधातेहि याम। भीषणयुद्धकियो अभिराम ॥ बधि बधिभट गजबाजीभूरि। नदी रुधिरकीदीन्ही पूरि ॥ पग करसुगड मुंड अरुरुगड। कटेतुरग रथध्वजा बितुगड ॥ परेजासु मधियाद समान। बिलसे घनेघने मयदान ॥ दोहा ॥ यहि प्रकार सबद्योस लरिजानि अस्त गतसूर। युद्धत्यागि डेरणगये उभैभूप बलपूर ॥ करि आहारादिक क्रिया इतउत सुभट समस्त। निशिबितई कथि पार्थको बिक्रम परम प्रसस्त॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभि गामिनाश्रीबंदीजनकाशीबासिरघुनाथकबीश्वरात्मजेनगोकुल नाथेनकविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणि द्वितीयदिनयुद्धसमाप्तिर्नामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २॥

दोहा ॥ व्यर्थ प्रतिज्ञा द्रोणकहँ लखिदूजे दिनभूप । कपट जानितो तनयनृप शोचतभये बिरूप ॥ तीजे दिनके भोरही सबके सुनत अचाय। पाणि जोरिकै द्रोणसों कहतभये अनखाय ॥ जयकरी ॥ रणमें देखिआपुके कर्म। हमैंपर्यो यहजानि अभर्म ॥ मम मम शत्रुनमधि समप्रीति। करि राखत तुमयुगदिशिरीति ॥ तातेनृपहि निकटह्वै पाय। गहो न तुम प्रण दयोभुलाय ॥ जौतुमगहनचाहते ताहि। तौनसकतयमशक्रौपाहि ॥रोला॥ भूपके येबचन सुनिकै कह्योद्रोण बुझाय। नृपति तासोंलहै को जय कृष्ण जासु सहाय ॥ महारथ भटबिदित पुरुष प्रधान योधाएक। देबहम बध-

वाय यहिदिन कहतहौं गहिटेक ॥ आजु बिरचबव्यूह औरन जासुजानत भेद। पार्थहि लैजायकोऊ दूरि कढ़ितजिखेद ॥ द्रोणके येबचन सुनिकुरु-नाथ पायेमोद। पारथहिलैजायसप्तक कियेयुद्धबिनोद ॥ द्रोणतब इतरच्यो अनुपम चक्रव्यूह अमान। तासुमधि अभिमन्यु पैठ्यो गरजि बरषतबान ॥ करिअमानुषकर्म अगणितसुभट बधिसो तत्र । गयोबधि षट बीर बरसो भयोआनँद अत्र ॥ कहैतब धृतराष्ट्र नृप सुनि सूतसुतकी बात। मरणसुनि अभिमन्यु कोमोहिं होत करुणा तात ॥ कहो अब सबदशा तहँकी पृथक् पृथक् बुझाय। गयोबधि अभिमन्यु जिमिधसि व्यूहमध्य सचाय ॥ कह्यो संजयसुनो भूपति द्रोण जिमिकरि ऊह। चक्रव्यूह अभेद बिरच्यो राखि योधाजूह ॥ महारथ भटअयुत कृत अरु कर्णआदिक बीर। सहितमधिमें रह्यो तोसुत भूप अतिरणधीर ॥ पाण्डवन कीसैन सम्मुख लसोद्रोणअ-डोल। रह्यो ताथर नृपजयद्रथ बिदितबीर अतोल ॥ सिन्धुपति के पास होसुत द्रोणको बिख्यात। तीसतो सुतशकुनि भूरिश्रवा शल्य बिभात ॥ लसे सुभट असंख्य सबदिशि कइक मंडलजोरि। कौन योधा जौनता मधिजाय मंडल तोरि ॥ भीम आदिक बीर उतके भिरे धनुटंकारि। भयो ताक्षणयुद्ध सोकहि सकैको निरधारि ॥ तहांअद्भुत लख्यो बिक्रम द्रोणको तेहिकाल। देतभो मढ़िप्रतिभटन पहँ तोमरणको जाल ॥ शरणसों दल पांडवनको मर्दि बिरचतराह। जानचाह्यो धर्मनृप पहँ गहन कीगहिचा-ह ॥ दोहा ॥ इमिदल मरदत द्रोणकहँ निजदिशि आवतदेखि। कहतभये अभिमन्यु सों धर्मनृपति अवरेखि ॥ चक्रव्यूह बिरच्यो कठिन द्रोण बुद्धिबल धाम। हम हूँ जानतनहीं तासुभेद अभिराम ॥ तुम अर्जुनके कृष्णअरु केप्रद्युम्न बलवान। चक्रव्यूहके भेदकहँ जानत औरन आन ॥ जयकरी ॥ ताते दै मम प्रियबरदान। चक्रव्यूह भेदौमतिमान ॥ जाते पार्थ न निंदै मोहिं। सोई करौ समौ यह जोहि ॥ भेदि व्यूहमधि प्रविशौ तात। देहु मोहिं जययश अवदात ॥ धर्मभूपके सुनिये बैन। कहतभयो अभिमन्यु सचैन ॥ तोहित हेत भेदि यहव्यूह। मर्दि शत्रुके सुभट समूह ॥ जाब मध्यमें रचि शरसेत। पै नृप इतनो सुनो सहेत ॥ व्यूह मध्य जैबेकी राह। हम जानत हैं सुनो सचाह ॥ भीरपरे कढ़िबे को ठौर। नहिं जानत सुनु नृप शिरमौर ॥ दोहा ॥ राह प्रगटकरि व्यूह

मधि तुम प्रविशो बलऐन। सोमग गहितो अनुगमन हम सब करवस॰ सैन ॥ भीम कह्यो सुतब्यूह कहँ भेदि देखावहु राह। हम तोसँग अति रथिनको नाशकरब सहचाह ॥ सोरठा ॥ धसब कढ़ब बहुबार सुत तो सँगलखि राह हम। मैं करिहौं संहार गणे गणे भटबरणको ॥ चौपाई ॥ तब अभिमन्यु धनुष टङ्कारे। बोले बचन बीररस भारे ॥ बाणन मर्दि शत्रु भट जूहहि। भेदिअभेद बिकटयह ब्यूहहि ॥ हमप्रविशत तुमलखि मुदधरिये। बिक्रम करतबनैसो करिये ॥ इमि कहिकहो सूतसों कारज। रथलै चलहु द्रोणपहँ आरज ॥ सूतकह्यो सुनु हे भटनायक। द्रोणाचार्यन जीतन लायक ॥ नहिं अति कठिन युद्ध तुम देखे। ब्यूह बिदारब लघु अवरेखे ॥ हौबालकमतिसाहस करहू। बूझिबिचारि काज अनुसरहू ॥ सुनत बचनसुनि हँसि रणचारी। बोलो अर्जुनसुत धनुधारी ॥ कहाद्रोण आदिक भटरूरे। जिन्हें देखि तुम भयसों पूरे ॥ बिष्णु बिश्वजित मातुल ममहै। पिता आरजुन को जेहिसम है ॥ हम लरि इन्द्रहि जीतन चाहत। जाहि संग रहि सुरगण पाहत ॥ चलो सुरथ लै शङ्ख बिहाई। देखहु मम बिक्रम प्रभुताई ॥ यह सुनि सूत हांकि सब घोरे। रथलै चलो द्रोणके धोरे ॥ तीनि बारषिक रथके बाजी। चलेबेगसों गहिगति ताजी ॥ धनु टंकारत बरषत शायक। ता सँग चले सुभट भट नायक ॥ असुर सैनमुख शक्रहि जैसे। चलत चलै सँग सुरगण तैसे ॥ दोहा ॥ इमि आवत अभिमन्युकहँ लखि द्रोणादिकबीर। भिरे यथा घनघोरसों भिरै सतेज समीर ॥ घोरयुद्ध तेहिक्षण मचोकहै कहालों भूप। रुण्डन मुंडनसों मही भई भयानकरूप ॥ चौपाई ॥ मचो घोरसंगर हे आरज। पार्थ तनयकरि अद्भुत कारज ॥ मारि बिदारि डारि सम्मुखसों। इत के भटन पूरिदैदुखसों ॥ पूरि पयोधि प्रलयको पलमें। ब्यूह बिदारि धस्यो मम दलमें। सके न पैठि और भट तितके। राखे रोकि सुभटसब इतके ॥ पार्थसुतहि निजदल मधि लहिकै। इतके सुभट मारु धरु कहिकै ॥ रथी गजी हयसादी योधा। सब दिशि घेरि कियो अवरोधा। आयुध भेद सर्ब सब दिशिसों। मारण लगे भरे अति रिशसों ॥ बाद्य भेद बजवावन लागे। हय गज रथिन नचावन लागे ॥ अब रहु खरो भागु मति कहि कहि। शरझरकरी क्रोधसों नहिं नहिं ॥ तहँ अभिमन्यु

सुभट बर धानुष । भूप करत भो कर्म अमानुष ॥ मण्डलसदृश शरासन करिकै । चक्रसमान सुथलपै चरिकै ॥ अगणित सुभट शीश बिनु कीन्हें । अगणित बिनुकर पग करि दीन्हें ॥ अगणित भटन किये बिनु बाहन । बिनुभट किये असंख्यन बाहन ॥ अगणित धनु ध्वज रथ हय काटे । अगणित द्विरद काटि महिपाटे ॥ अगणित बिधि के अगणित शायक । काटत भयो बीर भटनायक ॥ हियो बेधि अगणित भट मारे । भाल बेधि बहुभट महिडारे ॥ दोहा ॥ यथा त्रिपुरके सैनमधि पूर्व लसे त्रिपुरारि । तिमि ममदलमधि लसत भो पार्थतनय धनुधारि ॥ तेहिक्षण भट अभिमन्यु सों ह्वै मर्दित रणधीर । बंधुपिता सुत तजि भजे नेभट बिदित सुबीर ॥ सोरठा ॥ निजदल बिचलत देखि दुर्योधन अनरथ समुझि । बरषत शायक तेखि भिरत भयो अभिमन्यु सों ॥ चौपाई ॥ तासों भिरत भूपतिहि देखी । द्रोणमहा अनरथ अवरेखी ॥ कहतभये सुभटन सों ततक्षण । सादर करहु भूपको रक्षण ॥ सुनि कृपकरण वृहद्वल राजा । शकुनि शल्य शल सहित समाजा ॥ कृतवरमा अरु अश्वत्थामा । भूरिश्रवा भूरिजय कामा ॥ पौरव अरु वृषसेन उजागर । सहित द्रोण सब बिक्रम सागर ॥ करि करि कोदण्डन को करषण । लगे पार्थसुत पै शर बरषण ॥ काटि असंख्यन शायक इनके । बरषि बाण दिनमणि रणदिन के ॥ क्षणमें सबहि पराजित करिकै । गरज्यो पार्थ तनय मुद धरिकै ॥ तब ये सहे न गरजनि तासू । फिरि फिरि फिरि अभिरत भे आसू ॥ सब दिशिसों अभिमन्युहि घेरी । अब मति भरमि भागु इमि टेरी ॥ बरषणलगे बाण अनियारे । जेसपक्ष अहिसम भयकारे ॥ काटि शरनसों सबकेबाणनन । भट अभिमन्यु पुरुष पञ्चानन ॥ सबके तनमधि शायक मारे । लखि सब अद्भुतकर्म बिचारे ॥ तब सिगरे भट कोपित ह्वैकै । चक्रसमान चरत तेहि ज्वैकै ॥ भांति अनेक बाण झरि कीन्हे । सब अभिमन्यु व्यरथ करि दीन्हे ॥ रविके किरण सदृश बरभाके । सब थर पूरि रहे शरताके ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण दुस्सह हनतभो अभिमन्युहि नवबान । हनत भयो द्वादश बिशिष दुःशासन बलवान ॥ द्रोणहने सत्रह बिशिष कृतबरमा शर सात । हनो बिबिंशत क्रोधकरि सत्तरि शर अवदात ॥ कृपाचार्य्य भूरिश्रवा तीनि तीनिबर बान । हने तासु षट हनत

भो सङ्कनरेश अमान ॥ हने वृहद्बल आठशर अश्वत्थामा सात। दुर्यो-धन नृप हनत भो तीनि नराच बिभात ॥ सोरठा ॥ शकुनि महीप प्रवीण दोय बाण मारतभयो। तीन तीन शर पीन हन्यो सबहि अभिमन्यु भट॥ चौपाई ॥ असमक नृपको सुवन तरपिकै। अति तीक्षण दशबाण अरपि कै॥ थिररहु थिररहु कहि रणचारी। बहुरि कियो योजित शर भारी॥ लखि अभिमन्यु गर्वगहि मनमें। मारि बाणदश ताही क्षणमें ॥ हय सारथी ध्वजा धनु तासू। काटि शीश काटत भो आसू॥ ताहि मरत लखि भरि अति भयसों। इतके सुभटमोरि मन जयसों॥ शोचन करि सनीर चख नीरज। भागत भये दूरि करि धीरज ॥ ताक्षण बिचलत लखि निजसेना। करण द्रोण कृप शल जगजेना ॥ सोमदत्त कृप अश्व-त्थामा। भूरिश्रवा शल्य गुणधामा ॥ वृन्दारक वृषसेन सुबीरा। नृप सुखेन अनुपम रणधीरा॥ सुभट कुण्डभेदी नरनाहू। भूप बिबिंशत दीरघ बाहू ॥ नृपति प्रबाहु ललित्थ प्रतर्दन। दुर्योधन घनसदृश नन-र्दन ॥ गरनि घेरि तजि जियको भरषा। करीपार्थ सुतपै शरबरषा॥ अगणित बाण भटन के सहिकै। अगणित बाण काटि बिधि गहिकै॥ मारत भयो करणके तनमें। अतितीक्षण शरगहि प्रण मनमें ॥ सो शर भेदि करण के गातहि। अतिदुख दयो भूपतो तातहि ॥ ह्वै बेधितका-प्यों सो परणी। जिमिगिरि कंपत कँपेते धरणी ॥ दोहा ॥ बहुरि वरषि शर भटन पहँ बधिसुषेन कहँबीर। दीर्घ लोचनहि बधतभो हनि अति तीक्षण तीर ॥ बन्यो कुण्ड भेदी भटहि हनिअति तीक्षण बान। रचत भयो शरसेत फिरि पार्थ तनय बलवान ॥ मारे करण पचीस शर अभि-मन्युहि तेहिकाल। अश्वत्थामा हनतभो बीसबाण बिकराल ॥ सोरठा ॥ रचि सब दिशि शरजाल शक्रात्मज को आत्मज। मर्यो बाण बिशाल शल्य भूपके हृदय मधि॥ वसुकला ॥ वह लगेबान। सोनृप अमान ॥ शर धनुषडारि। युतभुज पसारि ॥ तजि चेतमोहि। गिरिपर्यो सोहि ॥ बर बल निकेत। शल्यहि अचेत ॥ सब सुभट देखि। अनरथ सरेखि ॥ मन भीतमेरि। भगिचले फेरि ॥ तहँलसो धीर। अभिमन्यु बीर ॥ जिमि बनयनाह। गजगोल माह ॥ दोहा ॥ यहसुनि दुखलहि वृद्धनृप कह्योक-हो तेहिठौर। भिरत भयो अभिमन्युसों कौन सुभट करिगौर ॥ संजय

बोले तेहिसमय तोदल सागर ताहि। मथत पर्थसुत मन्दरहि अनुज शल्यको चाहि॥ धनुटंकारि प्रचारिके डारिदीह दशवान। अभिमन्यु हि हय सूतसह ताड़ितकियो अमान॥ सोरठा॥ हनि तीक्षण शरभूरि काटि बाहु धनु छत्र ध्वज। पार्थतनय रथतूरि तासुशीश छेदन कियो॥ चौपाई॥ तासु मरणलखि अनुचर ताके। रथी गजी हयसादी वाके॥ मारुमारु धरुमारु पुकारत। बरषत बाण धनुष टंकारत॥ पार्थसुतहि सब दिशिसों घेरी। लगे प्रहारण थिरुथिरु टरी॥ तेहि क्षल पार्थतनय ब्यवसाई। दरशायो बिक्रम अधिकाई॥ सिखी कृष्ण अर्जुन सोंजेती। कीन्हो प्रगट अस्त्रबिधि तेती॥ धनुष अलात चक्रसम करिकै। घूमि असंख्यन शरपरि हरिकै॥ द्रोणादिकन भटनकहँ डाटत। तिनके हने बाण सब काटत॥ शल्य अनुज नरपतिके दलमें। पारत भयो प्रलयतेहि पलमें॥ पलमें बधे अनगिने हाथी। रथी गजी घोरे सहसाथी॥ ह्वैमर-दत बहुभट भयपागे। तजि रणखेल खेततजि भागे॥ सो दल मरदि बीर उत्करष्यो। शर द्रोणादिभटन पै वरष्यो॥ तेहिक्षण तासु पराक्रम देखी। द्रोणहियो आनँद सों भेखी॥ कृपसों कह्यो लखौ हे आरय। करत पार्थसुत कैसो कारय॥ अनुपम पिता पुत्रये दोऊ। नहिं इनसम रण कोबिद कोऊ॥ पार्थ सदृश यह यहिसम पारथ। तिहुंपुर जीतन योग यथारथ॥ गहि अपूर्ब बिधि करषि शरासन। आज चहत यह सब दल नाशन॥ दोहा॥ द्रोणाचारय के बचन सुनि सुप्रशंसा तासु। कर-णादिक सों कहतभो दुर्योधन गहिगासु॥ अभिषेकित धनुधरण को शीक्षक द्रोणाचार्य। करत नहीं अभिमन्युके मरिबे लायक कार्य॥ रोला॥ शिष्यपुत्र सु शिष्य के ये पुत्रवत श्रुतिबैन। बचन सो गुणि ताहि रक्षत मूढ़ बिक्रम ऐन॥ जौन ममहित होयकरिबो तौन गुणि निजधर्म। करौं बध अभिमन्युको निज प्रतिम करि करि कर्म॥ सुनत दुःशासन बचन यह कहतभो गहि भर्ब। बधत हैंहम याहिठाढ़े लखैं योधा सर्ब॥ भाषि इमि करि मुदित भूपहि गरजि धनुटंकारि। जाय सम्मुख पार्थसुत के भयो भिरत प्रचारि॥ क्रोधकरि अभिमन्यु मारे बाण छब्बिसताहि। ताहि दुःशासन हनतभो बाण चौदह चाहि॥ चक्रसम रथ दुहूं दिशिते फेरि फेरि सक्रोध। लरे करि करि शरबरणसों शरणकों अवरोध॥ कहो

तो सुत बीर सो अभिमन्यु सत्व अगाध। सभामधि हठि किये तुमगहि बसन जो अपराध॥ आजुलेहौं बैर सोतो नाशकरि यहिकाल। भाषि ऐसो हन्योताके हिये बाण बिशाल॥ दोहा॥ अति तीक्षण सो शरधस्यो हियमधि पुंख प्रमान। मार्यो फेरि पचीस शर पार्थतनय बलवान॥ तब मूर्छित ह्वै सुरथपै गिरत भयोरणधीर॥ रथलैभागो सारथीदुखित भयो रणधीर॥ सोरठा॥ तो सुत भूपतिदेखि दुःशासनकी दुरदशा। महा व्यथित ह्वै तेखि कह्यो धनुर्धर करणसों॥ चौपाई॥ अर्जुनसुत ममदलमधि धसिकै। द्विरदन मध्यसिंहसम लसिकै॥ बिरचत चण्ड तरणिकी नाई। सब कहँबधचाहत यहिठाईं॥ निज बिक्रम प्रगटित करिआसू। मित्रकरहु अबतुम बधतासू॥ सोसुनि करण क्रोधअति कीन्हें। तापहँ शरपंजर करि दीन्हें॥ काटिअसंख्य बाणअनिआरे। तिहि सत्तरि शरकरणहि मारे॥ ताहू क्षण द्रोणादि गगनसों। लरतरहो सो पूरोप्रणसों॥ अगणित निव्य अस्त्र भयमाड़त। भोअभिमन्यु करण पहँ छाड़त॥ राम शिष्य अस्त्रनकी झरि कै। वार्यो सकल अस्त्रप्रण धरिकै॥ शर झरिक़रि करणहि कहि मोहित काट्यो धनुष पार्थसुत को हित॥ जौलगि करण गह्यो धनुवाना। तौ लगि हन्यो अनगिने बाना॥ गहि धनुआन करण धनुधारी। बारतभयो बाण झरिभारी॥ फिरि अभिमन्यु धनुष बिधि ठाट्यो। सूतसुवन को धनु ध्वज काट्यो॥ लखियहदशा गोलसों कढ़िकै। भिरो सूतको लघु सुत बढ़िकै॥ तिहि दशबाण हन्योतेहि क्षणमें। प्रबल पार्थसुत भटके तनमें॥ तब अभिमन्यु महत शरमारे। काटि तासु शिर महिपै डारे॥ निरखि बन्धुको बधढे राजा। करण व्यथितभो सहित समाजा॥ दोहा॥ तब करणानुज के सुभट रथगज तुरँग बढ़ाय। भिरि अभिमन्यु सुबीर कहँ दिये शरण सों छाय॥ तिनमें अगणित भटनकहँ बधिनिशंक रण-धीर। मर्दि पराजित करतभो अगणित भटन सुबीर॥ फिरि करणहि बेधत भयो मारि अनगिने बान। तब चढ़ि चंचल तुरँग पै करण भगो तजिसान॥ सोरठा क्रोध गर्बसों पूरि यहिबिधि करणहि बिमुख करि। बरषत भो शरभूरि और भटन के रथनपै॥ भुजङ्गप्रयात॥ बली बीरबीराधि को बारबांको। दल्यो तो दलै जोवलैचारिघाको॥ करी रुण्ड मुण्डानमें मेदिनीये। नदी लोहुकीभीरुही खेदनीये॥ गजीबाजि सादीरथीके गरद्दें।

डरे तासुमारे अरेमारु रट्टें॥ घने पाणिऊरू परेतासु काटे। लसेतेमनो-जादके जूहपाटे॥ दोहा॥ बहु बिनुपग बहुबिनुचरण बहुबिनुकर बिनु मुण्ड। लखेतासु काटेबिना बहु बिनुमुण्ड बितुण्ड॥ मरे अधमरे अध कटेकटे लटेभट भूरि। भूपलखजहँ पार्थसुत युद्धरच्यो रिसपूरि॥ अग-णित हयगज रथनके कटेपरे सबअंग। धनु ध्वजक्षत्र किरीटबहु लखेतासु कृतभंग॥ सोरठा॥ बिदित धनुर्द्धर उद्ध श्रीअभिमन्यु उदण्ड भट। काल रुद्रसम क्रुद्ध बिलसत भो तोसैनमधि॥ चौपाई॥ ऐसोतासु पराक्रमसुनि कै। बूझतभयो वृद्धनृप गुणिकै॥ इबिधि कुमार अकेलेआयो। मम दल मध्य करत मनभायो॥ तब भीमादि बीरबर गाये। रहे कहांतहँ कत नहिंआये॥ सजयकह्यो सुनो नयगामी। चरोभाय धर्मजय कामी॥ सात्विकि धृष्टद्युम्नभट नागर। द्रुपद बिराट बुद्धिबल सागर॥ धृष्टकेतु आदिक भटरूरे। चले तासुपीछू बलपूरे॥ भट अभिमन्यु बिदित धनु-धारी। धस्यो सैनमधि ब्यूह बिदारी॥ भीमादिकन भटनसो भिरिकै। राख्यो रोकि जयद्रथ थिरिकै॥ सुनि धृतराष्ट्र कह्योसुनि येहू। संजय मोहिंभयो सन्देहू॥ भीमादिकपर सुभट समाजा। रोक्यो तिन्हैं जय-द्रथ राजा॥ भीषमद्रोणजिन्हैं नहिंजीते। तेकतभे बिक्रमसों रीते। जाते रोकि जयद्रथ राख्यो। कहौभेद ममन अभिलाख्यो॥ संजय कह्यो सुनो मनभावत। भेद तुम्हैंहम भूपबतावत॥ द्रुपदसुतहि जब बनसों हरिकै। चल्यो जयद्रथ लै प्रणधरिकै॥ जीत्यो ताहि भीमतेहि क्षणमें। तबनृप अतिगलानिकरि मनमें॥ रहि एकान्त करिसमदम साधन। सबिधि शम्भुको कियो अराधन॥ दोहा॥ कछुदिनमें हरस्वप्नमें कह्यो मांगु बरदान। तबहिं जयद्रथ भूपयह बरमांग्यो मनमान॥ सदलसर्ब पांडवनकहँ रणमेंकरि बिनुगर्ब। जीतिअकेले आड़िहम राखैंदीजै सर्ब॥ कह्यो शंभुबिनु आरजुन लहिहौ सबसों जीति। नृपतेहि बरके भेवइमि राख्योआड़ि सनीति॥ सोरठा॥ सदल जयद्रथ भूप लरिससैन पांडवन सों। करो भयानकरूप युद्धभूमि अतियुद्ध करि॥ चौपाई॥ शायक बर-षत ब्यूह बिदारत। मगजानन हित गजबधि डारत॥ जेहि मगगयो बिदित धनुधारी। पार्थतनय अनुपम रणचारी॥ सो मगकियो भटन सों पूरित। सैंधवनृप हरबरसों नूरित॥ पांडव सदल न आवन पाये।

किये कितक बिक्रम मनभाये ॥ मम दलमध्य अकेलो धसिकै। भट अभिमन्यु भटनसों गसिकै॥ बिशद बीर अतिबिक्रम कीन्हों। अगणित भटन स्वर्गपुर दीन्हों॥ रथ समूहसों घेरित ह्वैकै। वृषसेनहि अति गरबित ज्वैकै॥ तासु धनुषध्वज शरसों काटे। सूतहिमारि हयन कहँ डाटे॥ रथलैभगे सूतबिनु बाजी। मरदतनिज पैंदर भटराजी॥ तब निज रथहिबढ़ाइ बिशारद। शत्रुनबर बिक्रमको भारद॥ अगणित बाण धनुषध्वज काटत। भो बसातपति भूपहि डाटत॥ तिहिनृप साठि बाण अनियारे। ताहीक्षण अभिमन्युहि मारे॥ तब अभिमन्यु अरुण करिईक्षण। किये तासुबध हनिशर तीक्षण॥ भरे क्रोध इत अगणित योधा। शर बरषतहैं करिअवरोधा॥ करि अभिमन्यु बाणबिधि शोधन। होतहँ मर्दत अगणिते योधन॥ काटि असंख्यन शर सबहीके। भयो बधत अगणितभट नीके॥ दोहा॥ सबके बहुशर काटिसहि हनिसब के तनबान। लशतभयो अभिमन्युतहँ बिचरत शक्रसमान॥ सिगरो भट अभिमन्युपहँ इमि डारतहैं बान। जिमिगिरि शृंगहि घेरिकै जल बरषत जलदान॥ बधत रह्योबहु भटनकहँ यहिबिधिसों दृढ़घाय। जिमि सागर मथि महतझष लघु मीननकहँ खाय॥ बोरठा॥ पार्थतनय बल धाम सरत चक्रसम भ्रमततहँ। भयो अलख तेहियाम निजपुर शरके जालमधि॥ महिखरी॥ तहँ गोलबहु यहिओरके। भजिचले सुभट अथोरके अभिमन्युके शरघातसों। जिमिपात रंध्रस बातसों॥ तब शल्यनृप बलधामको। सुत रुक्मरथ शुभनामको॥ इमिकह्यो सबसों टेरिकै। फिरि लरहु दुन्दुभि झेरिकै॥ हम बधतयहि बरबाणसों। कैलेत गहि सहप्राणसों॥ इमिभाषि धनु टंकारिकै। अभिमन्यु भटहि प्रचारिकै॥ हँकवाइरथ अतितोरसों। शरतीनि मार्‌यो जोरसों॥ अभिमन्यु तबअति कोपसों। भरि बीररसको ओपसों॥ भोबधत ताकहँ डाटिकै। शिरकाटि युगभुज काटिकै॥ बध रुक्म रथको देखिकै। तबतासु अनुचर तेखिकै॥ बरबुद्धि बिक्रम बेषके। जेजैन सैन अशेषके॥ भटराजसुत शततरपिकै। तेहिघेरि शायक अरपिकै॥ तहँ दयेताहि अदेखकै। बधकरण को अवरेखिकै॥ अभिमन्यु तबभट ठानसों। गन्धर्वअस्त्र बिधानसों॥ तहँ बिचरि तनको नाशकै। भोनदत बदन सहासकै॥ सोदेखि इतअति त्रास

भो। तोसुतहि शोचउसासभो ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण दुर्योधन नृपति सह चतुरंगिनि सैन। बढ़िंतासों भिरिघरिकलरि नहिंथिरि सको सचैन ॥ यह सुनिकै धृतराष्ट्रनृप कहेतासु रणकर्म। सुनि संजय मोहिं लगतहै अति आश्चर्य समम ॥ बिमुखभयो मोसुवननृप तबकेभट रणधीर। ता सोंभिरे प्रचारिकै कहो बुद्धिगम्भीर ॥ सोरठा ॥ संजयकहो नरेश भगत देखि दुर्योधनहिं। डरपि त्यागिसो देशभगी सैनसब कौरवी ॥ चौपाई ॥ दल बिचलत लखिकै कृतबरमा। द्रोण द्रोणसुत पूरित परमा ॥ शकुनि वृहद्बल कर्ण सुबीरा। दुर्योधन भूपति रणधीरा ॥ अति बिक्रमकरि करि धनुकरषत। भयेपार्थ सुतपै शरबरषत ॥ तहँ अभिमन्यु अकथरण कीन्हें। क्षणमें तिन्हें बिमुख करिदीन्हें ॥ तिन्हें बिमुख लखिकै तेहि क्षणमें। लक्ष्मण कुंवर कोपकरि मनमें ॥ थिररहु अबन भागुयहि रट सों। भिरतभयो अभिमन्यु सुभटसों ॥ तहँ लक्ष्मणहिं भिरत लखि तासों। फिरेद्रोण आदिक भरिभासों ॥ तेयुगबन्धु सुबीर पररूपर। लगे हनन अति तीक्षण शरबर ॥ अबतू मरिदेखत यमलोकहि। इमि सुनाय लक्ष्मण बलओकहि ॥ मारि क्षुरप्र सुबाण अदूषित। काटेउ चारुशीश मणि भूषित ॥ बधि लक्ष्मणहिं पार्थसुत तरज्यो। पुरुषसिंह सिंहहि सम गरज्यो ॥ लक्ष्मण मर्यो भूप तेहि पलमें। हाहाकार मच्यो यहि दलमें ॥ शोकाकुल नृप धीरज धारत। मारु मारु इमि भयो पुकारत ॥ तबकृप द्रोण करण कृतबरमा। सुभट वृहद्बल भूप अभरमा ॥ अश्वत्थामा भट धनुधारी। येपट महारथी रणचारी ॥ धनुटंकारि भिरे अति रिस सों। बरषणलगेबाण सबदिशि सों ॥ दोहा ॥ तहँसब दिशिशरसेत रचि तिनसब कहँ बिचलाय। पलटि जयद्रथ पहँचलो भट अभिमन्यु सचाय ॥ तबतेहि अतरमधि रहे जेते नृपभट जूह। तेसब आड़तभे बरषि तीक्षणबाण समूह ॥ क्राथनृपति कोपुत्रअरु अरु कलिंग पतिभूप। अरु निषादपति सदल ये बिदित भयानक रूप ॥ सोरठा ॥ अगणित योधन मारि काटि असंख्यन बाणतहँ। भट अभिमन्यु प्रचारिबध्यो क्राथनृपके सुतहि ॥ चौपाई ॥ बिदितबीर अद्भुत रणकरता। धीरधुरीनधराधुरधरता ॥ क्राथसुवनकेजूझत राजा। भीतिभगेसबसुभट समाजा ॥ फिरिकृप द्रोण कर्ण कृतबरमा। भूप वृहद्बलपूरित परमा ॥ अरु अश्वत्थामा धनुधारी।

येषट महारथी रणचारी ॥ घेरिताहि धनुकर्षण लागे। बाणजाल बहु बर्षण लागे ॥ तेहिक्षण भीमादिक भटरूरे । अति बिक्रम कीन्हें बल पूरे ॥ सदल जयद्रथ इमिशरछाये । नहिंसुतके ढिग आवन पाये ॥ करि अभिमन्यु बीरबिधि पालन । तिनषट रथिन बाणके जालन ॥ छायकाटि अगणितशर तिनके । बचै न तरु गणलागे जिनके ॥ बाणपचास द्रोण कहँमारे । वृहद्बलहि शरबीस प्रहारे ॥ असीबाण कृतबरमहि हनिकै। मारे कृपहि साठिशर गनिकै ॥ दशशर मारे अश्वत्थामहि । एकसुबाण कर्णबल धामहि ॥ हनि अमोघ अतितीक्षण तीरहि । बधत भयो वृन्दारक बीरहि ॥ ताहि पचीस बाण अनियारे । मारिद्रोण सुत धनुटंकारे ॥ हन्यो द्रोणसुत कहँशर चोखो । पार्थतनय भटबीर अनोखो ॥ बहुरिद्रोणसुत धनुटंकारी । हने ताहि शर साठि प्रचारी ॥ दोहा ॥ अगणित शर सब भटनके काटि सुभट अभिमन्यु । फिरि अश्वत्थामहि हने तीससुशर करिमन्यु ॥ शतशर मार्यो द्रोणतेहि कृपाचार्य्य दशबान । अश्वत्थामा आठशर बाइस कर्ण अमान ॥ मारत भतो पचासशर नृपति वृहद्बलबीर। गरजत भोहनि बीसशर कृतबरमा रणधीर ॥ सोरठा ॥ भट अभिमन्युअमान भ्रमत चक्रसम बरषिशर । दश दश तीक्षण बाणहनत भयोसब भटन कहँ ॥ महिखरी ॥ फिरि कोशलपति वृहद्बल को बेधि तीक्षण बाक्षण सों। नृपकाटि धनुध्वज सूततुरगन बधे शरहनि ठानसों ॥ ह्वै बिरथ बिधनु महीपसों असिचर्म गहिरथ त्यागिकै। भो चलत भट अभिमन्युपहँ अति क्रोधसों मनपागिकै ॥ तिमिदेखि तेहिअभिमन्यु ताक्षण बाण तीक्षण मारिकै। हियबेधि करिबध तासु गरजत भयो धनुटंकारिकै ॥ दशसहस योधाबधे तबलों पार्थसुत तेहिदिनतहां । भटद्रोण आदिक दुसह बिक्रम करतहे सबक्षण जहां ॥ बधि वृहद्बल नरपतिहि भट अभिमन्युधनु टंकारिकै । शरकर्णि मारेकरण भटके कर्णमधि हुंकारिकै ॥ फिरि हने बाण पचास कर्णहि कर्णतितने तेहिहने । इमिलरि परस्परउभय श्रोणितभरे तनअनुपम बने ॥ षटसचिव हेभटकर्ण केअति प्रबल परदल दरगने। तेहिसमय तिनकहँ बधतभो अभिमन्यु हनिहनि शरघने ॥ फिरिमारि दश दश बाणसब कहँबाण सबके काटिकै । मगधेश केसुत अश्वकेतुहि बध्यो धनुबिधि डाटिकै ॥ दोहा ॥ कुंजर केतन भोजनृप कोबध करितेहि

काल। चरत चक्रसम भटनपहँ रचतभयो शरजाल॥ दुःशासन केसुत हनेअभिमन्युहि दशबान। ताहिसात शरहनत भोभट अभिमन्यु अमान॥ मारि सातशर कहतभो भागिबचो तोतात। अबयहि क्षणतोहिंबधत हौं मरिबाण अवदात॥ सोरठा॥ इमि कहिकै जय कार्य्य बाणबज्र सम हनतभो। सोशर द्रोणाचार्य्य काटिदये शरतीनसों॥ चौपाई॥ तब अभिमन्यु कोप अतिकीन्हों। केतुद्रोण कोद्वैकरि दीन्हों॥ तीनिबाण नृपशल्यहि मारे शल्यताहि नवबाण प्रहारे तब अभिमन्युकाटि ध्वज तासू। बधि सारथिहि मारिशर आसू॥ षटशर हनेशल्य कंतनमें। मुरछित भयोभूप तेहि क्षणमें॥ तब अभिमन्यु बिदित भटनायक। शत्रुंजयहि बध्यो हनि शायक॥ बध्यो चंद्रकेतुहि रणकरकश। बध्यो सूर्य्य मासहि करि शरकश॥ मेघवर्चसहि बधि महिडार्‌यो। बधि सुवर्चगहि धनु टंकार्‌यो॥ बधिइन पांचभटन भटनोखो। शकुनिहि हनत भयोशर चोखो॥ सौबल ताहि तीनि शरमारी। चिन्तित भो अतिप्रबल बिचारी॥ अद्भुत तासुयुद्ध बिधिदेखी। द्विजसों कह्योकर्ण अवरेखी॥ शक्रसमान सुयुद्ध बिसारद। शक्र सुवनको सुत रणभारद॥ अबिरल बाण बज्रसम बाहत। क्रमसों सबहि बधन यहचाहत॥ रुद्रसरिस रणबिधि अवगाहत। दावानलसम दल बनदाहत॥ यहगुणि दयाधर्म मति गहिये। अबयाके बधकी बिधि कहिये यहसुनिबोलेद्रोणाचारय। आजु करतयह अद्भुतकारय॥ सबदिशि धनुमण्डल दरशावत। कोऊसुभट सिंधिनहिं पावत॥ दोहा॥ काटतसब के बाणअरुमारत सबकहँबान। निजपर शरके जालमधिबिचरतचक्र समान॥मारि मारिशरबज्रसम कीन्हेसिपीड़ित मोहि। तऊमोहिंअति होत सुखतासु पराक्रम जोहि॥ सोरठा॥ यहसुनि करण बिचारि कहत भयो इमिद्रोण सों। आजुहि सबदल मारिदेन चहतयह पितुहि जय॥ चौपाई॥ गुणिनिज धर्महि धीरज धरिकै। हैंअबहम इतठाढ़े अरिकै॥ नातरुतासु शरणके धावन। चाहत पीड़ितप्राण परावन॥ सुनि यह सूत सुवन की बानी। द्रोणाचार्य्य कहो अनुमानी॥ हमअर्जुनहि दये मनमानत। कवच अभेद्य तौनयह जानत॥ जोबधि सकहुतासु हयसूतहि। काटिसकहुजो धनु मजबूतहि॥ पहिले बिरथ बिधनुकरि पाछे। लहिहौ बधिबेकी बिधि आछे॥ सरथ सधनुयहबिचरतजबलों। सकै न जीतिसुरासुर तबलों॥यह

सुनिकरण धनुषबिधिठाटे। प्रथमहि तासु शरासनकाटे ॥ भोजभूप अश्वन बधिडारे। उभयपारस्निनगौतममारे ॥ तिमिहिसारथीकोबधकीन्हों। बाण तानिकै चोखो चीन्हों ॥ इमिकरि बिरथ बिधनु मुद लीन्हे। सिगरे रथी बाणझरिकीन्हे ॥ तब अभिमन्यु चर्म असि गहिकै। बलसों कूदिगगन मधिरहिकै ॥ घनसम गरजत बिक्रमअतिसों। भ्रमतभयो असि बिधिकी गतिसों ॥ तब सब गुणि निपतत मम मूरध । तकि तकि तजन लगे शर ऊरध ॥ तहां द्रोण करि सबिधि निरीक्षण। काटो खड्गमारि शर तीक्षण ॥ तब राधेयबीर दृढ़ घायक । काटो चर्म मारि बहु शायक ॥ ह्वै बिनु खड्ग चर्म रिसिछायो । फिरि अभिमन्यु भूमिपै आयो ॥ दोहा ॥ गरजि सिंहसम बीर तब लै रथांग दृढ़चक्र । चलो द्रोणपहँ बेगसों करि दीरघ भ्रू बक्र ॥ चक्रपाणि सम लसतभो चक्रगहे सो बीर । देखि भयानक रूप तेहि भे सब सुभट अधीर ॥ आयत चख कुन्तल बिशद रुधिर भरो बरगात । अनुपम भट अभिमन्यु तहँ अनुपम भयो बिभात ॥ सोरठा ॥ लगे अनगिने बाण चूरचूर भो चक्र वह । तब अभिमन्यु अमान गहत भयो अति गुरुगदा ॥ चौपाई ॥ गहि गुरुगदा पुरुष पञ्चानन। चलो द्रोणसुतको तन भानन ॥ लखि तेहि गुणि करता बध रुजको । रथ तजि कूदिगयो सुत द्विजको ॥ तब बधि सूत तुरँग सब तासू। बध्यो कालिकेयहि हनि आसू ॥ मरण बन्धुको लखि तेहि क्षणमें । शकुनि भयो शोकाकुल मनमें॥कालिकेय भटके अनुचारी। सात बधे गुरुगदा प्रहारी॥ बहुरि बधे दशरथी बसाती। पार्थतनय अरि सैन बिघाती ॥ रथी सात बधि कैकय थरके । बध्यो द्विरद दश दीरघ करके ॥ कूदि जाय करि शृंगष सनिसी। हनि प्रचारि गुरुगदा अशनिसी ॥ दुःशासन के सुतके रथके। बधि तुरंग सब गरुवे गथके ॥ तब तो तनय तनय भट भारी। दीर्घ गदा गहि भिर्‌यो प्रचारी ॥ ते युग बन्धु बिदित रणकरता। बधि परदल शोणितनद भरता ॥ हांकि हांकि सब दिशि चरि चरिकै। बिधिवत गदायुद्ध करि करिकै ॥ मुरछित ह्वै ह्वै महिपै गिरि गिरि। राजत भये मृतकसम थिरि थिरि ॥ महा श्रमित बलबुद्धि निकेतन। पार्थतनय न प्रथमभो चेतन ॥ चेति प्रथम उदभट रण करकश। दुःशासनको सुत अति धरकश ॥ उठो सँभारि भुजनतन देखत । तेहि अचेत लखि बध

अवरेखत ॥ दोहा ॥ दीर्घ गदागहि व्योम भरि करिकशीश मनमान। हन्यो तासु शिर मधि तबहि भो कुमार गतप्रान ॥ द्विरद यूथसम दल मरदि पार्थतनय जयकाज। रणमधि परो अप्राण ह्वै यथा बधो मृगराज ॥ निजकर मारे दशसहस योधन सहित अनूप। लसो लसत तारन सहित जिमि सुधांशु शुचिरूप ॥ मत्तिखरी ॥ तहँ रुण्ड मुण्ड असंख्य मधि इमि लसो सो शोणित मरो। बहु राहु केतु अनेक सँगलै सूर मनु सोवत परो ॥ ढिगजाय निरखनलगे तेहि सब सुभटह्वै सबदिशि खरे। मनु गिरो महिपै इन्द्र धनुषहि लखत जन अचरय भरे ॥ लखि मरोभट अभिमन्यु कहँ तो तनय अति आनँद लह्यो। बहु सुबुधिजन लहि दुसह दुख भो युद्ध अधरम इमि कह्यो ॥ तहँ किते भट अभिमन्युकी बरबीरता बरणत भये। अरु तासु शरसों भिदे पीड़ित किते सुख दुख सँगलये ॥ दोहा ॥ जानि मरण अभिमन्युको पांडवभट समुदाय। मोहित ह्वै जो दुखलहो सो कासों कहि जाय ॥ इतने में सन्ध्या निरखि जय दुन्दुभि बजवाय। आवत भयो निवास थर कुरुपति सदल सचाय ॥ सोरठा ॥ शोकाकुल भरि मोह पाण्डव निज डेरन गये। शोचत दुसह बिछोह छोह पात्र अभिमन्यु कर ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणि अभिमन्युबधवर्णनोनामसप्ततीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दोहा ॥ तेहि तीजे दिनकी रजनि मधि अति दुखसों ग्रस्त। धर्मनृपति कहँ घेरिउत बैठे नृपति समस्त ॥ बरणि बरणि अभिमन्युके गुण विक्रम अभिराम। नृपति युधिष्ठिर करतभे अति बिलाप तेहियाम ॥ गीता ॥ गहे करुणा करत जहँ नृपधर्म पूरित मोह। तहां आये व्यासमुनि लखि समय करिअति छोह ॥ देखि व्यासहि धर्मनृप बैठारि करि सत्कार। कह्यो जिमि लरिगयो बुधिबर बिदित सुभट कुमार ॥ शोक दुखसोंभरो भूपहि जानि बोले व्यास। भूप करुणा त्यागकरि अब करो धीरज पास ॥ मृत्युलोक प्रसिद्ध यह जो धरत तन इतआय। मृत्युवश सो होत बिधिवत समय बिरचित पाय ॥ बचन यह सुनि धीरधरि इमिकह्यो नृपति

अचाय। मृत्युको किमि भई प्रगटित कहो मुनि समुझाय ॥ धर्मनृपको बचन यहसुनि कह्यो मुनिवर व्यास। सुनो भूपति कहत हैं हम पूर्वको इतिहास ॥ नृप अकम्पन सों कह्यो जो नारदमुनि तपधाम। पाप दुख शोकघ्नह्व इतिहास सो अभिराम ॥ रह्यो सतयुगमें अकम्पन भूप सो रणमाह। युद्धकरि अतिघोर अरिबश भयो हे नरनाह ॥ तासुसुत अति प्रबल हो हरिरहो ताको नाम। मर्यो सो तेहिठौर करिकै परम दुस्तर काम ॥ पुत्र बिक्रमसों अकम्पन बिजय तेहिदिन पाय। तदनु शोकाकुल भयो निज मरणपै मनलाय ॥ जानि भूपहि शोकबश तहँ सुमुनिनारद आय। भये बैठत यथा बिधि सत्कार बिधिवत पाय ॥ करत करुणा भूप सुतको बरणि गुण व्यवसाय। कियो नारद सुमुनि सों नृप प्रश्न यह सुखदाय ॥ शक्रसम अति बिक्रमी ममपुत्र बलबधि भौन। मृत्युके बश भयो मुनिको मृत्यु कहिये तौन ॥ बचन यहसुनि कह्यो नारद सुनो नृप मतिमान। कहतहैं हम जन्म आदिक तासु सबव्याख्यान ॥ प्रथम बिरचो जगत जब बिधि बिरचि भौतिक भूरि। जननके समुदाय सो तब गयो सब जग पूरि ॥ रही उत्पति होत तब नहिं होत हो संहार। भई पीड़ित भूमि तबलहि जननको अतिभार ॥ जायजाते होत क्रमसों नाश सो उपचार। रचनको बिधिकियो शोचन लही तासु निकार ॥ लहे बिनु उपचार बिधिके क्रोध भो त्यहिकाल। भयो प्रगटित चखन सों तब ज्वाल जाल कराल ॥ लगो भस्मित होन तासों सकल जगत सत्रास। देखि सो करि दया पशुपति गये बिधिके पास ॥ देखि शिवहि बिरञ्चि बूझो आगमनको काज। कह्यो शिव केहिहेत जारत सकल भूत समाज ॥ यत्नकरि जेहि रच्यो तेहि मति इबिधि नाशो नाथ। क्षमो क्रोधानलहि सुनि ममबिनयहोइ न नाथ ॥ शंभुकेयेबचनसुनिकै बारिजासनईन। करी क्रोधानलहि फिरि निज आत्मामें लीन ॥ लीनबिधिमें भयो क्रोधजअग्नि को रुचिजाल। ज्वालते तेहि तहां प्रगटितभई युवति कराल ॥ अरुणचख मुख जासु श्यामलगात अनुपम रूप। कुण्डलादिक सकल भूषण धरे सो वहभूप ॥ भई ठाढ़ी बिश्वपति के जाय दक्षिण ओर। कह्यो तासों बिश्वपति करि कृपायुत चखकोर ॥ मृत्यु अब तुमकरौ क्रमसों प्रजन को संहार। करी तुमकहँ प्रगट हम यहिहेतु यहि उपचार ॥ वचन यह

सुनि मृत्यु लागी रुदनकरन सशोक। तासु आशू लये करता करन को करि ओक ॥ महा दुखसों रुदन करिकै मृत्यु धीरजधारि। कही इमि चतुरास्यसों सो कर्म निंद्य बिचारि ॥ नाथ कत मोहिं करी प्रगटित क्रूर कारज हेत। जाहि अधम अधर्म शङ्कित होतहै ममचेत ॥ मातु पितु सुत बंधु जिनके मरहिंगे ते भूरि। पीठि उर शिर रुदन करिहैं महा दुखसों पूरि ॥ दशा सो अवलोकि ह्वैहै महाकरुणा तात। तहां निरदै भये ह्वैहै पाप असह अघात ॥ सदन जनके जाबनहिं हम सुनो करुणाऐन। धेनुकाश्रम जायकै हमकरब तप गहिचैन ॥ बचन यह सुनि कह्यो बेधा प्रजनके क्षयकाज। तोहिं प्रगटित करी हमसों करो तजि डरलाज ॥ दीनह्वै करि गात कम्पित मृत्यु युग करजोरि। कही प्रभु यहि कर्ममें नहिं होति थिरमति मोरि ॥ अम्बुजासन बचन यह सुनि रह्यो ताक्षण मौन। बन्दि पग सो धेनुकाश्रम ओर कीन्हो गौन ॥ धनुकाश्रम जाय इन्द्रिन नियमि सबिधि सहर्ष। रही ठाढ़ी एक पदसों पद्म षोड़शबर्ष ॥ भांति यहि सब पुण्यथरमें प्रेमपूरित जाय। कइक अयुत हजार बरषन कियो तप मनलाय ॥ कृपाकरि तब अम्बुजासन जाय ताके पास। कह्यो चरि तपउग्र तू कत करति इतक प्रयास ॥ मृत्यु यहसुनि कह्यो प्रभु मैं चहतिहौं चर पर्म। मोहिं करन न परै हिंसाकर्म अदय अधर्म ॥ बारिजासन कह्यो सुनु ममबचन ब्यर्थ न होत। जीव करषण करो तुम तजि शङ्क करुणा सोत ॥ जीव करषण करै कोनहिं पाप ह्वैहै तोहि। हेतु याक कहतहों सो मानु श्रेयद जोहि ॥ बूंद आशुनके गिरेतो चखन सोते सर्ब। बिबिधि बिधिक रोग भेंहैं हरण बलबुधि गर्ब ॥ जीर्णकरि तेहि अयश लेहैं करषियो तू प्रान। तुम्हैं अयश अधर्म सों नहिं होयगो पहिंचान ॥ बचन यहसुनि कही ताक्षण मृत्यु युगकरजोरि। नाथ शासन देतहौ सो करब हम प्रणतोरि ॥ लोभ चिन्ता मोह ईर्षा बिसन रिस अबिचार। देहुमोहिं सहाय कर्त्ता सिद्धि यह उपचार ॥ बचन यहसुनि कह्यो बेधा यह तथास्तु सबार। मृत्यु तब संहार करिबो कियो तहँ स्वीकार ॥ रोगबश कै समरमें कै करि असत ब्यवहार। मरत जननहिं मृत्यु मारति करि सुदण्ड प्रहार ॥ देव मानुष आदि जितने जन्तु जग बिधि चारि। नशे आयू मृत्युबश सब होत लेहु बिचारि ॥ समरमें मरि

गयो सुरपुर तनय तो सुनुभूप । त्यागि दुख धरि धीर भगवत भजन करहु अनूप ॥ सुमुनि नारदसों इबिधि सुनि मृत्युको व्याख्यान । नृप अकम्पन शोक त्यागितकियो करि अनुमान ॥ मृत्यु ऐसे भई ऐसे चरित हैं मतिमान । धीर धरि अब जीतिबे को गुणो बिसद बिधान ॥ व्यास मुनि तपधामसों सुनि बचन परम पुनीत । करि प्रशंसा कह्यो फिरि इमि धर्मभूप सनीत ॥ पूर्व पुरुष महान जनके इबिधि के इतिहास । और कहिये सुमुनिजाते लहैंचित्त सुपास ॥ प्रश्न यहसुनि कहो मुनिसुनु भूप बलबुधिधाम । रह्यो संजयभूमिपतिनिजधर्मयुतअभिराम ॥ सुमुनिनारद सुऋषि पर्बत रहे ताके मित्र । सदा नृपढिग रहत हे ये कथत पूर्वचरित्र॥ एकदिन ये उभयमुनि नृपरहे बैठे यत्र । चारु कन्या भूमिपतिकी मुदित आई तत्र ॥ सुमुनि पर्बत देखि ताकहँ कहतभे मुसुकाय । कौनकी येसुता अनुपम देति आनँदछाय ॥ भूप बोले सुतामम यह चहत बर गुणखानि । सुनत नारद कहो दीजै मोहिं यहिगहि पानि ॥ बचन नारदको सुनत यह भरे पर्बतकोप । कह्यो याके बरणको मैं कियो मनमें चोप ॥ ताहि मांगी प्रथम तुमतौ सुनौ ऐसोशाप । स्वर्ग अब मतिजाहु तुम यहि कर्म को लहि पाप ॥ कह्यो नारद गुणे मनमें नहीं भार्या होति । होति बिधिवत किये पाणिग्रहण अग्निउदोति ॥ शाप दीन्हों बिना कारण सुनो ताते येहु । मोहिं बिनुमति कबहुं तुमहूं स्वर्गको पथलेहु ॥ परस्पर इमि शाप दैदै उभयमुनि तपगेह । बस संजय नृपतिके घर गहे सरस सनेह॥ वेदपारग बिप्र अगणित नृपति संजय ल्याय । संग तिनके कियो सेवा पुत्रहित मनलाय ॥ दोहा ॥ कछु दिनमें सबद्विज कह्यो नारद सों यश लेहु । नृपति चहत हैं सुत नृपहि नृपति सदृश सुतदेहु ॥ सो सुनिकै करि अतिकृपा नारदमुनि तपधाम । कहो भूप मांगो चहत जैसो सुत अभिराम ॥ जयकरी ॥ नृप संजय सुनि इच्छित बैन । कहतभये इमिपाय सचैन ॥ सुवन देहु मुनि बलबुधिधाम । दाता सुयशी शूर ललाम ॥ तेजवान अरि दमन अनूप । मन्मथ सदृश मनोहर रूप ॥ मुत्र पुरीष श्वेद कफ जासु । कनकहोइ तनते कढ़ि आसु ॥ सो सुनिकै नारद मुनिराय । कह्यो तथास्तु कृपा सरसाय ॥ लहि मुनिवर की कृपा बिशाल । तैसो सुवन लह्यो क्षितिपाल ॥ भूप भयो तब धनपति एक । रचे कनक के

धाम अनेक ॥ सर बापी परिखा प्राकार। और जिते नृपसाज उदार॥ रचे कनकके नृप मतिमान। देनलगो बिप्रनकहँ दान ॥ सुनि यहखबरि चोर समुदाय। निशि निशीथ में नृपघर आय। लागे करन मंत्र निरधार। लेहिं कहा सो करौंबिचार ॥ तब सब कीन्ह्यो यह सिद्धान्त। लीजै भूपतिकोसुत दान्त ॥ जौन कनकको प्रभव अमन्द। लीन्हे ताहि होब निरदन्द ॥ यह बिचार करि तस्कर सर्ब। लिये भूमिपति को सुत सर्ब ॥ गये ताहि लै जहँ बनघोर। तहांजाय अबिचारी चोर ॥ कनकहेत सब करिकै गोर। फारो तासु उदर तेहिठौर ॥ दोहा ॥ कनक लखेनहिं उदर मधि तब तेसब करिशोच। लाइ परस्पर दोषतहँ लरेमरे मतिपोच॥ नाश निरखि प्रियपुत्रको शोकाकुल ह्वै भूप। लागो करन बिलाप अति ह्वै व्याकुल गतरूप ॥ भूपहि करत बिलाप गुणि नारदमुनि तहँजाय। भे समुझावत भूपकहँ पावनि कथा सुनाय ॥ सुनो भूपभो मृत्युबश मरुत भूप अभिराम। जाहि कराये यज्ञ इत आयजीव तपधाम ॥ जाहि दये भगवानप्रभु धन असंख्य परतक्ष। मख असंख्य कीन्हे सबिधि मरुत वेदबिद दक्ष ॥ देव पितर गन्धर्ब ऋषि साध्य प्रगट जहँआय। भये सदस्य सप्रेम रहि लखि नृप तपगहि चाय ॥ मणि सुबर्ण अनधेनु धन बसन भूमि मनमान। जेहि दीन्हे द्विजवरन कहँप्रतिदिन सहितबिधान सोऊ मरो न थिररहो होत महाबल काल। कहा आपने सुवनको शोच करौ क्षितिपाल ॥ नृप सुहात्रभो कालबश नीति निपुण बुधिऐन। एक बीर जो जगतमें हो बरणो जगजैन ॥ जाके तपबलसों जलद पति अनुशासन पाय। सुबरण बरषैं प्रतिबरष हरषभरे नभछाय ॥ नदी हिरण्य मयी बहै जासु नगरके पास। जामेंहैं जलजंतु सब सुबरण के छबि रास ॥ अश्वमेध अगणित किये कुरुजांगल में भूप। दिये असंख्यन द्विजन कहँ बांछित बस्तु अनूप ॥ सोऊ मरो न थिररहो होत महाबलकाल। कहां आपने सुवन को शोचकरौ क्षितिपाल ॥ अंग नृपति जगजैन जिहि किये हजारन यज्ञ। दई असंख्यन दक्षिणा बिप्रन कहँ सरबज्ञ ॥ सोऊ मरो न थिररहो होत महाबल काल। कहा आपने सुवनको शोचकरो क्षितिपाल ॥ भूपउसी नरको सुवन शिविक्षिति पाल अमान। किये असंख्यन यज्ञ तेहिदिये असंख्यन दान ॥ अग-

णित गिरि पकवानके गोरस केसर भूरि। सितायुक्त जो रहतहो सदा रचे मुदपूरि॥ खाहुखाहु पकवान अरु करौ क्षीर दधिपान। जासु राज्य में शब्द यह सुनियत हेनहिं आन॥ अलंकार युत गाय तेहि जिती दई करि यज्ञ। तिनकी गिनती करिसकै कोऐसे सरबज्ञ॥ अक्षय धन को बररहो लह्यो शम्भुसो तौन। भूपति तासु बिभूतिकी कथासकै कहिकौन॥ सोऊ मरो न थिररहो होत महाबल काल। कहा आपने सुवन को शोच करो क्षितिपाल॥ भे अदृश्य इतआइ कै दाशरथी प्रभुराम। जासु नाम जपि भक्तियुत जीव लहत परधाम॥ भयो भगीरथ भूमिपति साब भौम बिख्यात। गंगहि ल्यायो भूमिपै जो तपबलसों तात॥ भूषित सुबरण हेमसों सहसन कन्याचारु। बिप्रन कहँदीन्ही सरुचि जौनभूमि भरतारु॥ प्रतिकन्या रथएकप्रति रथशत गज संगलाय। प्रतिरथ तुरँग हजार अरु प्रतिरथ शतशतगाय॥ मणि सुबरण भूषित सबै सहित दक्षिणाभूरि। जिहि दीन्हीं द्विजबरणकहँ महामोदसों पूरि॥ सोऊ मरो न थिररहो होतमहाबल काल। कहा आपने सुवनको शोच करो क्षितिपाल॥ इल्विल भूपति को सुवन हो दिलीप नरनाह। सकलभूमि पति गहतहे जासु भजनकी छाह॥ अश्वमेध मख आदिमख कियेअसंख्यन जौन। दियो दक्षिणा जितकनहिं कह्यो जात सबतौन॥ सोऊ मरो न थिररहो होतमहाबल काल। कहा आपनेसुवन को शोचकरो क्षितिपाल॥ जयकरी॥ होजुवनश्व भूमि भरतार। सोगो खेलन बिशद शिकार॥ बन मेंभयो पियासोतौन। देख्योजाय यज्ञको भौन॥ तहां सु पात्र मध्यघृत देखि। कियो पान पानी अवरेखि॥ तासों तासु सुउरमें भूप। रह्यो गर्भ अति अमल अनूप॥ जबभो गर्भ पुष्ट लहिमास। तबना सत्य जाइ नृपपास॥ कछु उपाय करिते बुधिधाम। बाहेर कियो पुत्रअभिराम॥ नृपहे पुत्रहि लीन्हें गोद। तहँ आयेसुर करत बिनोद॥ कहो परस्पर इमिकरि छोह। अबका धारि करिहि यह दोह॥ तब करिकृपा कहे सुरराज। मांधारे जीवन के काज॥ इमि कहिशक्र मोदसों जाय। अंगुरी दयो बाल मुखनाय॥ तासों कढ़ी क्षीरकी धार। तृप्तभयोपी भूपकुमार॥ तिहि पयके प्रभाव क्षितिरौन। द्वादश बार्षिक समभो तौन॥ मांधारे जो ऐसो बैन। कह्यो शक्र करिकृपा सचैन॥ ताते

मान्धाता यहनाम। भयो तासुसुनु नृपगुण ग्राम ॥ सो मान्धाता भूप उदार। भयो सर्व महिको भरतार ॥ एक दिवस में सबदिशि घूमि। बरषि बाण जीती सबभूमि ॥ दोहा ॥ किये असंख्यन यज्ञ अरु दईदक्षिणा भूरि। ग्राम असंख्यन द्विजन कहँ दिये मोदसों पूरि ॥ सोऊमरो न थिररहो होतमहाबल काल। कहाआपने सुवनको शोच करत क्षिति पाल ॥ नृप ययातिसुत नहुष को जासुकला बिख्यात । अगणित मख बहुबार जिहि किये वेद बिधिज्ञात ॥ प्रतिक्षण प्रति दिन द्विजन कहँ तृप्त करत होराय। दान धर्म नृप नीतिसों बिरहत रहो सचाय ॥ सोऊ मरो न थिररहो होतमहा बलकाल। कहा आपने सुवनको शोचकरत क्षितिपाल ॥ अम्बरीष नाभाग को सुवन भूप बलभौन। सहसन भूपन सों लही जीति एकदिन जौन ॥ किये असंख्यन यज्ञ जेहि भूरिदक्षिणा दान। रह्यो जाहिप्रणतीनि निति रण जयअरु मखदान ॥ जीति हजार नृपनकहँ दये द्विजन को जौन। लहै जासु तुलताभयो ऐसो दूजो कौन ॥ सोऊ मरो न थिररहो होत महाबल काल। कहा आपने सुवन को शोचकरत महिपाल ॥ हो शशबिन्दु नृपालमणि सकल कला में दक्ष। जासु यज्ञमें सुमनसब भये सदस्य प्रदक्ष ॥ लाख युवति ताके रहीं त्रियपति सहसकुमार । तेजवान दातायशी सबै यज्ञ करतार ॥ अश्वमेध शुभयज्ञ करि नृप शशबिन्दु सुजान । तिन सब पुत्रन को दयो बिप्रबरण कहँदान ॥ शतशत रथ शत शत द्विरद त्रिदश तुरँग सदाय। प्रति तुरँगन संग करिदये महामोदसों छाय ॥ एक एक श्यामा तरुणि प्रतिकुमार दे भूप। प्रति तिय शतगज गजनप्रति शतरथ दये अनूप ॥ प्रति रथ शतशत तुरँग अरु प्रति हय गऊ हजार। अजापांच शतप्रतिगऊ दई भूमि भरतार ॥ क्रोश क्रोश के बिस्तरित भोज्यबस्तु के ढेर। जासु यज्ञके अन्तमें उबरिरहे सबफेर ॥ सोऊमरो न थिररहो होत महाबल काल । कहा आपने सुवनको शोच करत क्षितिपाल ॥ होगय भूप सुजान जोपरम प्रमसों पूरि । करतभयो शत बरष लौं अबिछिन्न मखभूरि ॥ लहि शुचि आहुति शतबरष हुतभुक्हवै सन्तुष्ट। ह्वै प्रसन्न नृपसों कहो नृपमांगो बरपुष्ट ॥ तबजोजो भायो नृपहि लै सोसो बरदान। लस्यो भूमिपै प्रबलह्वै प्रतपित तरणि समान ॥ सो

मरो न थिररहो होत महाबल काल। कहा आपने सुवन को शोचकरत क्षितिपाल॥ हो संकृत नृपको सुवन रन्तिदेव मतिपीन। दो य लाख जाके रहे करता पाकप्रवीन॥ भोजन हित अतिथीन के पशु एकईस हजार। बधे जात हेरोज जहँ सुनो भूमि भरतार॥ निति चर्मन के ढेर सों कढ़ो जुबारि प्रवाह। चर्मण्वती नदीबही सोइ अगम अथाह॥ दान यज्ञको जाहिहो नित्य सुइष्ट प्रयोग। द्विज करतल सों जासुकर क्षण नहिंलहो बियोग॥ जासु कोष ऐश्वर्य्यको निरखिसमान बिभात। सुरपति अरु धनपाल निति मनमेंरहे सिहात॥ सोऊ मरो न थिररहोहोत महाबल काल। कहा आपने सुवनको शोच करत क्षितिपाल॥ सुवन भूप दुष्यन्तको भरत भूप बलभौन। रदगहिगज सुप्रतीक कहँ निजबश कीन्हों जौन॥ अश्वमेध आदिक सकल मख कीन्हों बहु बार। कियो बिश्वजित यज्ञजो प्रबल भूमि भरतार॥ मणिसुबरण भूषण बसन भूमि सबत्सा गाय। अगणित जासों लहतहे नित्य बिप्र समुदाय॥ सोऊ मरो न थिररहो होत महाबलकाल। कहा आपने सुवनको शोच करत क्षितिपाल॥ पृथु भूपति क्षितिपालमणि जाके सुगुण अनेक। ब्रह्मानिज करसों कियो जाहि राज्य अभिषेक॥ महिजाको पुत्रीभई ताते पृथ्वी नाम। कीन्हें अगणित यज्ञ जिहि किये अमानुषकाम॥ सोऊ मरो न थिररहो होतमहाबल काल। कहा आपने सुवनको शोच करत क्षितिपाल॥ परशुराम अवतारजो जासु कीर्ति बिख्यात। समय पायकै नहिं रहिहि तिनहूं को यहगात॥ सोरठा॥ संजय नृप मतिमान सुनि षोड़श नृपकी कथा। त्यागिमोह अज्ञान बन्दे मुनिके कमल पद॥ तब नारदमुनि राय कहो भूपसों करिकृपा। मनबांछित सुखदाय बरमांगो संजयनृपति॥ सुनि संजय क्षिति पाल पाणिजोरि मुनिसों कहो। मुनिकरि कृपा बिशाल तुम्हें रुचैसो देहुअब॥ जयकरी॥ यहमुनि कै नारद गणि सुत्र। कीन्हों प्रगट तासु वहपुत्र॥ लहि निज पुत्रभूप सुखपाय। मुनिको पूजनकियो सचाय॥ लहिअपमृत्यु भूपसुततौन। कीन्हेंरहो निरयमधि गौन॥तातेसुनि को तपबलपाय। आयोइतै मोदसोंछाय॥ धसिपरदलमधिकरिअति युद्ध। नृप अभिमन्यु त्यागितन शुद्ध॥ सुर सुरनाथ बसतहै यत्र। जाय समुद बलशतहै तत्र॥ नहिंइत आइहि सोथल त्यागि। तजोशोक धीरजसों

पागि ॥ इमिकहि व्यासगये निजधाम। भये अशोक भूप गुणग्राम ॥ संशप्तकनजीति तेहियाम। निजदिशि चलोपार्थ अभिराम ॥ मगमेंकह्यो कृष्णसों बैन। तातहोत ममहृदय अचैन ॥ कम्पित तपितहोत ममगात। बहु बिधिके अपशकुन लखात ॥ नृपहैं कुशलनधौं सहभाय। ऐसोअनरथ परत लखाय ॥ यहसुनि कृष्णकह्यो अनुमानि। नृपकोशोच परत नहिं जानि ॥ और बिघ्नकछु जानोजात। उतलों चलो धीरधरि तात ॥ इमि बतरात उभय रणधीर। आवतभे निजदलके तीर ॥ सुने न जय दुन्दुभिको सोर। पारथ कीन्ह्यो शोचअथोर ॥ दोहा ॥ बजत न दुन्दुभि शंख अरु गायक करत न गान। बन्दीजन नहिं यशपढ़त भोकछु अनर बिधान ॥ हैहतश्री सबसैन अरु नहिंकोऊ सबिधान। मम सम्मुखचख करतहैं भोकछु अनर महान ॥ रोला ॥ शोक पूरित सकलजन लहिपरत व्याकुल मोहि। गिरत सबके चखनसों जलधार मोकहँ जोहि ॥ करत इमि अनुमान नृपके सिविर मधिसों जाय। तहां सबकहँ निरखि बैठे भरेशोक अघाय ॥ भरे करुणा कह्यो पारथ सुनो हे भटसर्ब। परतनहिं अभिमन्यु लखि जो बिदितबीर अखर्ब ॥ सुन्योहो हमआजुबिरच्यो द्रोण चक्रव्यूह। तासुमधि तौ नहिंगयो गहि तोरिबेको ऊह ॥ रहेतासों कहे तामधि जाइबेकी डोर। कहीनहिं कटि आइबेको घातजौन सगौर ॥ मानि सबको बचन करिकै व्यूहमध्य प्रवेश। मारितौ नहिं गयो अनुपम वीरलरि तेहिदेश ॥ सिंहसम अति बिक्रमी अतिरथी अरिदलजैन। प्राणसम मोहिं परमप्रिय सुत सकल गुणकोऐन ॥ यशी सुबुधिसुशील सुकृती तेजवान बिभात। गयोहति अभिमन्यु तौ हमतजब अबयह गात ॥ दोहा ॥ जलजनयन कुंचित चिकुर स्मित मुखबाहु बिशाल। आयतउर घननादकरि कलभ समान बिशाल ॥ बाल वृद्धसम मंत्रबिद परम मनोहररूप। गुरु शासनकृत नमितरहि कहिप्रिय बचन अनूप ॥ चौपाई ॥ परम पियारो सबगुरु जनको। कृती कृतज्ञ शुद्धअति मनको ॥ जो अभिमन्यु मरो रेभाई। तोअब मोकहँ मरेबड़ाई ॥ सादर शालवृक्ष सम बाढ़ो। मत्त द्विरदसम भयोउकाढ़ो ॥ सब धनुधरसों गुरुतागहिकै। बिलशतभयो प्रसंशा लहिकै ॥ अनुचित कहत करतजेहि कबहूं। लह्यो न काहू तबहूं अबहूं ॥ जोजूझो ऐसोसुत आरय। तौ अब मोहिं मरब

बर कारय ॥ बज्रसदृश ममहियो अनैसो । जो नहिं कढ़तपाय दुख ऐसो ॥ अतिप्रिय सुतको मरिबो सुनिकै । मरहिसुभद्रा शिरउरधुनिकै॥ सबतिय ममबिक्रमहिं निदरिहैं । मरिसुत शोकागिनिमें जरिहैं ॥ समुझि तासुगुण रूप बड़ाई । धीर न धरत बनतरे भाई ॥ मणिमय शय्यापैहौ बिलसत । सोमरिभयो भूमिपै निवसत ॥ शुचि सुकुमारि युवति जेहि तनसों । बिलसतरही मोदगहि मनसों ॥ तासों जम्बुककाग बिनोदत । यहदुख परशु हियोमम खोदत ॥ दूरि खरेरहि शुचिपद गावत । जेहि बन्दीजन रहेजगावत ॥ जुरेगीधसो गात बिदीरन । ह्वैहैं करत धरत मन धीरन ॥ हाय न अबनिज सगुण लखाइहि । तात तातकहि मोढिग आइहि ॥ दोहा ॥ भीरपरे ममआगमन चाहि चाहि अनखाय । तनत्यागो ह्वैहै सुवन यहदुख सहो न जाय ॥ इबिधि भरोसुत शोकसों रोदन करत अचैन । पार्थहिके सबअंकलै कहतभये येबैन ॥ चौपाई ॥ मति इमि शोक करहु हे आरय । है सबकहँ निरमित यहकारय ॥ हैविशेषसों यह गति वाकी । क्षत्रिहियुद्ध जीविका जाकी ॥ परमपुण्यकृत सूरसोहावन । मरि रणमध्य लहत पदपावन ॥ सब सुबीरइमि मरिबो चाहत । समर अग्निमधि धसितन दाहत ॥ गोसुरपुर अभिमन्यु सुबीरा । त्यागि शोक अब धारहु धीरा ॥ तुम्हैं बिकल इमिलखि दुखभारे । भे अधीर सब बन्धु तिहारे ॥ धरहु धीरतुम परमसयाने । करौ जौन करतब अनुमाने॥ पारथ बचन कृष्णके सुनिके । बन्धुनसों इमि बोले गुणिकै ॥ करिकै सो बिक्रम प्रणधारी । किमिजूझो ममसुत रणचारी ॥ कहां रहैंसबयुद्ध बिचक्षण । कत न करो ममसुतको रक्षण ॥ हीन पराक्रम होतुम सिगरे । आपुहि आपुहि गनत अदिगरे ॥ कवच धनुष आयुध बहु बिधिके । हौ धारे सबहित छबिसिधिके ॥ निज जीवनकी आशा गहिगहि । सके न रक्षण करिढिग रहिरहि ॥ इमि सक्रोध अर्जुनहिं निहारी । कोऊ सको न बोलि बिचारी ॥ तब उसासलै पूरित दुखसों । कहोधर्म भूपति रिजु रुखसों ॥ जिमि रचिब्यूह द्रोणधनु करषत । चलोबधत भटशायक बरषत ॥ दोहा ॥ ब्यूहभेदि दलमधि प्रविशिजिमि अभिमन्यु अभर्म । लरि जैसे जिमि बधिगयो कह्योतौन नृपधर्म ॥ शिव बरके बलसिन्धुपति जिमि आड़ेउ दलसर्ब । पृथक् पृथक् सोसब कह्यो धर्ममहीप अखर्ब ॥

सुनिसुतको बिक्रम महत महामोहसों पूरि। ह्वैअचेत महिपै गिरो पार्थ शोककरि भूरि ॥ रोला ॥ निरखि सुरक्षित पार्थकहँ सबलोग सबदिशि प्रेरि महा अनरथ समुझि ब्याकुल रहे अनिमिख हेरि ॥ चेति क्षणमें श्वेदपूरित तजत चखसों वारि। कंपत लेत उशास ऐसेकह्यो भटन निहारि ॥ सत्य प्रणकरि कहतहौं यहसुनो सबभट जूह। काल्हिबधिहौं जयद्रथकहँ बरषि बाणसमूह ॥ कृष्णका अरुभूप को जोगहै शरणन आय जीवको करिलोभजो कहुंदुरै नहिंकढ़िजाय ॥ बधौंगो तौकाल्हि ताकहंसुनोयह ममबात। बधौं नहिंतो जाउ तेहियर जहँकृतघ्नीजात ॥ पिता माता द्विजन दुखदे लहत जनजो लोक। जो न मारो जयद्रथकहँ लहौंतेतहँओक ॥ करि अगम्या गमन अरु हरि जीविका जे लोग। अरु कृघ्नी छलीपावत जौन थलको भोग ॥ करतजो अपकार अरु विश्वास घातीजौन। जात जहँ तहँ जाउंमारो काल्हि ताकहँ जौन ॥ चुगुल निन्दक चोर अरु जे कहत मिथ्याबैन। वृद्धगुरु अरु साधुकहँ जे निंदा करत अचैन ॥ गऊ ब्राह्मण अग्निकहँ जे चरणसों छुइ लेत करत मुखरोख जलमें जौन अपगत चेत ॥ करत आतम घातजो अरु जौन छली नाथ। करत तासों दगाजो नितरहत जाकेसाथ ॥ देत नहिं बाकनकहँ जे मीठ आपुहि खात। पाय पातक जौन ये सब जौन थलमें जा ॥ पाय पातक तौन सबतौ जाउंमें तेहि देश। जौ न काल्हि जयद्रहि बधिकरौं कीरति बेश ॥ एकप्रण मैं करत औरो सुनो सोभट पू जौ न मारों काल्हि ताकहँ रहै जौलो सूर ॥ भानु अथये त्यागि शस्त्रनु त्यागि कवच बिभात। पैठि ज्वलित कृशानु मधि तौदहौं आपो गात ॥ शक्र बरुण कुवेर यमके पास जोभगि जाय। तऊ मारौं तहांकहँ शरणसों दिशिछाय ॥ दोहा ॥ इमि कहि धनुष चढ़ाइ कै करिसबशि टंकार। सब दिशिमें पूरित कियो दुसह सुशब्द उदार॥ सुनि सुप्रति पार्थकी केशव अति हरषाय। पूरिदियो दिशि शब्दसों अनुपम शङ्खजाय ॥ शंखबजाये सबनृपन बजे बाद्यगणभूरि। नभमहिलों सब तिनमें गईघोर धुनिपूरि ॥ चौपाई ॥ सुनिअति घोरशब्द पर दलमें। भो भीत ममदल तेहि पलमें ॥ कीन्हों जौन प्रतिज्ञा पारथ। चारण गणसौन यथारथ ॥ सुनिकै सिन्धुनाथ तेहि क्षणमें। कम्पित

भयो सांचगुणि मनमें। परोशोक सागर मधिडूबत। गोदुर्योधनकेढिग ऊबत॥ पारथ कियोजौन प्रणतीक्षण। सोकहि कह्यो सजल करईक्षण॥ करिहि औशिजो प्रणकरिभाख्यो। यहगुणि धीर रहतनहिं रख्यो॥ तातेमोहिं देउ अनुशासन। बसोंजाइगहि गोपित आसन॥ कै कृपद्रोण कर्ण दुःशासन। आदि भटन सों करि सम्भाषन॥ राखहु सबै कहिं जो रक्षण। नातरु बेगि कहौ मोहिं गक्षण॥ दुर्योधन भूपति यह सुनिकै। निज कारजको साधन गुणिकै॥ नाम प्रबल योधन के कहिकै। कह्यो जयद्रथसों करगहिकै॥ येसब जबलगि जीव तरणमें। तबलगिलगिहि न शर तोतनमें॥ अर्जुन सम तुम आपु उजागर। कत डरपतहं हे भट नागर॥ इमिकहि सुनिते द्विजढिग आये। प्रणपारथको ताहि सुनाये॥ कहि निजशोच जयद्रथ तासों। कहत भयो इमि पुरि प्रभासों। हमजो करत प्रश्न तुम ताको। उत्तरकहो यथाबिधि याको॥ दोहा॥धनुधरके जे सकलगुण तिनमें अधिकी कौन। हमकै पारथ बूझिकै द्रोण बताओ तौन॥ कहाद्रोण धनुबिधि सिखी सम तुमपारथबीर। भयोयो अभ्यास सों अधिक पार्थ रणधीर॥ चौपाई॥ सुनि प्रण तासु शंक मत करहू। संशय त्यागहु धीरज धरहू॥ ऐसो व्यूह रचबतो स्वारथ। कैन जासु अन्तलहि पारथ॥ फिरिदृढ़ करि साहस लरिबेको। तजहुशोक रणमें मरिबेको॥ परम पुण्यकृत क्षत्री आरज। रणमें लहत मृत्युश्रम कारज॥ मृत्युलोक यहजो तनधारत। मरत अवशिसो कोतेहि टारत। द्रोणाचारयकी यहबानी। सुनिदुख तजो जयद्रथ ज्ञानी॥ गह्यो च लरिबेको राजा। मोदितभो सबसुभट समाजा॥ जाय उतैके चारसंहाये। पृथक् पृथक् यहखबरि सुनाये॥ सो सुनिकै सब ह्वै दोचितसे कहो पर्थसों अति शोचितसे॥ पारथ तुम दुस्तरप्रण कीन्हों। साध्य साध्य शोचि नहिंलीन्हों॥ रत्नहेत सागर मधि परिबो। हैयहि बिधिकोग्रहप्रण करिबो॥ रक्षक जासुद्रोण जयकामी। येपटरथी जासु अनुगामी॥ कृप अरु कर्ण शल्य बलधामा। भूरिश्रवा अरु अश्वत्थामा॥ अरुषसेन अतुल भटजानो। बधिबोतासुसहज मतिमानो॥ राखि चतुरबिर सेनापचिकै। चहुंदिशि सकटव्यूहबर रचिकै॥ मधिमें कमलव्यूहकी बना। करीद्रोण पुनि करिकै सचना॥ दोहा॥ पत्रन अरु केशरनसम राखि भटन प्रण

रोपि। बीज समान जयद्रथहि मधिमें राख्यो गोपि॥ महारथी षटभट प्रबल द्रोण अजेय प्रसिद्ध तिन्हैं।जीति ताको बधब शतधा सखा असिद्ध॥ यातेयह प्रण त्यागकरि करि मंत्रिन सों मंत्र। करौ और अनुमान कछुजो श्रमसाध्य स्वतंत्र॥ जयकरी॥ कृष्णचन्द्रके सुनियेबैन। पार्थकह्यो करिराते नैन॥ जिन षटभटन सराहत तात। कहत महारथमें बिख्यात॥तिन्हैं अर्द्ध रथसम सबठौर। हम जानतहैं कहत न और॥ बधिबधि अगणित भटन सँचाय। अगणित भटन मारि बिचलाय॥ सबदिशि रचत शरणको सेत। तरि परदल भटनीर निकेत॥ पद्मव्यूह मधिजाब बिभात। जिमि बारिज मधिमधुकर जात॥ बधिजयद्रथहि दुखहि दुराय। बिहरब जयदुन्दुभि बजवाय॥ प्रभुतुम जासु सहायक संग। होय न कबहुं तासु प्रण भंग॥ अबमति तातबढ़ावहु शोच। कियो न जात सुप्रणको मोच॥ शीघ्रसुभद्रा केढिगजाय। कहत बनैसो कहौ बुझाय॥ यहसुनि कृष्णमौन रहियत्र। गंही रुदत शुभद्रातत्र॥ कहिकहि सुतके शीलसुभाव। गुणिस्वरूप बिक्रम ब्यवसाव॥ मोहित रुदन करति भरिशोक। देखि शुभद्रहि करुणाओक॥ लोकवेद बिधिबचन सुनाय। बार बार बहुबिधि समुझाय॥ आदि द्रौपदी तिय समुदाय। रुदन करतही तिन्हैं बुझाय॥ भवभंजन रंजन निजदास। कृष्णगये पारथके पास॥ दोहा॥ तबलहि शासनपार्थ को सिगरे भट समुदाय। निजनिज डेरन जातभे भरे बिषाद अचाय॥ कृष्णचन्द्र पारथ सहित पारथके गृहजाय। गोमय सों महि शुद्धकरि शुचिशय्या बिछवाय॥ प्राणायामादिक क्रिया अर्जुन सों करवाय। करितापै आसीन सब दिशि आयुध धरवाय॥ निशिमें शम्भुहि उचित बलसो बिधिवत अरचाय। कहोपार्थ सोंकरहु इतशयन गिरीशहि ध्याय॥ सेरठा॥ इमि पारथ सों भाषि राखि सकल दिशि पारषद। केशव जय अभिलाषि दारुकसह डेरनगये॥ रोला॥ जायशय्या चारुपै आसीन ह्वै यदुराय। कहो दारुकसों कियोप्रण पार्थजो अनखाय॥ महादुस्तर तौन सोनहिं होयगो तौतात। निरखि संध्या अग्निमें वहदहै गो निजगात॥ पार्थहमकहँ परमप्रिय वहि लखे बिनुक्षण एक। लोकमें नहिं सकब रहि हमसुनो यह ममटेक॥ जोजयद्रथ कहँन पारथ सकिहि बधिकरि युद्ध। तौबधब हमताहि करिअति युद्धगहि प्रणशुद्ध॥ सुनोताते साजि ममरथ

सकल आयुध भारि। रहहुतुम सन्नध्व समतन कवच अतिदृढ़ धारि॥ सुनहु जबहिं अमर्षयुत ममशंखकी धुनियत्र। शीघ्र रथलैआइयो तब रहब जहँ हमतत्र॥ भाषिऐसे पार्थके जय लहन को अनुमान। करनलागे कृष्ण करुणासिन्धु सत्वनिधान॥ जानि निजप्रण कठिन चिन्तत पार्थ तहँतेहि याम। स्वप्नमें सहकृष्ण शिवके पास जाय सकाम॥ बन्दिसरु-चिप्रशंसि पशुपति अस्त्रकहँ फिरिपाय। पायबर मनमान केशव सहित सुख सरसाय॥ बहुरि आये सिबिर कहँनृप इतेमें भोभोर। लगेपारथ कृष्ण जागे जगे भट सब ओर॥ प्रात कृत्य सरीति लागे करन पूरितहर्ष। लगी दुन्दुभि बजन अगणित गहे भट उत्कर्ष॥ पढ़न लागे बिरद बिधवत सूत मागध भूरि। गान लागे करन गायक सुरन सों थल पूरि॥ दोहा॥ तृतिय दिवस की निशिभई जोबार्त्ता तेहि पर्ब। संजय इमिधृतराष्ट्रसों कहत भयेसो सर्ब॥

इतिश्रीकाशीराजमङ्कराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्वाम्याभिगा मिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजनगोपीना थेनकविनाविरचितेभषायांमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणितृतीय दिनरात्रौश्रीअर्जुनप्रतिज्ञावर्णनोनामचतुर्थोध्यायः॥ ४॥

सोरठा॥ चौथे दिनकेप्रात बाद्यनाद सुनि प्रभुहि गुणि। जागियर्मबि-ख्यात नित्य कृत्यकीन्हों सबिधि॥ गीता॥ दये आहुति अग्निमें अरु पूजि द्विजन सचाय। दये बत्सन सहित भूषित तरुणवय शतगाय॥ भूरि कां-चन बसन हय दे पहिरि भूषणबस्त्र। सभागृहमें जायबैठो धारि अनुपम अस्त्र॥ तहांआये कृष्ण अरु सब बन्धु अरु नृपसर्ब। यथा बिधि सत्कार सबको कियोधर्म अखर्ब॥ कृष्णसोंइमि कहा प्रभु कुरुसैन उदधिअगाध। तासु तरिबे हेत बोहित हमहिंतुव अवराध॥ पार्थ कीन्होंकठिन प्रणतेहि समुझि सूखत प्रान। आपुकोसँग समुझि हम ध्रुवगुणत निज कल्यान॥ होइ मम कल्यान तैसेचरल परदल माह। रहत रबिके मारि जाते जा-यसों नरनाह॥ बचन यहसुनि कहो केशव भूप धारोधीर। जूटि आई पार्थकहँहै कौन ऐसोबीर॥ पार्थजीत्यो शक्रकहँ सोबात है बिख्यात। मर्दि परदल जयद्रथकहँ बधिहि पारथ तात॥ इतेमह तहँपार्थ आये देखि पार्थहि भूप। धर्मनृपउठि अंकलायो भरेक्षोभ अनूप॥ बैठिअर्जुन

तहां नृपसों कहोबिधिवत तौन। रजनिमें उतरहे देखे स्वप्न सुखप्रद जौन ॥ स्वप्नसों सुनि मुदित ह्वैसब कियो हरहि प्रणाम। सभाकरि बरखास रथपै पार्थबीर अक्षाम ॥ चढ़ेनिज निज बाहननपै भूपभटसमुदाय। बाद्य लागे बजन मंगल पढ़नद्विज सुखदाय ॥ पूजि अश्वनचढ़ो रथपै पार्थबीर अमान। चढ़ेतब श्रीकृष्ण अरुभट सात्विकी बलवान ॥ देखिबहु शुभसगुण तेहिक्षण पार्थअति हरषाय। कहतभे युयुधान सों ध्रुवबिजयसा लखिजाय ॥ भाषि ऐसोकह्यो सात्विकि बेगिनृपपहँ जाय। साथरहि सबठौर रक्षत रहोनृपहिं सचाय ॥ एक रक्षण भूपकोहै सबहि कारज पर्म। सदा सयतन रहेहु जातेरहै मोदित धर्म ॥ पार्थके येबचन सुनिकै कहितथास्तु सचैन। सात्विकी तहँगयोजहँहैं धर्मनृपति ससैन॥ सूत सुतके बचनसुनिकै वृद्धनृपति सशंक। कहो अनरथ समुझि निशि दिन दहतहै ममअंक ॥ कर्ममूल अनर्थके जेकिये मोसुतमूढ़। तासुशाखा प्रगटिबढ़ि अबभये सेजेरूढ़ ॥ बिदुर भीषम द्रोणहम बहुबार कहिकहि नीति। कह्यो कितक बुझाय सोनहिं सुन्यो सोगहिं रीति ॥ राज्य में जिमि अंशइनको तथा उनको तात। कौन गोपनकरै ताकोबात जो बिख्यात ॥ पूर्बको अपकार इनको दुरैधर्म नरेश। आय बनते सनयमांगत भये आधो देश ॥ परम सुहित सुजान केशव आयभाष्यो तौन। नहीं मान्यो मोहबश ममपुत्र अवगुण भौन ॥ इतेहूपै अनर बारण हेतधर्म्म उदार। बंश रक्षणहेत मांगे पांचग्राम बिहार ॥ नहीं सोऊदये ममसुत भरोगर्ब नदान। कहो संजय तासुकैसे होइअब कल्यान ॥ शकुनि दुःशासन कर्णको मानिमत गहिगर्ब। निदरि सबकेबचन शतधा कियो कारज खर्ब॥ धर्मशील नरेश योधा पार्थसो रणधीर। कृष्णमंत्री जासु तासों लहैजय को बीर ॥ अवशि होनीहोत संजय कहोसहित बिधान। करि प्रतिज्ञा कियोजैसो युद्धपार्थ अमान ॥ सुभटइत उतके यथाजुटि कियो संगरघोर। कहो संजय सुन्योसो सबचहतहै मनमोर ॥ बचन ये धृतराष्ट्रके सुनि कह्योसूत सयान। जितो अनरथ भयोकरता तासु तुमनहिं आन ॥ आपुजो नहिं चाहते नहिंहोन पावत तौन। आपुको नहिं कह्योमानै रह्योऐसो कौन ॥ जो न मानत कहोतौ तेहि कुरुणसों बँधवाय। डारिबेरी राखते नहिंहोत अनर अचाय ॥ रुचो तबतौ राज्य

सबलहि पुत्रको ऐश्वर्य। कहत अबइमि लगोजबदुख देनबढ़िवह मर्य॥ गयोजब जलनिकरि तबका बांधबांध हांत। चूक तबको मिटतका अब कियेशोच उदोत॥ भयो तबसो मयोअब जोभयो सुनिये तौन। भोर भूपति जयद्रथसों कह्योद्विज बुधिभौन॥ कर्ण भूरिश्रवा कृप वृषसेन शल्य उदार। सहित ममसुत संगलैतुम रथीसाठि हजार॥ लाखहय-सादी चतुर्दश सहस मैगल मत्त। सहस एकइस संगलीजै धृतभुसुण्डी पत्त॥ रहौ इनके मध्यतुम षटकोश पीछेजाय। कहा अर्जुन शक्रयम नहिं सकहिं तुमकहँ पाय॥ द्रोणके येबचन सुनिसो भूपशोच दुराय। दश अयुत तुरंग सवारनिज अरुतितेभट समुदाय॥ द्रोण जिनकहँ कहे तिनषटरथिन सहितसचाय। जायपीछे कोशषटभो लखतकोट बनाय॥ द्रोणबिरचत भयोनृप तबसकट व्यूह महान। पूर्वपश्चिम तासुचौबिस कोशको परमान॥ कोश दशको व्यासताको तासुमधि करिऊह। बिरचि पद्म सुव्यूह ताकेमध्य शूचीव्यूह॥ बिरचि राख्योतासु मधिमें सिन्धु-पतिहि सयत्न। यथा राखत बिबिधि बिधिसों कृपिण पाय सुरत्न॥ रचे पद्म सुव्यूहके उतगर्बव्यूह अभेद। राखि बिधिवत प्रबल योधा जिन्हैं नहिं श्रमखेद॥ रह्यो शूचीव्यूहके मुख भूपभट कृतवर्म। रहो तबतो तनयनृप जलसन्ध कर्ण अभर्म॥ प्रबल प्रबल प्रसिद्ध भटन ससैनक्रम सों भूप। राखि सबदिशि द्रोणबिरच्यो व्यूह परम अनूप॥ जयद्रथसों रहो आगू द्रोणभट पटकोश। सुभट रदन सुव्यूह को सोबदन अगम अदोश॥ बदनरक्षक सैनसहहो सुवनतो बलवान। जौन दुर्मर्षण प्रबल भट प्रलयकरण अमान॥ रहो पीछूतासु दुःशासन बिकर्ण ससैन। यथाक्रम इमिरहे सिगरे सुभट बलबुधि ऐन॥ देखि ऐसोव्यूह मोदित भयो कुरुकुलराय। यथा निरखि मरीचिकाकहँ मृगाहोत सचाय॥ उतै बिरचे व्यूह विधिवत नकुलसुत रणधीर। शतानीक उदारमति अरु धृष्टद्युम्न सुबीर॥ तीर भरिबढ़ि सैनसोंकरि धनुषको टंकार। शंखधुनि भो करत पारथ विदितबीर उदार॥ पांचजन्य सुशंखकी धुनि करीयदु-कुल चन्द। जलद गणसम भयो गरजत कपिध्वजस्थ अमन्द॥ भयो अतिशय दुसहशब्द सशंकभो ममसैन। दयेमुत्र पुराखकरि ह्वैतुरँग द्विरद अमैन॥ देखि दुर्ममर्षणहिं पारथ कह्यो हे यदुराय। शीघ्र

याके निकट रथलै चलो तुरँग चलाय ॥ बज्रसम शरवृष्टि करि करि मर्दियह दलसर्ब। व्यूहमध्य प्रवेश कीजै तोरि सबको गर्ब ॥ पार्थके ये बचन सुनिकै मोदकेशव आसु सुरथ रन्ध सवायुसम लैगयेघोरे तासु ॥ भयो बरषत बाण इनपै पार्थधीर धुरीन। सुभट इतके भये बरषत पार्थपै शरपीन ॥ करि अलात सुचक्रसम धनुबरषि शायक भूरि। सैन मधि तोतनय के तिहिदये सबथर पूरि ॥ काटि अगणित शक्तितोमर बाणरथ धनुकेत। दयेकाटि असंख्य शिर करचरण रचि शरसेत ॥ एक पारथ सुभट सों बढ़ि सुभट कइक हजार। भिरे तिनकहँ बधत पारथ करै नेकु न बार ॥ तुरंग गज भट काटि अगणित डारि महिपै तत्र। कियो भीषम रूप धरणिहि पार्थरणकृत सत्र ॥ मचो हाहाकार तेहि समय सैनमें तेहिठौर। बिकल ह्वै भट भगे अगणित तजि भटन को तोर ॥ धीर धरि धरि तासु सम्मुख गये जे बलवान। भयेते सबज्वलन के ढिगजात सलभ समान ॥ दोहा ॥ इमि मर्दित ह्वै भटनसह दुर्मर्षण तजिधीर। भागि पिछिलि आयो रह्यो जहँ दुःशासन बीर ॥ यह सुनि कै धृतराष्ट्र नृप करिकै मनहिंमलीन। कहो कहो संजयतदनु भिरोकौन भटपीन ॥ चौपाई ॥ संजय सुनि भूपतिकी बानी। कहत भयेसुनु नर पति ज्ञानी ॥ दल बिचलाय शरासन करषत। पारथ चलोबाण बरबरषत ॥ कालानल समान भय छावत। दल मर्दतपार्थहि लखि आवत ॥ योधन सहित क्रोधसों मढ़िकै। भिरत भयो दुःशासन बढ़िकै ॥ क्रोधित सहस द्विरद मतवारे। तिनपै चढ़े सुभट प्रणधारे ॥ घण्टनकी धुनि सों नभपूरत। धनु टंकारन सों श्रुति थूतर ॥ शरशक्तिन की बरषा कीन्हें। बढ़ि आगू अड़े प्रणलीन्हें ॥ सुण्ड उठाय करत धुनिघोरा। चले द्विरद पारथ की ओरा ॥ सो गजयूथ निरखि कपिकेतू। रचतभयो अबिरल शरसेतू ॥ काटि असंख्यन आयुध इतके। काटत भो धनु ध्वज करकित के ॥ किते गजन के कुम्भ बिदारे। किते गजस्थ सुभट बधिडारे ॥ अगणित द्विरद किये बिनुस्वामी। बहु गजस्थ कीन्हें पदगामी ॥ अगणित द्विरदन के रदकाटे। अगणित सुण्ड काटि महिपाटे ॥ बारिबूंद समसब के तनमें। लगे पार्थके शरतेहि क्षणमें ॥ यहि बिधिपारथ शर सन्धाने। ह्वै व्याकुल तहँ शेष पराने ॥ तब हयसादी रथी सुयोधा। बढ़ि ताको

कीन्हें अवरोधा ॥ दोहा ॥ मण्डल समको दण्ड करि शरझर प्रलयअरो-
पि। क्षणमें मरदत भो तिन्हें पार्थ धनुर्द्धर कोपि ॥ मारि असंख्यन पुरँग
भट धनुध्वज अगणित काटि। करनपगन शिर धरन सों दई मेदिनीहि
पाटि ॥ घोरठा ॥ थिरनसको धरिधीर भगो सोऊ हत शेषदल। दुःशा-
सन लहिपीर भगो समुझि अपराध निज ॥ जयकरी ॥ इबिधि जीति तो
सुतहि ससैन। पार्थ धनुर्द्धर बलबुधिऐन ॥ द्रोणाचारय के ढिगजाय।
करन जोरि इमि कह्यो बुझाय ॥ हेप्रभु तो अनुकम्यो पाय। पैठि ब्यूह
मधि बल दरशाय ॥ मर्दि सेनकरि युद्ध बिनोद। वधि जयद्रथहि चहत
सुमोद ॥ तातरहै जातेममटेक। उचित तुम्हैंसोकरबबिवेक ॥ पण्डुसदृश
अरु धर्मसमान। केशव सम तुम मोहिं न आन ॥ रक्षणीय जिमि तुम
कहँ तात। निति अश्वत्थामा गुरुगात ॥ तिमि हमार रक्षण सबठौर।
है तुमकहँ करतव्य सडौर ॥ जाते रहै मोरप्रण पर्म। सोई करौ बूझिकै
मर्म ॥ सुनि हँसि बोले द्रोण यथार्थ। हमहिं बिनाजीते हे पार्थ ॥ सिन्धु
पतिहि नहिं सकिहौ पाय। ताते करौ युद्ध मनलाय ॥ इमि कहिकैकरि
धनु सन्धान। हने पार्थकहँ तीक्षण बान ॥ पारथ तजत भयो शरभूरि।
बहु शरतजे द्रोण रिस पूरि ॥ दोऊ सुभट धनुर्द्धर ख्यात। कियो घोर
रण ते दृढ़घात ॥ द्रोणाचार्य्य धनुष बिधि टाटि। दीन्होंतासु प्रत्यञ्चा
काटि ॥ दोहा तब चढ़ाइ कै औरज्या पारथ धीर धुरीन। भो मारत षट
शत बिशिष अति अनियारे पीन ॥ फेरि हन्यो शरसात शत फिरि सहस्त्र
शर मारि। दश हजार शर हनतभो गाण्डीवहि टङ्कारि ॥ चौपाई ॥ कैएक
अयुत बाणतजि पलमें। भयो प्रलय पारत ममदलमें ॥ भट द्रोणाचारय
के साथी। बधे असंख्यन बधि हय हाथी ॥ दवा सदृश तासु शरगण
में। दल बन दहत देखि तेहि क्षणमें ॥ बारिद सरिस बरषि जलशाय-
क। रक्षण कियो द्रोण दृढ़घायक ॥ काटि असंख्यन शायक तासू। हने
तासु उरमधि शरआसू ॥ ह्वै बिह्वल फिरि धीरज धरिकै। पार्थ हने
शर अतिरिस करिकै ॥ द्रोण पांचशर कृष्णहि हनिकै। पार्थहि हने
तिहत्तरि गनिकै ॥ ध्वज मधिहने तीनिशर ओपित। कीन्होंरथहिशरन
सों गोपित ॥ पार्थ काटि सबशर अनियारे। अगणित बाणद्रोण कहँ
मारे ॥ दोऊ दिव्यअस्त्र बहुडारैं। दोऊ अस्त्र अस्त्रसों बारैं ॥ यहिबिधि

दोऊ धनुधर नायक। कीन्ह्यों घोरयुद्ध रणचायक॥ लखि युग भटनप्रबल अनुमानी। कृष्ण पार्थ सों कही सुबानी॥ द्रोणहि जीति चलन जो चैहो। तौ इतही सब द्यौस बितैहो॥ तातेत्यागि द्रोणसों लरिबो। चलो चहत जो नृपबध करिबो॥ यहसुनि कहो कृष्ण सों पारथ। आपु कहो सो बचन यथारथ॥ बेगि चलौ रथलै दलमाहीं। जीतन योग द्रोण भटनाहीं॥ दोहा॥ यह बिचारकरि द्रोणकहँकरि प्रदक्षिणा नौमि। चलो पार्थ गर्जत रचत शायक जाल असौमि॥ द्रोण टेरितब इमिकह्यो कहांजात तजि मोहिं। बिनुजीते शत्रुहि अनत जैबो उचित न तोहिं॥ सोरठा॥ यहजो कह्यो अचार्य्य सो सुनिकै पारथ कहो। तुम मम गुरु हे आर्य नहिं मम शत्रु प्रसिद्ध यह॥ चौपाई॥ इमि कहि बरषत शरदल मरदत। चलो पार्थ घनसदृश ननरदत॥ युधामन्यु उतमौजा दक्षक हे सँग तासु पीठिके रक्षक॥ पार्थहि यहिबिधि आवत देखी। कृतबरमा भूपति अति तेखी॥ अरु काम्बोज श्रुतायू राजा। आड़त भे भिरि सहित समाजा॥ सूरसेन अभिषाह सुभेशी। शिवय बसायत केकयदेशी॥ चौपाई तरुबरसों जैसे। भिरैभिरे पारथसों तैसे॥ तेहिक्षण पार्थचक्रसम चरिकै। मण्डल सदृश शराशन करिकै॥ अगणित गुल्मलता तरुबन में। लपटन दहै दवानल क्षणमें॥ तिमि असंख्य भट गज हय पलमें। बाणन बधत भयो ममदलमें॥ राजरोग सम ममदल तनमें। लखि पार्थहि अति रिस करि मनमें॥ जाइ भिषज सम द्रोण अमाना। दयो बाण बिशबटी समाना॥ पार्थहि द्रोण द्रोणकहँ पारथ। हनतभये बहुशर गुणि स्वारथ॥ बहुबिधि दिव्य अस्त्र की वर्षा। करी परस्पर गहिउतकर्षा॥ दिव्य अस्त्र अस्त्रनसों काटत। सरथ चक्रसम फिरि फिरिडाटत॥ घोर युद्ध कीन्हों ते दोऊ। जिन दोउन सम तृतिय न कोऊ॥ बरषत सहतबाणबन कोहे। दोऊगिरि बारिदसम सोहे॥ दोहा॥ हनिपचीस शर पार्थकहँ कृष्णहि सत्तरिबाण। हनेद्रोण द्रोणहिहने बहु शरपार्थ अमान॥ अतिशय बिक्रम करितहां बरषि बाण समुदाय। द्रोणपार्थके सुरथपै सब दिशि दीन्हें छाय॥ तब पारथकीओरलखि कृष्णचन्द्र मुसुकाय। कृतबरमाको फौजमधि रथलैगयेबढ़ाय॥ चौपाई॥ कृतबरमा काम्बोज सुदक्षिण। भिरेधनंजयसोसहपक्षिण॥ बरषि असंख्यन शरअनियारे। कृतबरमा

तेहिदश शरमारे ॥ पारथकृतबरमा केतनमें। शतशर हनतभयो तेहिक्षण में ॥ तब कृतबरमा धनुटंकारे। पार्थहि बाण पचीस प्रहारे । बाणपचीस कृष्णकहँहनिकै। गरजतभयोक्रोधसोंसनिकै॥ तबपारथ करिकै धनुछेदन हनेएकैस बाणगिरि भेदन ॥ नृप कृतबरमा बरधनु गहिकै। दशशरहने खरोरहु कहिकै ॥ नवशर कृतबरमा केधरमें। मारेपार्थ परषितेहि थरमें॥ काटि मारिसहि सहिबहु शायक। घोरयुद्ध कीन्हों दृढ़घायक॥ तबकेशव पारथसों भाखी। कहासमुझि मृदुता गहिराखी॥ बेगिजीति यहि आगे चलहू। नृपति श्रुतायुध कोदल दलहू॥ सुनिपारथ अतिधनुबिधिकीन्हें। कृतबरमहि मोहित करिदीन्हें॥ कृतबरमा कहँमोहित करिकै । चलत भयोशर सेतु बितरिकै॥ चेति निमिषमें भटकृत बरमा। गहे बीररसबर कीपरमा॥ युधामन्यु उतमौजा राजहि। आड़त भयोचिन्ति जयकाजहि॥ तिनसों मचोयुद्ध तेहिथलमें। तीनौ प्रबल गनेधनु बलमें॥ दोहा॥ तौलगिबढ़ि आयेइतै पार्थगहेजयचाह। तेयुगनृप तहँगौनकी बहुरिनखाईराह॥ चौपाई॥ दलमर्दत पारथकहँ आवत। निरखि श्रुतायुधभोशर छावत॥ पार्थहि मारितीनि शर क्षणमें। सत्तरि हने कृष्णके तनमें। सो लखिकै अर्जुनअति रोखे। ताहिहने नब्बेशर चोखे॥ हन्यो अर्जुनहि नृपतिश्रुतायुध। शर सतहत्तरि बनमें आयुध॥ पार्थकाटि अतिदृढ़ धनुतासू। मारे ताहिसात शरआसू॥ तबसो धारिआन धनुतुरमें। नवशर हने पार्थके उरमें॥शततुरंग बधिनृपके रथके। पारथ किये पथिक नभ पथके॥ तब गहिगदा श्रुतायुध राजा। भोगरजत बजवाइ सुबाजा॥ भूपप्रभाव गदा कोसुनिये। सोसुनि प्रभुकी महिमा गुणिये॥ पनसा नाजानदी सुहावनि। सोही नृपकी जननी पावनि॥ प्रगटित भयो बरुण सों तासों। नृपति श्रुतायुध भरो प्रभासों॥॥ पनसा कही बरुणसों येहू। प्रभु मम तनय अमरकरि देहू॥ यह सुनि कह्यो बरुण अनुमानी। नरनहिं होत अमर सुनुमानी॥ गदा समंत्रदेत यहिऐसी। जौनअरीन बज्रतड़ि तैसी॥ तासु प्रभाव लहिहि जय सबसों। बिनुप्रति द्वन्दिहि हनिहि न जबसों॥ जब अयुद्ध करतापहँ डारिहि। तबयह गदा पलटियहि मारिहि॥ दोहा॥ इमि कहिकै दीन्ही बरुणगदा अमोघ समंत्र। होनृपजासु प्रभावते राखत सुजय सुतंत्र॥ भयो कालबश तेहिसमय भूलिबरुण कोबैन। गदा

चलायो कृष्णपहँ बिदित बीर बलऐन ॥ लरत रह्यो अर्जुन तजी गदा कृष्णपह भूप। बध्यो नृपहिताते पलटि गदाभयानक रूप ॥ तोटक ॥ इमि देखि श्रुतायुधको मरि बो। सबलोग धरेबिस्मय करिबो ॥ बिचलो दल भूप श्रुतायुध को। तजि शोच सुबाहन आयुधको ॥ यह देखि सुदक्षिण बीरखरो। रथहांकि भिरो अतिरोषभरो ॥ तिहिपार्थ तहां शर सातहने। तिमि पार्थहिसो दशबाण बने ॥ हनि कृष्णहि तीनिसु बाणखरे। फिरि पार्थहि सातहने बड़रे ॥ तहँपार्थ रच्यो शरजाल महा। नृपतासु स्वरूप नजात कहा ॥ धनु केतुहि काटि गिराय दये। शर तासु हियेहनि मोद लये ॥ तब बीर सुदक्षिण शक्ति गहो। तजि पारथपै मति भागु कहो ॥ दोहा ॥ पार्थकाटि तेहि बीचही फिरि चौदह शरमारि। तुरंग सकल अरु सारथिहि दीन्हेंमहि पैडारि ॥ फेरिबज़ समशर हने भूपतिके उरमाह। ह्वै अप्राण महिपैगिरो बिदित बीर नरनाह ॥ सुवन भूप काम्बोज को मरो सुदक्षिणबीर। भगीतासु सेना करत हाहाकार अधीर ॥ चौपाई ॥ सोलखि कैअति अमरष पूरे। गर्बि असख्यन नृपभट रूरे ॥ घेरि लगे सब आयुध डारन। मारु मारु धरु मारु पुकारन ॥ तेहिक्षण पार्थचक्रसम नचिकै। सबदिशि सेतु शरणको रचिकै ॥ बधि अगणित हय गज भट पलमें। प्रलयकाल पूर्यो तेहिदलमें ॥ पार्थहि जानि काल जगजेना। बिचलत भईभूप तोसेना ॥ सोलखि अच्युतायु नृपयोधा। अरु श्रुतायु कीन्हों अवरोधा ॥ तेयुग बन्धुभरे अतिरिससों। हनेअसंख्यन शर युग दिशिसों ॥ तिनके काटि असंख्यन शायक। बहुशर हन्योपार्थ दृढ़घायक ॥ तबश्रुतायु तोमरशर चोखो। हनोंतासु उरनिरखि अनोखो ॥ अति दृढ़घाव लगेतहँ पारथ। मोहित भयो भूलि निजस्वारथ ॥ प्रबल बीर सुरतहि सोजागो। सिंह समान क्रोधसों पागो ॥ अच्युतायु नृप ताही क्षणमें। शूलहन्यो पारथके तनमें ॥ लगेशूलफिरि मुरछित ह्वैकै। रह्यो ध्वजासों लगिबल ग्वैकै ॥ सोलखि पारथको बधजानी। हरषे भटगण जय अनुमानी ॥ केशव लखि अति बिस्मय लहिकै। किये सचेत बचन कछु लहिकै ॥ तौलगिते युगभटरिसि लीन्हें। रथहि शरणसों गोपित कीन्हें ॥ चेति धनंजय भटरणचायक। तजोऐन्द्र अस्त्र जयदायक॥ दोहा ॥ तिनसों सहसन बाणकढ़ि काटिदये सबवान। तिन्हेंबध्यो तब दिव्यशर

हनि भट पार्थ अमान ॥ मारि श्रुतायु सुबीर कहँ अच्युतायु कहँ मारि। मारि पञ्चशत रथिन कहँ दीन्हें महिपै डारि ॥ चौपाई ॥ अगणित हय गज बधिभय त्यागे। मरदत सैन चले फिरिआगे ॥ निज जन कन कहँ निरखि गतायू। भटदीर्घायू अरुणिअतायू ॥ बर्षि बाण पारथके रथपै। जाल बिरचि दीन्हों नभ पथपै ॥ पार्थ असंख्यनशर परि हरिकै। बाण जालको छेदन करिकै ॥ हनि हनि दिव्यअस्त्र अरि खेदन। करत भयो तिनको शिर छेदन ॥ बधि तिनकहँ कोदण्डहि करषत। अगरो अबिरल शायक बरषत ॥ जिमिगजयूथमध्यपंचानन। कलभन दपटत बधतअमानन ॥ तथा भटन पर शायकडारत। चलेगणे सुभटन संहारत ॥ लखि कलिंग आदिक नृप योधा। कैएक सहस किये अवरोधा ॥ अरु दक्षिण दिशिके बहुराजा। आइत भेभरि सहित समाजा ॥ सहसन मत्त द्विरद मतवारे। तिन पै चढ़े सुभट भयधारे ॥ धनुटंकारि घेरि सब दिशिसों। बरषण लगेबाण भरिरिसिसों ॥ तहांपार्थ अतिबिक्रम कीन्हों। सबदिशि शरपंजर रचि दीन्हों ॥ तजि तजि दिव्यअस्त्र अनियारे। अगणित द्विरद निमिषमें मारे ॥ बधि अगणित गज रथ धनुधारी। करत भयो यमपुर पथ चारी ॥ रचि सबदिशि अबिरल शरसेतू। काट्यो अगणित शरधनु केतू ॥ दोहा ॥ कटे कुम्भकर रद चरण द्विरदन सों तेहि याम। कियो भयानक रूपमहि पार्थबीर अभिराम ॥ सद्विरद द्विरदस्थन भटन बधित अशेषन टारि। चलो पार्थभट मनुचलो रबिघन पटल बिदारि ॥ सोरठा ॥ सो लखिकै जय ऊटि सक पारद अरु यवनगण। टेरिटेरि बढ़ि जूटि बरषन लागे शक्तिशर ॥ तोमर ॥ तेहिसमय पार्थ अमान। तहँ घूमि चक्र समान ॥ शरजाल सबके काटि। शरसेतु सबपै ठाटि ॥ हतशेष भटन भगाय। शरबरषि सबदिशि छाय ॥ फिरि चलतभो रणधीर। हनिबधत अगणित बीर ॥ तब मिरतभे बढ़िजाय। जे म्लेच्छ उन्नत काय ॥ जे दरद अरु अतिसार। अरु दाबपुगड उदार ॥ ये भट असंख्यन सर्ब। सबओर घेरि सगर्ब ॥ जे आयुधनके भेद। ते लगे हनन अखेद ॥ तहँ पार्थ करि सन्धान। करि ब्यर्थ सबके बान ॥ शरसेतु अबिरल घोर। सचि तंत्र रचि सबओर ॥ षटसहस योधन मारि। भो देत महिपै डारि ॥ अरु बधे एक हजार। जे भटनके सरदार ॥ बहु चरण करन बिहीन। भो करत योधा

पीन ॥ इमि प्रलय पूरि पसारि। हतशेष भटन बिडारि ॥ भटपार्थ सुयश बिचारि। फिरि चलो धनु टङ्कारि ॥ दोहा ॥ तबबढ़ि पारथसों भिरो सुभट श्रुतायू तौन। भूप देश अम्बष्टको बरणो योधा जौन ॥ सो पारथके सुरथ पै देतभयो शर पूरि। सब शर काटो निमिष में पार्थ मारि शर भूरि ॥ बाणनसों बधि तुरँग सब काटिदियो धनु तासु। तब अँबष्टपति गहिगदा चलो सुरथतजि आसु ॥ सोरठा ॥ शरक्षुरप्रसों पार्थ काटि देतभो सोगदा। तब सो नृपगुणि स्वार्थ और गदागहि चलतभो ॥ पारथ बीर निहारि शीघ्रकाटि सोऊ गदा। बाण अमोघ प्रहारि बध्यो ताहि सुनु भूपमणि ॥ चौपाई ॥ इमि दलमर्दित लखि दुर्योधन। लख्यो न अर्जुनको अवरोधन ॥ अति ब्याकुल तासों मनमैलो। गयो द्रोणके पास अकेलो ॥ ब्यूहद्वारपै रह्यो अचारय। तासों कहतभयो सुनु आरय ॥ कोप बाययुत पार्थ दवानल। दहत जात कक्ष समादल ॥ बड़ बड़े सुभटन कहँ जिमि जिमि। बधत जात उत पारथ तिमि तिमि ॥ शंकित होत भूप मम पक्षक। नृपति जयद्रथके जे रक्षक ॥ इमि सब जानत रहे यथारथ। द्विजसों बढ़न न पैहै पारथ ॥ बिनु तुमकहँ जीते दल जीतत। जात चलो वह नृप बध चीतत ॥ हम सबबिधि तुम्हारि सेवकाई। करत जानि गुरुदेव सहाई ॥ तुम नित उनहींकी जयचाहत। उन्हैं दलत दल नहिं तुम पाहत ॥ प्रथमहि आपु न रक्षण भाषित। तौ न जयद्रथकहँ हम राखित ॥ ताते तात करहु सो काजा। जाते बचै जयद्रथ राजा ॥ यमके डाटतरे परि कोई। बचै न बचिहि पार्थसों सोई ॥ जौ पारथ वहि देखन पाइहि। तौ तुरतै यमलोक पठाइहि ॥ जौनहिं आड़े तुम दृढ़ घायक। तौको पार्थहि आड़न लायक ॥ सुनि ममबचन रोष मति आनो। भूपबचै सोबिधि अनुमानो ॥ दोहा ॥ भूपति के ये बचन सुनि कह्यो द्रोण सुनु भूप। हय तुणीर धनु सारथी अर्जुन के अनुरूप ॥ तजत बाण जौलगि गिरत तौन बाण हे तात। तौ लगि सो तेहि बाणते अगरि कोशभरि जात ॥ तरुण पुरुष वह वृद्ध हम कैसे आड़ो जाय। छपो न बिक्रम पार्थको जानतहौ कुरुराय ॥ जयकरी ॥ नृपतियुधिष्ठिर सेन बढ़ाय। लरत ब्यूहके मुखपै आय ॥ जो हम त्यागि ब्यूहको द्वार। जाब उतै सुनु भू भरतार ॥ तौ इत ऐसो योधा कौन। आडिहि भीम आदिकन जौन ॥ धृष्टद्युम्न आदिक भटचंड।

दलमधि धसिहैं धुनिको दंड ॥ तब नहिं करतबनी कछुकाज। लहिहि जीति पांडव महराज ॥ ताते जाय लरो तुम भूप। दोऊबंधु बली अनुरूप ॥ है असहाय रथी वह एक। तुम्हैं सहायक रथी अनेक ॥ तुमकहँ लरत देखि सब बीर। नहिं टरिहैं लरिहैं धरिधीर ॥ यह सुनिकै कुरुनाथ नरेश। कह्यो सुनो आचार्य सुभेश ॥ तुम्हैं आदि योधनकहँ जौन। जीतिगयो पारथ बलभौन ॥ हम किमि तासों लरिये तात। कहिये आपु समुझि यहबात ॥ यहसुनि कह्यो द्रोण मतिमान। नृप तुम कह्यो सांच नहिं आन ॥ देत तुम्हैं हम कवच अभेद। ताहि धारिकै लरो अखेद ॥ जौन वृत्तसों लरिबे अर्थ। शक्तिहि दीन्हे शम्भु समर्थ ॥ शक्र अंगिरहि दयो स्वतंत्र। अंगिर जीवहि दयो समंत्र ॥ दयो अग्निवेश्यसहि गुरु ताहि। हमहिं दयो तिन धनुधर चाहि ॥ दोहा ॥ देततुम्हैं हम कवच वह धारण करिये तात। अस्त्र अमोघौ अरिनके नहिं परशैं तो गात ॥ इमि कहि द्रोण समंत्र वह कवच तासु अँगबांधि। कह्यो सु आशिष दै लरो निरभय हरहि अराधि ॥ महिषगी ॥ लहि कवच चारु अभेद उग्र प्रभाव अति आनँदभरो। भट पार्थसों भिरि लरनको तोतनय नृप साहस धरो॥ रथसहस अरु गजसहस प्रबल प्रमत्त भट जिनपै चढ़े। दशलाख तुरँग सवार जे भटबीर कवचनसों मढ़े ॥ लै संग बहु बजवाय दुन्दुभि चलो अति आनँद गहे। जहँरहो पारथ लरत दलमधि प्रलय अति पूरणनहे॥ खुरथार छार अपार सों नभ भू धुरित सबदिशि भयो। दिनमध्यके शशि सम समय तेहि देव दिनमणि लखि गयो ॥ दोहा ॥ तोसुत नृप जबचलो गहि जय लहिबेकी हौस। दोययाम दिन तेहि समय भो व्यतीत तेहि द्यौस ॥ राम राम श्रीराम सिय जपिश्री सीताराम। द्रोणपर्व भाषा कियो चौथेदिन युगयाम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणि कौरवदलेअर्जुनप्रवेशोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

दोहा ॥ कवच धारि कुरुनाथनृप चलो पार्थकी ओर। इत ममदल अरु पाण्डवन सों रण माचो घोर ॥ चौपाई ॥ द्विजभट धृष्टद्युम्न बरपन के।

दोऊ दावानल समदरशे । दोऊ शरबन घनसम बरशे ॥ दोऊ अगणित भट बधिडारे । दोऊ दुहुंदिशि प्रलय पसारे ॥ इहिबिधि दुहुं दिशि के भटरूरे । किये युद्ध भिरि भिरि रिसपूरे ॥ तोसुत भट बिकर्ण धनुधारी । चित्रसेन अनुपम रणचारी ॥ सहित बिबिंशतिदोनों भाई । भिरे भीमसों ओजबढ़ाई ॥ भिरो द्रौपदेयनसों राजा । बढ़ि नृपभट बाह्लीक समाजा ॥ दुःशासन सात्विकि सों भिरिकै । कीन्ह्यो घोरयुद्ध तहँ थिरिकै ॥ माद्री सुतसों भिरे सक्रोधा । बिन्द और अनुबिन्द सुयोधा ॥ सुभट घटोत्कच सों गहि आयुध । अभिरो राक्षस बीर अलायुध ॥ कुन्तिभोज सों भिरो अलम्बुख । काल कराल सदृश भयदंमुख ॥ यहिबिधि द्वन्द हजारन भिरिभिरि । घोरयुद्ध कीन्हों तहँ थिरि थिरि ॥ धृष्टद्युम्न अरु द्रोणाचारय । कियेतहां अति अद्भुतकारय ॥ अगणित बाण परस्पर डारैं । अगणित बाण शरनसों बारैं ॥ अगणित भटन बेधि बधिडारैं । फेरि परस्पर बाण प्रहारैं ॥ दोहा ॥ त्यागि धनुष असिचर्मगहि धृष्टद्युम्न अनखाय । द्रोण सुभटके सुरथपै जान चह्यो रिसछाय ॥ तिमि तेहि लखि आचार्य्य तहँ यों मारत भो बान । निकट जाइबेको न क्षण लह्यो बीरबलवान ॥ चपल रह्यो इमिसुरथपै धृष्टद्युम्न रणधीर । ताके तनशर हनत भो क्षण न लह्यो द्विजबीर ॥ चौपाई ॥ तुरँग युवा ईर्षापर इतउत । चरत रह्यो पक्षीसम बलयुत ॥ तहँ तहँ द्विजबल बुद्धि निकेतू । अविरल रचै शरन के सेतू ॥ खड्ग चर्म अरु तुरतागतिसों । तिनकहँ व्यर्थ करै सो जतिसों ॥ तहां द्रोणकर लाघव करिकै । साठि बाण तुरँगन पहँधरिकै ॥ काट्योचर्म मारि शतबाणा । दश शायक हनि काटि कृपाणा ॥ युग शरसों कट्योध्वजकेतू । सूतहि बधत भयो जयहेतू ॥ तब अमोघ शर योजित करिकै । तापहँ तज्यो मंत्र बिधि भरिकै ॥ हनि चौदह तोमर शर ताही । काटि दयो सात्विकि जयचाही ॥ यमके मुखमधिसों अभिमानिहि । सात्विकि काट्यो भटसेनानिहि ॥ लखि उतके भट अनरथ चीन्हें । सेनानिहि गोपित करिलीन्हें ॥ इन सेनानिहि रक्षित देखी । द्रोण सात्विकी पहँअतितेखी ॥ तुरतहि छब्बिस बाण प्रहारे । फिरि छब्बिस शर उरमधिमारे ॥ अमरष गह्यो द्रोण यह सुनिकै । वृद्धभूप बूझे जय गुणिकै ॥ सोअब बेगि भाषु हेआरय । सात्विकि कोजो कियो

अचारय ॥ सोसुनिकै हँसि संजय भाषो। तब द्विज ताको बध अभिलाषो ॥ कीन्ह्यों अति बिक्रम मनभायो। नेकु न ताहि सुबश करिपायो ॥ दोहा ॥ नागराज सम श्वसत भरि रिसकरि रातेनैन । अधर दाबि कै रदनसों द्रोण बीरबलऐन ॥ तुरँग तुरंगन चपलकरि चलि सात्विकिकी ओर। अबरहु खरो न भागु कहि बरषो बाण अथोर ॥ सात्विकि तिमि बर्षत बिशिष कह्यो सूतसों बैन । शीघ्र सुरथ मम द्रोणके ढिगलै चलो सचैन ॥ सोरठा ॥ जौन त्यागिनिज धर्म भोआश्रित नृप सुवनको । गहि क्षत्रिणको कर्म चरत तासु बिक्रमलखौ ॥ चौपाई ॥ इमिकहि रचत शरण कोसेतू । भिरो द्रोणसों बुद्धिनिकेतू ॥ द्रोणताहि सहसन शरमारे । सो सहसनशर द्विज पहँडारे ॥ दोउन के दोऊ सहसन शर । काटि काटि मारे बहुशरबर ॥ दोऊ अद्भुत बिधिसों चरहीं। दोऊ दिशि शरपंजर करहीं ॥ दोऊभट शरपंजरकाटैं। दोऊ दोउन हनि हनिडाटैं ॥ दोऊ छत्र दुहुंन के भेदे। दोऊदोउनके ध्वजछेदे ॥ दोउनके शर मढ़ि सब दिशिमें। अन्धकार कीन्ह्यों जिमि निशिमें । दोऊ अनुपम भट बिधि साजे। दोऊ भिरे रुधिरसों राजे ॥ दोऊ मण्डल सम धनुलीन्हें। चक्र सरिस चरि अतिरण कीन्हें ॥ दुहुंदिशि के योधा तेहिक्षनमें । लखि दोउन कहँ बिस्मित मनमें ॥ त्यागि त्यागि संगरको करिबो। लखिलखि रहे दुहुंनको लरिबो ॥ सुरगण तहां आइ रणचाहे । दोउन कहँबहु भांति सराहे ॥ दोऊ गहि गहि अति उतकरषा। कीन्हों दिव्य शरण की बरषा ॥ दिव्य दिव्य अस्त्रनसों दोऊ। बारत भये लखैं सबकोऊ ॥ इमि लरि सात्विकि लाघव बरसों। धनुष द्रोणको काट्यो शरसों ॥ तुरित द्रोण धनु और उठायो। सात्विकि सोऊ काटि गिरायो ॥ दोहा ॥ फेरि द्रोण धनु और गहि बरषन लागो बान । सोऊ काटत भो तुरित सात्विकि बीरअमान ॥ यहि प्रकार षोड़श धनुष काटे सात्विकि बीर। करी प्रशंसा सुमन कहि सात्विकि अनुपम बीर ॥ साचर्य्यितहवै द्रोण तहँ करत भये अनुमान। भीषम अर्जुनसम करत सात्विकि धनुष बिधान ॥ चौपाई ॥ तब गहिऔर धनुष रिस लीन्हें । दिव्य अस्त्रकी बरषा कीन्हें ॥ जितने अस्त्रतजेर ण वारण। सात्विकि तिनको कीन्हों बारण॥ जेजे अस्त्र द्रोण तहँडारे। सात्विकि तेई अस्त्रप्रहारे ॥ तब अनुमानि द्रोण

अभिमानी। डारो अग्निबाण सन्धानी॥ बारुण अस्त्र सात्विकी मारो। अभिरो युग शरबर्च सँभारो। प्रलयकरन दोऊ भयधारे। भिरि निज निज प्रभाव बिस्तारे॥ अन्धकार सबदिशि महँछायो। भरिगो घोरशब्द अनभायो॥ तेहिक्षण धर्म नृपति सबभाई। भये तासु रक्षक ढिग आई॥ धृष्टद्युम्न केकय क्षितिपालक। सदल बिराट शत्रु कुलघालक॥ बर्षत बाण मंत्र पढ़िपढ़िकै। भिरेद्रोण भटसों बढ़ि बढ़िकै॥ दुःशासनहि आदिभट रूरे। राजकुमार क्रोधसों पूरे॥ द्रोणहिं रक्षित तिनसों भिरिकै। घोरयुद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै॥ इतउत केभट सहित समाजा। अति बिक्रम कीन्हों तहँ राजा॥ भोअति तुमुलयुद्ध तहँ सबसों। पृथक् पृथक् सब कहिये कबसों॥ हय गज सुभट असंख्यन जूझे। निजपरसैन न कोऊ बूझे॥ बही रुधिरकी सरिता भारी। तहँकर रुण्ड मुण्ड जलचारी॥ दोहा॥ काटे धनु रथ छत्र ध्वज भूषण बसन अनेक। यादजलज सम तासुमधि निरखे सहित बिबेक॥ शैल शिखर सम लखि परे मरे डरेगजराज। समुनि गुफासम बधित भट सहित अँबारी साज॥ सोरठा॥ सुनो भूपतेहि काल हांकि सुरथ अति बेगसों। भट अवन्ति क्षितिपाल गये पार्थसों लरनकहँ॥ चौपाई॥ ते ढिग जाइ प्रचारि प्रचारी। बरषेबिशिष सिहारि सिहारी॥ साठिबाण अर्जुन कहँ मारे। कृष्णहि सत्तरि बाण प्रहारे॥ तुरगन हने बाण शत क्षनमें। तब अर्जुन कोपितह्वै मन में॥ बिन्द और अनुबिन्द नृपति के। धनु काटे हनिशर अय अतिके॥ तब ते शीघ्र और धनु गहि गहि। मारे बाण खड़ो रहु कहि कहि॥ पारथ तेऊ काटि शरासन। हति युग सूतन अरु हय शासन॥ मारि बज्रसम शर गिरिभेदन। कियो बिन्द नृपको शिर छेदन॥ निजगुरु बन्धुहि मृतक निहारी। नृप अनुबिन्द बिदित रणचारी॥ तब तजि सुरथ गदाकर गहिकै। चलो पार्थ पहँ थिरुथिरु कहिकै॥ अर्जुनमारि पांच शरआसू। काटोशीश चरणभुज तासू॥ तिनको मरण देखितेहि पलमें। हाहाकार मचोमम दलमें॥ तेहिक्षण तासु अनुगभट रूरे। भिरे पार्थसों अतिरिसि पूरे॥ तोमर शक्तिभल्ल अनियारे। पट्टिश गदापरश्वध भारे॥ भिन्दिपाल आदिक सबचोखे। आयुध बरषतभे अतिरोखे॥ पार्थ काटिसब आयुध तिनके। काटेशिर पगसुभट अगिनिके॥ अगणित भटन

पराजित करिकै। मर्दत सैनचलो प्रणधरिकै ॥ दोहा ॥ तब अगणित भूपति सदल भिरे प्रचारिप्रचारि। तिन्हैं बधत टारतचलो पार्थ बिचारि बिचारि ॥ करत पराजित जंगमन दहत थावरन भूप। चलत दवा तिमि सैनमधि चलोपार्थ रबिरूप ॥ रोला ॥ बरषि शायकबधत बिचलित करत दल चतुरंग। करत रथतिमि सुपथ पारथचले जातसुढंग ॥ मनहुं फारत गिरिहि मधिह्वै जातकोऊ देव। बहति शोणित धारतेहि मग लसति सँगयहि भेव ॥ मनु भगीरथ सरिस कोऊ भूप बीर उदार। जात बेधत भूमिलीन्हें भारती कीधार ॥ करतजिमि बाणतप्रण तहँपार्थभट अवदात। करत सारथपनो तैसोकृष्ण रथलै जात ॥ कह्योधीरे कृष्णसों तहँ पार्थ सुनु हेतात। अश्वभे अति श्रमित बेधित शायकन सों गात ॥ सदा तुव मतपाय पाण्डव लहतजय सबठौर। यत्नजो करतब्य अबसो कहौ प्रभु करिगौर ॥ खरोकरि रथ खोलि अश्वन काढ़ि बाण समस्त। बिगत श्रम करिलेहु तुमहम करत युद्ध प्रशस्त ॥ पार्थके ये बचन सुनिकै कहौ केशव हौंशि। चहतहैं यहंकहन हमकरतव्य है यहऔंशि ॥ बचन यह सुनिउतरि रथतेपार्थ बीर अमान। लगो बरषन भटनपहँ सबओर अबिरलबान ॥ देखि महिपै पार्थकहँ लखिसमय भूपति भूरि। सदल बढ़ि बढ़ि घेर सबदिशि दयेशायक पूरि ॥ पार्थरचि शरसेतुसबदिशि बाणसबके काटि। हनेसबके गातमधि बहुबाण धनुबिधि ठाटि। एकपारथ भूमि गत तेहिसुभट अगणित घेरि। भयेबर्षत शस्त्र सबदिशि तुरँग रथहय फेरि ॥ नेक शंकित भयोनहिं तहँपार्थभटरण धीर। नहींपाये छुवन एकौ बाण तासु शरीर ॥ कृष्ण हयन बिशल्य करिकै कहोसुनि हेपार्थ। बिगत श्रमनहिं होतहैं सबअश्व बिकल जलार्थ ॥ बचनयह सुनिपार्थ मंत्रित बाण महि मधिमारि। कियो प्रगटित तहांसर वरपूर्ण अनुपम बारि ॥ मत्स्यकूर्मसु बारि जनयुत परम पावनरूप। अश्वपान सुनाम शरसो लसो परम अनूप ॥ तासु दरशन हेतुतेहि क्षणआय नारदतत्र। देखिताकहँ कह्योपारथ लहोशुभ जयपत्र ॥ कृष्णलखि हरषाय सरमधि तुरंग सबलै जाय। बारिपान कराय धोवन लगेतहँ पयराय ॥ पार्थसरके सकल दिशिअति घने शायक छाय। अमल अनघ अभेद अनुपम दयोगेह बनाय ॥ जलदगण समसुभट अगणित घेरिझुकि सबओर। गरजि गरजि प्रचारि बरषेशस्त्र

बारि अथोर ॥ पार्थहरिसम शैलसम शर गह रचना धारि। दयेपरन न कृष्णब्रज पहँ नेकुआयुध बारि ॥ कियोतेहि क्षणपार्थ जैसो धनुषधरको काज। आजुलों नहिं और कोऊकियो ऐसोसाज ॥ सुचित रहितहँ कृष्ण अश्वन धोइबाहेर आइ। जोरि रथमें चढ़े पार्थहि लखि सराहि सचाइ ॥ सुरथपै चढ़िपार्थ फिरिसब ओर बर्षतबान । चलो सिन्धु महीप कीदिशि दलहि दलत अमान ॥ गहे सब नृपग्लानि ताको लखि अमानुष कर्म। गुणो सिन्धु महीपको बधिजाब औशि अभर्म॥ मृगन मधि मृगराजसम भट पार्थ क्रीड़त जात। एकभटहि अनेक भटनहिं सकत जीति लजात ॥ भाषिऐसे परस्पर नृप भटन केसमुदाय। देहिं पारथ बीरपहँ शर शक्ति तोमर छाय ॥ काटि आयुध सकल तिनकहँ बेधि बधि बिचलाय। पार्थ बरषत बाण सबदिशि चलो जाय सचाय ॥ पार्थ अगणित शस्त्रहनि फल करत लसत सचेत। एकलोभ अनेक गुणकहँ व्यर्थजिमि करिदेत ॥ सुभट अगणित भिरेंतेहि बिधि पार्थसों तेहि ठौर। जात पुष्पित बिपिन मधि गजमत्तसो जिमिभौंर ॥ गर्ब गहि गहि भिरत बढ़ि बढ़ि शूर भूपति जौन। उदधि गतजिमि सरितजल तिमिनहीं बहुरेतौन ॥ लखतही डरि भगेंकेते बीरतजि भटलीक। बेद पथसों होत जैसे बिमुखजे नास्तीक ॥ दोहा ॥ इमि मर्दत चतुरङ्गिणी जात पार्थ कहँ देखि । कितने नृपगण नृपन सोंकहत भये अवरेखि ॥ सिन्धुनृपति केबधनकी करी प्रतिज्ञापार्थ। सोसुनि जान्योअवशिवह निजप्रण करिहि यथार्थ ॥ ताके बधिबेकी रही इतीआश बलवान। छुटन न पैहैद्रोणसों यद्यपि पार्थ अमान ॥ फारि द्रोणदल जाल जब कढ़ोपीन भटमीन। तब मोहियते कढ़िगई वहआशा ह्वैक्षीन ॥ जीतिद्रोण कहँजात तेहि आड़ैको बलऐन। गिरिहि उड़ावत पौनतेहि तरुगण रोकिसकैन ॥ सोरठा ॥ भुजबल सों भोपार उदधि पराक्रम द्रोणके। तेहि करि बाहु बिहार भट बहु शरतरिबो कहा ॥ झपट्यो सिंह सचाय कोपि गरजि जेहिबधन कहँ। तेहिद्विरदहि न बचाय सकत द्विरद समुदाय जुरि ॥ चौपाई ॥ जेहिदल मध्य जयद्रथभूप। सो दल निरखिभयो तेहिरूप ॥ मृगके निकट जाय मृगराज । होत यथा गहिबे के काज ॥ जबलगि इनहिं न परतलखाय। तबलगि जियत जयद्रथराय ॥ लखितहि यहलेहै वहिमारि। लेतबाज जिमि पक्षिहि धारि ॥ इतनेमें नृप

तोसुत बीर। पहुंचो जाय पा[illegible] के तीर॥ अति सुवेगसों सुरथ बढ़ाय सम्मुख भयोपार्थके जाय॥ ताक्षणतो दलमें क्षितिपाल। बाजे दुन्दुभि शंख बिशाल॥ सिन्धुराज के रक्षकसर्ब। हर्षित भयो गहे गुरुगर्ब॥ भयो सैनमें शोर अमन्द। भिरो पार्थ सों कुरुकुलचन्द॥ कितने अति धीरज अनुमानि। चितैरहे अति अचरज जानि॥ कितने सुभट कहैं इमि आम। भूपहिं पार्थबधत यहियाम॥ कृष्णभूप कहँ सम्मुख देखि। कहो धनंजयसों अवरेखि॥ आजुदैव बश सुनु कुलदीप। दुर्योधन कहँ लहो समीप॥ इनकीन्हें जितने अपकार। सोसब समुझि समुझि यहिबार॥ दुसहक्रोध प्रगटित करिअत्र। भेजहु इन्हैंरहत यमयत्र॥ हैयह सबअनरथको मूल। बैरबारि सरिताको कूल॥ दोहा॥ द्रुपदसुताके कच ग्रहण समुझि समुझि बनवास। अवशिबधौ यहिदैवबश लहे आजुतुम पास॥ पार्थबचन यहसुनि कहो सांच कहे तुम जौन। हांकि तुरंगन तासु ढिग शीघ्र चलो बलभौन॥ सोरठा॥ यह सुनि कृष्ण सडौर चले सुरथ लै तासु दिशि। दुर्योधन करि गौर कहत भयो इमि पार्थ सों॥ पारथ क्षितिपै आय दिव्य अस्त्र जितने लहे। सो बिक्रम व्यवसाय प्रगट करहु जो शुद्ध भट॥ तुव बिक्रम अधिकार सुने बहुत देखे न कछु। होहु पांडु के बार जोतौ दरशावहु हमें॥ चौपाई॥ इमिकहि तीनिबाण अनियारे। तकि पारथके उरमधिमारे॥ चारिबाण घोरनकहँ हनिकै। कृष्णहिं मारे दशशर गनिकै॥ पार्थहनेतेहि चौदह शायक। जेतरुपाहन बेधन लायक॥ ते सबबाण कवचमें भिरि भिरि। धसे न परे सुरथपै गिरि गिरि॥ तिन बाणनकहँ निष्फल देखी। फिरिमारे चौदह शर तेखी॥ तेऊगिरे कवच छ्वै कैसे। पाहन पाहनसों लगिजैसे॥ इतेपार्थ के बाण अमोले। निष्फलदेखि जनार्दन बोले॥ बज्रसदृश तोशर यहि क्षनमें। कतनहिं धसत शत्रुके तनमें॥ कै ऋजुभो गांडीव शरासन। कै घटिगो तोबल अरिनाशन॥ जातेबाण गिरततन छ्वैकै। मोहिं होत बिस्मययह ज्वैकै॥ यहसुनि पार्थकह्यो यदुबरसों। बांध्योआपु द्रोण निजकरसों॥ कवच अभेद तासु तनमाहीं। ताते ममशर प्रविशत नाहीं॥ सोवह कवच छिदित नहिं कबहूं। लखोयाहि जीतत हमतबहूं॥ इमि कहि शायक मंत्रित करिकै। धनु तकितज्यो पार्थरिस भरिकै॥ लखि

दूरहिते अश्वत्थामा। काटिदियो सोशर अभिरामा॥ तब पारथ अति विस्मित ह्वैकै। बरष्योबाण सकलदिशि ज्वैकै॥ दोहा॥ बरषि असंख्यन बाणतहँ काटि असंख्यन बान। घोरयुद्ध कीन्होंतहां दोऊबीर अमान। नवनव शर तोसुतहने कृष्ण पार्थके गात। सोलखि इतके सुभटसब सुख लहिभये बिभात॥ सोरठा॥ काल करालसमान ह्वै तेहिक्षण पारथतहां। बधे मारि बहुबान नृपके रथके तुरँग सब॥ चौपाई॥ हनि अमोघशर सूतहि मारे। पार्श्व रक्षकन बधि महिडारे। धनुषहि काटि बिधनुकरि दीन्हें। करतलमधि शर हनि मुदलीन्हे॥ मारिमारि बहु शायकचीन्हे। रथके सबअँग चूरणकीन्हे॥ शर झरि मधि तहँभो नृपतैसे। बायु भौंर मधि लघुतरु जैसे॥ इमि आपदा भूपपहँ देखी। बढ़िबढ़ि अगणितभट अवरेखी॥ पार्थहि घेरिलतभे चाड़े। सादर नृपहिं करतभे आड़े॥ अगणित हयरथ सुभट पदाती। जेप्रसिद्ध अरिसेन निपाती॥ सब दिशि घेरि गहे उतकरषा। करीघने आयुधकी बरषा॥ कोश भरेलों अबिरल योधा। जिमि ह्वैपरे किये अवरोधा॥ स्तम्भितकरि दीन्हेंरथ तासु। दुसह दवासम शरझर जासु॥ सोलखि केशवअति अमरषिकै। कहो धनंजयकी दिशि लखिकै॥ कत ऋजुभये धनुष बिसफारत। नहिंबाणन सों अरिदल टारत॥ सुनि पारथ अति बिक्रम करिकै। मण्डल सरिस शरासन करिकै॥ रबिकरसम बाणनके झारन। किये निहार सदृशदल बारन॥ अगणित हयगज भटबधि डारत। पारत प्रलय सुराह सिधारत॥ सिन्धु नृपतिके बधकी रतिसों। चलौ बेगिबुधि बिक्रम अतिसों॥ दोहा॥ सिन्धु नृपतिके निकटतेहि आवतजानि सवेग। अति यवसों बढ़ि बढ़िभिरे भटषटरथी सशेग॥ पांचजन्य शंखहि तबहिं कृष्ण बजायो चाहि। देवदत्त शुभशंखजो पार्थ बजायोताहि॥ दुसह शब्द तिनको मचो जिमिघन गरजनि घोर। शंकितभे ममसैनमधि भटलखि प्रलय अथोर॥ सोरठा॥ तेहिक्षण घनेनिशान बाजतभये ममसैन मधि। मचो घोर घमसान पारथसों षटरथिनसों॥ शंख बजाय बजाय अगणित नृपति ससैनबढ़ि। मण्डल घनेबनाय घेरिलेतभे पार्थकहँ॥ चौपाई॥ बाण तिहत्तरि अति अभिरामा। हने कृष्णकहँ अश्वत्थामा॥ तीनिभल्ल अर्जुनकहँ मारे। अश्वनपहँ शरपांच प्रहारे॥ तब अर्जुन अतिरिस वि-

स्तारे । शत षटशर तेहिमारि प्रचारे ॥ दशशर हने कर्णके तनमें । तीनि कर्णके सुतकहँ क्षनमें ॥ मारि क्षुरप्रबाण बरगतिको । काट्योधनुष शल्य नरपतिको ॥ गहि धनुऔर शल्यभट नोखो । मार्यो ताहि बाण अति चोखो ॥ धनु टंकारि कर्ण भटनायक । मारतभो बरबत्तिस शायक ॥ शल्य हनेदश शायक गनिकै । गरज्यो कृपदश शायक हनिकै ॥ भूरिश्रवा तीनिशर मारे । सातबाण द्विजको सुतडारे ॥ तिन सबकहँ पारथ भयधारे । हने असंख्यनशर अनियारे ॥ भरेक्रोध गहिगहि उतकरषा । कियो परस्पर शरकी बरषा ॥ तकितकि शायक हनिहनि डाटें । अगणित बाण परस्पर काटें ॥ अगणितबाण रथनकी गतिसों । ब्यर्थकियो सारथी सुजतिसों ॥ अगणित बाणहने तनमाहीं । अगणित कटत देखि पछिताहीं ॥ यहिबिधि बाणनकी झरिशरसे । रबिकी किरणि न रथतन परसे ॥ दोहा ॥ बाण जालसों सुभटषट देहिंपार्थकहँ तोपि । काटिजाल पारथतिन्हैं देइ शरणसों गोपि ॥ इबिधि परस्पर शरनकी बरषाकरिते सर्ब । घोरयुद्ध कीन्होंतहां भरेक्रोध गहिगर्ब ॥ सोरठा ॥ यहसुनि वृद्ध महीप कह्यो सूतके सुवनसों । अबकहु हे कुलदीप युद्धब्यूहके द्वारको ॥ चौपाई ॥ संजय कह्योसुनो नरनायक । हैवह संगरसुनिबे लायक ॥ जबसों धसो ब्यूहमधि पारथ । तबसों धर्मनृपति गुणि स्वारथ ॥ सदल ब्यूहमधि जैबो गुनिकै । सदलकियो अतिरण धनुधुनिकै ॥ द्रोणआदि इतकेभट रूरे । अतिविक्रम कीन्हें बलपूरे ॥ धृष्टद्युम्न आदिक भटभाये । लरि शोणितकी नदीबहाये ॥ कीन्हें कितक यत्न मनभाये । ब्यूहमध्य नहिं पैठनपाये ॥ तीजे पहर युधिष्ठिर राजा । ह्वैअति क्रोधित सहित समाजा ॥ अतिगहबर बजवाइ नगारे । द्रोणहि जीतन हेत पधारे ॥ तिनकहँ झुकत द्रोणपहँ देखी । ममदलके योधाअति तेखी ॥ है जितजित तिततितसों सादर । चलिचलि तिनसों भिरे उजागर ॥ वृहत्क्षत्र नृप केकयपतिसों । अभिरो क्षेमधूर्तिबल अतिसों ॥ धृष्टकेतु शिशुपाल तनयसों । भिरो बीरधन्वा रणनयसों ॥ कियो नकुल भटको अवरोधा । तो सुत बीरबिकर्ण सुयोधा ॥ भिरतभयो सहदेव सुभटसों । दुर्मुख इतै आउ यहि रटसों ॥ सात्विकिसो भोभिरत प्रचारी । व्याघ्रदत्त दुर्मद रणचारी ॥ भिरो वृकोदर भटसों चावन । आर्ष्यशृङ्ग रणदुन्द मचावन ॥ दोहा ॥ बरषतशर

जे द्रोणपहँ जातरहे जयऊटि। घोरयुद्ध तिनसों कियोइमि इतकेभट जूटि॥ भूपयुधिष्ठिर द्रोणकहँ मारे नब्बेबान। तेहि पचीसशर हनतभो द्रोण बिदित बलवान॥ फिरि सब हयध्वज सूतपहँ तजे पचीस सुबान। करि कर लाघव नृप तिन्हैं काटिदये सबिधान॥ सोरठा॥ तब तीक्षणशर मारि काटि युधिष्ठिर को धनुष। करि शरवृष्टि बिचारि क्षणमें दिये अदृश्य करि॥ बसुकला॥ नृपकहँ अदेष। लखि भट अशेष॥ जाने बिचारि। नृप गयो मारि॥ तब नृपतिधर्म। गहि धनुष पर्म॥ शरसेत ठाटि। सबबाण काटि॥ करि रिसि अथोर। गहि शक्तिघोर॥ जेहि लगे आट। घण्टा सुपाट॥ सोकरि कशीश। मार्‌यो क्षितीश॥ तेहि द्रोण देखि। अनुमानि तेखि॥ डार्‌यो अमान। ब्रह्मास्त्र बान॥ सोशर अनीच। लगि शक्तिबीच॥ तेहि तुरित जारि। निज रुचि पसारि॥ फिरि चलो ताहि। नृप धर्म्म चाहि॥ ब्रह्मास्त्र मारि। तेहि दये बारि॥ द्रोणहि नराच। भो हनत पांच॥ फिरि बाण एक। हनिकै सटेक॥ बर धनुष तासु। काट्यो जु आसु॥ दोहा॥ द्रोणाचारय बिधनुह्वै गदा चलाई चाहि। धर्म निरखि हनि निज गदा मगहि गिराई ताहि॥ क्रोधिद्रोण बरधनुष गहि हनि तीक्षण शर चारि। बधिनृपके रथके तुरँग दीन्हें महिपै डारि॥ अति तीक्षण शर एकसों काटिदये धनुतासु। केतु काटि पुनि तीनिशर भूपहि मार्‌यो आसु॥ सोरठा॥ बिरथ बिधनुह्वै भूप खरोभयो रथसों उतरि। तबद्विज ह्वै रबिरूप गहन चलो बरषत बिशिष॥ तब करिकै अनुमान चढ़िरथपै सहदेवके। भागो नृपति सयान हांकि चपल तुरकी हयन॥ चोपाई॥ क्षेमधूर्ति नृप धनुबिधि ठाटे। बृहत्क्षत्र नृपको धनु काटे॥ धनुषकाटि बहुशर अनियारे। बृहत्क्षत्रके तनमधि मारे॥ बृहत्क्षत्र नृपबर धनुधारी। बध्यो तासु सूतहि शरमारी॥ फिरि रिस गहिकरि राते ईक्षण। बध्यो नृपहि हनि शायक तीक्षण॥ क्षेमधूर्ति कहँ बधि सो राजा। दल मर्दतभो सहित समाजा॥ धृष्टकेतु सों भिरि जयकारण। नृपति बीर धन्वा भयभारण॥ घोरयुद्ध कीन्हों तेहिक्षणमें। जे लखि भटभे मोहित मनमें॥ लरैं यथा युगमैगल भिरिकै। ते तिमि तहां लरतभे थिरिकै॥ नृपति बीरधन्वा दृढ़ घायक। काट्यो तासु धनुष हनि शायक॥ धृष्टकेतु तब अति रिसि गहिकै। मार्‌यो शक्ति खरोरहु कहिकै॥ लखि सोशक्ति

बेधि उरतासू । कीन्हों तेहि यमपुर गतआसू ॥ गिरो बीरधन्वा अरि जेना । भगी त्रिगर्त देशकी सेना ॥ सहदेव दुर्मर्षण रणजेता । अतिशय युद्ध किये अरिनेता ॥ चाहि चाहि बधगहि उत्कर्षा । करत भये बाणन की बर्षा ॥ अगणित शायक हनि हनि डाटें । अगणित बाण बाण सों काटें ॥ दोऊअति अमरषसों पूरे । हनैंपरस्पर शायकरूरे ॥ दोहा ॥ अति कर लाघव करितहां माद्रीसुत बलवान । काट्यो तो सुत को धनुष केतु मारि युगवान ॥ करिसूतहि बधि बधतभो चारों तुरँगचलांक । दुर्मर्षण के हिय हन्यो शायक पांच निशांक ॥ तब दुर्मर्षण बिकलह्वै तजिनिज रथहि सवार । चढ्योजाय निरमित्रके रथपै गह भयभार ॥ सोरठा ॥लखि प्रकोपि सहदेव बर्षि बाण टंकारिधनु । मारि मल्लवर मेव बेधि बध्यो निरमित्र कहँ ॥ रथसों भिरो उदार नृप त्रिगर्तपतिको सुवन । तेहिक्षण हाहाकारभयो तासु दलमें महा ॥ चौपाई ॥ ब्याघ्रदत्त सात्विकिसों भिरि कै । घोरयुद्ध कीन्हो तहँ थिरिकै ॥ बलसों बर्षि असख्यन बाणहि । कियो अदृश्य बीर युयुधानहि ॥ करि मण्डलसम धनुष बिशालहि । सात्विकि काटितासु शरजालहि ॥ ध्वजकाट्यो सारथिहि निपात्यो । अश्वन बधि आनँदसों रात्यो ॥ हनि मंत्रित शर बज्रसमाना । बध्यो ब्याघ्रदत्तहि बलवाना ॥ गिर्यो मगधपतिको सुत मरिकै । लखि मागधभटअति रिसधरिकै ॥ रथी गजी पैदर हयसादी । भिरे प्रचारि प्रचारि प्रमादी ॥ सात्विकि को बध करिबो परखे । बिबिधि भांतिके आयुध बरखे ॥ तहँ सात्विकि अतिधनु बियिधारे । अगणित भटन निमिषमें मारे ॥ अगणित भटन पराजित करिकै । दल मर्दतभो सबदिशि चरिकै ॥ तेहिक्षण में सात्विकि के सम्मुख । कोऊ भट न सकतहै करि रुख ॥ तब सात्विकि सों भिरो अचारय । किये उभयते अद्भुत कारय ॥ भिरो द्रौपदेयन सों राजा । सोमदत्तको सुवन समाजा ॥ पांचपांचशर सबकहँ हनिकै । मारे सात सातशरगणिकै ॥ द्रौपदेय शर अति बलधारे । तीनि तीनि शर ताकहँ मारे ॥ सोमदत्त तब तिन्हैं प्रहारे । पांचपांच शायक अनियारे ॥ दोहा ॥ मारि मारि अगणित बिशिष काटि काटि बहुबान । घोर युद्ध कीन्ह्यो तहां ते सिगरे बलवान ॥ तासु तुरँग सब पार्थसुत बधे मारि शर चारि । धनु काटतभो भीमको तनय धनुष टंकारि ॥ शरक्षुरप्र सों

धर्मको सुत काटतभो केतु । तनय नकुल को सूतकहँ बध्यो बिरचि शर सेतु ॥ सोरठा ॥ अर्द्धचन्द्र सम बाण मारि सुवन सहदेवको । कीन्हों ताहि अप्राण काटि शीश शिरत्राणसह ॥ सोमदत्तको पूत भाई भूरिश्रवा को। मरो बीर मजबूत भो हाहाध्वनि सैनमधि ॥ दोमर ॥ भिरि भीमसों तेहि काल । भट आर्षभृंग कराल ॥ करि बिषद धनुषबिधान । भो हनत अगणित बान ॥ भटभीम सबशर काटि । तेहि हन्यो नवशर डाटि ॥ तब गरजि राक्षस चण्ड । टंकारिकै कोदण्ड ॥ बहु काटि शायक तासु। शर पांच मार्‌यो आसु ॥ तब भयो भीम अचैन । फिरि बेधि तेहि बल-ऐन ॥ करि घने आयुध पात । भो बधत भट शत सात ॥ फिरि चेतलखि क्षणमांह । भटभीम दीरघ बांह ॥ तेहि असुरपै शरसेतु । भो रचतजय यश हेतु ॥ भिरि लर्‌यो असुर अमान । प्रफुलित पलाश समान ॥ इमि कहतभो करिटेर । नहिं बचत तू यहि बेर ॥ इमि भाषि मायावान । ह्वैगयो अन्तर्ध्यान ॥ तहँ बरषि शायक भूरि । भो देत सबदिशि पूरि॥ बिनु लखे भीम सचाय । शरदियो नभपै छाय ॥ भिदि शरणसों असु-रेश । भो भ्रमत महि नभदेश ॥ बहु बिरचि मायाघोर । भो करत प्रलय अथोर ॥ दोहा ॥ गरजि गरजि घनसम घुमड़ि बरषि अस्त्र समुदाय । अगणित हय गज भटन बधि यमपुर दये पठाय ॥ भीम तजे ब्रह्मास्त्र तब तासों शर समुदाय । प्रगटित ह्वैकै आसुरी माया दई नशाय ॥ लागि असुरके गातमधि अगणित शायकघोर । दये बिकल करि तब गयो भागि द्रोणकीओर॥ सोरठा ॥ इमिअलम्बुषहि जीति भीम-सेन अतिप्रबल भट । सादर जययश चीति भो मरदत दलकौरवी ॥ चोपाई ॥तहँ अलम्बुषहि जात निरेखी । भिरोघटोत्कच बध अवरेखी ॥ ते युग राक्षस बीर अमाना । कीन्हे तहां घोर घमसाना ॥ बिबिधि भांतिकी माया करिकरि । लरे शक्र सम्बरसम चरि चरि ॥ मायाकुशल कराल कठोरा । दोऊ घनसमान बरजोरा ॥ मारि मारि सहि सहि बहु त्राना। किये युद्ध अभिशेष महाना ॥ तिन्हें लरत लखिकै तेहि क्षणमें । पाण्डव भट अतिरिस गहि मनमें ॥ झुकै अलम्बुष भटपै तैसे । बहु हरि मत्त द्विरद पै जैसे ॥ तहँ सबके अगणितशर काटत । सब कहँ अगणित शर हनि डाटत ॥ ह्वै मण्डलके बाहेर गरजो । बीरअलम्बुष रहो न बरजो ॥

तिमि तहँ लस्यो लसैजिमि बढिकै। मैगल दावा मधिसों कढिकै॥ गरजि भीमके तन मधिमारे।शर पचीस अतिशयअनियारे॥ धर्महि हन्यो तीनि शर चीन्हें। पांच घटोत्कच के तन दीन्हें॥ सहदेवहि शर सात प्रहारे। बाण तिहत्तरि नकुलहि मारे॥ हन्यो द्रौपदेयन के तनमें। पांच पांच शायक तेहि क्षणमें॥ यहि प्रकार बाणनकी झरिकै। लरत भयो राक्षस रिसि भरिकै॥ दोहा॥ भीमसेन तब हनतभो नवशर ताके काय। भूपयुधिष्ठिर हनत भो शतशरको समुदाय॥ चौंसठि शरमारे नकुल पांच बाण सहदेव। तीनि तीनि शरहनतभो द्रौपदेय बरभेव॥ बीरघटोत्कच हनत भो शर पचास अतिचण्ड। फिरि सत्तरि शर हनिभयो टंकारत को दण्ड॥ सोरठा॥ पांच पांच शर चण्ड सबकहँ हन्यों अलम्बुषौ। तेसबभट उद्दण्ड ताहिहने अगणित बिशिष॥ चौपाई॥ भीमहि आदि सुभट रिसि पूरे। हनेबज्रसम शायक रूरे॥ तिन बाणन सों बेधित ह्वैकै। भयोअचेत सुबिक्रम ग्वैकै॥ भट अलम्बुषहि मूर्छित देखी। भीमसुवन राक्षस अवरेखी॥ सादर कूदि गर्बि मनमाहीं। गयो अलंबुष क रथपाहीं॥ रथसों ताहि गिराइ मरदिकै। फिरि उठाय तजि गहि ननरदिकै॥ जिमि बरब्यालहि गरुड़ पकरिकै। झटकि पटकि गहि तजिफिरि धरिकै॥ पटकि अप्राण करै तेहि जैसे। बध्यो अलंबुष कहँसो तैसे॥ ममदल तासु नाश अवलोकी। भोजिमि रवि अथये चककोकी॥ परको सैन भयो तेहि भेशा। जिमि घन मण्डल नशे दिनेशा॥ दुख लहि वृद्धनृपति यह सुनिकै॥ बूझत भये हरष कृतगुणिकै। व्याघ्रदत्त मगधेशहि बधिकै॥ जब सात्विकि बिक्रम करि अधिकै॥ मरदतहो ममदलतब तासों। भिरि द्विजकहा कियेहु म्हासों॥ संजय कहत भयोसुनु राजा। तेहि लखि मरदत सैन समाजा॥ द्रोणाचारय धनु टंकारी। ताके सम्मुख चलोप्रचारी॥ लखि द्रोणणि सात्विकि भटनायक। मारत भयो पचीससुशायक॥ तबअति कोपि द्रोण जयचाही। पांचबाण हनिबेधे ताही॥ दोहा॥ तब सात्विकि शर अर्द्धशत हन्यो द्रोणके गात। सात्विकि के तनपैकियो द्विज अगणित शरपात॥ दोउनपै दोऊ तहां तजैं शरणके जाल। काटि जालबधैं दुहुंन दोऊ बीर बिशाल॥ सोरठा॥ मारयो द्रोण अमान बाण बज्रसम सात्विकिहि। तासोंभिदि बलवानमुरछि रह्योध्वजसोंअभिरि॥

मणिबाह ॥ भट सात्विकि को मुरछायुत देखि। तहँ धर्म महीप हिये अवरेखि ॥ भटभीमहि आदिक जे बलऐन। तिन्हैंतहँ भेजि दिये सहसैन ॥ तहँआइ अचारय सोंसब जूटि। शरकी बरषा बिरचे जयऊटि ॥ तजिकै तिनपै शरजाल नवीन। रणसागर कोद्विज धीवर पीन ॥ करिकै जिमि जालनमें गतमीन। बधि योधन सो दलकीन्हेंउ क्षीन ॥ बनको जिमि दाहति भूरि दवागि। तिमिभो दलमर्दत तोहित लागि ॥ सबके शरजालन काटत जात ॥ सबपै करिकैबहु आयुध पात ॥ परके दलमाहँ प्रलय परवाह। द्विजपूरत भोनहिंजो अवगाह ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्नके अनुगप्रिय महारथी रणबीर। समबल बुद्धियशीसुभट तिहिक्षण बधेसुबीर ॥ कैकेयन में बधत भो शतयोधा सरदार। इबिधि हजारन भटबध्यो तेहिक्षण द्रोणउदार ॥ तेहिक्षणभो ओहिसेन मधि हाहाकार महान। कोपोकाल करालसम द्रोणाचार्य अमान ॥ सोरठा ॥ सुरगण चढ़ेबिमान निरखि पराक्रम द्रोणको। बहुबिधि किये बखान जानि अमानुष कर्म कर ॥ घोरयुद्ध तेहियाम होतभयो तेहिकाल तहँ। दिनको तीजो यामभो बितीत सियराम जपि ॥

स्वस्तिश्रीकाश्मीराजमहाराजाधिराजश्रीउहितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाश्मीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणि चतुर्थदिनयुद्धतृतीयप्रहरसमाप्तिर्नामषष्टोऽध्यायः ॥ ६ ॥

दोहा ॥ सुनोभूप तीजोपहर बीततहँ नृपधर्म। सुने न धुनि गाण्डीव कीबिकल भयेगहि भर्म ॥ गेला ॥ सुनेबिनु गाण्डीव धनुको दीहधुनिनृप धर्म। सात्विकी शुचिशूरसों इमिकहो करतब कर्म ॥ सात्विकी तुम दक्षबहु बिधिसुने शास्त्रअशेष। कार्यजे सत असतहैं सामान्य औरबिशेष ॥ जानितिनको भेदतुम सतकाज करन प्रसिद्ध। जौन चाहत करन तुमसों होतसादर सिद्ध ॥ ब्रष्णिकुलमें परमयोधा दोयभाषत सर्ब। कृष्णसुवन प्रद्युम्नकै तुमकरन काज अखर्ब ॥ द्वैतबन में पार्थ हमसों कहतहे बहुबार। परमहित ममसात्विकी हैकृष्ण सदृश उदार ॥ एकधनुधर दलन अरिदल पुरुष सिंहप्रवीन। परेमोपै भीर ममहित करिहि संगर पीन ॥ शिष्यअति प्रियसखा हमजिमि कृष्णके तिमितौन। सखा अतिप्रिय

शिष्यमनबल बुद्धि बिक्रमभोन ॥ रोजतुमहि प्रसंशि बहु बिधिकहै पार्थ सप्रेम । परेशंकठ युद्धमेंमम करिहि सात्विकी क्षेम ॥ कहतहै जोपार्थ सो नहिंअमत सत्यप्रयाग । सात्विकी तुम सकल भांति सराहिबेके योग ॥ शुद्ध सुहित सुबीर शुचि सरबज्ञ सुखद सरूप । कलिति कुलके कमल कोमल कठिन अनख अनूप ॥ कृष्ण पारथ मोहिं जिमिप्रिय तथा तुमको मोहिं। परमआनँद लहतहौंमैं सात्वकी लहितोहिं ॥ बहूतभांतिप्रशंसिइमि तेहिकहो भूपसुजान । सखाअरु अतिपरम प्रियतो गुरूपास अमान ॥ गयोपरदल मध्य जबसो पार्थ तबसों तात । लह्योतासु न खबरिकछु अब शोचबाढ़त जात ॥ सुनतहे गाण्डीवकी धुनिरहो तबलों धीर । सोनअब सुनिपरत ताते बढ़त शोचगँभीर ॥ सुनोताते करो अपने योगकर्म उद्-गड । जाहु पारथ कृष्णकेढिग बेधि व्यूह प्रचण्ड ॥ भीम आदिक भटन सहहै लरत द्विजसों जूटि । जाहुतुम ढिगपार्थके ममसुजय करिबोऊटि ॥ दोहा ॥ मित्र हेत जीतेहु मरेहु मिलत तौन फल तात । दिये सकल पृथिवी मिलै जौन सुफल अवदात ॥ जिहितो बिक्रम बिशदको जोदिन आयेपार्थ । आशगहेहे सोइहैसो अबकरहु यथार्थ ॥ प्रीतियुक्त अतिमधुर प्रिय उचित धर्मके बैन । सुनिप्रसन्न ह्वैकहतभो सात्विकि बलबुधिऐन॥ चौपाई ॥ भूप शिरोमणि ज्ञातापर्म । आपु कहे करतव्य सुकर्म ॥ पारथके हितलगि यहदेह । तजब मोहिंतृण सरिस अनेह ॥ पारथ के हितलगौं अधर्म । शक्र बरुण यमसों सुनुधर्म ॥ व्यूह बिदारि मर्दि परसैन । जाब पार्थके पास सचैन ॥ यामेंमोहिं न सशयनेक । हैमम मनमें संशय एक॥ सोहम कहत ताहिसुनु जौन । उचितहोइ नृप कहिये तौन ॥ रथपै चढ़ि अर्जुन रणधीर । अरिदल मुखजब चलो सुबीर ॥ सुनत कृष्णके हमसों तत्र । कह्योरहो तुमसात्विकि अत्र ॥ धर्महि पकरन को प्रणपूर्ब । कियो भूपसों द्विजभट गूर्ब ॥ जबहम उतै जाबतबबिप्र । लरिभूपहि गहिलेइहि क्षिप्र ॥ तातेइत रहिहे भटरत्न । बिधिवत किहेहु भूपकर यत्न ॥ यहि प्रकार कहिकहि बहुबार । नृपतो रक्षणके उपचार ॥ अर्जुनहमैं गये इत राखि । द्विजकेप्रणको संशयनाखि ॥ ताते तजि तो ढिगको बास । किमि हमजाहिं पार्थके पास ॥ तुम्हैं पकरि जोपाइहिदुष्ट । बहुरि करिहिनिज कारय पुष्ट ॥ जीतिपार्थ फिरि लहिहै हारि । कहा कहैंगे हमैं निहारि ॥

दोहा ॥ कृष्ण सहित अर्जुन सुभट तीनिलोक कोजैन। तापर शंकट परन कीसंशय हमकोहैन ॥ ममगुरु केगुरुपति तुम बूझि कहोअब जौन। उचित जानिसो शीशधरि शीघ्रकरैं हमतौन ॥ रोला ॥ सात्विकीके बचन सुनिके धर्मनृप गुणिमर्म। कह्योसात्विकि कहत तुमसो सांचपै ममभर्म ॥ तासु सुधि बिनुलहे मिटिहि न सुनोताते तात। शीघ्रतुम उतजाहु जेहिथर पार्थ बीर बिभात ॥ भीम नकुलबिराट द्रुपद शिखंडि अरु सहदेव। द्रौपदी केसुवन अरु कैकेय सबशरभेव ॥ भट घटोत्कच धृष्टकेतु सुकुन्तिभोज अमान। करेंगेममसदा रक्षण सदल सबबलवान॥ भूपके यबचन सुनिकै गुणयो सात्विकि बीर ॥ जाबनहिं तौसुभट कहिहैं मोहिं सडर अधीर ॥ चिन्तिऐसो कह्यो सात्विकि ऐवमस्तु नरेश। जाबहमढिगपार्थके दलिशत्रु सैन कुभेश ॥ पार्थहै षटकोश कौहैकोश षटको फेर। तीनि योजन चलै मिलिहै पार्थअरि मृगसेर ॥ बाजि गज अरु रथनके असवार पैदरभूरि। व्यूहमुख अरुउतै लोहैं खरे अबिरल पूरि ॥ युद्धकी बिधि जीति तिनमें दक्षसिगरे भूप। सदलरोके राहठाढ़े लसैं कालस्वरूप ॥ जीति सब कहँ पार्थके ढिगजाब हम क्षण माह। आयुधन सोंसुरथ ममभरवाइये नरनाह ॥ बचन यहसुनि मोदिपारथ सकल आयुधभेद। पृथक् पृथक् असंख्य रथपैदये राखि अखेद ॥ चपल नूतन पुष्टप्रबल सुजातिहयसमुदाय। सुरथपै लगवाइ दीन्हे मद्यपान कराय ॥ चारु कवच अभेदसों करि तिन्हैं छादित चाहि। अनुज दारुक को परम पटु कियो सारथि ताहि ॥ स्नान करिकै दानदै सन्नाह धारि अमान। सुमधूक लातक अमल तेहि सुपानकरि मनमान ॥ बन्दिपग नृपधर्मके चढ़ि सुरथपै बलऐन। जानुपै धरि धनुष ममदिशि चलोसुनि स्वस्तैन ॥ भीमभट सँगचलो ताकहँबहुत भाँति बुझाय। नृपहि रक्षण हेत सात्विकि दयोफेरि सचाय ॥ दोहा ॥ इतकेभटसब सात्विकिहि जातद्रोण पहँजानि। चले कोलाहल करत नहिं जान देत अनुमानि ॥ तबउतके भीमादि भट बरषत शर समुदाय। बढ़ि बढ़ि तिनसों भिरिकरे घोरयुद्ध दृढ़घाय ॥ सोरठा ॥ अगणित भट रणधीर भिरे सात्विकी सुभटसों। तिनमधि सात्विकि बीर लसो मृगनमधि सिंह सम ॥ चौपाई ॥ शिष्य पार्थको धीर धुरीन। रचिअद्भुत शरसेतु नवीन ॥ बधि अगणित योधन प्रणधरिकै। अगणित भटन पराजित करिकै ॥

व्यूहभेदि जेहिमग गोपारथ। तेहि मग चलतभयो गुणि स्वारथ॥ तब आड़तभो द्रोणाचारय। धनुबिधि करतअमानुष कारय॥ काटि असंख्यन शायक नोखे। मारेताहि पांचशर चोखे॥ काटिद्रोणके अगणित शायक। हन्यो सातशर सात्विकिचायक॥ बहुरि द्रोणतेहि पटशरमारे। सात्विकि तेहिदश बाणप्रहारे॥ फिरिसो द्रोणहि पटशरहनिकै। हनत भयो बसु शायक गणिकै॥ सूतध्वजा घोरनके तनमें। हनेपरम परशर तेहि क्षणमें॥ दोऊबीर बीरप्रणलीन्हें। अतिशयतुमुल युद्धतहँकीन्हें॥ करिसात्विकिहि शरणसों गोपित। बिप्रकह्यो करिप्रलय अरोपिन॥ तो आचार्य पार्थहमसोंभिरि। करि नहिं सक्यो युद्ध सम्मुख थिरि॥ जिमिका पुरुष जातरण तजिहै। हियेहारि तिमि कढ़िगो लजिकै॥ तूजीयत फिरिजाय न पैहै। जौनपार्थ जिमिगो तिमिजैहै॥ ऐसे बचनद्रोणके सुनिकै। सात्विकि कहतभयो इमि गुणिकै॥ मम अचार्य केआपु अचारय। सबबिधि हमहिं पूज्यहे आरय॥ दोहा॥ लहिआज्ञा नृपधर्म की हम पारथ पहंजात। करि अनुकम्पा शीघ्र उतजान दीजिये तात॥ इमिकहिकै निजसूत सन कहत भयो मतिमान। तजि द्रोणहि रथहांकि अब शीघ्रचलो सबिधान॥ सोरठ॥ यहसुनि सूतसुजान रथहि बढ़ायो युक्तिसों। सबदिशि बरषत बान भटन बधतसात्विकि चलो॥ चौपाई॥ इमि सात्विकि कहँ जातनिरेखी। बरषो बाणद्रोण अतितेखी॥ नहिंपलटो सोबीर बिचारी। मरदत सैन चलो रणचारी॥ तहँहीं परी कर्णकी सेना। तामधि प्रविशत भो जगजेना॥ लहिअज यूथअरक्षक जैसे। निरभय बिक मरदै निजलैसे॥ यथा सूत सुतको दलमरदत। भोजसैन दिशिचलो ननरदत॥ इमिनिजि दलमुख आवत चाही। कृतबर्मा रोकतभो ताही॥ चारिबाण अश्वनकहँ हनिकै। हन्यो सात्विकिहि षटशर गनिकै॥ काटितासु बहुशर अनियारे। सात्विकि तेहि पोड़शशरमारे॥ तब कृतबर्मा अतिशय रोखो। तासु हिये मार्यो शरचोखो॥ बेधिकवच गातहि सो कढ़िकै। धरणी मधि प्रविशत भो बढ़िकै॥ फिरि कृतबर्मा हनि बरशायक। काट्यो तासुधनुष दृढ़ घायक॥ सात्विकि तुरत और धनु गहिकै। बरषो बिशिष खरो रहु कहिकै॥ हनि क्षुरप्रशायक मजबूतहि। बध्यो भोज कुलपति के सूतहि॥ बिना नियामक सबहय रथके। भगिभे गामी इतउत पथके॥

तब निज करसों भट कृतवर्मा। रोकि हयनभो लखत अभर्मा॥ तौलगि सात्विकि भटतेहि पलमें। गो काम्बोज भूपके दलमें॥ दोहा॥ सोलखिकै बढ़ि सात्विकिहि रोकनचह्यो अचार्य। भीमादिक बरभटन सों जान न पायो आर्य॥ और सूतकहँ सुरथपैलै कृतबर्मा बीर। शीघ्र जायभीमादि सों भिरतभयो रणधीर॥ अद्भुतबिक्रम करतभो कृतवर्मा तहँजाय। पाण्डुनृपति के सुतनपै देतभयो शरक्षाय॥ सोरठा॥ भीमसेन शरतीनि कृतबर्मा के तन हने। बीससुबाण नवीन हनतभयो सहदेवभट॥ नकुल हने शतबाण द्रौपदेय सत्तरि बिशिष। राक्षस बीर अमान गरजो सात सुबाण हनि॥ चौपाई॥ धृष्टद्युम्न शरतीनि प्रहारे। द्रुपद बिराटबाण दश मारे॥ पांच सुबाण शिखण्डी हनिकै। मार्यो फेरि बीस शर गणिकै॥ अगणितबाण काटि सबहीके। सबकहँ मारि बाण बहुनीके॥ कृतबर्मा हनु मारु पुकारत। भीमहि भयो सातशर मारत॥ काट्योतासु शरासनकेतू। रचि सबदिशि अविरल शरसेतू॥ ऐसे बिधनु भीम कहँ करिकै। हनत भयो बहुशर प्रणधरिकै॥ सोलखि उतके भट रिसपूरे। घेरि हनतभे शायकरूरे॥ करि अतिक्रोध भीम रणचारी। मारत भयो शक्ति अतिभारी॥ मारि दोयशर पूरित पर्मा। काट्यो ताहिबीर कृतबर्मा॥ सो लखि भीम और धनुधारी। हन्यों पांचशर ताहि निहारी॥ बेधि नृपहि हनि शायक चीन्हें। अरुण पुष्पयुत तरुसम कीन्हें॥ कृतबर्मा नृप सबकहँ डाटत। सबके अगणित शायक काटत॥ अद्भुतबिक्रम करि भटनायक। सबके तनमार्यो बहुशायक॥ काटि शिखण्डी को धनुनोखो। मारत भयो बाणतजि चोखो॥ बिधनु शिखण्डी भट असि गहिकै। मारत भयो भागुमति कहिकै॥ काटितासु धनुअसि छबिरासी। गिरी भूमि पै थिरि तड़ितासी॥ दोहा तेहि अन्तरमें धनुष गहि द्रुपद तनय रणधीर। कृतबर्महि बेधत भयो हनि बहु चोखो तीर॥ तुरित और धनुगहि नृपति करि बिधिवत सन्धान। सबके तनमधि हनतभो तीनि तीनि बरबान॥ बीर शिखण्डी को हियो बेध्यो अति रिसिपागि। मुरछित ह्वै रथपै गिरो द्रुपदतनय धनुत्यागि॥ निरखि शिखण्डिहि मूर्छित पाण्डव भट समुदाय। कृतबर्मा कहँ घेरिकै देतभये शरक्षाय॥ सोरठा॥ कृतबर्मा जयहेतु अद्भुतबिक्रम तहँकियो। बिरचि शरणको सेतु

सब कहँ मोहित करतभो ॥ बधतभयो तेहिकाल अगणित नर गज तुरंगतहँ। प्रलयकाल बिकराल रोप्यो परदल मध्य नृप ॥ तोमर ॥ निज सेनमध्य अपार। सुनिघोर हाहाकार ॥ भट सात्विकी अनखाय। निज रथहि शीघ्र फेराय ॥ नृप भोजपति सों जूटि। भोलरत जययश ऊटि॥ नृप भोजनाथ अमान। तेहि हनत अगणित बान ॥ सो भोजपति के गात। भोकरत बहुशरपात ॥ हनिचारि शर अरतश्व। भो बधत चारो अश्व ॥ फिरि बाणतीक्षण मारि। बधिदयो सूतहि डारि ॥ फिरि मारि बहुशर चाहि। करिदयो मुरछित ताहि ॥ सो तासु सुभट निहारि। लै भगोरथपैडारि ॥ कृतबर्म कहँ इमिजीति। परदेश दलको ईति ॥ फिरि बध्यो गज समुदाय। दिशि सव्य द्विजके जाय ॥ तहँ बिकल लखिगज सैन। जल सन्ध नृपबलऐन ॥ निजमत्त गजहि बढ़ाय। शरजाल दीन्हों छाय ॥ फिरि मारि शायक एक। धनु दयो काटि सटेक ॥ धनु काटि मागधबीर। मोहनत पांच सुतीर ॥ तब सात्विकी धनुआन। गहि हने साठि सुबान ॥ दोहा ॥ शरक्षुरप्र हनि मूठि ढिग काटि दियो धनु तासु। फिरि प्रचारिकै तीनिशर हन्योतासु तनआसु ॥ तब जल सन्ध सुखड्ग गहि झेरि मारि ह्वै चण्ड। चारु धनुष सैनेयको काटिकियो द्वैखंड ॥ तुरित औरको दंडगहि सत्विकि बीर अमान। काटि दियो नृप के भुजन हनिक्षुरप्र युगबान ॥ सोरठा ॥ फिरि क्षुरप्रशर मारि काटिभूप को चारुशिर। दीन्हों महिपै डारि तालवृक्ष के सुफलसम ॥ चौपाई ॥ अतिशय हाहाधुनि ममदलमें। तेहि क्षणहोत भयोसबथलमें ॥ मागध पति नृपको बधदेखी। द्रोणाचार्य धनुर्द्धरतेखी ॥ सादर जाय तहांरण-चारी। सुनि पुंगव सों भिरो प्रचारी॥ अति रिसि गहि दुर्योधन राजा। आवत भो तहँ सहित समाजा ॥ घेरि सात्विकिहि शरकी बर्षा। करत भयेगहि अति उत्कर्षा ॥ द्रोण सात्विकी के तनमारे। सतहत्तरि शायक अनियारे ॥ दुर्मर्षण मार्‌यो द्वादशशर। दुःसह हन्योबाण दश अतिबर॥ हन्यो बिकर्ण तीसशर चोखे। दुर्मुख हने बाण दशनोखे ॥ दुःशासन मारे बसुबाना। द्वैशर चित्रसेन बलवाना ॥ दुर्योधन बहुबाण प्रहारे। अगणित बाण रथी सबडारे ॥ तेहिक्षण सात्विकिभट बर धानुष। भूपति कीन्हों काज अमानुष ॥ करि सबके बहुशायक भगनित। मारत सबकहँ

शायक अगनित ॥ दुर्योधन भूपति के तनमें। हन्यो अनगिने शर गुणि मनमें ॥ तेयुगबीर क्रोधसों भरिकै। कीन्हों घोरयुद्ध शरझरिकै ॥ सात्विकि मारि बाण बरभाको। दीन्हों काटि शरासन ताको ॥ जौ लगि भूप औरधनु लीन्हें। तौ लगि हनेबाणबहु चीन्हें ॥ दोहा ॥ हन्यो सात्विकिहि बहु बिशिष भूपतिगहि धनुआन। भूपहि पीड़ित करतभो सात्विकि हनि बहुबान ॥ भूपहि पीड़ित देखिकै सबतोसुत अनखाय। भटसात्विकि रणधीरपै देतभये शरछाय ॥ रचि सबपै शरसेत तहँ अगणित सायक काटि। सात्विकि सबकहँ हनतभो पांच पांच शरडाटि ॥ अति तुरता करि नृपतिको धनुध्वजकाटि सुबीर। बधि घोरन सूतहि बध्योहनिक्षुरप्र बहुतीर ॥ सोरठा ॥ बिरथ बिधनु करि ताहि हनत भयो अगणित बिशिष। इमिभूपति कहँ चाहि हाहाधुनिभोसैनमधि ॥ तबअति भयसोंपागिदुर्योधनतोसुवननृप। गोतुरिताकरिभागिचित्रसेनकेसुरथपै ॥ चोपाई ॥ तहँ हाहाधुनि सुनि सुनुआरज। कृतबरमा नृपगुणि जयकारज॥ रथ हकवाइ सुधनु टंकारी। भिरो सात्विकीसों रणचारी ॥ बर्षि असंख्यन शर अनियारे। छब्बिसबाण सात्विकिहि मारे ॥ सात्विकि अगणित बाण बरषिकै। अगणित शायक काटि दरशिकै ॥ दीरघ कठिन बाण अति तुरमें। मार्‌यो कृतबरमाके उरमें ॥ ताकेलगे भूपभो तैसो। क्षितिके कँपे होतगिरि जैसो ॥ साठिबाण घोरनकहँ हनिकै। सूतहिं हन्यो सातशर गनिकै ॥ फिरि यमदण्ड सरिस शरमारी। कृतबरमा कहँ हन्यो बिचारी ॥ बेधिहियो सोशायक कढ़िगो। दश ब्यामहुके आगे बढ़िगो ॥ इमि बेधित ह्वैभट कृतबर्मा। भोमुरछित धनुरहो न कर्मा ॥ रथपरपरो मृतक समह्वैकै। सात्विकि तबतेहि हन्यो न ज्वैकै ॥ काटत गदा शक्तिअसि शायक। बेधतबधत भटन भट नायक ॥ मर्दतसैन चलो जहँ पारथ। सोलखि द्रोण बूझितो स्वारथ ॥ जानि सात्विकिहि अति रण करकश। भिरोकरत धनुबिधिकरि सरकश ॥ चेतिजाय भूपति कृत बरमा। भिरो पाण्डवनसों गहि मरमा ॥ भिरि सात्विकिसों द्विजरिस लीन्हें। बाणनको दुरदिन करिदीन्हें ॥ दोहा ॥ द्रोण सात्विकी करतभे घोरयुद्ध तेहिकाल। बिरचि काटिरचि काटिरचि काटि शरणके जाल ॥ द्रोणहिं सात्विकि सात्विकिहि द्रोणहने शरभूरि। तुरँग सूतके तनदये

अगणित शायक पूरि ॥ सोरठा ॥ द्रोणमारि बरबाण काट्यो सात्विकिको धनुष। तब सात्विकि बलवान त्यागि धनुष झेल्योगदा ॥ तोमर ॥ द्विज ताहि शरसों काटिकै। तेहिहन्यो शायक डाटिकै ॥ तब सात्विकी अनुमानिकै। गहि औरधनु सन्धानिकै ॥ बहुबाणद्विजके गातमें। हनिहन्यो ध्वज अवदातमें ॥ भट द्रोणशक्ति सुधारिकै। पर सारथीपै डारिकै ॥ करिदिये मोहित तेखिकै। भट सात्विकीसों देखिकै ॥ करि आपुकारज सूतको। हनि बाणसार अकूतको ॥ हो द्रोणको जो सारथी। तेहि बध्यो गहिगति पारथी ॥ तबसूतबिनु हयबिप्रके। भेभ्रमत अतिगति क्षिप्रके ॥ जहँभ्रमे हयभय पागिकै। तहँगये भटसँग लागिकै ॥ यहदशा द्विजकी पेखिकै। तेहि कालसम अवरेखिकै ॥ बहुबोर साहस त्यागिकै। कढ़ि गये इतउत भागिकै ॥ हयब्यूह द्वारे जायकै। भेरुकत साहस पायकै ॥ तहँ औरसूत चढ़ायकै। द्विजफिरो ओज बढ़ायकै ॥ तब सात्विकी भट ठानसों। इमिकह्यो सूत सुजानसों ॥ अबचलो रथलै बेगसों। चलि मिलैं पार्थ असेगसों ॥ सुनि सूतबीर बिशालसों। तहँ चलोअद्भुत चालसों ॥ दोहा ॥ ग्रीषमकेदिन मध्यगत मारतगड समचगड। शरकर पूरित करत तहँ चलोबीर उदगड ॥ शर बरषत मरदत भटन सोसात्विकिहि देखि। बीर सुदर्शन भूमिपति भिरतभयो अवरेखि ॥ अरिदल गरसम सात्विकी भट करषन अरिप्राण। ताहि सुदर्शन हनतभो अतिदुख दरशनबाण ॥ तेहि सात्विकिसों सात्विकिहि शरजालनसोंगोपि। बारि बारि शरमारि शर दीन्हों प्रलय अरोपि ॥ सोरठा ॥ नृपके अनुग अनेक हैं मारत अगणित बिशिष। तिन्हेंकाटि गहिटेक सात्विकिबहु योधन बध्यो ॥ चौपाई ॥ नृपबहुशर सत्विकि कहँ मारे। सात्विकि तेहिबहुबाण प्रहारे ॥ भूपति कोपिअरुणकरि ईक्षण। मार्योताहितीनिशरतीक्षण ॥ कवच छेदिते तन मधिधसिकै। अतिदुख देतभयेतहँ बसिकै ॥ तब सात्विकि अतिशयरिस करिकै। बध्योतासु तुरगन प्रण धरिकै ॥ हनि बरभल्ल सूतकहँबधिकै। बाण क्षुरप्र शरासन मधिकै ॥ करि कसीश तजि ध्यावत ईशहि। काटत भयो भूपके शीशहि ॥ बधि भूपति तजि सुभट घनेरे। चलोबीर पारथके नेरे ॥ पुरुषसिंह अनुपम रणचारी। सारथिसों तहँकह्यो बिचारी ॥ द्विज दल अरणव अगम अगाधा। नाघो ताहि न अबकछु बाधा ॥ अब सब

सैन लगतमोहिं तैसो। पक्षिहि लगे अल्पशर जैसो ॥ म्लेक्षनकी यह सेना गाढ़ी। मोहिं दहनकहँ सम्मुख ठाढ़ी ॥ सादर तासुमध्य चलि आरज। देखहु ममअद्भुत रणकारज ॥ सादरसुनि सुबचनअतिबलके। सादर निकट गयो तेहिदलके ॥ लखि सात्विकिहि निकट सबयोधा। बरषतबाणकिये अवरोधा ॥ सात्विकि काटत शायक तिनके। काट्यो शिरभुज सुभट अगिनिके ॥ बरषि सुमंत्रित शायक चीन्हें। प्रलयकाल आरोपितकीन्हें ॥ दोहा ॥ मण्डलसम कोदण्डकरि सात्विकिबीर अमान। अगणित योधन बधतभो भूपतिप्रति सन्धान ॥ बर्बरसक काम्बोज अरु दस्यु सबर किरात। म्लेक्ष असंख्यन निमिषमें बधेबीर अवदात ॥ रचि शरपंजर सकलदिशि सबके आयुध बारि। रुण्ड मुण्डमय मेदिनी कियो भटन संहारि ॥ सोरठा ॥ अनुपम रणबिधि ठाटि निरमित करिसर रुधिरको। रथ हय भट गज काटि पूरिदयो जलयादसम ॥ चौपाई ॥ दावानलसम दलबन जारत। लखि हतशेष सुभट ह्वै आरत ॥ भयेपराजित साहस तजिकै तब सात्विकि भटचलो गरजिकै ॥ इमिसो सैन जात जगजेना। चलोबीर मरदत ममसेना ॥ अगणित भटन बेधिबधि डारत। बेधिबेधि बहुभटन बिडारत ॥ जातबिभात सात्विकी तैसे। मृग गणमध्य केशरी जैसे ॥ नृप तेहिक्षण दुर्योधन राजा। जाय बेग सों सहित समाजा ॥ तेहि पीछूसो भये पुकारत। सुनि फिरिभिरो बीरशर डारत ॥ तिमि आड़ेउ सुभटनकी रेला। जिमि आड़त अरणावकहँबेला॥ अतिशय अद्भुत बिक्रम सचिकै। सात्विकि सेतु शरणको रचिकै ॥ बध्यो तीनिशत घोरे क्षणमें। हन्योचारि शत गजगुणि मनमें॥ सबकेबाण असंख्यन काटत। सबकहँ शायक हनिहनि डाटत ॥ रथगज तुरँग सवार अनेगण। बधतभयो सैनेय गहेप्रण ॥ भूपतितहँ बिचित्र गति देखे। ईश्वरकी महिमा अवरेखे ॥ ब्यर्थ होहिंसब शायक इतके। अति अमोघजे जाने नितके। जितेतज्यो सात्विकि दृढ़घायक। ब्यर्थ न भे ते एकौ शायक ॥ तहांतासु बिक्रमअनुमाने। पारथसों अधिकी करिजाने॥ दोहा तासु सूतअरु हयनकहँ पांचबाण हनि भूप। सात्विकि केतन हनत भो ग्यारहबाण अनूप ॥ दुःशासन षोड़श बिशिष चित्रसेन शरपांच। शकुनिभूप मारतभयो तकि पचीस नाराच॥ दुःसहिमारे सात्विकिहि

पांच बाण अवदात। तीनि तीनि शायक हन्यो सात्विकि सबके गात॥ सोरठा॥ सौबलको धनुकाटि भूपहि मार्योतीनिशर। चित्रसेन कहँडाटि तीक्षणशतशर हनतभो॥ चौपाई॥ दशशर दुःसहकेतनमारो दुःशासनकहँ बीस प्रहारे॥ गहि धनुआन शकुनि क्षितिपाला। मार्यो तेरह बाण बिशाला॥ दशशर मारतभो दुःशासन। तीनि बाण दुस्सहदृढ़ आसन॥ तीसबाण हनि भूपति गरजो। दुर्मुख द्वादश शरहनि तरजो॥ बरषि असंख्यन शरबर फबके। काटि असंख्यन शायक सबके॥ पांच पांच शायक अनियारे। सात्विकि सबकहँ मारि प्राचारे॥ फिरि हनि एक बाण मजबूतहि। बधि डार्यो भूपहि के सूतहि॥ बिना सूत हय ह्वै निज सबके। सात्विकि के सम्मुख सों खसके॥ गयेदूरि निज मन के पथलै। इतउत भ्रमत भयेसो रथलै॥ दुःशासन आदिकभटरूरे।गये भूप के सँग भयपूरे॥ सौबल जीति धनुष टंकारत। सात्विकि चलोभटन संहारत॥ सात्विकि को इमि बिक्रम सुनिकै। नृप धृतराष्ट्र कहतभे गुणिकै॥ द्रोणआदि सुभटन कहँ जीतत। सात्विकि जात सैनममरीतत॥ पाण्डवके भाग्यनकी गुरता। यह औ कृष्ण दयाकी पुरता॥ मन्द भाग्य सब सुबन हमारे। कैसेजीति लहैं अघभारे॥ अब कहु सूत भयो फिरि जैसो। सुख दुख दायक नीक अनैसो॥ दोहा॥ यह सुनि संजय कहत भे मनदे सुनु नृपतौन। तो सम्मत कृतकर्मको मिलत भयो फल जौन॥ दुर्योधन क्षितिपाल को लहि अनुशासन फेरि। दुःशासन भट सुदल फिरि लिये सात्विकिहि घेरि॥ पारथ सक बाह्लीक गण अरु कुनिन्द अम्बष्ठ। पार्बतीय पैशाचजे सीखे युद्धसपष्ट॥ महारथी शतरथ सहस सह सतुरँग सवार। रणकोबिद अतिप्रबलभट द्विरद सवार हजार॥ सोरठा॥ दुःशासन रणधीर तिनकहँ शासन देतभो। तुम सब अनुपमबीर बेगि सात्विकिहि बधहुअब॥ चौपाई॥ बहुबिधि के आयुध समुदाय। दीन्हें सब सात्विकिपै छाय॥ धनुटंकारि प्रचारि प्रचारि। बरषे बाण सिहारि सिहारि॥ तेहि क्षण तहँ सात्विकि रणधीर। कियो अमानुष कर्मगँभीर॥ इमि बिरच्यो शरपंजर आसु। लहे न एकौ शर तन तासु॥ सब सुभटन के आयुध सर्ब। काटिबारि करि व्यर्थ सगर्ब॥ सब सुभटन पै रचि शरसेत। बेध्यो बध्यो कियोगतचेत॥ हय गज सूत

सुभट सरदार। बध्यो निमिष में कइक हजार॥ रथके अंग धनुष ध्वज छत्र। अगणित काटि गिराये तत्र॥ यथाहोत अबिरल जलघात। भये प्रचण्ड बात उतपात॥ होत अजन को यूथ अचैन। नृप तिमि बिकल भईतो सैन॥ दुःशासन सो दशानिहारि। पार्बतिन सों कह्यो बिचारि॥ तुम सब शूर सुभट ममपक्ष। उपल युद्धमें हौ अतिदक्ष॥ सात्विकि नहिं जानत सो युद्ध। ताहि बधौतुम सब भटउद्ध॥ सुनि शतपांच बीर बलवाना। गजशिर के समभूरि पषान॥ डारन लगे सात्विकी पाह। तब सात्विकी धनुर्द्धर पाह॥ करत भयो तिमि युद्ध ललाल। खरदल मध्य कियोजिमि राम॥ दोहा॥ प्रति पषाणमें कइकशर हनिहनि बीर अचूक। दियो फेरिममसैन मुख करि करि अगणित टूक॥ तासु शरन के घातसों टूटि टूटि पाषाण। पलटि पलटि लगि लगि करे अगणित भटन अप्राण॥ तेहिक्षण बाण पषाणसों ह्वै मरदित तोसैन। ह्वैआरत हाहाकरत बिचलत भई अचैन॥ सोरठा॥ फिरि दश सतरण धीर जूटि उपल बरषन लगे। सात्विकि अनुपम बीर फिरिकीन्होसो दक्षता॥ चौपाई॥ तोरितोरि सबशिला सोहाये। प्रति योधनके शीशगिराये॥ मारैं शिला सुभटरिस पगिपगि। तिनमें अगणित शायक लगिलगि॥ फेरि फेरि सुभटनपै झेलैं। महि अहि दानव कन्दुक खेलैं॥ अबिरल शिलापातके घातन। भईसैन नृपसों कहिजातन॥ अगणित मरेपरे बहु घायल। चले भागि अगणितभट चायल॥ तासु शरणसों इतके पाहन। लगि २ तथा किये दलदाहन॥ जिमि न दान निज सुहित अमेइ। मिलिसुजान अरिसों दुखदेइ॥ हाहाकार भूपतेहि पलमें। होतभयो तेहिथल मम दल में॥ घोरसोर तेहि थलको सुनिकै। द्रोणकह्यो सारथिसों गुणिकै॥ दावानल समह्वै यहिक्षणमें। सात्विकि बिहरत कुरुदल बनमें॥ हाहाकार होत जहँभारी। तहँ ममरथलै चलु रथचारी॥ द्रोणाचारय सो सुनि येहु। सूत कहतभो सहित सनेहु॥ इत पांडव पांचाल सोहाये। बलसों चहत ब्यूहमधिआये॥ जबतुम उतहि चलहुगे स्वामी। आड़िहि उन्हें कौनजय कामी॥ भटन मरदि दलमधि धसिऐहैं। नृप सात्विकि सम प्रलय मचैहैं॥ यह बिचारि ममसंशय खोई। शासनकरौ करैं हम सोई॥ दोहा॥ नृप इतनेमें तो तनय दुःशासन भयपागि। रणतजि मर्दित

भटनसह गो द्विजके ढ़िग भागि ॥ अति व्याकुल तेहि तो सुतहि लखि भय पूरित क्षोण । उचित बचन इमिकहत भो द्रोणाचार्य्य प्रवीन ॥ दोला ॥ कहो नृपहैं कुशल अरुहैं कुशल सबतो भाय । सिन्धुपति है कुशल अरुहै कुशल भट समुदाय ॥ महारथ युवराज नृपके बन्धुतुम मतिमान । युद्ध तजि कतभगे डरिकै त्यागि बल अभिमान ॥ द्रौपदीको बसन गहि कै सभामधि तुमल्याय । पाण्डवन के सुनत तुमजो कहेओज बढ़ाय ॥ जुवामें तूगई जीतीभई अब मनचेरि । कर्मदासिनिको करहु सो कर्म अपनो हेरि ॥ संगये सब सुपति तेरे त्यागि इनको गर्ब । उदर पालन करहु करिकै काज खर्ब अखर्ब ॥ पूर्ब ऐसो कहोतुमहीं आजु तौन भुलाय । सात्विकी सों सकतनहिं लरि भजत गर्बगवाय ॥ भीमसों अरु पार्थ सों जब मचिहि संगर घोर । करोगे तबकहा भगिकढ़िजाहुगे केहि ओर ॥ जीवलैजो भजत रणसों सकत नहिं मरिजीति । करौ जैसोकहत हम जो जानि नृपकी नीति ॥ जानि आपुहिनिबल उनसों मानिआपनि खोरि । हैबे महि जिती तितनी देहु मिलि करजोरि ॥ मारिनृपहि सबन्धु जौलगिलेहिंनहिं वेभूमि । देहुतौलगि आपुसों मिलिचरण मुखसों चूमि ॥ नतरु शंक बिहाय उनसोंलरो थिरि धरिधीर । युद्धमें मरि लहत उत्तमठौर क्षत्री बीर ॥ बचन सुनि तो तनय नहिं कछुदयो उत्तर ताहि । सदलचलिगो सात्विकीसों लरन जययशचाहि ॥ द्रोण धसि पांचाल के दलमध्य बर्षत बाण । तुरंग गजबधि धनुष ध्वजरथ छत्र शरतनुत्राण ॥ गदा पट्टिस शक्ति आदिक काटि आयुधभूरि । मारि अगणितभटनक्षणमें दियोपरलैपूरि ॥ देखिइमि निजसैन मरदत बीरकेतुकुमार । भिरोसादर द्रोणसों करिधनुष कोटंकार॥ काटि अगणित बाणद्विजके बीरकेतुअमान। द्रोण के तनहने दीरघ पांच तीक्षणवान ॥ दोहा ॥ अगणित शायक द्रोणके काटि काटि गहि टेक । सातबाण सूतहि हन्यो ध्वजमधि मारो एक ॥ बीरकेतु रणधीरके काटि अनगिने बान । द्रोणतासु हियमधिहन्यो शायक बज्रसमान ॥ फोरिशिला समतासुउर कढ़िगो शायक चंड । ह्वै अप्राण रथसों गिरोनृपसुत बीर उदंड ॥ सोरठा ॥ मरि निपतलखिताहि तासुसहोदर चारि भट । द्रोणहि मारण चाहि भिरेशरणको जालरचि ॥ चित्रकेत रणधीर सुभट सुधन्वा चित्ररथ । बरषत बिशिष गँभीर भिरो

चित्रवर्मा बली॥ चौपाई॥ तेसब सुभट बिदित भटनायक। तजे द्रोण पहँ अगणित शायक॥ कछुक्षण तिनसों लरिरिस लीन्हें। द्विज तिनको शिर छेदनकीन्हें॥ निजबंधुन कोमरण निरखी॥ धृष्टद्युम्न सेनापति तेखी॥ शोचतबारि चखनसों मोचत। भिरो अचारयसों बधरोचत॥ रचिशरजाल हन्यो तेहिक्षणमें। नब्बेबाण द्रोणके तनमें॥ अति दृढ़बान लगे सुनि आरय। सुरक्षित भोभट द्रोणाचारय॥ द्रोणहि सुरक्षित लखि अनुमानी। धनुतजि धृष्टद्युम्न अभिमानी। गहिअसि चर्मकूदि चरिपथपै। गोद्रोणाचारय केरथपै॥ इतनेमें द्विजचेतित ह्वैकै। धृष्टद्युम्न कहँ निजढिगज्वैकै॥ अतिलघुलघु शायकअनियारे। अबिरलसेत बिरचि तेहि मारे॥ नहिं बढ़ि सको पाय अवरोधा। पलटिगयो निजरथपै योधा॥ धनुटंकारिगहोउतकरष॥ करतभयो बाणनकीबरषा॥ ताहिप्रचारि द्रोणलरि तेहिक्षिन। करत भयो बाणनको दुरदिन॥ दोऊ अतुलबिक्रमीगाये। अद्भुतयुद्धकियो मन भाये॥ अद्भुतभांति शरासन करषे। अद्भुत बिधिसोंआयुध बरषे॥ अद्भुत बिधिसोंआयुधकाटो। अदभुतविधिशरहनिहनि डाटो॥ दोहा॥ धृष्टद्युम्नके सूतकहँमारि बज्रसम बान। बधिगिराय गरजतभयोद्रोणाचार्य्य अमान॥ बिना नियामक तुरँगसब रथलैगये पराय। अगणित भट तेहिक्षणबध्यो द्रोणबीर दृढ़घाय॥ इबिधिजीति पाञ्चाल दल फिरि निजदलमधिआय। ब्यूह द्वारपै लसतभो द्रोणाचार्य्य सहाय॥ सोरठा॥ दुःशासन तो पुत्रसदलजाइ उतबेग सों। गहे जीतिको सुत्र भयो प्रचारत सात्विकिहि॥ चौपाई॥ सुनि प्रचारि सात्विकि रणचारी। फिरो सिंहसम धनुटंकारी॥ तोसुत साठिबाण तेहिक्षणमें। मारतभो सात्विकिके तनमें॥ भटसबतो सुतके अनुगामी। बरषेभूरि बिशिष जयकामी॥ नृप तेहिक्षण सात्विकि धनुधारी। करतभयो बिक्रम अतिभारी॥ बरषि असंख्यन शरवर फबको। काटि असंख्यन शायक सबके॥ प्रतिभट जालशरणको रचिकै। सिगरे दल मधि शायक खचिकै॥ अगणित हय गज भटबधि पलमें। प्रलय पसारतभो तेहिदलमें॥ क्षणमें काहुहि बचत न जाने। आरतह्वै हतशेष पराने॥ तोसुत भगत देखि निजसेना। ईर्षावश नटरो जगजेना॥ शत शर सात्विकिके तनमारे। तुरंगन कहँशर चारि प्रहारे॥ तब सात्विकि अति तुरताली न्हें। ताहि शरणसों गोपित कीन्हें॥ दुःशासन कहँगोपित

देखी दुर्योधन भूपति अवरेखी ॥ दल त्रिगर्तको तुरित पठाये । तीनिह-जार रथी मनभाये ॥ चाहि सात्विकी को अवरोधा । पहुंचे निकट प्रबल तेयोधा ॥ सात्विकि बीरतिन्हें लखि आवत । बाढ़ तिनसों अभिरो शर छावत ॥ ह्वैसब सुभट कालमुख गतसे । भये अधीरज विक्रम हतसे ॥ दोहा ॥ तिनमें योधा पांचशत हेअगरे गहिगर्व । क्षणमहँ तिनकहँ बधत भो सात्विकि सुभट अखर्ब ॥ लखि तिनको बधबिकल ह्वै भगिगे भट तजिदर्प । दुखमुख डगरेद्विजपतिहि लखिजिमि बिलमुखसर्प ॥ सोदल बिचलित करिगरजि चलोपार्थ कीओर । तबप्रचारि नवशरहने दुःशासन करिजोर ॥ सोरठा ॥ सात्विकि बीरउदंड पलटि खिझाये उरगसम । पांच बाणअति चंडदुःशा सनके तनहन्यो ॥ चौपाई ॥ फिरि तोतनय तीनि शर मारे । सात्विकि तेहिशर पांच प्रहारे ॥ फिरिहनि शरक्षुरप्र अतिचोखो । काट्यो तोसुतको धनु नोखो ॥ काटि तासुधनु निजधनु करषत ॥ चलो पार्थकीदिशि शरबरषत ॥ तबतोसुत करिक्रोध अथोरा । मारतभयो शक्ति अतिघोरा ॥ हनिअनेक शायक मनभाये । सात्विकिताकहँकाटि गिराये ॥ तबतो तनय और धनुगहिकै । शतशर हन्यो खरोरहु कहिकै ॥ तोसुत केउरसो धनुधारी । हन्योतीनि शायक अतिभारी ॥ तबमुरक्षित ह्वै तो सुतसोई । परोसुरथ पैबिक्रम गोई ॥ तदनु सात्विको हनिशर चारी । बधतभयो सबहय रथचारी ॥ बधि सारथिहि मारि वर शायक । धनुध्वज काटिचलो भटनायक ॥ भीमसेन कोप्रण अनुमानी । बध्योन दुःशासनहि सुज्ञानी ॥ लखि त्रिगर्तपति मन निरभैकै । भगोताहि निजरथपै लैकै ॥ दुःशासनहि जीतियहि बिधिसों । चलो पार्थपहँ भरिजय रिधिसों ॥ नृप तेहिसमय न कोऊबीरा । भयोतासु सम्मुख धरिधीरा ॥ जेधरिधीर गये ढिगतासू । तेमहितजि यमपुरगे आसू ॥ यथापतंग जोतिढिग जाईं । हो तभये तितभट समुदाई दोहा ॥ संजयसों यहसुनि कह्योवृद्धभूप दुखपाय । संजय चाहत दैवसो करत न रोकोजाय ॥ शक्रबरुण ममसैन मधि धसि जिमि सकत न जाय । तथा अकेलो सात्विकी गोबधिभट समुदाय ॥ तद नंतर जिमि युद्धभो सोकहु सूतसुजान । यहसुनि नृपसों कहतभो संजय अतिमति मान ॥ सोरठा ॥ महाराज तेहिकाल करिसम्मत पांडव सकल । रचत शरणको जालपैठन चाहे ब्यूहमधि ॥ तेहि क्षणतो सुतभूप भिरि

तिनसों बरषत बिशिष । बिक्रम कियो अनूप जो लखि बिस्मित भेसुमन ॥ निशाकर ॥ दल नलिनबन माह । द्विरदसम नरनाह ॥ धसि गहे उत्कर्ष । भयोदलत सहर्ष ॥ भटनको समुदाय । बधत भो दृढ़ घाय ॥ बधिद्विरद हयभूरि । रुधिरको सरपूरि ॥ सकलथरनि सचाय । शक्ति शर सरसाय ॥ चक्रके समघूमि । कियो भीषम भूमि ॥ बिरचि शरके सेतु । काटिबहु धनु केतु ॥ कियो अद्भुत युद्ध । भूमिपति भट शुद्ध ॥ दोहा ॥ ओजै अखण्डल सरिसकरि मंडलसम कोदंड । परदल मधिपार्‌यो प्रलय तोसुतबीर उदंड ॥ इमिदलमर्दत निरखितेहि भीमादिक भटसर्ब । भिरतभये अति बेगसों बरषत बाण सगर्ब ॥ भीमसेनकहँ बाणदश धर्म नृपतिकहँ सात । द्रुपद बिराटहि बाणषट मारे तोसुत तात ॥ शतशर हन्यो शिखण्डिकहँ धृष्टद्युम्नकहँ बीस । सहदेवहि नकुलहि हन्यो षट शायक अवनीस ॥ हन्यो द्रौपदीके सुतन तीनि तीनि नाराच । सकल भटनकहँ हनतभे शरदश बसुषट पांच ॥ बोरठा ॥ तहां युधिष्ठिर भूप हनि तीक्षण युगभल्ल बर । नृपको धनुष अनूप काटि हनतभे बाणदश ॥ लागि लागिते बान धसे न बर्म अभेद में । तब नृपगहि धनुआन भिरो युधिष्ठिर भूपसों ॥ चौपाई ॥ सोलखि सब पांडव भयपूरे । धर्महिं घेरि लयेभट रूरे ॥ दुर्योधनपहँ चले प्रचारी । भट पाञ्चाल रथी धनुधारी ॥ सोलखि द्रोण धनुर्द्धर योधा । बढ़ितिनको कीन्हों अवरोधा ॥ तेहिक्षण घोरयुद्धभो राजा । मरे असंख्यन सुभट समाजा ॥ भीषम शब्दभयोदुहुं दलमें । कटे असंख्यन हयगज पलमें ॥ जहँअर्जुन जहँ सात्विकिबीरा । तहां मचो अतिशब्द गँभीरा ॥ द्रोणपार्थ सात्विकि तेहि दिनमें । किये लोकक्षय बाणागिनमें ॥ द्रोणक्षत्रिआतंक तेहिक्षणमें । तोसुत नृपको हितगुणि मनमें ॥ कोपित काल कराल समाना । परदलमधि बिहरो बलवाना ॥ काटत अगणितशर सबहीके । बध्यो असंख्यनभट उनही के ॥ इमिदल मर्दत ताहि निहारी । वृहच्छत्र नृपभिरो प्रचारी ॥ सब ककयन मध्य गुरु भरता । महारथी अरिदलदर दरता ॥ तुरगनकरि अति चंचल भूपर । बरष्यो बिशिष द्रोणके ऊपर ॥ द्रोण कोपकरि ताहि प्रहारे । बाण पंचदश अति अनियारे ॥ तिनमें पांच पांचशर हनि हनि । वृहच्छत्र काटतभो गनि गनि ॥ द्विजबर बहुरि आठशर डारे । बसुशर

मारि तिन्हैंनृप वारे ॥ दोहा ॥ ब्रह्मअस्त्र तबतजतभो कोपिविप्र रणधीर। ब्रह्मअस्त्र तजितेहि समित कीन्हों क्षितिप सुबीर ॥ अस्त्र अस्त्रसों वारि नृप हन्यो साठिशर क्षिप्र। अति अनियारे बाणबहु भूपहि मार्योबिप्र॥ फिरिनृप सत्तरि शरहन्यो तबभट द्रोण अमान। भूपहि व्याकुल करत भो बरषि बज्रसम बाण ॥ बधि अश्वन अरु सूतकहँ काटिछत्र कोदण्ड। भूपतिको बध करतभो मारिबाण अतिचण्ड ॥ सोरठा ॥ वृहच्छत्रको नाश लखि परभट हाहाकरे। तबकरि क्रोध सहास वृद्धकेतु बढ़ि भिरतभो ॥ चौपाई ॥ अगणितकाटिबिप्रकेशायक। हन्योसाठिशरसोभटनायक ॥मारि क्षुरप्र बाण अतिचोखो। काट्योद्रोण तासु धनु नोखो ॥ धृष्टकेतु तबबर धनु गहिकै। बरष्यो बिशिष खरोरहु कहिकै ॥ तबद्विज अतिकर लाघव कीन्हें। सब हयसूत तासुबधि दीन्हें ॥ तब शिशुपाल तनयरथ तजिकै। डारतभो बरगदा गरजिकै ॥ मारि कइक शायक अनियारे। द्रोण काटि तेहि महिपै डारे ॥ तबसो हन्यो शक्तिअति भारी। काट्यो ताहि द्रोण धनुधारी ॥ शक्तिकाटि द्विजशर अतितीक्षण। मारत भयो अरुण करि ईक्षण ॥ लखि सोबाण बेधि उरतासू। धसोजाइ धरणीमधि आसू ॥भयो बिदीरण हियबलवाना ॥ गिरो भूमिपै ह्वै गतप्राना ॥ तबसुत तासु भिरो द्विजबरसों। बध्योताहि द्विजचरबर शरसों ॥ चेदिराज सुतकोबध देखी। जरासन्धको सुतअति तेखी ॥ बर्षि असख्यन शर ह्वै कोपित। द्रोणहिं कियोनिमिषमें गोपित ॥ द्रोणकाटि सिगरेशरताके। बध्योताहि हनिशर बरभाके ॥ क्षत्री मर्दन बीर अचारय। नृप तहँकियो अमानुष कारय ॥ बधि अगणित हय गज भटरूरे। हाहाधुनि परदलमधि पूरे ॥ दोहा ॥ संजय अरु पांचालअरु पांडवके दलमाह। सुनि हाहाधुनिभिरत भो क्षत्रधर्म भटनाह ॥ शर क्षुरप्रसों द्रोणको धनुषकाटि रणधीर। हनि बहुशर बेधित कियो द्विजको चारु शरीर ॥ तुरित और कोदण्ड गहि द्रोणाचार्य अमान। क्षत्र धर्मको बधकियो मारि बज्रसम बान ॥ धृष्टद्युम्नके सुवनको बधन निरखि अनखाय। चेकितान नृपबिप्रसों अभिरो ओज बढ़ाय ॥ सोरठ ॥ दशशर द्रोणहिं मारि चारिबाण सूतहिहन्यो। तब द्विजधनुटंकारि षोड़शशरभूपहि हन्यो ॥ फिरिहनि शायक एकवध्यो भूप के सारथिहि।बिना सूतगहिटेकतुरँगसुरथलैदूरि गे॥ तोटक प्रयात ॥ महाबीर

बीरानको यूथदर्ता । अबीरानहू को बलीबीर कर्ता ॥ भरोगर्व भूभारको नाश चोप्यो । भलै कालसोंह्वै प्रलयकाल रोप्यो ॥ करी सुण्डसे चण्ड दोर्दंडचारी । करे मंडलाकार कोदंड भारी ॥ करीबाजि योधा घने काटि डार्‌यो । मही रुण्ड औ मुण्डसों पाटिडार्‌यो ॥ घनेहांक देकै घनेबाण ठाटे । घने पाणि ऊरू घनेशीशकाटे ॥ घनेभल्ल नाराचके जालपूरे । घने घात लीन्हें घने गातथूरे ॥ नता ठौर कोऊ सको यूथ तासो । भगे भूरि योधौ भरे भीति भासों ॥ भिरे बीरजे बीरतासोंरगंसे । भयेहालतेकालके ते गालगंसे ॥ दोहा ॥ ह्वै आरत जिमि शीतलहि कम्पत गउनकोजूह। द्रोण भीतिसों तिमिकँपो अरिदल सुभट समूह ॥ द्रुपद बिराटादिकतहां कर्ण द्रोणको देखि । अतिबिस्मि ह्वै शोचिइमि कहतभये अवरेखि ॥ वृद्ध पचासी बर्षको करतयुवा समयुद्ध । अतिगुरु तपकरि बिप्रयहलह्योबीर-ताशुद्ध ॥ सोरठा ॥ इमिकहि द्रुपद बिराटदेसाहस लै भटन सँग । द्विजहि जानि भटराट लरतभये रहि यतनसों ॥ महिखरी ॥ यहिभांति उत्तम सैन जलनिधि मध्य अतिअनुपम बनो । भटसुवन सिनिके सुवनको रणधीर अतिधनु धरगनो ॥ तहँरचत अबिरल सेतुचारु सुशायकनके गरजि कै। रथतुरँग गजभट दुसह लहरिण सबिधि मरदत बरजि कै ॥ जलजाद समजे भयेसमुख तिन्हें मरदत मदमयो। भटपार्थ अकथिक कूलपरतेहि पथिक सम निअरतभयो ॥ जिमि नाग हितनागान्ता उदधिहि परनसों अरदत भयो । तिमिसिन्धुपति लगि पार्थममदल शरणसों अरदतभयो॥ दोहा ॥ यहि प्रकार जन नाशहित नृप तो सम्मत पाय । पाण्डवसों तो सुतलरे नाहक बैर बढ़ाय ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमश्वराजाधिराजश्री उहितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचितेभषायांमहाभारतदर्पणद्रोणपर्वणिचतुर्थदिनयुद्धचतुर्थयामारम्भेसात्विकिप्रबेशोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

दोहा ॥ सात्विकि कहँढिग पार्थके गयेदेर गुणिशोचि । धर्म भूमि पतिभीम कहँउतै पठैबोरोचि ॥ कह्यो सूतसों सुरथलै चलोभीम हैयत्र । सोसुनि सारथि सुरथलै शीघ्रजात भो तत्र ॥ राला ॥ भीमके ढिग जाय मोहित भयोधर्म नरेश । देखि मोहित भूपको इमिकह्यो भीम सुभेश ॥

भूमि पतिसो कहोमोहित भयेहौ जेहिहेत। मोहिं आहत आपुप्रभु कत शोचि होतअचेत ॥ करौशासन शीशधरि सो करौंमैं यहिकाल। भीमके येबचन सुनिकै कहतभो क्षितिपाल ॥ पाञ्चजन्य सुशंखकी धुनिपरत सुनि बहुबार। सुनोपरत नमोहिं अबगांडीव कोटंकार ॥ जानितातै परतनहिं हैकुशल पार्थअमान। लरतकेशव करततात शंखका आह्वान ॥ बूझि यहउत प्रथम भेज्यो सात्विकी कहँतात। गयोसोऊ भयोकैसो शोचबाढ़तजात ॥ जाहुतातै शीघ्र उततुम बिदित भट शिरताज। कृष्ण पारथ सात्विकी केकुशल रक्षण काज ॥ भूपकेये बचन सुनिकै कहोभीम सचाय। पार्थको नहिंकछू संशय कृष्णजासु सहाय ॥ आपुआज्ञा करत हमउत अवशिजैहैं भूप। भाषिइमि गोभीम जहँहो धृष्टद्युम्न अनूप ॥ कह्योतासों मोहिभेजत भूपहै जितपार्थ। भूपकोतुम किहेहु रक्षणसदा सबिधि सदा र्थ ॥ भाषि इमि मधुपान करि सन्नाह धारि नवीन। देत बिधिवत दान अरु स्वस्तयन सुनतप्रवीन ॥ करिप्रदक्षिण भूपतिहि टंकारि बरकोदंड। चलतभो ममब्यूह मुखदिशि पुरुषसिंह उदंड ॥ दुन्दुभी बजवाइ सहदेव आदि सब भटजूह। चले पीछू तासु ममदिशि तजत बाणसमूह ॥ ताहि आवतदेखि यहिबिधि इतेके भटसर्ब। भिरेबढ़िकै गरजि बरषत भूरिबाण सगर्ब ॥ भीम तिनपै बरषि शररथ बेगसों हँकवाय। ब्यूहमुखपै द्रोणहो तहँचलो शायकछाय ॥ द्विरददल तबभयो आड़त भीमतेहिं बिचलाय। द्रोणके ढिगगयो बरषत बाणभट दृढ़वाय ॥ भीमसों द्विजकह्यो अबइत बिना जीतेमोहि। ब्यूहमधि नहिंधसन पैहौ फिरोमो कहँजोहि ॥ ब्यूह मधिगो पार्थसो कछुकृपा मेरीपाय। सुनौतातै ब्यूहमधि तुमनहीं सकिहोजाय ॥ द्रोणके येबचन सुनिकै कह्योभीम बुझाय। मान्यसब बिधि हमेंतुमहौ पिता ममसुखदाय ॥ लागि अरिसँग करतहौ जोअरिनके सम काज। सुनोतौ अरिसरिस ह्वैहम कहतहैं द्विजराज ॥ सुनो अर्जुन हैं न हमहम भीमसेन प्रसिद्ध। जाब दलमधि शीघ्रतुमकहँ जीतिहै द्विजवृद्ध ॥ भाषि इबिधि अमोघ गरुई गदा मार्‌यो भीम। देखितेहि गोकूदि रथसों द्रोणबीर अधीम ॥ गदासो लगितुरँग सूतहि मारिकरि रथचूर्ण। धुन्यो अगणित भटन धुनिया धुनत जैसेऊर्ण ॥ देखिद्विजकी दशा यह तोसुवन कहि हाहाय। घेरिद्रोणहि और रथपै लये तुरित चढ़ाय ॥ बीरदुःशासन

तजत भो शक्तितापहँ डारि। भीमफिरि हनिबाण तीक्षण कुंड भेदिहि मारि॥ हतिसुखे खहिबधि सुनेत्रहि दियेमहिपै डारि।मारि बाणनप्रलय रोप्यो लग्योनाहिं अबारि॥ रौद्रकर्महि मारिफिरि वृन्तारकहि बधि बीर। दुर्विमोचन कहँबध्यो बधिअभयकहँ रणधीर॥ बध्योफेरिसुबर्मणहि तहँ बरषि अगणित बाण। बाणमारिसुदर्शनहिं फिरिभयोकरत अप्राण॥ बरषि अबिरल बाण अगणित बिबिधि आयुध काटि। बेधि बधि बिचलाय अगणित भटनधनु बिथिठाटि॥ गरजि गरजि प्रचारि यहि बिधि भीमसेन अमान। बधोबलिके पशुनसम तो सुवन नव बलवान॥ रहेजे हतशेष ते इमि बधत बन्धुनदेखि। वगसों हँकवाइ रथगे दूरि कढ़ि अवरेखि॥ सिंहके भयभगत जैसे द्विरदको समुदाय। भगेतिमि तोतनय सिगरे देवपितर मनाय॥ दोहा॥ इबिधि जीति तो सुतन कहँ पांडव धनुटंकारि। द्रोणाचारय सोंभिरो बरषत बाण प्रचारि॥ तहांद्रोण अरु भीमसों भयोयुद्ध बिकराल। दोऊ दोऊ दिशिदयै बिरचि शरनके जाल॥ चौपाई॥ तेहिरथ भीमसेन बलवाना। करिनिज कारजको अनुमाना॥ रथ सोंकूदि द्रोणके सम्मुख। चलो सहत शायक दायकदुख॥ मैगल मत्त चलैसहि जैसे। जलके बूंद पवनमुख तैसे॥ जायबेगसों गहिरथ भारी। फेकत भयो बीर रणचारी॥ तेहिसुजान सों कूदि अचारय। चढ़ो और रथपै भट आरय॥ फिरि न भीमसों भिरो बिचारी। थिरोव्यूह मुखपै धनुधारी॥ घनसम गरजि भीमभट नागर। चढ़ोसुरथपै बिक्रम सागर॥ योधन बेधत बधत ननरदत। चलोतुरँग रजगज भटमरदत॥ जीतिभोज दल अरु काम्बोजहि। जीतिम्लेच्छ सेनाबर ओजहि॥ जीतत सदल और बहुभूपन। करत पराजिन भीषम रूपन॥ लरतरह्यो सात्विकिजेहि थलमें। तेहिथल जानभयो ममदलमें॥ तहँसो बढ़िमरदत ममसेना। लखो अर्जुनहिं अरिदल जेना॥ तहँगरजतभो मेघसमाना। आयोभीम पार्थसुनि जाना॥ अति हर्षित ह्वै केशव पारथ। गरजतभये पुष्टगुणि स्वारथ॥ बार बारते गरजि गरजि कै। लरेमेघसम तरजि तरजिकै॥ धर्मभूपसों गरजनि सुनि कै। मोदित भये कुशल सब गुणिकै॥ दोहा॥ यहसुनिक्रै धृतराष्ट्र नृप ह्वै अति बिकल बिहाल। संजयसों बूझे सुनौ जन्मेजय क्षितिपाल॥ इबिधि मर्दिदल जाइ तहँ गरजो भीम सुबीर।

तबवासों तेहिथर भिरोको योधा धरिधीर ॥ हयसों हय गजसों द्विरद रथरि प्रहारि प्रहारि। बधैभीम तासों भिरोको कहुसो निरधारि ॥ सोरठा ॥ सुनि भूपतिके बैनसंजय ऐसो कहतभो। लखि भीमहि बलऐन कर्णडाटि बढ़ि भिरतभो ॥ चौपाई ॥ बढ़िबढ़ि उभय बीरबलपागे । अबिरल बाण प्रहारण लागे। मारि काटि अगणित शररूरे। अगणित बाण दुहूंदिशि पूरे धनुटंकारि प्रहारनि गरजनि। कोअति शब्द सुभटहिय दरजनि ॥ पूरित करिकरि गोरवलीन्हें। भटहय द्विरदन शंकित कीन्हें ॥ धर्मगुणो सुनिशब्द गँभीरा। भिरो भीमसों कर्णसुबीरा ॥ भीमहि कर्ण बीस शर हनिकै। सूतहि हन्योपांच शरगनिकै ॥ चौंसठि बाण भीम तहि मारे। तापहँ कर्ण चारिशर डारे ॥ तिनकहँ काटि भीम शरछाये। अतिशयकर लाघव दरशाये॥अगणित काटिभीमके बाना। छाइदियोशरकर्णअमाना॥ भीमकर्णको काटि शरासन । मार्‌यो दशशर अरिकुल नाशन ॥ रिसि करिकर्ण औरधनु धरिकै। बेध्यो भीमहि शरपरिहरिकै ॥ शायक तीनि कर्णके उरमें। मार्‌यो भीमसेन अतितुरमें ॥ बिलमधि अहप्रविशे अहिगणसे। तिन्हें अधबसेलखि जन मनसे ॥ इमि भिदिकेरहिक्षणकअचायक। कर्णभयो बर्षत बहुशायक ॥ भीमफेरि काट्यो धनुतासू। सूतहि बेधिबधत भोआसू ॥ बाजिन मारिभेजि यमलोकहि। बहुशरहन्यो कर्ण बल ओकहि ॥ दोहा ॥ तुरित कूदि तेहि सुरथसों कर्णबीर अनुमानि । जाय सुरथ नृपसेन के बैठो आनि गलाति ॥ इबिधि जीतिकै कर्ण कहँ गरजो भीम अमान। कर्णहि जीत्यो भीमसुनि धर्म किये अनुमान ॥ अर्जुन सात्विकि भीमकहँ निजदल मर्दत देखि। जाय द्रोहपहँ तो तनय कहत भयो अवरेखि ॥ सोरठा ॥ तुम्हें जीति हेतात सात्विकि अर्जुन भीम भट। मर्दिसैन अवदात गये सिन्धुपतिके निकट ॥ तो जीतब बलभौन भयो सिन्धु शोषण सरिस। अबहै करतब जौन तासु बचन कासोंकहो ॥ जयकरी ॥ दुर्योधन नृपके सुनिबैन। कहो द्रोण यह मिथ्याहैन ॥ हमैंजीति ते सुभट अमान। गेतो दलमधि बरषत बान ॥ तुम कीन्हेंहो अनरथ कर्म। जानो यहताको फलपर्म ॥ कुत्सित मंत्र शकुनिको मानि । तब जीते जूवाहित जानि ॥ सो जीतब नहिं जीतिललाम। युद्धयुधा जीतब अभिराम ॥ जामधि पासा आयुध सर्ब। क्षेत्र चारु गृहनिशि दिन पर्ब ॥

नरद चारि रँगकी सबसैन। दाव द्रव्य महिदायक चैन ॥ तुम अरुधर्म महीप खेलार। सोदर बन्धु मंत्रदातार ॥ यह जूवा जो जीतै तात। सोई जीति जीति बिख्यात ॥ आजु खेलार धनंजय वीर। दावजयद्रथ भूपतिधीर ॥ सात्विकि भीम सहायीतासु। खेलि चहतहैं जीतन आसु ॥ ताते जाय भटनलै संग। खेलौ युद्ध जुवा बदरंग ॥ युद्ध युवा यहभीषम रूप। है न शकुनि के बशहेभूप ॥ जीति हारि ईश्वरके हाथ। लरोजाय लै सुभटन साथ ॥ हम इत आड़ि सुभट समुदाय। करबयुद्ध अबिरल शरछाय ॥ यहसुनि दुर्योधन क्षितिपाल। चलो पार्थ पहँ लै भटमाल ॥ दोहा ॥ उतमौजा क्षितिपाल अरु युधामन्यु नरनाह। पृष्ट रक्ष जे पार्थके हे आये दलमाह ॥ तिन्हैं लरत निज भटनसों मगमें भूपति देखि। भिरत भयो अतिकोप करि तिनको बधअवरेखि ॥ सोरठा ॥ नृपहि निरखि तेबीर भिरेप्रचारि प्रचारिकै। तीक्षण तीस सुतीर युधामन्यु मारतभयो॥ हनि सूतहि शरबीश तुरगन मारे चारिशर। युगशर हनि अवनीश काट्यो तासुध्वजाधनुष ॥ चौपाई ॥ उतमौजा हनिशर मजबूतहि। बधतभयो भूपति के सूतहि ॥ बधिताके सूतहि दुर्योधन। बध्यो हयन हनिशरतन शोधन ॥ उतमौजा तेहि रथसों कढ़िकै। युधामन्यु के रथपै चढ़िकै ॥ भूपति के रथके सब घोरे। बधत भयो हनि बाण अथोरे ॥ युधामन्यु हनि शायक चोखो। काट्यो भूपतिको धनु नोखो ॥ तब हनि गदा भूप दृढ़ घायक। बधि तिनके घोरन क्षितिनायक ॥ फिरि नृप मद्रनाथ के रथ में। चढ़िभो चलत पार्थ दिशि पथमें ॥ और रथन पै चढ़ि बल अगरे। तेयुग भूप पार्थमुख डगरे ॥ तहँ धृतराष्ट्र भूपसुनि ऐसो। बूझेकियो कर्ण फिरि कैसो ॥ जब तेहि जीति भीम रणचारी। चलो पार्थपहँ धनु टंकारी ॥ भीषम द्रोण पार्थसम योधा। कर्ण कियोतब किमि अवरोधा ॥ सो सबिधान सूत सुतभाषो। सुनिबे को ममन अभिलाषो ॥ वृद्धभूप की सुनि यहबानी। कहत भयो संजय शुचिज्ञानी ॥ कर्णहि जीति भीम जब राजा। चलो बधततो सुभट समाजा ॥ तब राधेय और रथ बरपै। चढ़ि टंकारि धनुष तेहि थरपै ॥ कहत भयो अतिरिससों पागो। अब कितजात वृकोदर भागो ॥ दोहा ॥ कुन्ती पुत्र न उचित इमि अरिहि देखावब पीठि। फिरि मम सम्मुख युद्धकरु जोरि डीठि सों डीठि ॥ ऐसो

करकश वचन सुनि भीमसेन बलवान। सादर फिरि राधेयपै बरषो अबिरल बान॥ सोरठा॥ तासु शरण के जाल काटि कर्ण बरसों बिशिष। दोऊ बीर बिशालकिये भयानक युद्धतहँ॥ चोपाई॥ यथाअचारय शिष्यहि शीक्षत। कर्ण लरत हो तिमि जय ईक्षत॥ भीम सकल निज पौरुष करिकै। रह्यो लरत बधको प्रण धरिकै॥ करै बाण विधि भीम सुबीरा। लखिसो हँसै कर्ण रणधीरा॥ देखि तासु हँसिबो अति रिसिकै। बाण जाल मधि भीम प्रविशिकै॥ बाण पचीस कर्ण के तनमें। मार्‌यो बध को प्रण करि मनमें॥ दोऊबीर शरनकी बरषा। कियो परस्परगहिउतकर्षा॥ दोऊ सेत शरण के रचिरचि। काटि काटि बहुशायक नचिनचि॥ दोउन कहँ अगणित शरदोऊ। मारतभयेलखै सबकाऊ॥ हनि चौंसठि शर कर्ण सुप्रणको। काट्यो कवच भीमके तनको॥ काटि कवच करि करि शरपातहि। बेधतभयो भीमके गातहि॥ पुष्पति किंशुक सुतरु समाना। लसत भयो तहँ भीम अमाना॥ भीम सहेताके शरतैसे। कामी बचन कुतियके जैसे॥ तिमि सहि बाण काज निजगुनिकै। भीम बरषि शायक धनु धुनिकै॥ काटि कर्णको धनु भटनायक। तुरगन बध्यो मारि बहुशायक॥ बधि सूतहि हनि शायक भारी। बेध्यो सूत सुतहि रणचारी॥ बिरथ बिधनुह्वैसो रथतजिकै। कर्ण और रथपैगो लजिकै॥ दोहा॥ इबिधि पराजय कर्णको सुनि धृतराष्ट्र महीप। कहे कर्ण लहि हारिका कियो भाषु कुलदीप॥ यह सुनि संजय कहतभोचढ़ि रथबरपै फेरि। कर्ण भीमपै चलत भो धनुटंकारत टेरि॥ सोरठा॥ दोऊबीर अमान मत्त द्विरदसम जूटितहँ। करत भये घमसान करकोदण्डन चपल करि॥ मंत्र कर्णको पाय किये कर्म तो तनय के। समुझि भीम अनखाय बरषो शायक कर्णपहँ॥ चोपाई॥ सूतज तासु धनुष बिधि देखी। हँसि अगणित शर तजि अवरेखी॥ काटि अनगिने शायक ताके। हनतभयो नव शर बरभाके॥ तबअतिकोपि शरासन करषत। भीमसेन अबिरल शर बरषत॥ काल कराल समान करेरुख। गरजत चलो कर्णके सम्मुख॥ सो लखि बरषत अगणित शायक। तापहँचलो कर्ण भट नायक॥ रिक्ष समान कर्णके घोरे। हंस समान भीमके धोरे॥ श्याम सेत बारण से भिरिकै। शोभित होत भये तहँ थिरिकै॥ दोऊ भट कोपितह्वै मन

में। अद्भुत कर्म कियो तेहिक्षनमें ॥ मण्डल सम धनु करि करि शरसे। दुहुंदिशि अबिरल शायक बरसे ॥ अगणित शायक काटि गिराये। अगणितबाण दूरिलों छाये ॥ अहि सपच्छसे शायक रूरे। अबिरल दोऊ दुहुंदिशि पूरे ॥ अगणितशर गातन मधि हनि हनि। गरजत भये खरारहु भनि भनि ॥ टेरि टेरि करि करि चखराते। बरषे बाण गर्बमदमाते ॥ दोऊ महा मोदसों चरि चरि। लरे शरण को दुरदिन करि करि ॥ शायक तीस परम अनियारे। कर्ण भीमके तनमें मारे ॥ धनुष कर्णको हनिशर तीक्षण। काट्योभीम अरुणकरि ईक्षण ॥ दोहा ॥ बधि सूतहि हनिबाण बर दीन्हों महिपै डारि। तब सूतज बर शक्तिगहि मारत भयो प्रचारि ॥ जौ लगि धार्‌यो और धनु तौलगिकै यक बान। हन्यो कर्णके गातमें भीमसेन बलवान ॥ तुरित कर्ण धनु और गहिबरष्यौबाण अनेग। सोसब काट्यो शरणसों भीमसुबीर असेग ॥ फिरिक्षुरप्र शरमारिकै काटि कर्णको चाप। बधि घोरन अश्वन बध्यो भीमभूरि परताप ॥ सोरठा ॥ बिरथ बिधनु करिताहि बेध्यो अगणित शरण सों। सूतज इतउत चाहिरह्योन तबकछु करिसको ॥ कर्णहिपीड़ितदेखि दुर्योधन भेज्यो तहां। दुर्जयकहँ अवरेखि जायभिरो सोभीमसों ॥ वसुकला ॥ भीमहि प्रचारि। नवबाण मारि ॥ हनिषट सुबान। सूतहिअमान ॥ ध्वज मधि नवीन। हनिबाण तीन ॥ बहुबाण काटि। पाण्डवहि डाटि ॥ फिरि तासुगात। शरहने सात ॥ तबभीम कोपि। परलै अरोपि ॥ बधि सूत तासु। हतिहयनआसु ॥ दुर्जयहि मारि। भोदेतडारि ॥ बलबुधि निधान। तोसुत अमान ॥ करितासु नास। पाण्डव सहास ॥ रथपर निहारि। कर्णहि प्रचारि ॥ तुरता बढ़ाय। शर दिये छाय ॥ बहुबार हारि। तोहित बिचारि ॥ नहिंटरो नेक। सूतज सटेक ॥ भोरचतहाल। शरसेतजाल ॥ इमि उभयबीर। बरषे सुतीर ॥ दोहा ॥ भीमकर्णके तनहनेशायक दशअरु बीश। कर्णताहि नवशर हने बल करिहे अवनीश ॥ फेरि भीमतिरसठि बिशिष हनेकर्णके गात। कर्ण तासु तनमधि कियो अति तीक्षण शरपात ॥ बेधिभीम कहँसोविशिष गयोपार कढ़िभूप। भीमकोपि तब हनत भो गदा भयानक रूप ॥ सोरठा ॥ हनि सो गदाउदण्ड बध्यो कर्णके हयनकहँ। फिरिहनि शायक चण्ड बधि सूतहि काट्यो ध्वजा ॥

तबतेहि सुरथहि त्यागिकर्ण भूमिमें ह्वैखरो। महा क्रोधसों पागि बरषत भो अविरल बिशिष ॥ चौपाई ॥ तेहि क्षण कर्णमहा रिसि लीन्हें। भूपति अति बिक्रम तहँकीन्हें ॥ बिरथी भीमसरथि सों भिरिकै। घोर युद्धकीन्हों तहँथिरिकै ॥ दुर्योधन सो लखि दुखपायो। दुर्मुख कहँतहँ तुरित पठायो ॥ लखि दुर्मुखहि भीमलहि आनँद। बरषिकर्णपै शरसरदानद॥ भिरि दुर्मुखसों हनि नवशायक। बधिभेज्यो यमपुर भटनायक ॥ सूतज तोसुतको बधदेखी। चख जल तजत अनर अवरेखी ॥ मोहक्रोध गहिरथ परचढ़िकै। भिरो वृकोदर भटसों बढ़िकै ॥ तेहि अन्तरमें चौदह बा ना। हन्यो कर्णकहँ भीमअमाना ॥ तेशर तासुगात मधिधसिकै। शोणितपिये उरग सम बसिकै ॥ चौदहबाण भीमके तनमें। मारतभयो कर्णतेहिक्षण में ॥ तबकरि कोपभीम रणचारी। कर्णहिहनेतीनिशरभारी ॥ सूतजतिनसों बेधित ह्वैकै। ह्वै अतिपीड़ित इतउत ज्वैकै ॥ चढ़ि तुरकी घोरे पर सादर। रणतजि भगोभगत जिमिकादर ॥ कर्णहि जीतिधनुषटंकारत। गरजत खरोरहो तहँभारत ॥ यहसुनि वृद्धभूप दुखलहिकै बूझत भयो शोचसों नहिकै ॥ संजय ईश्वर चाहतजोई मिटत न कबहुं होतहै सोई ॥ दोहा ॥ भीषमकर्ण समानजो सबजगको जेतार। कर्णलहत सो भीमसों इबिधि हारिबहुबार ॥ अयुतनागकोजासुतनबलतेहिभटसोंजूटि। हार्यो सूतज तबभिरो कौनवीर जयऊटि ॥ यह सुनिकै संजय कह्योतो मतको फलयेहु। सहौताहि धरिधीरमतिदोषईश्वरहिदेहु ॥ निरखि पराजित कर्ण कहँतेहि गरजत लखितत्र। सहि न हके तो पांचसुत गये भीमहोयत्र ॥ दुर्मुद दुर्धरदुसहअरु दुर्मर्षण रणधीर। अरुदुर्जयये भिरतभेरचिशरजाल गँभीर ॥ सोरठा ॥ भिरत भीम सों देखि तिनकहँ रथचढ़ि कर्ण फिरि। हियो क्रोधसों भेखिभिरो भीम भटसों गरजि ॥ तेहि क्षण भीम अमान भूपति अतिबिक्रम कियो। सबपर बरषत बान काटे सबके सब बिशिप॥ चौपाई ॥ कर्णहि आड़ि शरणके जोरण। हनिपचीस शायक तनतोरण ॥ बधि सारथी तुरँगसब तिनके। बधेतिन्हें जेमणिकुल दिनके ॥ बधि तो पांच सुतन रणचारी। गरजो भीम धनुष टंकारी ॥ आड़ि कर्णकहँ तिनको बधिबो। लखिसब गुणे असधको सधिबो ॥ लखि राधेय ग्लानिउर आनो। कहो भीष्मको सतिकरि मानो ॥ गरजि पांचशर भीमहि हनिकै।

फिरि मारे सत्तरि शर गनिकै ॥ कर्णहि मारि बाणषट सोऊ । काट्यो धनुष लख्यो सबकोऊ ॥ तबराधेय और धनु गहिकै । बरषो बाण खरो रहु कहिकै ॥ भीमकाटि सबशायक तासू । बध्यो हयन अरुसूतहि आसू॥ फेरिकाटि धनुषहि दृढ़घायक । कर्णहि हनतभयो बहुशायक ॥ तबचढ़ि कर्णऔर रथपाहीं । तज्यो गदाकहि बाचत नाहीं ॥ हनिबहु बाणकाटि तेहि मगमें । गरजो भीमबिदित भटजगमें ॥ गदहिकाटिपर व्यूहबिदारण । भीमतजत भोबाण हजारण ॥ काटि सकल शर हनिशर अगणित । हन्यो बीसशर सूतज भगणित ॥ हनिनव बाणभीम भट दक्षिण । बेध्यो सूतज को भुजदक्षिण ॥ फेरि गरजि अतिरिस सों शरसो । अगणित बाण कर्णपै बरसो ॥ दोहा ॥ तबसूतज अति बिकलह्वै रहि न सकत भो तत्र । रणतजि सादर जातभो शरन जातहो यत्र ॥ सुनि दुर्योधन भूपको अनु साशन तबभूप । तुरित भीमसों भिरतभे तोसुतबीर अनूप ॥ चित्रायुध उपचित्र अरु चित्रशरासन धीर । चारुचित्र चित्राक्ष अरु चित्रबर्म रणधीर ॥ लरिसब तिनसों निमिष में एक एक शरमारि । बधितिन सब कहँ भीमभट दीन्हों महिपै डारि ॥ गिरत बायुबश अरुणसम निरखि तजत चखबारि । कर्ण भीमसों फिरिभिरो बरशत बाणप्रचारि ॥ षोडशा ॥ दोऊबीर प्रचण्ड गरजि गरजि बरषे बिशिष । दोऊ धुनि कोदण्ड काटि दिये अगणित बिशिष ॥ छत्तिस बाणकराल भीमहने तनकर्णके । बाण पचास बिशाल कर्ण भीमके तनहने ॥ तोमर ॥ भिदिउभय भटअवदात । ह्वै रुधिर पूरित गात ॥ अति बीर दोऊ शुद्ध । तहँ कियो अद्भुत युद्ध ॥ भिरिमत्तद्विरदसमान । करि परस्पर आह्वान ॥तेउभयबीरबिशाल । रचि उभयदिशि शरजाल ॥ फिरि गरजि गरजि प्रचारि । बहुबाणबाणनबारि॥ अति कठिन धनु टंकारि । बहु बाण गातन मारि ॥ तजि दुहूंदिशि शरधार । करि दये अन्धाकार ॥ तहँभीम अतिशय कोपि । भोदेतकर्णहि गोपि ॥ तब बिकल कर्णहि देखि । तो तनय नृप अवरेखि ॥ तहँ दिये तुरित पठाय । भटपांच सोदर भाय ॥ तेबीर सादर जाय । भेतजत शर समुदाय ॥ लखि भीम तिनसों जूटि । निजदशा मनमें ऊटि ॥ हनिसात शर दुखदाय । बधिदिये तिनहिं गिराय ॥ सो निरखि सब सरदार । इत किये हाहाकार ॥ तकिहनत कर्णहिबान । भोबधत तिनहिं अमान॥

यह देखि सब नरनाह। जकि रहे गुणि मनमाह ॥ दोहा ॥ शत्रुंजय अरु शत्रुसह दृढ़ बिचित्र रणधीर। चित्रसेन चित्रायुधौ अरु बिकर्ण बर बीर ॥ यकतिस भ्रातन को मरण लखि तेहिदिन दुखपाय। दुर्योधन गुणि बिदुर को बचन रह्यो पछिताय ॥ समुझि समुझि अपराध निज शोकाकुलह्वै भूप। बारि धार चखसों तजतमोहिं भयो गतरूप ॥ सोरठा ॥ कर्णबीर तेहिकाल बरषो शायक भीमपहँ। भीम सुबीर कराल बरषो शायक कर्णपहँ ॥ चौपाई ॥ हे क्षितिपाल कछू कहिजातन। भीम कर्ण के शरके घातन ॥ अगणित हय गज भट ममदलमें। घायल भये मरेतेहि पलमें ॥ सोलखि अगणित योधा डरिकै। गये दूरिकरि हाहा करिकै ॥ दोऊ बिदित बीर बलवाना। दोउ धनुर्द्धर धीर अमाना ॥ गरजि गरजि बढ़ि बढ़ि थिरिथिरिकै। दपटि दपटि दड़िदड़ि फिरिथिरिकै ॥ अबनहिं बचत भागु मति भनि भनि। अगणित बाण परस्पर हनि हनि ॥ भिदि भिदि भरे रुधिरसों शोभित। भये उभयभट अनघ अक्षोभित ॥ सब दिशि जाल शरणके पूरे। अगणित छत्र धनुष ध्वज तूरे ॥ काटि असंख्यन शर शरगण सों। अगणित बाणहने भरिप्रणसों ॥ कुण्डल एक कर्णकी श्रुतिको। कट्यो भीमसेन अति दुतिको ॥ कुण्डल काटि भीमभट हँसिकै। तजत भयो दश शायक कसिकै ॥ ते दशबाण भाल मधि लगि लगि। धसि धसि लसे रुधिरसों पगि पगि ॥ तेहिक्षण सूतज मुर्छित ह्वैकै। ध्वजसों लागि रहो बल ग्वैकै ॥ तुरितहि चेति क्रोधसों पागो। कर्ण कराल कालसम जागो ॥ घनसम गरजि बाण बन बरसो। चहि अरि रबिहि राहुसम गरसो ॥ तेहिक्षण भीमकाटिधनुताको। गरजिवीर रस बरसों छाको ॥ दोहा ॥ तुरित कर्णधनु औरगहि करि अद्भुत सन्धान। भीमसेन के सकल दिशि छायदेतभो बान ॥ भीम कर्ण तेहि क्षण किये अद्भुत बिक्रम भूप। पूरिदेतभो गगन में बाण भयानक रूप ॥ शरणशरणके भिरनिसों नभमें कढ़त कृशान। जानि परै मणि मय मनो तनो बिचित्र बितान ॥ सोरठा ॥ धनुटंकार कराल चलनि भिरनिसों शरणकी। अतिशय शब्द कराल मढ़तभयो तेहि क्षणतहां ॥ अति बरषनि शरजूह निरखि भीम अरु कर्णकी। सुमनस सुमन समूह बरखे तिन्हैं प्रशंसि तहँ ॥ चौपाई ॥ इमि माचे भीषम गंग्रामा। कर्ण कियोतहँ अद्भुतकामा ॥

हनि क्षुरप्र शायक रणचारी। काट्योतासु धनुष अतिभारी॥ फिरिबधि सब अश्वन हनि शायक। छत्र केतु काट्यो भटनायक॥ मारे पांच बाण तेहिक्षण में। बिदित बिशोक सूत के तनमें॥ तजिअबाजि रथसों चलि पथपैं। गोनृप युधामन्यु के रथपै॥ तब अतिकोपि भीम अरिनासी। फेकत भयो शक्ति तड़िातासी॥ तेहि आवत लखि कर्णअमाना। काटत भयो मारि दशबाना॥ तब भटभीम चर्म असि लीन्हों। कर्ण कटि चर्महि युग कीन्हों॥ तब असिफेकि मारिसो सरुषा। कट्यो सूतजको धनु परुषा॥ तुरितहि करषि और धनु गहिकै। अब मतिभागु खरो रहुकहिकै॥ अगणित शायक अतिअनियारे। भीमसेन की तनमधि मारे॥ तब करि भीम क्रोधकी गुरुता। प्रगटकरी विक्रम की पुरुता। हय गज रथ अर्जुन के काटे। परेरहे भीषमता ठाटे॥ तहँ चलि रथ हय गज लैलै कै। डारत भयो सुमन निरभय कै॥ सोलखि कर्ण धनुर्द्धर आरज। करत भयो तहँ अद्भुत कारज॥ मारि मारि अगणित शर मगमें। काटे सब करि बिक्रम अगमें॥ दोहा॥ तहां भीम अति क्रोध गहि करि मुष्टिका प्रहार। बधन चाहि तेहि नहिंबध्यो करिकै पूर्वबिचार॥ कर्णहि बधिबे की किये रहे प्रतिज्ञा पार्थ। तेहि पारथके बचनकहँ करिबो गुन्योयथार्थ॥ सोरठा॥ अगणित तीक्षण बान हन्यो भीमकहँ कर्णतहँ। ह्वै मुर्छित बलवान गिरोभूमिपै भीमतब॥ चौपाई॥ लखि भीमहिमुर्छित रणधीर। कूदि सुरथसों कर्ण सुबीर॥ मोहित परो निरायुध यत्र। होभट भीम जातभो तत्र॥ कुन्ती मांगेही बरपूर्ब। बधेहु न मम पुत्रन भटगूर्ब॥ सो तहँ समुझि पालनिजधर्म। बध्यो न ताहिधर्मबिद पर्म॥ तासु उदरमें। धनुष लगाय। खोदत भोअतिगर्ब बढ़ाय॥ लागत धनुष भीमअनखाय। कुपित सिंहसम उठो रिसाय॥ बामपाणि सों धनुगहि तासु। मुष्टिक हन्यो शीशमें आसु॥ हँसिकै कर्णकह्यौ तेहिकाल। नहिंतू युद्ध योगहे बाल॥ भयो वृकोदर खाय मोटाय। नहिंकर्त्ता रणमें व्यवसाय॥ सादरबसौ बिपिन में जाय। मुनिव्रत गहौ कन्द फलखाय॥ नहिंममसम सुभटन के संग। हौ करि बलायक रणरंग। सूत सुवनके सुनिये बैन। हँसिकै कह्योभीम बलऐन॥ कैयकबार आजुलहि हारि। निजलकहत इमितुरित बिसारि॥ जोआपुहि जानत बलवान। तोकरु मल्ल युद्धनहिं

आन ॥ यथाकीच कहिडार्यों मारि। तेहिबिधि बधिहौं तोहिं पछारि॥ यहसुमि बूझि भीमको भाव। रथचढ़ि तुरितकर्ण गहिचाव॥ रथहँकवाइ बेगसों जाय। भिरो धनंजयसो शरछाय॥ भीमसेन तबगुणि मनमाहँ। चढ़ो सात्विकीके रथपाहँ॥ सात्विकि भीम सुबीरअनूप। युधामन्यु उतमौजभूप॥ शर बरषत मरदत ममसैन। गये पार्थके पास सचैन॥ दोहा॥ कर्ण आरजुन भिरितहां कीन्हों अद्भुत युद्ध। दोऊ धनुर्द्धर बिदित भट दोऊक्षात्र बिशुद्ध॥ गरजि गरजि दुहुं दिशन सों दोऊ भयेकराल। दुहुं दिशि दीन्हें छायशर दोऊ बीर बिशाल॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणिचतुर्थयामेभीमप्रवेशोनामअष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

दोहा॥ कर्ण भीमको युद्धसुनि यहिबिधि चौथेयाम। संजयसों बूझत भयो वृद्ध नृपति ह्वै क्षाम॥ क्षणक्षण छीजत सैनमम होतसदा मम हारि। दैव चहतजो सोकरत पुरुष पराक्रम टारि॥ सोरठा॥ तदनन्तर भो जौन सोअब संजय शीघ्रकहु। सुनि संजय मतिभौन कहत भयो इमि भूपसों॥ चौपाई॥ अर्जुनकर्ण बिदित धनुधारी। कीन्हों तहां युद्ध अतिभारी॥ बहुबिधि सेत शरनके ठाटे। क्षणमेंबाण असंख्यन काटे॥ बढ़ि बढ़ि अगणित बाण प्रचारे। अगणित बाण परस्पर मारे॥ बज्र समान बाण मनभायो। पारथ कर्णहिं टेरि चलायो॥ ताहिचलतलखि अश्वत्थामा। काटिदियो हनिशर अभिरामा॥ पार्थहि प्रबल जानि तेहि क्षणमें। टेरिगो अनत कर्णदुरि मनमें॥ चौंसठि शायक अति अनियारे। अश्वत्थामहिं पार्थ प्रहारे॥ तब द्विजको सुत पीड़ित ह्वैकै। गजदमधि दुरिगो भय ग्वैकै॥ महाराज पारथ तेहि पलमें। प्रलयकाल रोप्यो ममदलमें॥ हयगज भटन बधत रणधीरा। चलो कर्णपहँ सात्विकि बीरा॥ सोलखि निजसेना सों कढ़िकै॥ भिरो अलम्बुष भूपति बढ़िकै॥ ते युगबीर बिदित धनुधारी। अतिरण कियो प्रचारि प्रचारी॥ मारि वज्रसम शरअति भारी। बध्योताहि सात्विकि रथचारी॥ बधि अलम्बुषहि मारत सेना। चलो पार्थ पहँ अरिदल जेना॥ सो लखि

भूरिश्रवा रणरंगी। मिरो सात्विकीसों सहसंगी॥ तेयुगबीर कठिन रण करकश। किये अवान अनेकन तरकश॥ दोहा॥ दोऊ मारे दुहुंन कहँ क्षणमहँ अगणित बान। दोऊ काटे दुहुंनके अगणित शर सबिधान॥ फेरि फेरिरथ सकलदिशि टेरि टेरि सहगर्व। हेरि हेरि बर्षे बिशिष घेरि घेरि दिशि सर्व॥ काटि काटि गहि गहि धनुष कहि कहि जियत न जात। दोऊ दोउनपै किये अबिरल शायक पात॥ चौपाई॥ दोऊ बधि दोउनके घोरे। बधि सूतन रथके अँग तोरे॥ दोऊ दुहुंन बिधनु करि करिकै। तीक्षण खड्ग चर्मधरि धरिकै॥ करत पैतरेबढ़ि भिरि भिरिकै। लरतभये थिरिथिरि फिरि फिरिकै॥ दोऊ खड्ग युद्धबिधि सीखे। सब सुभटनके पहिले लीखे॥ अद्भुत खड्ग युद्धतहँ कीन्हें। जो लखि सब भट बिस्मय लीन्हें॥ असि अरुचर्म दुहुंनके क्षणमें। भंगभये तेहिबिधि के रणमें॥ तबते उभयबीर बलभारे। भिरि भिरि मल्लयुद्ध बिस्तारे॥ कर अरु चरण शीशके घातन। भेतहँ शब्द तौन कहि जातन॥ मत्त द्विरदसम योधा दोऊ। कीन्हो युद्धलखो सबकोऊ॥ जूटैं छूटैं जुटैंफिरि छूटैं। दैदै ताल सिंहसम टूटैं॥ झपटि लपटि गिरि उलटि पलटिकै। उठि उठि लरैं न टरु रटि रटिकै॥ अतिशय समित सात्विकी ताही। भयो पछारत नृप जय चाही॥ बलसों सिनि पुङ्गवहि पछारी। उरमें हन्यो लात अबिचारी॥ बाम पाणिसों गहिकच तासू। दक्षिण करमें गहि असि आसू॥ चह्यो सात्विकीको शिरकाटन। सोलखि कहोकृष्ण जय आटन॥ पारथ सुबश सात्विकिहि करिकै। भूरिश्रवा बधत कच धरिकै॥ दोहा॥ फेरि ग्रीव इतउत घुमरि अबलों बाचोजात। बेगितासु रक्षण करहु करि तीक्षणशर पात॥ सोसुनि पारथ बिनुलखे तजिक्षुरप्र शरचण्ड। काटो भूरिश्रवाको दक्षिणभुजा उदण्ड॥ रोला॥ कटे दक्षिण पाणि भूरिश्रवा कुरुकुल राय। सात्विकिहि तजि पार्थसों इमिकहतभो अनखाय॥ अरे पांडव बिदित भटह्वै किये कुत्सित कर्म। करब ऐसो क्षत्रियन कहँसदा अनुचित धर्म॥ कबहुं ऐसोकर्म कुत्सित कियोनहिं कुरुबंश। रहो ऐसोकर्म कुत्सित वृष्णि कुलके अंश॥ करै किमि नहिं कर्म कुत्सित गोपमंत्री जासु। करत सँग असतीनको निजुबुद्धि बिगरति तासु॥ लरतहे हम औरसों तुमकियो ममभुज भंग। कियोतुम यहकर्म

लहि बसुदेव सुतको संग ॥ बचन यहसुनि कह्यो पारथ सुनो कुरुकुल चन्द । सात्विकी ममशिष्य अतिप्रिय सखा दायक नन्द ॥ करत दुस्तर कर्म ममहित निकटपहुंचो आय । दीनगति लहितासु मरिबो कहोकिमि सहिजाय ॥ एक भटसों लरत अगणित बीरधीर अमान । कहोइतअब रह्यो केहिथल धर्मयुद्ध बिधान ॥ युद्धमें ममसबल दक्षिणबाहु सात्विकि बीर । तासु रक्षण कियोहम सो अनयनहिं ममतीर ॥ गुणेतुम जोभई सो बिधिब्यर्थ तुमतेहि हेत । रुचतसो हौं कहत रिसबश भये अपगत चेत ॥ पार्थके ये बचन सुनिकै भूपकरि अनुमान । बाम करसों भूमिपै तहँडासि अबिरल बान ॥ बैठितापै योग बिधिसों ब्रह्ममो मनलाय । मूंदि नयन न ग्रीव नतकरि रह्यो अचल सचाय ॥ देखिसो सब नृपति इतके महादुखसों पूरि । लगे निन्दय पार्थकहँ कहिकियो अनुचितभूरि॥ कहो पारथ कहततुम सब भूलि अपनो कर्म । बधोतुम अभिमन्यु कहँतब कियेकौन सधर्म ॥ भाषिइमि करिनृपन लज्जित कृष्ण पार्थ सचैन । भूप भूरिश्रवासों भेकहत ऐसेबैन ॥ धर्मके अरु भीमके समभूप तुमप्रिय मोहि । जाहु तनतजि स्वर्गकहँ पदपरम उत्तम जोहि ॥ दोहा ॥ इतने में उठि क्रोधबश सात्विकि गहि तरवारि । बधन चलोतेहि भूपकहँ संशय हियसों टारि ॥ तब उतमौजा भीमअरु युधामन्यु अरु पार्थ ॥ अरु नृप इतके ताहिभे बरजत गुणि अयथार्थ ॥ सुन्यो न काहू को बचन भयो क्रोधबश बीर । काट्यो भूरिश्रवाको शिर सात्विकि रणधीर ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण इतके सर्ब सुभटताहि निन्दत भये। सुमन यक्ष गन्धर्ब भये प्रशंसत भूपतिहि ॥ चौपाई ॥ बधितेहि नृपहि सकलदिशि देखी । कहत भयो सात्विकि अतितेखी ॥ मतिबधु मतिबधु मतिबधु याही । कहत भये जोतुमसब चाही ॥ धर्मशील तुमनहिं यहलीन्हें । बधत बालकहि धर्म न चीन्हें ॥ अबतुम सब निजहानि निहारी ॥ बरजत यथा धर्मपथ चारी ॥ हमकीन्हें हैं यहप्रण भाई । ममतन हनिहि चरण जो आई ॥ बधब ताहिहम संशय टारी । होइजऊ वहमुनि ब्रतधारी ॥ इन मार्‌यो पद ममउर माहीं । याहिबधे मोहिंपातक नाहीं ॥ जेहिबिधि जासुमरण जेहि जनसों । देत बिरचि बिधिजेहि सुयतनसों ॥ होत अवशिसो यह गुणिलेई । अबमति हमहिं दोषकछु देई ॥ यहसुनि भयेमौनसब योधा।

फिरि बढ़िबढ़िकीन्होंअवरोधा॥माचोघोरयुद्धतेहिपलमें। कटेअसंख्यनभट ममदलमें॥ यहसुनि वृद्धभूप अनुमानी। कहत भये सुनुसंजय ज्ञानी॥ द्रोण कर्ण आदिक भट जनसों। गो न जीति जो ममसुत गणसों॥ सो किमिह्वै बिक्रमसों रीतो। गो इमि भूरिश्रवासों जीतो॥ यहसुनि संजय नृपसों भाषो। सुनो जौन सुनिबो अभिलाषो॥ यामें कछू पूर्बको कारण। है कहियतु सो संशयवारण॥ दोहा॥ रच्यो स्वयम्बर देवकी को देवक क्षितिपाल। जायतहां तेहि सभामधि रथचढ़ि सिनि तेहिकाल॥ करि साहस हरि देवकिहि निजरथपै बैठाय। हेत भूप बसुदेवके लै तेहि चले सचाय॥ सोरठा॥ सोमदत्त ह्वै चण्ड तब ताकहँ आड़तभयो। दोऊ भट उद्दण्ड बाहु युद्ध कीन्हों तहां॥ चौपाई॥ दोय पहर करि युद्ध विशाल। ताहि पछार्‌यो सिनि क्षितिपाल॥ चरण बज्रसम उरमधि मारि। गह्यो केश करगहि तरवारि॥ लखत अनेक नृपनके भूप। कियो नबोधकरि कृपाअनूप॥ तेहि अमरष बश आनि गलानि। सोमदत्त भूपति अनुमानि॥ शङ्कर को कीन्हों अवराध। ह्वै प्रसन्न शिव सत्य अगाध॥ कह्यो मांगु भूपति बरदान। तब इमि कह्यो भूप मतिमान॥ मोहिं देहु सुत बलबुधि भौन। सिनिके सुतहि पछारै जौन॥ लखत नृपनके लहि अवकासु। मारै चरण हियेमें तासु॥ यह सुनि कहि तथास्तु त्रिपुरारि। भे अदृश्य दायक फलचारि॥ तेहि बरके प्रभाव यहि याम। सोमदत्तको सुत अभिराम॥ जीत्यो ताहि सुनो क्षितिरौन। नहिं तेहि जीतन लायक कौन॥ यहसुनि सो संशय बिलगाय। बूझतभयो वृद्ध क्षितिराय॥ फिरि जिमि भयो युद्ध सो सर्ब। पृथक् पृथक् कहु सुमति अखर्ब॥ भूपतिसों सुनिकै येबैन। कहतभयो संजय मतिऐन॥ भूरिश्रवा को नाश निहारि। बीर धनंजय धनुटंकारि॥ बर्षतशर मर्दत ममसैन। चलो जयद्रथ पहँ जगजैन॥ दोहा॥ बधि अगणित हय गज तुरँग सुभटनको समुदाय। पारथ सरिता रुधिरकी दई तहां उमँगाय॥ इमि निजदल मर्दत निरखि तोसुत भूभरतार। कर्ण शल्य कृप द्विजतनय अरु वृषसेन उदार॥ सोरठा॥ बर्षत बिशिष सगर्ब भिरतभये सब पार्थसों। घोरयुद्ध तेहि पर्ब होतभयो तेहिक्षण तहां॥ चौपाई॥ कर्णादिक करि क्रोध अपारा। तजतभये अस्त्रनकी धारा॥ काटि सकल आयुध

तेहि क्षणमें। पार्थ हने शर सबके तनमें ॥ कृप दशबाण पार्थकहँ हनिकै। कृष्णहि हन्यो सातशर गनिकै ॥ करि अतिबेग पार्थ भटनायक। सबके काटि असंख्यन शायक ॥ नव नवशर सबके तनमारे। अगणित भटन मारि महिडारे ॥ शरपचीश अतिशय अभिरामा। हन्यो पार्थ कहँ अश्वत्थामा ॥ सात बाण वृषसेन प्रहारे। शल्य तीनिशर मारि प्रचारे ॥ घेरि सकलदिशि सहित समाजा। हन्यो बीसशर तोसुतराजा ॥ सिगरे सुभट रोषसों पूरे। धनु धुनिधुनि बरषे शररूरे ॥ अगणित दिव्य अस्त्र सबडारे। दिव्य अस्त्रसों पार्थ निवारे ॥ व्यर्थ करत आयुध भटगनके। रुधिर बहावत सबके तनके ॥ सबकहँ व्यथित करत अरु डारत। चलो सिंधुपतिपै भयभारत ॥ सो लखि कर्ण शरासन करषत। भिरो पार्थसों शायक बरषत ॥ दशशर हन्यो पार्थ तेहि देखी। हन्यो तीनि शर सात्विकि तेखी ॥ मार्यो भीम तीनिशर चोखे। पार्थहने शरसात अनोखे ॥ साठि साठि शायक अनियारे। कर्ण तिन्हें हनि धनुटंकारे ॥ दोहा ॥ अति बिक्रमकरि कर्णतहँ तीनि भटनसों तत्र। लरतभयो घनसम गरजि बर्षि बारिसम पत्र ॥ कैयकशत शायक हन्यो पार्थ कर्णके गात। भरो रुधिरसों कर्ण तहँ अनुपम भयो बिभात ॥ बोरठा ॥ कर्ण पचास सुबान अर्जुनके तन हनतभो। पारथबीर अमान काटिदियो धनुकर्णको ॥ चौपाई ॥ काटि कर्णको धनु भटपारथ। हनतभयो नवशर गुणि स्वारथ ॥ तौलगि कर्ण और धनु गहिकै। बरषो बिंशिष खरोरहु कहिकै ॥ तिन कहँ पार्थ बर्षि बहुबाना। कियो बायुबश सलभ समाना ॥ सूतजके बध को प्रण धरिकै। पार्थ तज्यो शर योजित करिकै ॥ हनि क्षुरप्रशर अश्वत्थामा। काटिदयो सोशर अभिरामा ॥ सूतज अतिकर लाघव लीन्हे। ताहि शरनसों गोपित कीन्हे ॥ अर्जुन धनुधरके धुरनादित। कर्णहिं कियो शरन सों छादित ॥ दोऊ रचि शरपजर ओपित। कीन्हे दुहुंन शरनसों गोपित ॥ दोऊ महाक्रोधसों नहि नहि। अब मतिभागु खरोरहु कहि कहि ॥ अगणित दिव्यअस्त्र परिहरि हरि। कियो युद्ध अति बिक्रम करि करि ॥ दोऊ दिव्यअस्त्र बहुडारे। दिव्य दिव्य अस्त्रनसों बारे ॥ मैं अर्जुन तू बचत न मोसों। मैंहौं कर्ण लेत जय तोसों ॥ इमि कहि कहि दोऊ धनुधारी। कीन्हो युद्ध भयानक भारी ॥ सोलखि सुर

गण दुहुंन सराहे। कहे न ऐसे धनुधर चाहे ॥ इबिधि कर्णकहँ लरत निरेखी। कह्यो भटनसों नृप अवरेखी ॥ बढ़िबढ़ि तुमसब युद्धबिचक्षण। सादर करहु कर्णको रक्षण ॥ दोहा ॥ आजु बधे बिनु अर्जुनहिं फिरहि न कर्ण सुबीर। यह हमसों है कहिगयो सूततनय रणधीर ॥ इतने में पारथ सुभट पांचबाण बर मारि। बधि तुरँगन अरु सारथिहि दीन्हों महिपै डारि ॥ इबिधि बिरथकरि कर्णकहँ हन्यो अनगिने बान। मोहित ह्वै नहिं करिसक्यो सूतज युद्धबिधान ॥ सोरठा ॥ सोलखि द्विजसुत बीर लै कर्णहि निज सुरथपै। बर्षत अबिरल तीर भिरो पार्थ रणधीर सों ॥ चौपाई ॥ कृप वृषसेन शल्य तेहिक्षणमें। बहुशर हने पार्थके तनमें ॥ तिन्हैं पार्थ अगणित शरमारे। ते बहुबाण पार्थपहँ डारे ॥ बढ़ि बढ़ि इतके सुभट समूहा। घेरि अर्जुनहिकरि अतिहूहा ॥ अस्तहोब सूरयको चाहत। गर्बित मोदसिन्धु अवगाहत ॥ शक्ति शरनकी बर्षा कीन्हे। सरथ ताहि गोपित करिदीन्हे ॥ तेहिक्षण पार्थसुभट ह्वै दारुण। प्रगटित कियो अस्त्रबर बारुण ॥ सबके शस्त्र ब्यर्थकरि तासों। पूरि सबहि भयभूरि महासों ॥ सबके गातकियो हनि बाना। बरझिझियाके कुम्भ समाना ॥ अगणित मरैं गिरैं बहु घायल। भगैं अनेक हयनकरि चायल॥ अगणित योधा धीरज धरिधरि। भिरैंजाय शरकी झरि करिकरि ॥ बन निवासको दुख गुणिमनमें। चलोसिन्धुपतिपै तेहिपलमें ॥ रथी गजी हयसादी रूरे। बढ़ि बढ़ि भिरैं रोषसों पूरे ॥ तोमर शक्ति शरण कीबर्षा। करैं गहे अतिशय उतकर्षा ॥ तिनमधि लसो पार्थ तहँकैसे। केशरि द्विरद यूथमधि जैसे ॥ दोहा ॥ बिबिधिभांतिके दिब्य शर तजि तजि पारथबीर। लसो दवानल सम दहत मम दल बन गम्भीर ॥ हय गज भट रथध्वज धनुष रुण्डमुण्ड पग पानि। काटि असंख्यन देतभो रुधिर धार मधि सानि ॥ सोरठा ॥ मारतगड समचगड भयोपार्थ तेहि क्षण तहां। दल घन घेरि घमगड बेधत नृप गिरिपै चलो ॥ चौपाई ॥ कृप वृषसेन कर्ण धनुधारी। अरु अश्वत्थामा रणचारी ॥ दुर्योधन नृप सहित समाजा। मातुल मद्रदेशको राजा ॥ सहि सहि पारथ के शर रूरे। आड़त भये क्रोध सों पूरे ॥ रहि तिनके आड़े तेहि क्षनमें। सिन्धु अधीश नृपति गुणि मनमें ॥ आठबाण घोरन कहँ हनिकै। कृष्णहिहन्योतीनि शरगनिकै ॥ सो लखि

पार्थ मारि शर आसू। दीन्हे काटि केतु रथ तासू॥ बधि सूतहि यमलोक पठाये। अबिरल बाण भूप पहँ छाये॥ लखि षटरथी अनर पहिंचाने। कीन्हों अतिबिक्रम मनमाने॥ अबिरल सेतु शरणके ठाटे। अगणित बाण पार्थके काटे॥ सोलखि कृष्ण चन्द्र अनुमानी। पारथ सोंबोले हित बानी॥ येषटरथी जियत हैं जौलों। भूपहि बधन न पैहौ तौलों॥ थोरो रहो द्योस अब तातें। सो गुणि करौ लहौ जै तातें॥ रबिहि करत हम तमसों छादित। निशि गुणि ह्वै हैं शत्रु प्रमादित॥ तबलहि घात बधेहु तेहि भूपहि। निशि लखि गुणेहु न सुपन अनूपहि॥ इमि कहि कृष्ण योग बिधि कीन्हें। तममधि रबि गोपित करि दीन्हें॥ सो लखिकै इत के सबयोधा। ह्वै मोदित त्यागे अवरोधा॥ दोहा॥ रबि अथयो अब पार्थ निजु जरिहैं चिता बनाय। यह गुणि सब भट सुचितह्वै निरखन लगे सचाय॥ नृपति जयद्रथ ब्यूह के बाहेर कढ़िभय त्यागि। लखि संध्या पार्थहि लखन लगो मोद सों पागि॥ सोरठा॥ सो लखि कृष्ण सचैन पारथसों फिरि कहत भो। अब न चूकु जग जैन शीघ्र मारु यहि भूप तिहि॥ जयकरी॥ यहि नृपके बधिबे को डौर। सुनु हम सोंहे भट शिर मौर॥ याको भयो जन्म जेहिकाल। भो तेहि क्षण नभ शब्द रशाल॥ हे नृप वृद्धक्षेत्र तो पुत्र। ह्वैहै तो अन्वयके सुत्र॥ दाता यशी शूरमतिमान। अतिधनुधर ह्वैहै बलवान॥ पै याको कोऊ रणमाहँ। काटि शीश डारिहि महिपाहँ॥ वृद्धक्षेत्र सुनि यह नभबैन। पुत्र मरण गुणि भयो अचैन॥ तब तप बलसों धीरज आनि। कह्यो सुबन्धुनसों अनुमानि॥ यह मम सुत को शिर अभिराम। जो डारिहि महिपै जेहियाम॥ ताही ठौर कठिन शिर तासु। शतधा फटिहि मरहि सो आसु॥ ऐसो बचन भाषि वहभूप। लगो तपस्याकरन अनूप॥ अब स्यमन्त पंचक के पार। हैतप चरत भूमि भरतार॥ शीघ्रकाटि याको उतमंग। डारि देहु वाके उतसंग॥ तौ बचिहौ तुमहे मुदभौन। मरिहि डारि महिपै शिर तौन॥ यहसुनि दिव्यअस्त्र सन्धानि। मार्यो पार्थ तासु बध जानि॥ बज्रसदृश सो शरछबि ठाटि। शीश जयद्रथ नृप को काटि॥ तिमि लै चलो बाज अवदात। जिमि तरु सों पक्षिहि लैजात॥ दोहा॥ फिरिक्रम सों अगणित बिशिष तेहि सुशीशमें मारि। वृद्ध क्षेत्रके गोदमें

देत भयो सोडारि ॥ वृद्धक्षेत्र संध्या करत रहो ताहि क्षण शीश। गिरो गोद में तब झझकि उठत भयो अवनीश ॥ तासु गोद सों भूमिपै गिरो शीश तेहिहेत। फटो शीशनृप को मरो नृप तप तेजनिकेत ॥ बधि जयद्रथहि पार्थ लहि प्रण सागरको पार। शंख बजावत भो तदनु गरजो भीम उदार ॥ सो सुनि जान्यो धर्मनृप बध्यो सैन्य वहि पार्थ। बजवायो जय दुन्दुभी सिद्धि जानिकै स्वार्थ ॥ सोरठा ॥ आठक्षोहणी सैन तेहि दिनलों तहँ बधिगयो। तो मतिअवगुणऐन को यहफल प्रगटितभयो ॥ मत्तिखरा ॥ सुनिबध जयद्रथ नृपति को धृतराष्ट्रनृप अतिदुखमये। इमि कहे नृप बधिगयो जब ममसुभट कैसेतब भये ॥ सुनिकहे संजय मरो नृप तब द्रोणसुत कृप रिसभरे। भिरि पार्थसों करि हस्तलाघव घने शर पंजर करे ॥ तहँ पार्थरचि शरसेतु क्षणमेंकाटि तिनके शरघने। भो हनत सबके गातबहु नाराच अति तीक्षण बने ॥ शर बज्रसम अतिघोर कृपके हियेमधि मारत भयो। कृपगिरे रथपै मृतकसम तबसूत रथलै कढ़िगयो ॥ दोहा ॥ मृतक सदृश कृपकहँ निरखि पारथ आनि गलानि। क्षात्र धर्मकहँ धिक्कहो अति दुरयश अनुमानि ॥ अतिखेदित पार्थहि निरखि सूतजधनु टंकारि। रथ बढ़ाइकै चलतभो शरपंजर बिस्तारि ॥ लखि सात्विकि टेरतभयो इतैआउ कितजात। सुनि सात्विकिपहँ चलत भो कर्णबीर अवदात ॥ सोरठा ॥ यहसुनि वृद्धमहीप कह्यो बिरथ ह्वै सात्विकी। कहँ रथलह्यो समीप जापै चढ़ि फिरि लरतभो ॥ चौपाई ॥ यहसुनि संजय नृपसों भाखो। पहिले कृष्ण यतनकरि राखो ॥ जब सात्विकिहि बिरथलखि पाये। तब अमरष युतशंख बजाये ॥ दारुकसूत शब्दसो सुनिकै। कृष्णचन्द्रको शासन गुणिकै ॥ गरुड़ केतुरथ सादर ल्यायो। सोरथ लखि सात्विकि छबिछायो ॥ चढ़ोपाइ प्रभुको अनुशासन। लगो शरणसों ममदल नाशन ॥ नृपति जयद्रथके बधऊपर। भिरे कर्ण सात्विकि रण भूपर ॥ युधामन्यु उतमौजा राजा। हैंसात्विकि सँग रक्षण काजा ॥ सात्विकि कर्ण बिक्रमी चीन्हों। अद्भुत युद्धभूपतहँ कीन्हों ॥ अबिरल सेतु शरणके ठाटे। अगणित अस्त्र अस्त्रसों काटे ॥ अगणितशर गातनमें हनि हनि। अब मतिभागु खरोरहु भनि भनि ॥ सब दिशिचक्रसदृश फिरिफिरिकै। तजे दिव्यआयुध थिरिथिरिकै ॥ दिव्यअस्त्र

दोउनके दोऊ। दयेवारि निरखे सबकोऊ॥सिंह सिंहगजगज भिरि जैसे। लरैं लरेतहँ युगभट तैसे॥ तहँ दोऊ कहँ लरिबोदेखी। किये प्रशंसासुमन सुदेखी॥ तहँ सात्विकि बिक्रम बिस्तारे। अगणितबाण कर्णकहँ मारे॥ हनि क्षुरप्र शायक अतिचोखे। काटतभयो शरासन नोखे॥ दोहा॥ हति सूतहि घोरन बध्यो केतुकाटि हनिबान। बहुशायक कर्णहिं हन्यो सात्विकि बीरअमान॥ कर्णहिं बधिबेकी रह्योकिये प्रतिज्ञा पार्थ। सोगुणि कर्णहिं नहिं बध्यो सात्विकि गुणो यथार्थ॥ तेहिक्षण हाहाकार भो ममदलमें सो देखि। दुर्योधन के सुरथपै गयो कर्ण अवरेखि॥ सोरठा॥ तब दुःशासन आदि तोसुत सात्विकि सों अभिरि। सबदिशि घेरि प्रमादि बर्षतभो अबिरल बिशिष॥ चौपाई॥ लरि तिनसों अति रिसगहि मनमें। सात्विकि बिरथ बिधनुकरि क्षणमें॥ समुझि चकोदर को प्रण पूरे। बध्यो नहीं तजि दयो अधूरे॥ सुनि धृतराष्ट्र शोचसों नहिकै। फिरि बूझतभे धीरज गहिकै॥ कृष्णचन्द्रके वाही रथपै। रहि सात्विकि बिचरो रणपथपै॥ कै फिरि चढ़ो और रथ गहिकै। सो समुझाउ सूतसुत कहिकै॥ संजय कह्यो सुनो महित्राता। अति प्रवीण दारुक को भ्राता॥ सुरथ सकल आयुधसों मारो। सिंहकेतु युत सरस सवारो॥ परम बेगसों तहँ लैआयो। चढ़ि तापै सात्विकि भट गायो॥ अगणित हय गज भट बधि डार्‌यो। प्रलयकाल ममदलमधि पार्‌यो॥ तिमि सूतजको सून प्रवीना। आयो तहँलै सुरथ नवीना॥ चढ़ि तापै भटकर्ण बिचक्षण। करतभयो निजदलको रक्षण॥ भीमसेन अति अमरषलीन्हे। पारथसों सम्भाषण कीन्हे॥ कइकबार हम हनि शर चीन्हें। कर्णहिं बिरथ बिधनु करिदीन्हें॥ भावीबश जब सूतज हमकहँ। बिरथ कियो तब गर्वितह्वै तहँ॥ बहु दुर्बचन कहतभो जाते। दहत हृदय मम शोच महाते॥ जाते होय हियो मम शीतल। सोकरि यशसों भरहु महीतल॥ दोहा॥ यहसुनि भाष्यो कर्णसों पारथ बीर उदार। देखत सबके भीम तोहिं बिरथकियो बहुबार॥ भीम न अनुचित कछु कह्यो जबतू जीत्यो मूढ़। तब भीमहि बहु दुर्बचन भाषे गर्बारूढ़॥ सोरठा॥ तू अधर्मकर तार तोहिं न डर परलोक को। करि अधर्म उपचार बधवायो अभिमन्यु कहँ॥ बसुकला॥ बिनु रहे मोहि। तुव दाव जोहि॥ मम सुतहि पाय।

दीन्हों बधाय ॥ मैं कहत टेरि। तुव लखत घेरि ॥ बलबुद्धि भौन। तो तनय जौन ॥ तेहि बाणमारि। बधिहौं प्रचारि ॥ अति भयो घोर। सुनि प्रण कठोर ॥ लहि दशा पोच। इत बढ़ो शोच ॥ तब भयो अस्त। दिन कर प्रशस्त ॥ दोहा ॥ पारथसों केशव कहो इमि यहिदलमें आय। जिमि पाये तुम सुजय तिमि सकै औरको पाय ॥ सुनि पारथ प्रभुसों कह्यो तुव अनुकम्पा पाय। हम पायो इमि सुजय नहिं ममबल बुद्धि उपाय ॥ सोरठा ॥ सुनि केशव मुसकाय समुद हांकि रथ बेगसों। लखत मृतक समुदाय आये धर्ममहीप पहँ ॥ लखि धर्महि यदुराय कहो पाय तोभाग्य बल। परसेनामधि जाय पार्थ जयद्रथकहँ बध्यो ॥ तोमर ॥ सुनि कृष्णके ये बैन। नृपधर्म लहि अतिचैन ॥ तकि उतरि रथसों धाय। मिलि कृष्ण सों लपटाय ॥ भरि मोद जलसों नैन। इमि कहे हे मुदऐन ॥ सो होत बिस्वेबीस। जो चहत तुम जगदीश ॥ तुम रचत जग बहुरंग। तुमकरत पालन भंग ॥ सब अचर चर सबलोक। जे चरत श्रुति चख ओक ॥ तो बिशद माया सर्ब। इमि कहत सुमति अखर्ब ॥ महि सरित सागर शैल। शशि शूर नभदिशि गैल ॥ तेसकल तो प्रतिअंग। नित रहत हैं तो संग ॥ हैंजिते खिन्न अखिन्न। नहिं एक तुमसोंभिन्न ॥ नहिं बारि सों कछु और। जिमि लहरिसों तेहितौर ॥ जिमिकनक भूषण भेद। तिमि कहत सब श्रुतिवेद ॥ तिहिसमुझि योगीजौन। तकिरहत तुमकहँतौन ॥ मिलिजात तुममहँ क्षिप्र। यह कहत ज्ञानी बिप्र ॥ जिमि बिना बायु बिकार। नहिं लहरिको अधिकार ॥ जिमि नशे भूषण साखि। भिरि जातकनकै भाखि ॥ दोहा ॥ इमि अस्तुतिकरि कृष्णसों कह्यो युधिष्ठिर भूप। तुव अनुकम्पासों लह्यो पारथ सुजयअनूप ॥ जाहि जितावनहेतु इमि बसत संग तुमतात। सो जीतै सबलोक कहँ कहाकुरुणकी बात ॥ इमिप्रभुसों कहि पार्थसों मिलेपुलकसों पूरि। सात्विकिसों अरु भीम सों मिले मोदलहि भूरि ॥ सोरठा ॥ युधामन्यु क्षितिपाल सों मिलि उत मौजहि मिले। कहिकहि बचनरशाल दूरिकिये श्रम खेदसब ॥ चौपाई ॥ नृपति जयद्रथ को बधदेखी। नृप दुर्योधन अनरथ लेखी ॥ तजत चखनसों जलकी धारा। भरोशोच दुखगहे अपारा ॥ बिनादशनके अहि सम दीना। मरे जयद्रथके ह्वै क्षीना ॥ ऊबि उसांसलेत अति आतुर

गयो द्रोणके ढिग नृपचातुर ॥ तहां शोचसों हीरो दहिदहि । पार्थभीम के बिक्रम कहिकहि ॥ अरु सात्विकिको बिक्रमरूरो । कहतभयो अमरष सों पूरो ॥ तुमहिं जीति ये सब दृढ़घायक । बधत असंख्यन भट नर नायक ॥ षटयोजन ममदलमधि धसिकै । द्विरदयूथ मधि हरिसम लसिकै ॥ ब्यूह भेदि प्रणकियो यथारथ । बधि जयद्रथहि योधा पारथ॥ रक्षण करि न सके भटतेऊ । गणेरहे अतिरथमें जेऊ ॥ हम अतिआश कर्णकीराखत । रहेरहे सोसब थर भाषत ॥ कर्ण भीमकहँ अनुचित भाष्यो । तहँ हम मान कर्णको राष्यो ॥ जीत्यो ताहि सात्विकी क्षणमें । लखि गलानि उपजी मममनमें ॥ सहित बन्धुसुत सहित समाजा । मम हित बधिगे अगणितराजा ॥ पापकर्म कीन्हो हम जैसो । लहो पापको सागर तैसो ॥ दोहा ॥ परमभरोसो आपको मोकहँ सदाअचार्य । सोतुम अर्जुन परकृपा करि न करत ममकार्य ॥ भूपतिके ये बचन सुनि कह्यो द्रोण अनखाय । बाकशरणसों भूपकत घालत ममउरघाय ॥ शकुनि कर्णको मंत्रसुनि कीन्हे अनुचितकर्म द्रुपदसुता सों निजसभा मधि जो किये अधर्म ॥ सोरठा ॥ बिदुर कहे जे बैन नीति रीतिहित धर्ममय । तुम प्रमाद केऐन सुने न तेहि दीन्हें निदरि ॥ अब ताको फल जौन सो सब प्रगटित होतहै । शोच करतहौ कौन दैवचहत जो सोकरत ॥ गेला ॥ लरो एकइस दिवस जो भृगुराम सों प्रणधारि । लखत सब के पार्थ ताकहँ दियो महिपै डारि ॥ मारि द्विरदहि बधत भो भगदत्तकहँ जो बीर ॥ बधे अगणित नृपन कहं जे गणे भट रणधीर ॥ पार्थपै करि कृपा इत हम दयोदल मधिजान । रहे अगणित बीर मधि में गणे बीर अमान॥ कर्ण कृप वृषसेन ममसुत शल्य सुभट अनेक । आपुहे तहँ मर्दि सब दलगयो पारथ एक ॥ बधेकत नहिंताहि कतनहिं लये गहि सहचेत । बधन दीन्हें सिन्धुपतिकहँ कहोसो केहिहेत ॥ जानि बिक्रम पार्थकोनृप हमहिं लावतदोष । शोचिलीन्हों पूर्बनहिं अबकरत हौ अपसोस ॥ बिप्र कोनहिं कर्मलरि बो लरतको द्विजऔर । गह्योहम परधर्म ताको लहत फलयहि ठौर ॥ भूमिपति तोबाक शरसों बिदित हम यहिकाल । पैठि परदल मध्यबल मित करब रण विकराल ॥ आजुरातिहु युद्ध करिबो चहत हम हेभूप । किहेहु तुमनिज सैनरक्षण सबहुकरि जेहिरूप ॥ द्रोणकेसुनि

बचन भूपति कर्णके ढिगजाय। गरोगद गद करें ऐसेकहे शोचबढ़ाय॥ आजुतौ बसुदेव सुतकी पार्थ पाय सहाय। कियो अद्भुत कर्म जैसो तौन नहिं कहिजाय॥ द्रोण आदिक उद्भटन कहँ जीति रचिशरसेत। लखत सबके सिन्धुपतिकहँ बध्यो जययशहेत॥ लखे अगणित द्विरद हय भट द्विरद के समुदाय। बधेपारथ बीरके महिपरे लसत अचाय॥ पार्थ पै करिकृपादीन्हीराह द्रोणाचार्य्य। नतरुकिमि इतआइ पारथ करतऐसो काय्यं॥भूपकेये वचन सुनिकै कह्यो कर्ण बिचारि। द्रोणको मति दोष दीजै भूप हानि निहारि॥ तरुण पारथ कृष्ण सारथिदिब्यहय तूनीर। दिब्य धनुगाण्डीव किमि जयलहैनहिं वहबीर॥ दोहा॥ यथा पराक्रम लरत द्विज तो जयहेत बिचारि। अवशि होतिहोनी नृपति सकै न कोऊ टारि॥ करो युद्ध प्रारब्ध गुणि करि सबसंशय दूरि। यह सुनि नृपपर सैनपहँ चलो क्रोधसोंपूरि॥

अस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्री उद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचितेभषायांमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणिजयद्रथबधोनामनवमोऽध्यायः॥ ९॥

दोहा॥ द्रोणपर्ब चौथे दिवस लहि संध्या प्रणरोपि। सिन्धुपतिहि पारथबध्यो सोलखि अतिशयकोपि॥ दुर्योधन नृपकर्ण अरु सूतज सों बतिआय। सदल पाण्डुदलपहँ चलो बहुदुन्दुभि बजवाय॥ चौपाई॥ दुहूं ओरके योधारूरे। बढ़िबढ़ि महाक्रोध सोंपूरे कहिकहि नामप्रचारि प्रचारी। लागेकरन युद्धअति भारी॥ तोमर शक्तिभल्ल अनियारे। बाणपरस्पर पट्टिशमारे॥ लगेदुहूं दिशिसों शरडारन। मारुमारु धरुमारुपुकारन॥ दुर्योधन भूपति तेहि क्षणमें। धसि पाण्डव दलमें गुणि मनमें॥ अति बिक्रम कीन्हों हे राजा। वध्यो असंख्यन सैन समाजा॥ निशिमें घोरयुद्ध तहँमाच्यो। मानहु काल कोपकरि नाच्यो॥ तोसुत मरद्यो पर दलतैसे। मत्तद्विरद नलिनीबनजैसे॥ दुर्योधनसोंमर्दितह्वैकै। परदल भगो भीतिसों ग्वैकै॥ सोलखिकै भीमादिक योधा। बढ़िताको कीन्हों अवरोधा॥ भीमहि भूपबाण दशमार्यो। षटशर माद्रीसुतन प्रहार्यो॥ द्रुपद बिराटहि षटशर हनिकै। हन्यो शिखण्डहि शतशर गनिकै॥

धृष्टद्युम्न कहँ सत्तरि शायक। हन्यो क्रोधकरि कुरु कुल नायक॥ पांच पांच शायक अनियारे। सिगरे द्रोपदेय पहँ डारे॥ पांच बाण सात्वत कहँ दीन्हों। बेधि घटोत्कच कहँ मुदलीन्हों॥ धर्महि हन्यो सात शर चोखे। औरन बहुशर हन्यो अनोखे॥ दोहा॥ नृपति युधिष्ठिर कोपितब दीहधनुष टंकारि। दुर्योधन नृपसों भिरो मोढिग आउ प्रचारि॥ दोऊ भ्राता भिरितहां कीन्होंयुद्ध उदण्ड। भुजदण्डन करिचपल धरिमण्डल समको दण्ड॥ सोरठा॥ निजजय यशके हेत महित्राता भ्राताउभय। रचे घने शरसेत काटिदये अगणित बिशिष॥ चौपाई॥ दुर्योधन क्षितिपति धनुधारी। दशशर धर्महि हनेप्रचारी॥ काटिभूपके धनुमजबूतहि। हन्यो प्रचारि तीनिशर सूतहि॥ चारिबाण तुरगणके तनमें। हनिध्वज काटि दयो तेहिक्षणमें॥ धर्मभूप अति रिसिसों नहिकै। तुरतहि और शरासन गहिकै॥ अब थिररहु इमिकहि अति तुरमें। मार्‌यो दुर्योधन के उरमें॥ लगेबाण अतिदुखसों ग्वैकै। परो भूमिपति मुर्छित ह्वैकै॥ हाहा मरो भूप दुर्योधन। कहिकहि भटकीन्हों अवरोधन॥ दुर्योधन कहँ मुर्छित देखी। द्रोण महाअनरथ अवरेखी॥ शोणितकी सरिता अति बलसों। प्रगट कियो पाण्डवके दलसों॥ चेतिभूप धनुगहि उठिहेर्‌यो। अबमति भागु खरोरहु टेर्‌यो॥ इतउतके योधा रणचारी। त्यागिशङ्क निजमरण बिचारी॥ भिरि भिरि जययशको प्रण लीन्हें। अतिशय घोरयुद्ध तहँ कीन्हें॥ मुद्गर गदा शक्ति असिबाना। भल्ल परस्वध आयुधनाना॥ नभ समपूरि दये सबथलमें। माच्यो घोरशब्द दुहुंदलमें॥ भो अति तुमुल युद्धतेहि निशिमें। मरे असंख्यन भटदुहुं दिशिमें॥ मार्‌यो मारुमारुधुनि छाई। बहीरुधिर कीनदी सोहाई॥ दोहा॥ तारागण सहलसतभो यथा गगन अभिराम। तिमिभूषण मणि शरण सों लसीभूमि तेहियाम॥ तेहिक्षण परदल मथिलसो द्रोणाचारय बीर। जैसे नीरस तरुण मथि बिरचत ज्वलन अधीर॥ हयगज रथपैदर सुभट जे भे संमुख तासु॥ ते सब बेधित गाततजि गये कालपुरआसु॥ सोरठा॥ बध्योद्रोण तेहिकाल कैकयनके सुवनबहु। धृष्टद्युम्नको बाल बध्योमारि शर बज्रसम॥ चौपाई॥ इमिदल मर्दत द्रोणहि देखी। भिरतभयो शिवभूपति तेखी॥ शिविहि द्रोणदश शायक मारे। द्रोणहि शिविशर तीसप्रहारे॥ मारिबज्र समशर

मजबूतहि।नृपभो बधत द्रोणके सूतहि॥तबहिद्रोण करलाघव अतिकै। नृप के सूत तुरँग सबहतिकै ॥ अर्द्धचन्द्र सम शरगहि डाट्यो ॥ मारि शीश शिविनृप को काट्यो ॥ तौलगि सूतसु और अकादर। चढ़ो द्रोणके रथपर सादर ॥ इमि जेगे द्विज के समुखमें। तेमनुपरे कालके मुखमें ॥ नृपकलिंग पतिको सुत योधा। भीमसेन कहँलखि अतिक्रोधा ॥ शायक पांच भीमकहँ हनिकै। मारेफेरि सातशर गनिकै ॥ पितुको मरण समुझि अतिरोखो।सूतहि हन्यो तीनिशरचोखो॥ रथसों कूदिभीम तब गरजो। रुको न भूपतनय को बरजो ॥ मारतभयो बज्रसम मूका। मरो भूपसुत लखि ह्वैमूका ॥ तबध्रुव बीर कर्णको भाई। भिरो भीमसों अति अनखाई ॥ भीमसेन तेहि देखि दपटिकै। तासु सुरथपै जाइ झपटिकै ॥ मूकामारि बधतभो ताही। भगे निकटके भटतेहि चाही ॥ तब जयरात भूपके रथपै। गयोसिंहसम लसिकै पथपै ॥ दोहा ॥ गरजि मारि करतल दुसह बधतभयो फिरिताहि। कर्ण कोपि तबभीमपहँ शक्तिचलायो चाहि॥ तुरित भीम सो शक्तिगहि तज्यो कर्णपै फेरि। बाणमारि तेहि बीचही काट्यो सोबल हेरि ॥ ऐसे दुस्तर कर्मकरि पाण्डव भीम अमान। बहुरि जाय निज सुरथ पै बरषन लागो बान ॥ सोरठा ॥ सो लखि कै बलधाम तोसुत दुर्मद नामतो। तजत शरणके दाम भिरो भीम सों गरजि कै ॥ घनाक्षरी ॥ करि पाणि लाघव रथ बढ़ाय। सो भीम पै शर दयो छाय ॥ हँसि भीम ताकेहयन मारि। अरु सारथिहिबधिदयो डारि ॥ तोतनय तब निजसुरथ त्यागि। दुस्कर्म के ढिग गयो भागि ॥ युगबन्धुते ह्वै एकठौर। बहु बाण बरषतभे सडौर ॥ तब कूदि रथते भीमधाय। दुस्कर्म के रथ पाहँजाय ॥ करि पादतल सों रथहि चूर्ण। हनि मूक तिनकहँ बध्यो तूर्ण॥ तेहि काल हाहाधुनि महान। ममओरभो अनरथ बिधान ॥ गहिभीति भागे भटसमस्त। कर्णादिकी द्युतिभई अस्त ॥ दोहा ॥ नृपति युधिष्ठिर आदिउत सिगरेभट समुदाय। कियो प्रशंसाभीमकी महामोदसोंछाय॥ सोमदत्त भूपाल तहँ लहि सात्विकिहि समीप। पुत्र बधनके क्रोधबश कहतभयो कुलदीप ॥ सोरठा ॥ रेसठ सात्विकि मूढ़ तजि सुधर्म क्षत्रियन को। तस्कर कर्म अगूढ़ किये गर्बगहिनीचतू ॥ चौपाई ॥ बिरथ बिधनुबिनु भुज रण तजिकै। नतकरि ग्रीव योगविधि सजिकै ॥ बैठिरहो ममसुत

तेहि नाहक। बध्यो मूढ़तू अबको गाहक॥ तातेतोहिं मारि यहिनिशिमें। करिहौं प्रगट कीर्ति सबदिशिमें॥ कृष्ण पार्थकेबिना बचाये। जौनबधों बिनु बचिके आये॥ तौमैं परौं कुरौरो माहीं। पार्थ बचावै तोबश नाहीं॥ यह सुनिकै सात्विकि रणचारी। सोमदत्त सों कह्यो प्रचारी॥ नहिं कौरव दलमें असकोई। मोहिं लगैडर जाकहँ जोई॥ शपथ कृष्ण के पदकी करिकै। सबहि सुनाइ कहत प्रणधरिकै॥ जौ न भागिजैहै रण तजिकै। तौ बधिहौंमैंतोहिं गरजिकै॥ उभय बीरतेतहँइमि कहिकहि। बर्षण लगेबाण रिस गहि गहि॥ दुर्योधन भूपतितेहि क्षणमें। सहसन रथिन सहितगुणि मनमें॥ घेरि सोमदतहि ह्वै ठाढ़ो। रक्षतभयो यतनकरि गाढ़ो॥ लै अगणित हयसादी योधा। कीन्हों शकुनिबीरअवरोधा॥ सोलखि धृष्टद्युम्न अनखाई। तिनसों भिरोसैनसह जाई। तहां उभय दिशिके भट गणसों। माचो घोरयुद्ध अतिप्रणसों॥ मथत सिन्धु प्रगटीधुनि जैसी। तेहिथर मढ़त भईधुनि तैसी॥ दोहा॥ सोमदत्त नृप हनतभो सात्विकिकहँ नबबान। भूपहि नवशर हनतनभो सात्विकिबीर अमान॥ तिनसों बंधितह्वै नृपति रथपै चलो अचेत। रथ चलाइ तब दूरिगो सूत सुबुद्धिनिकेत॥ सोरठा॥ भूपहि मुर्छित देखि द्रोण सात्विकी पहँ चलो। लखि पाण्डव अवरेखि बढ़ि सरोष आड़त भये॥ चौपाई॥ सुनो भूमिनायक तेहि पलमें। द्रोणाचार्य्य पाण्डवी दलमें॥ मण्डल सदृश शरासन करिकै। अनरथ करतभयो प्रणधरिकै॥ जेभट भयेतासु चखचारी। तिन्हेंकिये यमलोक बिहारी॥ अति तीक्ष्णशर धर्महिं हनिकै। हन्यो सात्विकिहि दशशर गनिकै॥ भीमसेन कहँनवशर मारे। धृष्टद्युम्नकहँ बीस प्रहारे॥ अति तीक्ष्णशर धर्महिं गरज्यो। सहदेवहि बसुशरहनि तरज्यो॥ द्रुपदहि दशशर हनिदृढ़ घायक। हन्योशिखण्डी कहँ शत शायक॥ सिगरे द्रोपदेयके तनमें मार्‌यो पांचपांचशर क्षणमें॥ उतमौजहिहनि षटशर नोखे। हन्यो बिराटहि बसुशर चोखे॥ सबके हनेबाण बहुकाटत। सबपहँ बाण जालरचि डाटत॥ अगणित हयगज रथ बधि डार्‌यो। शत्रसेनमें प्रलय पसार्‌यो॥ मर्दित ह्वैभट पांडव दलके। भगे गणेजेऊ बर बलके॥ अर्जुन लखि बिचलित निज सेना। चलो द्रोणकी दिशिजग जेना॥ द्रोण पार्थकहँ निजदिशि आवत। लखि

बढ़िचलो बर्षिशर छावत ॥ पार्थहि जात द्रोणपहँ देखी । पलटे उतके भट अवरेखी ॥ निरखि द्रोणगहि अति उतकर्षा। तिनपै कियो शरणकी बर्षा ॥ दोहा ॥ जेजे भटभे द्रोणके सम्मुख तिनके गात। भिन्न भिन्नहवै प्राणबिनु महिपै भय बिभात ॥ सहसन शर अरिसैनमधि डारत प्रति सन्धान । बधत असंख्यन भटभयो बिरचत द्रोण अमान ॥ सोरठा ॥ कोपित काल कराल गुणिद्रोणहिं उतके सुभट। बहुरि भगे तेहिकाल तजि साहस संगिहि बिकल ॥ बसुकला ॥ सोगति निहारि । पारथबिचारि ॥ भो कहत येव। हैं बासुदेव ॥ जहँद्रोण बिप्र। तहँचलो क्षिप्र ॥ सुनि कृष्ण चन्द्र। तुरगन अमन्द ॥ करिगये तत्र। होद्रोणयत्र ॥ लखि भीमसेन। अरि बिहँग सेन ॥ निजसूत जौन । बलबुद्धि भौन ॥ तासों सुधीर। इमि कहे बीर ॥ दोहा ॥ जात धनंजय द्रोणपहँ चलोसुरथलैतत्र । सुनिसो आयो बेगसों रहो किरीटी यत्र। अर्जुन भीमहिं द्रोणसों भिरत देखि गहिगर्ब । लपटि फेरिआयेउतै उतके योधा सर्ब ॥ सोरठा ॥ अर्जुन दक्षिण ओर उत्तर दिशिरहि भीमभट । सदल जूटि तेहिठौर सदलद्रोण सों लरत भे ॥ चोपाई ॥ इतके सुभट बेगसों टूटे । जाइ तहांतिन सबसों जूटे ॥ भोअति घोरयुद्धतहँ राजा । मरे असंख्यन सैन समाजा ॥ धृष्टद्युम्न तहँ सादर आयो । चलो तितै सात्विकि भटगायो ॥ द्रोण तनय सात्विकिहि निहारी । भूरिश्रवाको बधन बिचारी ॥ बर्षत शायक धनु टंकारी । चलो बेगसों ताहि प्रचारी ॥ लखि असुरेश घटोत्कच योधा । बढ़ि ताको कीन्हों अवरोधा ॥ सैन राक्षसी महा भयानक । बिबिधि भांतिके बाहन बानक ॥ गरजि गरजि अति रिससों पूरे । बर्षन लागे आयुध रूरे ॥ चारि हाथको निष्क प्रमाना । चारि निष्क को नल्व महाना ॥ तीस नल्वको रथबिस्तारो । रचो बिचित्र आयुधनभारो ॥ तापर चढ़ो धनुष टंकारत । बर्षत बिशिष भूरिभय भारत ॥ भूधरसम असुरेशहि ज्वैकै । खसके सुभटभीतिसों ग्वैकै ॥ बिबिधि भांतिके आयुधभेदा । अरु पषाण दायक अतिखेदा ॥ नभसों गिरनलगे दलमाहीं । जानिपरो कोउ बाचत नाहीं ॥ तेहि क्षण कर्णादिक भट डरिकै । खरेहोत भे इत उत डरिकै ॥ तहँ थिरि द्रोणतनय रणचारी। अति बिक्रमकीन्हों प्रणधारी ॥ दोहा ॥ दिव्य शरणसों आसुरी माया सकल बिदारि । बधतभयो अग-

णित असुर असुराधिपहि प्रवारि ॥ कोपि घटोत्कच तब हन्यो द्रोण सुतहि बहुबान। तेतनमधि धसिपियतभे शोणितउरग समान ॥ सोरठा ॥ द्रोण तनय दशबाण टेरि असुरपतिकहँ हन्यो। तब असुरेश अमान तज्योचक्र हरिचक्र सम ॥ चौपाई ॥ हनि बीचहि बहुशर अभिरामा। काटिदियो तेहि अश्वत्थामा ॥ सोलखि अंजन पर्बन नामा। सुवन घटोत्कचको बलधामा ॥ भिरो द्रोण सुतसों भटनायक। गर्जत घनसम बर्षत शायक ॥ दोऊ बलि बासवसम भिरिकै। घोरयुद्ध कीन्ह्यों तहँ थिरिकै ॥ तहँ अश्वत्थामा प्रण धरिकै। धनुष करषिकर लाघवकरिकै। काटि तासुधनु ध्वजबधि सूतहि। बध्यो हयन करिबेग अकूतहि ॥ तब अंजन पर्बन असि गहिकै। भयो चलावत थिरु थिरु कहिकै ॥ असुर तनयतब रिससों सनिकै। मार्‌यो गदा न बाचत भनिकै ॥ द्रोण तनय तब शरसों काट्यो। हनिबहु शायक असुरहि डाट्यो ॥ तबसो कूदिघूमि नभमाहीं। बरषो वृक्ष द्रोणसुत पाहीं ॥ तेहिक्षण द्रोणतनय बलवाना। धनुषहिकरि जलयंत्र समाना ॥ तज्यो उर्द्ध बाणनकी धारा। तब ह्वै ब्याकुल असुर कुमारा ॥ आइ भूमिपै रथपहँ राज्यो। धनुगहि सेत शरणको साज्यो ॥ असुरहि हनि बहुबाण प्रचारी। बधतभयो द्विजसुत धनुधारी ॥ पुत्र मरण लखिकै अति कोप्यो। बीर घटोत्कच प्रलय अरोप्यो ॥ अबिरल शरपंजर रचिदीन्हों। तिन्हें द्रोणसुत निष्फल कीन्हों ॥ दोहा ॥ निज निज बिक्रम बेगकी गरिमा कहि कहि धीर। लरे शिष्य गुरुके सुवन बिप्र रजनिचर बीर ॥ मायाबी राक्षसकियो बहुमाया बहु बार। दिव्य शरनसों द्रोणसुत तासुकियो संहार ॥ महा भयानक अति प्रबल राक्षस भट समुदाय। करत कोलाहल बढ़िदये अबिरल आयुध छाय ॥ सोरठा ॥ तिन्हैं निरखि अति चण्ड त्रसित निरखि दुर्योधनहिं। द्विजसुत सुभट उदण्ड कहतभयो कुरुनाथसों ॥ चौपाई ॥ नृप मतिआनु शोंच कछु मनमें। येसबलहत कालपुर क्षणमें ॥ बन्धुन सहित धीरधरि देखौ। निजजय शत्रुपराजय लेखौ ॥ इमिकहि शर परदल मधिछाये॥ अगणित राक्षस मारि गिराये ॥ सबकेबाण शरनसों वारत। सबके तन मधि शायक मारत ॥ द्रोण समान द्रोणसुत राज्यो। कालकराल सदृश ह्वै गाज्यो ॥ तेहि क्षणकरि निज जयबिधि शोधन। कह्यो शकुनि सों

नृप दुर्योधन ॥ साठि हजार रथी सँगले। जाहुपार्थपहँ मननिर्भयकै॥ कृप वृषसेन कर्ण कृतवर्मा । बिजय सुतापन अरुजय धर्मा ॥ शल्य पुरंजय जय दुश्शासन। इन्द्रसेन दृढ़रथ अरिनाशन ॥ नृप कमलाक्षनिकुम्भ पताकी। नील सुदर्शन क्राथ सुसाकी ॥ नृप पुरुमित्र सुतापन राजा। कुम्भभेदि सहसैन समाजा ॥ धर्मभीम आदिक पहँजाई। ममहित दुस्तर करैं लराई ॥ वधि राक्षसन बिप्रजय लेइहि । सब पाण्डवन भूरि दुख देइहि ॥ तोसुत नृपको लहि अनुशासन। तेसिगरे भट करिसंभाषन ॥ हय गज रथी शत्रुदलघाती। अरुषट अयुत प्रमत्त पदापी ॥ बर्षत बिशिष मारु यहि रटसों। भिरेजाय भीमादिक भटसों ॥ दोहा ॥ महाभयानक युद्धअति होतभयो सबठौर। भई रजनि कल्पान्तके प्रलयकाल के डौर। अश्वत्थामा द्रोणसुत अरुराक्ष भटउद्ध। कोपिशक्र प्रह्लादसम कीन्हों अद्भुत युद्ध ॥ सोरठा ॥ हन्योभीम सुतरक्ष अश्वत्थामहिं बाणदश। भिदितन सों दिजदक्ष होत भयोकछुक समलित ॥ तोमर ॥ फिरि भीम सुवन प्रचारि । अति कठिन धनु टङ्कारि ॥ हनि अंजलिक शरडाटि। धनुदियो दिजको काटि। तवबिप्र गहिधनु आन। तकिभयो बर्षत बान॥ असुराधिपतिहि अनेक। शर भयो हनत सटेक ॥ बधि असुर योधा भूरि। महि रुण्ड मुण्डन पूरि ॥ गज तुरँग अगणित मारि। भोदेत महि पै डारि ॥ जिमि शम्भु महिमाऐन। बिधि त्रिपुरकी सबसैन ॥ भेलसत तिमि तेहिठौर। द्विजतनय भटशिरमौर ॥ दल आसुरी बलवान। अक्षोहिणी परमान ॥ तहँ मर्दिगहि अवदात। असुरेश बधको घात ॥ भोलसत भट उद्दण्ड । करि चक्रसम कोदण्ड ॥ तबभट घटोत्कच हेरि । सब राक्षस न सोंटेरि ॥ इमि भयो करत पुकार। यहिबधोरे यहिबार ॥ सुनि सकल राक्षस बीर। करि घोरधुनि गम्भीर ॥ तकि तजत आयुध सर्ब। बढ़ि भये भिरत सगर्ब ॥ लहिरजनि निशिचर जाल। अतिलसत भे बिकराल ॥ दोहा ॥ द्रोणतनय तेहिकाल तजि दिव्यशरनके सेत। काटि काटि तिनके सकल आयुध बुद्धिनिकेत ॥ बधिडारे अगणित असुर घायल कियोअनेक। लखि लखि कोपित ह्वै असुर बढ़िबढ़ि भिरे सटेक ॥ सोरठा ॥ तहँ द्विजतनय सुबीर नृप अद्भुत बिक्रम कियो। एक सुभट रणधीर लरो असंख्यन असुरसों ॥ चौपाई ॥ बिप्रहि निजदल

मर्दत देखी । असुर घटोत्कच अतिशय तेखी ॥ मलि करतल दसि रद-छद रदसों । घनसम गरजि पूरि बल मदसों ॥ शक्ति आठ घण्टायुत मारी । द्रोणतनय पहँ तज्यो प्रचारी ॥ तेहि आवत लखि कूदि यतन सों । अश्वत्थामा भट गहि पदसों ॥ छांड्यो फेरि घटोत्कचपाहीं । देखि घटोकच गुणि मनमाहीं ॥ रथसों कूदिगयो बलवाना । परी सुरथपै सक्ति महाना ॥ शक्ति प्रभाव दिव्यसोंराजा ॥ रथ भस्मितभो सहित समाजा । धृष्टद्युम्नके रथपर जाई । गरजो राक्षस धनुष चढ़ाई ॥ अश्वत्थामहि अरिहि निहारी । लागो बर्षन बाण प्रचारी ॥ धृष्टद्युम्न पाण्डव दलनायक । द्रोणतनय पहँ बरष्यो शायक ॥ द्रोणतनय तहि बहुशर मार्‌यो । बहु नराच रक्षसहि प्रहार्‌यो ॥ तेहिक्षण तहां वृकोदर आयो । रथहजार सहओज बढ़ायो ॥ षट हजार योधा हयसादी । भट गजस्थ त्रयशत उनमादी ॥ लैसँग आइगहे उतकर्षा । करत भयो अस्त्रनकी बर्षा ॥ तेहिक्षण द्रोण तनय भट आरज । करत भयोतहँ अद्भुत कारज ॥ मारुतसम सबहीं सों भिरिकै । कीन्ह्योंयुद्ध चक्र समफिरिकै ॥ दोहा ॥ भीमघटोत्कच सैन पति सों लरिआड़ि सडौर । बध्यो असंख्यन सुभट गज हय तेहिक्षण तेहिठौर ॥ सरिता शोणितकी सरस उँमगिचलीं नृपतत्र । अश्वत्थामा कालसम लख्योकालजेहियत्र ॥ बहुशर मारिघटोत्कचहि हनि भीमहि बहुबाण ॥ द्रुपद तनय भट सुरथकहँ करतभयो गतप्राण ॥ सोरठा ॥ भट शत्रुंजय नाम द्रुपदतनय तेहिबधि बहुरि । द्रोणतनय बलधाम बलानीक कोबधकियो ॥ गुरुतोमर ॥ फिरि जयानीकहिमारिकै । बधि जयहि महिपै डारिकै ॥ भट श्रुतायुषको नाशिकै । लखि गर्जि वदन सहाकै ॥ यमदंड सम शर तानिकै । तकि मर्मथल अनुमानिकै ॥ असुरेश के हिय देतभो । भिदिअसुरपति गत चेतभो ॥ दोहा ॥ मूर्छित देखि घटोत्कचहि धृष्टद्युम्न अनुमानि । रथचलाय कढ़ि दूरिगो अतिशैय अनरथ जानि ॥ मोहरा ॥ इमि द्रोणसुत लहि परम जय अतिमोद गहि गरजत भयो । सुनि पांडवन को हियोतजि दुख दुसहसों दरजत भयो ॥ लखि आपुके सब सुवन नृप निज बिजयकी गौरव गहे । सब सुभट इतके देखि अद्भुत कर्म बिप्रहि धनिकहे ॥ सुर पितर ऋषि गन्धर्वगण लखि तासु बिक्रम मुद भरे । द्विजद्रोण सुवन उदग्र भटकी अति प्रशंसा सब करे ॥ जय दुंदुभी

बजवाइ तोसुत भूप गर्बित मुदमयो। इमि सुभट सब लरि पांडवन सों लेहु जय शासनदयो॥ दोहा॥ घोरयुद्ध तेहिक्षण मचोकहैं कहां लोंभूप। रुण्डमुण्डसों मेदिनीभई भयानक रूप॥ सोरठा॥ रहेअभय तेहि याम अभय किये घनश्याम ज्यहि। प्रभुमूरतिकोधाम जसुहियो अभिरामअति॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणिराचियुद्धवर्णनोनामदशमोऽध्यायः॥ १० ॥

दोहा॥ चौथेदिन के रजनिमधि तदनुभयो जिमियुद्ध। सो सुनुहे भूपाल मणि मनकरि अचपल शुद्ध॥ द्रोणतनय को जय अजय भीम तनय को देखि। कुन्ति भोज अरु द्रुपदके पुत्रनको बध पेखि॥ सोरठा॥ भीम सात्विकिहि आदि सुभट उतयके क्रोधअति। गहि गहि गर्ब प्रमादि भिरे इतैकै भटनसों॥ चौपाई॥ भोअति घोरयुद्ध तेहि पलमें। गिरे असंख्यन भट दुहुं दलमें॥ सोमदत सात्विकि कहँदेखी शर बरष्यो निजप्रण अवरेखी॥ भीम सात्विकी के जयकारण। नृपहि हन्यो दश शरप्रण बारण॥ सोमदत्त तेहि शतशर मार्‌यो। अगणित शर सात्विकि पहँ डार्‌यो॥ सात्विकि तेहि सत्रह शर हनिकै। मार्‌यो शक्ति भागुमति भनिकै॥ मार्‌यो परिघ भीमरिस पागो। सोनृपके मूरध मधि लागो॥ सात्विकि हन्यो बाण बरज्वैकै। भूपगिरो तब मूर्च्छित ह्वैकै॥ सोमदत्त कहँ मूर्छित लखिकै। भिरोभूप बाह्लीक बिलक्षिकै॥ भीम सात्विकिपहँ सो राजा। बर्षा अरिबल बिशिप समाजा॥ काटि असंख्यन शर रणपतिके। भीमहन्यो नवशर अयअतिके॥ तब बाह्लीक शक्तिवर गहिकै। मारत भयो भागु मतिकहिकै॥ तासोंभिदिह्वै क्षणक अचेतन। चेतिभीम बलबुद्धि निकेतन॥ गर्जिभूप बाह्लिकहि प्रचारी। मारत भयो गदाअति भारी॥ लागि बज्रसम सोअरि खंदन॥ करतभयो नृपके शिरछेदन॥ नृप बाह्लीक गिरोमहिपाहीं। भोहाहा धुनि ममदलमाहीं॥ सोलखि तोदश सुतभट नायक। भिरेभीमसों बर्षतशायक॥ दोहा॥ नागदत्त दृढ़रथ बिरज दृढ़सुहस्त रणधीर। बीरबाहु उग्रज अजय अयभुज प्रमथसुबीर॥ येसिगरे भिरि भीमसों कियो घोर संग्राम। क्रमसों क्षणमें बधि तिन्हैं भीम

दयो यमधाम ॥ सोरठा ॥ तब वृकरथ रणधीर सूतज भ्राता कर्णको। हन्यो भीमकहँ तीर भीम तुरित तेहि बधत भो ॥ चौपाई ॥ सोलखि शकुनिभूपके योधा। रथीसाथ कीन्हों अवरोधा ॥ भीमसेन अति रिस गहि मनमें। तिनकहँ बधत भयो तेहि क्षणमें ॥ सोलखि पांच शकुनि के भ्राता। बिभुगवाक्ष शतचन्द्र बिख्याता ॥ शरभ महारथ भटनरनायक। भिरे भीमसों बर्षत शायक ॥ भीमवर्षि शर करि चखराते। पांच शरन सों तिन्हें निपाते ॥ यहिबिधि भीम बिरचि तेहि पलमें प्रलयकाल रोप्यो मम दलमें ॥ तेहि बिधि कोपि युधिष्ठिर राजा बध्यो असंख्यन सैन समाजा ॥ धर्महि निजदल मर्दत देखी। द्रोणाचारय अतिशय तेखी ॥ शर बायव्य भुपपहँ डार्‌यो। दिव्य अस्त्रसों तेहिनृप वार्‌यो ॥ बारुण याम्य त्वाष्ट्र आग्नेया। अरु सावित्रि सुअस्त्र अमेया ॥ क्रमसों नृपपहँ तज्यो अचारय। तहँ नृप कीन्हों अद्भुत कारय ॥ तजि तजि दिव्य बाण नरनायक। ब्यर्थ किये सब द्विजनके शायक ॥ तब आचारय तज्योप्रचारी। प्राजापत्य अस्त्र अतिभारी ॥ तब माहेन्द्र अस्त्रतजि भूपा। ब्यर्थ कियो सो अस्त्र अनूपा ॥ निजसब दिव्य अस्त्रलखि निष्फल। करि अति कोप अचारय अत्तिबल ॥ धर्म भूपको बध अनुमानी। डार्‌यो ब्रह्म अस्त्र अतिआनी ॥ दोहा ॥ ब्रह्म अस्त्रसों धर्मनृप व्यर्थकियी तेहि तत्र। तबबिचारि तजि नृपहि द्विज चलो द्रुपदहे यत्र ॥ पाञ्चालन मर्दत द्विजहि जात द्रुपद पहँदेखि। बर्षत शरआड़त भये भीम पार्थ अवरेखि ॥सोरठा॥ किये घार संग्राम तेहिक्षण युग दिशिके शुभट। उमगत भई अक्षाम शोणितकी सरिताभयद ॥गीता॥ पांडवनसों देखिमर्दित सैननिजअनखाय। कर्णसों इमि कहतभो तो तनय कुरुकुल राय ॥ मित्र बत्सल मित्र उद्भट मित्रका उपकार। करत जेहि दिन आजुहै यह समय तौन अपार ॥ प्रबल पांडव दलत ममदल करौ रक्षणतासु। लहैं जाते बिजय हम तिमि करौ बिक्रम आसु ॥ भूपके सुनि बचन बोलो कर्ण सगरब बैन। भूप चिन्ता करहु मतिहम बधब सब अरि सैन ॥ बधब हम अर्जुनहि ताते हारि पांडव सर्ब। भागि बसिहैं जाय बनमें दीनह्वै तजिगर्ब ॥ जीति सब पांचाल केकय भटनके समुदाय। देउंगोतो सुबश करिसब भूमि अरिन नशाय ॥ कर्णके सुनि बचन बोले कृपाचार्य रिसाय। सत्य सत्य सुबचन जो तुम

कहत कर्ण बनाय ॥ भरे विक्रम बचन तोसुनि परत नृपके पास। पार्थ के ढिग परतनहिं लखि कछू बिक्रम आस॥ लयेगहि गन्धर्वगण कुरु-पतिहि तबतेहि ठौर। गउनहेतु बिराट पुरमें भयो संगम और ॥ तहां तुम जिमि पार्थसों जयलह्यो तौन बिख्यात। तऊ तुमतजि लाजफिरि फिरि कहत ऐसी बात ॥ शरदके घन यथा गर्जत बहुत बर्षत थोर। तथा थोरो कर्ण तुम बहुकहत मनके जोर ॥ तुम्हैं गर्जब होत दुर्लभ नि-कट पार्थहि जोहि। कहब मिथ्या भूपके ढिगकर्ण उचित न तोहि ॥ कर्ण सुनि ये बचन कृपके कह्यो गर्जब मोर। घोरबर्षा समयकेघन गर्जसम नहिं और ॥ कहतहौं फिरिजीति परदल फाल्गुणकहँ मारि। भूपकेबश करोंगो महि सकल सम्पति भारि ॥ कर्णके ये बचन सुनिकै कह्योकृप द्विजराज। मोहिं होति प्रतीति नहिं गुणि सधिहि नहिं यह काज ॥ सर्ब गुणसों पूर्ण अतिशय धर्मशील सुजान। बिगत दूषण नीतियुत सर्बज्ञ नम्र महान ॥ प्रबल उद्भट सहित बन्धुन धर्मनृप जगजैन। तासु संग सहाय कर्त्ता कृष्ण महिमा ऐन ॥ भूप द्रुपद बिराट केकय अधिप सह परिवार। परम धनुधर जासु सँगरहि करतयुद्ध बिहार ॥ भट घटो-त्कच आदि अगणित सुभट बिदित अमान। जासु अनुचर सकै ताकहँ जीतिको बलवान ॥ नृप युधिष्ठिर धर्ममें बरभीम बलमें श्रेष्ठ। पार्थधनु में तथातुम बहु बचन कहत यथेष्ठ ॥ शम्भु शक्रादिक सुरणसों लहेअस्त्र अशीस। पार्थ तेहितुम बचन भाषत झूठ विश्वेबीस ॥ बचन यहसुनि अरुण चखकरि कर्णबोलो क्षिप्र। पाण्डुसुत सब प्रबलहैं तुम सत्यभाषत बिप्र ॥ शक्रदीन्हों मोहिं शक्ति अमोघताहि प्रहारि। लखत सबकेपार्थ कहँ बधि तुरित देहौं डारि। पार्थबिनुह्वै बिकल पाण्डव सकलसाहस त्यागि। जाय बसिहैं बिपिनमें सहसन रणतजि भागि ॥ लहि अक-ण्टक भूमिकरिहै भोग कुरुकुल चन्द। कहतहैं हमसत्य यह हे वृद्धद्विज मतिमन्द ॥ पाण्डवनके नेहबश तुम कहत ऐसेबैन। शत्रु बिक्रम बरणि भययुत करत नृपकी सैन ॥ अरेदुर्मति बचनऐसे कहैगोजोफेरि। काटि-हौं तौ जीभतेरी कहतहौं यहटेरि ॥ कर्णके ये वचन सुनिकै द्रोणसुत अनखाय। काढ़िकै तरवारि तापै चलो कहत अबाय ॥ वृद्ध मानी मान्य सबको धनुषवर बिख्यात। सुने बचन प्रलाप तेरो कह्योसत्य सुबात ॥

तौन सुनितू बचन अतिकटुकहे जौ रिस धारि। खड्गसों तौ शीशतेरो काटिदेहौं डारि॥ कहतऐसे सूतसुत पहँ द्विजहि जात निरेखि। भयो वारत्त बिनय करि तो तनय नृप अवरेखि॥ द्रोणसुत इमिकह्यो नृपके कहे छांड़त तोहिं। फाल्गुण यहि बचनको फल अवशि देहै जोहि॥ दोहा॥ यह प्रपंच लखि सन्यिगुणि पाडव उतसोंटूटि। आइतहां लागे लरन प्रति सुभटन सों जूटि॥ तिन सबसों मिरिकै तहां सूतज बीर अमान। करषि धनुष शायक बरषि कियो घोर घमसान॥ सोरठा॥ तहँ सूतजहि निहारि पाण्डव अरु पांचाल गण। बध बिचारि प्रण धारि घनेबाण बरषत भये॥ चौपाई॥ यह अनरथको मूल महाना। बधौ याहि हनिशक्ति कृपाना॥ इमि कहिकहि उतकेभट नायक। भिरे कर्णसों बर्षत शायक॥ तिनसों भिरो सूतसुत तैसे। तेजबायु वृक्षणसों जैसे॥ एककर्ण अगणितभट गणसों। अद्भुत युद्धकियो अति प्रणसों॥ दुर्योधन नृपको हितकारी। कर्ण प्रसिद्ध दुसह रणचारी॥ असुर सैन मधि शक्र समाना। परदल मधिभो लसत अमाना॥ काटि असंख्यन शर सबहीके। बरष्यो शायक शोषक जीके॥ अगणित पैदर रथी सँहारे। अगणित हयसादिन बधि डारे॥ अगणितके शिर छेदनकीन्हें। काटि असंख्यन कर पग दीन्हें॥ अगणित धनुष केतु रथ छेदे। अगणित योधनके हियभेदे॥ अगणित हय गज मारि गिराये। शोणितकी सरिता उमगाये॥ इमि मर्दितह्वै योधा उतके। भगे छोड़िसँग हितपितु सुतके॥ पारथ निजदल बिचलत देखी। चलोकर्णपै अतिशय तेखी॥ धनु कर्षत घनसदृश ननर्दत। शर बर्षत ममसेना मर्दत॥ पार्थहि जातकर्ण पहँ पेखी। दुर्योधन भूपति अवरेखी॥ कह्यो द्रोण सुतसों यहि भावै। पार्थ कर्णकहँ बधन न पावै॥ दोहा॥ सो सुनिकै सुतद्रोणको कृप अरु शल्य नरेश। अरु हार्दिक्य ससैनये चलत भयेतहि देश॥ पांचालन सह फाल्गुण महा बेगसों जाय। धीर धनुर्द्धर कर्णपहँ देतभयो शर छाय॥ सोरठा॥ कर्ण बिदित बानैत पारथपै बरषो बिशिष। दोऊ भट अमनैत घोरयुद्ध कीन्हों तहां॥ पचौाई॥ दोऊभट धनुबिधिमें पूरे। काटे अगणित शायक रूरे॥ दोऊ अगणित शरके सैरी। अरु प्रसिद्ध नितिके अति बैरी॥ अगणितबाण शरासन करषे। अबिरल बाण परस्पर बरषे॥

काटि पार्थके बहुशर नोखे। मारकर्ण तीनिशर चोखे॥ जोलगि तीनि बाणसों मारो। तौलगि पारथ तीस प्रहारो॥ बहुशर काटि अरुणकरि ईक्षण। हन्यो वाम करमें शर तीक्षण॥ लागत बाण कर्णके करसों। गिरो धनुष सबपूरे डरसों॥ तुरतहिकर्ण धनुषसों गहिकै। बर्षोबिशिष खरोरहु कहिकै॥ दोऊ अद्भुत धनुबिधि लीन्हें। भूपति घोरयुद्ध तहँ कीन्हें॥ पार्थ अपूरब धनुबिधि ठाट्यो। शरसों धनुष कर्णको काट्यो॥ घोरनबधे मारिशर चारी। सूतहि हन्यो सुबाण प्रहारी॥ बिधनु बिरथ करि गरजि प्रचारो। शायकचारि तासुतन मारो॥ तब सूतज डरिनिज रथ तजिकै। गोकृपके रथपै अतिलजिकै॥ सूत सुवनकी दशा निहारी। ममभट बिचले गर्ब बिसारी॥ निजदल बिचलत लखि दुर्योधन। इमि कहि कहि कीन्हों अवरोधन॥ फिरहु फिरहु सबभीति बिहाई। क्षत्रिहि नहिंचाहत कदराई॥ दोहा॥ देखोमम बिक्रम बिशद सबसों कहत पुकारि। बर्षिबाण बधिपार्थकहँ देहोंमहिपैडारि॥ इमिकहि भूपति क्रोधबश दोहधनुष टंकारि। सदल पार्थपहँ चलतभो शरबर्षत प्रणधारि॥ महाक्रोध बश पार्थपहँ भूपति जात निरेखि। अश्वत्थामासों कह्यो कृपाचार्य अवरेखि॥ सोरठा॥ अमरषबश भूपाल जात धनंजयसों लरन। अब न बचिहि यहिकाल तातेजान न देउयहि॥ चौपाई॥ कृपाचार्य कसुनि येबैन। अश्वत्थामा बलबुधिऐन॥ जायभूपसों कह्योबुझाय। जीवतहमें सुनो कुरुराय॥ तुमकहँ उचित न करिबोयुद्ध। हमलरि तुम्हैं देबजय शुद्ध॥ तुम रहिखरे लखोरणरंग। मैंलरिकरत पार्थबलभंग॥ यहसुनि दुर्योधन क्षितिपाल। कह्यो बिप्रसों बचन रसाल॥ ममशत्रुणकहँ द्रोणाचार्य्य। पुत्र सदृश रक्षतहेआर्य्य॥ तुमहूं तिन्हें बंधुप्रिय जानि। करतसदारक्षण अनुमानि॥ यह मम मन्दभाग्यकोकर्म। कैलघुभो तो बिक्रमपर्म॥ मोहिं युद्धकहँ धिकजेहि काज। मरत असंख्यन सैन समाज॥ को ऐसीसीखे धनुरीति। जेहिन सकौ पितुसह तुमजीति॥ जो मोहिं लरन जाननहिं देत। तौ करि कृपा सुजयके हेत॥ करिबरबिक्रम निज अनुरूप। मोहिं देहुतुम बिजय अनूप॥ यहसुनिद्रोणतनय बलधाम। कह्यो भूपसोंबचन ललाम॥ नृप तुमकह्यो सत्य यहबात। वै मम कृपापात्र अवदात। तब हूं यथा सक्ति व्यवसाय। करत युद्धसब नेह भुलाय॥ रणमें करत कृपा

नहिंनेक। चाहत उन्हें बधन गहिटेक ॥ दोहा ॥ शक्र असुर गन्धर्ब सों पाण्डव बधन न योग। अतिबिक्रमी प्रसिद्ध वैशीक्षक शस्त्र प्रयोग ॥ अगणित योधा बधब हम बाण बरषि यहि याम। बिकल करब सब पाण्डवन लखो भूप बलधाम ॥ सोरठा ॥ द्रोणतनय बलधाम इमि कहितोसुत भूपसों। बरषत शर अभिराम चलोपाण्डवी सैनपर ॥ चौपाई ॥ जे कैकय पाञ्चाल सुबीरा। तिनसों टेरि कह्यो रणधीरा ॥ लरोआय मोसों सब योधा। सोसुनि सब कीन्हों अवरोधा ॥ बारिद बारिधार जिमि बर्षत। तिमिसब बर्षत भेधनुकर्षत ॥ तहांबिप्र बिक्रम बिस्तार्‌यो। दश पाञ्चाल रथी बधिडार्‌यो ॥ बधि अगणित पैदर हयदासी। गर्जो ब्राह्मण प्रबल प्रमादी ॥ तेहिक्षण धृष्टद्युम्न रणचारी। चलो बिप्रपहँ धनुटंकारी ॥ शत सह शूर सुभट सँगलीन्हें। द्रुपदतनय अति गौरवकीन्हें ॥ द्रोणतनय सों कह्यो प्रचारी। मति इत रन बधुद्विज अबिचारी ॥ शूरहोसि तौ मोसों भिरिकै। धीरयुद्ध करु द्वैक्षण थिरिकै ॥ इमिकहि कोपिअरुण करिईक्षण। हन्यो बिप्रकहँ बहुशर तीक्षण ॥ तिनसों भिदि द्विजसुवन सोहायो। कह्यो भूपसुतसों मनभायो ॥ धृष्टद्युम्न सम्मुख थिरु तौलों। भेजों तोहिं कालपुर जौलों ॥ इमि कहि कठिन शरासन करष्यो। धृष्टद्युम्न पहँशायक बरष्यो ॥ काटि असंख्यन शायकतासू। धृष्टद्युम्न बोलतभोआसू। हेद्विज सुनु यह ममप्रण भारी। बधौंसपितु तोहिं तौ धनुधारी ॥ तजि द्विजधर्म क्षत्रगुण धारे। तेहि गुणआजु जाततुम मारे ॥ दोहा ॥ दुर्योधनमेंअधिक अरु पाण्डवमें कमप्रीति। करतसपितु तुमतासुफल लहिहौअजुसनीति ॥ यहसुनिकै अति क्रोधकरि थिररहु थिररहु भाषि। धृष्टद्युम्नपहँ द्रोणसुत छायदयो शरनाषि ॥ सोरठा ॥ धृष्टद्युम्न रणधीर करलाघवकरि क्रोधगहि। बर्षाबिशिष गँभीरअश्वत्थामा बीरपहँ ॥ चौपाई ॥दोऊकरि बिक्रमबहुताई। करत भयेतहँ तुमुल लराई ॥ बिबिधि भांति बाननकी बर्षा। करतभये गहि गहि उत्कर्षा ॥ अगणित बाण बाणसों दोऊ। दीन्हों काटि लखे सबकोऊ ॥ दोऊ भटबर दोउन पाहीं। छायदये शर सबदिशि माहीं ॥ लखि तिनको बिक्रम तेहिक्षणमें। भयेप्रशंसित सुरगणमनमें॥ दोऊचढ़े बीर रसचावन। लहे मुहूर्त एक समभावन ॥ तदनु द्रोणसुत थिरु थिरु भनिकै। काट्योतासु धनुष शरहनिकै॥ ध्वजअरु छत्रहि काटिगिरायो।

सूतहिबधि यमलोक पठायो ॥ बधि तुरंग यमपुरगत कीन्हों। अगणित भटन काल पुर दीन्हों ॥ धृष्टद्युम्न सों जयलहि ऐसो। बिलसो तहां बिप्रसुत तैसो ॥ मत्तमतंगहि बधि मृगराजा। जेहि बिधि मर्दय द्विरद समाजा ॥ द्रोणतनय सों मर्दितह्वैकै। भगो तासुदल भय सों ग्वैकै ॥ धृष्टद्युम्नकी दशानिरेखी। पांचालन कहँबिचलत देखी ॥ धर्मभूपभीमादिक योधा। किये द्रोण सुतको अवरोधा ॥ सो लखि दुर्योधन कुलनायक। सदल भिरत भो बर्षत शायक ॥ महाराज सुनिये तेहि पलमें। घोर युद्ध माचो वहि थलमें ॥ दोहा ॥ भीम आरजुन तेहि समय अबिरल शायक छाय। बधिहय गजभट रुधिरकी नदीदई उमँगाय ॥ तथा द्रोण उतशरनको दुरदिन करिहेभूप। बधिअगणितभट मेदिनिहि किये भयानक रूप ॥ सोरठा ॥ महा घोरसंग्राम मध्य सोमदत्तहि निरखि। सात्विकि भट बलधाम भिरतभयो अतिबेगसों ॥ तोमर ॥ लखि सात्विकिहि कुलदीप। भट सोमदत्त महीप ॥ ह्वै चपलदर्प बढ़ाय। भो देत शायक छाय ॥ भट सात्विकिहु रणधीर। भोतजत अबिरल तीर ॥ नृप सोमदत्त अमान। तेहि हन्यो साठि सुबान ॥ भट सात्विकी औ ताहि। बहुबाण मारे चाहि ॥ भरि रुधिर सों सबगात। भे उभैबीर बिभात ॥ रथफेरि सबदिशि घूमि। शरवृष्टि कीन्हों झूमि ॥ तब सोमदत्त नरेश। हनिशर क्षुरप्र सुभेश॥ धनुकाटि दीन्होंतासु। तब आनधनुगहि आसु ॥ भट सात्विकी अनखाय। तकिबरषि बाण सचाय ॥ नृपसोमदत्तहि डाटि। शरमारिकै धनुकाटि ॥ फिरिमारि तीक्षणपत्र। तकि काटि दीन्होंछत्र ॥ फिरि धनुष गहि अवनीश। तेहि हने बाण पचीश ॥ तब नृपहि भीम उदण्ड। भो हनत दशशर चण्ड ॥ नृप सोमदत्त सटेक। तेहिहने बाण अनेक ॥ तब सात्विकी सहजोर। भो तजतपरिघ कठोर ॥ दोहा ॥ सोमदत्त नृपसो परिघ काट्यो हनि शरचण्ड। फिरि सात्विकि काटत भयो भूपतिको कोदण्ड ॥ नृपके रथके तुरँगसब बधेचारिहनिबान। फेरिबधतभो सारथिहि सात्विकि बीर अमान ॥ पुरुषसिंह सात्विकि बहुरिबाण बज्रसम मारि। सोमदत्त भूपतिहि बधि दीन्हों महिपै डारि ॥ सोमदत्त बाह्लीकसुत को बध लखि तेहिकाल। चले सात्विकी पहँ गरजिइतके सुभट कराल ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण धर्मनरेश द्रोण चमू मर्दत भयो। सो

लखि द्रोण सुभेश भिरो युधिष्ठिर भूपसों॥ चौपाई॥ पांच बाण अतिशय अनिआरे। द्रोण युधिष्ठिर नृपकहँ मारे॥ धर्मपांचशर द्विजहि प्रहार्‌यो। तब द्विज अतिबिक्रम बिस्तार्‌यो॥ मारि मारि युग शायक चोखे। काट्यो नृपके ध्वज धनुनोखे॥ तुरित और धनुगहिनरनायक। हन्यो द्रोण कहँ अगणित शायक॥ तिन बाणन सों बेधित ह्वैकै। मूर्छितेति फिरि इतउत ज्वैकै॥ द्रोणअस्त्र बायव्य संचार्‌यो। दिव्य अस्त्रसों नृपतेहि वार्‌यो॥ बहुरि भूपहनि बाण उदण्डहि। काट्यो द्विजबरके कोदण्डहि॥ तब द्विजराज और धनुगहिकै। बरषो बिशिष भागुमति कहिकै॥ तेहिक्षण बासुदेव हितकारी। धर्म नृपति सों कह्यो बिचारी॥ तुम मति लरहु द्रोण सों राजा। दुर्योधन पहँ जाहु समाजा॥ भूपहिउचित भूप सों लरिबो। लरब औरसों अनुचित करिबो॥ चाहत तुमकहँ गहन अचारय। ताते तासों भिरो न आरय॥ सुनि बिचारि पांडवक्षितिपालक। गोजहँ रहो भीम अरिघालक॥ द्रोणाचार्य्य बीररस पागो। पांचालन कहँ मर्दन लागो॥ तथा भीम अर्जुन धनुधारी। बहुभट किये गगनपथ चारी॥ तिमि इत उतके योधा भिरिकै। घोर युद्ध कीन्हों तहँ थिरि कै॥ दोहा॥ इबिधि घोर संगर मचो अस्त भयो शशिनाथ। पूरिगयो तम नहिं परै निरखि पसारेहाथ॥ तब निज निज दिशि देत भे शासन उभै नरेश। पैदर सबै प्रदीप गहि खरेहोहिं सबदेश॥ सुनि शासन रणपतिनके सब पैदर समुदाय। गहिगहि चारु प्रदीप भे खरे चारुता छाय॥ रथ प्रति पांचप्रदीप अरु गज प्रति तीनि मशाल। मम दिशि प्रति हय भे ज्वलित एक मशाल बिशाल॥ दश प्रदीप प्रतिरथ इतै गजन गजन प्रति सात। दोय दोय प्रति हय उतै भये प्रदीप बिभात॥ महिषरी॥ अति शुचि सुगन्धित तैल भाजन एककर लीन्हें भरे। मणिमये मंजु मशाल प्रज्वलित एक कर लीन्हें खरे॥ प्रति तुरँग रथ गज सकल दिशि रहि चपल थिर सब गति धरे। दुहुंओर पैदर सुभट अगणित लसे छबि अनुपमकरे॥ मणि मुकुट भूषण आयुधन मधिदीप अगणित लखिपरे। प्रतिबिम्ब प्रति प्रतिबिम्ब तिनमें बिबिधि बिधि अगणितअरे॥ तहँ भई प्रगटित दुहूं दल मधि परम अनुपम छबिनई। रहि चपल कइक हजार चपला नचति मनुसब दिशिभई॥ दोहा॥ तिमि

नभपै गन्धर्व सुरकिन्नर यक्षसमस्त। पूरि सनेह सुसौरभित गहे प्रदीप प्रशस्त॥ बेधित ह्वैहवै शूरतन तजि चढ़ि दिव्य प्रमान। महि तजिऊ-रध जात बहु पूरत प्रभामहान॥ नभते सुर गन्धर्वगण तहँ आवत हित मानि। नृपताते महिदिव परो एक नगर समजानि॥ सोरठा॥ महि नभ भरो प्रदीप लसत भयो तेहि निशि तहां। मनुमधि जम्बूद्वीप लगी अ-ग्नि कलपान्तकी॥ तामधि कृष्ण कृपाल उत्पति पालन प्रलय कृत। कौतुक करत बिशाल निज भक्तनके तरणहित॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभि गामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिगाकुलनाथकवीश्वरात्मजेनगोपी नाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे द्रोणपर्वणिचतुर्थ दिनगतेराचियुद्धेप्रदीपप्रकल्पनोनामएकादशोध्यायः॥११॥

दोहा॥ उभय भूप निजनिज दलन बहु प्रदीप बरवाय। बहुरि जूटि लागे लरन जय दुन्दुभि बजवाय॥ चौपाई॥ अतिशय घोर युद्ध तेहि निशिमें। मचो मढ़ी अति धुनि दुहुंदिशिमें॥ तेहि क्षण पारथ धनुटंका-रत। अगणित हय गज भट बधिडारत॥ ह्वै अतिप्रबल धसो ममदल में। प्रलयकाल पूरत सब थलमें॥ सो लखि इतके भट दृढ़ घायक। कर्ण बिकर्ण शल्य नरनायक॥ द्रोणाचार्यहि रक्षत बिधिसों। तासों भिरे भटन की रिधिसों॥ जुटि इतउतके भट बलधामा। कीन्हों तहां घोर संग्रामा॥ मचो रउद्र युद्ध तेहि पलमें। मरे असंख्यन भटदुहुंदल में॥ धर्म महीपालक तेहि क्षनमें। कह्यो भटन सों इमि गुणि मनमें॥ द्रोणहि जाय बधौ तेहि लरिकै। सो सुनि सुभट चले पण धरिकै॥ सो लखिकै इत के सबयोधा। बढ़ि तिनको कीन्हों अवरोधा॥ भिरो युधि-ष्ठिर सों कृत बर्म्मा। सात्यकि सों भट भूरि अभर्म्मा॥ आड्यो कर्णबीर सहदेवहि। तोसुत भूपभीम बर भेवहि॥ भिरो नकुल सों शकुनिसु-धीरा। भिरो शिखडी सों कृत वीरा॥ भट प्रतिबिंध्यहि करषि शरा-सन। आड़त भयो बीर दुःशासन॥ असुर घटोत्कच अति बलधामा। तेहि आड़तभो अश्वत्थामा॥ जात द्रोण पहँ द्रुपद ससेना। तेहि आड़त भोभट वृषसेना॥ दोहा॥ नृप बिराट सों भिरतभो शल्यभूप सहसैन। शतानीकसों भिरतभो चित्रसेन अरि जैन॥ भिरो फाल्गुन बीर सों आ-

लम्बुष असुरेश। धृष्टद्युम्न सों भिरतभो द्रोण भयानक भेश ॥ सोरठा ॥ इमि इत उतके बीर द्वन्द हजारन जुटतभे। मचो युद्ध गम्भीर महाराज तेहिक्षण तहां ॥ चोपाई ॥ बाण पचीस परम अनियारे। धर्म भूप कृतबर्महि मारे ॥ काटि भूप को धनुयुत पर्मा। मारो सान बाण कृतबर्मा ॥ धर्म भूप तब बर धनु गहि कै। दशशर हने भागु मति कहिकै ॥ फिरि शर मारि काटि धनुतासू। मारे ताहि पांचशर आसू ॥ तब सो भूप और धनुधारो। सत्तरि शर नृपधर्महि मारो ॥ धर्म कोपि मारो शर तीक्षण। सो कढ़िगयो बेधि भुज दक्षिण ॥ तेहि अन्तरमें धर्मअमाना। मारोकृतबर्महि बहुबाना ॥ तेहिक्षण कृतबर्मा बर धानुष। भूप करतभो काज अमानुष ॥ बर्षि असंख्यन शर बर धरके। काटि असंख्यन शरनर बरके ॥ बिरथ बिधनु धर्महिकरि दीन्हों। तब नृपधर्म चर्म असिलीन्हों॥ तब बहुभल्ल बाण हनि राजा। काटि दयो असि चर्म ससाजा ॥ तब नृपधर्म्म शक्ति तजि डाट्यो। तेहिकृतबर्म्मा बीचहि काट्यो ॥ अगणित बाण भूपके तनमें। मारे कृतबर्म्मा तेहि क्षनमें ॥ तिन बाणन सों मर्दित ह्वैकै। भगो धर्मनृप धीरज ग्वैकै ॥ धर्महि जीति मुदितकरि पक्षण। लगो भूपभट द्रोणहि रक्षण ॥ भिरि सात्विकिसों कुरुकुल भूषण। भूरि करतभो युद्धअदूषण ॥ दोहा ॥ बरषि बरषि अगणित बिशिष काटिमारि शरभूरि। भूरिभूप सात्विकिकिये घोरयुद्ध रिसिपूरि ॥ शरक्षुरप्रसों भूरि को धनुषकाटिसो बीर। गरजिसिंहसम हनतभो अतितीक्षण नवतीर ॥ कोपि तुरित गहिआन धनुभूरिभूपबलवान। मारि सात्विकिहितीनिशर धनुकाट्यो हनिबान ॥ सोरठा॥ बिधनु सात्विकीबीर शक्तिहनतभो बज्रसम। लगेताहि रणधीर भूरि गिरोगत प्राणह्वै॥ चोपाई ॥ भूरि नृपतिकहँ मरत निरेखी। अश्वत्थामा अतिशय तेखी॥ गुणि भटसात्विकिको बध करिबो। चलो घटोत्कचसों तजि लरिबो ॥ कह्यो घटोत्कचरिससों पगिकै। तजि ममनिकटजातकित भगिकै ॥ आजुकालतो शिरचढ़ि नाचत। मोसों बिना बधो नहिं बाचत॥जियको लोभत्यागि लरुफिरिकै। करिमन भरिबिक्रम मरु थिरिकै ॥ यहसुनि बिप्रफिरत भो तैसे। सुनिगज गरज केशरीजैसे॥ बीर असुर गहि अतिउतकर्षा। कियोद्रोणसुतपै शरबर्षा ॥ द्रोणतनयअति गौरव लीन्हों। दुसह शरनको दुर्दिनकीन्हों ॥ दोऊअद्भुत बिधि धनुक-

रषे। अगणित दिव्यअस्त्रबरबरषे॥ दिव्यअस्त्र अस्त्रनसों लागैं। तिनसों कटि फुलिंग बढ़िजागैं॥ दोऊबरषि दिव्यशर डाटे। दोऊदिव्यशरन सों काटे॥ दोऊ दुहुनबाण बहुहनिहनि। अबमतिभागु खरोरहु भनिभनि॥ कीन्हेंघोरयुद्ध तहँराजा। लखि बिस्मितभे सुमनसमाजा॥ तेहिक्षण असुरभीमसुत तुरमें। दशशरहन्यो बिप्रकेउरमें॥ भिदितिनसों द्विजमूर्छितह्वैकै। क्षणक अचलरहिगो ध्वजह्वैकै॥ बहुरिचेति बरधनु टङ्कारो। बज्र समान बाणतेहि मारो॥ दोहा॥ लागि घटोत्कचके हिये बेधिगयो वह बान। मूर्छित ह्वै रथपै परो भीमतनय बलवान॥ सोलखि असुर सुसारथी रथलैभागो क्षिप्र। बिजय पायगर्जत भयो पुरुषसिंह भटबिप्र॥ सोरठा॥ भीमसेन कहँदेखि जातद्रोण पहँ सैनसब। दुर्योधन नृपतेखि भिरोसदल बर्षत बिशिष॥ तोमर॥ भट भीमसेन अमान। तेहि हनतभो नवबान॥ तो तनय भट अवनीश। तेहिहनतभो शरबीश॥ तेउभय सुभट सचाय। नभदिये शरसों छाय॥ रचि बाण जाल गँभीर। लखिपरे तेयुग बीर॥ जिमिघने घनमधि भूप। शशिसूर लसत अनूप॥ तो तनय बीर उदण्ड। तेहि हन्यो शर शरचण्ड॥ तबभीम धनुबिधि ठाटि। ध्वज धनुष नृपको काटि॥ फिरि बाण नब्बेमारि। भो नदतधनु टंकारि॥ गहि धनुष नृप रिसिपूरि। भो बाण बर्षतभूरि॥ तहँ भीम नृपहि प्रचारि। बर बाण बाण नवारि॥ करिसबिधि धनुष कशीस। भो हनत बाण पचीस॥ तब भूमिपतिबलवान। हनिशर क्षुरप्रमहान॥ भट भीमको धनुकाटि। दशबाण मार्‌यो डाटि॥ तब भीमगहि धनुऔर। शरहन्यो सात सडौर॥ तबभूप सोऊचाप। भो काटिदेत सदाप॥ तबभीमगहि धनुआन। भोकरत अति घमसान॥ दोहा॥ दुर्योधन काटतभयो सोऊधनुषकठोर। इबिधिपांचधनु भीमके काट्योकरिशरजोर॥ बिधनु भीमअति कोपकरि शक्तिचलायोटेरि। बाण मारितेहि बीचही भूपति काट्योहेरि॥ तब अति गरुई गदा गहि मार्‌यो भीम अमान। ताहिलगे हय सारथी होतभये गतप्रान॥ सोरठा॥ तब तो तनयनरेश गो नन्दकके सुरथपै॥ नृपहि जात तेहिदेश लख्यो न भीमादिक सुभट॥ मरोभूप अनुमानि प्रबल भये उत सुभट सब। इत सब अनरथ जानि जीवनाशतजि तजि लरे॥ चौपाई॥ भिरि सहदेवकर्ण रणचारी। कीन्ह्यो घोरयुद्ध धनुधारी॥ बाण अठारह अति अनियारे।

सहदेवकोपि कर्णकहँमारे॥ कर्णमारि शतशर सहदेवहि । धनुकाट्यो हनि शर बरभेवहि ॥ तबसहदेव ओर धनुधारो । शायकबीस कर्णकहँमारो॥ कर्णतासु शर हय बधिडारो । सूतहि बधिनहिं बचन पुकारो ॥ माद्री-सुवन चर्म असि लीन्हों । कर्ण तिन्हैं दशधा करि दीन्हों ॥ तब माद्री-सुत गदा चलायो । ताहि सूतसुत काटि गिरायो ॥ पांडव तदनु शक्ति तजिडाट्यो । तेहि राधेय बाण हनिकाट्यो ॥ तबसहदेवचक्रगहि भारी । मारत भो सूतजहि प्रचारी॥सूतसुवन तेहिशतधाकीन्हों । लखिमाद्रीसुत अनरथ चीन्हों ॥ईर्षादंडयुवा ध्वजरूरे । कटेगजनके अंग अधूरे ॥ मरे परे हयमानुष गहिगहि । मारत भयो भागुमति कहिकहि ॥ मारिमारि अग-णितशर तिनमें । कर्ण गिराइ दयोतेहिक्षनमें ॥ तब माद्रीसुत बिस्मित ह्वैकै । त्यागोयुद्धप्रबल तेहि ज्वैकै ॥ तब हँसिकर्ण कहत भो थिरिकै । लरुनिज सदृश भटनसोंभिरिकै ॥ मोसों आइभिरो तूभोरे । अबजा भागि पार्थके धोरे ॥ दोहा ॥ गुणि कुन्तीको बचन नहिं बधत तोहिं यहियाम । इमिकहिकै पांचाल दल बधनलगो बलधाम ॥ कर्ण बलीके बाकशरसों पीड़ित सहदेव । जनमेजय पांचालके रथपै गयो सुभेव ॥ सोरठा ॥ कियो घोर घमसान शल्य बिराट नरेशतिमि । दोऊ प्रबल अमान दोऊ भूपति बिदितभट ॥ चौपाई ॥ बलिबासव सम दोऊराजा । लरतभये भिरिसहित समाजा ॥ तहांशल्य अति बिक्रम करिकै । क्षणमें अगणित शर परिहरिकै॥ बधिबिराटकेसूत सुघोरन । काट्यो केतुछत्र शरजोरन ॥ ह्वैहत हयबिराट नरनायक । जाय भूमिपै बर्षा शायक ॥ सो लखि नृप बिराटको भ्राता । शतानीक धनुधर बिख्याता ॥ सुरथ बढ़ाय धनुष टंकारत । शल्यनृपतिसों भिरो प्रचारत ॥ शर बर्षत भिरि ओज बढ़ाई । करत भयो सो तुमुल लराई ॥ शल्य भूपकर लाघव कीन्हों । शतानीक कहँ यमपुर दीन्हों ॥ सो लखि नृप बिराट चलि पथपै । जातभयो भ्राताके रथपै ॥ अतिशय क्रोध शोकगहि मनमें । बर्षत भयो बिशिप तेहि क्षनमें ॥ लखि नृप शल्य क्रोध बिस्तारो । ताहिय बाण बज्रसम मारो ॥ तासों भिदि नृप मूर्छित ह्वैकै । परोसुरथपै बिक्रम ग्वैकै ॥ सो लखिसूत सुरथलै भागो। शल्य तासुदल मर्दनलागो ॥ भगी फौजसो भयसों भरिकै । बिनालरे कोउ कोउ ककुलरिकै ॥ सो दलबिचलत लखि तेहि पलमें । चलेकृष्ण

पारथ तेहि थलमें ॥ लखि प्रचारि आलम्बुष योधा। करतभयो तिनको अवरोधा ॥ दोहा ॥ क्षणमहँ ताकहँकरि बिधनु बिरथ बिमुख तेहिठौर। चलो द्रोणपहँ पार्थभट बर्षत बिशिषसडौर ॥ शतानीक सुत नकुलको बढ़ि मर्दत सबसैन। चलोभिरो तासों गरजि चित्रसेन बलऐन॥ दोऊ बर्षे दुहुनपै शायक कइक हजार। दोऊ काटे दुहुनके शरसमूह बहुबार॥ सोरठा ॥ दोऊ बीर अमान बाणहने तन दुहुनके। दोऊ शर सन्धान करि काटे धनु दुहुनके ॥ चौपाई ॥ दोऊबीर धनुषधरि धरिकै। बाणनकी बर्षा करि करिकै ॥ कीन्हों घोरयुद्ध तेहिक्षनमें। जो लखि जन बिस्मित भे मनमें ॥ शतानीक अति बिक्रम कीन्हों। नृपतो सुतहि बिरथकरि दीन्हों ॥ तोसुत थिरि न सको तेहि थरपै। गोकृतबर्मा के रथबर पै ॥ शतानीक यहिबिधि जय लहिकै। लगो दलनदल गौरव गहिकै ॥ द्रुपदहिजात निरखि जगजेना। आड़तभयो बीर वृषसेना ॥ दोऊ भरेबीर रस हरषे। अबिरल बाण परस्पर बरषे ॥ शायक साठि परमअनियारे। द्रुपद कोपि वृषसेनहि मारे ॥ सूततनयको सुत दृढ़घायक। द्रुपदहि हन्यो अनगिने शायक ॥ भिदे शरनसों अतिशय कोहे। सुभट शल्यकी समतेसोहे ॥ कर्णतनय सुभटनको शासी। द्रुपदहि मारोबाणनवासी॥ द्रुपद कोपि वृषसेनहिं डाट्यो। शरसों तासु शरासन काट्यो ॥ तब धनुगहि वृषसेन अमाना। द्रुपदहि हन्यो बज्रसम बाना ॥ सोशरलागि बेधि हियतासू। धस्योजाय धरणी मधि आसू ॥ अति बेधित ह्वै द्रुपद महीपा। मूर्च्छिपरो रथपै कुलदीपा ॥ सूत भूपतिहि मूर्च्छित ह्वैकै। भयो सुरथलै चिन्तित ज्वैकै ॥ दोहा ॥ इमिपाञ्चाल महीपतिहिजीतिसूत-सुतपुत्र। भो मर्दत पाञ्चालदल चाहि सुजय शुचि सुत्र ॥ भिरि प्रति बिंध्य महीप अरु दुःशासन तेहि राति। घोरयुद्ध कीन्हों तहां अगणित भटन निपाति ॥ सोरठा ॥ भूप शकुनि तोशार नकुल बीरसों भिरितहां। कीन्हों युद्ध अपार बर्षि बिशिष बहुभांतिके ॥ चौपाई ॥ नकुल सुबीरअरुण करिईक्षण। नृपतिहि हन्यो साठिशर तीक्षण ॥ धनुध्वज काटि सारथिहि हतिकै। शकुनिहि हन्यो बाणरिसि अतिकै ॥ लागि बेधिभूपति को हीया। धसो धरणि मधि शर कमनीया ॥ मूर्च्छि गिरत भो शकुनि सुराजा। भे हर्षित पर सुभट समाजा ॥ शकुनि भूपतिहि मू-

र्च्छित देखी। रथलै भगो सूत अवरेखी॥ जीतिशकुनि कहँ नकुलनन-
र्दत। चलो द्रोणपहँ ममदल मर्दत॥ भिरो शिखण्डी सों अरिदरता।
कृपाचार्य्य अद्भुत रणकरता॥ शम्बरशक्र सदृशते भिरिकै। कीन्ह्योंघोर
युद्ध तहँ थिरिकै॥ दोऊ बिदित पुरुष पंचानन। गगन पूरि दीन्ह्यों बर
बानन॥ बाणन करि अगणित शर भगणित। दोऊ दुहुन हनेशरअग-
णित॥ कोपि शिखण्डीहनिशर चोखो। काटि दयो द्विजको धनुनोखो॥
तब कृप तज्यो शक्ति अतिचण्डी। काटिदियोतेहिवीर शिखण्डी॥ गहि
धनुआन बिप्र भटनायक। हन्यो शिखण्डिहि तीक्षण शायक॥ भिदि
तासों मूर्छित ह्वैसोई। परो सुरथपै बिक्रम गोई॥ सुभट शिखण्डिहि
मूर्छित लखिकै। सब पांचाल सुबीर बिलखि कै॥ घेरि शिखण्डिहि
रिसिसों पागे। कृपपहँ शायक बर्षण लागे॥ दोहा॥ सो लखिकै इतके
सुभट कृपहि घेरि अनखाय। उतके सुभटन पहँलगे बर्षण शर समु-
दाय॥ लहि निशीथ बेला बिकट मचोघोर संग्राम। उमँगि बहो शर
रुधिर को सागर सरिस अक्षाम॥ सोरठा॥ मचोघोर संग्राम कर्षत धनु
बर्षत बिशिष। धृष्टद्युम्न बलधाम चलो द्रोणपहँ गरजिकै॥ गुरुतोमर॥
सो मर्दि सुभटन जायकै। द्विज द्रोणपै शर छायकै॥ शरपांच द्विजके
गातमें। भोहनत चरिधनु घातमें॥ तब द्रोण धनुष कशीसकै। तेहिहने
बाण पचीसकै॥ फिरि भल्ल तीक्षण मारिकै। धनुदयो काटि प्रचारि
कै॥ सो धीर बरधनु धारिकै। बध बिप्रके सो बिचारिकै॥ शर परम
भीषम लायकै। भो तजत अति अनखायकै॥ तेहि कर्ण बारह बानसों।
भो काटिदेत सुठान सों॥ शर चाटि सूतज टेरिकै। बहुबाण मार्यो हे-
रिकै॥दोहा॥ अश्वत्थामा पांचशर हन्योद्रोण शर पांच। शल्य हन्यो
नवबाण अरु शकुनि पांच नाराच॥ दुर्योधन शर बीसअरु दुःशासनषट
बान। धृष्टद्युम्नके तनहने भिरि भट सात अमान॥ इन सबके अगणित
बिशिष काटि द्रुपदसुत बीर। सबके तनमें हनत भो तीनि तीनि बर
तीर॥ सोरठा॥ तेहिक्षण धनुटङ्कारि भिरतभयो द्रुमसेनभट। धृष्टद्युम्न शर
मारि बध्यो ताहि सबके लखत॥ चौपाई॥ कर्णहिटेरि शत्रुदलनायक।
काट्यो धनुष मारि बर शायक॥ तुरित और धनु गहि राधेया। बर्ष्यो
तापै बाण अमेया॥ तिमि षटरथी क्रोधसों पूरे। बर्षे तापहँ शायकरूरे॥

धृष्टद्युम्न अति बिक्रमकीन्हों। सबपै बाणजाल रचिदीन्हों ॥ सुनोभूमि-पति तहिथल माहीं। परी भीर अति दलपति पाहीं ॥ सो लखिकै सात्विकि भट गायो। बर्षत बिशिष तुरित तहँ आयो ॥ ताहि प्रचारिकर्ण बढ़ि तुरमें। मारत भयो बाणदश उरमें ॥ सात्विकि त्यहि दशशरहनि हेर्‌यो। अबमति कर्ण मांगु इमिटेर्‌यो ॥ सात्विकि कर्ण बिदित धनुधारी। कीन्ह्यों तहां युद्ध अतिभारी ॥ धनु टङ्कारनसों दिशिभारो। बाणन नभ छादित करि डारो ॥ काटि कर्णके बहुशर बानन। सात्विकि बिदित पुरुष पंचानन॥ बज्रसमान बाणजय देनहिं। मारत भयो बीर वृषसेनहिं ॥ भिदि तासों वृषसेन अमाना। मूर्छित भयो बिदित बलवाना ॥ तेहिगत प्राण सूतसुत जानी। हने अनगिने शर अनुमानी ॥ चेति सूतसुत को सुत क्षनमें। हन्योबाण सात्विकि के तनमें ॥ सात्विकि तिन्हें बाण बहु हनिहनि। काट्यो बिशिष भागुमति भनिभनि ॥ दोहा ॥ पितापुत्र अति चपलते गहि गहि बरकोदण्ड। सात्विकि सुभट अमान पहँ बर्षे बाण उदण्ड ॥ सात्विकि तिनपहँ करतभो शर दुर्दिन त्यहि काल। तुमुल युद्ध कीन्हों तहां तेसब बीर बिशाल ॥ सोरठा ॥ यहि प्रकारभट सर्बरथीगजी पैदर सुभट। हयसादी गहिगर्ब घोरयुद्ध कीन्हों तहां ॥ रोला ॥ पार्थ तिमि गांडीवकी धुनि सकल दिशि में पूरि। बर्षि शायक बधतहो सन्धान प्रति भटभूरि ॥ घोरधुनि गाण्डीवकी सुनिकर्ण बीर बिचारि। करत भो तो तनय नृपसों कुशल हेतु निहारि ॥ मोहिं जानो परत सुनि गाण्डीव को टङ्कार। आजु पारथ करत सब तो सैन को संहार ॥ रुद्रसम सो करत जेहिथल घोरयुद्ध बिहार। होतहै तेहि ठौर ममदल मध्य हाहाकार ॥ सकल पाण्डव प्रबल योधा गर्जिगर्जि सगर्ब। शरन ममदल मर्दि चाहत लेन बिजय अखर्ब ॥ गर्बगहि मम निकट आयो सात्विकी भट एक। घेरि यहि अभिमन्यु सम हम बधब आजु सटेक ॥ द्रोणके ढिग गयो तेहिबिधि धृष्टद्युम्न ससैन। जाहि बधिये उभयभट तौमिलै सुजय सचैन ॥ प्रबल प्रबल सुभटन भेजौ लरत पारथ यत्र। पार्थसों भिरि लरैं तेसब जाय सादर तत्र ॥ पार्थ जौलगि सुनै नहिं इनयुग भटनको घेरि। भेजिकै यमपुरहि जययश लेहिं सब दिशिटेरि ॥ कर्णको मत समुझि तोसुत शकुनि सों तेहियाम। कह्योप्र-

बल सुसैन सह तहँ जाहुतुम बलधाम ॥ दशहजार सुरथी सँग लै तिते द्विरद सवार। दुःप्रधर्षण दुर्विषह सुबाहु बीर अपार ॥ सुभट दुःशासन सहित तहँ जाहु जहँहै पार्थ। बचन यहसुनि शकुनिगो तहँ जानि बिजय यथार्थ ॥ सूतसुत तब सैन सहबढ़ि सात्विकी कहँघेरि। लगे बर्षण बाण सात्विकि भागुमति इमिटेरि ॥ तुरँग सादी रथी इतके गजी भट समुदाय। सात्विकी कहँ घेरि लागे देन शायक छाय ॥ घूमि सात्विकि चक्रसम करि चक्रसम कोदण्ड। बर्षि शरभो बधत हय गज सुभटबीर उदण्ड ॥ शीश करपग शुण्ड धनुध्वजबाणशक्ति समूह। भयो काटत सात्विकी तहँबर्षि शायकजूह ॥ दोहा ॥ प्रतिरथ हयगज प्रतिभटन रचि अबिरल शरसेतु। प्रलय काल समपरतभो सात्विकि जययश हेतु ॥ त्यहिक्षण हाहाकार भो ममदल मधि तेहिठौर। पीड़ित ह्वै ह्वै टरतभे सुभट त्यागि भटतौर ॥ सोरठा ॥ निजदल मर्दित देखि दुर्योधन भूपाल मणि। कह्यो सूतसों तेखि चलु सात्विकि ढिग सुरथले ॥ चौपाई ॥ सोसुनि सूत चपल करिघोरे। गोरथलै सात्विकिकेघोरे ॥ सात्विकि नृपहि देखि रिसि धारो। अति तीक्षण द्वादश शरमारो ॥ भूपति कोपि अरुण करि ईक्षण। हन्यो सात्विकिहि दशशर तीक्षण ॥ तहि थर इत उतके भट गणसों। भूपति मचो युद्ध अति पणसों ॥ भट सात्विकि अरु नृप दुर्योधन। भिरि करिकरि बरधनु बिधि शोधन ॥ छाय छाय शायक दुहुं दिशिमें। घोर युद्ध कीन्हों त्यहि निशिमें ॥ सात्विकि करि लाघव विस्तारो। असीबाण भूपति कहँमारो। तुरगन बध्यो मारिबहु शायक। बधि सूतहि गर्ज्यो दृढ़घायक ॥ तऊभूप तहि रथपैरहिकै। बर्षाबिशिष क्रोधसों नहिकै ॥ नृपके तजे पांचशत बाना। काटि सात्विकी सुभट अमाना ॥ अर्द्धचन्द्रसम शायक मारी। काट्यो नृपको धनुष प्रचारी ॥ तबसो सुरथ त्यागि चलि रथपै ॥ सोइमि नृपहि पराजित करिकै। मर्दत भयो सैनशर झरिकै ॥ जाइ पार्थ पहँ सहित समाजा। युद्ध करत भो सौबल राजा ॥ रथी गजी हयसादी योधा। सुभटपार्थको करि अवरोधा ॥ गर्जि गर्जि अमरषसों पूरे। लगे प्रहारण आयुध रूरे ॥ दोहा ॥ पारथ धनुधर कोपितहँ अद्भुत धनु बिधिठाटि। अगणित कर शर शीश पग डारि देतभो काटि ॥ सब आयुध प्रतिभटन के काटि काटि हनिबाण।

अगणित हयगज भटन कहँ करत भयो गतप्राण ॥ सोरठा ॥ सौबलबीर अमान अरिदल मर्दन पार्थतेहि। मारिबीस बरबान रथ आरोहणिबाण शत ॥ चौपाई ॥ पार्थबीर अति रिसि गहि मनमें। हनिशर बीस शकुनि के तनमें। बधि अगणित हय गज भटपलमें। प्रलय काल रोप्यो तेहि थलमें ॥ कुण्डल कवच किरीट बिभाते। भूरि हार अंगद करि राते ॥ महिगत किये पार्थ धनुधारी। बधिबहु भूपन बाणप्रहारी ॥ इमिबिक्रम करि रिसिबिस्तारो। फेरि पांचशर शकुनिहि मारो ॥ सुवन उलूकशकुनिको ताही। पारथ हन्यो तीनि शरचाही ॥ भट उलूक तब अतिशय रोखो। हन्यो केशवहि शर अति चोखो ॥ काटि शकुनि को धनुभट पारथ। बध्यो तुरँगसब गुणि निजस्वारथ ॥ तब सौबलनृप निजरथ तजिकै। गोउलूकके रथपै लजिकै ॥ ह्वै अतिप्रबल पार्थ रणचारी। मम दल मर्दत भयो प्रचारी ॥ मर्दित ह्वै अति भयसों पागे। त्यागि सुधीर बीर सब भागे ॥ धृष्टद्युम्न द्विजबर सों भिरिकै। घोरयुद्ध कीन्ह्यों तहँ थिरिकै ॥ शायक तीनि द्रोणकहँ हनिकै। काट्यो धनुष भागु मति भनिकै ॥ सादर द्रोणओर धनु गहिकै। बर्षेबिशिष भागुमति कहिकै ॥ द्रोणहि आड़ि बर्षि बहुशायक। बध्यो असंख्यन भट दलनायक ॥ धृष्टद्युम्न सों मर्दित ह्वैकै। ममदलभगो भीतिसों ग्वैकै ॥ दोहा ॥ इमि भीमादिक सुभट मम भटन भगाय भगाय। भेबिलसत रणभूमि मधि शङ्ख बजाय बजाय ॥ इबिधि घोर संगरभयो तेहि रजनी मधिभूप। शोणित की सरिता बही महा भयानक रूप ॥ सोरठा ॥ उभय सैनकेबीच बैतरणी समसो लसी। मेद गूद तहँ कीच हय गज रथभट याद सम ॥ केशव जासु सहाय तासु पार सोई लहै। बिनुप्रभु कृपा सचाय कौन तरै सागर अगम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञा
भिलाषिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासि गोकुलनाथकवीश्वरा-
त्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचिते भाषायांमहाभा-
रतदर्पणद्रोणपर्वणिचतुर्थदिनगतेराचियुद्धेन्द्र
युद्धवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

दोहा ॥ प्रलय करिणि तेहि रजनिमधि बिचलत लखि निजसैन

द्रोणकर्णसोंकहतभो दुर्योधन तजिचैन ॥ जयकरी ॥ तोबिक्रम केवलगहि मैर। हम कीन्हों पांडव सों बैर ॥ सोतुम बिक्रम निज अनुरूप। करत न ममहित हेतुअनूप ॥ जोहम तुम्हैंत्याज्य यहिठौर। तौ तिमिलरौरुचै जेहिडौर ॥ जोहम तुम्हैंत्याज्य नहिं तात। तौ करिये विक्रम बिख्यात॥ दोहा ॥ यहि बिधि बाक प्रतोदसों ह्वै ताड़ित तेहियाम। द्रोण कर्णपर सैनमधि किये अमानुषकाम ॥ करि अति अद्भुत धनुष बिधि रचि अबिरल शरसेत। अगणितहय गजभटन बधि दीन्हों काल निकेत ॥ सोरठा॥ पीड़ित ह्वै तेहिकाल भगत भयो पांचालदल। सो लखि बीर बिशाल भीमगयो तहँ सैन सह ॥ चौपाई ॥ अर्जुन निरखि प्रलय निज दलमें। सादर सदल गयो तेहि थलमें॥ भीमार्जुनहिं जाततहँ देखी। फिरेसुभट सब जय अवरेखी ॥ पूर्ण शशिहि लखि सागर जैसे। उमँगतफिरो शत्रु दल तैसे ॥ भो अतिघोर युद्ध तेहि क्षणमें। जो लखि सुमन मुदित भे मनमें ॥ तहँलखि धृष्टद्युम्न के उरमें। मार्यो कर्ण बाण दश तुरमें ॥ धृष्टद्युम्न अधरथिहि प्रचारी। मारत भयो पांच शर भारी ॥ तेयुग बीर बिदित रणचारी। कीन्हों घोरयुद्ध हठ धारी ॥ अगणित बाण परस्पर मारे। अगणित बाण शरणसों बारे ॥ तहां कर्ण बिक्रम बिस्तारो। तासु तुरँग सूतहि बधिडारो ॥ तौनहुं बधि तुरगन चलि पथपै। गोसहदेवबीर के रथपै ॥ चह्योफेरि सूतज पहँ आवन। आवन दयो न नृपमनभावन ॥ कर्ण मुदित ह्वै शंख बजायो। सूत औरहय रथमें लायो ॥ धृष्टद्युम्नकी हारि निरेखी। सब पाञ्चाल सुभट अति तेखी ॥ कर्ण बीर बर को बध गुनि गुनि। बर्षत भये बिशिष धनु धुनिधुनि ॥ तहां कर्ण अति बिक्रम कीन्हों। क्षणमें तिन्हैं बिकल करिदीन्हों ॥ दोहा ॥ तोमर भल्ल सु अर्द्ध शशि बाण बर्षि पणधारि। अगणित हय गजभटन बधि दीन्हों महि पै डारि ॥ मर्दित ह्वै भट कर्णसों भगे सकल पांचाल। सो लखि अर्जुन बीरसों कह्यो धर्मक्षितिपाल ॥ सोरठा ॥ यहि निशीथ मधि चण्ड ग्रीषम के मार्तण्ड सम। सूतज बीर उदण्ड नाशत मम दल तम निकर ॥ चौपाई ॥ अब तैसो बिक्रम करु भाई। जाते ममदल मारि न जाई ॥ सो सुनि पारथ जय अभिलाषो। सादर श्रीयदुपति सों भाषो ॥ सूतसुवन को बिक्रम देखी। भये सभीत धर्म्म अवरेखी ॥ ताते शीघ्र चपल करि

घोरे। रथलै चलो कर्ण के धोरे॥ सो सुनिकृष्ण कहो सुनु पारथ। यहिक्षणसो कुरुपतिके स्वारथ॥ बिहरत काल करालसमाना। आड़िसकै तेहि को बलवाना॥ तुमकाअसुर घटोत्कच योधा। करिबेयोगतासु अवरोधा॥ पै यह एकसुनो भटनायक। यहि क्षण तुम्हैं न भिरिबे लायक॥ शक्ति अमोघ शक्रकी दीन्ही। लीन्हें वहतो बधहित चीन्ही॥ तातेयहि क्षण असुर अमाना। भिरैं कर्ण सों बर्षत बाना॥ इमि पारथ सों कहि यदुस्वामी। कहो घटोत्कचसों जयकामी॥ तुम बलबिक्रम बुद्धि निधाना॥ मायाबिद धनुधर बलवाना॥ धीरबीर साहसी महाना। शूर असुरपति सरस सुजाना॥ इतै न तुमसम और बिचक्षण। जौनकरै यहि क्षणदल रक्षण॥ कर्ण बाण बर्षत सब दिशिमें। रुद्र सदृश बिहरत यहि निशिमें॥ उभय बंशको गुण अनुसरिकै। तुमतेहि समिति करौ पणधरिकै॥ दोहा॥ पार्थ कह्यो मम सुजयहित भिरो कर्णसों तात। करिहि तिहारो अनुगवन सात्विकि भट बिख्यात॥ कृष्ण पार्थके वचनसुनि असुरकह्यो गहि टेक। कर्णहि जीतन हेतुहौं सदा प्रबल मैं एक॥ सोरठा॥ इमि कहि असुर अमान गर्जि धनुष टङ्कारि कै। बर्षत अबिरल बान चलोकर्ण रणधीरपै॥ चौपाई॥ असुरहि निजपहँ आवतदेखी। हँसि बढ़ि भिरो कर्ण अतितेखी॥ बलि बासव सम भिरि रिसि पागे। तेयुग वीर लरण तहँ लागे॥ तिन्हैं लरत तो तनय निहारी। दुःशासनसों कह्यो बिचारी॥ भिरोकर्ण सों असुर अमाना। मायावी सो अति बलवाना॥ तुमसंग लै बहु युद्ध बिचक्षण। जाय करहु सूतजको रक्षण॥ इतनेमें नृपके ढिगजाई। सुवन जटासुरको बलदाई॥ कहत भयो नृप तो अरि जेते। आजु तिन्हैं हम नाशब हेते॥ अर्जुन ममपितुको बधकीन्हो। हमवह बैर चहत अबलीन्हों॥ यहसुनि दुर्योधन लहि आनँद। कह्यो असुरसों ह्वै अतिमानद॥ द्रोण कर्ण अरुहम सहसेना। बधब पाण्डवन हे जगजेना॥ भीमतनय यह असुर अमाना। हैअति प्रबल बिदित बलवाना॥ ममहित हेतुबधौ तुम ताही। बिकल होहिं सब पाण्डव चाही॥ यह सुनि असुर गर्ब सों रजिकै। भीम तनय पहँ चलो गरजि कै॥ तेहि लखि भीमतनय असुरेशा। त्यागि कर्णसों युद्ध सुभेशा॥ चलो जटासुर के सुत पाहीं। टेरत आजु बचत तू नाहीं॥ सुनि निज बिक्रम भाष्योसोऊ। इमि कहि

सुनि गर्जे भटदोऊ ॥ दोहा ॥ घोर युद्ध कीन्हों तहां युग रजनीचरबीर। दोऊ प्रबल प्रमत्तभट दोऊ अतिरणधीर ॥ माया कीन्हों बिबिधिबिधि भीमतनय बलवान। दिव्य शरनसों वारि तेहि राक्षस सुवनअमान॥ सोरठा ॥ बर्षि असंख्यन बाण व्याकुल करि असुराधिपहि। करत भयो गतप्राण अगणित भट पाण्डवन के ॥ तथा घटोत्कच बीर गर्जि गर्जि करि बाण झरि। असुरहि हनि बहुतीर बधत भयो अगणित भटन ॥ तोमर ॥ बधि असुरके हय सर्ब। हति सारथिहि गहि गर्ब ॥ बहुबाणअसुरहि मारि। भट भीम सुमन प्रचारि ॥ फिरि सूतसुतहि सटंक। भो हनत बाण अनेक ॥ तब असुर रिसिसों छाय। तजि सुरथ सादरजाय॥ भट भीम सुतके गात। भोहनत मूकबिभात ॥ तब घटोत्कच धनुत्यागि। तेहि लपटिगो रिसिपागि ॥ तेउभय योधाशुद्ध। तहँकियो मल्लसुयुद्ध॥ जुटि छूटि फिरि जुटिछूटि। बहु पेंच करिकरि ऊटि ॥ करि मुष्टिकन को घात। तहँ लरे भट अवदात ॥ दोहा ॥ निज बश करि तेहि भीमसुत भयो पछारत भूप। उलटि ताहि ऊपर भयो असुर सुवीर अनूप ॥ वहुरि छूटि आयुध घने बर्षि प्रचारिप्रचारि। घोर युद्ध कीन्हों तहां बर बिक्रम बिस्तारि ॥ भीमतनय अति बिक्रमी गहि तीक्षण तरवारि। काटि शीश तेहि असुरको केश पाणि सों धारि ॥ दुर्योधन के सुरथपै डारि शीश भटचण्ड। फेरिकर्णसों भिरतभो टंकारत कोदण्ड ॥ सोरठा ॥ मत्त मतंग समान भिरि राक्षस अरु कर्णतहँ। कीन्हों युद्ध महान बरषि परस्पर बिशिष बर ॥ चौपाई ॥ दोऊ बिक्रमकेमदमाते। गर्जिगर्जि करिकरि चपराते ॥ सुजय चाहि अति गर्बहि धरिधरि। मण्डल सदृश शरासन करिकरि ॥ रहुरहु खरो न बाचत भनिभनि। अगणित बाण शरासनहनि हनि ॥ दोऊ तुमुल युद्धतहँ कीन्हों। युग दिशि बाण जाल रचिदीन्हों ॥ भये भयददोऊ अतिकोहे। दोऊभरे रुधिरसों सोहे। कर्णबीर गहि अति उत्कर्षा। कीन्हो दिव्यशरनकीवर्षा ॥ दिव्यअस्त्रछांड़तलखि ताही। माया कियो असुर जयचाही ॥ अगणित असुर भूरिभय मांड़त। भांतिभांतिके आयुध छांड़त ॥ चले सूतसुतपहँ करिहूहा। लखि डरपे इतकेभट जूहा ॥ तहां कर्ण अतिबिक्रम करिकै। अबिरल दिव्यअस्त्र परिहरिकै ॥ नाश्यो तिन्हैं व्यर्थकरि माया। नशे बिकार नशतिजिमि छाया। सो निजमाया

निष्फल देखी ॥ बर्षा बिशिष घटोत्कचतेखी ॥ कैयक बाण सूतके तनमें। धसिकढ़िगे महिमधि तेहिक्षणमें ॥ सूतसुवन अति रिस सों ग्वैकै। असुरहि हन्यो बाणदश ज्वैकै ॥ अतिबेधित ह्वै असुर रिसाई। तज्यो चक्र भरि व्योम उड़ाई ॥ देखि ताहि सूतज भट गाया। बाणजालसों काटि गिरायो ॥ दोहा ॥ निजचक्रहि निष्फल निरखिगर्जि घटोत्कचबीर। बर्षत भोभटकर्णपहँ अबिरल तीक्षण तीर ॥ अगणित शायक असुरके काटि घने शर छाय। असुरहि मार्‌यो बाणबहु कर्णबीर दृढ़घाय ॥ सोरठा ॥ मार्‌यो गदा बिशाल असुरताहि काट्यो करण। तब असुरश करालकुदि गगनमधि जातभो ॥ मायामयीमहान रथपहँ राजितह्वे तहां। आयुध वृक्ष पषाण बर्षा कर्ण सुबीर पहँ ॥ चौपाई ॥ तहांकर्ण अति धनुबिधि ठाटो। शायक हनि हनि सोसब काटो ॥ बिरचि बिरचि अबिरल शर सेतू। दीन्हों काटि धनुष रथकेतू। मायावी राक्षस धनुधारी। कीन्हों तहां युद्धअति भारी ॥ सूतज दिव्य अस्त्रबिद चीन्हों। तासों तासुसदृश रण कीन्हों ॥ दोऊ बधिबे को प्रण लीन्हें। दुहुंदिशि शरपंजर करि दीन्हें ॥ नभगत मायाकी असुरेशा। करि बहुबदन भयानक भेशा ॥ सिगरे बाण कर्णके मारे। करि करि ग्रास व्यर्थकरि डारे ॥ फिरि हत समह्वै कौतुक करिकै। गिरि भो लसत भूमिपर परिकै ॥ सोलखि इत सब भट हर्षाने। मरो घटोत्कच निश्चय जाने ॥ निमिषमात्र तिमिरहि प्रण धरिकै। उठो भयानक रूप बितरिकै ॥ सहसन शिरशत उदर कराला। अगणित पग धनु बाहु बिशाला ॥ मन्दर सम बपुधरि भट नागर। मथन लगो मम सेना सागर ॥ सूतसुवन पहँ बर्षत शायक। कहत भयो रजनीचर नायक ॥ सूतज आजु तोहिंबिनु धरणी। करिहों हनि शायक बरबरणी ॥ इमि कहि अट्टहासकरि बलसों। बर्षा बिशिष राक्षसी कलसों ॥ कर्ण सुबीर पुरुष पंचानन। सब शर काटि देत भो बानन ॥ दोहा ॥ व्यर्थदेखि निज बिशिष सब रजनीचर अति तेखि। अति उतंग गिरि होतभो मायाकरि अवरेखि ॥ तासों मुद्गर मुशल अरु पट्टिश शायक शूल। बर्षतभो भट कर्णपहँ राक्षसबीर अतूल ॥ सोरठा ॥ बर्षि दिव्यशर भूरि कर्ण सुयोधा धनुष धर। कियो निमिष में दूरि मयद शैल माया बिशद ॥ चौपाई ॥ तबसो असुर नील घन ह्वैकै।

घुमरि घेरिमढ़ि महिनभ छ्वैकै ॥ गर्जि गर्जि पाहनझरि कीन्हों। सूत सुतहि गोपित करिदीन्हों ॥ तहांकर्ण अतिधीरज धरिकै । दिव्यशरन की वर्षा करिकै ॥ तजि बायव्य अस्त्र अनुमानी। व्यर्थकियो मायाजल दानी ॥ अति अमरषगहि असुर अदाया। कीन्हों प्रगट आसुरीमाया॥ अगणितभेद असुर बलवाना। गजरथ तुरगन चढ़े अमाना ॥ सबदिशि घेरि घटोत्कच बीरा। चले बधन सूतज रणधीरा ॥ कर्णतहां अतिरिस गहि मनमें। तज्यो असंख्यन शायक क्षणमें ॥ काटि कर्णके अगणित शायक। हने पांचशर निशिचर नायक॥ फिरिहनि अर्द्धचन्द्रशरचोखो। काट्यो सूतजको धनु नोखो ॥ सूतज तुरित और धनु गहिकै। बरषो बिशिष भागुमति कहिकै ॥ बिलसे रुद्र त्रिपुरके दलमें। तिमि राक्षस दलमधि तेहि पलमें॥ बिहरो कर्ण प्रबल भट गायो। अगणित अरि यमलोक पठायो ॥ प्रलय कालके अग्नि समाना। लस्यो असुर दल मधि बलवाना ॥ अबिरल सेतु शरनके ठाटत। बहु हयगज भटरथधनु काटत ॥ कार्त्तिकेय सम निशिचर गणमें। लसोकर्ण मनदै जयपणमें॥ दोहा ॥ तेहिक्षण उतके सुभट नहिंसके सूतजहि देखि। बचिबेकीआशा तजे अन्तक सम अवरेखि ॥ मायामें दीरघसुरथ बिरचि घटोत्कच बीर। गरजत तापहँ चढ़ि तज्यो घोर अशनि रणधीर ॥ सोरठा ॥ आठ चक्रयुत जौनि दुइयोजन दीरघ बनी। योजन आयत तौनि अशनि बज्रसम तजतभो ॥ चौपाई ॥ अग्नि बमत तक्षकसम आवत। देखि ताहि सूतज भट भावत ॥ तुरित कूदि तेहि पकरि तरजिकै। फेरि असुरपहँ तज्यो गरजिकै ॥ सोलखि निशिचर अनरथ गुनिकै। कूदि भूमिपर गो शिर धुनिकै ॥ देव रचित सो रथपर परिकै। सहय सूतरथ भस्मित करिकै॥ गई धरणि मधि अशनि महाना। रथपर चढ़ो कर्ण बलवाना ॥ बरषो दिव्य अस्त्र सबिधाना। असुर भयो तब अन्तर्द्धाना ॥ फेरिप्रगट परलय करि दीन्ह्यों। दिव्य शरनकी वर्षा कीन्ह्यों ॥ बर्षि दिव्यशर कर्ण प्रचार्यो। ताके दिव्य अस्त्र सब वार्यो ॥ तब मायावी भट असुरेशा। कीन्ह्यो प्रगट भयानक भेशा ॥ वृक पिशाच पञ्चानन घोरा। यातुधान अति प्रबल अथोरा॥ तेसबदुखद घोरधुनि करिकरि। चले कर्णपहँअति रिस धरि धरि ॥ बर्षि दिव्यशर चषकरि राते। क्षण महँ सूतज तिन्हैं

निपाते ॥ सोलखि असुर महारिस गहिकै । बरषो बिशिष भागु मति कहिकै ॥ यहिबिधिकर्ण भीमसुतभिरिकै । घोरयुद्ध कीन्होंतहँ थिरिकै ॥ दोऊ प्रबल प्रसिद्ध अमाना । दोऊ शिक्षक धनुष बिधाना ॥ बर्षिबर्षि शर दोऊ योधा । किये बायुकीगति अवरोधा ॥ दोहा ॥ मायावी असुरेश को लखि बिक्रम तेहि काल । मनमें अति शंकित भयो दुर्योधन क्षिति-पाल ॥ इतनेमें राक्षस प्रबल बिदित अलायुध धीर । सैनसहित आवत भयो दुर्योधनके तीर ॥ रोला ॥ आइ नृपके पाससो इमि कह्यो गर्बित बैन । किये बहु अपराध मेरे भीमभट बलऐन ॥ बक हिडम्बहि बध्यो ताके बेर यहिनिशि लेन । समय लहिहम आजुआये तुम्हें आनँददेन ॥ सखा सम्बन्धिन सहित सब पाण्डवन कहँ मारि । खाइ हैं सब सखा मेरे महाआनँद धारि ॥ युद्ध तजितो सुभट सिगरे लखैंमम व्यवसाय। बधबहम सब पाण्डवन कहँ घने आयुध छाय ॥ कह्यो नृप रिसभरे ममभट तजहिंगे नहिं युद्ध । लरहिंगे तो संगरहि अनुगमन करि भट उद्ध ॥ प्रबलमाया बली धनुधर घटोत्कच असुरेश । कर्णसोंभिरि प्रलय पूरितकिये ममदल देश ॥ प्रथमतासों युद्धकरि यमलोक गतकरि ताहि । फेरि सब पाण्डवनको तुमनाशकीजो चाहि ॥ बचन यहसुनि गर्जिनिशि-चर नाथ धनुटंकारि । असुर दलसह भीम सुतपहँ चलो बल बिस्तारि ॥ दोहा ॥ सदल अलायुध निशिचरहि निजपहँ आवत देखि । कर्णहिं तजि तासों भिरो भीम तनय अति तेखि ॥ दोऊ राक्षस अति प्रबल मायावी भटउद्ध । महाराज तहँ भिरिकियो अतिशय अद्भुत युद्ध ॥ सोरठा ॥ प्रबल असुरसोंमुक्त कर्ण मोदि बर्षत बिशिष । गर्जत सुगरबसुक्तचलो वृकोदर बीरपहँ ॥ चौपाई ॥ अति प्रियपुत्र असुर रणचारी । प्रबलअसुर बशताहि निहारी ॥ कर्णहिं निदरि भीम धनुकर्षत । चलो अलायुधपै शरबर्षत ॥ भीमसुतहि तजिअसुर अमाना । भिरोभीमसों बर्षतबाना ॥ फेरिघटोत्कच सूतजभिरिकै । लगेकरन अति बिक्रम थिरिकै ॥ सिगरे असुरघोर धुनि करि करि । चले भीमपहँ अति रिस धरि धरि ॥ तहां भीमकर लाघव धारो । पांचपांच शर सब कहँमारो ॥ तासुशरनसों बेधित ह्वैकै । भगे असुर अति भयसोंग्वैकै ॥ दलबिचलत लखिनिशिचर नायक । भीमसैन पहँ बरषो शायक ॥ भीम तहां अति गौरव लीन्हें । असुरनाथ पहँ शर

झरि कीन्हें ॥ जितने शायक तज्यो वृकोदर। सो सब काट्यो बकके सोदर ॥ सो लखि भीम गदागहि भारी। निशिचर पतिपहँ तज्यो प्रचारी॥ उलकासम तेहि निरखि निशामें। निशिचर गरूगदा हनितामें ॥ फेरि दियो करिकै अवरोधा। नवशर बरषो भीम सुयोधा ॥ तिन्हि सो असुर शरनकी बर्षा। कियो भीमपहँ गहि उतकर्षा ॥ पाय अलायुधको अनुशासन। बढ़ि बढ़िलहि सिगरे मनुजाशन ॥ बधिबधि हय गज मानुष रूरे। प्रलय कालपरदल मधिपूरे॥ दोहा ॥ सो लखिसहदेव नकुल अरु सात्यकि बीरअमान। भिरे आसुरी सैनसों बर्षत अबिरलबान ॥ महाराज सुनु असुरपति अति बिक्रम करितत्र। काटि धनुष भटभीम को हयन बध्योहनि यत्र ॥ भीमकूदिकै सुरथ सों तज्यो गदा अति चण्ड। ब्यर्थ कियो तेहिकी गदा राक्षस बीर उदण्ड ॥ सोरठा ॥ कोपि भीमरण धीर तज्यो दुसह अगणित गदा। हनिबहु गदा सुबीर असुर ब्यर्थ कीन्ह्यो सकल ॥ चौपाई ॥ तेयुग बीर महारिस लीन्हें। बढ़ि बढ़ि मुष्टि युद्ध अति कीन्हें ॥ फिरि दुरि दुरिअति रिसि सों नहि नहि। मरे तुरँग गज मानुष गहि गहि ॥ दोऊलगे दुहुनपै डारण। जिमितरु शाखद्विरदपहँ वारण ॥ सो लखि कृष्ण बिजय अभिलाषे। टेरि घटोत्कच सों इमि भाषे॥ तुम सूतजसों रण परि हरिकै। शीघ्र बधौ यहि असुरहि लरिकै ॥ सो सुनि भीमतनय धनुधारी। असुरनाथ सों भिरो प्रचारी ॥ मत्त द्विरदसम दोऊ भिरिकै। घोरयुद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥ भीम और रथवर पहँ चढ़िकै। भिरोकर्ण योधासों बढ़िकै ॥ बधि असुरन सात्यकि रणचारी। अरु सहदेव नकुल भटभारी ॥ मर्दत भटन शरासन कर्षत। सूत सुवन पहँगो शर बर्षत ॥ मम भटमाल शरनसों पोहे। पारथ रहो द्रोणके सोहे ॥ यहि प्रकार योधादुहुं दलके। भिरि भिरिरहे लरतअति बलके ॥ भिरियुग असुर प्रबलछल बलमें। कीन्ह्यों घोरयुद्ध तेहिपलमें॥ गर्जि अलायुध बल बिस्तारो। परिघतासु मूरधमधि मारो ॥ लगेपरिघ कछु मूर्छित ह्वैकै। भीमतनय तेहि असुरहि ज्वैकै ॥ शतघण्टा युतगदा बिशाला। तजत भयो ह्वै अति बिकराला ॥ दोहा ॥ लगेगदा चूरणभये तुरँग सुरथ अरुसूत। तबरथ तजि ऊरधगयो असुर बीर मजबूत ॥ गर्जि घूमिरहि गगनमधि बर्षा रुधिर पषान। सोमाया कीन्ह्यों ब्यरथ भीम-

तनय बलवान ॥ पद्धरी ॥ लखि व्यर्थ निजमाया महान। भट अलायुध निशिचर अमान ॥ आयपरिघ मुद्गर ग दाशूल । शर शक्तिभल्ल आयुध अतूल ॥ गो शीर्ष अयगुड़ भिण्डिपाल । अरु बिबिधि बिधि के तरु बिशाल ॥ भटभीम सुतपहँ दयोपूरि। तब भीमसुत तजि बाण भूरि ॥ करिव्यर्थ तासु माया समस्त। तेहि हन्यो बहुत शायक प्रशस्त ॥ तब अलायुध शायक अनेक। भट घटोत्कचहि हन्यो सटेक ॥ बधिधूमिकरि करि धनु बिशाल। रचिदये दुहुंदिशि बाण जाल ॥ यहिभांतिते युगसुभट उद्ध। नृप कियो तहँ अति घोरयुद्ध ॥ दोहा ॥ मायावी दोऊ कियो माया बिबिधि प्रकार। मायाकरि माया व्यरथ कीन्हीं अगणित बार ॥ तबदोऊ अतिक्रोध कहि गहिगहि करतलचर्म। तुमुलयुद्ध कीन्ह्योंसबिधिज्ञाता अरि रणमर्म ॥ भरे रुधिर श्रमस्वेदसों दोऊ असुर अमान। लसे सुबारि प्रबाहयुत युग गिरि शृंग समान ॥ सोरठा ॥ अति बिक्रम तेहि काल करि हैडम्ब उदग्रभट। काट्यो शीश बिशाल बीर अलायुध असुरको ॥ चौपाई ॥ शीश काटिगहि चिकुर अजोरे। झेलिदियो कुरुपति के धोरे ॥ सो लखि दुर्योधन युतयोधन। जरत बिपिन मधिगोप सगोधन ॥ होत बिकल जिमि तिमिहवै पीड़ित। गुणिनिज कर्मभयो अति बीड़ित ॥ सबपांडव पाञ्चाल सोहाये। मोदि बिजय दुन्दुभि बजवाये॥ जयलहि भीमतनय भटगाढ़ो। ममदलकेसन्मुख ह्वैठाढ़ो ॥ गर्जिगर्जि मृगराज समाना। भटन सभीत कियो बलवाना ॥ प्रलयकाल पूर्यो पर दलमें। करिअतिकोपकर्ण तेहि पलमें ॥ धृष्टद्युम्न उतमौजाराजहि। अरु शिषण्डि सात्यकि भट साजहि ॥ बेधि शरन व्याकुलकरि दीन्हों। अगणितभट यमपुरगतकीन्हों ॥ निजदल मर्दत कर्णहि देखी। दीह सुरथ पहँ चढ़ि अतितेखी ॥ भीमतनयघन सदृश ननर्दत। भिरोकर्णसों सुभटनमर्दत ॥ तेयुगबीर प्रबल रणचारी। घोरयुद्ध कीन्ह्यों पणधारी ॥ अगणितभांतिशरासन कर्षे। बिबिधि भांतिके शायकबर्षे ॥ दोऊ दोउनके शर रूरे॥ काटि भूमि बाणनसोंपूरे ॥ बढ़िबढ़ि दोऊ दुहुनप्रचारे। दोऊ दुहुन बाण बहुमारे ॥ करि मण्डल समधनु मनभाये। दोऊदुहुं दिशि शायक छाये ॥ दोहा ॥ निजसम बिक्रम करत तेहिदेखि कर्णगहि गर्ब। दिव्य अस्त्रसों बधत भो तासु सूतहय सर्ब ॥ बिरथ भीमसुत गगनगत ह्वैकै

अन्तरधान । बर्षा पट्टिश शक्ति शर उलका गदा पषान ॥ खड्ग भल्ल मूशल परिघ तोमर परशु अनेक । अशनि बज्र आयुध घने बर्षत भयो सटेक ॥ सोरठा ॥ तहां कर्ण दृढ़घाय निज रक्षणमें विकलभो । बर्षिबाण समुदायराखिसकोनहिं सकल दल ॥ भुजङ्गप्रयात ॥ रथी मैगलीमैगलै बा-जिसादी । तुरी औरथीपैदरै बीरबादी ॥ अनेकै मरेऔ डरेअंगभंगै । घने भीतपूरे भगत्यागि संगै ॥ अनेकैपरे पाहिरे पाहिबोलैं । घने नैनमूंदेधरे धीर डोलैं ॥ घने मारुरेमारुरे भाषि घूमैं । अनेकै जरे लोहकेझारझूमैं ॥ दोहा ॥यहि प्रकार पार्‌यो प्रलय ममदल मध्यसटेक । मायावी राक्षस प्रबल बरणो जाकहँ एक ॥ प्रगटित ह्वै अगणित असुर बरषे आयुध सर्ब । हाहाधुनि कीन्हें बिकल सिगरे भटतजि गर्ब ॥ सोरठा ॥ क्षण में योद्धा भूरि मरेपरे घायल बहुत । गयो महाभय पूरि सबके मन निज मरण गुणि ॥ चौपाई ॥ जिमि पषाण बर्षत गोयूती । पाय अदृक्ष देश गब्यूती ॥ बिकल होत तेहि बिधि बिनु त्राता । बिकल भयो मम दल बिख्याता ॥ नभते आयुध बर्षत देखी । कहतभये सब भट अवरेखी ॥ पांडव के जयहित गुणि मनमें । बर्षत अस्त्र सुमन यहि क्षनमें ॥ अब जयजीवन की नहिं आसा । असुर सों भागि बचैं केहि पासा ॥ इतने में राक्षस रणचारी । दुस्तर दिव्य सुअस्त्र प्रहारी ॥ बधि सूतजके रथ के बाजी । बर्षे गदा शक्ति की राजी ॥ रथ तजि सूत तनय भट नायक। बर्षि असंख्यन मंत्रिन शायक ॥ काटि काटि सब आयुध फरमो । रहो सधीर नेक नहिं भरमो ॥ तेहि क्षण इतसब नृपति सकाने । कर्णहिं तासों बचन न जाने ॥ टेरि टेरि सूतजसों भाषे । शक्ति बासवी केहि हित राखे ॥ यहि क्षण अब न बचत तुम यासों । पार्थहि कौन बधिहि फिरि तासों ॥ पहिले निज रक्षण करिलीजै । तदनु शत्रु बधको पणकीजै ॥ तातेमारि शक्तिवह भारी । बधोयाहि निज बिजय बिचारो ॥ सुनिसूतज करतब्य बिचार्‌यो । शक्ति अमोघअसुर पहँडार्‌यो ॥ बज्र समान लागि सो आसू । नभगति भई बेधि हिय तासू ॥ दोहा ॥ घूमि गर्जि गत प्राण ह्वै महिगत भो असु श । शतसह भट दबि मरत भे देह गिरो जेहि देश ॥ मोदित ह्वै कौरव नृपति जय दुन्दुभि बजवाय । भयो प्रशंसत सूतजहि रथ पहँ शीघ्र चढ़ाय ॥ सोरठा ॥ असुरहि मरत निरेखि व्यथित

भये पांडव सकल। कृष्णचन्द्र अवरेखि कुशल जानि मोदित भये॥ महिखरी॥ सुरनाथ दीन्हीं शक्ति तासोंमरत असुरहि देखिकै। उठिकृष्ण हँसि हँसि लगे निर्तन क्षेम बिधि अवरेखिकै॥ तहँ मुदित कृष्णहि देखि अचरज जानि इमि अर्जुन कहो। यह महत दुख को समय तहँ केहिहेत तुम आनँद गहो॥ सोकहो जाते मिटै संशय कृष्ण यहसुनि कहत भे। नृप धर्म अब यहि समय तुमकहँ कुशल लहि जय लहतभे॥ यह शक्ति परम अमोघतो बध हेतहो अर्जुनकरे। सो गई अबतुम बचे काभो रजनिचर पतिके मरे॥ तो अजयकी मम हियेसंशय रहीसो यहि क्षण गई। यहिहेत मोदित भयेहमजो चहतहैसो बिधिभई॥ ओहिकवच कुण्डल शक्ति यहि बिनु सूतसुत क्रमसों भयो। सो धर्मनृपको भाग्यतो चिरकाल जीवनक्रम जयो॥ तिन सहित रहतो कर्णतौ यमबरुण सुरपति आदिकै। नहिं पावते जय कबहुं लरि बहु धौंस सरस भ्रमादिकै॥ अब सूतजहि बधि युद्धमें तुम अवांश जय कीरति लहौ। सबभूमि भोगत धर्म नृपतिहि देखि अति आनँद गहौ॥ दोहा॥ जौन जात यहि भांति इत बधि यह असुर अधर्म। तौहमकहँ बधिबो परत करि दुस्तर रणकर्म॥ दुःशासन अरु शकुनि अरु दुर्योधन क्षितिपाल। सब निशिमें राधेयसों कहत रहे लहिनाल॥ दीन्ही शक्ति अमोघ जो शक्रताहि तुम वाहि। बधौ कृष्णकै अर्जुनहिं सादर मम जयचाहि सोरठा॥ पैवह तुम कहँ जोहि भूलि जातहो बचनवह। ममभाया सों मोहिं सुनो भूप सिद्धान्त यह॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्वाम्याभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणिचतुर्थदिवसेराक्षसघटोत्कचवधवर्णनोनामचयोदशोध्यायः॥ १३॥

दोहा॥ भीम तनयको मरणसुनि शक्ति व्यर्थ अनुमानि। कहतभये धृतराष्ट्र नृप सुख बिषाद उरआनि॥ रोला॥ सिंधुपतिके मरणसों रिसि भरे मामकबीर। असुरपतिके मरणसों भीमादिभट रणधीर॥ लरेकिमि सो कहो संजय बचन यहसुनि भूप। कह्यो संजय तदनु जैसो भयो युद्ध अनूप॥ घटोत्कच को बध निरखि अरु बिकल लखि निज सैन।

कह्यो भीमसुबीरसों इमि धर्म नृपतिअचैन ॥ प्रबलङ्क पर सुभट मर्दत सैन मम अवदात। शीघ्र आड़हु तिन्हैं तुम करि बिशद बिक्रम तात॥ घटोत्कच को मरण लखि भो मोहबश ममचेत। भाषि इमि जल तज्यो चषते धर्म धर्म निकेत॥ कृष्णा नृपतिहि देखि बिह्वल कह्यो इमि समुझाय। भूपव्याकुल होहुमति धरिधीर लरहुसचाय॥ तुम्हैं बिङ्कलभये जयबिधि नशिहि यह अनुमानि। दूरि कीजै शोक ताको मरब मंगल जानि॥ कृष्णाके सुनि बचन भूपति पोंछि नयनज नीर। कहोहो मोहिं परम प्रिय यह भीम सुतरणधीर॥ काम्य बनमें जाय यहबहु कियोमम प्रियकाम। गन्धमादन अचल बरपहँ चढ़त यहबल धाम॥ द्रौपदिहि ले कन्धपै तहँ देतहो पहुंचाय। कियो मम उपकार कितनो युद्ध में इत आय॥ बालपनसों मोहिं याको लगत हो अतिक्षोह। रहोहो ममभक्त ताते भयोअतिशयमोह॥ द्रोण दुर्योधन करणये बर्षि बाण बिभात। बरधि मर्दत सैन मम नहिं सहो मोसों जात॥ पाइ अभिमन्युहि अकेलो द्रोणकर्ण अशर्म। काटि धनुबधि तुरग सूतहि काटि खड्ग सुचर्म॥ दये तहँ बंधवाइ तेनहिं गये बँधि अपसोश। सिंधुपति बधिगयो जाको रहो सूक्षम दोश॥ द्रोण सूतज जाहि बधि सो करौ यह ममभंत्र। द्रोण सों भिरि लरत यहि क्षण जाइभीमस्वतंत्र॥ जातहैं हमकर्णसों अब लरन यहिबिधि भाषि। धर्मभूपति सूतसुत पहँ चलो अतिरिसराखि॥ दोहा॥ पांच सहस हयसहस रथ त्रयशत मत्तमतंग। सहित शिपगडी तहँचलो धर्म नृपतिके संग॥ अति अमरष बश कर्णपहँ धर्महिं जात निहारि। आइ तहां नृपसों कह्योन्यास मुनीशबिचारि॥ मरो शक्ति सों असुरसो बचो फाल्गुणबीर। यह विचारि नृपशोक तजि मनमें आनहु धीर॥ सोरठा॥ तुम न कर्णपहँ जाहु पार्थ लरिहि अब कर्ण सों। तुम्हैं बिजय महिलाहु होइहि बीतेपांचदिन॥ चौपाई॥ इमिकहि व्यास मुनीशमहाना। भूपभये तहँ अन्तरध्याना॥ सोसुनि धर्मनृपति अनुमानी। धृष्ट द्युम्नसों कह्योसुबानी॥ कुम्भयोनि द्विजके बधहेतू। द्रुपदहि तुम्हैंदियो वृषकेतू॥ तुम्हैं न नेकु द्रोणसों डरहै। तासुनाश निर्मित सोकरहै॥ ताते सदल जाय यहि क्षनमें। लरो द्रोणसों बधगुणि मनमें॥ सात्यकि सहदेव नकुल ससाजा। द्रुपद बिराट आदि सब राजा॥ सादर जाहु द्रोणसों

लरहू। होइ तासुबध जिमिसो करहू॥ सुनि नृपबचन सकल भट नायक। चले द्रोणपहँ बर्षत शायक॥ तिन कहँ देखि द्रोण धनु करषो। सबपहँ अबिरल शायक बरषो॥ ससैन दुर्योधन बढ़ि तक्षण। लागे करन द्रोणको रक्षण॥ इतने में युगयाम त्रियामा। भई बितीत काल निशि नामा॥ अति निद्रित ह्वै नर हय हाथी। सकैं न देखि शत्रुअरु साथी॥ श्रम निद्राबश ह्वै दुहुं दलके। हयगज सुभट गणे बरबलके॥ चेति न सकैं युद्धकरि नेकौ। बाहिन सकै सुआयुध एकौ॥ झुकैं चेति उझकैं झुकि उझकैं। परि निद्राबश भये असुझकैं॥ अति निद्राबश परि परि गाढ़े। गुणि कुलरीति रहे तहँ ठाढ़े॥ दोहा॥ अति निद्रित दुहुसैन के हय गज सुभटन हेरि। समय जानि अति दयागहि कह्यो धनंजय टेरि॥ अति निद्रितह्वै सुभट सब करि न सकत रणकर्म। लखि ज्यों कुरुपति सहितसब नृपमानहुं गुणि मर्म॥ बोरठा॥ तौसबभट समुदाय ऐसेही थिररहि इते। निद्रालेहिं गँवाय फिरिलरिहैं शशिउदय लखि॥ जयकरी॥ तेहिक्षण अर्जुनके येबैन। सुनि सब सुभट लहेअतिचैन॥ सब कोउ कीन्हों यह सिद्धान्त। पार्थहि लगे प्रशंसन दान्त॥ सिगरे योधा युद्ध बिहाइ। शयन करन लागे क्षण पाइ॥ हयपहँ हयसादी रणधीर। रथपहँ रथी सारथी वीर॥ गजपहँ भटगजस्थ समुदाय। निद्राबशह्वै रहे सचाय॥ झुकि कुम्भन मधि दैउरभार। सोयरहे गजवान उदार॥ जिमि उतंग उरजन उरलाय। कामी सोयरहैं लपटाय॥ महिपहँ परे पदाती जूह। सुपत भये तहँ सुभट समूह॥ धरे सकल आयुध सन्नाह। सोयरहे सबरण महि माह॥ इतनेमें पूरुबदिशि भूप। उदयभयोनिशि नाथ अनूप॥ अंशु नखनयुत अमल अमान। नभबनचारी सिंहसमान॥ गज गणसम तमतुंग बिनाशि। चलो प्रतीचीदिशि छबि राशि॥ लखि प्रकाश जगि सुभट समस्त। करन लगे फिरियुद्ध प्रशस्त॥ जेहिबिधि पथिक यूथलखि भोर। गहि गहि सुपथ चलत सब ओर॥ जायद्रोण के ढिग तेहिकाल। कहतभयो तोसुत क्षितिपाल॥ क्षणक्षण घटतजात मम सैन। प्रबलहोत पाण्डव बलऐन॥ दोहा॥ जोहैं याको हेतसोहम अब कहत पुकारि। बिक्रम निज अनुरूप नहिं आपु करत प्रणधारि॥ को ऐसो धनुधर लरै जो तो सम्मुख आय। आपुचहैं बध जासुसो लरि

कैसे बचिजाय ॥ सोरठा ॥ दिव्य अस्त्र समुदाय के ज्ञाता परसिद्ध तुम। कर्णहिं लरि मनलाय लेत बिजय बधि शत्रुदल ॥ चौपाई ॥ यह सुनि द्रोण क्रोधगहि मनमें। कह्यो भूमिपतिसों तेहि क्षनमें ॥ नृपहम बिप्र दृढ़ धनुधारी। यथापराक्रम लरत बिचारी॥ बिजय न काहूकआधीना। बिधिकृत होत कहत कालीना ॥ तिहुंपुर में असको दृढ़ घायक। जौन पार्थकहँ जीतनलायक ॥ जब जार्‌यो खाण्डववन पारथ। सके न आड़ि शक्र गुणि स्वारथ ॥ चित्रसेन आदिक गन्धर्बन। जीत्यो सुभट धनंजय शर्मन ॥ जे निबात कवची रण चायक। जिन्हैं न जीति सको सुरनायक ॥ तिन कहँ बध्यो धनंजय रनमें। हैयह बात बिदित सब जनमें ॥ दानव दल हिरण्यपुर बासी। तिन्हैं बध्यो सोयुद्ध बिलासी ॥ लह्यो असुर सुरसों जय ऐसे। नृप तेहिजीतै मानुष कैसे ॥ इमि पूरितगरिमा धनु गुनकी। सुनि द्विजसों अस्तुति अर्जुनकी ॥ क्रोधि कह्यो दुर्योधन राजा। हम अरु कर्ण शकुनि सह साजा ॥ अबिरल बाण बरषि सब दिशिनें। पार्थहि आजु बधबयहि निशिमें ॥ सुनि नृप बचनद्रोण हँसि भाषे। यहै उचित जोतुम अभिलाषे ॥ तुमतीनों अनर्थके कारण। करो पार्थ बधको पण धारण॥ पैनहिं असभट रच्यो बिधाता। बधै ताहि जो धनुबिधि ज्ञाता ॥ दोहा ॥ निज जयहित तुम सैनसह लरो पार्थसों जाय। हम नाशब पांचालदल करिअतिशयव्यवसाय ॥ इमिकहिसुनि ह्वैयथकरि दुर्योधन अरु बिप्र। चले पार्थ पाञ्चालपहँ आयुध बर्षतक्षिप्र सोरठा ॥ बढ़ि पांडव पाञ्चाल भिरि तिनसोंबर्षे बिशिष। अनुपम शायक जाल बिरचतभे तेहिक्षण तहां ॥ चौपाई ॥ तब रहिशेष रजनिछबिछाई। पूरबदिशि पशरी अरुणाई ॥ अद्भुत युद्धभयो तेहि पलमें। घोर शब्द माचोदुहुं दलमें ॥ तेहिक्षण कृष्णचन्द्र रणचारी। मम दक्षिणदिशि गये बिचारी॥ तहँपारथ बिक्रम बिस्तारो। प्रलयकाल ममदल मधि पारो॥ सो लखिकर्ण शकुनि दुर्योधन। शरबर्षे करि धनुबिधि शोधन ॥ काटि सकल शरतिनके डारे। पार्थ तिन्हैं दशदश शरमारे ॥ ते पारथ पहँतिन पहँ पारथ। अबिरल शर बर्षे गुणि स्वारथ॥ तेहिप्रकार सब योद्धाभिरि भिरि। घोरयुद्ध कीन्ह्यों तहँ थिरिथिरि ॥ तेजबायु महँ रजकन जैसे। उड़त सुभट शर बर्षे तैसे॥ मारे कितै मरेभट केत। बहु ह्वै बिरथमल्ल

रणहेते ॥ बहु बिनुरथ धनु ह्वै रिसिपागे। गहि असि चर्म लरन तहँ लागे ॥ ह्वै बिनु बाहन कितने योधा। किये सबाहन को अवरोधा ॥ साथहि शर हनिहनि मरिमरिकै। कितेलसे महिपै परिपरिकै ॥ गर्जत किते धनुष टङ्कारत। बिलसत भये भटन संहारत ॥ बिनु हय गज ह्वै ह्वै तजि बाहस। कितने सुभट भये बिनु साहस ॥ धनुष करषि शर तजन न पाये। भिरि मरि किते भूमिपै आये ॥ दोहा ॥ मारोमारुबचाय यह शब्द रह्यो तहँपूरि। बिनुकर शिर पगहोतभे हयगज योधाभूरि ॥ उत्तर दिशिपर भटन सों भिरि द्विज बीर अचार्य। मंडल समकोदंड करि कियोअमानुष कार्य ॥ सोरठा ॥ अबिरल शायकछाय कम्पितकीन्हों पर शयन। हयगज भट समुदाय अंग भंगकरि बेधि बधि ॥ चौपाई ॥ दावानल सम परदल बनमें। बिलसतभयो द्रोण तेहिक्षनमें ॥ जितने सुभट सामुहें आये। ते मनुभये कालके खाये ॥ कितने सुभट शत्रु दल केरे। इत उत भगे न सम्मुखहेरे ॥ भिरे प्रचारि क्रोधबश केते। होहिं अनलगत तृणसम तेते ॥ इमि निजसेना मर्दत देखी। भिरे बिराट द्रुपद अति तेखी ॥ तीनिपउत्र द्रुपद नरपति के। हैंप्रसिद्धयोधा बलअतिके ॥ तेशरवृष्टि द्रोणपहँ कीन्हें। तिन्हैं बध्योद्विज हनिशर चीन्हें ॥ सो लखि तेयुगनृप नरनायक। द्रोणबिप्र पहँबरषे शायक ॥ काटि काटिबहुबाण अनोखे। तिन्हैं हन्योद्विज बहुशर चोखे ॥ हनिबिप्रहि बहुबाण प्रचारी। बिकल कियो ते नृप रणचारी ॥ तहां द्रोण अति धनुबिधि ठाटे। द्रुपद बिराटके रथधनु काटे ॥ तुरत बिराट और धनुगहिकै। दशशरहनेभागु मति कहिकै ॥ तड़िता सरिश भयानक भेषा। शक्ति चलायोद्रुपदनरेशा ॥ एक एकमें बहुशर हनिहनि। द्रोणाचारय काट्योगनिगनि ॥ फिरियुग भल्ल हन्यो अति तुरमें। द्रुपद बिराट भूपके उरमें ॥ तिन सों बेधित ह्वैते राजा। गेसुरपुर तजि सैनसमाजा ॥ दोहा ॥ द्रुपद बिराटहि मरत लखि परदल भट समुदाय। हाहाकीन्ह्यों त्रसितह्वै गुणिद्विज को बेवसाय ॥ बिबिधि भांतिके दिव्य शर बर्षत द्रोणहिं देखि। धृष्टद्युम्नअति क्रोध गहि शपथ दिव्य अवरेखि ॥ सोरठा ॥ हटै द्रोण सों जौन अरु जो द्रोणहिं नहिंहनै। अवशि होइगो तौन बुद्धिइष्ट निजधर्म्म बिनु ॥ चौपाई ॥ इमि कहि धृष्टद्युम्न रणचारी। सदल द्रोणसों भिरो प्रचारी ॥ सो लखि

कर्ण शकुनि दुर्योधन। बढ़ि तिनको कीन्होंअवरोधन॥ सो लखि भीमसेन गुणि मनमें। कह्यो द्रुपद सुतसों तेहि क्षनमें॥ बधितो पिता पुत्र आचारय। दलमर्दत कुरुपतिके कारय॥ शपथ तासु बधको तुमकीन्हों। अबकेहि परिखत ऋजुता लीन्हों॥ अब हममर्दि शत्रुदल दीहा। जात द्रोणपहँ गहिजय ईहा॥ जिमिहम लरत द्रोणसों भिरिकै। सो अबतुम निरखौ इत थिरिकै। इमि कहिकै घनसदृश ननर्दत। चलो द्रोण पहँ ममदल मर्दत॥ धृष्टद्युम्न कोदंडहि कर्षत। चलोतासु सँगशायक बर्षत। द्रोणानीक मध्यते धसिकै। गजगण मधि केशरि समलसिकै॥ घोरयुद्ध कीन्हों तहँराजा। बधे असंख्यन सैनसमाजा॥ तिमिसिगरे इत उतके योधा। बढ़ि बढ़िभिरि करि करि अवरोधा॥ तजि तजि बचिरहिबे की आशा। कीन्ह्यों अद्भुत युद्ध बिलाशा॥ भो चट चटा शब्द तहँ गाढ़ो। लगो दवा बनमें जिमिडाढ़ो॥ रबिके उदय होत तहँ जैसो। भीषमयुद्ध भयो नृप तैसो॥ इत कोउ लख्यो सुन्यो नहिं कबहूं। देख्यो सुन्यो परत नहिं अबहूं॥ दोहा॥ श्रीसीतापति रामकहि सरुचि ध्यानकेकाल। जीव असंख्यन देहतजि पाये लोकबिशाल॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणिराचियुद्धसमाप्तिर्नामचतुर्दशोध्यायः॥ १४॥

दोहा॥ चौथेदिनकी निशिबिते पाय भयानकभोर। उभयसैनके सुभट भिरियुद्धकिये अतिघोर॥ रथी रथिनसों भिरतभे गजी गजी सरदार। पैदर पैदरसों भिरे तुरग तुरग असवार॥ चौपाई॥ बन्धुनसह दुर्योधन राजा। भिरे नकुल सहदेव ससाजा॥ भिरोभीमसों कर्णसुयोधा। भिरो पार्थसों द्रोण सक्रोधा॥ यहिबिधि सुभट परस्पर भिरि भिरि। घोरयुद्ध कीन्ह्योंतहँ थिरि थिरि॥ घनसमाननभ आयुधछायो। निशिसम अन्धकार महिआयो॥ अतिशयघोरशब्द भो पूरित। बही रुधिरकी नदी अधूरित॥ तेहिक्षण दुःशासन धनुधारी। माद्री सुत सों भिरो प्रचारी॥ माद्री सुत सहदेव अमाना। बध्योतासु सूतहि हनिबाना॥ बिना सूतसब हय भय पागे। रथलै इत उत दौरन लागे॥ भट सहदेव हन्यो तेहिक्षन में।

अगणित शर तोमुत के तनमें ॥ दुःशासन अति तुरता लीन्हों। बागप-
करि तुरगन बशकीन्हों ॥ भीम कर्णपहँ शर झरि करिकै। हन्यो तीनि
शायक पणधरिकै ॥ बधितह्वै सूतज बलवाना। भो पग परशित उरग
समाना ॥ सुभट भीम पहँ शायक बर्षा। सो लखिदुर्योधन अति हर्षा ॥
दोऊ प्रबल गने दुहुंदल में। घोरयुद्ध कीन्ह्यों तेहिथल में ॥ दोऊ गदा
दुहुनपै डारे। दोऊगदा गदनसों वारे ॥ भीम कोपि बर गदा चलायो।
करण शरणसों ताहिगिरायो ॥ दोहा ॥ भीमगर्जि फिरितजतभो गदाकर्ण
तेहिदेखि। हनिमंत्रित अगणित बिशिष पलटाई अवरेखि ॥ परी भीम
के सुरथपै मंत्रित उरग समान। ध्वजाभंगभो भीमको मुर्छितसूत सुजा-
न ॥ सोरठा ॥ तब गहि धनु हनिबान भीमसेन अति प्रबल भट। काटत
भयो महान धनुष ध्वजाभट कर्ण को ॥ चौपाई ॥ तुरतहि कर्ण और धनु
गहिकै। शायक बर्षिभागु मति कहिकै ॥ उभय पासके सूतन मार्‌यो।
तुरगन मारि भूमिपै डार्‌यो ॥ भीमकूदि द्वैडग धरि पथपै। सादर गयो
नकुलके रथपै ॥ यहि बिधिद्रोण पार्थ धनुधारी। कीन्ह्यों तहां युद्धअति
भारी ॥ क्षत्री ब्राह्मण शिष्य अचारय। कीन्ह्यों तहां अमानुष कारय ॥
मण्डल सदृश शरासन करि करि। फिरत चक्रसम रथपै चरि चरि ॥
अतिशयतुमुलयुद्ध तहँ कीन्हें। सबकेमन बिस्मित करिदीन्हें ॥ गर्जि २
अति रिससों पूरे। बर्षत भयेदिब्य शररूरे ॥ तजेअचार्य्य दिव्यशरजेते।
पारथ मारिदिब्य शरतेते ॥ बार्‌यो द्विजबरके शर सिगरे। पृथक् पृथक्
कहि जात न निगरे ॥ यहि प्रकार दोऊ धनुधारी। कीन्ह्यों तहां युद्ध
अतिभारी ॥ लखि गन्धर्ब सुमन मुदराखे। इमिबहु बार परस्पर भाखे ॥
कबहुंन देवदनुज नरकोऊ। लरेलरत जिमियेभट दोऊ ॥ जोशिव आपु
दोयतनधरिकै। युद्धकरैं अति रिससों भरिकै ॥ तौ इनके लरिबेकी स-
मता। मिलैनतरु है सबमें कमता ॥ नहिं अबऐसे योधा ह्वैहैं। फेरि न
ऐसो संगर ज्वैहैं ॥ दोहा ॥ यहि प्रकार दोऊ सुभट महा क्रोधसों पूरि।
कियो घोर संग्राम तहँ बर्षिदिब्य शरभूरि ॥ यहिप्रकार लरिभिरि
तहाँ सिगरे भटसमुदाय। बधिहय गज नर रुधिर की नदी दई उ-
मगाय ॥ सोरठा ॥ इबिधि घोर संग्राम मचे शरासन करपिकै। दुःशासन
बलधाम धृष्टद्युम्न सों भिरत भो ॥ चौपाई ॥ धृष्टद्युम्न अनुपम रणचारी।

ताहि असंख्यन बाणप्रहारी ॥ बिचलित करिघन सदृश ननर्दत। चलो द्रोण पहँ ममदल मर्दत ॥ तासों भिरत भयो कृतबर्मा। अरु तुम्हार त्रयपुत्र अभरमा ॥ सहदेव नकुल तासु सँग लागे। हैतहँ लरत बीर रस पागे ॥ घोरयुद्ध माचो तेहिपलमें। मरे असंख्यन भट दुहुंदल में ॥ सो लखि दुर्योधन धनु कर्षत। चलो द्रुपद सुतपै शर बर्षत ॥ तेहिक्षण कोपि सात्यकी योधा। बढ़िताकोकीन्हों अवरोधा ॥ देखि सात्यकिहि तो सुत भूपा। कहत भयो इमि बचनअनूपा ॥ हम तुम सखा बालपन केरे। कल न रहत हेरहे अनेरे ॥ सो अब इमि भिरि करतलराई। त्यागि त्यागि सब नेह सगाई ॥ धिगधिग धिग क्षत्रिनके कर्महिं। धिग अमर्ष अरुक्रोध अधर्महिं ॥ जेहि बशह्वै मित्रनसों लरनो। परत परत अति अनरथ करनो ॥ सुनि बोलो सात्यकि रणचारी। सुनुहे राजपुत्र धनुधारी ॥ नहियह राजसभा छबिवरहै। नहिं द्रोणाचारयको घरहै ॥ यहरण क्षत्रिनके हितकारी। देनहार सुरपुर फलचारी ॥ क्षोहमोह नहिं इतभल भाई। हैइत मारब मरब भलाई ॥ दोहा ॥ इतको हित हठिमित्र कहँ बधिदीवो सुरलोक। यहगुणि ममबधहित करहु बिक्रमहे बलओक ॥ यहसुनि भूपति मोहतजि गहि अति क्रोध सगर्व। गर्जि सात्यकी सुभब पहँ बर्षो बिशिष अखर्ब ॥ सोरठा ॥ दोऊ अबिरल बान दोउन पै बरषे तहां। कियो घोरघमसान दोऊ योधा प्रबल भट ॥ जयकरी ॥ दोऊ अद्भुत धनु बिधि ठाटि। अगणित बाण परस्पर काटि ॥ अगणित बाण दुहुनके गात। मारे दोऊ भट अवदात ॥ दोऊ बिदित बीर बल धाम। कीन्हों तहां घोर संग्राम ॥ सात्यकिके बाणनसों पीड़ि। दुरि निजदल मधि भूपति ब्रीड़ि ॥ फिरि ह्वै स्वस्थ सामुहेजाय। युद्ध करन लागे शर छाय ॥ कर्ण भूपतिहि समित निरेखि। चलो सात्यकी पहँ अति तेखि ॥ सोलखि गरजि भीम बलवान। भिरो कर्णसों बर्षत बान ॥ भीम कर्ण योधा अति उद्ध। कीन्होंतहां भयानक युद्ध ॥ सूतज कोपि काटि धनुतासु। गरजो मारि सारथिहि आसु ॥ तब हनि गदा भीमभटबक्र। तोरो एक तासु रथ चक्र ॥ एक चक्र युतरथपै धीर। रबि सम राजिसूत सुत बीर ॥ रहि निहशंक करषि कोदण्ड। बरषतभयो बाणअतिचण्ड ॥ धनुधरि भीम क्रोधसों पूरि। तज्यो कर्णपहँ शायक भूरि ॥ दोऊ बिक्रम

बुद्धि निकेत। बिरचे अबिरल शायक सेत॥ तिमि इत उतके योधासर्ब। रचत भयेतहँ युद्ध अखर्ब॥ पारथ आदि शत्रुदल जैन। लरि लागे मर्दन ममसैन॥ दोहा॥ धृष्टद्युम्न आदिक प्रबल जे योधा पांचाल। ते सिगरे भिरि द्रोण सों कीन्हों युद्ध बिशाल॥ दिव्य अस्त्र समुदाय को शीक्षकद्रोणाचार्य्य। सुनोभूप तेहिसैनमें कियोअमानुषकार्य्य॥ सोरठा॥ बर्षि दिव्यशर भूरि अगणित हयगज भटन बधि। दियो कालदिनपूरि बिचरि काल बिकराल सम॥ रोला॥ बिकल ह्वै पांचाल भटतहँ किये आरत नाद। पूर्ब सिन्धुहि मथत जैसे व्यथित भे सबयाद॥ द्विजहि बर्षत दिव्यशर लखि बिकल निजदल देखि। पार्थ सों इमि कहत भे यदुनाथ प्रभु अवरेखि॥ द्रोण करि झरि दिव्य शरकी बधत अब सब सैन। जीति ता कहँ बधै जगमें कौन अस जगजैन॥ सुजय हित धनु गहे जौलगि लरत द्रोणाचार्य्य। नहीं तौलगि सिद्ध ह्वैहै धर्म नृप को कार्य्य॥ एक याके मरण की है यत्न सुनिये तौन। पुत्र को सुनि मरण जब धनु तजैयह बलभौन॥ बधै यहितब द्रुपद सुतभट धृष्टद्युम्नअमान। कृष्ण के ये बचन सुनि कै भीम करि अनुमान॥ बाहि गरुई गदाबिधि कै द्विरद अश्वत्थाम। बध्यो अश्वत्थाम कहँ इमि कियो शब्द अछाम॥ द्रोणसों सुनि क्षोहबश कछु मोह मन महँ ल्याय। फेरि धीरज गह्यो गुणि निज पुत्रको व्यवसाय॥ जानि मिथ्यातासु जल्पन महारिससों पूरि। तजतभो पांचाल दल पै दिव्य शायक भूरि॥ ब्रह्म अस्त्र प्रयोग करि बधि रथी बीस हजार। सहसगज बधि बध्यो अयुत सुबीर तुरँग सवार॥ मल्लसों बसुदान नृपको काटि शीशसडौर। पंचशत भट मत्स्थरके बधतभे तेहि ठौर॥ सुभट संजय देशके षटसहस बधि तेहिकाल। कियो भीषम रूप धरणिहि द्रोणबीर बिशाल॥ करत दावानल सदृश तरु क्षत्रियन को नास। देखि द्रोणहि आइ नभपै ऋषय ताके पास॥ अत्रि विश्वामित्र गौतम जामदग्नि महान। औरविश्वामित्र कश्यप आदि सुमुनि सुजान॥ द्रोणसों इमिकहतभे तुम करत युद्ध अधर्म। नहीं तुमकहँ उचित ऐसे करब अनुचित कर्म॥ दिव्य अस्त्र अमोघके जे नहीं जानत भेद। दिव्य शरसों बधत तिन्हहिं न गहततुम निरवेद॥ दोहा॥ प्राप्त भयो तो मरन दिन अब मति करो अधर्म। तजि आयुध साधन

करहु देह पतनके कर्म॥ मुनि गणकेयेबचन सुनि द्रोण बिप्र अनुमानि। सुतबध बूझो धर्मसों अति सतबकता जानि॥ सोरठा॥ तेहि क्षणश्रीयदुराय जाय निकट नृप धर्मके। कहत भये समुझाय बिजय अजय तो हाथअब॥ रोला॥ आजु जीयत बचहिजो भट द्रोणतौ बलऐन। दिव्य शायक बर्षि तुमकहँ करिहि अवशि असैन॥ इतौ मिथ्या कहौसोऊ धर्म को उपचार। भूप ताते बाचि हैं इतजीव कइक हजार॥ कृष्ण के इमि कहत बोले भीम बचन अनूप। जौन मालवदेशको पतिइन्द्र बर्मनभूप॥ रहो अश्वत्थाम नामक तासु द्विरद अमान। ताहि बधिहम आजु ऐसो कियो शोर महान॥ मारि अश्वत्थामकहँ हम दियो महिपै डारि। द्रोण नहिं परतीति कीन्हों मोहिं झूंठ बिचारि॥ सुनोतातेकहत केशव ताहि गुणिहित आम। द्रोण सों तुम कहौ मारोगयो अश्वत्थाम॥ भीम के ये बचन सुनिकै धर्म नृप अनुमानि। सुखद शासन कृष्ण को करतब्य अतिशयजानि॥ गहे भीम असत्यको गुणि सत्यजयकोहेत। द्रोणसोंइमि कहतभे नृप धर्मधर्मनिकेत॥ दोहा॥ अश्वत्थामा बधिगयो इबिधि पुलित स्वर भाखि। कुंजर इमिफिरि कहतभो ऋजु उचार ढिगराखि॥ नृपके ऐसे बचनसुनि द्रोण सांच अनुमानि। पुत्र शोकतें बिकलभे निज मरिबो उरआनि॥ सोरठा॥ द्रोणहिं बिकल निरेखि धृष्टद्युम्न पांचालपति। बध करिबो अवरेखि शरअमोघयोजित कियो॥ चौपाई॥ ज्वालजाल समदीप्त कराला। लखिसो दिब्य सुबाण बिशाला॥ तासुबारिबेमें रहिसयतन। बार्योद्रोण मारिशरबरतन॥ भिरि दोऊभट अमरषलीन्हें। दिब्यशरनकी बर्षाकीन्हें। द्रोणतहां अति धनुबिधि ठाढ्यो। शरसों तासुधनुष ध्वज काट्यो॥ धृष्टद्युम्न तबबर धनु धारी। बेध्यौ द्विजहि मारि शर भारी॥ द्रोण फेरि बरभल्ल प्रहारी। काट्यो धनुवर तासु प्रचारी॥ फेरि बर्षि शायक अनियारे। बंधिहय तासु भूमिपहँ डारे॥ बिरथ बिधनु तब सों भट ह्वैकै। गहि असिचर्म क्रोधसों ग्वैकै॥ करत पैतरे एकइसबिधिके। चालो रचत बाणभट सिधिके॥ सो लखि द्रोण बीर बलधामा। तज्यो अस्त्र बैतस्तिक नामा॥ नृप तेहिक्षण सात्यकि भटनायक। काट्योताहि मारिदश शायक॥ लखि सात्यकिको कर्म अमानुष। भये प्रशंसत सिगरे धानुष॥ काटिअस्त्र बैतस्तिकनामहि। लियोबचै दलपति बलधामहि॥

तब कृपकर्ण भूप दुर्योधन। कोपितासु कीन्हों अवरोधन॥ अरु भटबि-ष्वक्सेन अमाना। घेरिलगे बर्षण बर बाना॥ तेहिथर सात्यकि सबसों भिरिकै। घोरयुद्ध कीन्ह्यों तहँथिरिकै॥दोहा॥ तेहिक्षण बन्धुन सहित बढ़िधर्म महीप अमान। कर्णादिक सों भिरत भे बर्षत अबिरल बान॥ धृष्टद्युम्न अरु द्रोणतहँ धनुधुनि सों दिशिपूरि। घोरयुद्ध कीन्हों तहांबर्षि दिव्यशर भूरि॥ सोरठा॥ द्रोणाचार्य्यहि देखि अतिदुस्तर बिक्रमकरत। भीमसेन अवरेखि कहत भये द्विजद्रोणसों॥ रोला॥ हेत कुरुपति भूपके तुमकिये बहु बेवसाय। बिप्रअब कतनिठुर ह्वैइमि बधतभट समुदाय॥ पुत्रको सुनिमरण अबहूं गहतनहिं निरबेद। जासु मरिबो सुनेभो मम भटनहूं कहँखेद॥ परम धनुधर प्राणसम प्रियपुत्र तासुबिनाश। सुनेहु अब निज जीयबेकी गहेहौ तुमआश॥पञ्चदशकम बरिषशत यहिभूमिपै करि भोग। तरुण सुतको मर्णसुनि नहिं तजतशस्त्र प्रयोग॥ भीमको सुनि बचनद्विज अतिशोकसों ह्वै ग्रस्त। कर्णकृप तो तनयनृपसों कह्यो बचन प्रशस्त॥ सुजयहित सब पाण्डवनसों लरेहु सबलसयत्न। होइ तुव कल्याण पावो बिजय अनुपम रत्न॥ तजत हैं हम अस्त्र ऐसो भाषि योधा बिप्र। धनुष आदिक अस्त्र रथपै राखिदीन्हों क्षिप्र॥ परम योगी योगबिधिसों साधि प्राणायाम। ध्यानधरि परमात्माको लसतभोअभि-राम॥ समय लहि तब धृष्टद्युम्न सुखड्ग गहिरथ त्यागि। बेगसों चलि द्रोणके ढिग गयो बधहित लागि॥ जाय ताके सुरथपै तेहिखड्ग बाहत हेरि। बधौ मति गहि जियत ल्यावो पार्थ भाष्या टेरि॥ क्रोधबश सुत द्रुपदको नहिं सुन्यो सो आह्वान। काटि असिसों शीश द्विजको नदत भो बलवान॥ केशगहि सो शीशदीन्हों झेलि ममदल माह। देखि सो इतकिये हाहाकार सब नरनाह॥ सुभटवर्ग बीर तेऊभगे तजिउत्साह। यथा टूटत बांध के कढ़ि चलत बारि प्रबाह॥ द्रोण जाय नक्षत्र पथपै लहोस्वर्ग अनूप। ब्यासमुनिकी कृपातेसो लख्योहम हेभूप॥ शल्यकृप वृषसेन शकुनि उलूक अरु कृतबर्म। भगेगहि अति भीमभट दुःशासना-दिकपर्म॥ चेदिकेकय अरु प्रभद्रक सह शिषण्डी बीर। रहो तिनसों लरत अनतहि द्रोणसुत रणधीर॥ तहां सो यहि ओर सुनि अति घोर शब्द समाज। जानि बिचलत फौज नृप की दुचित ह्वै द्विजराज॥

कछुक लहि अवकाश उतसों भूपके ढिगआयाकह्योसेना भजतिकत कत दुचित नृप समुदाय ॥ शोक पूरित भूपनहिं कहि सको गहि अतिलाज। कह्यो कृपसों कहौ जैसोभयो अनरथकाज ॥ बचन यहसुनि कृपाचारय कह्यो क्रमसों सर्ब। गयो बधि जिमि धनुर्धर मणि द्रोण बीर अखर्ब ॥ मरण सुनिनिज जनकको ह्वै बिकल अश्वत्थाम। धीर धरिफिरि गहत भोअति क्रोधबल बुधिधाम ॥ दुन्दुभी बजवाइ योधन सहित बर्षतबान। जूटिफिरि परभटन सों भो करत अति घमसान ॥ द्रोणसुत तेहि समय गुणि अरिसैन नाशनयोग। अस्त्र नारायण दुसहको भयो करतप्रयोग॥ भयो ताक्षण शत्रु दलमधि प्रलय काल समान। लगे निपतन तुरँग गजगणभूरि ह्वै गतप्रान ॥ पाण्डवीदल मध्य तेहिक्षण भयो हाहाकार। पार्थसों तब कह्यो इमिगुणि धर्मभूपउदार ॥ पितृबधते गहे अमरषरुद्र समद्धै चण्ड। बधत ममदल द्रोणसुत तजिशस्त्र परम उदण्ड ॥ काल मुखगत जन्तुसम अबभई सबमम सैन। तासुरक्षण करौ तुम बरबुद्धि बिक्रमऐन ॥ भूपके ये बचन सुनिकैपार्थ धीरधुरीन। द्रोणबध को गहे दुखभो कहत बचन सुपीन ॥ देवब्रज द्विजगुरू कीन्हें शस्त्र त्यागनभूप। धारि बिधिवत योगबिधि थिरिरहोसु सुनिस्वरूप ॥ द्रुपदसुत तेहिबध्यो यह भो महा अनरथ तात। भयो पूरित सिन्धु अघको करन अतिउत्पात ॥ केशगहि निज पिताको शिर छेदिबो सुनिआम। धृष्टद्युम्नहिं बधन को पणकियो अश्वत्थाम ॥ चरत काल करालसम यहिकालयोधातौन। सकैता कहँ आड़ि यहिक्षण सुरासुर नरकौन ॥ दोहा ॥ पारथके ये बचन सुनि भीम कह्यो अनखाय। कतबनबासी सुमुनिसम बोलत बचनअचाय॥ कर्णादिक सों सदलतुमयुद्ध करौ जयऊटि। गदापाणिह्वै हम लरब द्रोण तनय सों जूटि ॥ सोरठा ॥ यह सुनिकै तेहि काल कह्यो पार्थ सों द्रुपदसुत। यह श्रुतिबचन रसाल बिप्रजौन षट कर्मरत ॥ चौपाई ॥ क्षात्र धर्ममें रत रणचारी। करत अधर्म युद्धअबिचारी ॥ जे नहिं दिव्य अस्त्रहैं जानत। रह्यो तिन्हैं तिनहींसों भानत ॥ करिअधर्म अभिमन्युहिरणमें। जो बधवाइ दयो तेहिक्षणमें ॥ जोअमित्र ममपितुको गायो। जाबधहित मम जनम सोहायो ॥जो ममपितुहि मारिजयलीन्हों। समय पाइ हम ताबध कीन्हों ॥ सोनअधर्म सुनोहेपारथ। बूझिलेहु हम कहत यथारथ॥

आगेराखि शिषण्डिहि न्यारे। भीष्मपितामह कहँ तुममारे॥ सोनअधर्म नेकु अनुमाने। अबइमि कहत शांतिरस साने॥ गहौ हर्ष अतिशयहित मानी। युद्धकरौ जय निजबश जानी॥ सुनियह द्रुपदतनय की बानी। कहत भयो सात्यकि अभिमानी॥ रे गुरुहिंसक मूढ़ अनारय। करिऐसो अति कुत्सित कारय॥ लजत न निलज कहत इमि बातैं। नहिं गिरि परत बदनते दांतैं॥ तजे शस्त्र गुरु बिप्रहि हतिकै। निजहि प्रशंसत महिमा अतिकै॥ जो फिरि इमिकहि है अबिचारी। तौ बधिहौं तोहिं गदाप्रहारी॥ यह सुनि धृष्टद्युम्न मन कसिकै। तासों कहत भयो इमि हँसिकै॥ सत्य सत्य सात्यकि तुम धरणी। नहिं तुम सम हम कुत्सित करणी॥ दोहा॥ भूरिश्रवा पछारि जब हन्यो हियेमें लात। तब न कछू बल करिसको अब यहिबिधि उमदात॥ पारथ दीन्हों काटिभुज तब करि योग बिधान। बैठिरहो तब तासु बध तुम कीन्हों मनमान॥ बोरठा॥ ऐसो कुत्सित कर्म सो न भयो पातक कछू। हितउपकार सुधर्म ममकृत तेहि पातक कहत॥ जयकरी॥ जो अब यहिबिधि बचनकठोर। फेरि कहैगो ह्वै मुहजोर॥ तौ अति तीक्षण बाण प्रहारि। देहोंतोहिं भूमिपै डारि॥ सुनि सात्यकि करि क्रोध अथोर। रथसों कूदिगदागहि घोर॥ चलो तहांताकोबध चाहि। सोलखिभीम गहतभे ताहि॥ सहदेव तासु सामुहें जाय। क्षमित करनलागे समुझाय॥ तब हँसि कह्यो द्रुपदसुत बीर। छोड़ि देहु आवत रणधीर॥ हनि हनि तीक्षण बाण अबाध। देहौं दुरै युद्धकी साध॥ यहसुनि सात्यकि बीर उदार। निक्षुटनको उझको बहुबार॥ दोऊ मत्त मतंग समान। चाहैं करन घोर घमसान॥ सो लखि कृष्ण धर्मनृप रत्न। तिन्हैं क्षमित कीन्ह्यों करि यत्न॥ फिरि रथपै सात्यकिहि चढ़ाय। लागे करन युद्ध बेवसाय॥ तेहिक्षण द्विजसुत बीर उदण्ड। तजिनारायण अस्त्र प्रचण्ड॥ शत्रुसैन मधिहैं क्षितिपाल। रोप्यो प्रलयकाल बिकराल॥ प्रगटि प्रगटि शायक समुदाय। परदल बधन लगे दृढ़घाय॥ जिमि जिमिलरैं उतैके बीर। तिमि तिमि प्रगटैं अगणित तीर॥ बधि बधि हय गज योधाभूरि। दई रुधिरकी सरिता पूरि॥ दोहा॥ दहत अग्निसों बिपिन तिमि निजदल मर्दत देखि। पार्थहि लखि मध्यस्थसम कह्यो धर्मनृप लेखि॥ बधवायो

अभिमन्युकहँ जोकरि महा अधर्म। जो दीन्हों दुर्योधनहिं कवचअभेद अभर्म॥ जौन बर्षि ब्रह्मास्त्रकहँ लघुकीन्हीं ममसैन। जोबधि द्रुपद बिराटकहँ कीन्हों मोहिं अचैन॥ सोरठा॥ ताको बध यहिकाल नहिं पार्थहि रोचित भयो। ताते बीर बिशाल लरत न निज बिक्रम सदृश॥ चौपाई॥ भीष्म द्रोणको बिक्रम सागर। पार उतरि ममदल भटनागर॥ द्विजसुत बललघु शरमधि डूबत। यह लखि गुणिअब ममन ऊबत॥ अब सब जय आशातजि तजिकै। निजनिज गेह जाहु भजि भजिकै॥ बन्धुन सहित अग्निमधि धसिकै। हम तन दाहब मुनिसम लसिकै॥ यहसुनि केशव बांह उठाई। टेरि भटनसों कहे बुझाई॥ भागहु मति धीरजधरि फिरि फिरि। हमजो कहैं करोसो थिरि थिरि॥ तजि तजि आयुधबाहन रूरे। महिपै खरे होहु मुदपूरे॥ बिनु बाहन बिनु आयुध जाही। लखत न बधत अस्त्रयह ताही॥ यहसुनि सबभट मुदसोंपागे। तुरतहि बाहन आयुध त्यागे॥ इतने में अति अमरष गहिकै। निजबिक्रमकी गरिमा कहिकै॥ रथ बढ़वाय भीम पण करिकै। द्विजपहँ भीम चलो पणधरिकै॥ अभिमंत्रित बाणनसों गोपित। भीमहिंकियो द्रोण सुत कोपित॥ दिव्य शरन मधि भीम अमाना। लसो ज्वालमधि सूर समाना॥ पार्थ भीमकहँ गोपित देखी। बारुण अस्त्र तजो अवरेखी॥ तेज अस्त्र नारायण बरको। कछु ऋजुकरि करि लाघव करको॥ केशव सहित कूदिरथ बरसों। चलो भीमके ढिगतेहि थरसों॥ दोहा॥ नर नारायणते उभय निज प्रभावसों भूप। समित करतभे बिप्रको अस्त्र अमोघ अनूप॥ रथ बढ़ाय अति बेगसों घृष्टद्युम्न तेहिकाल। द्रोणतनय के तन हन्यो साठि शरनको जाल॥ सोरठा॥ द्रोणतनय भटचण्ड ताहि अनगिने शर हने। दोऊबीर उदण्ड घोरयुद्ध कीन्हों तहां॥ तोमर॥ भट द्रोण सुवन अमान। तहँ बर्षि अगणित बान॥ धनुध्वजा काटि सटेक। तेहि हन्यो बाण अनेक॥ सोवीर सात्यकि देखि। बढ़ि भिरो अतिशय तेखि॥ भट द्रोणसुतहि प्रचारि। बसु बीस बाण प्रहारि॥ बधि हयन धनुध्वज काटि। तेहि हन्यो बहुशर डाटि॥ अति बिकल बिप्रहिपेखि। कृप कर्णसह अवरेखि॥ तोतनय बर्षत पत्र। बढ़िभिरो तासोंतत्र॥ तहँ सात्यकी भटराज। नृपकियो अद्भुत काज॥ शर बरषि बिक्रम ऐन।

करि तिन्हैं बिमुख अचैन ॥ बहुसहस योधामारि। भोदेत महिपैडारि॥ सो देखि अनुपम बीर। भट द्रोणसुत रणधीर ॥ शर सुपर्बाण सुनाम। तेहि हनतभो बलधाम ॥ सोबेधि ताको गात। भो सर्प सदृशबिभात ॥ ह्वै इबिधि बेधित तौन। गिरिपरो रथपै मौन ॥ तब सारथी भयपूरि। रथ हांकि लैगो दूरि ॥ लखि द्रुपदसुत अनखाय। बढ़ि भिरतभो शर छाय ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न अरु द्रोणसुत दोऊ धीर धुरीन। शरपंजर रचि उभयदिशि कियोयुद्ध अति पीन ॥ कर लाघवकरि द्रोणसुत द्रुपदतनय के भाल। हन्योबाण तब होतभो मोहित बीर बिशाल ॥ सोरठा ॥ इमि बेधित ह्वै बीर द्रुपद तनय मोहित भयो। सो लखिकै रणधीर पांच सुभट द्विजसों भिरे ॥ महिखरी ॥ गतचेत सेनापतिहि लखतहि भीम पारथ रिसभरे। अरु वृद्धक्षत्र महीप अरु युवराज बरणे भटखरे॥ अरु देश मालव को सुदर्शन भूप बरषत शरघने। भिरि द्रोणसुत रणधीर सों भे लरत अति अमरषसने॥ तेहि समय द्रोणाचार्य्यको सुत बीरअति बिक्रम कियो ॥ शरकाटि कइकहजार सबके गात अगणित शरदियो॥ बधि वृद्ध क्षत्रहि बधतभो युवराज भटहि प्रचारिकै। फिरि नृपसुदर्शन को सुयमपुर दियो बाण प्रहारिकै ॥ दोहा ॥ लखि तिनकोबध क्रोधकरि गरजि भीम बलवान। बर्षतभो द्विजबीरपहँ कालदण्ड समबान॥ यहि बिधि शर पंजरकियेदोऊ क्षत्रीबिप्र। नहिंजेहिमधि अन्तरलह्यो पावमान गतिक्षिप्र ॥ सोरठा ॥ तकि दोउनके गातदोऊबहु शायक हने। दोऊभट अवदात बहुधनु काटे दुहुनके ॥ चोपाई ॥ गरजि गरजि दोऊ धनुधारी। कीन्हों तहांयुद्ध अतिभारी॥ भीमसेन तहँद्विजहि प्रचार्यो। बज्रसरिश शर भ्रू मधि मार्यो ॥ तासों भिदि द्विजमुर्छित ह्वैकै। बहुरि चति शर बरष्योज्वैकै॥ अतिगर्बित दोऊ गुरुभाई। नृपकीन्ह्यों तहँ दुसह लराई॥ भीमसेन के सूत सुजानहि। बिप्र व्यथित कीन्हों हति बानहि ॥ मोहित भयो सूत तबताको। भगेतुरंगजे बिनु समताको ॥ भीमसेनकहँ बिचलत देखी। परदलभगो बिपति अवरेखी ॥ पारथ निजदल बिचलत देखी। भिर्योद्रोणसुतसों अतितेखी ॥ सोलखि उतके योधा रूरे। फिरि फिरि लरनलगे रिस पूरे ॥ भटमणि द्रोणतनय तेहि क्षनमें। महा क्रोधसों भरिगुणि मनमें ॥ तजो अस्त्र आग्नेय महाना। जोअति दुसह अमोघ

अमाना ॥ नभ मढ़ितौन अस्त्र जियकर्षण। लागो उलकासम शरब-र्षण ॥ तेहिक्षण हयगज भटअरि दलके। भेतिमि यथामीन बिनजल के ॥ पूरो प्रलय शत्रु दलमाहीं। पारथ गुन्यो बचत कोउ नाहीं ॥ तब सब अस्त्रशमन अनुमानी। तजतभयो ब्रह्मास्त्र सुज्ञानी ॥ तासों समित भयो अरिशायक। जो क्षणमें दल नाशन लायक ॥ दोहा ॥ तेहि क्षण केशव पारथहि कुशल अछत लखि भूप। मम दिशिपूरो शोचअति पर दिशि हरष अनूप ॥ मंत्रहि अस्त्रहिझूठगुणि द्विज सुतआनि गलानि। रथ धनुशर तजि चलतभो बन बसिबो अनुमानि ॥ तेहिक्षण वेदव्यास मुनि सादर तेहि थरआय। आगेद्विज सुतबीर के खड़ेभये सुखदाय ॥ सोरठा ॥ वेदव्यास कहँ देखि अश्वत्थामा कहतभो। प्रभु अचरज अव-रेखि मोहिँभई अति ग्लानि अब ॥ तज्यो अस्त्र आग्नेय कृष्ण पार्थ के नाशहित। सो वह अस्त्र अमेय व्यर्थ भयो वे ब्रहिं मरे ॥ तासुहेत स-मुझाय कहिये जेहि संशय मिटै। सो सुनिव्यास सचाय कहो द्रोण के सुवनसों ॥ रोला ॥ हेबिप्र बूझत जौन तुमहौ अर्थ तासुमहान। सुनोमन दै तौन हम अब कहत सहित बिधान ॥ जौन नारायण महाप्रभु पूर्व जनको पूर्व। बिश्वकृत सो धर्म केरो भयो पुत्रसुगूर्व ॥ लगो सो मैनाक गिरिपै करन तप अतिमान। ज्वलित रबिसम खरो रहि करि ऊर्धबाहु महान ॥ कियो छाछठ सहस बरष सुवायु भुकतप पर्म। पूरिगो तपतेजसों ब्रह्माण्ड पूरण धर्म ॥ तहां आये आपु शम्भु पिनाक तेजस धाम। देखि नारायण कियो तेहि शिवा सहित प्रणाम ॥ जोरि पाणि पिनाक धृतहि प्रशंसि सहित सनेहु। कहो करिकै कृपा दुर्लभ सुबरमो कहँ देहु। बचन यह सुनि जानि आशय तासु आनँद पूरि। नीलकंठ उदार प्रभुइमि कह्यो आनँद पूरि ॥ होहु परम अमेय बलबुधि पूर्ण आत्मा तात। सकैंगे नहिं तुम्हैं सहि सब लोकमें जेजात ॥ आर्द्र सूखे अस्त्र जितने वायु अग्नि महान। सकैं जे नहिं तुम्हैं रुज करि बिबिधि बिधिके बान ॥ प्राप्ति रणमें होहुगे मम सदृश सब बिधि आपु। भाषि ऐसे गये हरता त्रिबिधि बिधिके तापु ॥ लह्यो यहिबिधि शम्भुसों बर जौन देवअनूप। सोईनारायण द्विधा ह्वै गहतभो नरभूप ॥ सोईनारा-यण सुनर प्रभु भये माया छन्न। करत कौतुक इबिधि के नृप बंशमध्य

प्रपन्न ॥ शम्भु तुम ये लहे तुमसों पूर्ववर वरदान। होहिंअस्त्रन बिफल कैसे गुणोहो मतिमान ॥ बचन यह सुनि द्रोणसुतकरि मनहिं तिनहिं प्रणाम। चढ़ि सुस्यन्दन चलो डेरन परम आनँद धाम ॥ भूप दुर्योधनो ससयन तदनु डेरन आय। करतभो अवहार गुरुबध देखि परम अचाय ॥ तहां पारथ दिवसमें कछु महा अचरज देखि। कहतभो मुनि देवसों तेहि समय निजढिग पेखि ॥ सुनो प्रभु हम लरत रणमें लखत अजरज एक। कहत तुमसों तौनदेहु बुझायसहित बिबेक ॥ पुरुषपरम प्रगल्भ दिव्य स्वरूप तेजसधाम। गहे दीह त्रिशूल कीन्हें पाणिऊरध माम ॥ चलत आगे सुरथके मम जितै रथ चलिजात। छुअत पगसों भूमि नहिं नहिंतजत शूल अघात ॥ बचन यहसुनि कह्यो मुनिसोंशम्भु ईश सुनाथ। सुजय हिततो कृपा करिकै रहतहैं तुवसाथ ॥ भाषि यहि बिधि शम्भु प्रभुकी करी स्तुतिव्यास। तौन बिधिवत् कहतहौं मैं भूप तुम्हरे पास ॥ स्तोत्रं ॥ प्रजापतीनांप्रथमं तैजसंप्रथमंप्रभुं। भुवनंभूर्भुवं देवं सर्वलोकेश्वरंप्रभुं ॥ ईशानंवरदंपार्थदृष्टवानसिशंकरं। तंगच्छशरणं देवं वरदंभुवनेश्वरं ॥ महादेवंमहात्मान मीशानंजटिलंशिवं। त्र्यक्षंमहाभुजंरुद्रम् शिखिनंचीरवाससं ॥ महादेवंहरंस्थाणुम् वरदंभुवनेश्वरं। जगत्प्रधानमधिकं जगत्त्रयमधीश्वरं ॥ जगद्योनिजगद्बीजं जयिनंजगतोगतिं। विश्वात्मानंविश्वसृजं विश्वमूर्तियशस्विनं ॥ विश्वेश्वरंविश्वतरं कर्मणामीश्वरंप्रभुं। शम्भुंस्वयम्भूभूतेशम्भूतभव्यभवोद्भवं ॥ योगंयोगेश्वरंसर्वसर्वलोकेश्वरेश्वरं। सर्वश्रेष्ठंजगत्श्रेष्ठं वरेष्ठंपरमेष्ठिनं ॥ लोकत्रयविधातारमेकं लोकत्रयाश्रयं। सुदुर्जयंजगन्नाथं जन्ममृत्युजरातिगं ॥ ज्ञानात्मानंज्ञानगम्यं ज्ञानश्रेष्ठंसुदुर्विदं। दातारंचैवभक्तानां प्रसादविहितानूवरान् ॥ तस्यपारिषदादिव्या रूपैर्नानाविधैर्विभो। वामनाजटिलामुंडा ह्रस्वग्रीवामहोदराः ॥ महाकायामहोत्साहा महाकर्णास्तथा परे। आननैर्बैकृतैःपादैः पार्थिवेशैश्चवैकृतैः ॥ ईदृशःसमहादेवः पूज्यमानोमहेश्वरः। सशिवस्तातेजस्वी प्रसादाद्यातितेऽग्रतः ॥ दोहा ॥ तबतुम पावतहौ सुजयमारि महत दल तौन। द्रोण द्रोण सुत कृप करण सों सुरक्षितहैं जौन ॥ यहि बिधि कहि मुनि पार्थसों मोद हियेमें घेरि। शिवकी स्तुति फिरिकरी सुनो कहतसो फेरि ॥ शिवस्तोत्रं ॥ नमः कुरुष्व

कौंतेय तस्मैशान्तायवैसदा। रुद्रायशितिकंठाय कनिष्ठायसुवर्चसे ॥ कपर्दिनेकरालाय वरदायहरायच। याम्यायव्यक्तकेशाय शतृतेशंकराय च ॥ काम्यायहरिनेत्राय स्थाणवेपुरुषायच। हरिकेशायमुंडाय कृशाय तरुणायच ॥ भास्करायसुतीर्थाय देवदेवायरंहसे। बहुरूपायसर्वाय प्रियायाप्रियवाससे ॥ उष्णीषिणेसुवक्त्राय सहस्राक्षायमीढुषे। गिरीशाय सुशान्ताय पतयेवीरवाससे ॥ हिरण्यबाहवेराजन्नुग्रायपतयेदिशां। पर्ज्जन्यपतयेचैव भूतानांपतयेनमः ॥ वृषाणांपतयेचैव गवांचपतयेनमः। वृक्षैरावृत्तकायाय सेनान्यैमध्यमायच ॥ स्तवहस्तायदेवाय धन्विनेभार्गवायच। बहुरूपायविश्वस्यपतये मुंजवाससे ॥ सहस्रशिरसेचैव सहस्रनयनायच। सहस्रबाहवेचैवसहस्रचरणायच ॥ शरणंगच्छकौन्तेय वरदं भुवनेश्वरं। उमापतिंविरूपाक्षं दक्षयज्ञनिबर्हणं ॥ प्रजानांपतिमव्ययं भूतानांपतिमव्ययं। कपर्दिनंविषावर्त्तं वृषनाभंवृषध्वजं ॥ वृषदर्पंवृषपतिं वृषशृंगंवृषर्षभं। वृषांकंवृषभोदारं वृषभंवृषभेक्षणं ॥ वृषायुधंवृषशरं वृषभूतमहेश्वरं। महोदरंमहाकायं द्वीपिचर्मनिवासिनं ॥ लोकेशंवरदंमुंडं ब्रह्मण्यंब्राह्मणप्रियं। त्रिशूलपाणिवरदं खड्गचर्म्मधरंप्रभुम्॥ पिनाकिनंखड्गधरं लोकानांपतिमीश्वरं। प्रपद्येदेवमीशानंशरण्यमुमापतिं वरवाससं ॥ नमस्तस्मैसुरेशाय यस्यवैस्त्रवणःसखा। सुवाससेनमोनित्यं सुव्रतायसुधन्विने ॥ धनुर्द्धरायदेवाय प्रियधन्वायधन्विने। धन्वन्तराय धनुषे धन्वाचार्य्यायतेनमः ॥ उग्रायुधायदेवायनमःसुरबरायच। नमोस्तु बहुरूपाय नमोस्तुबहुधन्विने ॥ नमोस्तुत्रिपुरघ्नाय भगघ्नायचवैनमः। बनस्पतीनांपतयेनराणां पतयेनमः ॥ अपांचपतयेनित्यं देवानांपतयेनमः। पूष्णोदन्तबिनाशाय त्र्यक्षायवरदायच ॥ हरायनीलकंठायस्वर्णकेशायवैनमः। कर्म्माणियानिदिव्यानि महादेवस्यधीमतः ॥ तानिते कीर्त्तयिष्यामियथाप्रज्ञंयथाश्रुतं। दक्षस्ययजमानस्ययज्ञबिध्वंसनादिकं ॥ इतिशिवस्तोत्रंसमाप्तं ॥ दोहा ॥ इमि कहिकै मुनि कहत भे कियो शम्भु जो तत्र। कहोतौन हरिबंशमें ताते कहोनअत्र ॥ फेरित्रिपुरके दाह की कथाकही कछुव्यास। कर्णपर्व में सो कियो बिस्तर सहितप्रकास ॥ पञ्चवक्त्र प्रभुशंभु कहँ बालरूप करिअंक। गईपार्वतीतहँ लखत त्रिपुर दाहको अंक ॥ देखितथा तेहि शम्भुकहँ बज्र उठायो शक्र। भुज थम्भना

भो तासु जबशंकर हेरोबक्र ॥ सुरन सहित सुरनाथ तब बिधिपहँ जाइस त्रास। कहिनिज दशा बिरंचिकहँ लै आये शिवपास ॥ आइ सुरन सह बिधिकियो शिवकी अस्तुतिभूरि। अट्टहास तब शिवकियोअनुकम्पा सों पूरि ॥ तबसुरपतिको भुज भयो यथा पूर्ब तेहिकाल। पृथक् पृथक् तब सुरकियो अस्तुति तासुरसाल॥ संजयउवाच ॥ यहिप्रकार प्रभु शंभुकी करि अस्तुति बहुबार। कहतभयेइमि पार्थसों ब्यास मुनीशउदार ॥ पूर्ब दिये गिरिपै तुम्हैं बर बरदान गिरीश। तातेचाहत युद्धमें तुमजय विश्वबीश ॥ फेरि स्वप्न में अस्त्र सह दिये तुम्हैं बरदान। सोपण पालन हेतु निति तोसँग रहतईशान ॥ शम्भु कृपातेलहहुगे अवशि बिजयकरि युद्ध। सर्ब जगत कृत सर्ब प्रभु चाहततो यश शुद्ध ॥ जो पढ़िहै स्तोत्र यह सो लहिहै जयपर्म। शम्भु कृपातापर रहिहि पूरणनिरखि सुधर्म ॥ सोरठा ॥ यह सुपर्ब मनलाय जे पढ़िहैं सुनिहैं सुनो। परम पुण्य सुखदाय तेल-हिहैं यश बिजय गुण ॥ इमि कहिकै मुनिब्यास गुप्तभये तेहिठौरनृप। पारथ भरे हुलास सैन सहित डेरन गये ॥ रामकृष्ण जगदीश भूपकृपा जापर करत। सुर सुरपति बिधिईश तासु सहायी रहत निति ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभि
गामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्म
जेनगोपीनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारत
दर्पणेद्रोणपर्वणिपञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

दोणपर्ब समाप्तः ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
राग	भजनरी गीत	औषधि संग्रहकल्पवल्ली	**ज्योतिष**
राग प्रकाश	दानलीला व नामलीला	अद्भुत सागर बड़ा	मुहूर्त्त गणपति
लावनी	दोहावली रत्नावली	अद्भुत सागर छोटा	मुहूर्त्त चक्र दीपिका
क़िस्सा दोहरह	रसायन प्रकाश	इलाजुल गुरबा नागरी	मुहूर्त्त चिन्तामणि सटीक
नानार्थ नाम संग्रहावली	गोकर्ण माहात्म्य	वैद्य मनोत्सव	मुहूर्त्त दीपक
ब्रह्मसार	श्रीगोपाल सहस्रनाम	दिल लगान	बृहज्जातक सटीक
शिवसिंह सरोज	कथा सत्यनारायण सटी-	माधव निदान	जातकालंकार
भक्तमाल	हनुमान बाहुक	**ज्योतिष भाषा**	जातका भरण
इन्द्रसभा	जनक पचीसी	जातक चन्द्रिका	होरा मकरन्द
विक्रम बिलास	हरिहर सगुण निर्गुण-	जातकालंकार	मुहूर्त्त मार्त्तण्ड सटीक
बैताल पचीसी	पदावली	दैवज्ञ भरण	**संस्कृत उर्दू टीका**
सिंहासन बत्तीसी	बनयात्रा	ज्ञान स्वरोदय	मनुस्मृति
पद्मावती खराड	कायस्थ वर्ण निर्णय	रमलसार	विष्णु हारीत
शुक बहत्तरी	बिहार वृन्दावन	रमल नौ रत्न	सहस्र स्तोत्र
बकावली सुमन	समर बिहार वृन्दावन	इन्द्रजाल	व्रतार्क
चहार दरवेश	कल्प भाष्य	**संस्कृत की पुस्तकें**	याज्ञवल्क्य स्मृति
क़िस्सा हातमताई	लक्ष्मी सरस्वती सम्वाद	लघुकौमुदी	**संस्कृत मीमांसा टीका**
अपूर्व्व कथा	**दरसी**	सिद्धान्त चन्द्रिका	अमरकोष तीनों काण्ड
क़िस्सा गुलसनोवर	अक्षरावली	भाषा तत्त्व प्रकाश	याज्ञवल्क्य स्मृति
सहस्र रजनी चरित्र	स्वयंबोध	पञ्च महा यज्ञ	सन्ध्या पद्धति
अमीर हमज़ा की दास्तान	ज्ञान चालीसी	निर्णय सिंधु	व्रतार्क
राबिन्सन का इतिहास	दोहावली	संग्रह शिरोमणि	लग्न चन्द्रिका
सीता हरण	बालाबोध	कर्म्म विपाक	भगवद्गीता टीका हरि-
सती बिलास	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक	भगवद्गीता पञ्चरत्न	वंशलाल कृत
क़िस्सा मर्द औरत	किताब जंत्री	दुर्गापाठ मूल	भगवद्गीता टीका आ-
संगीत प्रह्लाद	गणित कामधेनु	दुर्गापाठ सटीक	नन्द गिरि कृत
सुतफ़र्क़ात	लीलावती	विष्णु भागवत	गीत गोविन्द
शनिश्चर की कथा	पटवारियों की पुस्तक ४ भाग	कथा यम द्वितीया	कथा सत्यनारायण
ज्ञानमाला	**वैद्यक भाषा**	अपराध भञ्जन स्तोत्र	परमार्थ सार
ज्ञानभूषण कृष्ण कृ-	निघण्टु	कायस्थ कुल भास्कर	शार्ङ्गधर संहिता
गोपीचन्द भरतरी	अमर विनोद	कायस्थ धर्म्म निरूपण	माधवी सटीक
कथा श्री गंगा जी	वैद्य जीवन	तथा छोटा	शीघ्रबोध सटीक
अवध यात्रा		मथुरा सभा	लघुजातक

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
राग	भरतरी गीत	औषधि संग्रह कल्पवल्ली	**ज्योतिष**
राग प्रकाश	दानलीला व नागलीला	अखंत सागर बड़ा	मुहूर्त्त गणपति
लावनी	दोहावली रत्नावली	अखंत सागर छोटा	मुहूर्त्त चक्र दीपिका
क़िस्सा वग़ैरह	रसायन प्रकाश	इलाजुल गुरबा नागरी	मुहूर्त्त चिन्तामणि सटीक
नानार्थ नाम संग्रहावली	गोकर्ण माहात्म्य	वैद्य मनोत्सव	मुहूर्त्त दीपक
ब्रह्मसार	श्रीगोपाल सहस्रनाम	दिल लगन	बृहज्जातक सटीक
शिवसिंह सरोज	कथा सत्यनारायण सटी-	माधव निदान	जातकालंकार
भक्तमाल	हनुमान बाहुक	**ज्योतिष भाषा**	जातका भरण
इन्द्रसभा	जनक पच्चीसी	जातक चन्द्रिका	होरा मकरन्द
विक्रम विलास	हरिहर सयुग निर्युग-	जातकालंकार	मुहूर्त्त मार्त्तण्ड सटीक
बैताल पच्चीसी	पदावली	ऐवज्ञा भरण	**संस्कृत उर्दू टीका**
सिंहासन बत्तीसी	बनयात्रा	ज्ञान स्वरोदय	मनुस्मृति
पद्मावती स्वराङ	कायस्थ वर्ण निर्णय	रमलसार	विष्णु हारीत
शुक बहत्तरी	विहार वृन्दावन	रमल नौ रत्न	सहस्र स्तोत्र
बकावली सुमन	स्मर विहार वृन्दावन	इन्द्रजाल	ब्रतार्क
चहार दरवेश	कल्प भाष्य	**संस्कृत की पुस्तकें**	याज्ञवल्क्य स्मृति
क़िस्सा हातमताई	लक्ष्मी सरस्वती सम्वाद	लघुकौमुदी	**संस्कृत भाषा टीका**
अपूर्व्व कथा	**दरसी**	सिद्धान्त चन्द्रिका	अमरकोष तीनों काण्ड
क़िस्सा गुलसनोबर	अक्षरावली	भाषा तत्त्व प्रकाश	याज्ञवल्क्य स्मृति
सहस्र रजनी चरित्र	स्वयंबोध	पञ्च महा यज्ञ	सन्ध्या पद्धति
अमीर हमज़ा की दास्तान	ज्ञान चालीसी	निर्णय सिंधु	ब्रतार्क
रविन्सन का इतिहास	दोहावली	संग्रह शिरोमणि	लग्न चन्द्रिका
सीता हरण	बालाबोध	कर्म्म विपाक	भगवद्गीता टीका हरि-
सती बिलास	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक	भगवद्गीता पञ्चरत्न	वंश लाल कृत
क़िस्सा मर्द औरत	किताब जंत्री	दुर्गापाठ मूल	भगवद्गीता टीका आ-
संगीत प्रह्लाद	गणित कामधेनु	दुर्गापाठ सटीक	नन्द गिरि कृत
सुतफ़र्क़ात	लीलावती	विष्णु भागवत	गीत गोविन्द
शनिश्चर की कथा	पटवारियों की पुस्तक ४ भाग	कथा यम द्वितीया	कथा सत्यनारायण
ज्ञानमाला	**वैद्यक भाषा**	अपराध भञ्जन स्तोत्र	परमार्थ सार
ज्ञानभूषण कृष्ण कृ-	निघण्टु	कायस्थ कुल भास्कर	शार्ङ्गधर संहिता
गोपीचन्द भरतरी	अमर विनोद	कायस्थ धर्म्म निरूपण	पाराशरी सटीक
कथा श्री गंगा जी	वैद्य जीवन	तथा छोटा	शीघ्रबोध सटीक
अवध यात्रा		मथुरा सभा	लघुजातक

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
षट्पञ्चाशिका	भाषालघुव्याकरण १भा·	लंकाकाण्ड	ईसवी वग़ैरह
सामुद्रिक	तथा २ भाग	उत्तरकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प दस्तावेज़ात
गरुड़ पुराण	भाषा तत्त्वदीपिका	गुटका १भा· व २भाग	१८ सन् १८६९ ई०
रामविवाहोत्सव	भाषाचन्द्रोदय	तथा ३ भाग	ऐक्ट ताल्लुक़दारान मक़-
सर्रिश्तेतालीमकी	भूगोल तत्त्व	हिदायतनामा मुदर्रिसान	रूज अवध २४सन् १८७०ई०
पुस्तकें	भूगोल दर्प्पण	पशुचिकित्सा	ऐक्ट चौपायों का मदाख़-
संस्कृत	इतिहासतिमिरनाशक	पट्टा बख़त कैथी	लतबेजा १सन् १८७७ ई०
	१भाग व २भाग व ३भाग	तथा क़बूलियत	ऐक्ट मजमूआ ज़ाबिता
ऋजुपाठ १ भाग	अवधदेशीय भूगोल	रजिस्टर दाख़िलख़ारिज	फ़ौजदारी १० सन् १८७२ ई०
तथा २ भाग व ३ भाग	इंग्लिस्तानका इतिहास	तुलबा मदर्सा	ऐक्ट मालगुज़ारी मग़रबी
धात्वर्णव	हितोपत्रिका	रजिस्टर हाज़िरी पाठशाला	व शिमाली १९सन् १८७३ई०
नागरीकैथी	बाला भूषण	क्षेत्रव्यवहारिक तत्त्व १	तरमीम मजमूआ ज़ाबिता
वर्णमाला कथी १ भाग	पद्य संग्रह	भाग व २ भाग	फ़ौजदारी ११सन् १८७४ई०
तथा २ भाग	भाषाकाव्य संग्रह	व्यवहारपत्रसंग्रहकैथी	तक़ावी के क़ायदे सवाल
तथा कैथीफ़ारसी	कवित्तरत्नाकर १ भाग	**क़ानूनकैथी**	व जवाब पुलिस
नागरी	तथा २ भाग	पटवारियों के क़ायदे	अवध रुहेलखंड रेलवे
हरूफ़ मुफ़र्दात	मंगलकोष	**उर्दू कैथी महाजनी**	का दस्तूरुल अमल
अक्षरारम्भ	अंकप्रकाश	टिकट के लाइसन्स का	
वर्णप्रकाशिका १ भाग	गणित प्रकाश १ भाग	ऐक्ट सन् १८७८ ई०	किताबें जो छपरही
तथा २ भाग	तथा २ भाग व ३ व ४ भाग	**नागरी**	हैं उनके नाम नीचे
सूरजपुर की कहानी	गणितक्रिया	ऐक्ट लगान मग़रबी व शि-	लिखे हैं-
धर्म्मसिंह का वृत्तान्त	क्षेत्रप्रकाश	माली १० सन् १८५९ ई०	मदनपारिजात संस्कृत
शिक्षावली	क्षेत्रचंद्रिका १भा· व २भा·	इंडियन पिनल कोर्ट म-	हंसराज निदान छा· टैप
शिशुबोध	सकील दायरा	जमूआ ज़ाबिता फ़ौजदारी	मार्क्कण्डेय पुराण उर्दू
पत्रहितैषिणी	रेखागणित १भा· २भा·	ऐक्ट २५ सन् १८६१ ई०	टीका सहित
पत्र दीपिका	बीजगणित २ भाग	ऐक्ट रजिस्टरी २० सं· १८६६ ई०	क़ानून सीतार नागरी
विद्याचक्र	रामायण तुलसीकृत	ऐक्ट स्टाम्प १ सं· ६२ ई०	कबीर ग्रन्थ
विद्याङ्कुर	बालकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प अदालत	के नो प नि-
पदार्थ विद्यासार	अयोध्याकाण्ड	२६ सन् १८६७ ई०	षद
पदार्थ तान विटप	आरण्यकाण्ड	मजमूआ ऐक्ट अवध लगा-	शृ गाङ्क लति
भोजप्रबन्धसार	किष्किन्धाकाण्ड	न १९ सन् १८६८ ई०	का
राजनीति	सुन्दरकाण्ड	पुख़्तादारी २६ सन् १८६६	